डनबार की घाटी

(Dunbar's Cove—By Borden Deal)

मूल लेखक

बॉर्डेन डील

अनुवादक

रमेश सिन्हा



पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–१

मूल्य १ रुपया

प्रथम संस्करण १९५७

प्रकाशक : जी. एल. मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड,
१२, वाटरलू मेन्शन्स (रीगल सिनेमा के सामने), महात्मा गांधी रोड, बम्बई १.
मुद्रक : वि. पु. भागवत, मौज प्रिंटिंग ब्यूरो, खटाववाडी, गिरगाव, बम्बई ४.

मैं अलाबामा के सिनेटर लिस्टर हिल और जान स्पार्कमैन, 'टेनेसी वैली अथॉरिटी' के सूचना निर्देशक और 'गुन्टर्सविले बाँध' और 'गुन्टर्सविले लाक' के संचालक अधिकारियों का अत्यंत ही कृतज्ञ हूँ: क्योंकि उन्होंने मुझे पूरा सहयोग दिया, मेरे प्रश्नों का बिना तनिक बुरा माने उत्तर देते रहे और सूचना के अनेक आवश्यक साधनों को मेरे लिए उपलब्ध किया।

राबर्ट हेरिंग और बरोज मिचेल को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ; क्योंकि उन्होंने मुझे उत्साहित किया और आलोचना-प्रत्यालोचना करके मेरे कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने नियमित ढंग से मासिक, साप्ताहिक यहां तक कि दैनिक रूप से इस पुस्तक को लिखने के समय मेरे प्रयास में हिस्सा बँटाया। और डा० हडसन स्ट्रोड का, जिन्होंने आरम्भ से ही --कई वर्ष पहले से---परामर्श और प्रेरणा से मुझे लाभान्वित किया, मैं अत्यंत ही कृतज्ञ हूं। यह पुस्तक 'जान साइमन गगेनहिम मेमोरियल फाउंडेशन फेलोशिप' की सहायता से लिखी [redacted]

मैंने इस पुस्तक को [redacted] वैली अथॉरिटी' के कार्यों, नीतियों और इरादों के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया है। 'चिकसा बाँध' के निर्माण और कार्य संचालन को पूरी तरह, यथारूप रखने का मैंने प्रयास किया है। परन्तु इनथार-घाटी के लोगों का चित्र काल्पनिक है और यदि किसी जीवित या मृत व्यक्ति के साथ इसका सादृश्य दिखायी पड़े, तो यह मात्र संयोग ही होगा।

स्काट्स बोरो, अलाबामा

बोर्डन डील

निस्संदेह, हेलन को

पहला खण्ड

धरती और नदी

यह नदी है। एक रेड इंडियन नदी—बाढ़ के दिनों में यह कभी कभी वैसे ही मदहोश हो जाती है, जैसे सिर्फ एक रेड इंडियन ही शराब के नशे में हो सकता है। यह स्थिर भी हो सकती है; तथापि शांतिपूर्ण नहीं; क्योंकि अशांति सदा स्थिरता के नीचे ही दबी रहती है। यह एक नीली नदी नहीं है—अभी तक नहीं है; लेकिन एक दिन हो जायेगी; क्योंकि यह नदी नियंत्रित की जाने वाली है, जब कि सभ्यता के इतिहास में कोई दूसरी नदी नियंत्रित नहीं की गयी है। यह टेनेसी नदी है।

देखिये, यह बहती कैसी है: पहले दक्षिण की ओर, फिर पथरीली चट्टानों में घूमती हुई लगभग उत्तर की ओर, जब कि इसके लिए दक्षिण की ओर बहना ही अधिक आसान नजर आता है। यह ऐसी नदी नहीं है, जो आसान रास्ते से गुजरती है। वहाँ, उत्तर में, उस बड़े झुकाव के ऊपर, यह तराई छोड़कर पर्वत श्रेणी लाँघती हुई, दूसरी तराई में पहुँच जाती है—क्यों, कोई मनुष्य नहीं जानता।

जहाँ नदी पर्वत श्रेणी को लाँघती है, उस स्थल को द' नेरोज़ कहते हैं। तीस मील लम्बी इस पर्वत-श्रेणी के कई नाम हैं—द' सक, द' बायलिंग पाट, द' स्किलेट और द' फ्राइंग पैन। यहाँ ऊँचे और संकरे किनारों के बीच भँवर काटता हुआ पानी जमा है। पानी की धारा यहाँ बड़ी ही उग्र और अनियंत्रित है। लोग यहाँ मर चुके हैं।

द' नेरोज़ से उस बड़े झुकाव तक, नीचे, चिकामाउगा प्रदेश है। पूरे प्रदेश में पाँच शहर हैं। चेरोकियों में जो महत्वाकांक्षी थे, वे गोरे आदमियों से बचने के लिए यहाँ आये थे और काफी समय तक वे बचे भी रहे। उन्होंने यहाँ पाँच शहर बसाये, उनके नाम दिये, यहाँ की जमीन पर अपना अधिकार जमाया, मनुष्य और इतिहास के विरुद्ध इसे अपने अधिकार में रखा। विरोधी

निस्संदेह, प्रेम को

दृश्य एक

धरती और नदी

यह नदी है। एक रेड इंडियन नदी—बाढ़ के दिनों में यह कभी-कभी वैसे ही मदहोश हो जाती है, जैसे सिर्फ एक रेड इंडियन ही शराब के नशे में हो सकता है। यह स्थिर भी हो सकती है; तथापि शांतिपूर्ण नहीं; क्योंकि अशांति सदा स्थिरता के नीचे ही दबी रहती है। यह एक नीली नदी नहीं है—अभी तक नहीं है; लेकिन एक दिन हो जायेगी; क्योंकि यह नदी नियंत्रित की जाने वाली है, जब कि सभ्यता के इतिहास में कोई दूसरी नदी नियंत्रित नहीं की गयी है। यह टेनेसी नदी है।

देखिये, यह बहती कैसी है; पहले दक्षिण की ओर, फिर पथरीली चट्टानों में घूमती हुई लगभग उत्तर की ओर, जब कि इसके लिए दक्षिण की ओर बढ़ना ही अधिक आसान नजर आता है। यह ऐसी नदी नहीं है, जो आसान रास्ते से गुजरती है। वहाँ, उत्तर में, उस बड़े झुकाव के ऊपर, यह तराई छोड़कर पर्वत-श्रेणी लाँघती हुई, दूसरी तराई में पहुँच जाती है—क्यों, कोई मनुष्य नहीं जानता।

जहाँ नदी पर्वत-श्रेणी को लाँघती है, उस स्थल को द' नैरोज़ कहते हैं। तीस मील लम्बी इस पर्वत-श्रेणी के कई नाम हैं–द' सक, द' बायलिंग पाट, द' स्किलेट और द' फ्राइंग पैन। यहाँ ऊँचे और संकरे किनारों के बीच भँवर काटता हुआ पानी जमा है। पानी की धारा यहाँ बड़ी ही उग्र और अनियंत्रित है। लोग यहाँ मर चुके हैं।

द' नैरोज़ से उस बड़े झुकाव तक, नीचे, चिकामाउगा प्रदेश है। पूरे प्रदेश में पाँच शहर हैं। चेरोकियों में जो महत्वाकांक्षी थे, वे गोरे आदमियों से बचने के लिए यहाँ आये थे और काफी समय तक वे बचे भी रहे। उन्होंने यहाँ पाँच शहर बसाये, उनके नाम दिये, यहाँ की जमीन पर अपना अधिकार जमाया, मनुष्य और इतिहास के विरुद्ध इसे अपने अधिकार में रखा। विरोधों

के बीच उनकी यह सम्पत्ति, विदेशी राज्यों द्वारा चारों ओर से घिरे हुए किसी राज्य के समान ही था! वे उस जमीन में अपनी अमनानता और दुराग्रहता तब तक भरते रहे, जब तक वह जमीन साधारण जमीन से भिन्न नहीं हो गयी--ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार उनकी नदी किसी भी नदी की तुलना में भिन्न है!

पहले उन्होंने युद्ध के जरिये और बाद में, परिवर्तन का सहारा लेकर, इसे अपने अधिकार में रखा। परिवर्तन से अर्थ है, स्वयं को गोरे आदमियों के ढाँचे में ढाल कर। दक्षिणी अंचल से शुरू होने वाली खेती की अर्थव्यवस्था और उत्तर से अतिक्रमण करने वाली, छोटे खेतों और उद्योगों की भूमि-मुक्त-प्रणाली के विरुद्ध, उन्होंने डा' नेगेज़ से उस झुकाव तक की जमीन पर अपना अधिकार रखा और यह एकमात्र उनकी ही जमीन थी। थोड़े-से गोरे आदमी वहाँ घुसे; लेकिन चिकामाउगा, अर्थात गोरे रेड इंडियन बनकर ही। ये गोरे भी महत्वाकांक्षी थे। इन गोरों में एक का नाम डेविड डनबार था। वह बहुत अंशों में इंडियन था, यद्यपि वह चिरोकी के बजाय चिकसा था; किन्तु उसका खून गर्म और उग्र था, जिसके कारण उसने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

इंडियनों को उनके अधिकार से वंचित कर दिया गया। यह गोरों के पूरे राष्ट्र के लिए लज्जाजनक बात थी; लेकिन यह कोई नयी बात तो थी नहीं, अतः उन्होंने बिना किसी हिचक के यह काम कर डाला। लेकिन अपने पीछे वे इस जमीन पर अपने प्रतीक भी छोड़ गये--डेविड डनबार की तरह के मनुष्य, जो अपने रक्त से इंडियन से अधिक गोरे थे; लेकिन अपने विचार और विश्वास में गोरे से अधिक इंडियन थे। दूसरे लोग भी आये, जो विशुद्ध गोरे थे। वे इंडियनों का स्थान लेने आये थे, उनकी जमीन को अपनी बनाने आये थे; लेकिन उल्टा वहाँ की जमीन ने ही उन्हें अपना बना लिया। उसने अपने वैचित्र्य के चिह्न उन पर भी अंकित कर दिये।

इंडियनों के चले जाने के बाद, शांति के लिए बहुत कम समय था। किन्तु यह जमीन पहले भी एक-एक करके कई व्यक्तियों को मरते देख चुकी थी, अतः वे अपनी मृत्यु का इस पर कोई चिह्न अंकित नहीं कर पाये। यहां नहीं। उत्तर और दक्षिण में, उनकी मौत के कारण जमीन कुचल गयी, निर्जीव हो गयी; किन्तु यहाँ वे शांतिपूर्वक मरे। चट्टानों और पेड़ों के बीच, गंदले, भंवर काटते हुए पानी में उनकी मौत हुई; क्योंकि उन्होंने नदी से लड़ने का प्रयास किया था, उसे अपने वश में करना चाहा था। जमीन और नदी ने उनके इस उपद्रव को अपने

गर्भ में बड़ी खूबसूरती से छुपा लिया, सो उनके स्मारक बनाने के लिए कोई स्थान नहीं रहा। यही वह जगह है, जहाँ यह सब हुआ।

यह नदी है—चिकामाउगा, उग्र और महत्वाकांक्षी, जो एक पर्वत-श्रेणी के बीच से बहुत बड़े पैमाने पर, बे-समझे-बूझे उसे काटती हुई, एक नयी तराई की तलाश में अपना रास्ता बनाती चली जाती है। यह दक्षिण की ओर बहने वाली एक नदी है, जो पुनः उत्तर की ओर मुड़कर उस नीली जल धारा में मिलने चली जाती है, जिसमें इसे कभी नहीं मिलना चाहिए था। और यही वह जमीन है, जो इस नदी की सम्पत्ति है—द' नेरोज से उस बड़े झुकाव तक की जमीन। नदी के अपने लम्बे सफर में, इसके किनारों पर की सभी जमीन में यह जमीन विशेष रूप से इसलिए इसकी है कि यह भी नदी के समान ही बड़ी अनियंत्रित और बेमेल है। धन के बल पर इसे नियंत्रित करना और यहाँ बसना अभी भी आसान नहीं है। इसकी भयानकता के बीच आराम और घर का सुख असम्भव-सा ही है। यह वैभिन्य और अशांति का प्रदेश है, जिसने कभी शांति देखी ही नहीं। यह अनियंत्रित और असमतल जमीन है। इसके पृष्ठभाग में विशाल और वृहत् पर्वतों की एक कतार-सी है, जो दक्षिण की ओर धीरे-धीरे कम होती चली गयी है। यहाँ पानी के चश्मे हैं, दर्रे और घाटियाँ हैं और नदी जहाँ गहरी है, इन घाटियों का झुकाव वहाँ से दूर है।

सारी जमीन से अलग, यहीं वह विशिष्ट जमीन है, जिसका नामकरण डेविड डनबार नामक एक गोरे इंडियन ने किया था—चिरोकी और चिकमाउगा नहीं, बल्कि चिकना! इस जमीन के ऊपर एक बार फिर एक वायुयान आकाश में चक्कर काट रहा है। इस नदी की उग्रता पर अपने दाँव-पेच का सिक्का जमाने का लोग फिर प्रयास कर रहे हैं। वे बड़ी निडरता के साथ अपने स्वप्न को मूर्त रूप देने के लिए तैयारियाँ कर रहे हैं; क्योंकि युद्ध के दाँव-पेच के लिए विपक्षी के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

किंतु डनबार की इस जमीन पर वायुयान दिखायी नहीं देता है। यहाँ एक घाटी है—एक कंदरा का आकार बनाती हुई जमीन यहाँ झुक गयी है। यहाँ से दूर, जहाँ कंदरा से निकल कर खुली जगह आती है, नदी एक संकीर्ण सोते के रूप में बहती है। वहाँ घाटी में प्रवेश करती हुई धूल-भरी एक सड़क है। वहाँ से लेकर पहाड़ियों की ढलान तक की धरती बड़ी समृद्ध और उपजाऊ है—यहाँ पर्याप्त अनाज उपजाया जाता है।

यहीं, घाटी के मुख से कोई अधिक दूर नहीं, भीतर, एक बड़ा-सा मकान

है। जब पहले-पहल यह मकान बनाया गया था, तो बहुत छोटा था; क्योंकि बाद के वर्षों में परिवारों की वृद्धि होने के साथ, इसमें बहुत-कुछ जोड़ा गया है, इसे बढ़ाया गया है। यह मकान रंगा हुआ नहीं है। यह बहुत बड़ा और जीर्ण है और इसे बनाने में किसी नियम का विचार नहीं किया गया है। कभी यहाँ लकड़ी का मकान था, लेकिन उसे तोड़ दिया गया। अब यहाँ धूमिल, जीर्ण और स्थिर खड़ा यह मकान है। इसने मौसमों के थपेड़े झेले हैं और उस विशाल बलूत के पेड़ के नीचे यहाँ सदा ठंडक रहती है, जो सामने के घासहीन आँगन को अपना साया देता है। पूरा मकान ठीक बीच से दो भागों में विभक्त है, जिन्हें एक भीतरी बरामदा एक दूसरे से जोड़ता है। यह जगह भी ठंडी है और रविवार के तीसरे पहर की गर्मी में यहाँ मनुष्य और कुत्ते आराम से सोते हैं।

मकान के पिछले आँगन में भी घास नहीं है। धूल से भरी इस जमीन पर सूरज की रोशनी पड़ती रहती है। यहाँ राखों के ढेर के ऊपर पानी से भरा एक बरतन है, जिससे जूठे बरतन साफ किये जाते हैं, हाथ पैर धोये जाते हैं। यहाँ एक बेंच भी है, जिस पर टब रखे हुए हैं और जो उनके भार से मकान के दीवार की ओर झुक गयी है। इससे परे खलिहान है, जो न तो मकान की तरह बड़ा है, न उतने अच्छे ढंग से बनाया गया है—समय की मार ने इसे जगह-जगह से टेढ़ा कर दिया है—इसकी समानता कायम नहीं रह पायी है। यहाँ रहने वाले लोगों को इसकी चिंता नहीं है; क्योंकि वे सम्पत्ति से अधिक जीवन में विश्वास करते हैं। खलिहान और खलिहान की जमीन की उस ओर फिर खेत हैं। सोते के किनारे-किनारे यह काली-दलदली जमीन उस दिशा में बढ़ती चली गयी है, जहाँ मिट्टी एक ढेर के रूप में धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठकर एक-दूसरे को आलिंगनबद्ध किये हुई पहाड़ियों में बदल गयी है और जहाँ अधिक उजाला है। घाटी के उदर से होकर नदी की तलाश में गुजरने वाले जल के धीमे और धैर्ययुक्त श्रम ने इस जमीन को उर्वरता का भांडार बना दिया है।

यहाँ नीरवता है और शांति है। पिछवाड़े के आँगन की धूल में श्वेत पालतू मुर्गियाँ लोट रही हैं। दिन गर्म है; लेकिन पत्थर की उस बड़ी चिमनी से धुएँ के पतले लच्छे बाहर निकलते दिखायी दे रहे हैं, जो सूरज की रोशनी में चमक उठते हैं। मकान के रहनेवाले बड़े कमरे में यह चिमनी बनी है। साल-भर उस अंगीठी में आग जलती रहती है। सबसे पहले डेविड डनबार ने अपने हाथों से यह आग जलायी थी, जो उसकी अंतिम साँस तक जलती रही,

जो उसके बेटों तथा पोतों की अंतिम साँसों तक जलती रही और मैथ्यू डनबार को यकीन है कि यह उसके जीवन-पर्यंत भी जलती रहेगी।

दूर, खेतों में, मनुष्य और पशु काम कर रहे हैं। इनकी जमीन के ऊपर चक्कर काटता हुआ जो वायुयान जमीन का नक्शा तैयार कर रहा है, उसकी भनभनाहट पर ये आँखें उठाकर ऊपर नहीं देखते; क्योंकि इन्हें इसकी कोई जरूरत नहीं है। दूसरे व्यक्तियों के दूरस्थ स्वप्न यहाँ इन्हें नहीं छू सकते; इनकी जमीन और इनकी नदी पर उन व्यक्तियों के दाँव-पेच नहीं चल सकते। क्योंकि यह इनका घर है। यह डनबार की घाटी है।

प्रकरण एक

उस झुरमुट के बीच हैटी अपनी एड़ियों के बल बैठ गयी। वह उन पेचीली सड़कों को, जिन्हें देखकर अब तक उसे एक प्रकार की खुशी होती थी, एक असंतोष के भाव से निहार रही थी। उसके दुबले-गंदे पैरों के निकट ही, नसवार की बोतलों की बनायी गयी उसकी मोटरें उसका इंतजार कर रही थीं; किंतु आज वह खेलने में किसी भी तरह स्वयं को नहीं बहला पा रही थी।

हैटी की उम्र बारह साल थी। उसने जो सूती पोशाक पहन रखी थी, उसके भीतर ढँकी उसकी काया बड़ी दुबली-पतली और अविकसित थी। उसके पैर तथा पिंडलियाँ लम्बी और पतली थीं—किसी बिल्ली के पैरों के समान ही। उसके पैर तनिक भी एक औरत के पैरों की तरह नहीं लगते थे। वह अपने पैरों से भी बहुत असंतुष्ट थी। उसका मुख दुबला, साफ और गेहुएँ रंग का था और आँखें बड़ी, काली और चमकीली थीं।

नसवार की बोतलों में से एक बोतल को, उसने नीचे पहुँच कर, सड़क की ओर लुढ़का दिया। तब वह फिर रुक गयी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। इस झुरमुट में उसने अपनी संस्कृति का निर्माण इतना पहले आरम्भ किया था कि अब वह मुश्किल से ही उसे याद कर पा रही थी। निश्चय ही, यह पिछले वर्ष से पहले कभी की बात होगी, जब पहली बार उसने इसकी सम्भावनाओं पर विचार किया था।

यह एक बड़ा झुरमुट था। पहाड़ी की निकटस्थ ढलान से लेकर मकान के पिछवाड़े तक यह फैला हुआ था। पिछवाड़ा खाली पड़ा था, सूरज की रोशनी

बे-रोक-टोक यहाँ पहुँचती थी और यह तपता रहता था। किंतु यहाँ, झुरमुट में, अगस्त महीने के सबसे अधिक गरम दिनों में भी ठंडक रहती थी। शुरू में तो यहाँ गिरे हुए पत्तों की एक मोटी परत थी—सूखे और शीर्ष की ओर भूरापन लिये हुए पत्तों की, जो मिट्टी से मिलकर धीरे-धीरे मिट्टी का रूप ले रहे थे। पालतू मुर्गियों और सूअरों का समूह, जिसने झुरमुट में अपना निवास बना रखा था, कभी-कभी नोच-खसोट कर उसे बेतरतीब कर देता था। झाड़ियाँ जमीन से सटी थीं और सख़्त, खुरदरी शाखाओं के कारण किसी वयस्क का उनके भीतर प्रवेश पाना कठिन था।

दादा हमेशा 'गैरेट' में डूबे रहते थे, जिसे मैथ्यू शहर से मोटी-भूरी रंग की बोतलों में ले आया था। ये बोतलें आसानी से हाथों की पकड़ में आ जाती थीं। सो, नसवार की बोतलों की प्राप्ति के बारे में निश्चिंत होकर ही हैटी ने उस विचार को अच्छी तरह ग्रहण कर लिया था, जो उसे आरम्भ से प्रायः ही घेरे रहता था।

और अब यह उसे पसंद नहीं था। झुरमुट उन सड़कों से भरा था, जिन्हें उसने बड़ी सावधानी से बनाया था। जमीन पर बिछे पत्तों से लेकर खाली जमीन तक उसने खोद-खोद कर सड़कें बनायी थीं और अपने इस काम में बाधा डालने वाली जड़ों को काट फेंकने के लिए, उसने आर्लिस के रसोईघर से एक चाकू मँगनी लिया था। वह अगर अपनी मोटरों के झुंड में से एक को भी उन सड़कों पर ढकेल देती, तो उसके द्वारा बनाये गये चक्करदार मोड़ों से उसे गुजरने में कम-से-कम आधा घंटा लग जाने की सम्भावना थी और इतनी देर वह स्वयं को व्यस्त रख सकती थी।

पिछली गर्मियों की ही बात है। लगभग प्रति दिन वह सुबह के नाश्ते के बाद झुरमुट में जा घुसती और फिर दोपहर के खाने का जब तक वक्त नहीं होता, वहीं बनी रहती। जब किसी आवश्यक काम से उसे पुकारा जाता अथवा कोई बड़ा आदमी बुरी तरह से उसे झिड़कने लगता, तभी वह वहाँ से बाहर निकलती। किंतु अब......उसने अपने बायें पैर के अंगूठे से बोतल को कुछ दूर और लुढ़का दिया और स्वयं खड़ी हो, वह सुनती रही। शीघ्र ही आर्लिस उसे पुकारेगी और तब वह, क्या करे, क्या न करे, की इस स्थिति से छुटकारा पा जायेगी।

समय का उसे अच्छा अंदाज था। लगभग उसी वक्त रसोईघर के जालीदार दरवाजे के खोले जाने की आवाज़ आयी और साथ ही, आर्लिस की आवाज़ सुनायी पड़ी—

"हैटी! मर्दों के लिए पानी ले जाने का समय हो गया है।"

तनिक-सी अनिच्छा प्रकट किये बिना ही वह खड़ी हो गयी। सख्त झाड़ियाँ उसकी पीठ में चुभ रही थीं। "यह बच्चों का काम है"—उसने तिरस्कार के स्वर में जोर से कहा। झुरमुट में प्रवेश के साथ ही उसके मन में जो कटुता आ गयी थी, वह उसकी वाणी में स्पष्ट हो उठी!

आर्लिस पिछले बरामदे में खड़ी थी। अपने 'देवस्थल' से हैटी को इतनी जल्दी बाहर आते देख वह आश्चर्य-अवाक् हो गयी। वह हैटी को तब तक देखती रही, जब तक वह सामने का आँगन पार कर, गर्म धूल में सावधानी से नंगे पैरों चलती हुई बरामदे में, उसकी बगल में नहीं आ गयी। उसने उसके कपाल पर हाथ रखकर देखा।

"तुम्हारी तबीयत ठीक तो है, हैटी?" उसने चिंतित स्वर में प्रश्न किया—"निश्चय ही, तुम्हारी तबीयत खराब होगी, तभी पहली बार पुकारते ही चली आयी।"

रसोईघर की गर्मी से पसीने के कारण आर्लिस का हाथ गीला था। हैटी ने अपना माथा उससे दूर झटक दिया। "मेरे खयाल से यह मैं भी जानती हूँ कि उन मर्दों को कब प्यास लगती है—" वह कुछ तीखेपन से बोली—"पानी की बाल्टी कहाँ है?"

आर्लिस हँस पड़ी। रसोईघर में वापस मुड़ती हुई बोली—"मैं ले आती हूँ।"

दरवाजे के उस ओर वह रुक गयी। रसोईघर की अंगीठी की गर्मी उस तक पहुँच रही थी। वह पावरोटी बना रही थी। आज, जब कि इतनी गर्मी पड़ रही थी, वह पावरोटी क्यों बनाने बैठी, यह वह स्वयं भी नहीं कह सकती थी। लेकिन उसकी माँ भी तो हमेशा मंगलवार को पावरोटी बनाया करती थी। पूरे रसोईघर में फैली हुई, हल्की-हल्की रोटी के खमीर की सुगंध उसके नथुनों तक पहुँच रही थी। रसोईघर के जालीदार दरवाजे के उस ओर हैटी तक भी रोटी की सुगंध पहुँच रही है, यह वह जानती थी। रुक कर एक तैयार रोटी के उसने दो मोटे-मोटे टुकड़े काटे और उन पर मक्खन लगाकर चीनी डाल दी।

रसोईघर बड़ा और खाली था। सिर्फ एक दीवार के सहारे लकड़ी की एक आलमारी खड़ी थी—तश्तरियाँ और खाने-पीने की चीजें रखने के लिए। बीच में, बलूत की एक बड़ी, गोल मेज रखी थी, जिसकी पालिश पुरानी हो गयी

थी। अभी उस पर सफेद धुला कपड़ा बिछा था और उस पर उसके द्वारा तैयार की गयी रोटियाँ रखी हुई थीं।

आर्लिस के अनुकूल ही यह रसोईघर था। वह काफी बड़ी, बल्कि मोटी-ताजी थी। रंग उसका तेज था और चेहरे पर सदा हँसी थिरकती रहती थी। अंगीठी की गर्मी से उसका रंग और भी निखर आया था। उसने पतली सूती पोशाक पहन रखी थी। उसके उरोज काफी बड़े थे; किंतु उसके शरीर की बनावट के कारण वे बड़े नहीं मालूम होते थे। उसके पैर बड़े हृष्ट पुष्ट थे और टखने काफी माँसल—पूरे शरीर में सबसे अनाकर्षक भाग यही था। उसकी उम्र बीस साल थी।

मक्खन और चीनी देकर बनाया गया वह सैंडविच तैयार हो गया। उसने एक कील पर टँगी शरबतवाली साफ बाल्टी उतार ली और बरामदे में आयी, जहाँ हैटी उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी।

"मैं जानती हूँ, ताजी रोटी की सुगंध से तुम्हारे मुँह में पानी आ रहा है—" वह बोली—"यह लो।" उसने अपना सैंडविचवाला हाथ आगे बढ़ा दिया, दूसरे हाथ में बाल्टी थी।

"मैंने तुमसे खाने के लिए माँगा तो नहीं था।" हैटी नाराज-सी होकर बोली। लेकिन साथ ही वह मुस्करा भी पड़ी, ताकि आर्लिस उसकी नाराजगी सच न मान बैठे। उसने जल्दी से सैंडविच ले लिया। "कौनी कहाँ है?" उसने पूछा।

भीतरी बरामदे के उस ओर, उस पुराने मकान के दूसरे हिस्से की ओर संकेत करते हुए अपने सिर को आर्लिस ने झटका दिया—"तुम्हारा क्या खयाल है, कहाँ है वह? भीतर साज-शृंगार कर रही है। लेकिन अब तुम जाओ। जब तक तुम वहाँ पहुँचोगी, लोगों की जीभ प्यास के मारे बाहर लटक आयेगी।"

"मैं जा रही हूँ—" हैटी बोली—"पर पहले मुझे खा तो लेने दो।" वह जल्दी-जल्दी खाने लगी। मुँह में रोटी ठूँसते हुए, वह अपनी बहन की ओर मूर्खों की तरह देख रही थी। आर्लिस के दिमाग में फिर यह बात आयी कि, उसके कुरूप और अपूर्ण चेहरे में उसकी काली आँखें कितनी खूबसूरत लग रही थीं। "बहुत स्वादिष्ट बनी है रोटी, आर्लिस! तुम शादी क्यों नहीं कर लेती हो?...कोई भी पुरुष उस नारी से शादी करने को तैयार हो जायेगा, जो प्रत्येक मंगलवार को नियमपूर्वक इतनी अच्छी रोटी बनाती है।"

आर्लिस ने हैटी की ओर घूर कर देखा। उसके मन में कोमलता की भावना जो अभी उठी ही थी, सहसा झुँझलाहट में बदल गयी। "हे भगवान!" वह सोचने लगी। "विवाह कर लूँ?" प्रत्यक्ष में बोली वह और घूम कर

रसोईघर की ओर वापस चल पड़ी। "जिस घर में सिर्फ मर्द-ही-मर्द हों और तुम्हारी देखभाल करने की जिम्मेदारी भी मुझ पर हो, भला मुझे विवाह करने का मौका मिल ही कैसे सकता है?"

उसे उम्मीद थी, हैटी अब चली जायेगी; लेकिन हैटी उसके पीछे-पीछे रसोईघर में आ रही थी। गर्मी के कारण अपने ऊपरी होंठ पर छलक आये स्वेद-बिंदुओं का अनुभव आलिस कर रही थी और उसने उन्हें पोंछने के लिए हाथ उठाया। उसे रोटी बनाने का काम जल्दी समाप्त करना होगा, जिससे मर्दों के खाने के समय तक रसोईघर का वातावरण ठंडा हो जाये। गर्म रसोईघर मर्द नहीं बर्दाश्त कर सकते।

हैटी अपने ही विचारों में लीन थी। "हाँ, आलिस।" उसने कहा—"तुम्हारे रोटी बनाने की इस खूबी के कारण कोई भी युवा और खूबसूरत पुरुष तुमसे विवाह कर लेगा।" वह कुछ विचार-सी करती हुई चुप लगा गयी। "लेकिन तब—" वह आगे बोली—"इस घर में कौनी ही एकमात्र विवाहित औरत है और मैं जानती हूँ, वह रोटी बनाना नहीं जानती—न उसे बनाने का ढंग ही मालूम है और न इसके प्रति उसकी रुचि ही है!"

आलिस जैसे क्रुद्ध हो उठी। "तुम अभी बहुत-कुछ सीखोगी, लड़की।" वह कठोरता से बोली—"एक खूबसूरत और इच्छुक लड़की का विवाह, विश्व में सबसे बढ़िया और हल्की-फुल्की रोटियाँ बनाने वाली की तुलना में, कहीं जल्दी होगा। अपनी भाभी को ही देख लो तुम!" आलिस जब भी कौनी के प्रति रुष्ट रहती, उसे 'अपनी (हैटी की) भाभी' कहती, जैसे किसी-न-किसी रूप में सारा दोष हैटी का ही था।

"मुझे दोष मत दो—" हैटी ने कहा—"तुम्हारे भाई जैसे जान ने उससे विवाह किया है, मैंने नहीं। मैं उससे शादी नहीं करूँगी—हजार वर्षों में भी नहीं।"

आलिस ने रसोईघर की अंगीठी का ढक्कन खोला और कुछ और लकड़ियाँ डाल दीं। गर्मी से उसका चेहरा लाल हो उठा। फिर उसने भट्टी का ढक्कन हटाया—रोटी की भीनी-सोंधी गंध कमरे में फैल गयी। उसने जल्दी से ढक्कन बंद कर दिया और सीधी खड़ी हो गयी।

"तुम अब जाओ—" उसने चारों ओर देखते हुए कहा। लेकिन हैटी तो अब तक जा भी चुकी थी। उसने एक ठंडी साँस भरी। साथ ही हँस भी पड़ी। ओफ! कैसे-कैसे सवाल यह लड़की पूछती है!

किंतु हैटी बाहर बगीचे में जाने के बजाय भीतरी बरामदे में चली गयी थी। नंगी सतहवाली दहलीज से वह गुजरी और कौनी व जेसे जान के कमरे में झाँक कर उसने देखा। कौनी उस सस्ते श्रृंगार-मेज के सामने बैठी थी, जिसे उसने 'सीअर्स ऐंड रोबक' से 'आर्डर' देकर मँगाने के लिए जेसे जान को बाध्य कर दिया था। हैटी को वह श्रृंगार-मेज कभी पसंद नहीं आयी थी। वह धूमिल हल्के रंग की लकड़ी की बनी थी और उसमें, हैटी के विचार से, जरूरत से ज्यादा नक्काशी थी। उस बड़े शीशे के चारों ओर लगे चौखटे की नक्काशियों में चारों ओर नीले-नीले फूल बनाये हुए थे। लेकिन कौनी ने तो शुरू से ही सिर्फ उस आइने की इच्छा की थी। इसका चौखट कैसा है, इसकी उसे परवाह नहीं थी। हैटी किसी आलोचक की तरह ही देखती रही, जब कौनी लिपस्टिक लगने के लिए आइने की ओर थोड़ा और झुकी। उसने सिर्फ एक ढीली-ढाली पोशाक पहन रखी थी, जिसके अंदर से पतले रेयन की उसकी कंचुकी साफ-साफ झलक रही थी। उसका दुबला पतला शरीर आर्लिस के भरे-पूरे शरीर की तुलना में कमजोर दीख रहा था।

"तुम लिपस्टिक इतना चौड़ा क्यों लगाती हो?" कमरे में एक कदम रखते हुए हैटी ने पूछा—"जहाँ होंठ नहीं हैं, तुम वहाँ भी लिपस्टिक लगा रही हो।"

कौनी उछल पड़ी। जितनी सावधानी से वह लिपस्टिक लगा रही थी, वह सब लिप-पुत गया। वह झटके से घूमी। "हे भगवान्!" वह बोली—"तुमने तो अभी मुझे डरा ही दिया था, लड़की!"

हैटी ने सावधानीपूर्वक उसके बोलने का लहजा सुना और तब वह कमरे में आगे बढ़ी। कभी-कभी कौनी की आवाज में निश्चित रूप से प्रवेश-निषेध की ध्वनि रहती थी।

"खैर, तुम किसके लिए लगा रही हो, इसे?" उसने पूछा।

कौनी ने उसकी ओर घूरते हुए देखा। यह लड़की सदा इसी तरह किसी के पीछे ताक-झाँक करती रहती थी—चुपचाप पीछे से आना और अचानक कुछ कह कर चौंका देना। और स्वभावतः ही कौनी घबड़ा गयी थी—हमेशा घबड़ा जाती थी। उसके बोलने का लहजा बदल गया।

"मेरे और जेसे जान के कमरे में तुम क्या कर रही हो?" उसने तीव्र स्वर में कहा—"तुम्हें अब तक खेतों में पानी ले कर चले जाना चाहिए था।"

हैटी एक कदम पीछे हट आयी। "मेरे विचार से मुझे क्या करना है, यह

बताने के लिए आर्लिस ही पर्याप्त है—" उसने बड़ी नम्रता से कहा—"जेसे जान को लिपस्टिक तनिक भी पसंद नहीं है। उसे ऐसा कहते हुए मैं सुन चुकी हूँ।"

"जेसे जान क्या पसंद करता है, इससे यहाँ कोई मतलब नहीं—" कौनी कड़े स्वर में बोली—"पहले तो मैं उसके लिए इसे लगाती ही नहीं हूँ। अब तुम यहाँ से निकल जाओ।"

नाश्ते की जूठी तश्तरियाँ जो कौनी धो आयी थी, उन्हें आर्लिस को फिर से धोना पड़ा था। इस बारे में कुछ कहना उचित होगा क्या—यही सोचती हुई हैटी एक पैर से वहाँ खड़ी रही। लेकिन इस सम्बंध में कुछ नहीं कहने का ही उसने फैसला किया। उसने पुनः शृंगार-मेज की ओर देखा और पहले से भी अधिक सूक्ष्मता से देखा! वे नीले फूल उसे तनिक पसंद नहीं थे—यह तय था।

"आह!" वह बोली—"निश्चय ही, यह एक सुंदर शृंगार-मेज है। जितनी बार मैं इसे देखती हूँ, यह पहले से ज्यादा अच्छा लगता है।"

कौनी मुस्करायी। उसका रोष भी कम हो गया। पिछले हेमंत में, जेसे जान के हिस्से में, कपास की बिक्री से, जो रुपये आये थे, उनमें से इस शृंगार-मेज के लिए पैसे पाने में, उसे काफी मेहनत करनी पड़ी थी। जेसे जान की इच्छा थी नाक्स की तरह ही एक नयी बंदूक लेने की, जैसे वह कोई बहुत ही अच्छा निशानेबाज हो और सही निशाने पर गोली चला सकता हो!

"यहाँ आ जाओ—" वह बोली—"और खुद ही आइने में देखो न। तुम इस बेंच पर खड़ी होकर अपनी पूरी आकृति आइने में देख सकती हो!"

"जी नहीं, धन्यवाद महोदया!" हैटी ने गर्व के साथ कहा—"मेरे खयाल से अब मुझे खेतों में पानी ले जाना चाहिए।"

वह बाहर चली गयी और भीतरी बरामदे से होकर फिर गुजरी। "हैटी!" जब वह रसोईघर से गुजरी, आर्लिस ने पुकारा—"अगर तुम नहीं..."

मेज पर से रोटी का एक टुकड़ा हैटी ने उठा लिया और उसी तरह चलती रही। "अब मैं जा रही हूँ—" वह बोली—"वे मर्द अभी से ही ठंडक महसूस कर सकते हैं।"

हैटी पिछवाड़े में बने कुएँ के पास चली गयी। कुएँ में लगी जंजीर उसने ढीली कर दी। जंग खायी हुई घिरनी पर जंजीर की रगड़ से उत्पन्न चीं-ची का गीत उसके कानों से टकरा रहा था। बाल्टी तले से टकरायी और अचानक जंजीर वजनदार हो उठी। उसने इसके मुकाबले में अपने दुबले-पतले शरीर की

सारी ताकत लगा दी। जब तक पानी से भरी टपकनेवाली बाल्टी खिंचकर कुएँ के बाहर आयी, उसकी बाँह दुखने लगी थी। उसने उसे पत्थर पर टिका दिया और क्षणभर तक हाँफती रही। तब उसने बाल्टी झुकाकर पानी पिया। शैवाल से आच्छादित, ठंडे पानी ने जब तक उसके होंठों का स्पर्श नहीं किया था, उसने स्वयं भी यह नहीं सोचा था कि वह इतनी प्यासी है। तब गर्म खेत में काम करते हुए व्यक्तियों के बारे में उसने सोचा और अपराध की एक हल्की-सी भावना उसे स्पर्श कर गयी। आर्लिस हमेशा उसे ऐसे समय पुकारती थी, जब थोड़ी मटरगश्ती करने की छूट उसे होती थी; लेकिन आज तो निश्चित रूप से वह आलसी बनी रही।

जल्दी से उसने बाल्टी उठायी और एक गैलन वाली शरबत की उस खाली बाल्टी में पानी उड़ेल लिया। बाकी बचे हुए पानी को वह धीरे-धीरे अपने धूल-धूसरित पैरों पर डाल उन्हें ठंडक पहुँचाती रही। धूल कीचड़ बन गयी और उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने अंगूठों को दबाकर एक विशेष प्रकार की आवाज़ उससे निकाली। जान-बूझकर उसने तीन बार ऐसा किया और तब उसे जाना पड़ा।

उसने शरबत वाली वह रूपहली बाल्टी उठायी और खलिहान के साये से होकर खुले फाटक के रास्ते बाहर निकल गयी। एक बार वह रुकी और मुड़कर उसने मकान की ओर देखा। मकान के ऊपर तक उठा हुआ बलूत का वह बड़ा पेड़ किसी मीनार के समान ही लग रहा था। उसकी घनी-ठंडी शाखाएँ अगले बरामदे के ऊपर फैली हुई थीं। जब मैं लौटकर आऊँगी, तो यहीं खेलूँगी—उसने सोचा—झुरमुट के भीतर बड़ी गर्मी थी और अलावा...उसकी नजर अपने दादा पर पड़ी, जो मकान के नुक्कड़ से होकर, धीरे-धीरे बाहरी इमारत की ओर जा रहे थे। वह मिनट-भर तक उनका रेंगना देखती रही। उसे ताज्जुब हो रहा था कि ठीक समय पर वहाँ पहुँच जाने की बात वे किस प्रकार पहले से ही जान लेते थे। अपने लक्ष्य तक पहुँचने में उन्हें हमेशा कम-से कम तीस मिनट लगते थे।

खलिहान की मोड़ के पास, घर का पालतू सफेद मुर्गा उसकी ओर धृष्टता से कूदता हुआ बढ़ा। उसके पर कुछ दूर तक सीधे खड़े थे और अपने पैरों से मिट्टी खुरचते हुए वह मानो धमकी-सा दे रहा था।

"भाग यहाँ से—" वह उपेक्षा से बोली— "मैं कोई मुर्गी तो हूँ नहीं तुम्हारी।" उसने पैरों से धूल उड़ाकर उसे भयभीत कर दिया।

उसने अपनी चाल तेज कर दी; क्योंकि टिन की उस बाल्टी में पानी ज्यादा देर तक ठंडा नहीं रहनेवाला था। घाटी में काफी पीछे की ओर जाकर मर्द काम कर रहे थे और जब तक वह उनके ठीक सामने सोते के किनारे पर पहुँची, वह थक गयी थी और गर्मी महसूस कर रही थी। बाल्टी की तंग मूठ ने उसकी दोनों हथेलियों में जलन पैदा कर दी थी और वह एक हाथ से दूसरे हाथ में बाल्टी की अदला-बदली करती रही थी।

पुल पर पहुँचने के बाद वह उन लोगों को देख सकती थी। नाक्स 'बेढंगे जान' को लेकर, जो सबसे तेज खच्चर था, खेत में हल चला रहा था। वह हैटी के सबसे नजदीक भी था। उसने नजरें ऊपर उठायीं, उसे आते देखा और हँस पड़ा।

"पानी आ रहा है।" वह चिल्लाया और बाकी सभी लोगों ने अपना काम रोक दिया। वे सिर उठा-उठा कर देखने लगे। नाक्स देखने में जैसा विशालकाय था, उसकी आवाज़ भी वैसी ही थी, किंतु उसमें हल्की-सी घबराहट का आश्चर्यजनक ढंग से पुट रहता था। वह हमेशा जरूरत से ज्यादा जोर से बातें करता और पहाड़ियों में अपनी पूरी ताकत से चिल्लाना उसे पसंद था। फिर उनसे टकरा कर लौटनेवाली आवाज़—अपनी प्रतिध्वनि—वह सुना करता।

हैटी पुल से होकर आगे बढ़ी। उसके गतिवान पैरों के नीचे पुल के तख्ते काफी गर्म थे। वह नाक्स की बगल से निकली।

"हैटी!" उसने चापलूसी के स्वर में पुकारा, यद्यपि वह जानता था कि इससे कुछ नहीं होनेवाला है—"जो पानी तुम लिये जा रही हो, मेरा कंठ उसके लिए काफी सूख चुका है।"

"जब तक मैं तुम्हारे पास आऊँगी, तब तक तुम दो बार और हल चला लोगे—" हैटी ने तीव्रता से कहा—"अपनी जीभ समेट लो और अपना काम करते रहो।"

खेत के अंतिम सिरे पर मैथ्यू उसे दिखायी दे रहा था। मैथ्यू उस वक्त भी हल चला रहा था। किंतु वह ठहर नहीं सकती। अगर वह ठहरी, तो दूसरे लोग उसके पास पहले पहुँच जायेंगे।

बाद में राइस था। वह मौली को साथ ले हल चलाता हुआ, उसी की ओर आ रहा था। वह लम्बा और कृशकाय था। उसके पैर लम्बे थे, जो हल के दस्तों के बीच सीमित से हो कर रह गये थे।

"हैटी!" वह बोला। वह उसकी ओर अपने गहरे रंग वाले दुबले चेहरे से देखकर मुस्कराया, किंतु हैटी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी राह चलती रही।

जेसे जान ने, जब वह उसके पास से गुजरी, सिर उठाकर देखा भी नहीं। वह अपने हल में बोडक को जोते हुए था। बोडक सुस्त और आलसी खच्चर था, जो कभी कुछ खयाल नहीं करता था। बोडक को हमेशा जेसे जान ही अपने हल में जोतता था; क्योंकि दूसरे लड़के उसके साथ समय नष्ट करना पसंद नहीं करते थे। बोडक से काम लेने के लिए काफी श्रम करना पड़ता था। जिस क्षण आप आराम करने बैठ गये, वह भी आराम करने बैठ जाता था। यों वह सब खच्चरों में तेज और चुस्त नजर आता था।

"कौनी तुम्हारे लिए सज-धज रही है—" उधर से गुजरते हुए हैटी ने जेसे जान से कहा—"तुमने जो उसे आइना खरीद दिया है, उसके सामने वह दिन-भर बैठी रही है।"

उसने नजरें उठाकर हैटी की ओर देखा। उसका मुख संयत और गम्भीर था—हास्य की एक रेखा तक न थी। दूसरे लड़कों की तुलना में वह लम्बाई में छोटा था, उसके शरीर पर भूरे रंग के दाग थे और उसके बालों का रंग जंग खाये लाल रंग की तरह था।

"तुमने यह बता कर बहुत अच्छा किया, हैटी—" उसने कहा—"मैं शीघ्र ही उससे मिलने जाऊँगा।"

मैथ्यू अब उसकी ओर ही हल चलाता आ रहा था और हैटी ने अपने चलने की रफ्तार बढ़ा दी। ताजी खोदी मिट्टी के ढेर कपास के पौधों के पास पड़े थे। उनके ऊपर ठोकर खाती वह बढ़ती गयी। चलने के समय स्वयं को बीच में रखने की सावधानी वह बरत रही थी, यद्यपि पौधे काफी ऊँचे हो गये थे और फसल बिलकुल तैयार हो गयी थी, उसमें परिपक्वता आ गयी थी; किंतु वह अपनी असावधानी से किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी। उसके पास पहुँचने के पहले ही मैथ्यू ने हल चलाना बंद कर दिया और उसे आता देखता रहा। वह मुस्कराया।

"मैं तुम्हारे लिए बिलकुल ताजा पानी लायी हूँ, डैडी!" वह बोली।

मैथ्यू ने उसके हाथ से बाल्टी ले ली। "तुम्हें उन लड़कों को घूँट-भर पानी पहले देना चाहिए था—" उसने मधुरता से कहा—"बाल्टी लेकर ठीक उनकी बगल से गुजरते हुए यहाँ तक आने से वह ज्यादा अच्छा था।"

"और बोलिये!" हैटी ने उग्र होकर कहा—"जिससे आपके पीने के पहले ही उन्हें उसमें अपने मुँह की राल मिलाने को मिल जाता—है न?"

मैथ्यू ने उसकी ओर निहारा। अकेली वही उसे 'डैडी' पुकारती थी। परिवार के बाकी बच्चों के लिए वह 'पापा' था और वे उसे कुछ कहने के पहले 'महाशय' का प्रयोग करते थे। किंतु उसने हैटी को वैसा नहीं सिखाया था...वह भिन्न थी, वह सबसे छोटी थी न! उसने बाल्टी उठाकर अपने होंठों से लगा ली और एक प्यासे व्यक्ति के समान ही पीने लगा। उसके मुँह के कोरों से बहता हुआ पानी उसकी कमीज को टप-टप भिगो रहा था। उसने बाल्टी नीचे उतारी और अपने हाथ के पिछले भाग से अपना मुँह पोंछ लिया।

"यह काफी स्वादिष्ट पानी है, हैटी!" उसने गम्भीरतापूर्वक कहा—"मैं तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देता हूँ।"

वह दूसरों के पास जाने के लिए मुड़ी—"चार बजे के लगभग म थोड़ा पानी और ले आऊँगी—" उसने कहा।

मैथ्यू ने सिर हिला दिया। "मेरी धारणा है, तब तक हम अपना काम समाप्त कर लेंगे—" उसने कहा—"इस वर्ष के लिए फसल खड़ी करने का काम हम समाप्त ही कर चुके हैं। अब जाओ और उन लड़कों को, इससे पहले कि वे प्यास से जमीन पर पड़ रहें और हल्ला मचायें, पानी पिला दो।'

वह हैटी के जाते समय उसका दुबला-पतला झुका हुआ शरीर देखता रहा। पहले वह राइस को पानी देने के लिए रुकी। उन दोनों की बनावट एक ही किस्म की थी, एक छोटी लड़की और एक वयस्क लड़का—दोनों ही कृशकाय थे। हो सकता है, हैटी एक लम्बी लड़की हो जाये; लेकिन अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

नाक्स ने 'बेढंगे जान' को हल में जुता छोड़ दिया और उन लोगों में शामिल होने के लिए उस ओर बढ़ा। जैसे जान अंतिम सिरे पर अपना हल घुमा कर वापस इसी ओर आ रहा था। मैथ्यू ने अपना हाथ मुँह पर लाकर पोंछ डाला और अपने लिए सिगरेट बनाने लगा। उसकी आँखें अपने बच्चों को ही निहार रही थीं। काम के समय वह जो भूरे रंग की कमीज पहनता था, पसीने से भीग कर वह ठंडी लग रही थी और उसकी माँसपेशियाँ शिथिल और विश्राम की मुद्रा में थीं। वह स्वयं को स्वस्थ अनुभव कर रहा था। उसने उस खुली हवा में एक गहरी साँस ली। फसल खड़ी करने का समय हमेशा अच्छा होता था। जब पहली बार खेत जोते गये और रोपनी हुई

और जिस दिन वे खेतों में जमाव के लिए आये—वे सभी दिन भी एक प्रकार से अच्छे थे। मैथ्यू डनबार इसी धरती का निवासी था। हल के पीछे वह अपने छोटे और सबल पैरों पर स्थिरता से खड़ा था। वह एक गठीले बदन का व्यक्ति था। उसके शरीर की बनावट भारी थी और चेहरा चौड़ा, थोड़ा भूरापन लिये और हँसमुख था। वैसे चेहरे के लिए मुस्कराना आसान था, यद्यपि मैथ्यू में अधिक हँसने की प्रवृत्ति नहीं थी।

"कंट्री जेंटलमैन' मार्का तम्बाकू की थैली को अपनी उस लम्बी चौड़ी पोशाक की एक जेब में रखते हुए उसने सिगरेट सुलगाया। वह सदा धीमी गति से चलता था। उसके चलने के ढंग में हमेशा आत्मविश्वास झलकता था और आदत तथा स्वभाव के गुँथे हुए ढर्रे के बीच वह बड़ी आसानी से स्वयं को निभा ले जाता था। वह वहाँ धरती पर पैर जमाये खड़ा रहा और फिर अपने चारों ओर उसने देखा। और यह अच्छा ही हुआ।

वहाँ, दूर में, उसका घर था। उस बड़े वृक्ष के कारण वह सदा उसे दूर से ही बता सकता था। डनबार के बारे में प्रचलित कथा के अनुसार सबसे पहले डेविड डनबार नामक गोरे इंडियन ने वह वृक्ष कहीं और से लाकर वहाँ लगाया था। सोता भी उसी ओर बह रहा था, जो बाद में, मुड़कर बड़ी नदी में मिल गया था। घाटी का प्रवेश-द्वार भी उसे पसंद था। यहाँ, अधिकांश घाटियों की तरह, पहाड़ियाँ खुली और अलग-अलग होने के बजाय, नीचे की ओर संकीर्ण और एक-दूसरे के निकट होती चली गयी थीं। फिर यहाँ धूल से भरी सड़क और इस सोते को साया प्रदान करने वाले बहुत से पेड़ थे। घाटी में प्रवेश का रास्ता तो संकीर्ण था; लेकिन बाद में, उसका विस्तार सम्पूर्ण था। सोते के किनारे ही उपजाऊ जमीन फैलती चली आयी थी। उर्वरापन से भरपूर यह जमीन वहाँ से लेकर पहाड़ियों के किनारे तक फैली थी और वहाँ यह काली दलदली जमीन से साधारण जमीन का रूप ले चुकी थी।

उसने अपना सिगरेट खत्म कर एँड़ियों से मसल दिया और अपने चौड़े-मजबूत हाथों से हल के हत्थे पकड़ लिये। हत्थे जीर्ण, चिकने और बड़े आराम से हाथों की पकड़ में आ जाने वाले थे। मैथ्यू ने यह अनुभव किया और खच्चर को पुचकारा। वह तब तक हल चलाता रहा, जब तक हैटी और उसके द्वारा लाये गये ताजा पानी को चारों ओर से घेर कर खड़े लड़कों के झुंड के बराबर वह नहीं आ गया। नाक्स उसके सामने घुटने टेककर बैठा था। हँसता हुआ वह उसे खिझा रहा था। उसके खिझाने में भी उसकी चपलता

और उसकी घबराहट स्पष्ट थी। वह बड़ा था, स्वयं मैथ्यू के समान ही उसके शरीर की बनावट थी—तगड़ा और भारी-भरकम; लेकिन उसमें एक तीव्रता थी, एक बेचैनी, जो दूसरे किसी डनबार में नहीं थी।

उसकी ओर देखते हुए मैथ्यू के दिमाग में वही पुराना प्रश्न चक्कर काटने लगा—"क्या यही है वह?" उसने हल चलाना रोक दिया और हैटी को इठलाते और हास्य बिखेरते देखता रहा। उसके हाथ उत्तेजना से काँप रहे थे। यह प्रश्न हमेशा उसने दिमाग में अनायास ही उठ खड़ा होता था—ऐसे ही क्षणों में, जब वह अपने बच्चों को बच्चे मानकर नहीं, बल्कि वे जैसे थे, उसी रूप में देखने की कोशिश करता था—युवा और अपने-अपने ढंग से विकसित होते हुए बच्चे! डनबार की घाटी के लिए एक ही ढंग सर्वोत्तम था और उसका पता लगाने की जिम्मेदारी उसकी थी कि वह ढंग उसके किस लड़के में है।

पैतृक सम्पत्ति के रूप में डनबार की घाटी को कभी विभाजित नहीं किया गया—आरम्भ से ही नहीं! इसमें पूर्णता थी, एक सत्ता थी और मानव हृदय के समान ही अखंड था यह! मैथ्यू के पास यह इसी रूप में आया था और मैथ्यू भी इसकी सम्पूर्णता इसी तरह बनाये रखकर, किसी दूसरे को सौंप देगा।

मैथ्यू स्वयं ही अपने पिता का सबसे बड़ा लड़का नहीं था। जब उसके पिता ने उसका चुनाव किया था, वह क्षण उसे अब भी याद है। उसके पिता ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा था—"डनबार की घाटी का मालिक मैथ्यू होगा।" जब से होश हुआ, तब से ही इस घाटी को पाने की भूख मैथ्यू की रगों में समायी थी; फिर भी उसने अपने चुने जाने की उम्मीद नहीं की थी। वह जानता था और जैसा कि सभी जानते थे, प्रश्न परम्परा का नहीं, चुनाव का था—उसके परिवार का कोई भी पुरुष इसका उत्तराधिकारी बन सकता है—इसका स्वामी; सही अर्थों में मालिक। पुरुष ही क्यों, नारी भी स्वामिनी बन सकती है, यद्यपि अब तक कभी हुआ नहीं ऐसा।

उसे भी योग्य व्यक्ति का चुनाव करना है, जैसा कि उसके पहले के लोगों ने चुना था। क्योंकि डनबार की घाटी एक स्थायी चीज थी। ऐसे भी डनबार थे, जो यहाँ से बहुत दूर चले गये थे—यहाँ तक कि वे दूसरे राज्यों में रह रहे थे और कुछ ऐसे भी थे, जिनके सम्बंध में परिवार को कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन डनबार की घाटी अभी भी वहीं थी—उन लोगों में से प्रत्येक के लिए अब भी वह घर थी। उनकी उत्कृष्ट भावनाएँ यहीं का मार्गदर्शन करती थीं और वे सब

यह जानते थे कि जिस क्षण वे चाहें या जरूरत पड़े, वे वहाँ लौट सकते थे। डनबार की घाटी मैथ्यू की थी। किंतु बरबाद करने, टुकड़े-टुकड़े कर देने या फेंक देने के लिए यह उसकी नहीं थी। यह उसकी थी; लेकिन दूसरे डनबार को सौंप देने के लिए।

वह हैटी के साथ अपने लड़कों को देखता रहा। एक-एक कर प्रत्येक के सम्बंध में वह विचार कर रहा था। उनको देखते समय वह एक अस्पष्ट-सी बेचैनी का अनुभव कर रहा था। नाक्स उसकी सबसे बडी संतान था। निश्चय ही उसके लिए सबसे अधिक उम्मीद थी, जैसा कि परिवार की सबसे बड़ी संतान के लिए हमेशा होती है। वह लम्बा-चौड़ा, हृष्ट-पुष्ट शरीर का स्वामी होने के साथ ही व्यावहारिक था। सब ठीक था, सिवा इसके कि उसमें भगोड़ेपन की एक अजीब-सी प्रवृत्ति थी और उसकी आकृति से इसका आभास भी नहीं मिलता था। लड़कियों से मित्रता करने में तेज होने के साथ ही वह नृत्य का भी बड़ा शौकीन था; लेकिन यह कोई चिंता की बात नहीं थी—इस ओर से निश्चिंत रहा जा सकता है। किंतु उसकी वह अनोखी प्रवृत्ति, उसका उतावलापन—मैथ्यू इस सम्बंध में चिंतित था। नाक्स एक पक्षी के समान था, जो किसी क्षण वहाँ से उड़ जा सकता था।

जैसे जान! वह शादीशुदा था, उसके जीवन में स्थिरता आ गयी थी और वह शांत स्वभाव का होने के साथ ही ऐसा था, जिस पर निर्भर किया जा सके! किंतु वह अपनी पत्नी को स्वयं पर हावी हो जाने देता था। सम्भव है, वह बहुत कमजोर मन का हो, बहुत आरामपसंद हो! मैथ्यू ने मन-ही-मन नकारात्मक भाव से सिर हिलाया। जो व्यक्ति अपनी पत्नी तक को नहीं सँभाल सकता, उसे चुनने का अर्थ होगा, गलत चुनाव। बिस्तरे पर साथ में कोई मर्द और पेट में बच्चा—बस, कौनी इतना ही चाहती थी। एक अच्छी औरत इसके सिवा और कुछ चाहती भी नहीं और कौनी जिस परिवार की थी, उसके सम्बंध में वह जानता था। वह बगल की घाटी की रहने वाली थी और मैथ्यू शेल्डनों को आरम्भ से ही जानता आया था।

उसकी आँखें राइस पर अधिक देर तक टिकी रहीं। वह लम्बा युवक उसके लड़कों में सबसे छोटा लड़का था। अपने गहरे रंग और लम्बाई के बावजूद वह एक डनबार की तरह नहीं प्रतीत होता था। खून ने यहाँ आश्चर्यजनक ढंग से दूसरा रूप अख्तियार कर लिया था। किंतु वह सही माने में किसान था। मैथ्यू यह कह सकता था कि उसमें भूमि के प्रति लगाव था। एक किसान की

प्रसन्नता थी, जैसा मैथ्यू में स्वयं था। जब उसका हल उसके पैरों के आगे की धरती जोतता चलता था, तो उसे एक प्रकार की प्रसन्नता होती थी। किंतु राइस अभी सिर्फ १८ साल का था—उसके सम्बंध में अभी कुछ कहा जाये, इस हिसाब से वह अभी भी बच्चा था। १८ की उम्र ही क्या होती है! उसमें अभी भी तबदीली आ सकती थी और बीस साल का होते-होते उसका स्वभाव कुछ और हो जा सकता था। १८ की उम्र की स्थिति तो परिवर्तनशील है।

मैथ्यू ने सिर हिलाया। जिस स्थिरता से वह उन्हें परख रहा था, वह समाप्त-सी होती प्रतीत हुई। उसने बेचैनी अनुभव की, जो ऐसे मौकों पर वह हमेशा अनुभव करता था। कुछ भी स्पष्ट रूप से देख पाना, जानकारी प्राप्त कर लेना, कितना कठिन था और वह भी जब वे उसके अपने लड़के थे—उसके स्वयं के कितने निकट। उन्हें परखते वक्त जो माप-जोख की भावना उसके दिमाग में आती थी, वह जब समाप्त होती थी, तो उस अलगाव की भावना को भी अपने साथ ले जाती थी, जो उन्हें परखने की भावना के साथ ही मन में घर कर लेती थी और तब वह हमेशा खुश होता था। उसने हल के हत्थे के चारों ओर रस्सियाँ लपेट दीं और कपास की कतारों से होता हुआ, उन लोगों में शामिल होने के लिए आगे बढ़ा।

"अगर तुम्हें एतराज न हो, तो मैं थोड़ा पानी और पीऊँगा, हैटी!" उसने कहा—"मेरा गला अभी तक सूखा-सूखा लग रहा है।"

"मैंने तुम लोगों से कहा था न कि डैडी को थोड़ा और पानी चाहिए—" हैटी ने एक-एक कर सबको घूरते हुए कहा—"इन लोगों ने इसे लगभग खाली ही कर डाला है!"

"मुझे बस, एक घूँट चाहिए—" मैथ्यू ने सहज भाव से कहा। उसने बाल्टी ले ली और उसे खाली कर दिया। "आह!" उसने अपना मुँह पोंछते हुए कहा—"दुनिया में जो सबसे बढ़िया पानी है, हैटी वही लाती है।"

हैटी ने हँसते हुए आक्षेप के-से स्वर में कहा—"डैडी! यह तो कुएँ का वही पुराना पानी है।"

वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया—"लेकिन जब तू इसे लाती है, तो इसका स्वाद बदल जाता है, बेटी! इसमें प्यार का स्वाद मिला है।"

वह उसके भारी माँसल पैरों से लिपट कर झूल गयी—"क्या आपको सचमुच ही काम खतम करने के पहले दुबारा पानी नहीं चाहिए?"

नाक्स ने अपने पिता की ओर देखा। "आपका क्या अनुमान है, महाशय! हम लोगों को कितनी देर लगेगी यहा?" वह बोला—"आज रात्रि के नाच में शामिल होने का मेरा विचार था।"

"मैं भी जा रहा हूँ—" राइस ने जल्दी से कहा।

नाक्स उसकी ओर देखकर मुस्कराया—"बस, एक नाच में और तुम चारलेन को ले जाओ और फिर तुम नियमित रूप से वहाँ जाया करोगे।"

राइस ने उसकी ओर घूर कर देखा—"उसके ऊपर तुम्हारे नापाक हाथ अभी तक नहीं पड़े हैं, बेटे!"

नाक्स भी उसी प्रकार उद्दंडता से बोला—"अभी तो नहीं। मैं अभी उसके निकट पहुँचा नहीं हूँ। लेकिन जब मैं पहुँच जाऊँ, तो तुम्हारे लिए उसका साथ छोड़कर पीछे हट जाना ही अच्छा होगा।"

"लड़को!" मैथ्यू ने शांतिपूर्वक कहा।

उसकी आँखों का संकेत हैटी की ओर देखकर वे चुप हो गये। हैटी घूमी और उसने बाल्टी उठा ली।

"मैं जानती हूँ, तुम लोग क्या बातें कर रहे हो—" उसने घृणापूर्वक कहा —"मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

वह उन लोगों को छोड़ चल पड़ी। वह भी जानती थी यह। पिछले बसंत में उसने सूअर को सूअरियों के साथ मैथुनरत देखा था और फिर वह घर का पालतू सफेद बुड्ढा मुर्गा भी तो था, जो इस प्रकार व्यवहार करता था, मानो हैटी भी उसकी मुर्गियों में से है। वह इसे जानती थी और आज तक उसने जितनी बातें सुनी थीं, उसमें यह सबसे अधिक पागलपन की बात थी।

नाक्स कुछ घबड़ाया हुआ था। उसने हैटी की सीधी-कड़ी पीठ से अपने पिता के चेहरे की ओर देखा। वह जानता था कि बोलने में जिस स्वच्छंदता का उसने व्यवहार किया था, उसके लिए उसे ताड़ना मिलनी चाहिए। मैथ्यू की आँखें उसी पर टिकी थीं और उसने अपनी आँखें झुका लीं और अपने पैरों की ओर देखने लगा। वह चौबीस वर्ष का हो गया था। किंतु उसके पिता की आँखों में अभी भी शक्ति थी।

मैथ्यू ने खेत के चारों ओर देखा। "तुम सब यहाँ से खिसको और चलते-फिरते नजर आओ—" उसने कहा—"मैं यहाँ का काम अकेला ही समाप्त कर सकता हूँ। इससे रात का खाना खाने के पहले तुम्हें अपने श्रम-स्वेदों को धोने का समय मिल जायेगा।"

नाक्स और राइस प्रसन्नता से उछल पड़े और अपने खच्चरों को खोलने के लिए दौड़े। मैथ्यू मुस्कराता हुआ उन्हें देखता रहा। यों भी वह फसल खड़ी करने का यह काम बिलकुल अकेला खत्म करना चाहता था। साल में जब वह पहली बार खेत में हल चलाता था और जब अंतिम दिन की बारी आती थी, तो लड़कों को खेतों से दूर हटाने का कोई-न-कोई बहाना वह ढूँढ़ ही निकालता था। यह उसके एकांत का समय होता था—अपना काम बड़ी सावधानी, कोमलता और आदरपूर्वक करने का समय। अपने काम के लिए उसके दिल में जो भावना थी, वह गिरजा अथवा वहाँ के पवित्र शब्द भी कभी उत्पन्न नहीं कर सके।

उसने जेसे जान की ओर देखा। "तुम भी जाओ—" वह बोला—"उस नाच में जाने के लिए कौनी की भी इच्छा हो सकती है।"

"हाँ, महाशय!" जेसे जान ने कहा—"मैं जानता हूँ, वह वहाँ जाना चाहती है।" वह अपने पिता की ओर से मुड़ा और बोडक को खोलने के लिए धीरे-धीरे बढ़ा। कौनी जाना चाहती थी, यह ठीक था और वह जायेगी भी। जेसे जान को सचमुच ही इसका विश्वास था कि वह अगर उसे खुद नहीं ले जायेगा, तो वह अकेली चली जायेगी। और यह नाच युवा-वर्ग का था, अविवाहितों का, जिनकी रगों में एक चमक थी—स्फूर्ति थी। यह नाच अपने परिवार में ही संतुष्ट रहनेवाले वैसे व्यक्तियों के लिए नहीं था, जैसा बनकर वह कौनी के साथ जीवन बिताना चाहता था। कौनी के अलावा वहाँ आनेवाली विवाहित औरतों में वे वृद्धाएँ ही होंगी, जो दीवार के इर्द गिर्द की कुर्सियों पर बैठी होंगी और लड़कियों पर कड़ी चौकसी रखेंगी। किंतु कौनी! वह हरेक के साथ नाचती फिरेगी, ठीक उसी तरह, जैसे अभी भी वह अपने लिए कोई पुरुष तलाश कर रही हो। और, यह उचित नहीं था।...उसने बोडक के पैर में घूँसा मारा और उसे तेजी से चलने के लिए मजबूर कर दिया। उसके विषादयुक्त मन में इसका विश्वास था कि इस मामले में भी कौनी की ही जीत होगी। सदा उसी की जीत होती थी।

जब तक लड़कों ने खच्चरों को हल से खोलकर हलों को खेत के एक ओर रख नहीं दिया और स्वयं वहाँ से चले नहीं गये, मैथ्यू ने फिर हल चलाना शुरू नहीं किया। सुबह उन हलों को वहाँ से गाड़ी उठाकर ले जाने वाली थी। हल के हत्थों को पकड़े वह उन्हें देखता रहा। उसका अपना खच्चर दुःखी और बेचैन था; क्योंकि दूसरे खच्चर खेत छोड़कर जा रहे थे।

"ह्-अ्-अ्, प्रिंस!" उसने कहा—"ह्-अ्-अ् ह्, बेटे! हम लोगों को ज्यादा देर नहीं लगेगी यहाँ।"

लकड़ी के उस पुल को पार करते हुए खच्चरों की धप-धप की आवाज़ उसने सुनी। उन्होंने हैटी का साथ पकड़ लिया था और नाक्स ने झुलाकर उसे बेढंगे जान की पीठ पर बैठा दिया। खच्चर की दोनों उठी हुई हड्डियों के बीच बैठी वह काफी ऊँची दिखायी दे रही थी और उसने दोनों हाथ से लगाम पकड़ रखी थी। सूरज की रोशनी में उसकी रूपहली बाल्टी जगमगा उठी।

वे अब जा चुके थे—यहाँ तक कि उनके विचार और आनेवाली सुखद रात के काम भी उससे दूर होते जा रहे थे।

"उठो, खड़े होओ बेटे!—" उसने बड़ी कोमलता से प्रिंस से कहा—"अब उठो भी! हमें खेत जोतने का यह काम खत्म कर लेना चाहिए।"

प्रिंस अपने स्थिर, सम खिंचाव के साथ पट्टे में इस तरह झुका कि हल के हाथों में भी सजीवता आ गयी। वे उसके हाथों में यों काँपे, जैसे कोई औरत काँपती है और वह धरती को—वहाँ बनायी गयी नमी के कारण नम, तुड़ी-मुड़ी और कपास के जड़दार डंठलों के चारों ओर टूटी हुई धरती को—निहारता रहा। कपास के पौधे इतने बड़े हो गये थे कि उसकी जाँघ को छू लेते थे और उनके स्पर्श करने तथा अलग होने के समय बड़ी रूखी आवाज़ होती थी।

मैथ्यू ने जब अपना उत्तराधिकार अर्जित किया था, तो उन दिनों, उसका बड़ा भाई मार्क, कहीं दूर चला गया था। मई महीने की एक सुबह, जब वे काम के उस नये दिन सो कर उठे, तो उसका बिस्तर खाली था। मैथ्यू को अब भी स्पष्ट याद है—बिलकुल कल के समान ही—कि मार्क उसी कमरे में सोता था, जिसमें अब नाक्स और राइस सोते हैं। किस प्रकार उसके पिता ने—जो इस बुढ़ापे में अब जाड़ा-गर्मी, सदा रहने के कमरे में अंगीठी के निकट बने रहते थे—उसके दरवाजे को खटखटाया था और उन्हें कोई जवाब नहीं मिला था। उन्होंने किवाड़ खोल, भीतर सिर कर के देखा, धीरे से सिर वापस खींच लिया और रसोईघर की ओर बढ़ गये। वे वहाँ मेज के निकट बैठ गये।

"मैं इसका इंतजार ही कर रहा था—" उन्होंने भारी गले से कहा—"मैं जानता था, एक सुबह वह इसी तरह हमें यहाँ से लापता मिलेगा।"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ मैथ्यू के मन में, उस क्षण भी, एक आशा जगी थी। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी, अपने बड़े भाई में भागने की भूख और बेचैनी भी नहीं देखी थी; किंतु वह जा चुका है, इस जानकारी के

उस क्षण में, उस घाटी को उत्तराधिकार-रूप में पाने, उसका स्वामी बनने की उसकी स्वयं की भूख क्रूरतापूर्वक किसी विनाशकारी ज्योति के समान ही स्पष्ट हो गयी थी। वह हमेशा से इसे चाहता था। किंतु, इस क्षण के पूर्व, उसने अपनी इस इच्छा-पूर्ति की कभी आशा नहीं की थी। उसने अपनी तश्तरी के ऊपर अपना सिर झुका लिया था, जिससे उसके पिता उसके विचारों की झलक उसकी आँखों में न पा लें।

उस हेमंत तक भी उसका भाई नहीं लौटा था और न ही उन लोगों को उसकी कुछ खबर मिली थी। वह खिड़की के बाहर यों गायब हो गया था, जैसे किसी दूसरी दुनिया में चला गया हो और जहाँ बातचीत करने अथवा वापस आने के कोई साधन नहीं थे। और एक दिन, जब कि खेत में कपास चुनने वाले भरे पड़े थे, खाना खाने के समय उसके पिता ने वह घोषणा कर दी। बलूत के पेड़ के नीचे, काठ के पावों पर जड़े तख्तों की बनी मेज के चारों ओर वे बैठे थे। जितने लोग वहाँ जमा थे, उनमें कुछ इनबार थे तथा कुछ के नाम और थे। उसके पिता ने उसके कंधे पर अपना हाथ रखकर कहा था—"इनबार की घाटी का मालिक मैथ्यू होगा।"

उस हाथ और उत्तरदायित्व के दबाव के नीचे मैथ्यू तब तक स्थिर खड़ा रहा, जब तक उसका वृद्ध पिता उसकी ओर नहीं घूमा। "अगले साल की फसल तुम मेरे बिना ही तैयार कर सकते हो—" उसने कहा—"मैं सारी व्यवस्था कर देने जा रहा हूँ।"

तब मैथ्यू ने अपना सिर घुमाकर देखा था—मकान, वृक्ष, जमीन—सब की ओर उसने देखा था और इस बार उसके देखने में दूसरा ही भाव था। यह सब उसका था अब, अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए नहीं, विभाजित करने, विनष्ट करने अथवा छोड़ देने के लिए नहीं, बल्कि वक्त आने पर इसी प्रकार अपनी पसंद से किसी दूसरे के हाथों में सौंप देने के लिए। अपनी भूख की तुष्टि के लिए उसने चाहा भी यही सब था और अब उसकी भूख इस प्रकार तुष्ट हो गयी थी, जिसकी उसने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी, कभी सोचने का साहस भी नहीं किया था—सिवा उस भयानक क्षण के, जब उसे ज्ञात हुआ था कि रात के अंधेरे और दिन के उजाले के बीच, उसका भाई अपने शयनागार की खिड़की से कहीं गायब हो गया था।

"हाँ, पापा!" उसने कहा था—"मैं फसल तैयार करूँगा।"

उस साल जाड़े-भर उसका वृद्ध पिता अंगीठी के निकट कोने में जहाँ

अपेक्षाकृत गर्मी थी, एक आरामकुर्सी पर बैठा रहा था। सिर्फ ड्योढ़ी तक जाने-आने या लगे हुए दरवाजे से होकर, रसोईघर में खाना खाने के लिए जाने के समय ही वह वहाँ से उठता था। मैथ्यू ने अब तक यह नहीं खयाल किया था कि उसका पिता अचानक कितना बूढ़ा हो गया था। लेकिन अब वह जानता था कि उसका पिता उसके बड़े भाई के लौटने की उम्मीद में तब तक यह सब-कुछ अपने अधिकार में रखे रहा, जब तक इसे सँभाले रखने में वह बिलकुल ही असमर्थ न हो गया।

उस साल बसंत में मैथ्यू ने अकेले ही खेतों में पहली बार हल चलाई। उसके बाद ही, उसने अपने छोटे भाइयों को अपना हाथ बँटाने की अनुमति दी। उन लोगों ने खेत जोता था, बीच बोये थे, पौधों की देखभाल की थी, फसल जमा की थी। वृद्ध पिता पहले से अधिक शांतिपूर्वक सारे समय बैठा रहा। वह अपने उस अंगीठीवाले कोने में बैठा पहले से अधिक बूढ़ा, अधिक कमजोर लगने लगा था और मार्क अब तक नहीं लौटा था। वह तब तक नहीं आया, जब तक मैथ्यू की छठी फसल खेतों में तैयार नहीं हो गयी। यह सन् '१७ की बात है, जब जोरों की बाढ़ आयी थी और जिस साल उसका भाई ल्यूक उस पानी से मुकाबला करने के लिए बड़ी जिद कर रहा था।

लेकिन जब मार्क वापस आया, उसके कठोर चेहरे पर दूर की यात्रा के चिह्न थे और सड़कों की धूल छानते-छानते तथा जहाजों में कोयला लादते-लादते उसकी आँखें जैसे अपनी स्वाभाविक चमक खो चुकी थीं—वे संगमरमर पत्थर के समान ही जैसे निर्जीव हो गयी थीं। कुल्हाड़ी, गैंती और फावड़े से कठिन श्रम करने से उसके हाथ ऐंठ-से गये थे। इतने श्रम के बदले वह सिर्फ रात का आराम और रात का खाना अर्जित कर पाता था, जो नये दिन के काम करने तक चल जाता था। वह आया, तो उसमें एक अजनबीपन की भावना थी। मैथ्यू की ओर उसने अपनी उन पत्थर-सी आँखों से देखा, जिसमें क्रोध की चमक थी।

"मैं वापस आ गया हूँ।" उसने कहा।

मैथ्यू सामने के बरामदे में खड़ा था। दरवाजे पर उसकी खटखटाहट सुनकर ही वह वहाँ आया था। सहन में खड़े मार्क को उसने देखते ही पहचान लिया। "तुम्हारा स्वागत है—" उसने कहा।

मार्क की आँखों में हरकत पैदा हुई। "पापा?" उसने कहा—"क्या वे मर गये?"

"नहीं!" मैथ्यू बोला—"किंतु वे बूढ़े हो चुके हैं। उन्होंने डनबार की घाटी मुझे दे दी है।"

उसने उसकी आँखों में क्रोध की चमक देखी और गुस्से से शीघ्र ही कस जाने वाले जबड़ों को देखा। "जब तक मैं नहीं आया था, यह तुम्हारा था—" मार्क ने कहा—"किंतु मैं सबसे बड़ा हूँ।"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। उसमें आ गये अजनबीपन और उस पर हावी हुए दूरत्व की भावना को पहचाना और वह समझ गया कि मार्क बाहरी आदमी अधिक था, घाटी का कम! उसने धीरे से अपना सिर हिलाया!

"नहीं!" उसने कहा—"उन्होंने इसे मेरे हाथों में दिया है और मैं ही इसे रखने वाला हूँ।"

क्रोध में भरा मार्क तब आगे बढ़ा और बड़े वेग से किसी लहर के समान ही वह बरामदे में चढ़ आया। अचानक उसके हाथ में एक छुरी आ गयी और मैथ्यू उससे दूर हट कर सिकुड़-सा गया। वह कभी अपनी जिंदगी में लड़ा नहीं था, कभी मरने-मारने की क्रुद्ध स्थिति में नहीं पहुँचा था और यह उसके लिए आसान भी नहीं था। पर मार्क के चाकू चलाते ही उसने एक हाथ से उसकी कलाई पकड़ ली और दूसरे हाथ से मार्क पर प्रहार किया। मार्क बरामदे से लुढ़क कर दूर जा गिरा।

वह तब भी—अपने जवानी के दिनों में भी—शांत स्वभाव का आदमी था। वह दृढ़, स्थिर और शांतिप्रिय था। और किसी भी आदमी से बरतने में उसे न कभी क्रोधित होने की जरूरत पड़ी थी, न मारपीट करने की। लेकिन वह बरामदे से कूदा और मार्क को उठाकर फिर उसने उसे मारा। उसने उसका हाथ मरोड़ कर चाकू दूर फेंक दिया और उसे मारता रहा, मारता रहा, जब तक मार्क ने उसके पेट और आँत्र के ठीक बीचो-बीच जोर से लात मारकर उसे दूर नहीं फेंक दिया। फिर मार्क के घूँसों से उसका वह असह्य पीड़ा देने वाला दर्द दुहरा हो गया।

सामने वाले बरामदे में वे लड़ते रहे। मैथ्यू की नयी युवा पत्नी रसोईघर से चिल्लाती हुई बाहर आ गयी। उसके भाई ल्यूक और जान उसके चारों ओर सिमट आये; लेकिन वे उनके बीच दखल देने से डर रहे थे; क्योंकि मैथ्यू को उन्होंने उस रूप में पहले कभी नहीं देखा था।

अपने खून से वे लथपथ और बरामदे की धूल से गंदे हो रहे थे। मैथ्यू की कमीज पीठ पर से फट गयी थी और उसके दाहिने कान से रक्त बह रहा

था, जहाँ आपस में उठा-पटक करते हुए मार्क ने काट खाया था। मार्क की नाक, उसकी दोनों आँखों के बीच टूटकर चपटी हो गयी थी और वह गुस्से से हाँफते हुए मुँह से साँस ले रहा था। मैथ्यू की नंगी छाती पर खून के दाग बिखरे पड़े थे। अंत में, वे उठकर खड़े हो गये और एक सरीखे वजनी घूँसों से तब तक एक-दूसरे को मारते रहे, जब तक मार्क जमीन पर नहीं गिर पड़ा। उसकी पीठ उस बलूत के पेड़ से जा टकरायी। मैथ्यू ने एक हाथ से उसका गला पकड़ लिया और उसने उसे चार बार मारा। उसकी मार धीमी, घातक और न समाप्त होने वाली थी—यहाँ तक कि मार्क ने अपने हाथों से अपना मुँह ढँक लिया। उसका शरीर अब अरक्षित था और वह शिथिल पड़ गया था।

हाँफता हुआ मैथ्यू तब पीछे हट आया। "डनबार की घाटी डनबार की भूमि है—" उसने कहा। बोलने में उसे काफी श्रम करना पड़ रहा था और शब्द अटक-अटक कर बाहर आ रहे थे; लेकिन मार्क जब तक पराजित-सा वहाँ बैठा था, उसे यह सब कहना ही था। "और किसी भी डनबार को यहाँ आश्रय मिल सकता है। लेकिन तुम्हें नहीं। कोई भी; पर तुम्हारे अलावा।" हाँफता हुआ वह फिर कुछ देर के लिए रुका। "अगर तुमने इस घाटी में फिर पाँव रखा—" उसने कहा—"तो मैं तुम्हें मार डालूँगा। तुम सुन रहे हो न, मार्क? मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

वह फिर रुका—यह देखने के लिए कि जो वह कह रहा है, मार्क उसे समझा या नहीं। मार्क ने चोट खाया हुआ अपना चेहरा उठाया और वह समझ गया था। "मुझे...पानी चाहिए—" उसने कहा—"तब मैं..."

"चले जाओ अब—" मैथ्यू ने कहा—"तुम्हारे लिए यहाँ पानी नहीं है।"

वह फिर बढ़ा। थकावट से उसके अंग-अंग राँगे के समान जम-से गये थे; लेकिन जरूरत पड़ी, तो अभी भी वे लड़ने को तैयार थे। मार्क डगमगाता हुआ उससे दूर हट गया। वह सिर्फ अपना बंडल उठाने को रुका और उस सोते के किनारे-किनारे नदी की ओर बढ़ गया—घाटी के बाहर। बिना अपनी युवा पत्नी, अपने बच्चे अथवा अपने भाइयों की ओर देखे, मैथ्यू आगे बढ़ा और बरामदे के किनारे तक चला आया। सबसे निचली सीढ़ी पर वह बैठ गया और उसने अपना सिर अपने दोनों पैरों के बीच कर लिया। फिर उसने वमन कर अपना पेट खाली कर दिया। उसके बाद वह कै करता गया। जो-कुछ उसने खाया-पिया था, उसका कड़वा पित्त उसके नाक और मुँह में भर आया और उससे उसका मुँह जैसे बंद हो गया। लेकिन उसके दिमाग में भरा

पित्त—उपद्रव का कड़वा पित्त, जिसे उसने इसके पहले कभी नहीं जाना था, उसे और चुप रहने को बाध्य-सा कर रहा था। तब से उसके दिमाग में उस मारपीट की याद बराबर बनी रही है। साथ ही शरीर पर भी उसके निशान हैं और उसकी उस लड़ाई के फलस्वरूप उसका कटा हुआ कान भी तो है।

यही वजह थी कि उसे अब सही चुनाव करना था। उसे भी चुना गया था और उसका विश्वास था कि उसके पिता ने सुंदर चुनाव किया था। उसका यह विश्वास यहाँ तक था कि अपना उत्तराधिकार बनाये रखने के लिए वह लड़ने और मारपीट करने से भी पीछे नहीं हटा—सिर्फ अपनी भूख की तृप्ति के लिए नहीं, लेकिन स्वयं घाटी के लिए। आज भी—उस दिन की स्मृति ले इतने वर्षों तक रह लेने के बाद भी—उसे विश्वास था कि वह लड़ाई और मार-पीट उसने स्वयं के लिए नहीं की थी।

यह देखकर, कि उसने फसल खड़ी करने का काम समाप्त कर डाला है, मैथ्यू ने अपना सिर ऊपर उठाया। अजाने ही वह खच्चर के पीछे-पीछे चलता गया था, अपने-आप ही वह खेत जोतता चला गया था—उसी तरह, जिस तरह उसका दिमाग उस पिछले दिन और उसके परे भी, उसके जीवन के कटुतम दिनों में लौट गया था और उसके मुँह में उस याद की कड़वाहट अभी भी भर आयी थी। क्योंकि मैथ्यू एक शरीफ व्यक्ति था और जिस तरह वह उस दिन लड़ा था, उसे फिर कभी नहीं उस तरह लड़ना पड़ा।

वह हल के उस ओर खच्चर को खोलने के लिए गया और तब पुल पर खड़े हो अपनी ओर देखते अजनबी पर उसकी नजर गयी। वह एक युवक था और उसने साफ तहदार खाकी कपड़े पहन रखे थे। उसकी कमीज गर्दन के निकट खुली थी और तहदार कपड़ों के भीतर उसका चौड़ा कंधा चौरस लग रहा था।

वह मैथ्यू की ओर बढ़ा। आराम से, सावधानीपूर्वक कपास की पातों में वह ऐसे चल रहा था, जैसे खेत में सावधानी बरत कर चलना उसकी आदत थी। मैथ्यू की ललाट पर हल्की-सी सिकुड़न पड़ गयी। वह अभी बहुत कम उम्र का था, अतः मत लेने आया होगा, इसकी उम्मीद नहीं थी और अगर वह कुछ बेचता होता, तो मैथ्यू उसे अवश्य जानता। बिना किसी उत्सुकता के वह प्रतीक्षा करता रहा—धैर्य और संयम के साथ, जब तक कि वह युवक इतना निकट नहीं आ गया, जहाँ से उससे कुछ कहा जा सके।

"कहिये!" जब वह तीन कतार उधर था, मैथ्यू ने गम्भीरतापूर्वक कहा और युवक ने अपना चेहरा ऊपर उठाया।

"मि. डनबार ?" उसने कहा—"मि. मैथ्यू डनबार ?"

"मैं ही हूँ।" मैथ्यू ने उसे देखते हुए कहा। उसका चेहरा हँसमुख और खिलता हुआ था और उसके चेहरे में कुछ ऐसा था, जो उसके शहरी होने की बात बता दे रहा था। धूप से उसके चेहरे का रंग ताम्बे-सा हो गया था। उसकी आँखों के चारों ओर झुर्रियाँ पड़ी थीं और कपास की पातों के बीच वह पूरी सावधानी से चलता आया था।

युवक रुक गया और मुस्कराया। उसने मैथ्यू के चेहरे की ओर देखा और उसका चौड़ा चेहरा, स्पष्ट लक्षित निश्चिंतता और उसकी आँखों में उदार स्वागत की झलक उसे पसंद आयी। यह आदमी समझदार और ईमानदार है—इसके साथ आसानी से सब तय हो जायेगा। कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे, जो उसकी तरह नहीं थे।

"मेरा नाम क्रैफोर्ड गेट्स है—" उसने सहज भाव से कहा—"मैं टी. वी. ए. की ओर से आया हूँ...'टेनेसी वैली अथारिटी' (एक सरकारी संस्था) मेरा खयाल है, अभी हाल ही, आपको हमारा पत्र भी मिला होगा।"

मैथ्यू मुस्कराया। "बेटे!" उसने कहा—"जब इस साल बसंत में मैंने इस जमीन में पहली बार हल चलायी, तब से मैं डाकघर नहीं गया हूँ। चाचा स्याम की इस डाक में मैं सिर्फ बीजों की दर और किस्म सूची तथा अपने बाहरी मकान के लिए 'सीएर्स-रोबक' के सूची-पत्र की उम्मीद रखता हूँ और बस।"

अपने चेहरे पर क्रैफोर्ड गेट्स ने सिकुड़न नहीं पड़ने दी। पहले से अगर लोगों को सारी बात मालूम रहती है, तो अपनी बात समझाने में आसानी होती है।

"खैर!" उसने सहज भाव से ही कहा—"मेरा खयाल है, मुझे ही यह बात बतानी पड़ेगी।"

मैथ्यू मिनट-भर के लिए घूम गया। "तुम कहते चलो—" उसने कहा—"मुझे इस खच्चर को हल से अलग करना है। तुम बुरा तो नहीं मानोगे, अगर मैं......"

"आप अपना काम करिये—" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं तो और आपकी मदद करूँगा।" वह खच्चर की बगल में खड़ा हो गया और खच्चर के मुँह में फँसायी रस्सी की गाँठ को ऊपर करने लगा। "'टेनेसी वैली अथारिटी' आपकी जमीन खरीदना चाहती है, मि. डनबार! मैं इसी सम्बंध में आपसे मिलने आया हूँ।"

मैथ्यू ने सीधे खड़े होने की चेष्टा भी नहीं की। वह उसी प्रकार अपना

काम करता रहा। "मेरी जमीन!" वह बोला और हँसने लगा—" तुम इस सम्बंध में बातें करने का इरादा इसी वक्त छोड़ दो, बेटे! मैं..."

"आप समझते नहीं—" क्रैफोर्ड ने कहा—" नदी पर दस मील नीचे की ओर हम लोग एक बड़ा बाँध बना रहे हैं। इस सारी जमीन में तब बाढ़ आ जायेगी। पानी आने के पहले ही आपको यहाँ से अन्यत्र चले जाना है।" उसने मैथ्यू की ओर गम्भीरतापूर्वक देखा—"पानी को आखिर रास्ता तो मिलना ही है। लेकिन आपको इसकी अच्छी कीमत दी जायेगी।"

मैथ्यू तब सीधा खड़ा हो गया। खच्चर को हल के साथ जोतने वाली जंजीर उसके हाथ में थी। "मेरी जमीन खरीदेंगे?" उसने कहा। उसने उसकी उस ओर देखते हुए धीरे-धीरे अपना सिर घुमाया। फिर उसने क्रैफोर्ड की ओर पलट कर देखा। उसके चेहरे पर क्रोध का चिह्न नहीं था, न किसी प्रकार की कठोरता या ऐसी कोई दृढ़ता थी। बल्कि मैत्री के ही भाव थे—समझाने की भावना थी! "बेटे!" उसने कहा। वह अभी भी हँस रहा था और उसके कहने में वही सहजता तथा न-मानने की झलक थी—"मैं बेचने का इरादा ही नहीं रखता।"

प्रकरण दो

क्रैफोर्ड गेट्स का पिता लकड़ी चीरनेवाले अपने छोटे-से कारखाने का आप मालिक था। उसके पास आसानी से ढोकर ले जाने लायक, लकड़ी चीरनेवाली स्वयं की एक मशीन थी। वह इस मशीन को किसी एक स्थान पर महीने दो महीने या साल-भर के लिए लगाता, लकड़ियाँ चीरता; फिर वहाँ से अपना कारखाना बंद कर, मशीन उठा कर किसी दूसरे स्थान पर चला जाता। अपने पीछे वह लकड़ियों के भुरभरे बुरादे का काफी बड़ा ढेर छोड़ जाता था, जहाँ पास-पड़ोस के बच्चे उसे माँद बना कर खेला करते थे। अतः क्रैफोर्ड अपने नथुनों में बुरादे की गंध लेकर ही बड़ा हुआ था। दरख्तों और इमारती लकड़ियों के पेड़ों की जानकारी अपने अचेतन में उसे उसी प्रकार हो गयी थी, जैसे तेज चलने वाले चुस्त छोटे खच्चरों को जंगल के सम्बंध में सारी बातों की जानकारी थी। ये खच्चर झाड़ियों में पड़े कुंदे निकाल, घसीटकर कारखाने तक पहुँचा देते थे।

उन खच्चरों को देखते रहना उसे सदा से पसंद था। उनके चुनने में इस बात की पूरी सावधानी बरती गयी थी कि वे समझदार होने के साथ-साथ इतने मजबूत भी हों कि छुदक न पड़ें। काली चमड़ी वाले व्यक्ति, जो उन्हें हाँक कर ले जाते थे, तार या चाबुक, किसी का उपयोग नहीं करते थे। पुचकार कर, बातें कर, तीव्र संगीतमय ध्वनि में, लय-ताल के साथ, चिल्ला-चिल्ला कर बढ़ावा दे, वे झाड़ियों में फँसे कुंदे निकलवा लेते। किस प्रकार ये खच्चर कुंदे खींचने के लिए, अपने घुटनों के बल झुक जाते थे, उनके पाँव मजबूती से जमने लायक किसी स्थान की तलाश में कैसे टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनाते थे, किस तरह मनुष्य के समान ही, उत्साहपूर्वक, चतुराई के साथ, कुंदे खींचने में जोर लगाते थे, यह सब उसने देखा था। पेड़ों के ठूँठ से भरे खेत से वे कुंदे घसीटते। इस सावधानी से वे कुंदे घसीटते कि कभी अटकने की नौबत नहीं आयी। आदमी उन कुंदों पर सवार रहते। उनकी आवाज़ तेज और निश्चिंत-सी होती। वे खच्चर के पीछे की ओर झुके कान में उसे बुरा-भला कहते, पुचकारते और साथ ही, प्यार से उसे सहलाते भी! अपने छोटे और सुंदर पैरों से कुंदे ले जाते हुए खच्चरों को उसने देखा था। वे उतने ही निपुण थे, जैसे शहतीर के बीच एक बिड़ाल! उसने उनमें कार्यपूर्ति का गर्व भी देखा था। खेल, हल और रास्ता बतानेवाली रेखा—यह सब उनके लिए अशोभनीय होता। वह उन हृष्ट-पुष्ट खच्चरों को प्यार करता था—वैसे ही, जैसे वह गाड़ी पर सवार हो उसे आगे-पीछे करने वाले अपने पिता को प्यार करता था। बिना दस्ताना पहने हाथों से लीवर को जोर से बंद करना, संगीतमय ध्वनि करनेवाली आरी के बीच लकड़ी के कुंदे डालना, उसे घुमाना और फिर डालना, घुमाना, फिर डालना—सब उसे पसंद था। स्वच्छंद भाव से कुंदे को काटती आरी भिन्न-भिन्न स्वर में संगीत की सृष्टि करती। जब वह गाते हुए कुंदे के अंतर तक पहुँचती, एक भारी गांठ को चीरती हुई तीव्र गीतमय स्वर के साथ आगे बढ़ती—तो दोनों में एक अंतर होता।

क्रैफोर्ड जब बारह वर्ष की उम्र का हुआ, वह स्वयं भी गाड़ी पर सवार हो सकता था। अलग-अलग टुकड़ों में काट देनेवाली आरी में वह लकड़ी के भारी और बड़े कुदे डालता था और अपने छोटे छोटे हाथों से किसी वयस्क व्यक्ति के समान ही लीवरों से काम लेता था। बुरादे को फावड़े से हाथगाड़ी में भरने से उसने अपना काम शुरू किया था। हाथगाड़ी उसके कम उम्र और उसके अत्यधिक दुर्बल शरीर के हिसाब से काफी भारी थी। काष्ठफलक पर

हाथगाड़ी उसे तब तक ढकेलनी पड़ती थी, जब तक वह बुरादे के मुलायम पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुँच जाता था। इस श्रम से उसकी कमीज पसीने से तर-ब-तर हो जाती थी। तब वह वहाँ अपनी हाथगाड़ी खाली कर देता था और फिर काष्ठफलक से नीचे उतरता था। लेकिन जब वह बुरादे के ढेर तक पहुँचता, तो उसकी ऊँचाई में उसे तनिक भी अंतर नहीं नजर आता था।

एक लकड़ी चीरने के कारखाने में जो-कुछ करने लायक था, उसने सब किया। लकड़ी के दो फुट चौड़े, चार फुट लम्बे तख्ते, वह अपने कंधे पर, जहाँ उसने गद्दा लगा रखा था, उठा लेता और टाल के पास पहुँच जाता। वहाँ फिर वह एक झटके के साथ उसे ऊपर उठाता और तब उसकी माँस-पेशियाँ चढ़ जातीं। टाल के पासवाले व्यक्ति को उसे देकर, दूसरे खेप के लिए वह लौट आता। लौटते समय वह दूसरे मजदूर के पास से गुजरता, जो अपने हिस्से का बोझ उठाये टाल की ओर जा रहा होता। छोटे खच्चरों के साथ उसने लकड़ी के कुंदे भी घसीटे। कुंदे पर वह सुविधाजनक स्थान निकाल सलीके से सवार हो जाता और खच्चरों को बुरा-भला कहता तथा पुचकारता भी, जो कि उसने दूसरे व्यक्तियों से सीखा था। उसकी आवाज़ ऊँची थी, उसमें युवावस्था का पुट था और बोलने में उसकी साँस टूटती भी नहीं थी।

किंतु उसकी दिलचस्पी तो गाड़ी से थी। वही उसका लक्ष्य थी। अवकाश के दिनों में वह उस पर सवार हो खामोश खड़ा रहता। फिर लीवरों (कल-पुर्जे) के साथ खेलता, वृत्ताकार आरी लकड़ी चीरते समय जैसी आवाज़ करती, वैसी आवाज वह अपने मुँह से निकालता और जब कि दूसरे बच्चे डाकू और सिपाही तथा चरवाहे का खेल खेलते, वह आरा चलानेवाला बनता। तब, बाद में, वह अपने पिता की बगल में खड़ा हो, उन्हें आरा चलाते देखता। लीवरों को दबाने के लिए उसके हाथों में जोरों की खुजली-सी उठती। अंततः वह दिन भी आया, जब उसके पिता एक ओर खड़े हो गये और उसने स्वयं आगे बढ़कर लीवरों को खींचा।

वह एक बदसूरत और लम्बे पाँवों वाला दुबला-पतला लड़का था—हड्डियों का एक ढाँचा! लकड़ी चीरने के उस कारखाने में काम करने से उसकी माँस-पेशियाँ कड़ी और तार के समान थीं। कारखाने के पास ही, वह अपने पिता के साथ, एक खेमे में रहता था। अपनी माँ की तो उसे याद भी न थी। जिस स्कूल में भी वह पढ़ने गया, वहाँ के छात्र उसकी स्वतंत्रता, खेमे का

जीवन और जंगल-भ्रमण के प्रति ईर्ष्या करते। किंतु इस ईर्ष्या से क्रैफोर्ड फूल नहीं उठता था। वह तो स्कूल से दूर, जगलों में लौट जाना चाहता था। बुरादे की गंध और आरी चलने की संगीतमय आवाज़ के बीच वह फिर पहुँच जाना चाहता था। बारह, तेरह और चौदह साल की उम्र में भी वह इमारती लकड़ियों अथवा अन्य प्रकार के वृक्षों और जंगल को, खेलने-कूदने अथवा शिकार करने की दृष्टि से नहीं देखता था। तब भी उसकी नजरें यह परखा करतीं कि कितने हजार फुट चौड़ी और अच्छी लकड़ी उस संगीतप्रिय आरी के चबाने के लिए कितने भोजन का काम देगी? और जब मौका आया, तो उसके अनुमान इस कदर सही प्रमाणित हुए कि स्वयं अपने अनुमान की जाँच के लिए उसका पिता उस पर निर्भर रहने लगा।

तब तक वह वहाँ नियमित रूप से आरा चलानेवाला बन चुका था। उसने अपने पिता को उस क्षेत्र में अधिक काम की तलाश में घूमने, आगे का कार्यक्रम बनाने और अगले कंट्राक्ट की तैयारी करने के लिए स्वतंत्र कर दिया था। वह उस मशीन की सारी खराबियाँ और जटिलताएँ समझ गया था। वह जानता था कि मशीन का पुराना एंजिन कितना भार ले सकेगा, कब लकड़ी के दबाव को शिथिल करना चाहिए और कब काम रोक कर आरे बदलने होंगे।

उसकी और कोई जिंदगी नहीं थी। इन सब कामों में उसका स्कूल जाना छिटपुट होकर बहुत कम हो गया था। स्कूल जाने का यह जो उसके ऊपर एक आवश्यक बोझ था, बहुधा उससे वह बच निकलता। वह काम पर पहननेवाली कमीज और वह लम्बी-सी, लबादे की तरहवाली पोशाक, पहन लेता और किसी वयस्क व्यक्ति के समान ही तम्बाकू चबाता और जब गाड़ी पर सवार हो वह उसे आगे-पीछे चलाता, तो 'पच' से तम्बाकू का भूरे रंग का रस, थूक के साथ अपने पैरों के नीचे की ताजी धूल में फेंक देता। काम करते रहने से उसके शरीर की अनावश्यक चर्बी जाती रही और उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसका बदन भरने लगा, कुरूपता दूर होने लगी और उसमें अधिक काम करने की सामर्थ्य आ गयी। बीस साल का होते-होते वह लकड़ी चीरने का कारखाना अच्छी तरह चलाने लग गया। पहले के समान उसके पिता को देख-रेख करने की भी जरूरत नहीं रही। यह स्वयं ही मजदूरों को बहाल करता, उन्हें निकालता, लकड़ियाँ खरीदता, बेचता, औजारों का व्यवस्था करता, बाहर जो-जहाँ योजना होती, उसका इंतजाम करता और खच्चरों के खाने-पीने की देखभाल करता। वह पूरा वयस्क बन गया था।

और तब, उस साल, गर्मी में, उसने अपने पिता से कहा कि वह यह काम छोड़ रहा है। वह फिर से पढ़ने जाना चाहता था। उसके पिता ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। उसके पिता की समझ में आ ही नहीं रहा था कि यह विचार कहाँ से उसके दिमाग में आ गया। और फिर वह एक निपुण आरा चलानेवाले व्यक्ति को खोना भी नहीं चाहता था।

किंतु क्रैफोर्ड गेट्स चला गया। वह बीस वर्ष का हो चुका था—एक वयस्क पुरुष, जो पढ़ना चाहता था। उसे क्या करना था, यह वह अच्छी तरह जानता था। वह कालेज में नाम लिखायेगा और इंजीनियर बनेगा—मकान, बाँध, आदि रचनात्मक निर्माण करनेवाला इंजीनियर। तब वह नहीं जानता था कि उसकी साख उसकी आवश्यकताओं तक भी नहीं पहुँच पा रही थी। एक दिन, जब वह जंगलों से निकल कर चल पड़ा, तभी उसे यह ज्ञान हुआ। उसके हाथ में उसके पहनने के कपड़ों की एक गठरी थी। उसने नाक्सविले (टेनेसी) की गाड़ी पकड़ ली। उसकी जेब में सेफ्टी पिन के जरिये सुरक्षा से टँके हुए सौ डालर थे। साथ ही, उसके पिता ने वादा किया था कि वह नियमित रूप से कारखाने की उसकी मजदूरी उसे भेजता रहेगा। अंत में, उसके पिता की समझ में आ गया था कि सदा आरा चलाते रहनेवाले व्यक्ति से इंजीनियर बनना कहीं अच्छा है, भले ही लकड़ी चीरने का निजी कारखाना क्यों न हो!

उसके सम्बंध में जो-कुछ कहा गया था, उसे प्रमाणित करने के लिए, उसने एक परीक्षण किया और जब उसने १९२९ की गर्मी की छुट्टी में स्कूल छोड़ा, तो उसे उम्मीद थी कि वह हेमंत में फिर स्कूल लौट आयेगा। किंतु वह कभी नहीं लौटा। दिन बुरे बीत रहे थे, वह साल ही बुरा बीता और कारखाने में लकड़ियाँ भी कम आतीं। बहुधा मजदूरों को देने के पैसे नहीं होते और आरियाँ कम थीं। स्वभावतः ही उनके बीच की दूरी काफी लम्बी और खर्चीली बन गयी थी। अगस्त में उसका पिता एक पुरानी आरी से काम कर रहा था। वह आरी बहुत पहले ही फेंक देने लायक हो चुकी थी। अचानक वह टूट गयी और उसका पिता घायल हो गया। लोगों ने जब उसके पिता को उठाया, तो उसका एक पैर बस, माँस की एक पतली-सी झिल्ली से लटक रहा था।

उस साल जाड़े में क्रैफोर्ड ही कारखाना चलाता रहा और उसका पिता उस लकड़ी की टाँग के सहारे लँगड़ाता हुआ चलता, जो उसने एक अच्छी सी लकड़ी की बना कर उसे दे दी थी। उसके पिता का चेहरा अब

पहले से अधिक बूढ़ा और झुका हुआ लगने लगा था। उसके हाथ इतना अधिक काँपते थे कि लीवर दबाने की भी शक्ति जैसे उनमें नहीं रह गयी थी। बात यों थी कि वह डर गया था—उसीसे जब यह गाड़ी में सवार हुआ, तो उसके हाथ काँपने लगे। ऐसा लग रहा था, जैसे इस दुर्घटना के पहले उसने कभी सोचा भी नहीं था कि यह आरी किसी लकड़ी के समान ही, मानव-मांस भी तटस्थता से चीर सकती है। लेकिन अब वह इसे कभी नहीं भूल सकेगा। कभी-कदात् रात में, क्रैफोर्ड अपनी इंजीनियरिंग की किताबें पढ़ता। उसके सामने एक गंदी-सी लालटेन रहती और किताबों के चिकने पन्ने उलटते-उलटते वह अपने कालेज के दिनों की याद में डूब जाता—क्लासों का वह शांत आलस्य, रातों में तख्ती लेकर देर तक जागना, सामने खुली किताब और सादे कागजों का धीरे-धीरे सुंदर और एक-सरीखी गणनाओं से अनिवार्य रूप से भर उठना—सब उसे स्मरण हो आता।

लेकिन समय बीतने के साथ ही वह भी खत्म होता गया; क्योंकि दिन-भर की कड़ी मेहनत के बाद वह बुरी तरह थक जाता था। एक तूफानी रात में उसका खेमा उखड़ गया और तेज-मूसलाधार बारिश ने उसके ढूँढ़ने और सँभाल कर रखने के पहले ही जब उसकी किताबों को भिगो कर लुगदी बना दिया, तब उसने इसकी कोई खास परवाह नहीं की।

अगले वर्ष, १९३० के लम्बे-धीमे ग्रीष्मकाल में, उनका लकड़ी चीरने का वह कारखाना भी उनके पास से जाता रहा। बिल धीरे-धीरे जमा होते जा रहे थे और अब कोई लकड़ी काट नहीं रहा था। क्रैफोर्ड और उसके पिता—दोनों ही मीलों की खाक छान आये, पर उनकी मशीन के लिए काम नहीं मिला। लेनदार जब आये और उस पुराने तथा खड़खड़ाहट करनेवाले एंजिन, चमकते हुए आरों और कुंदा रखनेवाली उस गाड़ी को, जिस पर क्रैफोर्ड का पिता अपना सारा जीवन और एक पैर गँवा बैठा था, घसीट कर ले जाने लगे, तो क्रैफोर्ड के पिता की आँखों में आँसू आ गये। क्रैफोर्ड नहीं रोया। दूसरे ही सप्ताह वह एक और लकड़ी चीरने के कारखाने के लिए काम कर रहा था—एक स्थिर और बड़े कारखाने में। वह गड्ढे से बुरादा निकालता और बुरादे के उस बड़े ढेर के ढालवे भाग के ऊपर हाथगाड़ी ढकेलते हुए, श्रम से उसके बदन में पसीना आ जाता। तेजी से वह फिर लौटता, अन्य दो मजदूरों की बगल से गुजरता; लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसे लगता कि उस बड़ी आरी का काम वैसे ही चल रहा है, बुरादे का ढेर जैसे-का-तैसा है और उसने

कोई खास काम नहीं किया है—अपने काम में कोई प्रगति नहीं दिखायी है।

बाद के वर्षों में, उसकी आकांक्षा सम्भवतः उसका साथ छोड़ गयी अथवा अवसाद की उस गहराई में, वह अपने उस काम पर टिका रह गया, यह भी शायद बहुत था—यद्यपि वह काम निम्न कोटि का था और पैसे बहुत कम मिलते थे। अपनी ही तरह के अन्य व्यक्तियों के साथ वह बोर्डिंग हाउस में रहता था। उसके पास लड़कियों के साथ दिल बहलाने के लिए पैसे नहीं थे, न आनंद और भविष्य की कोई आकांक्षा थी—बस, एक दिन से दूसरे दिन तक वह काम में लगा रहता था। उसकी उम्र २६ साल की थी; पर वह अधेड़ लगने लगा था, जैसे उसके पिता के लकड़ी चीरने के कारखाने के समय ही, उस गाड़ी पर उसकी युवावस्था गुजर गयी थी। उसके समवयस्कों की तुलना में उसकी वयस्कता की चाल जैसे तेज थी। पर उनके पास जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा अब भी बचा था और उसका पिता अब वहीं आराम कर रहा था। वह वहाँ अकेला रहता था और प्रति सप्ताह नीले रंग के मनिआर्डर-फार्म पर क्रैफोर्ड जो पैसे उसे भेजता था, उससे ही वह गुजारा कर रहा था। कभी-कभी सप्ताहांत में क्रैफोर्ड अपने पिता से मिलने पहुँच जाता था। नारीविहीन उस घर में तब वे दोनों मौन बैठे रहते थे। बात करने की जरूरत भी वे महसूस नहीं करते थे। उन दोनों के बीच पुराने दिनों की चर्चा कभी नहीं हुई। वह एक ऐसा ज़माना था, जो गुजर चुका था।

तब, सन् १९३३ में, क्रैफोर्ड के जीवन में फिर लहर आयी। किसी प्रकार उसने 'सिविलियन कान्जर्वेशन कोर' (सी. सी. सी. अथवा नागरिक सुरक्षा-सेना) का नाम कहीं सुन रखा था। उसने उसमें नाम लिखा लिया। बुरादा ढोने के उस निरर्थक काम को छोड़ने का उसे तनिक भी मलाल नहीं था, न ही उसे बोर्डिंग-हाउस और अपनी श्रेणी के उन व्यक्तियों को छोड़ने का दुःख था, जिनके साथ वह तीन वर्षों तक रहा चुका था। सी. सी. सी. ने उसे जहाज से मिसिसिपी के एक शिविर में भेज दिया, जहाँ वह तत्काल ही सहायक नेता बना दिया गया। अब उसकी पोशाक में बाँह पर पीले रंग की एक धारी बनी रहती। दो महीने में ही बाँह पर एक धारी और हो गयी और वह नेता बन गया। छः महीने बाद ही वह ओरेगन के एक अग्नि-निरोधक शिविर में सहायकाधिकारी बन गया था —वह अब 'कोर' (सी. सी. सी.) का सदस्य नहीं रह गया था—उसके अधिकारियों में एक था। अधिकांश सहायकाधिकारी फौज के सुरक्षित सैनिकों में से थे, जो सक्रिय कर्त्तव्य-पालन के लिए फिर से बुलाये गये थे। किंतु क्रैफोर्ड के

साथ बात दूसरी थी। जंगलों से भलीभाँति परिचित होने, कालेज में दो वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करने तथा अपनी योग्यता और व्यक्तित्व के कारण ही क्रैफोर्ड सहायकाधिकारी बना दिया गया था। क्रैफोर्ड शिविर में सभी लड़कों से ज्यादा उम्र का था—स्थैर्यवान और अधिक विश्वासपात्र।

सी. सी. सी. उसे पसंद था। सुदूर जंगलों तथा शहर की गंदी बस्तियों से आये हुए उन जड़ लड़कों के बीच वह युवा दीख पड़ता था—ऐसा उसे लगता था, जैसे उसकी उम्र आगे बुढ़ापे की ओर बढ़ने के बजाय, पीछे जवानी की ओर लौट रही थी। उसे उन लड़कों का नेतृत्व करना होता था, उन्हें सब-कुछ बताना और सिखाना पड़ता था और कभी-कभी उनमें से किसी को घूँसे भी लगाने होते थे। यह एक ऐसा काम था, जिसमें यथार्थता थी—बुरादा ढोने के उस व्यर्थ काम के समान नहीं कि एक खेप के बाद लौट कर आते ही, वह जैसे का तैसा ही नजर आये। सी. सी. सी. वाले वृक्षों को अग्निकांड से बचाते थे। वे सड़कों का निर्माण करते थे, भ्रमणार्थ गाड़ियाँ बनाते थे और पिकनिक की मेजें भी! वे जंगल में एक सुरम्य उद्यान (पार्क) का निर्माण कर रहे थे। इस प्रकार क्रैफोर्ड ने वृक्षों का एक नया उपयोग और नया अर्थ सीखा। शिविर में भयभीत और अस्थिर नये लड़के जब आते थे, उनमें अनिश्चितता की भावना होती थी; लेकिन किस तरह वे दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी बन जाते थे, यह क्रैफोर्ड को पसंद था। इन लड़कों के शरीर पर माँस चढ़ जाता था और इनमें एक चमक आ जाती थी। निश्चय ही, जीवन में प्रथम बार अच्छा खाना खाने का यह सुपरिणाम होता था।

फिर भी यह एकाकी जीवन था—शिविरों के लड़कों और अन्य व्यक्तियों के साथ का पुरुष-जीवन! ये अन्य व्यक्ति सुरक्षित फौज के कैप्टेन और लेफ्टिनेंट थे, जो उसके साथ ही शिविर के लड़कों को सिखाया-बताया करते थे, आदेश दिया करते थे। अभी भी उसके पास अपर्याप्त रकम थी; क्योंकि प्रति माह नीले रंग का एक मनिआर्डर उसके पिता के पास चला जाता था। लेकिन वहाँ शिविर था, लड़के थे, वे कैप्टेन और लेफ्टिनेंट थे, प्रशांत उत्तर-पश्चिम के जंगल के वृक्षों की अविश्वसनीय लम्बाई और उनका चिर सुरक्षित कौमार्य था। इन जंगलों में वह अपने गिरोह के साथ प्रवेश करता था। गिरोह के हाथ में कुल्हाड़ियाँ होती थीं। बिना किसी कारण ही वहाँ के वृक्षों को तेजी से जलानेवाले अग्निकांडों के मुकाबले में अग्नि-निरोधक खाइयाँ खोदने के काम में वे जुटे रहते थे। इन अग्निकांडों के लिए भगवान् उत्तरदायी था या मनुष्य—कौन जानता था!

उस तरह के पेड़ उसने पहले नहीं देखे थे। पश्चिमी प्रभात की ढलान में होनेवाली लगातार बारिश की नमी में ही सिर्फ वे उतने बड़े हो सकते थे। वह स्थान उसके लिए यथार्थता का मुख्य गिरजाघर था और वह उन वर्षों में बिलकुल बदल गया। अपने चारों ओर फैले वृक्षों के सौंदर्य और अपने अन्तर्गत काम करनेवाले लड़कों की जिम्मेदारी के बीच वह जैसे फिर से बड़ा होने लगा। लेकिन एक दिन उसे एक परवाना ऐसा मिला, जिससे उसे वहाँ से चल देना पड़ा। वह परवाना उसके पिता के पास से आया एक तार था, जिसमें सिर्फ इतना ही लिखा था—"बेटे! अब अगर तुम घर वापस आ जाओ, तो अच्छा है।"

वह घर लौट गया। पहली बार उसने रेल के आरामदेह डिब्बे में, जिसमें सोने की व्यवस्था भी थी, सफर किया; क्योंकि उसके पास सरकारी टिकिट था— उत्तर के विस्तृत मैदानों से होकर शिकागो तक, तब दक्षिण और फिर पूर्व की ओर, जब तक कि वह अपनी परिचित भूमि में नहीं जा पहुँचा। उसका पिता मृत्यु-शय्या पर था। क्रैफोर्ड को बुलाने के लिए वह काफी दिनों तक रुका था। उस अकेले घर में, मृत्यु से जूझते हुए, उसका लकड़ी का पैर ही उसका साथी था। घर के चारों ओर की जमीन पर वृक्षों का साया था और बस—बाकी निपट अकेला! उस पहाड़ी सड़क से होकर क्रैफोर्ड जिस दिन अपने घर पहुँचा, उसकी दूसरी रात उसके पिता की मृत्यु हो गयी।

अपने पिता की मृत्यु के बाद, उस छोटे एकाकी घर में, क्रैफोर्ड कुछ समय तक अकेला ही रहा। वह यह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे अब क्या करना है और यह तय करने तक वह वहीं रुका रहा। वह अब २८ वर्ष का हो गया था और तब तक उसके जीवन में एक ही औरत आयी थी। जंगलों की उसने जानकारी प्राप्त कर ली थी; लकड़ी चीरने के कारखाने, बुरादा ढोने और आदमियों से काम लेने के साथ, उसने थोड़ी इंजीनियरिंग भी सीख ली थी। वह यह अनुभव कर रहा था कि अब कोई ऐसा काम होना चाहिए, जो उसे व्यस्त रख सके। और अंततः, एक दिन जब उसने समाचारपत्र में 'टेनेसी वैली अथारिटी' के सम्बंध में पढ़ा, तो वह जान गया कि जिसकी उसे तलाश थी, वह काम उसे मिल गया।

उसने अपनी जमीन का वह छोटा-सा टुकड़ा बेच दिया। उस टुकड़े में सिर्फ ठूँठ-ही-ठूँठ भरे थे, अतः उसे उसकी अधिक कीमत नहीं मिली। जमीन बेच कर वह नाक्सविले चला गया। उसने 'टेनेसी वैली अथारिटी' में

दरख्वास्त दी, जितनी आवश्यक परीक्षाएँ थीं, सब दे दीं और प्रतीक्षा करने लगा। उसे एक काफे में तश्तरियाँ धोने का काम मिल गया था और तब भी वह इंतजार कर रहा था। वह उन मोटरों और ट्रकों को देखता रहता, जिस पर दोनों ओर टी. वी. ए. लिखा रहता था और उनमें खाकी पोशाक पहने जवान भरे रहते और उनके चेहरे पर बुद्धिमत्ता की छाप रहती। उसे धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा कि वह कभी उन व्यक्तियों में शामिल नहीं हो सकेगा। उसे ऐसा लगने लगा कि किसी चमकीली पोशाक के समान ही उन युवा व्यक्तियों में जो योग्यता, पूर्णता और उपयोगिता झलक रही थी, उनके लिए उसकी उम्र बीत चुकी है।

किंतु एक दिन जब वह अपने रहने की जगह पर आया, तो एक पत्र उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि उसे टी. बी. ए. में ले लिया गया है। वह टी. वी. ए. वालों के लिए इमारती लकड़ियाँ (शीशम, हल्द, तुन, आदि) तलाश करनेवाला था। अब वह उस बड़ी योजना का एक अंग था, जिसके बारे में उसने एक समाचारपत्र में पढ़ा था, जिसमें शामिल होने के लिए वह वहाँ आया था, जिसके सम्बंध में उसने अपनी प्रतीक्षा की अनिश्चित अवधि में बड़ी व्यग्रता और बड़े ध्यान से अध्ययन किया था और जो उसके दिमाग के लिए एक बहुत बड़ी चीज थी। वृक्षों, आदमियों और बुरादे से यह कहीं बड़ा था; यह तो सम्पूर्ण प्रदेश था—जमीन, वृक्ष, मर्द, औरत, बच्चे, नदी—सब इसमें अपनी पूरी महानता के साथ शामिल थे और एक अपार परिवर्तन के द्वारा सबको नया रूप दिया जानेवाला था। और वह उनके लिए इमारती लकड़ियाँ तलाश करनेवाला था—इस योजना का एक अंग था।

पर उसने इमारती लकड़ियाँ तलाश नहीं की। जब से वह इस काम पर नियुक्त हुआ था, तब से एक बार भी वह जंगल में वृक्षों की कतार के पास नहीं गया था। आवश्यक परिवर्तन और आग्रह की असंगतता के साथ उसे भूमि-क्रय-विभाग में काम करने के लिए बाध्य कर दिया गया था, जहाँ उसकी जानकारी, इमारती लकड़ियों के सम्बंध की जानकारी की तुलना में कुछ नहीं थी। लेकिन उसने यह काम भी किया और लोगों से बातें भी कीं। होने-वाले परिवर्तन की महानता और व्यापकता की जानकारी के आधार पर वह दृढ़ता और विश्वास की भावना के साथ बातें करता और उसके ऊपर जो यह काम सौंपा गया था, उसने उसे बड़ी कुशलतापूर्वक सीख लिया। उसके साथ काम करनेवालों में, उसकी तरह के कम उम्र के जितने व्यक्ति थे, उनमें वह

अधिक योग्य था—काम के पूरा उतरने का उसे अधिक विश्वास रहता था।

और उसीसे वह डनबार की घाटी में आया। उसके पीछे उसका अतीत था—ये सारी बातें थीं—उसका ही एक अंग—बुरादे, बहुत-सारे आदमी, वृक्ष और उसका स्वप्न! उसने मैथ्यू की ओर देखा। वह उसकी ओर देख रहा था और मैथ्यू उसे अच्छा लग रहा था। उसकी जिद और न समझने की भावना को भी वह थोड़ा-थोड़ा समझ रहा था; किंतु उससे बातें कर, उसके विरोध की निरर्थकता उसे बताने की आवश्यकता को भी वह जानता था।

"महाशय!" उसने कहा—"टी. वी. ए. यहाँ क्या कर रही है, आप जानते हैं......"

"नदी के ऊपर और नीचे की ओर जो बाँध वे बना रहे हैं—" मैथ्यू ने कहा—"मैंने उसके बारे में सुना है।" उसने प्रशंसात्मक ढंग से अपना सिर हिलाया—"लोगों के लिए वे काम का निर्माण कर रहे हैं।"

क्रैफोर्ड आगे की ओर झुका। "यह काम का निर्माण-भर नहीं है—" उसने कहा—"भगवान् अथवा मनुष्य ने इस देश में जो-कुछ भी बनाया है, उन सबसे यह अधिक बड़ा और शक्तिशाली है। वे नदी को नियंत्रित कर रहे हैं और इसे वहाँ कार्यरत कर रहे हैं, जहाँ इसने पहले कभी काम नहीं किया।"

एक हाथ में लगाम थामे मैथ्यू उसे निहारता हुआ खड़ा रहा। उसके लिए जवाब देना जरूरी नहीं था। इस युवक को सारी बातें कहनी थीं। मैथ्यू को कुछ नहीं करना था, कुछ नहीं कहना था; क्योंकि वह अपनी स्थिति जानता था। स्थिरता से जम कर वह यहाँ खड़ा था, वह डनबार की जमीन थी और वह यह जानता था। टी. वी. ए. और क्रैफोर्ड के अनुनय से वह अपना बचाव, अपनी रक्षा वैसे ही करेगा, जैसे उसने उन वर्षों में अपनी रक्षा की थी, जब बहुत बारिश हुई थी और जब बिलकुल पानी नहीं पड़ा था; जैसे उसने सबसे बड़ी मंदी से अपनी रक्षा की थी। और वह इतना अनुदार और अशिष्ट तो था नहीं कि उसकी बातें नहीं सुनता।

"वे नदी की वेगवती धारा में पनचक्की बैठा रहे हैं। उससे उत्पादित बिजली को वे चारों ओर वितरित कर रहे हैं—ठोस बिजली, सस्ती बिजली—जिससे आपकी और मेरी तरह के लोग भी इसका खर्च वहन कर सकें और उसी प्रकार इसका उपयोग कर सकें, जिस तरह जरूरत पड़ने पर खेत में दर्जनों अतिरिक्त आदमियों से वे काम लेते हैं। साथ ही, वे नदी को नियंत्रित भी कर रहे हैं और उससे काम ले रहे हैं, मानो वह उद्दंड और प्रखर

होने के बजाय, उनके उपयोग के लिए ही बनायी गयी है। यही क्यों, दस वर्षों में ही, आप नदी में प्रति घंटे, तले पर चिपटी बनी नावों की कतार देखेंगे, जो सैर करने या माल ढोने के काम आती हैं—जब कि अभी आपको सप्ताह-भर में भी एक नाव नहीं दिखायी देती!"

"सिवा इसके कि जिस ढंग से तुम कह रहे हो—" मैथ्यू ने कोमलतापूर्वक कहा— "मैं यह सब देखने के लिए यहाँ रहूँगा ही नहीं। पानी को जगह देने के लिए मैं यहाँ से हटा दिया जाऊँगा।"

क्रैफोर्ड रुक गया। उसका चेहरा उसी प्रकार उठा हुआ था और उस पर दृढ़ता की छाप थी। "और इसका निर्माण हम लोगों के द्वारा हो रहा है, मि. डनबार, पैसेवालों के द्वारा नहीं, जो पैसेवालों के उपयोग और लाभ के लिए हो। यह आपका, मेरा और प्रत्येक व्यक्ति का होगा। हम इसका ध्यान रख सकते हैं कि यह ठीक ढंग से बने, ठीक ढंग से इसका इस्तेमाल हो और सही व्यक्तियों द्वारा इसका संचालन हो। किंतु कभी-कभी जब किसी बड़े काम की नींव डाली जाती है, तो एक छोटी चीज को उसकी राह से हट कर उसे रास्ता देना ही पड़ता है। दस मील नीचे की ओर जब हम चिकमा-बाँध तैयार कर लेंगे, तब यहाँ सौ मील लम्बी एक झील होगी—एक ऐसी झील, जिसमें डनबार की यह घाटी भी समा जायेगी।"

मैथ्यू ने आसपास की धरती की ओर देखा। वह उस स्थिति की कल्पना करने की कोशिश कर रहा था—चारों ओर गहरा, नीला और ठंडा पानी, तैरती हुई मछलियाँ और उसके नीचे उसकी उर्वर भूमि, जो अनुर्वर कीचड़ बन जायेगी। उसने इनकार में सिर हिलाया।

"बेटे!" उसने कहा—"डनबार और उनकी धरती—दोनों ही ज़माने से बहुत पीछे जा सकते हैं और ज़माने से बहुत आगे जा सकते हैं। सरकार जितने भी बाँध बनाना चाहती है, बना सकती है, इस देश में चारों ओर उसी प्रकार बिजली के तार बिछा सकती है, जैसे यहाँ चारों ओर शराब मिलती है। लेकिन जो मैं नहीं करना चाहता हूँ, उसके लिए यह मुझे बाध्य नहीं कर सकती।"

क्रैफोर्ड के सामने अब यह स्पष्ट हो चला था कि किसी समझौते पर पहुँचने का रास्ता कितना लम्बा है। "हम लोग यहाँ इसलिए नहीं आ रहे हैं कि आपको कुछ भी करने के लिए बाध्य किया जाये।" उसने शांत स्वर में कहा —"हमलोग यहाँ आ रहे हैं इस परिवर्तन में आपकी सहायता करने, आपका पथ-प्रदर्शन करने। एक हाथ में अदालत से आदेश-पत्र और दूसरे

हाथ में अच्छी-खासी रकम लेकर भी हम यहाँ आ सकते थे। लेकिन टी. वी. ए. उस ढंग से काम नहीं करती है। आनेवाले कई वर्षों तक टी. वी. ए. को इस भूमि पर रहना है और जिनके साथ यह रहनेवाली है, उनका खयाल भी इसके मन में है। अच्छी कीमत पर इस घाटी के समान ही सम्पन्न और उर्वर भूमि खरीदने में हम आपकी सहायता कर सकते हैं। तब इस परिवर्तन से लड़ने के लिए आपके पास कोई कारण नहीं रहेगा।"

मैथ्यू के मन में क्रोध की लहर-सी दौड़ गयी। इस हठी युवक को समझाने का कोई रास्ता नहीं था। कपास की कतारों में बैठ कर वह इसे सारी पिछली बातें नहीं बता सकता था कि किस प्रकार सबसे पहला डनबार यहाँ आकर बसा था, वृक्ष रोपे थे, आग जलायी थी, जमीन पर अधिकार किया था, इसका नाम-करण किया था और अंत में, अपने उत्तराधिकारी को सौंप दिया था। नहीं—यह व्यक्ति धरती को थोक मिट्टी और एकड़ों में मापता है, प्रत्येक की एक कीमत, प्रत्येक आसानी से विभाजित करने क योग्य और बेचे जाने के योग्य! यह मिट्टी उसके लिए धरती नहीं थी। और यह अंतर समझाने के लिए कोई रास्ता नहीं था—कोई ऐसा मार्ग नहीं, जिसके जरिये वह प्रयास भी कर सके। अच्छा होगा कि वह अब इसे यहीं समाप्त कर दे।

मैथ्यू मुस्कराया। "बेटे!" उसने कहा—"आज शाम तुम यहाँ किसी उपदेशक की तरह ही बातें कर रहे हो और मैं एक उपदेशक को हमेशा अच्छा खाना खिलाता हूँ। आज रात का खाना तुम हमारे साथ ही क्यों नहीं खा लेते हो?"

क्रैफोर्ड हँस पड़ा। "मेरा खयाल है, मैं आपको सीख ही दे रहा था—" वह बोला—"मैं माफी चाहता हूँ। किंतु जब एक आदमी किसी चीज में विश्वास करता है, तो उसे उसके सम्बंध में व्याख्यान देना ही पड़ता है।"

मैथ्यू ने उसके कंधे पर हाथ रखा। वहाँ माँसपेशियों की सुदृढ़ता देख कर वह आश्चर्यचकित हो गया। यह एक ऐसा आदमी है, जिसने श्रम किया है—उसने सोचा—ऐसा आदमी, जिसने सप्ताह, महीना और साल के प्रत्येक दिन अपने कंधे से काम का बोझ उठाया है। "हाँ—" उसने कहा—"मैं जानता हूँ कि किसी व्यक्ति का किसी चीज में विश्वास करने का क्या अर्थ होता है। चलो, आओ अब! अगर हम लोग इसी तरह बातें करते रहें, तो हम पागल हो जायेंगे—और तब हम दोनों में से कोई भी अपनी शक्ति का उपभोग नहीं कर सकेगा।"

उन्होंने लकड़ी का वह पुल पार किया और उस सोते की बगल में मुड़ गये। खेतों से होकर गुजरनेवाली उस पगडंडी पर वे बढ़ रहे थे, जो खलिहान की ओर मुड़ गयी थी। वे खेत के उस हिस्से से गुजरे, जहाँ तरबूज लगी हुई थी। दोस्त के समान वे साथ-साथ चल रहे थे। खच्चर उनके पीछे-पीछे आ रहा था। मैथ्यू रुक गया और उसने क्रैफोर्ड को लगाम दे दी।

"मैंने कुछ तरबूज ठंडे होने के लिए रख दिये थे—" उसने कहा—"एक मिनट ठहरो।"

वह नदी की उस पतली धारा के किनारे से नीचे की ओर उतरा और पानी से वे दो तरबूज निकाल लिये, जो उसने दोपहर में वहाँ रखे थे। तरबूज की ऊपरी परतें हरी और ठंडी थीं और वह उन्हें अपने हाथ में लिये चिकनाहट का अनुभव कर रहा था। उसने दोनों को अपनी एक-एक बाँह के नीचे दबा लिया और किनारे पर चढ़ आया।

"फसल खड़ी करने का काम खत्म हो गया—" उसने बताया—"इसी से मैंने सोचा कि आज रात में खाने के पहले हम तरबूज की दावत कर लें। लो, एक तुम ले चलो, दूसरा मैं ले चलूँगा।"

वे बड़ी सहजता से मित्रों की तरह व्यवहार कर रहे थे; अन्यथा मैथ्यू उसे अपने बोझ का भाग नहीं दे देता। वे फिर चलने लगे, अपने-अपने कंधे पर वे एक-एक तरबूज उठाये हुए थे। खलिहान पहुँच कर वे रुक गये और उस बड़े फाटक को खोलने के लिए मैथ्यू ने अपना तरबूज नीचे रख दिया। वे फाटक से होकर अंदर गये और उन्होंने खच्चर की एक नाँद में तरबूज रख दिये। मैथ्यू ने खच्चर को खोल दिया और उसे चरागाह की ओर कर दिया, जहाँ दूसरे खच्चर चर रहे थे। तब वे घर की ओर बढ़े। वे सामने के आँगन से होकर चल रहे थे, जहाँ सूरज के प्रकाश से वह बड़ा बलूत का वृक्ष आश्रय प्रदान कर रहा था।

मैथ्यू ने अपनी ऊँची आवाज़ में पुकारा। "खेत जोतना समाप्त हो गया है—" वह चिल्लाया—"और मैं दो तरबूज भी लेता आया हूँ। कौन उन्हें खाना चाहता है?"

मकान के भीतर से अचानक तीव्र हँसी और शोरगुल की आवाज़ सुनायी दी और बटेर के किसी झुंड की तेजी के समान ही हैटी रसोईघर से बाहर निकली।

"डैडी!" उसने जोर से पुकार कर कहा—"तरबूज!"

"ठहरो!" मैथ्यू ने उसे पकड़ते हुए कहा—"जब तक और लोग यहाँ नहीं आ जाते हैं, तब तक इंतजार करो। लड़के सब कहाँ हैं?"

"वे सोते में तैरने और नहाने के लिए गये हैं—" हैटी ने कहा। उसके पैर जमीन खुरचने लगे—"मैं जाकर उन्हें बुला लाती हूँ।"

मैथ्यू ने उसे छोड़ दिया। "जाओ तब—" उसने कहा—"और जल्दी करो।" वह क्रैफोर्ड गेट्स की ओर मुड़ा—"बैठ जाओ और सुस्ता लो। गर्मी में चल कर आये आदमी को ठंडा तरबूज खाने का कोई अधिकार नहीं है।"

किंतु क्रैफोर्ड आर्लिस की ओर देख रहा था, जो रसोईघर से निकली आ रही थी। उसके हाथों में छूरियाँ और चम्मच थे और कुछ नमकदानियाँ थीं। उसके कपड़े पर आटा बिखरा हुआ था और उसके बाल एक ओर नीचे लटक रहे थे। किंतु, उसका हँसमुख, गहरे रंग का चेहरा और मेहराबदार आँखें क्रैफोर्ड को भा गयीं और उसके चलने का ढंग भी उसे पसंद आ गया। वह अपने पैर झुलाते हुए चल रही थी, उसके चलने में एक ओज था; फिर भी उसमें एक कोमलता थी—एक गहरा सौंदर्य था। आँगन में एक अजनबी को देखते ही वह चौंक कर रुक गयी। फिर जब वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी, तो उसके चलने का ढंग बदल गया था। उसकी चाल में पहले की तुलना में अधिक ठहराव और शिष्टता आ गयी थी।

"आर्लिस!" मैथ्यू ने कहा—"ये क्रैफोर्ड गेट्स हैं। रात का खाना ये हमारे ही साथ खायेंगे।"

आर्लिस रुक गयी। एक तो गर्मी और दूसरी अपनी मलिनता से वह थोड़ी घबराहट का अनुभव कर रही थी। "आपसे मिल कर खुशी हुई—" उसने कहा। उसने मैथ्यू की ओर शिकायत-भरी नज़रों से देखा। "अगर मैं जानती कि आप लोगों को खाने पर ला रहे हैं, तो मैं एक मुर्गी मारती और..."

मैथ्यू हँसा। "तली हुई मुर्गी नहीं मिलेगी।" उसने क्रैफोर्ड से कहा—"मेरा अंदाज है, तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी—क्यों?"

"मेरा भी यही अंदाज है—" क्रैफोर्ड ने भी हँसते हुए कहा।

मैथ्यू ने अपना हाथ आर्लिस के कंधे पर रख दिया। "आर्लिस मेरी लड़की है—" वह बोला—"जब यह पंद्रह वर्ष की थी, तभी से घर चला रही है—जिस दिन इसकी माँ मरी, उसी दिन से।"

इन शब्दों से व्याकुल-सी हो आर्लिस उससे दूर हट गयी। "मैं दिन-भर

पाव-रोटी बना रही थी—" उसने कहा—"आज रात मैं यों ही साधारण-सा खाना बनाने का विचार कर रही थी। लड़के सब नाच में जा रहे हैं और इन्हीं सब बातों से। मुझे आशा है, आप बुरा नहीं मानेंगे, मि. गेट्स!"

"मेरे लिए यह बिलकुल ठीक है—" क्रैफोर्ड ने बड़े नाज़ो-अंदाज से कहा—"जो भी आप खाने की मेज पर रखना चाहती हैं, मेरी ओर से ठीक है।"

सोते की ओर से चिल्लाने और शोरोगुल की आवाज उन्हें सुनायी दी और झाड़ियों से बाहर निकलते हुए लड़कों को देखने के लिए वे जैसे ठीक समय पर मुड़े। नाक्स एक हाथ से दूसरे हाथ में कपड़े उछालता हुआ, आगे-आगे था और राइस उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। उसने सिर्फ जाँघिया और कमीज पहन रखी थी। हैटी उनके पीछे नाचती-कूदती चली आ रही थी। उत्तेजना से वह जोरों से चीख-सी रही थी।

आँगन में पहुँचते-पहुँचते राइस ने नाक्स को लगभग पकड़ लिया था। नाक्स अचानक जमीन पर गिर गया और राइस उसके ऊपर से होता हुआ सड़क की धूल में लुढ़क गया। नाक्स खड़ा हो गया। उसके हाथ धूल से भरे थे और वह उसे राइस के नंगे और भीगे शरीर पर फेंक रहा था। राइस जोरों से चिल्लाया और वह भी धूल फेंकने लगा। थोड़ी ही देर में ऐसा लगने लगा, जैसे सड़क के बीचोबीच दो पालतू मुर्गे लड़ रहे हों।

"मेरे विचार से उस स्नान से इन लड़कों कोई लाभ नहीं होनेवाला है।" मैथ्यू ने कहा। उसने ऊँची आवाज में पुकारा—"अपने-अपने कपड़े पहन लो, लड़को! हमारे यहाँ मेहमान आये हैं।"

तत्काल ही वे, अजनबी को देखने के साथ, गम्भीर हो गये और राइस ने जल्दी से अपने कपड़े पहन लिये। वे मकान की ओर बढ़ आये और जैसे-जैसे मैथ्यू उनका नाम पुकारता गया, बारी-बारी से वे क्रैफोर्ड से हाथ मिलाते गये। क्रैफोर्ड उनमें से प्रत्येक को निहार रहा था। उनकी स्वाभाविक सरलता, मर्यादा और जिस विश्वास के साथ वे उससे मिले, वह उसे पसंद था। इस पूरे परिवार में, खास कर आर्लिस में विश्वास के साथ कार्य करने की ऐसी आदत और अपनत्व की ऐसी भावना थी, जो स्वयं क्रैफोर्ड में कभी नहीं रही। उसने मुड़ कर फिर आर्लिस की ओर देखा, जो अपने हाथ में छुरियाँ और नमकदानियाँ लिये बरामदे की सीढ़ियों पर बैठी थी। वह उन लोगों की ओर देख रही थी। यद्यपि वह एक भारी-भरकम शरीरवाली औरत थी; फिर भी

उसकी चाल में यौवन और कोमलता थी—लचक थी और वह सोच रहा था कि निश्चित रूप से वह काफी अच्छा नाचती होगी।

"बहुत ठीक।" मैथ्यू ने कहा—"लड़को! तुम लोग जाकर कुछ तख्ते और धुन्नियाँ ले आओ, जिस पर चीरने के लिए लकड़ी रखी जाती है। ये तरबूज फिर से गर्म हो जायें, इसके पहले ही मैं इन्हें काट डालना चाहता हूँ।"

इन तैयारियों में देर नहीं लगी और मैथ्यू खड़ा प्रतीक्षा करता रहा। वह अपने हाथ में बड़ा, कसाइयोंवाला छूरा लिये था। कौनी को लाने के लिए जेसे जान जल्दी से घर में घुस गया। वह आइने के सामने बैठी थी और अभी तक उसने वही पतली पोशाक पहन रखी थी।

"हम लोग तरबूज काट रहे हैं, कौनी —" आइने में प्रतिबिम्बित उसके चेहरे से उसके मनोभावों का पता लगाने के लिए चिंतित निगाहों से देखता हुआ जेसे जान बोला—"आओ न, तुम भी एक टुकड़ा खा लेना।"

कौनी उसकी ओर मुड़ी भी नहीं। "तरबूज के रस से चिपचिपा बनने का मेरा इरादा नहीं है—" वह बोली—"तुम सब जाकर खाओ।"

"किंतु वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं—" जेसे जान ने कहा—"आओ भी, कौनी! यों ही बैठी नहीं रहो और..."

"मुझे अभी भी कुछ तैयारी करनी है—" कौनी ने तीव्रता से कहा—"जल्दी करो और जाकर अपना पुराना तरबूज खाओ। मैं चाहती हूँ कि आज रात नाच में, तुम टाई लगा कर चलो।"

जेसे जान ने उसकी ओर निराशाजनक भाव से देखा। "प्रिये!" उसने कहा—"मेरा इरादा था कि मैं रात में यहीं रुक कर पापा के कामों में हाथ बँटाता, बाकी सभी तो चले जायेंगे।"

वह उसकी ओर घूम पड़ी। "नहीं!" उसने बेरुखी से कहा—"आर्लिस और हैटी तुम्हारे डैडी की मदद कर सकती हैं। मैं उस नाच की इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रही हूँ कि अब उसे छोड़ नहीं सकती। फसल उगने के बाद यह पहला नाच है।"

"लेकिन प्रिये..." वह रुक गया, उसकी आवाज़ में आत्मसमर्पण का पुट था। वह उसकी ओर बढ़ा और उसने उसे बेंच से उठा कर अपनी बाहुओं में ले लिया। "निश्चय ही, आज रात्रि तुम काफी सुंदर लगनेवाली हो। तुम्हीं वहाँ सबसे सुंदर लड़की होओगी—यह तय है।"

वह मुस्करायी और उसने जल्दी से जेसे जान को चूम लिया। "जल्दी करो

अब—" उसने उसे अपने से दूर करते हुए कहा—"कह दो उनसे कि मुझे तरबूज नहीं चाहिए।"

वह घूम पड़ा और उसकी ओर मुड़-मुड़ कर देखते हुए अनिच्छापूर्वक कमरे के बाहर चला गया। वह फिर आइने के सामने बैठी हुई थी और स्वयं को निहार रही थी। लेकिन यह आइना उसने ही उसे खरीद दिया था—अपने कपास के पैसों से। वह मुस्कराया और चला गया।

आँगन में, मैथ्यू बड़ी निपुणता से तरबूजों को चार बराबर भागों में बाँट रहा था। तरबूज इतने ज्यादा पके थे कि चाकू का स्पर्श ही उन्हें काटने के लिए पर्याप्त था। तरबूज के फटे टुकड़ों से लाल-चमकदार और स्वादिष्ट गूदा स्वयं निकल आया और जब तक मैथ्यू का काम खत्म नहीं हुआ, ये सब खड़े प्रतीक्षा करते रहे।

मैथ्यू ने चाकू नीचे रख दिया और उन टुकड़ों में से एक उसने उठा लिया। उसने एक बड़े गम्भीर शिष्टाचार के साथ उसे क्रैफोर्ड गेट्स को दिया। क्रैफोर्ड ने इसे ले लिया और खड़ा प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि मैथ्यू ने बारी-बारी से उन सबको एक-एक टुकड़ा नहीं दे दिया। पहले आलिस को, तब नाक्स, जेसे जान और राइस को।

मैथ्यू ने जेसे जान की ओर देखा। "कौनी कहाँ है?" उसने पूछा।

"उसे तरबूज नहीं चाहिए।" जेसे जान ने जल्दी से कहा।

मैथ्यू के ललाट पर हल्की सिकुड़नें उभर आयीं। लोगों का अनुपस्थित रहना उसे पसंद नहीं था। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। वह उसी तरह लोगों को तरबूज के टुकड़े देता चला गया। सबसे अंत में उसने हैटी को एक टुकड़ा दिया, जो बीच का था और जिसमें काफी गूदा था।

सभी लड़के बलूत के पेड़ की जड़ों पर बैठे थे। उन्होंने दोनों हाथ से तरबूज का टुकड़ा पकड़ रखा था और दाँत से काट-काट कर खा रहे थे। हैटी बरामदे की सीढ़ियों पर आलिस की बगल में बैठी थी। उसने एक सुंदर-सी चम्मच ले रखी थी और उसीसे तरबूज खा रही थी, यद्यपि वह लड़कों के समान ही दाँत से काट-काट कर खाना चाहती थी। लगभग हमेशा वह ऐसा ही करती भी थी; लेकिन आज यहाँ वह सुन्दर-सा अजनबी भी था और आखिर वह बारह वर्ष की हो गयी थी और नसवार की बोतलों का काफिला अब उसकी दिलचस्पी के दायरे में नहीं रह गया था।

मैथ्यू ने अभी तक तरबूज का अपना टुकड़ा छुआ भी नहीं था। उसने

दूसरा टुकड़ा उठा लिया और उसे लेकर बरामदे से होता हुआ कौनी और जैसे जान के कमरे की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँच कर कौनी की ओर देखता हुआ, वह दरवाजे में खड़ा हो गया।

"तुम बहुत ही अच्छे और स्वादिष्ट तरबूज से स्वयं को वंचित रख रही हो—" उसने कहा।

कौनी तेजी से घूम पड़ी। हड़बड़ाकर हाथों से उसने अपने उरोज ढँक रखे थे। मैथ्यू की उपस्थिति में उसे उस पतली पोशाक के लिए शर्म लग रही थी, जो उसने पहन रखी थी। उसे ऐसा लग रहा था कि मैथ्यू की आँखें इसे भेद कर उसके नीचे के चमड़े को देख सकती थीं। मैथ्यू भीतर-ही-भीतर गहराई से मुस्कराया। "मैं भी इसके लिए एक पराया पुरुष हूँ—" वह सोच रहा था—"मैं भी, जो उसके पति का बाप है!"

"मैं..." कौनी ने हकलाते हुए कहा—"मुझे यह नहीं चाहिए, मि. डनबार!"

"आ भी जाओ अब—" उसने कोमलता से कहा—"हम समारोह मना रहे हैं और तुम एक समारोह से स्वयं को अलग नहीं रख सकती हो।"

"लेकिन मैंने ठीक से...कपड़े भी नहीं पहन रखे हैं।"

वह कमरे के भीतर चला गया और तरबूज की उस फाँक को उसने शृंगार-मेज पर रख दिया। "कपड़े पहन लो—" उसने कहा— "और बाहर आ जाओ।" वह मुड़ा और दरवाजे की ओर बढ़ा। "क्या जैसे जान आज रात तुम्हें नाच में ले जा रहा है?" रुकते हुए उसने पूछा।

"हाँ!" वह बोली—"उन्होंने कहा है कि वे मुझे नाच में ले जायेंगे..."

मैथ्यू ने अपना सिर हिलाया और चला गया। रास्ते में, रहनेवाले कमरे के प्रवेश-द्वार पर रुक कर उसने भीतर झाँका। भरी गर्मी-सी दहकती अंगीठी के निकट उस पुरानी आरामकुर्सी पर उसका वृद्ध पिता बैठा था। उसके पतले, सूजे हाथ उसकी गोद में मुड़े पड़े थे।

मैथ्यू कमरे के अंदर चला गया। कमरे में इधर-उधर आरामकुर्सियाँ और सादी कुर्सियाँ बिखरी पड़ी थीं। एक कोने में एक आदमी के सोने-लायक बिछावन बिछा था, जहाँ उसका बूढ़ा पिता सोता था। बिस्तरे पर रजाइयाँ रखी थीं; क्योंकि गर्म रातों में भी उसके बूढ़े पिता को ठंड लगती थी।

मैथ्यू उसकी कुर्सी की बगल में रुक गया। उसने झुक कर उसकी ओर देखा और ऊँची आवाज में पूछा—"कैसे हैं आप, पापा?"

काफी लम्बे क्षण तक उसका वृद्ध पिता हिला-डुला नहीं। उसका चेहरा दुर्बल और कमजोर था। ऐसा लग रहा था, जैसे हल्की, सूखी हड्डियाँ छूते ही टूट जायेंगी। मैथ्यू जानता था कि उसका सारा शरीर ऐसा ही है। प्रति सप्ताह वह उसे गर्म पानी के टब में खड़ा कर अपने हाथों से नहलाता था। यह मेहनत वह खुद ही करता था और किसी को यह काम सौंपने को वह तैयार नहीं था। उसके शरीर पर का माँस दुर्बल और सुकुमार था—उसकी हड्डियाँ सूखी लकड़ियों के समान हल्की और कमजोर थीं, उसकी मूत्रेंद्रियाँ क्षीण और निर्जीव थीं—सिर्फ पेशाब करने-भर के लिए ही वे उपयोगी थीं। मैथ्यू ने उसके सिर को हिलते और उन धुँधली आँखों को ऊपर की ओर उठते देखा, जो उसकी तलाश कर रही थीं।

"ठीक ही हूँ!" पतली आवाज़ काँपी। जहाँ तक सम्भव है, हवा में यह सबसे हल्का कम्पन था और एक दो फुट तक ही पहुँच पाया था। उसे सुनने के लिए मैथ्यू को झुकना पड़ा था। आवाज़ रुक गयी और मैथ्यू उसके फेफड़ों की तीव्र-सख्त और खोखली हँफनी सुनता रहा।

उसने इस आदमी को—अपने पिता को—उसके जीवन के सर्वोत्तम काल में भी देखा था, जब उसका नाटा शरीर भी माँसल था—सुगठित माँसपेशियाँ और उनमें जीवन भरा था, उसके शुक्राणुओं में उत्पादन-शक्ति भरी थी। और खोखली साँसों पर टिकी यह पतली और कमजोर आवाज़ कभी वह आवाज़ थी, जिसने डनबार की घाटी का भार, उसके ऊपर डाला था। "यह ऐसा परिवर्तन है, जो हम सबके जीवन में आता है"—मैथ्यू ने सोचा—"ऐसा परिवर्तन, जिसके विरुद्ध हम लड़ नहीं सकते, चाहे कितनी कड़ी कोशिश हम क्यों न करें।" वह थोड़ा और निकट झुका और उसने अपनी आवाज़ कुछ और तेज की।

"पापा!" उसने कहा—"वे डनबार की घाटी खरीदने की कोशिश कर रहे हैं। वे यह घाटी मुझसे ले लेना चाहते हैं।"

किंतु ऊपर की ओर देखने के तनाव से दूर, वह चेहरा दूसरी ओर घूम चुका था। नीली-धुँधली आँखें पुनः आग की लपटों का प्रकाश खोज रही थीं और बूढ़े, ग्रंथिल तथा कमजोर हाथ असहाय-से उसकी गोद में पड़े थे। उस बूढ़े आदमी ने कुछ नहीं सुना था। वह समझा नहीं था। मैथ्यू क्षण-भर तक खड़ा उसकी ओर देखता रहा, फिर वह बाहर तरबूज की दावत में लौट आया।

"आह !" नाक्स आर्लिस से कह रहा था—"एक बार तो तुम जा ही सकती हो। मुझे याद भी नहीं आता कि कब तुम किसी नाच में गयी थी।"

"मुझे बहुत सारे काम करने हैं—" आर्लिस बोली—"खाना खाने के बाद, मैं सभी तश्तरियाँ इकट्ठा करूँगी और उन्हें साफ करना है......जाने की चेष्टा करने का अर्थ है, बहुत-सारी झंझटें।"

"आर्लिस !" हैटी ने शरारत से कहा—"तुमने स्वयं कहा था कि अच्छी पावरोटियाँ बनाना ही पर्याप्त नहीं है। अतः अब किस प्रकार तुम···"

"मिस प्रिस !" आर्लिस अचानक उसकी ओर घूमी—"तुम चुप रहो और अपना तरबूज खाओ।"

"आर्लिस !" सहसा क्रैफोर्ड ने कहा—"काश ! मैं तुम्हें नाच में ले जा पाता।"

आर्लिस ने उसकी ओर देखा। अकस्मात् उसके चेहरे पर लालिमा दौड़ गयी। वह उसके बारे में हैरान थी—क्यों वह यहाँ आया था, कैसे मैथ्यू उससे इतना अकस्मात् परिचित हो गया था और वह भी ऐसा परिचित कि उसे खाने पर बुला ले। वह उसे अच्छा लग रहा था; किंतु एक नाच के साथी के रूप में, उसके बारे में आर्लिस ने नहीं सोचा था—एक ऐसा व्यक्ति, जिससे वह खुल कर बातें कर सके, जिसके साथ हँस सके ! वह उसके पिता का दोस्त था—उसका मेहमान, उसका मुलाकाती !

"मुझे खेद है—" उसने कहा—"मुझे बहुत ज्यादा..."

"ओह, जाओ भी, आर्लिस !" हैटी ने जल्दी से कहा—"मैं तश्तरियाँ साफ कर लूँगी और बाकी सब काम भी। तुम जाओ।"

मैथ्यू खड़ा, आर्लिस का सोचना-विचारना और हिचकिचाना देखता रहा। अपना तरबूज खाते हुए, उनकी ओर देख कर वह मुस्करा रहा था। आर्लिस अब जैसे फँस गयी थी—क्रैफोर्ड के द्वारा उतना नहीं, जितना हैटी के द्वारा। और अकस्मात् क्रैफोर्ड के साथ नाच में जाने की उसकी इच्छा होने लगी।

"निश्चय ही—" अपनी खाकी कमीज और पैंट की ओर देखते हुए क्रैफोर्ड ने कहा—"नाच के लायक पोशाक में मैं नहीं हूँ, लेकिन..."

"अच्छा !" आर्लिस ने लगभग अनिच्छा से, साथ ही प्रसन्नतापूर्वक भी, कहा—"पापा को अगर कोई एतराज न हो, तो..."

"जाओ-जाओ—तुम सब लोग मेरी ओर से जाओ—" मैथ्यू ने जल्दी से कहा और बात तय हो गयी।

"आप क्या काम करते हैं, मि. गेट्स?" नाक्स ने उसकी ओर देखते हुए पूछा। अब वह पूछ सकता था। सारे समय वह उसके बारे में हैरानी से सोच रहा था।

क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की ओर देखा, मानो पूछ रहा हो, कितना उसे बताना चाहिए। "मैं टी. वी. ए. के लिए काम करता हूँ।" उसने कहा।

मैथ्यू ने तरबूज का बचा हुआ टुकड़ा रख दिया। "क्रैफोर्ड जमीन खरीदने का काम करता है।" उसने कहा और उनकी ओर देखा—बारी-बारी से प्रत्येक की ओर। "वह मुझसे कहने आया है कि टी. वी. ए. यह घाटी खरीदना चाहती है। वे लोग बाँध का पानी यहाँ जमा करना चाहते हैं और उससे एक झील बनायेंगे।"

वह उन पर अपने शब्दों की प्रतिक्रिया देखता रहा। हैटी सबसे ऊपर की सीढ़ी पर बैठी तरबूज खा रही थी। वह सुन ही नहीं रही थी कि क्या कहा जा रहा है। इसके बजाय वह तरबूज के स्वादिष्ट टुकड़े और अपने दाँतों में लगे रस पर अपना ध्यान केंद्रित किये हुए थी। आर्लिस अभी भी क्रैफोर्ड की ओर देख रही थी। उसके हाथ चम्मच के साथ धीरे-धीरे खिलवाड़ कर रहे थे और वह सोच रही थी कि क्रैफोर्ड की मजबूत और लचीली बाहों में बँध कर नाच करने में कैसा लगेगा!

नाक्स उठ खड़ा हुआ। "क्या सचमुच ही वे यह बाँध बनाने जा रहे हैं?" उसने पूछा। आवाज़ में उसकी दबायी गयी आतुरता की झलक थी। "आपका क्या खयाल है, मुझे वहाँ नौकरी मिल सकती है? मैंने सुना है कि टी. वी. ए. और उसके अधिकारी इसके लिए काफी अच्छी रकम देते हैं।"

राइस अभी भी बैठा मैथ्यू की ओर देख रहा था। "घाटी खरीदेंगे?" उसने कहा—"घाटी खरीदेंगे?" उसकी आवाज़ सुन्न और अविश्वसनीय थी। "इसके लिए वे देना कितना चाहते हैं?"

मैथ्यू ने उसकी ओर से घूम कर जेसे जान की ओर देखा। किंतु जेसे जान घर से निकलती कौनी को देख रहा था। कौनी ने सफेद आरगंडी की पोशाक पहन रखी थी। आर्लिस और हैटी के बीच से होती हुई वह सावधानीपूर्वक सीढ़ियाँ उतर रही थी और उसने एक हाथ में तरबूज की फाँक ले रखी थी।

"हेलो!" उसने उल्लास के साथ कहा—"ओह! तरबूज की दावत भी कितनी मजेदार होती है।" उसकी उपस्थिति की अच्छाई और अपनी प्रीति-भावना के सम्बंध में बिना कुछ बोले जेसे जान उसके निकट जाकर खड़ा हो

गया। वह उसे छूना चाहता था। लेकिन उसे डर था कि वह कहीं उसकी धुली और तहदार उजली आरगंडी को खराब न कर दे।

मैथ्यू ने अपना अधखाया तरबूज नीचे रख दिया। "अगर रात का सारा काम स्वयं मुझे ही करना है—" उसने कहा—"तो खाना खाने के पहले ही शुरू कर देना अच्छा रहेगा।"

वह उन लोगों से दूर हो गया और घूम कर मकान की उस नुक्कड़ की ओर चल पड़ा, जहाँ खलिहान की निर्जनता थी और जानवरों का साथ था।

दृश्य दो

कार्यरत युवक

इस सदी की किशोरावस्था में टी. वी. ए. का जन्म हुआ और युवावस्था में इसने अपना पूरा रूप धारण कर लिया। और जिन व्यक्तियों ने इसका स्वप्न देखा, रूपरेखा बनायी, निर्माण किया, इतने कम उम्र के थे कि कुछ वर्षों तक, अपनी चमकीली खाकी पोशाक में अपने काम पर जाते हुए, वे कुछ हास्यास्पद प्रतीत होते थे। उनकी युवावस्था, उनकी तत्परता और उनके विश्वास की हँसी भी उड़ायी गयी। मजाक और अविश्वास—युग-युग से आनेवाली दुःखद भविष्यवाणियाँ, मानो इस युग का सम्मान करने के लिए ही, भय-चकित-सी खड़ी थीं; किंतु उन युवकों ने उनकी ओर देखने या उनकी बातें सुनने से भी इनकार कर दिया।

क्योंकि वे एक महान् सत्य से परिचित थे। उनके द्वारा निर्मित ठोस, कंक्रीट-कार्य का प्रत्येक गज एक ऐसी पूर्णता था—एक ऐसी सफलता था—जिसे भविष्य नहीं बदल सकता था। राजनीतिज्ञ और प्रचारवादी मानव-मस्तिष्क को बहला कर काम करने की स्थिति से दूर ले जा सकते हैं—किंतु वे ठोस कंक्रीट से निर्मित एक गज भी नहीं बदल सकते। कंक्रीट उतना ही सत्य है, जितनी कि यथार्थता! यह तो स्वयं सत्य के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द है और उन युवा व्यक्तियों द्वारा निर्मित ठोस कंक्रीट में उनका नियंत्रित आत्मसमर्पण समाहित था। उसका प्रत्येक गज, पानी बंद करने अथवा खोलने का प्रत्येक दरवाजा, अधिक पानी बहने का प्रत्येक मार्ग, मानो युग के आगामी भ्रमजाल-मुक्ति के आघात को कम करनेवाला था। दूसरे शब्दों में, लोगों को वह अभी से उस स्थिति के लिए तैयार कर रहा था। और उसमें काम करनेवाले वे युवक जानते थे कि उनका यह निर्माण सदियों के लिए है।

किंतु टी. वी. ए. मात्र एक ठोस कंक्रीट नहीं है। वह उससे, अधिक पानी बहने के रास्तों से और जेनरेटरों (उत्पादन करनेवाले यंत्रों) से परे कुछ

और भी है। मलेरिया के कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए, बिलकुल उपयुक्त समय पर, किसी गणित के हिसाब के समान, जल-स्तरों के दो फुट नीचे उतर आने तक ही टी. वी. ए. सीमित नहीं है। कंक्रीट की यथार्थता के परे और ऊपर विचार है, समघात है और दंतकथा है। ये ऐसी चीजें हैं, जिन्हें राजनीति और प्रचार बदल सकते हैं। किंतु टी. वी. ए. के युवकों के पास विश्वास भी है और कार्य की सिद्धता भी। उनके विश्वास के अनुसार मानो यह भी एक सत्य था कि एक बार अगर विचार ने सदियों तक रहनेवाली ठोस कंक्रीट का रूप ले लिया, तो उसके साथ बालू, कंकड़, सीमेंट और पानी के आश्चर्यजनक मिश्रण के परे, उसके धक्के से उत्पन्न शक्ति और दंतकथा भी जीवित रहेगी—तब तक, जब तक कि वह निर्माण जीवित है।

युवावस्था में ऐसे ही विचार गहराई से अपनी जड़ें जमाये रहते हैं और इसी से स्वयं अपने में वे मात्र सांसारिक और वर्तमान में विश्वास करनेवाले थे। पानी बंद करने या खोलने का बाँध का यह दरवाजा, आज की कठिनाई, अधिक पानी बहने का यह मार्ग, कल का निर्माण-कार्य—यही उनके कार्यक्षेत्र और उनकी बातचीत की सीमाएँ थीं! उनमें, ईश्वर के बजाय स्वयं पर अधिक आस्था की एक भावना भी थी।...“मैं?” वे कहते थे—“मैं तो उस पुराने ऋण-परिशोध के लिए काम कर रहा हूँ। बस, मुझे आज इसे बना लेने दो—फिर वे चाहें, तो इसे बंद कर दें, लाल फीते में लपेट दें और कल इसकी दिशा परिवर्तित कर दें। लेकिन बस, आज अगर वे मुझे इसे बना-भर लेने देते!”

टिड्डियों के समान ही चारों ओर वे जमीन पर छा गये थे, लेकिन विनाश के बजाय वे निर्माण कर रहे थे। वे लोगों से बातें करते, सवाल पूछते और उन दुर्बोध्य ‘फार्मों’ की पूर्ति करते। वहाँ के निवासी आश्चर्यचकित पीछे खड़े रहते, उनके धृष्ट प्रश्नों का उत्तर देते और चुपचाप देखते रहते कि किस तरह उस अत्यधिक लम्बी प्रश्नावली में, उनके जवाब अमिट लिखावट में लिखे जा रहे हैं। वे युवक फुर्तीले, तेज और आत्मविश्वास की भावना से भरे थे—खेल में मस्त किसी दो वर्ष के बच्चे के समान ही। सुदूर कार्यालयों में बैठे अन्य युवकों के उलझे हुए आदेशों और न्यून अनुभव के आधार पर वे उन जमीनों का मूल्य निर्धारित करते, जिनकी पहले कभी कोई कीमत नहीं आकी गयी थी। वे जमीन का निरीक्षण करते, उसकी माप-जोख करते और जाँच के लिए धरती में छेद करके देखते। अब तक उन्होंने सिर्फ किताबी कसरतें की थीं।

व्यावहारिक रूप से नाप-जोख, जाँच और जमीन में छेद करके देखने का कार्य पहली बार वे कर रहे थे।

उन्होंने कैसे यह सब किया, यह आश्चर्य की बात नहीं थी; क्योंकि दुःखद भविष्यवाणियाँ करनेवालों की तरह वे यह नहीं मानते थे कि यह नहीं किया जा सकता। आश्चर्य तो इसका था कि उन्होंने यह सब इतनी निपुणता से कैसे किया। उन्होंने जमीन के बारे में इतनी जानकारी प्राप्त कर ली, जितनी पहले कभी किसी ने नहीं प्राप्त की थी। उन्होंने उसका नक्शा बनाया, फीते से नापा और उसमें छेद किये। उन्होंने विशेष दृश्य और धरातल को दर्शानेवाली रेखाओं की माप-जोख की और वहाँ भी आबादी तथा विटामिन ए. की खपत का हिसाब रखा। आबादी की औसत आयु, आमदनी और अंशदान की उन्होंने जानकारी प्राप्त की; उसके मूल्य, उसकी शिक्षा और उसके धार्मिक रीति-रिवाजों के बारे में समझा। और सबसे अधिक, वे जानते थे कि बाँध कैसे बनाये जाते हैं; क्योंकि उनके आँकड़े, ये माप-जोख, तालिकाएँ और प्रयोग, सर्द और निर्जीव आँकड़े-भर नहीं थे—उनमें कम्पन था, प्राण-शक्ति थी और वे जीवित थे—'पहले यह कैसा था' से 'बाद में यह कैसा होगा'—इसे मूर्त रूप देने की उनमें क्षमता थी।

वे बाँध बनाना जानते थे और उन्होंने बाँध बनाये भी। वे व्यावहारिक और यथार्थवादी थे और कपोल-कल्पनाओं में उनकी आस्था नहीं थी। उन्होंने धरती पर उन बाँधों को सदा-सर्वदा के लिए खड़ा कर दिया। उन्होंने एक योजना की रूपरेखा बनायी, जो किसी स्वप्न-लोक की चीज-सी थी और आशा, इच्छा—ये युवक और पुराने उपकरणों ने ही उस रूपरेखा को मूर्त रूप दे दिया।

उन्होंने चिकसा बाँध के बारे में कहा, जैसे पहले भी उसका अस्तित्व था; किंतु तब तक वे यह भी नहीं जानते थे कि इसके निर्माण के लिए धरती का कौन-सा विशेष हिस्सा चुना जायेगा। सभी सम्भावित स्थानों का उन्होंने अध्ययन किया, वहाँ धरती के नीचे पानी की क्या स्थिति थी, इसका पता लगाया, वहाँ के अंतरिक्ष-विज्ञान की जानकारी हासिल की। जलस्रोत, बाढ़ के पानी के बहावों, कहाँ कितना पानी था, बाढ़-नियंत्रण और नाव-जहाज, आदि के आने-जाने के सम्बंध में क्या स्थिति थी—इन सारी बातों की उन्होंने खोज-खबर ली। उन्होंने योजना बनायी, उसके खर्च का अनुमान लगाया, तत्सम्बंधी सामाजिक और आर्थिक अध्ययन किया और निर्माण-कार्य आरम्भ कर दिया।

उँगली से कहीं भी संकेत करते हुए उन्होंने यह नहीं कहा—"यही वह जगह है, जहाँ चिकसा नामक स्वप्न को मूर्त रूप दिया जायेगा।" नहीं कहा; क्योंकि वे व्यावहारिक, यथार्थवादी और वर्तमान में विश्वास करनेवाले युवक थे। इसके बजाय उन्होंने कहा—"बाँध बनाने के लिए चुने गये इस स्थान पर नदी ११५० फुट चौड़ी है। उत्तरी बाढ़-सतह ६०० फुट चौड़ी है, जो निचली जल-सतह के ५४३ डिग्री के कोण पर २९ से ३३ फुट ऊपर है। दक्षिणी बाढ़-सतह १८०० फुट चौड़ी है और निचली जल-सतह से २१ से ३७ फुट ऊपर है। बाँध की दोनों सीमाएँ उन ढालू पहाड़ियों पर आधारित होंगी, जो नदी की सतह से ५०० फुट ऊपर हैं। बैंगोर चूने के बिना छँटे हुए पत्थरों से यह बाँध बनाया जायगा। इसकी ६०० से ८०० फुट मोटी परत होगी, जिसमें साधारण और उत्तम, बिलौरों के समान स्वच्छ, नीले-भूरे रंग के पत्थर भी मिले होंगे।"

एक स्वप्न, एक कपोल-कल्पना को यथार्थता का रूप देने का यही तरीका है—लगभग ३,५२,००० घन गज जमीन और १,८६,००० घन गज पहाड़ की खुदाई सँभालना और फिर उन पत्थरों को इच्छानुसार आकार देकर अपनी जगह पर बैठाना, ८,३७,००० घन गज जमीन को भरना और २,९७,००० घन गज ठोस कंक्रीट की देख-भाल करना। लेकिन आप यह सब कर सकें, इसके पहले आपको २,१७,००० एकड़ जमीन की माप-जोख कर उसका नक्शा बना लेना होगा और जमीन की खुदाई करते और भरते समय, आपको कुछ शुल्क देकर १,१०,१४५ एकड़ जमीन अवश्य खरीद लेनी होगी—फिर भी यह इतना आसान नहीं है; क्योंकि इसके लिए आपको १,१८२ परिवारों से मिलना होगा और २४,४२६ एकड़ जंगल साफ करना होगा। और यह सब करते हुए कब्रगाहों जहाँ पवित्र आत्माएँ विश्राम करती हैं, सड़कों और पुलों को भी अपने ध्यान में रखिये; रेल की पटरियों, बिजली के तारों, टेलिफोन और बेतार के तारों का उल्लेख करना भी नहीं भूलिये। लेकिन कुछ भी आप करिये, जीवित और मृतक मनुष्यों को नहीं भूलिये। क्योंकि स्वप्न तक में आप मनुष्य का विनाश नहीं कर सकते हैं।

लेकिन अब काम शुरू हो गया है और एक दिन ऐसा भी होगा, जब यह बाँध अपने ठोस और सहनशील कंक्रीट के रूप में तैयार खड़ा होगा—और तब हर दिन का अस्तित्व लोगों के जीवन, एक क्षेत्र के विकास और एक देश के भविष्य की ढाल में कुछ-न-कुछ अंतर लायेगा। अब, इस जुलाई महीने

में, काम अपनी आरम्भिक अवस्था में है। १,८६,००० के पहले हिस्से के बहुत-से परिवारों में दो परिवारों को अन्यत्र हटा दिया गया है, घास-पात उगा एक कब्रिस्तान भी खोज निकाला गया है। कंक्रीट और सब सामानों की व्यवस्था हो गयी है। जमीन भी है और लोग भी। एक स्वप्न, उम्मीद और जानकारी के प्रारम्भिक प्रकाश से, जिसके साथ-साथ एक अदृश्य पौराणिक कथा भी जुड़ी है, तैयार की गयी एक नियमित रूपरेखा के अंतर्गत उन्हें आदेश दिये जा रहे हैं और वे काम कर रहे हैं।

प्रकरण तीन

काफी लम्बे समय तक, जब तक मैथ्यू खच्चरों को खिलाता रहा और गायें दुहता रहा, इस सम्बंध में उसने कुछ भी नहीं सोचा। वह पूरे मनोयोग से अपने दैनिक कार्यों में लगा रहा। सूअरों को उसने साफ किया और बाड़ों में मवेशियों को चारा दिया। वह उन्हें बड़े प्यार से सहला रहा था और उनसे बातें भी करता जाता था। वह हैटी के सिवा, जो पिछवाड़े की तरफ मुर्गियों को चुगा रही थी, बिलकुल अकेला था। पुआल के ढेर से उसने देखा कि हैटी को घेर कर चारों ओर उजले रंग की मुर्गियाँ खड़ी थीं—किसी श्वेत-सागर के समान ही और वह अपने दुबले हाथों से उनके सुनहले घेरों में दाने बिखेर रही थी। वह उन्हें चुगा रही थी, जिससे वे अच्छे अंडे दें और उनका माँस स्वादिष्ट बन सके। वृक्ष-कुक्कुट (एक विशेष प्रकार की मुर्गियाँ) झुरमुटों से निकल कर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहे थे और उस श्वेत-समूह की अगल-बगल पर जो दाने गिर रहे थे, उन्हें चुग ले रहे थे। उनके नीलारुण, भूरे, छोटे और जमीन में रेंगनेवाले जंतुओं की तरह के सिर नोकदार और अपने में मौलिकता लिये हुए थे।

उसने खलिहान का काम समाप्त कर लिया और हैटी के निकट पहुँचा। मुर्गियों को पानी देने के बर्तनों में ताजा पानी भरने में उसकी सहायता की। तब वे साथ ही, रसोईघर में गये, जहाँ खाने की मेज पर दूसरे लोग उनका इंतजार कर रहे थे। लड़कों ने अब पैंट और उजली कमीज पहन रखी थी। कमीज की बाँहें उन्होंने लापरवाही से कोहनियों तक मोड़ रखी थीं; लेकिन इस लापरवाही में भी एक सावधानी बरती गयी थी। मैथ्यू पेग ले-लेकर अपना

खाना खाता रहा। अभी भी वह कुछ नहीं सोच रहा था। उसके चारों ओर बैठे युवकों की आवाज़ तेज और उल्लसित थी और अंगीठी और मेज के बीच बराबर आती-जाती आर्लिस भी, जो खाने के लिए बैठ भी नहीं पा रही थी, और दिनों की अपेक्षा खुश, उन्मुक्त और कम उम्र की प्रतीत हो रही थी। मैथ्यू ने क्रैफ़ोर्ड की ओर देखा। उसने देखा कि वह अभी भी अधिक उम्र का नहीं हुआ था, उसमें अभी भी खुशी समायी हुई थी, अभी भी उसमें अरमान बाक़ी थे और क्षणभर के लिए मैथ्यू को आश्चर्य हुआ कि ऐसा युवक अपने साथ घाटी में ऐसी गहरी अशांति भी ला सकता है, जिसने उसके दिमाग को मथ डाला है।

"आर्लिस !" उसने कहा—"मुझे पावरोटी का एक टुकड़ा और दो।" वह क्रैफ़ोर्ड की ओर मुड़ा—"आर्लिस ठीक अपनी माँ के समान ही बड़ी अच्छी पावरोटी बनाती है।"

"सचमुच ही, यह बहुत अच्छी है—" क्रैफोर्ड ने आर्लिस के चेहरे की ओर देखते हुए कहा और वह जल्दी से अंगीठी के पास, खाने की और चीजें लाने के लिए लौट गयी, जिससे उसकी ओर देखना न पड़े। हैटी उसे कौतुक से देखती रही।

मेज के अपने किनारे पर बैठा वह बूढ़ा आदमी—मैथ्यू का पिता—खामोशी से खा रहा था। वह अपनी तश्तरी पर झुका हुआ था और उसके दंतविहीन जबड़े, उसके लिए आर्लिस द्वारा विशेष रूप से तैयार किया गया खाना चबा रहे थे। बच्चे बहुत ही कम उससे बोलते थे—वह जो कहता था, उसे सुनना और समझना बड़ा कठिन था, इसीसे। किंतु मैथ्यू उसे तब तक चिंतित हो देखता रहा, जब तक उसे यह संतोष नहीं हो गया कि उसका बूढ़ा पिता आराम से खा रहा था।

आकस्मिक कहकहों और बातचीत के बीच वे वहाँ से विदा हुए। जाने के पहले उन्होंने अपने पिता को सूचना देने की औपचारिकता ही बरती—"हम लोग जा रहे हैं, पापा !" आर्लिस और क्रैफोर्ड घाटी के प्रवेश द्वार तक, जहाँ क्रैफोर्ड ने अपनी गाड़ी लगा रखी थी, जैसे सँभल-सँभल कर एक-दूसरे की बगल में चलते रहे। लड़के सब आगे-आगे, खच्चरों पर सवार, आपस में हँसी-मजाक करते चल रहे थे। ये वही खच्चर थे, जिनसे दिन में उन्होंने खेत जोता था। कौनी के कारण मथ्यू ने अपनी टी-माडल की गाड़ी जेसे जान को ले जाने दी थी।

हैटी और अपने बूढ़े पिता के सिवा मैथ्यू घर में अकेला था। उनके चले जाने के बाद वह सामने की सीढ़ियों पर बैठ गया और लड़के अपने पीछे जो निस्तब्धता छोड़ गये थे, उसमें खो-सा गया। मैथ्यू का पिता पुनः अपने कमरे में अंगीठी की बगल में अपनी आरामकुर्सी पर लेटा था और हैटी रसोईघर साफ कर रही थी—वह यह काम अकेली ही कर रही थी।

मैथ्यू ने जब सोचना आरम्भ किया, तो सारी बातें समझना आसान था। डनबार की घाटी उन्हें बड़ी प्यारी थी; यह उनका घर था—नाक्स और आर्लिस का घर, जैसे जान और राइस का घर, हैटी, कौनी और उसके पिता का घर। अगर डनबार की घाटी का उनके हाथ से निकल जाना अंतिम रूप से तय और अपरिवर्तनीय है, तो इसका उन लोगों को भी उतना ही गहरा दुःख होगा, जितना उसे स्वयं होगा।

लेकिन—और यहीं अंतर था—उन्हें इसके सम्बंध में चिंता नहीं करनी है, जैसी कि उसे करनी पड़ रही है। मैथ्यू के रहते उनकी चिंता की कोई वजह भी नहीं है। यह उसकी जिम्मेदारी थी, उसका काम था और इसे पूरा करने के लिए वे उस पर निर्भर कर रहे थे। वे जानते थे कि डनबार की घाटी पर वह अपना ही अधिकार बनाये रखेगा—स्वयं अपने लिए और उनके लिए।

सहसा यह अनुभव होते ही कि उसके सामने कितना लम्बा भार—कितना लम्बा दबाव उस पर है, उसने सोचा—"लेकिन मैं इस काम में थोड़ी मदद तो ले ही सकता हूँ।" किंतु ये जो उस पर निर्भर कर रहे थे, उसके लिए वह उन्हें दोष नहीं दे सकता। वे इसमें जो रुचि नहीं दिखाते थे और अपने ही कामों पर अपना ध्यान केंद्रित करते थे, वह सिर्फ इसलिए कि उसने स्वयं हमेशा यह भार ढोया है। यह लापरवाही अथवा उपेक्षा नहीं थी, यह तो उनका सीधा और अटूट विश्वास था।

सोते की ओर गहरा होने वाले अंधेरे की ओर देखते हुए, वह भीतर-ही-भीतर थोड़ी शांति अनुभव करने लगा। वह अपनी शक्ति से परिचित था; क्योंकि यह पूरी घाटी की शक्ति थी। वह बस अकेला खड़ा हुआ एक मनुष्य नहीं था। उसके पीछे गुजरे हुए सालों और स्वयं वहाँ की जमीन की फौज थी। वह इनके सहारे टी. वी. ए. से उसी प्रकार अपना बचाव कर लेगा, जैसे उसने एक बार मंदी से अपना बचाव किया था। उसे वह साल आज भी याद है, जब कपास एक पौंड का चार सेंट के हिसाब से बिका था—यह कीमत तो इतनी कम थी कि अगर कपास उस साल नहीं चुना जाता, तो भी कोई

नुकसान नहीं था। उस वक्त सचमुच ही अर्थ-संकट था। किंतु वह कभी कपास का एक बड़ा खेतिहर नहीं था। बिना इसकी कोई जानकारी रखे कि मंदी आनेवाली है, वह उस मंदी के लिए तैयार था; क्योंकि वह सदा से कई चीजों की फसल उगाने में विश्वास करता आया था। अलावा, उसने गायें और मुर्गियाँ पाल रखी थीं और प्रति वर्ष वह मकई और टमाटरों की खेती करता था, छोला के लिए चरी जुटाता था और प्रत्येक पतझड़ के मौसम में 'स्मोक हाउस' (माँस-मछली रखने का एक विशिष्ट स्थान) में इतना सूअर का माँस और बीफ (बैल, गाय का माँस) इकट्ठा कर लेता था, जो जाड़ा-भर चल जाये। और इसी से मंदी का उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। केले, बर्फ और काफी, आदि शौक की कुछ चीजें-भर वे नहीं ले पाये थे। अन्यत्र स्थानों में इस मंदी का जैसा दुष्प्रभाव हुआ, वैसा इस पूरी घाटी में कहीं नहीं हुआ।

और, इसी तरह टी. वी. ए. के साथ भी वह अपने पुराने तरीके जारी रख कर निपट सकता है। वह अपने विभिन्न फसलों की खेती करता रहेगा, उनकी उचित देख-भाल करेगा, उन्हें इकट्ठा करेगा, और जब कभी टी. वी. ए. वाले जमीन खरीदने का अपना प्रस्ताव लेकर आयेंगे, उनसे सिर्फ 'नहीं' कहने की जरूरत होगी और वह तब तक बार-बार 'नहीं' कहता रहेगा, जब तक कि उन्हें यह विश्वास नहीं हो जायेगा कि यह सदा-सर्वदा के लिए उसका अंतिम उत्तर है।

वह उठ खड़ा हुआ और मकान से खलिहान की ओर चला। एक कुटीर का दरवाजा खोल कर, दीवार पर कील से टँगे टिन के एक प्याले को उसने ले लिया। अनाज के ढेर में आधा दबा हुआ बलूत का एक छोटा-सा पीपा था। आसपास से अनाज को इस तरह हटा दिया कि वह पीपा बिलकुल साफ दिखायी देने लगा। उसने उसे टेढ़ा किया और उससे शराब की धार बह निकली। मकई से तैयार की गयी वह व्हिस्की पतली थी और उसका कोई रंग नहीं था। जब तक प्याला पूरा भर नहीं गया, पीपे से व्हिस्की उसी तरह गिरती रही। उसने प्याला नीचे रख दिया और पीपे के ऊपर फिर उसी तरह अनाज रख कर उसे ढँक दिया। तब उसने प्याला उठा लिया और कुएँ तक पहुँचा। उसने एक बाल्टी ताजा पानी खींचा और प्याले से थोड़ी व्हिस्की पी। एक तीव्र लहर सी गर्मी पहुँचाती हुई कंठ से उतर कर उसके पेट में पहुँच गयी और उसने ठंडे पानी का एक घूँट पी, इसकी जलन शांत की।

अपने भीतर जलन अनुभव करता हुआ वह स्थिर खड़ा रहा। व्हिस्की अच्छी थी। नाक्स ऐसी चीजें बनाने में माहिर था। साल में एक या दो बार झुरमुट में बैठ कर वह शराब बनाता था। वह कुछ ही गैलन शराब बनाता था, जो उनके अपने उपयोग के लिए पर्याप्त थी; लेकिन फिर भी वह कितना उत्तेजक, गोपनीय और आनंददायक समय होता था—ठीक छोआ बनाने की तरह!

टिन के प्याले में बची व्हिस्की उसने पी और बाल्टी से दूसरा घूँट पानी का पी लिया। प्याले को कुएँ पर ही छोड़ कर वह सामने के बरामदे में लौट आया और फिर बैठ गया। उस बड़े बलूत की ऊपरी शाखाएँ अंधेरे में छिपने लगी थीं और नीचे सोते की ओर वह रह-रह कर वहाँ की निस्तब्धता भंग करनेवाले मेंढकों की टर्र-टर्र सुन रहा था। हवा ठंडी हो चली थी और ओस गिरने लगी थी। उस अंधेरे में उसने सोते में अकेले जाकर स्नान करने का विचार किया।

वे सब उस पर निर्भर करते थे। और यही उचित भी था। लेकिन शीघ्र ही—और वह दिन अब से अधिक दूर नहीं है; दिल की प्रत्येक धड़कन के साथ वह निकट-से-निकटतम आता जा रहा है—जब उनमें से एक को माँग के मुताबिक बड़ा होना होगा। उनमें से एक को सबसे अलग खड़ा होकर अपनी निजी स्वतंत्रता घोषित करनी होगी; उसे अपना अधिकार और स्वामित्व अनुभव करना होगा, अपने को उत्तराधिकारी घोषित करना होगा। अतः अब मैं एक नयी चीज जानता हूँ—उसने सोचा—जैसे मेरे पिता ने मुझे नहीं चुना था, मैं भी किसी का चुनाव नहीं करूँगा। वे सिर्फ प्रतीक्षा करते रहे, जब तक कि उन्हें पूर्ण विश्वास नहीं हो गया और मुझे भी निश्चय ही तब तक इंतजार करना चाहिए, जब तक उनमें से एक, एकमात्र अपने को ही चुनाव के लिए उपयुक्त नहीं बना लेता है। एक दिन मैं इसे देखूँगा और मैं जान जाऊँगा और तब मैं उस पर हाथ रख कर कहूँगा—यही है वह! यह किसी धार्मिक स्वीकृति की तरह ही होगा—मैथ्यू ने स्वयं से कहा—उठ कर गिरजे की बगल के रास्ते से चलते हुए शोक मनानेवालों की कतार तक पहुँचने के समान ही यह दृश्य भी होगा—एकदम यथार्थ!

उसने अपनी बाँहें ऊपर उठा कर बड़े आराम से उन्हें लम्बा तान दिया। उसने अपनी माँसपेशियों की थकान कम होती महसूस की। सोते के ठंडे और अपनी नाभि तक पहुँचनेवाले अंधेरे पानी में अभी नहा लेना अच्छा होगा। लेकिन हैटी जब रसोईघर के काम निबटा लेगी, तब वह नहाने जायेगा, जिससे वह भी उसके साथ जा सके।

खेत जोतने का काम खत्म हो चुका था और जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर के लम्बे, निस्तब्ध और गर्म दिनों में चुपचाप बैठ कर शरद्काल की प्रतीक्षा ही करनी थी, जब कि फसल काटी जा सके। पुआल तैयार करनी होगी, आनेवाले जाड़े के लिए लकड़ी काट कर रखनी होगी और गर्मी-भर उस पत्थर-कोयले को चुनने में वे आर्लिस की सहायता करेंगे, जो गैस और तेल बनाने के काम आता है। डनबार की घाटी में मर्द और औरत के कामों को स्पष्ट रूप से अलग-अलग विभाजित करनेवाली कोई रेखा नहीं थी, सिवा इसके कि औरतें खेतों में काम करने नहीं जाती थीं।

हैटी रसोईघर से आकर उसके पीछे सीढ़ियों पर बैठ गयी।

"सब हो गया ?" उसने पूछा।

"हाँ।" वह बोली। वह चुपचाप बैठी रही। उस निस्तब्धता और अंधेरे में वह उसका सामीप्य अनुभव कर रही थी और वह जो रसोईघर में सोच रही थी, उसे सुना कर कह सकती थी। "मैं अब बारह साल की हो गयी हूँ—" उसने गम्भीरता से विचार करते हुए कहा—"और प्रतिदिन मैं बड़ी होती जाती हूँ—और बड़ी होती जाती हूँ। एक दिन एक युवक इस घाटी में आयेगा और मुझे भी नाच में ले जायेगा—क्रैफोर्ड गेट्स के समान ही एक खूबसूरत युवक—और मैं उससे एक शब्द भी नहीं कहूँगी कि मैं पावरोटी कैसे बना सकती हूँ।"

मैथ्यू उसकी बगल में आश्चर्यचकित, सावधानीपूर्वक बैठा रहा। उसने उसे देखने के लिए सिर नहीं घुमाया। यह बारह साल की है—उसने सोचा—और जल्दी ही यह तेरह साल की हो जायेगी।

वह खड़ा हो गया—"मैं नीचे सोते में नहाने जा रहा हूँ।"

हैटी इंतजार करती रही कि वह उसे साथ आने को कहेगा; लेकिन उसने नहीं कहा। सामने की सीढ़ियों पर उसे अकेली बैठी छोड़ कर वह अंधेरे में चला गया। अब वह औरत बन गयी थी। हैटी ने भी यह नहीं सोचा कि इस बार क्यों मैथ्यू उसे साथ नहीं ले गया था। इसके बजाय वह नाच के बारे में सोचती रही। वह जानती थी कि नाच कैसा होगा और उस अंधेरे में, चाँद उगने के पहले, वह काफी देर तक उसके विषय में सोचती रही।

वह मकान, जहाँ नाच हो रहा था, एक पहाड़ी पर बना था। उस मकान का मालिक एक बूढ़ा आदमी था, जिसका नाम प्रेसाइज था। उसके तीन लड़के और लड़कियाँ थीं। उसके पास एक बेला या वायलिन भी थी, जिसे वे

सब बजा सकते थे—सबको संगीत से प्रेम था। प्रेसाइज के सभी लड़के लम्बे, गहरे रंग के और लापरवाह थे। प्रेसाइज के यहाँ बहुत कम खेती होती थी, लेकिन गाना-बजाना हमेशा ही ज्यादा होता था। अपने वाद्य-यंत्रों को आटा रखने के साफ बोरों में रख कर वह बूढ़ा आदमी और उसके बेटे, निकट के किसी भी स्थान में, नाच, शादी या खाने के साथ दिन-भर नाच-गाने के समारोह में, अपने-अपने खच्चरों पर सवार होकर जाते थे। जब और कहीं कोई नाच नहीं होता था, तो इस रिक्तता की पूर्ति करने के लिए बूढ़ा प्रेसाइज अपने घर पर ही उसका इंतजाम करता था और वायलिन बजाया करता था। वायलिन बजाना उसे पसंद था— किसी भी चीज की तुलना में, यहाँ तक कि मकई की बनायी गयी शराब से भी अधिक उसे अपनी वायलिन पसंद थी। लोगों का कहना था कि अपनी बूढ़ी पत्नी से, जो बिलकुल संगीत में दिलचस्पी नहीं लेती थी, अधिक वह अपनी वायलिन के बारे में सोचता था। अगर किसी नाच के समय उस घर में, झगड़ा शुरू हो जाता, तो घूँसे चल जाने के बाद पहली चीज जो देखने में आती थी, वह यह थी कि बूढ़ा प्रेसाइज अपनी वायलिन उठाता और सबसे नजदीक की खिड़की के रास्ते उसे सुरक्षित स्थान में ले जाता। उसके बिलकुल पीछे ही उसके लड़के होते थे, जो अपना गिटार, बैंजो और बड़ी-सी वायलिन के आकार का वाद्य यंत्र लिये होते थे।

यद्यपि आज की रात का नाच शांतिपूर्ण ढंग से होनेवाला था। बसंत में खेत जोतने के बाद यह पहला नाच था और हरेक का झुकाव आनंद मनाने की ओर था। बाहर अंधेरे में, खलिहान के निकट, देवदार के वृक्षों के नीचे, सदा की तरह लड़कों का एक झुंड खड़ा था। इस झुंड के लोग बदलते जा रहे थे, और लोग आते जा रहे थे और यह वैसा-का-वैसा ही रह जाता था; किंतु आज रात उनकी बातचीत बिलकुल धीमी और दोस्ताना थी। वे आपस में हँसी-मजाक कर रहे थे। ऐसे भी समय होते थे, जब यहाँ के बजाय वे धूल से भरे खलिहान में जमा होते थे और वहाँ एक के बाद एक होनेवाली लड़ाइयाँ देखते रहते थे। जवान लड़के आपस में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करते थे—होड़ बदते थे और लड़ाई सारी रात चलती रहती थी। किंतु, आज रात की हवा में दूसरा ही स्पर्श था—बसंत के कठिन श्रम के बाद आराम करने और आनंद मनाने की भावना का स्पर्श, और कोई भी किसी चीज के लिए प्रतियोगिता नहीं करना चाहता था।

घर के भीतर, रहने के बड़े कमरे में कोई फर्नीचर नहीं था। चीड़ की लकड़ी के टुकड़ों से बनी फर्श भी नंगी थी और कई पैरों के तालबद्ध वजन से लकड़ी से थप-थप की आवाज़ होती थी और वह हिल जाती थी। दीवारों से सटा कर कतार में सीधी कुर्सियाँ रखी हुई थीं। इन कुर्सियों पर बूढ़ी औरतें बैठी हुई थीं, जो आपस में बातें कर रही थीं और लड़कियों पर नजर भी रखे थीं। बहुत-सी बूढ़ी औरतों के पैर, अजाने ही, अपने नाचने के दिनों की स्मृति में नाच की लय पर थाप दे रहे थे।

और इन सबसे ऊपर, मकान के भीतर और बाहर संगीत छाया हुआ था। बूढ़े प्रेसाइज की वायलिन गीतों के अनुसार उल्लसित हो उठती थी, तो कभी सिसकियाँ भरने लगती थी। उसकी ऐंठी हुई और खुरदरी उँगलियाँ परिंदों-सी कोमलता के साथ वायलिन के तारों पर दौड़ रही थीं। उसके ठीक बाद ही बड़ी सी वायलिन के आकार के वाद्ययंत्र की एक-सी थाप सुनायी दे रही थी; बैंजो अलग रागिनी छेड़ने में व्यस्त था और साथ में गिटार की धीमी और मीठी स्वर-लहरी गूँज उठती थी। बाजे बजते रहे, गाते रहे और एक गीत के बाद दूसरा गीत आता गया; लेकिन कोई गा नहीं रहा था, सिर्फ नाचनेवालों के दिलों और पैरों को उत्तेजित करते हुए वाद्य-यंत्र बज रहे थे। बूढ़ा प्रेसाइज सीधा खड़ा होकर वायलिन बजा रहा था और वायलिन-सी आकार-वाले उस बड़े वाद्य-यंत्र को बजानेवाले के सिवा बाकी सभी लड़के, अपने-अपने वाद्य-यंत्रों के साथ, सीधी कुर्सियों पर उसके पीछे बैठे थे। उजली मूँछों तथा नीली आँखोंवाला उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था; वायलिन के तारों पर फिसलती और कल्लोल करती हुई उसकी उँगलियाँ, ऐसा लगता था, जैसे उसकी हों ही नहीं। युवकों को हँसी-खुशी में समय गुजारते देखना उसे सदा से पसंद था।

किंतु राइस के लिए सिर्फ हँसी-खुशी में समय बिताने के अलावा और भी कुछ था। आज रात वह लाल बालोंवाली चारलेन के साथ नाच करते हुए, अपनी ही दुनिया में विचर रहा था। नाचते हुए खुल कर फर्श के चारों ओर चक्कर लगाने की हिम्मत उसने नहीं दिखायी, जैसा कि दूसरे नाचनेवाले जोड़े कर रहे थे। वह उसे अपने ही एक छोटे-से घेरे में लिये, एक कोने में नाचता रहा, जहाँ सीधी कुर्सियों पर बैठी बूढ़ी औरतें नहीं थीं।

"चारलेन!" वह बोला—"आज रात यहाँ तुम्हीं सबसे सुंदर लड़की हो!"

उसने अपनी निष्कपट नीली आँखों से ऊपर उसकी ओर देखा। लाल

बालोंवाली किसी लड़की की उसने ऐसी आँखें पहले कभी नहीं देखी थीं। "निश्चय ही, मैं सबसे सुंदर हूँ—" वह बोली—"तुम मुझे कोई नयी बात नहीं बता रहे हो, राइस डनबार!"

उसकी आँखों को सीधा अपनी ओर देखते पा, वह झेंप गया, उसके कपोलों पर लाज की लाली दौड़ गयी। वह उसे अपने और निकट खींचने का साहस नहीं कर सका, जैसा कि करना चाहता था। वह उससे कहीं लम्बा था और उसे उसके सिर के ऊपर से देखना पड़ता था, जब तक कि उसके चेहरे को देखने के लिए वह विशेष रूप से प्रयास न करे।

"चारलेन!" उसने कहा। और तब उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे; क्योंकि जो उसके दिमाग में था, वह कह नहीं पा रहा था। "तुम सबसे सुंदर..."

वह हँस पड़ी—"बेवकूफ! तुम एक बार इसे कह चुके हो। अब बातें करना बंद करो और नाच करते रहो।"

वे नाचते रहे। किंतु मन-ही-मन वह अभी भी बातें कर रहा था। वह उसे वे सारी बातें कह रहा था, जो वह साथ घर वापस जाते समय उससे कहना चाहता था।

आर्लिस ने क्रैफोर्ड से कहा—"राइस और लाल बालोंवाली उस लड़की को तो देखो। वह बुरी तरह उससे प्रेम करता है—है न?"

क्रैफोर्ड उधर देख कर मुस्कराया और फिर उसने वापस आर्लिस की ओर देखा। "हाँ!" उसने कहा—"किंतु उसकी हालत मुझसे ज्यादा खराब नहीं है। इस सम्बंध में वह अभी मुझसे छोटा है, बस!"

"कितना छोटा?" बातचीत के सीधे लक्ष्य को टालती हुई आर्लिस ने पूछा।

"मैं उनतीस साल का हूँ।" क्रैफोर्ड ने कहा—"तुम्हारी क्या उम्र है आर्लिस?"

आर्लिस क्षण-भर तक इस सम्बंध में सोचती रही और उसके पैर संगीत की धुन पर स्वतः थिरकते रहे। वह बीस साल की थी। लेकिन पंद्रह से लेकर बीस साल तक वह जवानी की अल्हड़ता से वंचित रही थी; क्योंकि रसोईघर से लेकर पूरा घर सँभालने का काम उसी पर आ पड़ा था। उसकी माँ जब तक जिंदा थी, पूरे परिवार को सँभाले हुए थी। समय पर सबको गर्म-गर्म खाना खिलाती थी और बिस्तरों की चादरें साफ किया करती थी। उसे भी यही सब

करना था; क्योंकि यह जरूरी था। सो, वह बीस साल से अधिक उम्र की हो गयी थी और साथ ही उससे कम उम्र की भी। उस उम्र की लड़कियों को पुरुषों के साथ नाच करने का जो अनुभव और आनंद होता है, वह उससे वंचित थी। वह यह भी नहीं जानती थी कि कैसे उनसे बातें करनी चाहिए, कैसे हँसना चाहिए और कैसे उनसे बेमतलब के समान स्तर पर सम्बंध बनाये रखना चाहिए।

"तुम्हें किसी लड़की से यह नहीं पूछना चाहिए कि उसकी उम्र क्या है!" उसने विरोध दर्शाया।

क्रैफोर्ड ने उसकी आँखों में देखा। "तेईस साल?" उसने पूछा—"बाईस साल?"

उसे हल्की-सी चोट पहुँची। "बीस।" उसने जल्दी से कहा और क्रैफोर्ड के चेहरे के उस परिवर्तन को उसने लक्ष्य कर लिया, जो अपनी भूल समझ जाने के कारण हुआ था।

संगीत रुक गया और बूढ़े प्रेसाइज ने पुकार कर कहा— "मैं एक पुराने 'स्क्वायर डांस' (एक प्रकार का नृत्य) की धुन बजाना चाहता हूँ। आप अपने-अपने साथी चुन लें।"

क्रैफोर्ड ने अपने चेहरे पर झलक आये स्वेद कणों को पोंछा। "मैं इसमें भाग नहीं लूँ, तभी अच्छा है।" उसने कहा—"'स्क्वायर डांस' मुझे आता नहीं है।"

"चलो, तब हम चुपचाप इसे देखते रहें।" आर्लिस ने बड़े आराम से कहा।

"ठंडी हवा में साँस लेने के लिए बाहर चलना चाहती हो?"

"ओह, नहीं!" आर्लिस ने कहा। उसकी तीव्र नाराजगी उफन उठी और तब, उफान कम भी हो गया, जब उसकी समझ में यह बात आ गयी कि क्रैफोर्ड नहीं जानता था कि नाच के समय बाहर जाना किसी लड़की का जीवन सदा के लिए नष्ट कर दे सकता था—विशेषकर किसी अजनबी के साथ जाने से! अपने ऊपर लोगों की नजरें पड़ती वह देख चुकी थी और वे नजरें तरह-तरह के अनुमान लगा रही थीं। "फिर भी—" वह बोली—"हम खिड़की के निकट तक चल सकते हैं।"

संगीत फिर प्रारंभ हो गया। "अंडर द' डबल ईगल" गीत की धुन बज रही थी—मन को उल्लसित कर देनेवाली और पैरों में उत्तेजना भर देने वाली धुन। बूढ़े प्रेसाइज के गाने की आवाज़ संगीत के लय-ताल से ऊँची

थी। खुली खिड़की के निकट खड़े होते ही, रात की ठंडी हवा बाहर से भीतर आकर उन्हें स्पर्श कर गयी और आर्लिस ने बड़े आराम से अपनी बाँह में क्रैफोर्ड की बाँह ले ली। वह कमरे में चारों ओर नजर दौड़ा रही थी।

'स्क्वायर डांस' ने फर्श की पूरी लम्बाई घेर ली थी। इस नाच में बूढ़ी औरतों में से भी कुछ शामिल थीं। राइस ने नाचते-नाचते बीच से उड़ान लेकर चारलेन की ओर बढ़ना शुरू कर दिया, जो दूसरे कोने पर थी। आर्लिस ने इसे देखा और वह मुस्करायी। कुछ लड़के बाहर शराब पी रहे होंगे; किंतु राइस को व्हिस्की की जरूरत नहीं थी। आज की रात तो सोते का सादा पानी ही उस पर नशा ला दे सकता था—उसे मदहोश बना सकता था। आर्लिस ने कौनी और जेसे जान के लिए अपनी नजरें दौड़ायीं। वह उनके पास जाकर बात करने की सोच रही थी; किंतु दीवार से लगी एक कुर्सी पर कौनी अकेली बैठी थी। उसके चेहरे पर असंतोष की भावना थी। घर पर तरबूज कटने के समय उसने जो श्वेत और फूलदार आरगंडी पहन रखी थी, वही अभी भी पहने थी। वह उठी और उसे ही देखती हुई आर्लिस ने, उसे बगल के दरवाजे से बाहर निकल जाते हुए देखा। उसकी भौंहें सिकुड़ गयीं। वह जान गयी थी कि कौनी किसी खास इरादे से बाहर गयी थी।

बरामदे में कौनी हिचकिचायी। अंधेरे में उसने देवदार-वृक्षों के नीचे खड़े युवकों के झुंड की ओर देखा। वह उन तक पहुँचने की हिम्मत बटोर रही थी। वृक्षों के नीचे वह सिगरेटों की चमक देख रही थी, दबी हँसी की आवाज़ सुन रही थी और वह जानती थी कि वहाँ जेसे जान भी खड़ा बातें कर रहा था, हँस रहा था और व्हिस्की पी रहा था।

संगीत की धुन पर उसके पैर ताल दे रहे थे और उसने जान-बूझ कर—स्वयं से झुंझला कर—उसे स्थगित कर दिया। कौनी जब बारह वर्ष की थी, तभी से नृत्य के प्रति उसका लगाव रहा है—श्रद्धा रही है। नृत्य उसके लिए विस्मय की वस्तु रही है। हर नृत्य में साँस रोके वह इसकी प्रतीक्षा करती रहती थी कि संगीत की धुन से, रात्रि के शांत-स्निग्ध वातावरण से और उसके नृत्यलीन शरीर से लिपटी पुरुषों की बाँहों से, उसके लिए कोई विशेष और उत्तेजक घटना घटेगी। यह आंतरिक उत्तेजना थी—एक जवाब था, जो संतुष्ट न की जा सकनेवाली प्रसन्नता के साथ उसने अपने यौवन से ढूँढ़ा था और बहुधा उसे लगा था कि उसने उसे पा लिया। किंतु ऐसा अधिक दिनों तक नहीं चला। वह जेसे जान के साथ आती, जेसे जान के साथ नृत्य करती और

जेसे जान के साथ घर लौट जाती। जवान लड़के अब उसके साथ मिलने, नृत्य करने के प्रति अनिच्छुक थे; क्योंकि अब वह एक विवाहिता औरत थी और वह जानती थी कि दीवार से लगकर बैठी बूढ़ी औरतों को उसका नाचना बिल्कुल ही स्वीकार नहीं था—जेसे जान के साथ भी नहीं। और अभी जेसे जान बाहर खड़े मर्दों के साथ हँसी-मजाक करने और शराब पीने के लिए चला गया था, जहाँ कि कोई भी प्रतिष्ठित औरत उसके पीछे-पीछे नहीं जा सकती। लेकिन वह वहाँ जा रही है। आज रात वह वहाँ जा रही है।

उसने अंधेरे से आते हुए नाक्स को देखा। पहाड़ी चढ़ता हुआ, वह बरामदे में उसी की ओर आ रहा था। "हम लोग अकेले हैं—" उसने सोचा और फुर्ती से पीछे घूमकर देखा कि बरामदा खाली है या नहीं। सिर्फ घर के भीतर बजनेवाली संगीत-ध्वनि, जो दीवारों के कारण दब जाती थी, खुली खिड़कियों से बाहर आकर सुनायी दे रही थी।

"नाक्स!" उसने कहा—"तुमने जेसे जान को देखा है?"

वह रुक गया। उसका एक पैर सीढ़ी पर था और उसने उसकी ओर सावधानीपूर्वक देखा। "नहीं—" उसने कहा—"मेरा खयाल है, वह शराब पीने के लिए चला गया होगा।"

कौनी ने अपना एक हाथ बरामदे की रेलिंग पर रख दिया और एक पैर उठा लिया। अचानक उसने स्वयं को बहुत हल्का और चिन्तारहित अनुभव किया, मानो बरामदे से उतर कर वह नाक्स की बगल में, जमीन पर, बिना किसी प्रयास के ही, तैर सकती है। "उसने मुझे भीतर किसी बूढ़ी औरत के समान ही अकेली बैठे छोड़ दिया—" वह बोली। उसकी आवाज़ में एक प्रकार की उदासी थी। लेकिन सच तो यह था कि अब वह उसकी बिलकुल ही परवाह नहीं कर रही थी। उसने अंधेरे में, साहसपूर्वक नाक्स की ओर देखा। "तुम मेरे साथ आकर क्यों नहीं नाचते हो, नाक्स? जब तक कि जेसे जान वापस आता है।"

"नहीं, कौनी!" उसने कहा—"मैं अच्छी तरह नाच नहीं जानता हूँ।"

उसने उसकी सतर्क-संयत आवाज़ सुनी। वह उसके करीब, एक सीढ़ी और उतर गयी। "मुझे याद है, जब तुम्हें मेरे साथ नाचना बहुत पसंद था—" उसने कहा। उसने अपने मन में खुलकर कुछ कहने का साहस अनुभव किया—"जब तुम..."

नाक्स, उससे दूर, आँगन की कड़ी-पथरीली जमीन पर उतर आया। कौनी

की वह उजली पोशाक उसके दिमाग के अंधेरे में चमक रही थी; किंतु उसने स्वयं को दृढ़ और सख्त कर लिया। "वह तब की बात है, जब तुमने मेरे भाई से शादी नहीं की थी।" उसने कहा। उसे डर था कि वह उसे छू लेगी, अपना गर्म हाथ उसकी बाँह पर रख देगी और वह जल्दी से घूम गया। "अगर जेसे जान से मैं मिला, तो उसे कह दूँगा कि तुम उसकी तलाश कर रही हो।"

"हाँ।" कौनी ने कहा। अपनी थरथराहट को उसने अपनी आवाज़ से जाहिर नहीं होने दिया—"यह काम तुम कर दो, नाक्स! मेरे लिए कर दो।" वह मुड़ी और भागकर फिर वहाँ चली आयी, जहाँ नाच हो रहा था।

नाक्स तेजी से देवदार-वृक्षों के नीचे खड़े युवकों के दल की ओर बढ़ा। वह विचलित हो उठा था। हमेशा वह इस बात की चेष्टा करता था कि जब भी उसकी कौनी से मुलाकात हो, और लोगों के बीच हो। एक ही घर में रहने के बाद भी शायद कभी एकाध मौका ऐसा आ जाता था, जब उन लोगों की अकेले में मुलाकात हो जाती थी। तीन वर्ष पहले कौनी गर्मी की किसी रात के समान ही थी—गर्मी की दो रातों के समान उष्ण! लेकिन वह इसे अब भी पनपा रही थी, फिर से उभाड़ रही थी, यद्यपि अब जेसे जान से उसकी शादी हो चुकी थी। "क्यों?" उसका मन उद्विग्न हो उठा—"आखिर औरतें इस तरह की क्यों होती हैं?"

"कैसे हो नाक्स?" उस झुंड में शामिल होते ही एक ने कहा—"लो, थोड़ी तुम भी पी लो।"

"मेरे पास है—" नाक्स ने कहा—"धन्यवाद!" उसने बोतल निकाली और मुँह से लगा लिया। एक उष्ण लहर उसके कंठ से होकर उतर गयी। "तुम लोगों में से कोई इस में से घूँट-दो-घूँट लेना पसंद करेगा?"

आवाजें उसके निकट बुदबुदा कर रह गयीं और उसने बोतल रख ली। उसने अपनी अगल-बगल के चेहरों को सावधानी से देखा। "जेसे जान यहाँ है क्या?" उसने पूछा।

"यहाँ!" जेसे जान की आवाज़ आयी।

"कौनी तुम्हारी तलाश कर रही है।"

"मैं बस उसके पास जा ही रहा था—" जेसे जान ने कहा और अनिच्छा-पूर्वक उस झुंड से अलग होकर वह उस ओर बढ़ गया।

पीछे से उसे लोगों की हँसी और मज़ाक-भरी आवाजें सुनायी दे रही थीं।

"जाओ, जेसे जान, तुम्हारी पत्नी तुम्हें बुला रही है।" "कोई बात नहीं, जेसे जान, तुम यहाँ ठहरो, मैं चला जाऊँगा।" वह उस हँसी से दूर निकल गया। जवाब में वह कोई चुभता हुआ मजाक कहना चाहता था और बड़ी परेशानी के साथ कुछ कहने को सोच रहा था। लेकिन उसका दिमाग इसमें कभी कामयाब नहीं हुआ।

. नाक्स एक पेड़ से टिककर खड़ा हो गया। वह अपने लिए एक सिगरेट बना रहा था। अंधेरा उसे अच्छा लग रहा था। संगीत का वह शोर-शराबा काफी दूर था—अंधेरे में काफी दूर—और कौनी को लेकर उसके मन में जो उलझन पैदा हो गयी थी, वह निकल गयी।

"तुम लोगों के पास टी. वी. ए. की ओर से अभी तक कोई आया है या नहीं?" रेड जानसन ने उससे पूछा।

"एक आदमी आज आया था—" नाक्स ने कहा—"उसने कहा, वह हमारी जमीन खरीदना चाहता था।"

"हमारी जमीन भी।" रेड ने कहा—"पिछले सप्ताह की बात है। तुम्हारे डैडी बेचेंगे अपनी जमीन?"

"मुझे नहीं मालूम—" नाक्स ने कहा—"मेरे विचार से नहीं। पापा को यह पसंद नहीं है। उन्हें यह बिलकुल पसंद नहीं है।"

"मेरे खयाल से तब उन्हें अपने नितम्बों तक के लिए एक जोड़ा जूता बनवा लेना चाहिए—" एक दूसरी आवाज़ आयी—"वहाँ जमा होने वाला पानी काफी गहरा हो सकता है।"

सब हँस पड़े। नाक्स की भौंहें सिकुड़ गयीं, वह कुछ और सोच रहा था। "उस बाँध के बारे में क्या समाचार है?" उसने पूछा—"वहाँ जाकर काम करने के लिए अभी भी वे आदमियों की बहाली कर रहे हैं?"

"मैंने सुना है कि वे आदमी ले रहे हैं—" जान राबर्ट्स ने कहा—"मैंने सुना है कि इसके लिए शहर जाना होगा। वहाँ कुछ कागजों की खानापूरी होती है और वे सब तरह की जाँच करते हैं।" उसने जोर से साँस छोड़ी—"यह जानने के लिए तुम कुल्हाड़ी चला सकते हो या नहीं, फावड़े से खोदना जानते हो या नहीं।"

"मेरा अनुमान है कि किसी भी दूसरे आदमी के समान ही मैं भी बड़ी आसानी से उन कागजों की खानापूरी कर सकता हूँ, बशर्ते वे मुझसे इतना कह दें कि वे क्या जानना चाहते हैं—" रेड जानसन ने निश्चयात्मक स्वर में

कहा—"मैंने सुना है, वे काफी अच्छी रकम देते हैं।"

"हाँ!" नाक्स ने धीरे से कहा। वह सीधा खड़ा हो गया। "मैं भी यही सुन रहा हूँ और मैं उस रकम में से स्वयं कुछ अर्जित करना चाहता हूँ।"

उसने फिर बोतल निकाली और फिर उसे मुँह से लगाकर तिरछा कर दिया। काफी अच्छी शराब थी वह। व्हिस्की तैयार करने के लिए आपको एक सच्चे आदमी की जरूरत पड़ती है। यह उतना ही मुश्किल होता है, जितना एक औरत के साथ निभा ले जाना। वह जानता था कि इस तरह के जन-कार्यों के प्रति मैथ्यू की क्या धारणा थी। अच्छे-भले खेत छोड़कर, वहाँ दिन-भर नकद पैसों के लिए काम करने वाले लोगों पर वह हँसता था। किंतु फिर भी—विचार-मात्र से उसने अपने भीतर एक सिहरन-सी अनुभव की। जेब में रुपये—एक मोटर—और जिन लड़कियों के साथ वह बड़ा हुआ है, उनके बजाय अपरिचित औरतें! अद्भुत-अजानी औरतें, जिनके तरीके भी अजाने होंगे और हँसी-खुशी में उनके साथ समय बिताने के लिए उसके पास रुपये भी होंगे। आखिर, अब वह चौबीस साल का हो गया था और जेसे जान के समान किसी खूबसूरत आरगंडी की पोशाकवाली से बँध नहीं गया था। वहाँ खड़े उस दल में लोग आते-जाते रहते थे, बदलते रहते थे और वह जैसा-का-तैसा बना था। इस सम्बंध में सोचते हुए नाक्स पेड़ से टिककर खड़ा हो गया। राइस एक बार बाहर आया, जल्दी-जल्दी एक सिगरेट पीने-भर तक ठहरा और चला गया।

"तुम्हें जल्दी करना चाहिए, राइस"—रेड जानसन ने पीछे से आवाज़ दी—"नहीं तो कोई चारलेन को साथ लेकर भाग जानेवाला है।"

उस अंधेरे में भी राइस के कपोलों पर लज्जा की लालिमा दौड़ गयी और उसने अपनी चाल तेज कर दी। वह आज रात उसे चूमेगा—उसने स्वयं से कहा। उसने इसका निश्चय कर लिया था और पहले से ही सारी रात अपने इस निश्चय को दृढ़ करता रहा। और उसने सोचा, वह उसे चूम सकता था। सच तो यह था कि इस सम्बंध में वह आश्वस्त था कि वह ऐसा कर सकता था, यद्यपि अभी तक वह उससे इनकार ही करती आयी थी। वह उसे नाच से जल्दी चल देने के लिए राजी कर लेगा, जिससे वे इतमीनान से धीरे-धीरे टहलते हुए घर तक जा सकें।

भीतर पहुँचकर, उसने आर्लिस और क्रैफोर्ड की ओर देखकर हाथ हिलाया और तेजी से चारलेन की ओर बढ़ा। जेसे जान के साथ कौनी भी नाच रही थी

और कौनी ने जेसें जान के कंधों से होकर राइस को चारलेन को लेकर बाहर जाते देखा। ऐसा ही उसने भी एक बार अनुभव किया था; लेकिन यह इतने पहले की बात है कि अब जैसे समाप्त हो गयी है...और ज्यादातर उसने नाक्स के बारे में ही ऐसी कल्पना की थी। नाक्स उसके दिमाग में छुपा हुआ था और उसने कभी किसी से इसके बारे में नहीं कहा था। उसने उससे भी नहीं कहा था कि उस रात, जब उसने उसके मन में अचानक ही एक तीव्र और दुःखदायी वासना जगा दी थी, वह उसके जीवन में आनेवाला पहला पुरुष था। लेकिन उसका स्थान पहला था और सदा पहला ही रहेगा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह जेसे जान को स्वयं से दूर और उसके स्थान पर नाक्स के होने की कामना कर रही थी और दिमाग में इस कामना के सत्य-रूप लेते ही, उसने अपने भीतर एक गहरी हलचल अनुभव की।

अचानक उसने अपनी आँखें खोल दीं। वह मोहक भ्रमजाल उसके जाने देने के पहले ही उससे दूर हुआ जा रहा था। अब वह जान गयी थी कि किसी भी नाच में उसके लिए अब वह आश्चर्य नहीं रहेगा, वह प्रतीक्षा नहीं रहेगी, जो पहले रहा करती थी। वह उस संगीत के बीच में ही रुक गयी और जेसे जान उससे टकरा गया। "मैं इस नाच से थक गयी हूँ—" उसने कहा—"चलो, हम घर चलें।"

जेसे जान ने उसकी ओर आश्चर्य के भाव से देखा। "क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, कौनी?" उसने चिंतित स्वर में पूछा।

कौनी ने उसकी ओर देखा। वह उससे सच्ची बात कह देना चाहती थी, उसे चोट पहुँचाना चाहती थी। लेकिन इसके बजाय वह मुस्करायी और उसकी बाँह को दबाया। "चलो, हम घर चलें, जेसे जान! दूसरों के पहुँचने के पहले ही हम वहाँ पहुँच जायें, तो अच्छा है।"

उसकी आवाज़ में जो संकेत था, उससे जेसे जान उत्फुल्लित हो उठा और बड़ी तत्परता से वह वहाँ से चल पड़ा।

नाक्स कुछ देर उस दल के साथ रहा। फिर वह मकान की ओर बढ़ा और एक खिड़की से होकर कुछ क्षणों तक, भीतर में चारो ओर चक्कर काटती भीड़ को देखता रहा। किंतु उसने महसूस कर लिया कि उसे भीतर जाने की कोई इच्छा नहीं थी और वह उन दरख्तों के झुरमुट के पास पहुँचा, जहाँ उसने अपना खच्चर खड़ा कर रखा था। उसने काठी कसने की पेटी की जाँच की कि कहीं किसी मजाक-पसंद दोस्त ने अपने तेज जेबी चाकू से उसे काटकर लगभग

दो टुकड़े तो नहीं कर दिये थे। तब वह उछल कर काठी पर बैठ गया और तेजी से उसने खच्चर को घर की ओर हाँक दिया। वह अपनी एक जांघ के बल लापरवाही से कमर झुका कर बैठा था। खच्चर अपनी लम्बी और लहर की-सी गति से चला जा रहा था। घर पहुँच कर उसने काठी उतार ली और खच्चर को अस्तबल की ओर हाँक दिया। मकान में एक रोशनी दिखायी दे रही थी; किंतु यह कौनी और जेसे जान के कमरे में थी। वह बिस्तरे पर जाने के पहले एक अंतिम सिगरेट पीने के लिए सामने के बरामदे में पहुँचा।

"इतनी जल्दी घर वापस आ गये?" अंधेरे में से मैथ्यू की आवाज़ उसके निकट पहुँची—"आखिर उस नाच में हुआ क्या है? कुछ ही क्षण पहले अभी, कौनी और जेसे जान भी लौट आये हैं।"

"ओह!" नाक्स ने कहा—"वही पुराना नाच है और बस!"

मैथ्यू ने अपनी हँसी दबा ली। "उन्हीं पुराने नाचों में भाग लेने के लिए मैंने तुम्हें एक बार खच्चर पर सवार होकर बीस मील दूर तक जाते देखा है और जब कि तुम यह जानते थे कि दूसरे दिन तुम्हें खेत में काम करना है।"

नाक्स वहीं बरामदे में बैठ गया। "कृपया इन बातों को जाने भी दीजिये—" उसने कहा। उसने अपनी जेब से बोतल निकाली और उसकी गर्दन के निकट पोंछते हुए उसे खोला। "आप पीयेंगे, महाशय?"

. "नहीं!" मैथ्यू ने कहा—"कुछ ही देर पहले मैंने प्याला-भर पिया था। तुम पीओ।"

नाक्स ने बोतल तिरछी की, उससे शराब पी और फिर उसे हिलाया। बोतल खाली होने को आ गयी थी; लेकिन उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं हुआ था। उसने बोतल अपनी बगल में, बरामदे में रख दी और एक सिगरेट बनाने लगा।

"पापा!" उसने कहा—"मैं आज सोचता रहा हूँ। फसल अब हमने खड़ी कर दी है, मैं सोचता हूँ कि मैं उस बाँध तक जाऊँ। देखूँ, मुझे वहाँ कोई काम मिलता है या नहीं।"

जवाब में वह चारों ओर छायी निस्तब्धता ही सुनता रहा। काफी देर तक दोनों के बीच खामोशी छायी रही और वह उसी तरह कुछ सुनने की प्रतीक्षा करता रहा।

"तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?" अंत में मैथ्यू ने पूछा।

"अच्छे पैसे मिलते हैं वहाँ।"

अपनी कुर्सी में बैठा मैथ्यू विचलित हो उठा। आकाश में चाँद वृक्षों के ऊपर निकलने लगा था और उसे अंधेरे में भी नाक्स की आकृति दिखायी दे रही थी—उसका गोरा चेहरा। उसने पहले ही यह अनुभव कर लिया था कि नाक्स में एक दिन यह भावना आनेवाली है। उसकी किसी पर निर्भर नहीं रहने की आदत, रह-रह कर बेचैन हो उठने और उसके चपल स्वभाव से मैथ्यू ने बहुत पहले ही इसका अनुमान लगा लिया था। और अब यह प्रत्यक्ष हो गया था।

"किसी भी डनबार के लिए बाहर जाकर किसी जनकार्य में काम करने की जरूरत कभी नहीं पड़ी है—" उसने शांतिपूर्वक कहा—"अगर तुम्हें रुपयों की जरूरत है, तो मैं तुम्हारे हाथों में रुपये रख दूँगा। कितने रुपये चाहिए तुम्हें ?"

नाक्स एक झटके के साथ घूमा। "यह बात नहीं है—" उसने कहा—"मैं स्वयं इसे अर्जित करना चाहता हूँ और अपने शरीर के श्रम-स्वेदों के जरिये इसे पाना चाहता हूँ।"

मैथ्यू हँसा। किंतु इस हँसी में बेचैनी की भावना थी। "तुम क्या सोचते हो कि तुम यहाँ अर्जन नहीं करते ? तुम भी तो खेत में उतना ही काम करते हो, जितना मैं करता हूँ।"

"यह बात नहीं है—" नाक्स बोला—"बिलकुल ही यह बात नहीं है।" वह क्षणभर तक मौन बैठा अभी भी अपने दिमाग को दृढ़ बनाता रहा—"मैं जाना चाहता हूँ, पापा ! मैं कल ही जाना चाहता हूँ। आप मुझे जाने की इजाजत देते हैं न ?"

मैथ्यू उसे गौर से देखता रहा। "मैं तो कहूँगा, तुम नहीं जाओ—" उसने धीरे से कहा।

"मैं अब चौबीस साल का हो गया हूँ—" नाक्स ने जिद की—"मैं..."

"हाँ !" मैथ्यू ने कहा—"अपने स्वामी तुम स्वयं हो। लेकिन फिर भी मैं कहूँगा कि तुम नहीं जाओ।"

दोनों सिगरेट पीने तक खामोश बैठे रहे! नाक्स ने बोतल उठायी और फिर उससे शराब पी। उसने बोतल खाली कर दी। उसने सावधानीपूर्वक बोतल नीचे रख दी—दूसरी बार जब वह नाच में जायेगा, तो उसे इसकी फिर जरूरत होगी। वह उठ खड़ा हुआ।

"सोने जा रहे हो, बेटे ?" मैथ्यू ने धीरे से पूछा।

नॉक्स ने अंधेरे के उस ओर, जो अब चाँदनी से दूधिया रंग का हो गया था, अपने पिता को देखा। वह जानता था कि कल वह यहाँ से नहीं जा पायेगा—नहीं, मैथ्यू की इस इच्छाशक्ति के विरुद्ध, जो उसके धीमे से कहे गये शब्दों—"मैं तो कहूँगा कि तुम नहीं जाओ"—में निहित थी, वह खुल्लमखुल्ला नहीं जा पायेगा।

"नहीं महाशय!" उसने कहा—"मैं सही तरीके से उस नाच का आनंद नहीं ले सका। मैं सोचता हूँ कि मैं वापस जाऊँ और वहाँ अपने साथ नाचने के लिए किसी लड़की की तलाश करूँ।"

उसने खाली बोतल उठा ली और तेजी से वहाँ से चल गया। मैथ्यू अकेला बैठा रहा—पहले की तरह ही। कुछ ही देर बाद उसे घाटी के प्रवेश की ओर तेजी से जाते खच्चरों के टापों की आवाज़ सुनायी दी, जो उसके सबसे बड़े लड़के की बेचैनी और विद्रोह भी अपने साथ लेती जा रही थी। मैथ्यू ने एक ठंडी साँस ली।

एक बार मैथ्यू ने नाक्स के सम्बंध में एक निर्णय किया था। जब उसका जन्म हुआ था, मैथ्यू रहने के बड़े कमरे में अकेला खड़ा था और उसने कागज के एक टुकड़े पर लिखा था—"नाक्स वाकेन डनबार, मेरे बाद मेरी जमीन का उत्तराधिकारी होगा।" वह फिर शयनागार में गया था और अपनी पहली संतान को निहारता रहा था। उस छोटे से कागज को, जिस पर उसने गर्व करने लायक वे शब्द पेंसिल से लिखे थे, उसने अपने हाथ में दबा रखा था। साथ में, पेंसिल भी थी। उसने उस कागज को सँभाल कर रख दिया था और काफी अर्से तक उसे यह मालूम था कि वह कागज कहाँ रखा है। किंतु बहुत पहले, वर्षों की घिसावट और कूड़े-करकट के बीच वह कागज कहीं गायब हो गया था—ठीक उसी तरह, जिस तरह उसके बाद परिवार में हुए नये-नये जन्म और मरण के साथ वह निर्णय भी उसके दिमाग से गायब हो चुका था। लेकिन एक बार उसने ऐसा लिखा था और उसके बाद वह सदा उसके पूरा उतरने की उम्मीद बाँधे रहता था।

आज रात उसकी जीत हुई थी। लेकिन वह सोच रहा था कि और कितने समय तक वह इसी प्रकार जीतता रहेगा। हो सकता है, एक दिन अंधेरे और सुबह की सफेदी के बीच नाक्स भी गायब हो जाये, जैसे मैथ्यू का भाई मार्क गायब हो गया था। लेकिन इस विचार को वह अपने मन में आश्रय नहीं दे सका। कुछ देर बाद वह उठ कर सामने के अपने एकाकी शयनागार में आ

गया, कपड़े उतारे और बिस्तरे पर पड़ रहा। किंतु काफी देर तक उसे नींद नहीं आयी।

नाक्स जब सड़क पर राइस और चारलेन की बगल से गुजरा, तो वह बड़ी तेजी से खच्चर भगाये लिये जा रहा था। हाथ में शराब की भरी बोतल लिये उसने उनकी ओर हाथ हिलाया और चिल्लाया। उसके शब्द उसके वहाँ से गुजर जाने के बाद हवा को विदीर्ण करते रहे। राइस उसकी ओर टकटकी बाँधे देखता ही रह गया।

"ताज्जुब है, वह इतनी जल्दी में कहाँ जा रहा है?" उसने कहा।

"चिंता ही किसे है इसकी!" चारलेन ने मंद स्वर में कहा।

वे बाँह में बाँह डाले बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। अपने पीछे-पीछे राइस अपने खच्चर को लिये आ रहा था। प्रेसाइज के मकान से चारलेन का घर बहुत नजदीक था और लगभग सारा रास्ता वे तय कर चुके थे।

"चारलेन!" राइस ने साँस रोककर पुकारा। उसने उसे अपनी ओर घुमाया और देखा कि वह मुस्करा रही थी। वह उसकी ओर तिरछी नजरों से देख रही थी। तभी उनकी तरफ किसी गाड़ी के सामने की बत्तियों का प्रकाश आया और वे अलग-अलग हो गये। वे अलग-अलग चल रहे थे कि आर्लिस और क्रैफोर्ड को लिये हुए मोटर उनकी बगल से गुजर गयी। राइस की तकदीर—उस सड़क पर आज रात बहुत-सी सवारियाँ आ-जा रही थीं।

वह उसकी ओर फिर देखता हुआ रुक गया। बड़ी आतुरता से उसने उसका चुम्बन ले लिया। पहले उसे बाँहों के घेरे में लिये बिना और फिर उसे अपने निकट सटाकर। चारों ओर छिटकी चाँदनी में काफी देर तक वे एक-दूसरे को चूमते रह गये और चारलेन का पूरा शरीर उससे बिलकुल कसकर चिपटा हुआ था। लगभग अजाने ही राइस ने उसकी छाती पर एक हाथ रख दिया और वह उससे दूर हट गयी। दूसरे ही क्षण, राइस के गाल पर जोरों से उसकी हथेली बज उठी।

"अपने हाथ बस अपने तक ही रखो, मि. चालाक!" उसने तीखे स्वर में कहा।

राइस ने अपने गाल पर हाथ रख लिया। चारलेन के अचानक रुख बदल लेने से वह घबरा गया था। उसने उसे फिर अपने बाहुपाश में लेने की कोशिश की; पर वह वहाँ थी ही नहीं।

"मुझे अपने घर पहुँचना है—" उससे दूर-दूर चलती हुई वह बोली—

"एक बार मैंने तुम्हें चूम लिया तो......" वह काफी तेजी से बढ़ती जा रही थी।

"चारलेन!" उसने कहा—" "मैं...मैं..."

वह रुक कर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। "अच्छा!" वह कुछ कोमल बनती हुई बोली—"लेकिन फिर वैसी हरकत नहीं करना। तुम सुन रहे हो न? कभी वैसी हरकत करने की कोशिश नहीं करना।"

राइस ने अब तक स्वयं को सँभाल लिया था। "कभी नहीं?" वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया—"'कभी नहीं' तो बहुत ही लम्बा समय है, चारलेन!"

वह पिघल गयी। "अच्छा! तब आज रात इसे मत दुहराओ। और तुमने फिर वैसी हरकत की, तो मैं तमाचा मार दूँगी। सुन रहे हो न?"

"सुन रहा हूँ।" राइस ने बनावटी विनम्रता से कहा। कुछ देर बाद उसने फिर उसे चूमा और जब उसका हाथ उसकी छाती पर पहुँचा, तो चारलेन ने उसे हटाने में देर कर दी। उसने राइस को तमाचा बिलकुल ही नहीं मारा। उसके बाद वे और भी धीरे-धीरे रेंगते हुए रात्रि-समाप्ति की ओर बढ़े। एक दूसरे से अलग होने में भी उन्होंने काफी देर लगा दी।

क्रैफोर्ड ने घाटी के प्रवेश-द्वार के निकट वृक्षों के साया में गाड़ी रोक दी। "चलो, बाकी रास्ता हम पैदल ही तय करें।" उसने कहा।

"अच्छी बात है।" वह बोली। उनके सिर के ऊपर वृक्ष की शाखाओं से होकर चाँदी बिखेरते हुए चाँद की ओर उसने देखा। जहाँ वे बैठे थे, वहाँ अंधेरा था और वह अभी घर में जाना नहीं चाहती थी। उसने अपने दिमाग में बातचीत करने का कोई मसाला ढूँढ़ने की चेष्टा की—कुछ ऐसी चीज, जो उन्हें कुछ देर और साथ-साथ रोके रख सके।

"क्रैफोर्ड!" वह बोली—"तुम और टी. वी. ए. वाले इस घाटी के बारे में क्या करने जा रहे हैं?"

क्रैफोर्ड ने अंधेरे में उसे गौर से देखा। "हम लोग इसे खरीदने जा रहे हैं—" उसने कहा—"हमें खरीदना ही पड़ेगा, आर्लिस! और कोई रास्ता नहीं है।" उसकी आवाज उससे कुछ खिंची-खिंची थी।

"पापा......" आर्लिस ने कहा।

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा—" मैं जानता हूँ। किंतु देर या सबेर उन्हें यह बात समझनी ही पड़ेगी। मैं आशा करता हूँ, वे जल्दी ही समझ जायेंगे।"

आर्लिस ने अपना हाथ बगल में गाड़ी पर रख दिया और ध्यान से उसे देखती रही। "हम यहाँ एक अरसे से रहने आये हैं—" वह बोली—"कहीं और जाना पड़ा, तो वह कैसी अपरिचित-अजानी जगह होगी।"

"हाँ!" उसने कहा। उसकी आवाज़ फिर बदल चुकी थी और वह अब समझने लगा था—"मेरा अनुमान है, तुम ठीक कहती हो।" उसने उसका दूसरा हाथ ले लिया और सावधानीपूर्वक उसकी उँगलियाँ अपनी उँगलियों में फँसा लीं। "मैंने सदा बेघर-बार की जिंदगी बितायी है; लेकिन मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि वह कैसा होगा।"

आर्लिस ने उसके हाथ में अपना हाथ रहने दिया। "क्रैफोर्ड!" वह बोली—"जल्दी मत मचाना। उन्हें सोचने का समय दो। उन्हें, स्वयं ही विचार कर, इस सम्बंध में अंतिम फैसले पर पहुँचने का वक्त दो।"

"जितना भी समय हम दे सकते हैं, हम उन्हें देंगे।" उसने कहा—"टी. वी. ए. इसी प्रकार काम करती है।"

अब और कुछ कहने के लिए नहीं था। वह गाड़ी से उतरने के लिए उतावली-सी हो उठी। "अब मुझे अंदर जाना ही पड़ेगा—" उसने कहा—"हम लोग..." वह आगे कुछ कहने में स्वयं को असमर्थ पा चुप हो गयी—"मुझे नाच में बड़ा आनंद आया। लेकिन मैं..."

क्रैफोर्ड गाड़ी से उतर पड़ा। वह घूम कर उसकी ओर आया और मोटर का दरवाजा खोलकर खड़ा रहा। वह उतर पड़ी और क्रैफोर्ड ने उसका हाथ थाम लिया। धीरे-धीरे एक-दूसरे की अगल-बगल में वे धूल से भरी उस सड़क पर मकान की ओर चलने लगे।

"आर्लिस!" क्रैफोर्ड ने कहा। जो-कुछ वह कहना चाहता था, उसे कहते हुए डर रहा था—वह डर रहा था, पता नहीं क्या जवाब मिले। "मेरा टी. वी. ए. के साथ होना और अन्य सारी बातें—तुम्हारे पिता की जमीन खरीदने आना..." वह रुक गया। सिर घुमाकर उसने आर्लिस के चेहरे की ओर देखा—"इससे हमारे-तुम्हारे बीच तो कोई अंतर नहीं पड़ेगा—पड़ेगा क्या?"

आर्लिस के न तो चेहरे पर ही कोई प्रतिक्रिया हुई, न उसकी आवाज़ में ही। "अंतर?" उसने कहा—"हम बस एक नाच में साथ-साथ गये..."

"लेकिन मैं फिर आना चाहता हूँ—" क्रैफोर्ड ने कहा—"मेरा मतलब है, तुमसे मिलने। मैं चाहता हूँ कि..."

वह हिचकिचायी। क्रैफोर्ड की आवाज़ को उसने हवा में विलीन हो जाने

दिया। तब वह धीमे से बोली—"मैं कह नहीं सकती। लेकिन अगर तुम यहीं कहीं काम करते रहे, तो घर आ सकते हो—मेरा अंदाज है, हमारे घर में तुम्हारा स्वागत ही होगा।"

"मैं इधर ही काम करता रहूँगा—" क्रैफोर्ड ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"मैं काफी लम्बे समय तक इस इलाके में काम करता रहूँगा।"

फिर उन्होंने कुछ कहा; पर उनकी चाल धीमी थी। वे एक-एक कदम रखने में पूरा समय ले रहे थे और उस धूल-भरी सड़क पर वे साथ-साथ मकान की ओर चलते रहे। चाँदनी उन पर बरस रही थी और उस भीड़-भरे नाच की गर्मी के बाद रात ठंडी थी। सोते से मेंढकों की टर्र-टर्र की आवाज़ उन्हें सुनायी दे रही थी और अचानक कहीं से एक बड़े उल्लू की चौंका देनेवाली चीख सुनायी पड़ी। आर्लिस ने जैसे डर कर क्रैफोर्ड की बाँह जोर से पकड़ ली, यद्यपि अब तक वह सारी जिंदगी बड़े उल्लुओं की चीख सुनती आयी थी।

बरामदे की सीढ़ियों पर वे रुक गये। "गुड नाइट (शुभ रात्रि)"—आर्लिस ने कहा। उसकी आवाज़ रुँध गयी थी।

"गुड नाइट, आर्लिस!" क्रैफोर्ड ने बड़े कोमल स्वर में कहा—"मैं तुमसे मिलने वापस आऊँगा—जल्दी।"

वह असमय में लिया गया एक भद्दा चुम्बन था; क्योंकि क्रैफोर्ड स्वयं भी नहीं जानता था कि वह ऐसा करनेवाला है और आर्लिस उसकी इस निर्भीकता के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। होंठों का स्पर्श होते ही वह उससे दूर हटने लगी और उसके रुक जाने पर वह अजाने ही उसे उसका चुम्बन वापस कर रही थी। किंतु यह एक अद्भुत रूप से संतोषप्रद चुम्बन था। वह फुर्ती से उससे दूर हट गयी और सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गयी।

"गुड नाइट!" उसने अपने रुद्ध गले से शब्दों को जैसे बाहर की ओर धकेलते हुए कहा।

"मैं तुमसे मिलने फिर आऊँगा।" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं जल्दी ही वापस आऊँगा।"

वह घूम पड़ा और तेजी से अपनी मोटर की ओर बढ़ा। उसे डर था कि कहीं वह फिर मन की मौज से प्रेरित होकर दुबारा उसे चूमने की कोशिश न कर बैठे और आर्लिस काँपती हुई अंधेरे घर के भीतर चली गयी।

इस शांत बातचीत से भी मैथ्यू की बेचैन नींद टूट गयी। वह उठ बैठा

और ठीक समय पर ही खिड़की के निकट पहुँच गया। उसने क्रैफोर्ड को जाते हुए देखा। वह उस मित्रवत् अजनबी को जाते हुए देखता रहा। मैथ्यू जानता था कि वह फिर आयेगा—वह अपने साथ और उपद्रव-उलझनें लायेगा। क्रैफोर्ड के जाने के काफी देर बाद तक वह खिड़की से आने वाली ठंडी हवा में साँस लेता रहा, जैसे वह वहाँ खड़ा किसी की प्रतीक्षा कर रहा था!

प्रकरण चार

नयी सुबह जब डनबार की घाटी में आयी, तो कहीं कोई परिवर्तन नहीं दिखायी दे रहा था। आँगन की धूल में मुर्गियाँ उसी तरह लुढ़क रही थीं, सूअर झुरमुट में कतार से खड़े थे और झुरमुट के परे वे वैसे ही घूम रहे थे, जैसे सूअर घूमा करते हैं। सुबह के नाश्ते की अवाज़ काफी देर पहले बंद हो चुकी थी और कौनी उसके बाद भी बिस्तरे पर पड़ी थी। रात-भर वह जागती रही थी और उसकी बगल में जेसे जान बड़ी गहरी नींद सोया था। दूसरे लड़कों के साथ बैठकर मनपसंद नाश्ता करने के लिए वह बहुत तड़के उठकर चला गया था और आखिर कौनी अब सो रही थी।

शहतीर या मोटा तख्ता काटनेवाले लम्बे आरे और कुल्हाड़ियाँ लेकर, जाड़े के लिए लकड़ियाँ जमा करने, सब मर्द जंगलों में चले गये थे। वे सब मैथ्यू डनबार के नेतृत्व में गये थे। वृक्षों का चुनाव मैथ्यू ही करता था और वह उनके आसपास की जगह साफ कर देता था, जिससे राइस और नावस काम कर सकें। वे आज खुश भी थे। आरे से लकड़ियाँ काटते हुए वे झुककर एक दूसरे से काम में बाजी मार ले जाना चाहते थे। चलते हुए आरे के तेज झटकों के साथ वे काम कर रहे थे। वृक्ष की अगल-बगल के झाड़ झखांड़ साफ करते हुए मैथ्यू रुका और उसने तथा जेसे जान ने नाक्स की ओर देखा कि उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन लक्षित हो रहा है या नहीं—रात की घटना की उसे कोई याद है या नहीं। लेकिन प्रत्यक्ष ही उसके मन से यह भावना जा चुकी थी और वह बिलकुल पहले के समान ही था।

घर में, आर्लिस फर्नीचरों की गर्द साफ कर रही थी; लेकिन एक-के-बाद-एक स्वतः ही किये जाने वाले प्रतिदिन के नियमित काम की ओर आज उसका ध्यान नहीं था। वह यह सोच रही थी कि कितने दिनों बाद क्रैफोर्ड गेट्स फिर इस

घाटी में आयेगा। लगभग अजाने ही वह सामने की खिड़की से सोते के किनारे वाली सड़क की ओर देखने के लिए रुक गयी। सड़क खाली थी और सूरज की गर्म रोशनी में उसकी धूल चमक रही थी—ऐसी खाली लग रही थी सड़क, जैसे क्रैफोर्ड कभी इस होकर आयेगा ही नहीं। अजाने ही उसने एक आह भरी और गर्द साफ करने के अपने काम में लग गयी। वह जल्दी से यह काम समाप्त कर देना चाहती थी, जिससे वह तश्तरियाँ भी साफ कर सके। अगर यह काम कौनी के ऊपर छोड़ दिया जाता, तो दिन के भोजन के समय तक वे जूठी पड़ी रहतीं।

मैथ्यू का बूढ़ा पिता—उस सुपरिचित रास्ते से मकान के सामने वाले कोने से होकर बाहर की ड्योढ़ी की ओर चला जा रहा था। बेंत की गांठदार छड़ी पर अपना भार डाले वह धीरे-धीरे रेंग रहा था। यह छड़ी हाथ की बनायी थी और पिछले बड़े दिनों (क्रिसमस) के समय नावस ने उसे दी थी। लेकिन वह भी प्रकृति के आग्रह की अवहेलना नहीं कर सका। चलते-चलते रुक कर उसने अपने लक्ष्य से दूर, पूरी घाटी पर अपनी धुँधली आँखें दौड़ायीं, जैसे कुछ तलाश कर रहा हो। सुबह की ताजी हवा में उसने सांस ली, जो उसके दुर्बल फेफड़ों की हमेशा की फड़फड़ाहट से अधिक गहरी थी।

मात्र हैटी नाखुश थी। अपने पीछे खलिहान की कुटीर का दरवाजा बंद कर लेने में उसने बहुत अधिक सावधानी बरती थी। उसके बाद ही उसने अपनी पोशाक उतारी—उस पुरानी पैंट को उतारा। वह बड़ी देर तक काफी सावधानी से अपने-आपको निहारती रही—उसी प्रकार बड़े सूक्ष्म और खोजपूर्ण दृष्टि से, जैसा कौनी आइने में अपने-आपको निहारते वक्त करती थी। अंत में उसने अपने आपको इस तरह निहारना बंद कर दिया और वह पोशाक पुनः उठा ली। वह उसे फिर पहनने की तैयारी कर रही थी। उसने अंतिम बार स्वयं पर एक लम्बी नजर डाली—यहाँ तक कि अपनी छाती पर अपनी हथेलियाँ रखकर और उन्हें जोर से दबाकर भी उसने देखा। कोई अंतर नहीं था। वह निश्चय के साथ कह सकती थी कि कल से आज तक उसमें कहीं कोई अंतर नहीं आया था।

उसने वह सूती पोशाक, उसमें सिर डालकर पहन ली और अपनी पैंट पहनने के लिए रुकी। तब उसने कुंडी हटा दी और किवाड़ खोलकर बड़ी सावधानी के साथ बाहर खलिहान में झाँका! वह खाली था। वह कुटीर से बाहर निकल आयी। अपने पीछे उसने उसका दरवाजा फिर बंद कर दिया और

खलिहान से होकर धीरे-धीरे चलती हुई मकान के पिछवाड़े में आ गयी। वह बहुत धीरे-धीरे सतर्क कदमों से चल रही थी और चलते समय अपने शरीर की हलचल को सुन रही थी।

कुएँ के पास आकर वह रुकी। सूअरों वाले झुरमुट की ओर उसने देखा और अचानक आज भी वहाँ खेलने की इच्छा उसके मन में हो आयी। लेकिन वह वहाँ नहीं खेल सकती थी—नहीं, अब नहीं। पिछले साल वह जब वहाँ बिलकुल अकेले खेला करती थी, तो वे दिन काफी अच्छे थे। लेकिन वह पिछले साल की बात है—एक ऐसा समय, जो मौसम की कई परतों के पीछे जा चुका था और अब समय इतना बदल गया था कि ऐसा लगता था, जैसे वह गर्मी उससे नहीं, किसी और से सम्बंधित थी—एक ऐसी मिस हैटी से उसका सम्बंध था, जिसका इस साल की गर्मी में और इस समय कोई अस्तित्व बाकी नहीं रह गया था।

अपना सिर झुकाये वह चलती रही। सुबह के सूरज की सीधी पड़ने वाली गर्म किरणों से होकर आने के बाद बरामदे में उसने अचानक कुछ ठंडक अनुभव की। रसोईघर भी अभी ठंडा था; क्योंकि आर्लिस ने अभी खाना बनाना शुरू नहीं किया था। वह मेज के पास बैठ गयी और कुछ सोचती हुई, बिना एक शब्द भी कहे, आर्लिस की ओर निहारती रही। वह यह देख रही थी कि आर्लिस कितनी जल्दी-जल्दी और प्रसन्नतापूर्वक अपना काम निपटा रही थी। "वह क्रैफोर्ड—" उसने सोचा—"आर्लिस और वह क्रैफोर्ड!"

अंततः हैटी के मौन से क्षुब्ध हो आर्लिस घूम पड़ी और उसने उसके चेहरे पर तथा आँखों में छायी उदासीनता देखी। "क्या हुआ है तुम्हें?" उसने पूछा।

हैटी ने नजरें उठाकर उसकी ओर देखा और फिर कहीं दूर देखने लगी। "कुछ भी नहीं—" उसने कहा। आवाज मलिन और नीरस थी और उसके हमेशा के बातें करने की तरह उसमें कोई प्रफुल्लता नहीं थी।

आर्लिस ने अपने हाथ की तश्तरी के पानी को हाथों से ही पोंछ दिया और मेज के निकट चली आयी। उसने झुककर हैटी के चेहरे को देखा। "अब बता भी दो—" उसने तेज स्वर में कहा—"आर्लिस को बताओ कि तुम्हें क्या तकलीफ है?"

हैटी ने उसके गंदे हाथों को गौर से देखा। "औरतों को यह सब क्यों करना पड़ता है?" उसने क्रुद्ध कर कहा—"यह सब औरतों के ऊपर ही क्यों डाल दिया जाता है?"

आर्लिस स्तम्भित रह गयी। वह हँसने लगी, तब एक-ब-एक रुक गयी—"तुम कहना क्या चाहती हो, आखिर?"

"मैं औरतों के बारे में कह रही हूँ—" हैटी ने उग्र भाव से कहा—"सब कुछ उन्हें ही झेलना पड़ता है, सारी तकलीफें उन्हें ही उठानी पड़ती हैं और हर तरह की बातें—और मर्द सिर्फ आनंद मनाते हैं। यह उचित नहीं है।"

आर्लिस मुड़कर उधर तश्तरियाँ धोने के बर्तन के पास चली गयी, जिससे हैटी उसका चेहरा न देख सके। वह सोच रही थी, हैटी की बात का क्या जवाब दे। उसे ताज्जुब हो रहा था कि हैटी ने यह विषय छेड़ा ही क्यों था अब। हैटी के बारे में आप यह कभी नहीं कह सकते थे कि अब आगे वह क्या सोचेगी।

"मेरे विचार से भगवान ने ही ऐसा बनाया है—" आर्लिस ने सावधानी-पूर्वक कहा—"खैर, इसके विरुद्ध हल्ला मचाने से कोई लाभ नहीं होता है, हैटी! तुम स्वयं ही एक दिन जान जाओगी।"

हैटी ने कुछ भी नहीं कहा। वह अभी भी काफी देर तक खामोश बैठी सोचती रही। उसके दिमाग के एक कोने में अभी भी स्वयं उसके शरीर-सम्बंधी विचार उठ रहे थे। वह अपने शरीर के सम्बंध में समझने की कोशिश कर रही थी।

"यह उचित नहीं है।" उसकी आवाज में शर्म और विरोध दोनों की भावनाएँ मिली थीं—"मैं औरत नहीं होना चाहती और मैं औरत बनने भी नहीं जा रही हूँ। ना, आंशिक रूप में भी नहीं।"

"मैं नहीं जानती कि तुम इसके बारे में क्या कर सकती हो—" आर्लिस ने रूखेपन से कहा। वह पुनः घूम पड़ी और उसने हैटी की ओर देखा। हैटी बड़े शिष्ट ढंग से कुर्सी पर बैठी थी, उसके दोनों पाँव जुटे हुए थे और हाथ उसकी गोद में मुड़े पड़े थे। अपनी स्वाभाविक कोमलता के बावजूद वह सीधी तनकर बैठी थी। "हे भगवान!" अचानक आर्लिस मन-ही-मन कह उठी—"हे भगवान!" वह हैटी के निकट चली गयी और उसके कंधों पर अपना हाथ रख दिया।

"इसके बारे में तुम परेशान मत होओ, रानी—" उसने बड़ी मधुरता से कहा—"तुम औरत होना पसंद करोगी। देख लेना, तुम इसे पसंद करोगी।"

उसके हाथ के भार के नीचे भी हैटी हिली-डुली नहीं। उसके कंधे किसी तख्ते के समान ही सख्त थे और यह आरामदेह भार पाकर भी उनमें कोई

हलचल नहीं हुई। आर्लिस ने निकट से झुककर देखा, तो हैटी का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी सदा चमकती रहनेवाली आँखें विद्रोह की भावना और सोच-विचार से धूमिल पड़ गयी थीं।

"धन्यवाद! मुझे औरत नहीं बनना है—" हैटी बोली। उसकी आवाज़ उसके कंधों के समान ही सख्त थी—"यह सरासर अनुचित है। मर्द अपना ऐश करते हैं और स्वयं को परेशानियों से अलग रखते हैं। उन्हें कुछ भी तो नहीं भुगतना पड़ता; लेकिन सारी परेशानी औरतों को ही है—कराहना, श्रम करना और खून बहाना!" उसने अपना सिर घुमाया—"मैं पूरे विश्वास से कहती हूँ, मैं तो कभी भी यही कहूँगी—'धन्यवाद, मुझे नहीं बनना है औरत!'"

आर्लिस घूमकर उसके सामने पहुँची। झुककर उसने हैटी के चेहरे को गौर से देखा। "क्या बात है, हैटी?" उसने कहा—"मुझे बताओ, बात क्या है?"

हैटी ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया। उसका चेहरा लाल हो उठा। फिर उसने बड़े उद्दंड भाव से आर्लिस की ओर देखा। उसने अपने पैरों को एक-दूसरे के और नजदीक कर लिया और कसकर उन्हें सटाये रही।

"मैं अपने उरोजों में तनाव अनुभव कर रही हूँ—" उसने कहा, उसकी आँखें आर्लिस के ऊपर ठहर नहीं पा रहीं थीं। वे कमरे में इधर-उधर चक्कर काट रही थीं और उसका चेहरा तरबूज के समान ही लाल था। "मैं बहुत ही तनाव अनुभव कर रही हूँ।"

आर्लिस हँसते हुए पीछे की ओर झुक गयी। वह आश्वस्त हो गयी थी, सो जोरों से हँस रही थी। "हे भगवान! तुमने तो मुझे डर से मार ही डाला था, लड़की!" उसने कहा—"मैंने सोचा, तुम किसी लड़के के साथ..." वह रुक गयी। अपनी हँसी भी उसने रोक ली—"मैं जानती हूँ, रानी! मैं जानती हूँ, यह कैसा होता है।"

"यह उचित नहीं है—" अपने तने हुए पैरों की ओर देखती हैटी बुदबुदायी—"लड़के सिर्फ घूमते रहते हैं और..."

"तुम जानती हो, अब क्या करना चाहिए?" आर्लिस ने तेज स्वर में पूछा।

"अनुमानतः हाँ!" हैटी ने रुखाई से स्वीकार किया।

"ठीक है। तुम अंदर जाओ। मेरे शृंगार-मेज के निचले खाने में तुम्हें

कुछ 'ब्रेसियर' (कंचुकियाँ) मिल जायेंगी—" उसने हैटी की ओर देखा—"जाओ अब।"

जब तक हैटी लौटकर रसोईघर में नहीं आ गयी, आर्लिस ने स्वयं को कामों में उलझाये रखा। वह तश्तरियाँ साफ कर रही थी। साबुन के झाग वाले पानी के भीतर उसके हाथ काम करने में व्यस्त थे और वह प्रसन्न थी। काम करते हुए वह मन-ही मन गुनगुना रही थी। पिछली रात क्रैफोर्ड के साथ नाच करते समय जो धुनें बनी थीं, उन्हीं में से एक धुन वह गुनगुना रही थी। वह कोई अच्छा नहीं गाती थी; क्योंकि वह बाल्टी में पानी ही ढो सकती थी—गाने की धुन नहीं। किंतु अपनी प्रसन्नता के क्षणों में किसी भी लड़की को गुनगुनाने का अधिकार है।

हैटी दुबारा जब उस कमरे में आयी, तो आर्लिस ने फुर्ती से उसकी ओर देखा और फिर दूसरी ओर देखने लगी। हैटी अब पहले से अच्छा अनुभव कर रही थी। लेकिन उसे इसके लिए बात करनी पड़ी थी—अपनी नाराज़गी, शर्म और घबराहट को शब्दों का रूप देना पड़ा था। आर्लिस ने अंतिम तश्तरी भी धोकर रैक पर रख दी और जिस बर्तन में पानी रखकर साफ कर रही थी, उसे उठा लिया। वह पिछले दरवाजे तक गयी और साबुन का वह पानी उसने बाहर फेंक दिया। वहाँ धूल में लुढ़कती हुई मुर्गियाँ डर कर उड़ गयीं और वह लौटकर रसोईघर में आ गयी।

"मक्खन और चीनी लगा रोटी का टुकड़ा चाहिए तुम्हें?" उसने पूछा।

"नहीं।" हैटी बोली—"मैं कुछ भी नहीं खाना चाहती हूँ।"

आर्लिस ने गौर से उसे देखा—"अब तुम ठीक हो न?"

हैटी ने आँखें उठाकर उसे देखा। "निश्चय ही—" उसने कहा—"मैं काफी आराम महसूस कर रही हूँ।"

आर्लिस मेज पर बैठ गयी। "अब मेरी बात सुनो—" वह बोली—"तुम अब लड़कों के साथ यों इधर-उधर चक्कर नहीं काट सकती। मैं जो कह रही हूँ, सुन रही हो न?"

"मैं लड़कों के साथ चक्कर नहीं काटा करती—" हैटी ने हठपूर्ण स्वर में कहा—"मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं..."

"मैं इसकी बात नहीं कह रही हूँ—" आर्लिस ने कठोरता से कहा—"तुम अब एक औरत बन चुकी हो। तुम लड़कों को अपने साथ मिलने-जुलने दो, तुम ऐसा कर सकती हो..." वह रुक गयी और सीधा हैटी की

ओर देखती हुई बोली—"और अब तुम्हारी गोद में वे एक बच्चा दे दे सकते हैं।" उसकी आवाज़ तीखी थी। अपने भीतर नारीत्व के लिए व्याकुल यौवन की भावना का अनुभव करते हुए वह बोली—"सुन रही हो न?"

"तुम मुझे ऐसा कुछ भी नहीं बता रही हो, जो मैं नहीं जानती हूँ—" हैटी ने नाराजगी से कहा—"तुम्हें मेरे बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं औरत बनने के लिए कुछ भी नहीं करना चाहती। मैं..."

आर्लिस की आवाज कोमल हो गयी—"ऐसा भी समय आता है, जब तुम औरत बनना चाहोगी—" उसने कहा—"हो सकता है, अभी नहीं—कुछ समय तक नहीं। लेकिन बाद में, तुममें एक ऐसी तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी, जैसी पहले कभी नहीं हुई होगी। तभी तुम्हें ये सारी बातें समझनी हैं—समझना है कि एक औरत किस प्रकार एक मर्द से भिन्न है। एक मर्द की तरह औरत लापरवाह और निश्चिंत नहीं बन सकती। उसे सोचना ही पड़ेगा..."

"आर्लिस!" हैटी ने कहा—"कैसा होता है यह? सच बताओ, कैसा होता है यह?"

आर्लिस पीछे हट गयी। "कौनी से क्यों नहीं पूछती तुम?" उसने कहा—"तुम कैसे सोचती हो कि मैं..."

उसकी बातों पर कान दिये बिना हैटी ने आतुरता से कहा—"तुम और क्रैफोर्ड! वह..."

रुष्ट हो, आर्लिस खड़ी हो गयी। "क्या बक रही हो तुम?" वह बोली—"तुम अपनी बहन को समझती क्या हो?"

हैटी उसे देखती ही रही। "तुम पिछली रात ठीक से सो नहीं सकी—" उसने कहा—"आधी रात तक मुझे भी जगाये रही। अपनी नींद में तुम बिलखती और हाथ-पैर पटकती रही। तुम औरत बनना चाह रही थी—चाह रही थी न?"

आर्लिस सीधी अंगीठी के पास चली गयी और उसके ढक्कनों को उलटती-पुलटती रही। "चाहना एक बात है और करना दूसरी बात—" वह क्रुद्ध स्वर में बोली—"मुझे अब खाना पकाना है। ऐसी मूर्खताभरी बातों के लिए मेरे पास समय नहीं है। निकलो यहाँ से और जाकर खेलो।"

अगर वह चाहती, तो भी हैटी से नहीं कह सकती थी कि कैसा होता है यह। एक बार पिकनिक में ऐसा मौका आया था, जब वाल्टर शेल्डन उसे दूर जंगलों में ले गया था। लेकिन वह बहुत पहले की बात है, जब कि उसकी

उम्र हैटी की उम्र के बराबर भी नहीं थी। सो, वास्तव में, उसे स्वयं नहीं मालूम था। वह घूम पड़ी।

"रानी!" उसने कहा। उसकी आवाज़ सहज-स्वाभाविक थी—"मैं सिर्फ एक बार क्रैफोर्ड गेट्स के साथ नाच में गयी। उसने 'गुडनाइट' कहते समय...मुझे चूमा।" उसकी आवाज़ अपने-आप ही बदल गयी। वह कड़े स्वर में बोली—"लेकिन इसके कारण मुझे रात में डरावने सपने नहीं आ सकते, चाहे तुम्हें मैंने भले ही आधी रात तक जगाये रखा हो।"

"मुझे दुःख है—" हैटी बुदबुदायी—"मेरा मतलब यह नहीं था..." उसने नजरें उठाकर आर्लिस की ओर देखा—"तुम इसी तरह की इच्छा के बारे में बातें कर रही थी......एक मर्द के साथ नाच में जाने की इच्छा... उसके द्वारा चूमे जाने की इच्छा......"

"हाँ!" आर्लिस ने स्थिर स्वर में कहा—"ऐसा ही मैं चाहती थी और इससे ज्यादा भी। लेकिन तुम्हें अब सावधानी बरतनी होगी, हैटी! तुम्हें कुछ भी करने के पहले उस सम्बंध में तय कर लेना होगा; क्योंकि तुम एक औरत हो और भगवान ने यह भार तुम पर रखा है, मर्द पर नहीं। इसे कभी मत भूलना।"

हैटी के ललाट पर सिकुड़नें उभर आयीं। "कौनी—" उसने कहा—ऐसा लगता है, उसमें अभी भी यह इच्छा बाकी है। उसके रंग-ढंग ही ऐसे हैं। जब उसे उसका मर्द मिल गया है, तो वह संतुष्ट और तृप्त क्यों नहीं है?"

आर्लिस ने अंगीठी का दूसरा ढक्कन बंद कर दिया। "कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो संतुष्ट हो ही नहीं सकते।" वह बोली—"अगर जीसस क्राइस्ट से भी शादी हो जाये, तो भी कुछ औरतें किसी की तलाश करती ही रहेंगी।"

"हो सकता है, औरतें जैसी विचित्र हैं, वैसे ही वे बनायी भी गयी हों। कोई भी मर्द हो—ऐसा नहीं है शायद उसके साथ—" हैटी ने विचारपूर्ण मुद्रा में कहा—"हो सकता है कि कोई 'खास आदमी' और बाकी कोई दूसरा..."

आर्लिस ने राहत महसूस की। "यही बात ही है—" उसने जल्दी से कहा—"तुम इसे सदा याद रखा करो और तब तुम इस घर में कोई मुसीबत नहीं लाओगी। तुम इंतजार करती जाओ, जब तक तुम्हें विश्वास न हो जाये कि यही वह तुम्हारा 'खास आदमी' है और तब तुम बिलकुल ठीक रहोगी।"

"हाँ!" हैटी उसी प्रकार सोचती हुई बोली—"और इसका मतलब है, जैसे जान कौनी के लिए उसका वह 'खास आदमी' नहीं है।" वह इस

सम्बंध में सोचती रही। उसकी भृकुटी चढ़ी थी और वह सोचने में लीन थी। उसने आर्लिस की ओर देखा। "मैं कौनी के प्रति अन्याय करती रही हूँ—" उसने धीमे से कहा—"मेरे विचार से मुझे उस औरत के लिए दुःख होना चाहिए—उससे सहानुभूति होनी चाहिए। क्योंकि अब उसे अपना वह 'खास आदमी' पाने का मौका कभी नहीं मिलने वाला है।"

"और जेसे जान के सम्बंध में?" आर्लिस ने कठोरता से कहा—"तुम्हें उसके लिए अफसोस होना चाहिए।"

"नहीं!" हैटी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"निश्चय ही, यह उसका दोष भी नहीं है। लेकिन दया की पात्र कौनी है।" वह हौले से मुस्करायी—"अब से मैं उससे अधिक कोमलता से बातें करूँगी।" उसने कहा—"और तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए, आर्लिस! क्यों, तुम तो उसे खाने पर साथ बैठाने में भी अनिच्छा प्रकट करती हो!"

"उस वजह से नहीं—" आर्लिस ने कहा—"इस वजह से कि वह घर के कामों में हाथ नहीं बँटाती। वह अपने हिस्से का भार भी नहीं ढोती। कौनी से मुझे बस, यही शिकायत है। अब तुम यहाँ से निकलो और जाकर खेलो।"

हैटी खड़ी हो गयी। "अब मैं मक्खन और चीनी लगी वह रोटी ले लूँगी—" वह बोली और तब तक इंतजार करती रही, जब तक आर्लिस ने मक्खन और चीनी लगाकर उसे रोटी दे नहीं दी। फिर वह दरवाजे की ओर बढ़ी।

"बाहर जाकर पेड़ों पर नहीं चढ़ना—" आर्लिस ने उसे चेतावनी दी—"भूलो मत कि तुम..."

हैटी ने घूमकर उसे भेदती हुई नजरों से देखा। "मैं अभी भी कहूँगी, यह उचित नहीं है—" वह बोली—"सारा भार, सारे बंधन इस तरह औरतों पर डाल देना। क्यों आखिर? जब से मैं पैदा हुई, मैं पेड़ पर चढ़ती रही हूँ और अब अचानक मैं ऐसा नहीं कर सकती।" बाहर निकलते हुए अपने पीछे उसने बड़े जोर से उन जालीदार दरवाजों को बंद कर दिया।

अपना सिर हिलाती हुई आर्लिस पीछे से उसे क्षणभर देखती रही। उसे हँसने की इच्छा हो रही थी और साथ ही, रोने की भी। "हम सबके साथ ऐसा होता है—" उसने सोचा—"हम सबके साथ ऐसा होता है। स्वयं को आहत अनुभव करना और यह इच्छा कि..." अचानक किसी प्रकार, इस विचार के परे, दूसरे ही क्षण, वह क्रैफोर्ड के साथ किये गये नाच को याद कर रही थी। रात का वह नाच इस तरह उसके सामने प्रत्यक्ष हो उठा, जैसे वह

अभी भी क्रैफोर्ड की बाँहों में हो। अपने को वह उन बाँहों में महसूस भी कर रही थी। वह उसी तरह उसकी याद करती—उसे महसूस करती—बिलकुल स्थिर खड़ी रही। वह सोच रही थी कि वह कब लौटकर इस घाटी में आयेगा। लेकिन सामने की खिड़की तक जाकर फिर बाहर झाँकने से उसने स्वयं को रोक लिया। एक झटके से उसने यह विचार अपने से दूर फेंक दिया और पिछले बरामदे में आकर सूरज की ओर देखने लगी। अधिक देर किये बिना उसे खाना पकाना शुरू कर देना होगा। अपनी कड़ी मेहनत के बाद सब-के-सब मर्द बड़े भूखे होंगे। अपने काम पर वापस जाने के पहले वह क्षणभर और रुकी रही। काफी अच्छा दिन था वह—बहुत गर्म और शांत—तनिक भी हवा नहीं चल रही थी। उसे ऐसा लगा, जैसे इस अच्छे दिन में उसके साथ कोई अच्छी बात होनेवाली है। हो सकता है, क्रैफोर्ड ही आ जाये आखिर।

क्रैफोर्ड गेट्स मेज की उस ओर बैठे व्यक्ति को देख रहा था। अपनी गोद में पड़े कागजों पर अपनी नजरें झुकाने के पहले वह उसे गौर से देखता रहा। "यह बात है सारी—" उसने कहा—"मैं आज फिर मि. डनबार से मिलने जा रहा हूँ।"

स्प्रिंग पर चारों ओर घूमनेवाली अपनी कुर्सी पर वह आदमी पीछे की ओर झुका हुआ था। "तुम्हारा क्या खयाल है?" उसने कहा—"क्या वह अधिक पैसे के लिए ऐसा कर रहा है?"

क्रैफोर्ड गेट्स उस कागजों को फोल्डरों में रखने में व्यस्त था। "नहीं, महाशय!" उसने कहा—"मैथ्यू डनबार ऐसा नहीं है। बात यह है कि वह वहाँ से हटना नहीं चाहता और बस। अब, असा प्राक्टर की बात दूसरी है। वह सोचता है, जितना पैसा हम उसे दे रहे हैं, उससे अधिक पैसा उसे मिल सकता है। वह तब तक ऐसा करता रहेगा, जब तक कि उसके प्रति हम कड़ी कार्रवाई न करें। तब वह शर्तें तय करने पर उतर आयेगा।" वह मुस्कराया—"वह अपने-आप को खच्चर का व्यापारी भी समझता है।"

"टी. वी. ए. की जो योजना है, क्या डनबार उस योजना के ही विरुद्ध है?" मेज की उस ओर बैठे आदमी ने कहा—"सम्भव है, विद्युत्-कम्पनी उसके पास पहुँची हो......"

क्रैफोर्ड ने अपना सिर हिलाया—"ना। मैं तो कहूँगा कि उसे किसी की चिंता नहीं है। वह अपनी जमीन अपने ही पास रखना चाहता है और बस! उसका काफी बड़ा परिवार है और मेरी समझ से वह जमीन उस परिवार के

पास लम्बे अर्से से है। यह सिर्फ उस परिवर्तन, प्रगति और वैभिन्न्य के प्रति उसका विरोध है।" उसने कागजों को सँभालकर रखने का काम खत्म कर लिया।

"तुम किस तरह इसे निपटाने जा रहे हो?"

क्रैफोर्ड खड़ा हो गया—"आप उसे सच ही, दोष नहीं दे सकते—" उसने नम्रता से कहा—"उसकी वह घाटी काफी खूबसूरत है। मैंने रात का खाना उन्हीं लोगों के साथ खाया था।" उसने अपने अधिकारी की ओर देखा—"अगर वह घाटी मेरे पास होती, महाशय! तो, मुझे डर है, मेरी भावनाएँ भी उसी के समान होतीं।"

अधिकारी मुस्कराया—"तुम किसकी ओर हो—उसकी ओर या टी. वी. ए. की ओर?"

क्रैफोर्ड की भौंहें सिकुड़ गयीं। "एक ही रास्ता मुझे नज़र आता है—" उसने धीमे से कहा—"दोनों पक्षों को समान बना देने का रास्ता। उस बूढ़े मैथ्यू को यह समझा देने का कि टी. वी. ए. की वास्तविकता क्या है, उद्देश्य क्या है और किस तरह उसे और उसकी घाटी को टी. वी. ए. की राह में रुकावट बनने का कोई अधिकार नहीं है।" उसने सीधा मेज की उस ओर देखा—"इसी तरीके से मैं यह निपटाना चाहता हूँ। मेरे विचार से यही सर्वोत्तम मार्ग है।"

उस आदमी ने अपने होंठ दबाये—"कड़ी कार्रवाई की हमेशा ही कोई-न-कोई प्रतिक्रिया होती रही है।"

"निश्चय ही—" क्रैफोर्ड ने कहा—"लेकिन हमारे पास अभी समय है। वे बाँध बनाने का काम कल ही नहीं समाप्त कर देने जा रहे हैं। और मैं आपसे एक बात कहूँगा...मैथ्यू डनबार को अपना विरोधी बनाने के बजाय, मैं उसे अपने पक्ष में लेना अधिक पसंद करूँगा।" वह मेज के ऊपर झुका—"वह हमारे लिए मुसीबत बन सकता है; क्योंकि उसे पैसे का लोभ नहीं है। वह कुछ नहीं चाहता, सिवा इसके कि उसे अकेला छोड़ दिया जाये। अगर उसकी जिद जाग गयी, तो हमें काफी परेशानियाँ उठानी पड़ सकती हैं।"

"तुम्हारा क्या खयाल है, तुम यह काम कर सकते हो?"

"सोचता तो मैं ऐसा ही हूँ—" क्रैफोर्ड ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"और जब इस सम्बंध में मेरा विचार बदल जायेगा, तो मैं आपके पास आकर बता दूँगा; लेकिन अगर आप मुझे अभी यह काम अपने ही ढंग से करने दें, भी।"

अधिकारी ने अपने कागजों की ओर ध्यान दिया। "तुम तो हमारे काम करने का ढंग जानते ही हो—" उसने कहा—"किसी को भी टी. वी. ए. का दुश्मन बनाने के बजाय हम दोस्त बनाना ही पसंद करेंगे। तुम इस काम को कर सकते हो।"

क्रैफोर्ड आश्वस्त हो, मुस्कराया।" "आज मैं वहाँ नकशा और खानापूरी के कागजात ले कर जा रहा हूँ—" उसने कहा। दरवाजे तक पहुँचकर उसने अपना हाथ मुट्ठे पर रखा, हिचकिचाया और वापस मेज तक आया। "मैं समझता हूँ. एक बात और मुझे आपसे कह देनी चाहिए।" जोर से कहने से घबराहट के कारण उसकी आवाज रूखी हो गयी—"मैं उसकी लड़की से भी मिलता-जुलता हूँ।"

उस आदमी ने कागजों से अपना सिर उठाया। वह एक क्षण तक क्रैफोर्ड की ओर देखता रहा। वह सोच रहा था—मैं जानता था, कोई बात जरूर है। शुरू से ही मैं जानता था यह। "यह मत भूलो कि तुम किसके लिए काम कर रहे हो और, बस!"—वह बोला।

क्रैफोर्ड शांत खड़ा रहा। "मैं नहीं भूलूँगा—" उसने कहा—"आप इस सम्बंध में मुझ पर भरोसा रख सकते हैं।" वह कुछ देर और रुका रहा; लेकिन उस आदमी ने इसके सिवा कुछ नहीं कहा और क्षणभर बाद क्रैफोर्ड कमरे के बाहर चला गया।

पुरानी धूल-भरी सीढ़ियों से उतर कर वह बाहर, सूरज की रोशनी में आया और उसने आँखें झपकायीं। भूमि-अधिकार-कार्यालय (जमीन प्राप्त करने का सरकारी दफ्तर) उस क्षेत्र के सबसे नजदीक के शहर में रखा गया था और वह बैंक की उस इमारत के सामने की वर्गाकार जमीन पर खड़ा था, जहाँ कि ऊपरी मंजिल टी. वी. ए. ने किराये पर ले रखी थी। वह सड़क से होकर वहाँ पहुँचा, जहाँ उसने अपनी गाड़ी लगा रखी थी और पिछली सीट पर उसने फोल्डर फेंक दिया।

धूप में खड़ी रहने से मोटर बहुत गर्म हो गयी थी और एंजिन स्टार्ट करते-करते उसके मुँह पर पसीने की बूँदें छलछला आयीं। उसने उस वर्गाकार भूमि के चारों ओर मोटर घुमायी और बाहर जानेवाली सड़क पर निकल आया। 'स्टीयरिंग व्हील' पर उसके हाथ ढीले और सुविधापूर्वक ढंग से रखे हुए थे। पक्की सड़क जल्दी ही समाप्त हो गयी और वह उस रास्ते पर पहुँच गया, जो जनशून्य था। उस धूल उड़ाती सड़क पर वह बड़े आराम के साथ लम्बे चक्करों

से घुमाता अपनी मोटर बढ़ाये लिये जा रहा था। वह सावधानीपूर्वक मोटर चला रहा था। वह कुछ सोच नहीं रहा था और अपने हाथ में 'स्टीयरिंग व्हील' सँभाले उस ऊबड़-खाबड़ कँकरीली सड़क के धक्के अनुभव कर रहा था। सड़क के किनारे खड़े कपास के गहरे हरे पौधे सड़क की धूल से नहाये हुए थे। नदी के पुल से होकर वह उस ओर पहुँचा और उस धूल-भरी सड़क पर बढ़ने लगा, जो नदी के किनारे खड़े वृक्षों के बीच संकीर्ण होती हुई चली गयी थी।

तब तक उसने उसके सम्बंध में नहीं सोचा था। अब उसने अपने मन में 'आर्लिस' नाम लिया और इस नाम-मात्र से पिछली रात की सुख-भरी उष्णता की लहर उसमें दौड़ गयी। उसे याद हो आया कि किस प्रकार मोटर से उतरकर घाटी के प्रवेश-द्वार से मकान तक का रास्ता उन्होंने धीरे-धीरे चलकर काफी देर में तय किया था। और किस तरह अंत में, उसने उसे वहाँ चूम लिया था। शहर से जिस सड़क पर वह चलता आया था, उसकी तुलना में, धूलभरी यह सड़क, गर्मी के इस सूखे मौसम में ज्यादा अच्छी और सुविधा-जनक थी और वह तेजी से गाड़ी चलाने लगा। वहाँ जल्दी पहुँचने के लिए वह इच्छुक हो उठा था।

वृक्षों से निकल कर वह कपास के खेतों में पहुँचा और आगे फिर वृक्ष आ गये। तब, एक-ब-एक, बिना किसी पूर्व-सूचना के वे वृक्ष खतम हो गये। आगे कटे हुए वृक्षों की कतार थी। कल ऐसा नहीं था। क्षणभर के लिए स्तम्भित होकर उसने अपने चारों ओर नजर दौड़ायी और तब उसने सड़क के उस ओर काम करते हुए लोगों को देखा। उनके हाथ में आरे और कुल्हाड़ियाँ थीं और कटी हुई शाखाओं को हटाने के सामान भी। उसके अनुमान से, लगभग पचास आदमी थे वहाँ और सड़क से लेकर नदी की ओर के वृक्षों को काट-काट कर वे उनके ढेर लगाते जा रहे थे।

मोटर रोककर वह उनकी ओर देखता रहा। उनके और सड़क के बीच की जगह वृक्षों के हट जाने से साफ हो गयी थी। टहनियाँ काट-काट कर सुखाने और जलाने के लिए, उनका ढेर लगा दिया गया था। लकड़ियों के शाखा विहीन कुंदे फिलहाल यों ही पड़े थे। पहाड़ियों से नीचे की ओर ढलान पर उगे पतले-लम्बे देवदार के ये वृक्ष अधिक पुराने नहीं हुए थे और वहाँ तक फैलते चले गये थे, जहाँ सख्त और अधिक पुराने पेड़ शुरू हो गये थे। लेकिन जहाँ वृक्ष काट कर गिरा दिये गये थे और जगह साफ कर दी गयी

अधिकारी ने अपने कागजों की ओर ध्यान दिया। "तुम तो हमारे काम करने का ढंग जानते ही हो—" उसने कहा—"किसी को भी टी. वी. ए. का दुश्मन बनाने के बजाय हम दोस्त बनाना ही पसंद करेंगे। तुम इस काम को कर सकते हो।"

क्रैफोर्ड आश्वस्त हो, मुस्कराया।" "आज मैं वहाँ नक्शा और खानापूरी के कागजात ले कर जा रहा हूँ—" उसने कहा। दरवाजे तक पहुँचकर उसने अपना हाथ मुठ्ठे पर रखा, हिचकिचाया और वापस मेज तक आया। "मैं समझता हूँ, एक बात और मुझे आपसे कह देनी चाहिए।" जोर से कहने से घबराहट के कारण उसकी आवाज रूखी हो गयी—"मैं उसकी लड़की से भी मिलता-जुलता हूँ।"

उस आदमी ने कागजों से अपना सिर उठाया। वह एक क्षण तक क्रैफोर्ड की ओर देखता रहा। वह सोच रहा था—मैं जानता था, कोई बात जरूर है। शुरू से ही मैं जानता था यह। "यह मत भूलो कि तुम किसके लिए काम कर रहे हो और, बस!"—वह बोला।

क्रैफोर्ड शांत खड़ा रहा। "मैं नहीं भूलूँगा—" उसने कहा—"आप इस सम्बंध में मुझ पर भरोसा रख सकते हैं।" वह कुछ देर और रुका रहा; लेकिन उस आदमी ने इसके सिवा कुछ नहीं कहा और क्षणभर बाद क्रैफोर्ड कमरे के बाहर चला गया।

पुरानी धूल-भरी सीढ़ियों से उतर कर वह बाहर, सूरज की रोशनी में आया और उसने आँखें झपकायीं। भूमि अधिकार-कार्यालय (जमीन प्राप्त करने का सरकारी दफ्तर) उस क्षेत्र के सबसे नजदीक के शहर में रखा गया था और वह बैंक की उस इमारत के सामने की वर्गाकार जमीन पर खड़ा था, जहाँ कि ऊपरी मंजिल टी. वी. ए. ने किराये पर ले रखी थी। वह सड़क से होकर वहाँ पहुँचा, जहाँ उसने अपनी गाड़ी लगा रखी थी और पिछली सीट पर उसने फोल्डर फेंक दिया।

धूप में खड़ी रहने से मोटर बहुत गर्म हो गयी थी और एंजिन स्टार्ट करते-करते उसके मुँह पर पसीने की बूँदें छलछला आयीं। उसने उस वर्गाकार भूमि के चारों ओर मोटर घुमायी और बाहर जानेवाली सड़क पर निकल आया। 'स्टीयरिंग व्हील' पर उसके हाथ ढीले और सुविधापूर्वक ढंग से रखे हुए थे। पक्की सड़क जल्दी ही समाप्त हो गयी और वह उस रास्ते पर पहुँच गया, जो जनशून्य था। उस धूल उड़ाती सड़क पर वह बड़े आराम के साथ लम्बे चक्करों

से घुमाता अपनी मोटर बढ़ाये लिये जा रहा था। वह सावधानीपूर्वक मोटर चला रहा था। वह कुछ सोच नहीं रहा था और अपने हाथ में 'स्टीयरिंग व्हील' सँभाले उस ऊबड़-खाबड़ कँकरीली सड़क के धक्के अनुभव कर रहा था। सड़क के किनारे खड़े कपास के गहरे हरे पौधे सड़क की धूल से नहाये हुए थे। नदी के पुल से होकर वह उस ओर पहुँचा और उस धूल-भरी सड़क पर बढ़ने लगा, जो नदी के किनारे खड़े वृक्षों के बीच संकीर्ण होती हुई चली गयी थी।

तब तक उसने उसके सम्बंध में नहीं सोचा था। अब उसने अपने मन में 'आर्लिस' नाम लिया और इस नाम-मात्र से पिछली रात की सुख-भरी उष्णता की लहर उसमें दौड़ गयी। उसे याद हो आया कि किस प्रकार मोटर से उतरकर घाटी के प्रवेश-द्वार से मकान तक का रास्ता उन्होंने धीरे-धीरे चलकर काफी देर में तय किया था। और किस तरह अंत में, उसने उसे वहाँ चूम लिया था। शहर से जिस सड़क पर वह चलता आया था, उसकी तुलना में, धूलभरी यह सड़क, गर्मी के इस सूखे मौसम में ज्यादा अच्छी और सुविधा-जनक थी और वह तेजी से गाड़ी चलाने लगा। वहाँ जल्दी पहुँचने के लिए वह इच्छुक हो उठा था।

वृक्षों से निकल कर वह कपास के खेतों में पहुँचा और आगे फिर वृक्ष आ गये। तब, एक-ब-एक, बिना किसी पूर्व-सूचना के वे वृक्ष खतम हो गये। आगे कटे हुए वृक्षों की कतार थी। कल ऐसा नहीं था। क्षणभर के लिए स्तम्भित होकर उसने अपने चारों ओर नजर दौड़ायी और तब उसने सड़क के उस ओर काम करते हुए लोगों को देखा। उनके हाथ में आरे और कुल्हाड़ियाँ थीं और कटी हुई शाखाओं को हटाने के सामान भी। उसके अनुमान से, लगभग पचास आदमी थे वहाँ और सड़क से लेकर नदी की ओर के वृक्षों को काट-काट कर वे उनके ढेर लगाते जा रहे थे।

मोटर रोककर वह उनकी ओर देखता रहा। उनके और सड़क के बीच की जगह वृक्षों के हट जाने से साफ हो गयी थी। टहनियाँ काट-काट कर सुखाने और जलाने के लिए, उनका ढेर लगा दिया गया था। लकड़ियों के शाखा विहीन कुंदे फिलहाल यों ही पड़े थे। पहाड़ियों से नीचे की ओर ढलान पर उगे पतले लम्बे देवदार के ये वृक्ष अधिक पुराने नहीं हुए थे और वहाँ तक फैलते चले गये थे, जहाँ सख्त और अधिक पुराने पेड़ शुरू हो गये थे। लेकिन जहाँ वृक्ष काट कर गिरा दिये गये थे और जगह साफ कर दी गयी

थी, वहाँ जमीन पूर्णतः खुली नजर आ रही थी और उस पर पूरा-पूरा प्रकाश पड़ रहा था। क्रैफोर्ड ने सोचा, वे जलाशय की जमीन साफ कर रहे हैं। झुककर अपने काम में व्यस्त उन आकृतियों को वह देखता रहा। गरम सूरज की रोशनी हमेशा उन पर पड़ रही थी; क्योंकि उनके सामने जो साया था, उसे उन्होंने स्वयं ही छिन्न-भिन्न कर दिया था। क्रैफोर्ड को उनके जोर से चिल्लाने और हँसने की आवाज़ सुनायी दी। वह जानता था कि उनमें से अधिकांश आसपास के ही लोग होंगे, जिन्हें फसल खड़ी होने के समय से पतझड़ के समय तक बहाल किया गया होगा। और उन्हें इसके लिए काफी अच्छे पैसे मिलेंगे—इतने पैसे, जितने की उन्होंने उम्मीद नहीं की होगी।

उसने मोटर 'स्टार्ट' की और फिर तेजी से हाँकने लगा और कुछ ही मिनटों में वह घाटी के प्रवेश-द्वार के निकट पहुँच गया। वृक्षों के साये में उसने अपनी गाड़ी खड़ी कर दी। वह नीचे उतरा और पीछे की सीट से उसने वह फोल्डर फिर उठा लिया। आर्लिस की याद से वह पहले से ही अपने भीतर उत्तेजना अनुभव कर रहा था, अतः सड़क पर तेजी से चलने लगा। आँगन में आने के साथ ही वह उसे ढूँढ़ रहा था, जैसे वह उसकी प्रतीक्षा ही कर रही होगी। किंतु सामने का आँगन और बरामदा खाली थे।

सीढ़ियों पर रुककर उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा—"हैलो!"

चारों ओर निस्तब्धता छायी थी। वह इंतजार करता रहा और फिर पुकारने ही वाला था कि उसने भीतरी हिस्से में दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनी। देखने के पहले ही वह जान गया कि आर्लिस होगी। आर्लिस उसे देखते ही आश्चर्य से खड़ी हो गयी; फिर उसकी ओर आयी। क्रैफोर्ड उसका चेहरा देखता रहा। वह सोच रहा था कि पिछली रात के बाद इतनी जल्दी, उसके वापस आ जाने से उसे कैसा लग रहा होगा!

"हैलो, आर्लिस!" उसने कहा—"मैं…"

"क्रैफोर्ड!" वह बोली। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और वह खुश थी—"मैंने सोचा भी नहीं था कि तुम इतनी जल्दी वापस आओगे।"

क्रैफोर्ड की इच्छा हो रही थी कि वह सीढ़ियाँ चढ़कर उसकी बगल में पहुँचे और उसे छू ले। "मैं तुम्हारे डैडी से मिलने आया हूँ।" उसने कहा—"लेकिन तुमसे भी मुलाकात हो गयी, आर्लिस, यह अच्छा हुआ।"

वह उसे खड़ी-खड़ी देखती रही और जैसी उसने उम्मीद की थी, वैसी बात कतई नहीं थी। उसने सोचा था कि साथ-साथ नाचना और पिछली रात का

वह चुम्बन उनके बीच शर्म की दीवार बनकर खड़ा हो जायेगा। किंतु ऐसी बात नहीं थी। दिन की रोशनी में सब कुछ बिलकुल सरल, स्वाभाविक और मित्रवत् लग रहा था, जैसे वह चाँदनी रात कभी आयी ही नहीं थी उनके बीच! लेकिन आखिर मैं चाह क्या रही थी—उसने मन-ही-मन गहराई से सोचा; किंतु ऊपर से उसकी आवाज में स्वाभाविक शिष्टाचार की ही झलक थी!

"वे जंगल में जाड़े के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करने गये हैं—" उसने कहा—"शीघ्र ही वे दोपहर का खाना खाने लौटेंगे। तुम क्या भीतर नहीं आओगे?"

वह सीढ़ियाँ चढ़कर उसके निकट आ पहुँचा। "तब मैं उनका इंतज़ार करूँगा—" उसने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

"मैंने अंगीठी पर काफी चढ़ा रखी है—" वह बोली और क्रैफोर्ड के और करीब आने के पहले ही घूम पड़ी, यद्यपि वह स्वयं भी नहीं जानती थी कि वह उसके निकट आने से क्यों डर रही थी। "क्या तुम रसोईघर में नहीं आओगे?"

वह उसके पीछे-पीछे मकान के भीतरी हिस्से में चलता रहा। उसे ताज्जुब हो रहा था, औरतें कैसे ऐसा कर लेती हैं? वे हमेशा ऐसी शांत और मन की तरंगों से अछूती नजर आती हैं, जैसा कोई पुरुष नहीं कर सकता। आर्लिस की तरह ही—शांत और मित्रवत्, जब कि परस्पर अभिनंदन और बातचीत की गम्भीरता में उसे अपने चेहरे और अपनी आवाज़ के साथ जबर्दस्ती करनी पड़ी थी! शुरू से ही उसकी इच्छा हो रही थी कि वह आर्लिस को अपनी बाँहों के घेरे में लेकर अपने से चिपका ले। हो सकता है, पिछली रात उसकी नज़र में कोई महत्व नहीं रखती हो। हो सकता है, वह अब तक सब अपने दिमाग से निकाल चुकी हो और दूसरी रातों के समान ही पिछली रात भी उसके लिए सुखद रही हो और बस!

रसोईघर का दरवाजा खोलकर वह भीतर घुसी। क्रैफोर्ड उसके पीछे-पीछे ही था। कौनी मेज के निकट बैठी काफी पी रही थी। उसके सामने एक जूठी तश्तरी पड़ी थी, जिसमें बिस्कुट के टुकड़े और अंडे का बचा हुआ हिस्सा रखा था।

"गुड मार्निंग (शुभ प्रभात) मि. गेट्स!" उसने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"गुड मॉर्निंग, मिसेज डनबार!" वह बोला।

"ओह! मुझे मिसेज डनबार मत पुकारिये—" उसने कहा—"मुझे कौनी कहिये।" उसने उसकी ओर परखती नज़रों से देखा—हिम्मत के साथ और वह सिर फेर कर खड़ी हो गयी। "मैं निपट चुकी, आर्लिस! क्या मेरे लिए यहाँ कोई काम है?"

"नहीं—" आर्लिस ने कहा—"क्या तुम एक कप कॉफी और नहीं पीओगी? मि. गेट्स जब तक पापा का इंतज़ार कर रहे हैं, हम लोग बैठकर कॉफी ही पी लें!"

"मैं बहुत पी चुकी!" कौनी ने कहा। वह कमरे के बाहर चली गयी। अपनी ढीली-ढाली पोशाक के ऊपर उसने घर में पहना जाने वाला लम्बा कोट पहन रखा था। उजले रंग के कोट पर गुलाब के फूल बने थे और वह नंगे पैर थी। उसे शायद यह ज्ञात भी नहीं था कि क्रैफोर्ड उसे देख रहा है या उसे इसकी कतई चिंता नहीं थी।

"बैठो न—" आर्लिस ने क्रैफोर्ड से कहा—"मैं कॉफी गर्म करती हूँ।"

रगड़ कर साफ की गयी उस खाली मेज पर से उसने जल्दी से वह जूठी तश्तरी और प्याली उठा ली और उसे तश्तरियाँ धोने वाले बरतन में डाल दिया। फिर वह अंगीठी के पास पहुँची। उसने आग को कुरेदकर उस पर कॉफी का बरतन रख दिया और क्रैफोर्ड बैठा उसे देखता रहा। वह साफ प्याले और थोड़ी मलाई ले आयी। फिर उसने चीनी रखने के एक बहुत ही पुराने और जीर्ण चाँदी के बरतन में चीनी डाली। उसने यह बरतन माँस रखने की आलमारी के ऊपरी खाने से उतारा था। क्रैफोर्ड समझ गया कि चाँदी का यह बरतन प्रति दिन काम में नहीं लाया जाता।

कॉफी जब तक गर्म नहीं हो गयी और प्यालों में ढाल नहीं दी गयी, वह अंगीठी के पास व्यस्त रही, उसके साथ बैठी नहीं। और तब, वह जब चम्मच से अपने प्याले में चीनी मिला रहा था, वह उसके सामने वाली जगह में बैठ गयी। उस बड़ी गोल मेज के उस ओर, वह अभी भी उससे काफी दूर थी।

"चीनी?" क्रैफोर्ड ने हँसते हुए पूछा और बर्तन उसकी ओर खिसका दिया। आर्लिस ने अपना सिर हिलाया—"मैं बिना चीनी के ही पीती हूँ, धन्यवाद!"

उन दोनों के बीच जो रुखाई और नीरसता थी, उसे महसूस करते हुए क्रैफोर्ड ने अपने प्याले से एक घूँट कॉफी पी। "यह पहला मौका है, जब

हम अकेले में बातें कर रहे हैं—" उसने सोचा—"और न हमारे बीच यहाँ संगीत है, न नाच और न ही रात की चाँदनी !"

"पिछली रात—" उसने पूछा—"क्या तुम्हें आनंद आया ?"

तब वह लजा गयी और क्रैफोर्ड को वह अच्छा लगा। "हाँ!" वह बोली—"हाँ, समय काफी अच्छी तरह बीता कल रात !"

क्रैफोर्ड ने उस पर दबाव डाला—"मुझे उम्मीद है, तुमने मेरी हरकत का बुरा नहीं माना होगा...मेरा मतलब है, अंत में वहाँ..."

"नहीं—" उसने साँस खींची—"ऐसी कोई बात नहीं, मेरा मतलब

"मैं स्वयं नहीं जानता था कि मैं वैसा करूँगा- -" क्रैफोर्ड ने कहा—"और तब अचानक ही मैं......"

आर्लिस उसकी ओर नहीं देख रही थी। "कोई बात नहीं—" वह बोली—"मैंने बुरा नहीं माना उसका......"

वह आगे की ओर झुक आया। "आर्लिस!" वह बोला—"और लोग यहाँ आ जायें, उसके पहले ही मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था...मेरा मतलब है, मैं शनिवार को शहर सिनेमा देखने जा रहा हू। तुम मेरे साथ चलोगी ?"

वह बिलकुल स्थिर बैठी रही। "यह सच है—" वह सोच रही थी—"तो रात सचमुच ही सारी घटना घटी थी और वह मेरी कोरी कल्पना नहीं थी। मेरी इच्छा इतनी प्रबल थी इसके लिए कि मैंने सोचा, कहीं मैंने यों ही कल्पना में तो नहीं गढ़ ली सारी बात...।"

"हाँ!" वह बोली—"मैं तुम्हारे साथ जाना पसंद करूँगी।"

बरामदे के जालीदार दरवाजे के निकट एक आवाज हुई और दोनों तत्काल ही घूम पड़े। हैटी उन्हें विस्फारित नेत्रों से देख रही थी। वह कुछ सोचती हुई कमरे के अंदर आने लगी, फिर अचानक घूम पड़ी और भागी। पिछले बरामदे में तेजी से दौड़ते हुए उसके पैरों की आवाज़ उन्हें सुनायी दी और दोनों ही हँस पड़े।

"वह हैटी है—" आर्लिस बोली—"मेरा खयाल है, तुमने उसे बुरी तरह डरा दिया है। बात यह है कि तुम्हारे यहाँ होने की उसने उम्मीद नहीं की थी।"

क्रैफोर्ड हँस पड़ा—"मैं नहीं जानता था कि छोटे बच्चे मुझसे डर जाया करते हैं।"

"ओह!" आर्लिस ने कहा—"तुम कभी नहीं जान सकते कि हैटी अब क्या करने वाली है। हो सकता है, दूसरी बार वह आये और सीधी तुम्हारी गोद में बैठ जाये। एक प्याली कॉफी और दूँ तुम्हें?"

"हाँ!" उसने अपनी प्याली ऊपर उठाते हुए कहा। वह उसके निकट आ कर खड़ी हो गयी और उसके प्याले में कॉफी डालने लगी। वह उसे फिर छूना चाहता था; लेकिन अभी भी उसे डर लग रहा था।

"तुम हम लोगों के साथ खाना खाओगे न?" फिर से अपनी जगह पर बैठती हुई वह बोली।

उसने खेदपूर्ण ढंग से अपना सिर हिलाया—"मुझे डर है कि मैं खाना नहीं खा सकूँगा। आज मुझे बहुत काम करना है। बहुत-से लोगों से मिलना है।"

आर्लिस के कपाल पर सिकुड़नें पड़ गयीं—"टी. वी. ए. के लिए जमीन खरीदने के सिलसिले में?"

"हाँ!" वह उसे गौर से देखता हुआ बोला—"जमीन खरीदने के लिए!"

"पापा से भी क्या तुम इसीलिए मिल रहे हो?"

"नहीं, आज इसलिए नहीं—" उसने कहा—"मैं सिर्फ कागजात तैयार कर लेना चाहता हूँ, कुल कितनी एकड़ जमीन है उनकी, यही जानना चाहता हूँ और बस!" वह मुस्कराया—"मैं आज तुम्हारे डैडी से झगड़ने वाला नहीं हूँ। मुझे आशा है, उनसे झगड़ने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी कभी।"

आर्लिस ने रसोईघर के चारों ओर देखा। "मेरे विचार से तुम्हें यह तो मालूम ही है कि मैं भी उनके ही पक्ष में हूँ।" वह बोली—"जब से मैं पैदा हुई हूँ, यहीं रहती आयी हूँ और मैं..."

वह मेज पर झुक गया। "इस ओर, उस ओर का सवाल ही नहीं है—" वह बोला—"ऐसी बात कभी सोचना भी नहीं, आर्लिस! मैं..."

वह रुक गया। पिछवाड़े में लोगों की आवाज़ सुनायी देने लगी थी। मैथ्यू के रसोईघर में घुसते ही वह उठकर खड़ा हो गया। अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए मैथ्यू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"क्यों, कैसे हो?" उसने कहा—"तुमसे मिलने की मैंने आशा नहीं की थी। पिछली रात नाच कैसा रहा?"

"अच्छा था—" क्रैफोर्ड ने कहा—"काफी अच्छा था, मि. डनबार! आपकी तबीयत कैसी है आज?"

"अभी तो मैं बिलकुल गर्माया और थका हुआ हूँ—" मैथ्यू बोला। उसने आर्लिस की ओर देखा—"तुमने मेरा खाना तैयार कर दिया, बेटी?"

"गर्म होने के लिए रखा है, अभी—" आर्लिस ने कहा—"जब तक आप मेज के निकट चलकर बैठेंगे, खाना भी मेज पर होगा!"

"सुंदर!" मैथ्यू ने कहा—"आओ, क्रैफोर्ड! हाथ-मुँह धो लो और साथ ही खाने पर बैठ जाओ।"

"मैं पहले ही एक बार इनसे पूछ चुकी हूँ—" आर्लिस बोली—"इन्होंने कहा, आज इनके पास समय नहीं है। यह सिर्फ आपसे क्षणभर के लिए मिलने आये हैं।"

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर देखा। "खाली पेट किसीसे बात करने का मेरा इरादा नहीं है—" वह बोला—"तुम्हें कहीं-न-कहीं, किसी वक्त, किसी प्रकार खाना है ही और भगवान की दया से हमारे पास खाने के लिए काफी है। आओ अब और हाथ-मुँह धो डालो।"

क्रैफोर्ड हिचकिचाया। "अच्छी बात है—" उसने कहा—"मैं आपका आभारी हूँ।"

पिछले बरामदे से होकर वह मैथ्यू के पीछे-पीछे बाहर आँगन में पहुँच गया। सभी लड़के कुएँ के इर्द-गिर्द जमा थे और मुँह-हाथ धोने के लिए पानी निकाल रहे थे। सभी ने उससे दोस्ताना लहजे में बात की। नाक्स ने एक बाल्टी पानी भरा और उसे उठाकर, दीवार से लगी हाथ-पैर धोने के लिए बनी बेंच तक ले गया और तीन बरतनों को पानी से भर दिया। फिर उसने क्रैफोर्ड और मैथ्यू को संकेत किया।

अगल-बगल खड़े होकर दोनों ने पैर-हाथ धोये। मैथ्यू पानी से भरे बरतन पर झुका हुआ था और अपने चेहरे, बाँहों तथा हाथों पर इतमीनान से पानी उड़ेल रहा था। उसने नाक साफ की और गरारे किये। ठंडे पानी से इस तरह मुँह-हाथ साफ करने में उसे आनंद आ रहा था। फिर उसने कील से टँगे तौलिये को ले लिया। क्रैफोर्ड ने दूसरा तौलिया लिया और दूसरे लोगों को रास्ता देने के लिए वे एक किनारे हट गये।

"किसलिए तुम मुझसे मिलना चाहते थे?" मैथ्यू ने पैनी निगाहों से क्रैफोर्ड की ओर देखते हुए कहा—"अगर तुम खरीदने और बेचने के सम्बंध में बातें करना चाहते हो..."

"नहीं!" क्रैफोर्ड ने सावधानी से कहा—"अगर आपको आपत्ति नहीं

"ओह!" आर्लिस ने कहा—"तुम कभी नहीं जान सकते कि हैटी अब क्या करने वाली है। हो सकता है, दूसरी बार वह आये और सीधी तुम्हारी गोद में बैठ जाये। एक प्याली कॉफी और दूँ तुम्हें?"

"हाँ!" उसने अपनी प्याली ऊपर उठाते हुए कहा। वह उसके निकट आ कर खड़ी हो गयी और उसके प्याले में कॉफी डालने लगी। वह उसे फिर छूना चाहता था; लेकिन अभी भी उसे डर लग रहा था।

"तुम हम लोगों के साथ खाना खाओगे न?" फिर से अपनी जगह पर बैठती हुई वह बोली।

उसने खेदपूर्ण ढंग से अपना सिर हिलाया—"मुझे डर है कि मैं खाना नहीं खा सकूँगा। आज मुझे बहुत काम करना है। बहुत-से लोगों से मिलना है।"

आर्लिस के कपाल पर सिकुड़नें पड़ गयीं—"टी. वी. ए. के लिए जमीन खरीदने के सिलसिले में?"

"हाँ!" वह उसे गौर से देखता हुआ बोला—"जमीन खरीदने के लिए!"

"पापा से भी क्या तुम इसीलिए मिल रहे हो?"

"नहीं, आज इसलिए नहीं—" उसने कहा—"मैं सिर्फ कागजात तैयार कर लेना चाहता हूँ, कुल कितनी एकड़ जमीन है उनकी, यही जानना चाहता हूँ और बस!" वह मुस्कराया—"मैं आज तुम्हारे डैडी से झगड़ने वाला नहीं हूँ। मुझे आशा है, उनसे झगड़ने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी कभी।"

आर्लिस ने रसोईघर के चारों ओर देखा। "मेरे विचार से तुम्हें यह तो मालूम ही है कि मैं भी उनके ही पक्ष में हूँ।" वह बोली—"जब से मैं पैदा हुई हूँ, यहीं रहती आयी हूँ और मैं..."

वह मेज पर झुक गया। "इस ओर, उस ओर का सवाल ही नहीं है—" वह बोला—"ऐसी बात कभी सोचना भी नहीं, आर्लिस! मैं..."

वह रुक गया। पिछवाड़े में लोगों की आवाज़ सुनायी देने लगी थी। मैथ्यू के रसोईघर में घुसते ही वह उठकर खड़ा हो गया। अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए मैथ्यू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"क्यों, कैसे हो?" उसने कहा—"तुमसे मिलने की मैंने आशा नहीं की थी। पिछली रात नाच कैसा रहा?"

"अच्छा था—" क्रैफोर्ड ने कहा—"काफी अच्छा था, मि. डनबार! आपकी तबीयत कैसी है आज?"

"अभी तो मैं बिलकुल गर्माया और थका हुआ हूँ—" मैथ्यू बोला। उसने आलिस की ओर देखा—"तुमने मेरा खाना तैयार कर दिया, बेटी?"

"गर्म होने के लिए रखा है, अभी—" आलिस ने कहा—"जब तक आप मेज के निकट चलकर बैठेंगे, खाना भी मेज पर होगा!"

"सुंदर!" मैथ्यू ने कहा—"आओ, क्रैफोर्ड! हाथ-मुँह धो लो और साथ ही खाने पर बैठ जाओ।"

"मैं पहले ही एक बार इनसे पूछ चुकी हूँ—" आलिस बोली—"इन्होंने कहा, आज इनके पास समय नहीं है। यह सिर्फ आपसे क्षणभर के लिए मिलने आये हैं।"

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर देखा। "खाली पेट किसीसे बात करने का मेरा इरादा नहीं है—" वह बोला—"तुम्हें कहीं-न-कहीं, किसी वक्त, किसी प्रकार खाना है ही और भगवान की दया से हमारे पास खाने के लिए काफी है। आओ अब और हाथ-मुँह धो डालो।"

क्रैफोर्ड हिचकिचाया। "अच्छी बात है—" उसने कहा—"मैं आपका आभारी हूँ।"

पिछले बरामदे से होकर वह मैथ्यू के पीछे-पीछे बाहर आँगन में पहुँच गया। सभी लड़के कुएँ के इर्द-गिर्द जमा थे और मुँह-हाथ धोने के लिए पानी निकाल रहे थे। सभी ने उससे दोस्ताना लहजे में बात की। नाक्स ने एक बाल्टी पानी भरा और उसे उठाकर, दीवार से लगी हाथ-पैर धोने के लिए बनी बेंच तक ले गया और तीन बरतनों को पानी से भर दिया। फिर उसने क्रैफोर्ड और मैथ्यू को संकेत किया।

अगल-बगल खड़े होकर दोनों ने पैर-हाथ धोये। मैथ्यू पानी से भरे बरतन पर झुका हुआ था और अपने चेहरे, बाँहों तथा हाथों पर इतमीनान से पानी उड़ेल रहा था। उसने नाक साफ की और गरारे किये। ठंडे पानी से इस तरह मुँह-हाथ साफ करने में उसे आनंद आ रहा था। फिर उसने कील से टँगे तौलिये को ले लिया। क्रैफोर्ड ने दूसरा तौलिया लिया और दूसरे लोगों को रास्ता देने के लिए वे एक किनारे हट गये।

"किसलिए तुम मुझसे मिलना चाहते थे?" मैथ्यू ने पैनी निगाहों से क्रैफोर्ड की ओर देखते हुए कहा—"अगर तुम खरीदने और बेचने के सम्बंध में बातें करना चाहते हो..."

"नहीं!" क्रैफोर्ड ने सावधानी से कहा—"अगर आपको आपत्ति नहीं

हो, तो मैं आपके साथ आपकी जमीन तक चलना चाहता हूँ। हमारे पास आपकी जमीन की पैमाइश के लिए हवाई जहाज से लिये गये फोटो हैं। आप मुझे इतना बता दीजिये कि आपकी जमीन की सीमा-रेखाएँ नक्शे में कहाँ पड़ेंगी। फिर हम कितनी एकड़ जमीन है कुल और इसी प्रकार की अन्य बातों का पता लगा लेंगे। उन्हीं के आधार पर हम आपको उसकी कोई कीमत बता सकते हैं।"

"मुझे किसी कीमत की जरूरत नहीं है—" मैथ्यू ने दृढ़ता से कहा—"अतः मेरी समझ से तुम्हें यह परेशानियाँ उठाने की कोई जरूरत नहीं है।"

लड़के उधर ही देख रहे थे। अपने दिमाग से उनके विचार को जबरन हटाता हुआ क्रैफोर्ड घूम पड़ा। उसे अपनी बात रखनी ही होगी अब—बिलकुल ही रखनी होगी।

"यह एक ऐसा काम है, जो मुझे करना ही है—" उसने मैथ्यू से कहा। वह अनिच्छापूर्वक मुस्कराया—"वे मुझे कहते हैं कि जाओ और अमुक जमीन नापकर आओ। मुझे जाकर वह जमीन नापनी पड़ती ही है। मैं जानता हूँ, अगर मैं आँकड़े-भर प्राप्त कर उन्हें दे दूँ, तो आपको आपत्ति नहीं होगी। आपने हमारी कोई बात मान ली, इससे इसका आभास तो नहीं मिलता। किसी भी चीज के लिए आपके राजी होने की बात ही नहीं उठती इसमें। यह तो सिर्फ मुझे अपना काम पूरा करने में मेरी मदद करना है।"

मैथ्यू क्षणभर तक इस पर सोचता रहा। "अच्छी बात है—" अंततः उसने कहा—"मैं नहीं चाहता कि तुम अपने अधिकारियों को रुष्ट कर लो। अगर तुमने तय कर लिया है, तो अब से लेकर प्रलय के दिन तक तुम मेरी जमीन नापते रह सकते हो।" वह क्षीण मुस्कान मुस्कराया—"कम-से-कम उसे खरीदने में तुम्हें इतना ही समय देना पड़ेगा, मि. गेट्स!"

क्रैफोर्ड मुस्कराया। उसने अनुभव किया कि उसके और मैथ्यू के बीच अब समझौता हो रहा है। "हम वहाँ जायेंगे—" उसने कहा—"खाना खा लेने के बाद!"

मैथ्यू लड़कों की ओर घूमकर मुस्कराया। "नहीं कहा जा सकता कि इस बिचारे को अभी कितनी बार यहाँ आकर इस घाटी की माप-जोख करनी होगी—" वह बोला—"जब तक कि वह आर्लिस से मिलने के लिए दूसरा बहाना नहीं खोज लेता है।"

लड़के मैथ्यू के साथ हँस पड़े। क्रैफोर्ड लजीली मुस्कान मुस्कराया—

"आपका अनुमान सही हो सकता है, मि. डनबार! किंतु इसे टी. वी. ए. वालों से नहीं कहेंगे दया कर!"

मैथ्यू ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया। "अच्छी बात है, बेटे!" उसने कहा—"चलो, हम चलकर खा लें पहले, नहीं तो खाना ठंडा हो जायेगा।"

तीनों लड़कों ने एक साथ हल्ला मचाते हुए घर में प्रवेश किया। मैथ्यू और क्रैफोर्ड उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। पिछले बरामदे में जैसे ही उन्हें क्षण भर का एकान्त मिला, क्रैफोर्ड ने जल्दी से अपनी बात कह दी—"मि. मैथ्यू, शनिवार की रात को मैं शहर सिनेमा देखने जा रहा हूँ। मैंने आर्लिस से अपने साथ चलने को कहा है। मुझे उम्मीद है, आपको इसमें एतराज नहीं होगा।"

मैथ्यू ने उसके चेहरे की ओर देखा, उसकी आँखें चमक रही थीं। "जब तक उसे यह पसंद है, मुझे एतराज नहीं हो सकता—" उसने कहा। वह ठिठका— "निश्चय ही, मुझे उम्मीद है, तुम्हारे इरादे अच्छे हैं। मैं बस, इसकी उम्मीद-भर करता हूँ, क्रैफोर्ड! आर्लिस सदा से एक घरेलू लड़की रही है और वह......"

क्रैफोर्ड मुस्कराया। "अगर आप मुझ पर विश्वास नहीं कर सकते—" वह बोला—"तो आप आर्लिस पर तो भरोसा कर सकते हैं।"

मैथ्यू ने अपना सिर हिलाया—"हाँ, हाँ! तुम ठीक कहते हो!"

आर्लिस अंगीठी और मेज के बीच आ-जा रही थी। वह मेज पर खाना सजा रही थी। मैथ्यू और क्रैफोर्ड जब उस कमरे में आये, तो नाक्स, जेसे जान और राइस अपनी-अपनी जगह पर बैठ चुके थे। मैथ्यू मेज की एक ओर बैठा और क्रैफोर्ड को उसने अपनी बगल में बैठने का संकेत किया। फिर उसने चारों ओर नजर दौड़ायी और उसके चेहरे पर सिकुड़नें उभर आयीं।

"कौनी और हैटी कहाँ हैं?" उसने आर्लिस से पूछा।

"कौनी ने अभी थोड़ी देर पहले ही नाश्ता किया है—" आर्लिस बोली— "मेरी समझ से वह दोपहर का खाना नहीं खायेगी। मैं जाकर हैटी को बुला लेती हूँ।"

मैथ्यू ने जेसे जान की ओर देखा—"जा कर कौनी से कहो कि खाना मेज पर रख दिया गया है। पूछो उससे कि वह खाना खायेगी?"

"जी अच्छा!" जेसे जान बोला और वह उठकर कमरे के बाहर चला गया।

आर्लिस पिछवाड़े के बरामदे में गयी। "हैटी!" उसने पुकारा—खाना मेज पर रख दिया गया है।"

वह सुनती रही; लेकिन जवाब में सिर्फ खामोशी ही मिली। उसने इस बार जोर से पुकारा—"हैटी!"

तब उसे खलिहान में हैटी की सूरत दिखायी पड़ी। "मुझे नहीं खाना है—" हैटी ने कहा। फिर वह बड़ी तत्परता से वहाँ से गायब हो गयी।

आर्लिस तेजी से चलती हुई पिछवाड़े से होकर खलिहान में पहुँची। "यहाँ आओ तुम!" उसने झिड़की के स्वर में कहा—"क्या मतलब है इसका—इस तरह खाने से दूर भागना!"

उसने आगे बढ़कर कुटीर का दरवाज़ा खोल दिया। हैटी अनाज के ढेर पर बैठी थी और उसके दोनों हाथ उसकी गोद में थे। "आखिर तुम्हारा मतलब क्या है?" आर्लिस ने कहा—"चलो, आओ भी!"

हैटी अविचलित भाव से बैठी रही। "मुझे भूख नहीं लगी है—" उसने कहा।

आर्लिस ने गौर से उसे देखा। "लेकिन क्यों?" वह बोली—"जब से तुम्हारा जन्म हुआ है, मैंने तुम्हें यों खाना छोड़ते एक दिन भी नहीं देखा है। आओ यहाँ, आ जाओ अब।"

हैटी नहीं हिली। "मुझे भूख नहीं लगी है, धन्यवाद!" उसने कुछ गर्व से कहा—"तुम लोग जाओ और मेरे बिना ही खाना शुरू कर दो।"

आर्लिस को अब क्रोध आने लगा था; लेकिन उसने स्वयं को रोका। "सुनो—" वह बोली—"क्या तुम उसके कारण......"

हैटी उससे कहीं दूर देख रही थी। उसके चेहरे पर दुःख की छाया थी। "वे कह सकते हैं—" उसने कहा—"वे कह सकते हैं और मैं यहीं इस खलिहान-कुटीर में रहने जा रही हूँ, जब तक यह खत्म नहीं हो जाता है।" उसके तीक्ष्ण, छोटे चेहरे पर फिर हठ की छाप उभर आयी। "अगर तुम मुझे खिलाना चाहती हो, तो तुम एक तश्तरी में यहीं कुछ दे जाओ।"

आर्लिस उसके ऊपर झुकी। "वे नहीं कह सकते हैं—" उसने निश्चय के स्वर में कहा—"मैं तुमसे वादा करती हूँ, वे नहीं कह सकते हैं।"

हैटी ने अपना सिर हिलाया। "मैं यहीं रह रही हूँ—" उसने कहा—"मैं जानती हूँ, वे कह सकते है। मैं जानती हूँ यह!"

"तुम्हें एक छोटा-सा रहस्य बताती हूँ मैं—" आर्लिस ने कहा—"मर्द

कुछ नहीं कह सकते हैं। मर्दों के बारे में इस सत्य को हमेशा अपने दिमाग में रखना। वे किसी चीज के बारे में नहीं कह सकते हैं।"

हैटी की आँखों में अविश्वास की झलक थी। "मुझे भूख नहीं लगी है—" उसने बेलाग कह दिया—"अब यहाँ से जाओ और मुझे अकेली छोड़ दो।"

आर्लिस क्षणभर तक उसे देखती रही। हैटी के चेहरे पर जो हठ की छाप थी, उससे आर्लिस परिचित थी। वह घूम पड़ी। "अच्छी बात है—" उसने कहा। वह कुटीर के दरवाजे से बाहर निकल आयी और उसे बंद करने के पहले उसने पीछे घूम कर देखा। "मुझे पापा से कहना पड़ेगा कि तुम खाने के लिए वहाँ नहीं आना चाहती।"

"जाओ तुम और कह दो उन्हें।"

आर्लिस वहाँ से चल पड़ी, लेकिन हैटी ने उसे पुकार लिया। वह वापस आयी। हैटी ने अपना चेहरा तख्तों से सटा रखा था। एक दरार से उसकी काली-चमकीली आँखें ही सिर्फ दिखायी दे रही थीं।

"आर्लिस...जब वे पुनः जंगल में चले जायें, तब मुझे मकई की रोटी ला देना। ला दोगी न आर्लिस?"

"हाँ!" आर्लिस बोली—"मैं ला दूँगी। मैं तुम्हारे लिए उस पर मक्खन भी लगा दूँगी।"

"और जल्दी करो।" हैटी ने कहा—"मैं अभी भूख से मरी जा रही हूँ।"

जी-भर खाना खा कर नाक्स और राइस बरामदे में कुछ क्षण लेटने के लिए चले गये। फिर वे जंगल में वापस जानेवाले थे। जेसे जान आराम का यह समय बिताने कौनी के पास चला गया और क्रैफोर्ड तथा मैथ्यू, मैथ्यू की जमीन तक चलने के लिए तैयार हो गये। क्रैफोर्ड ने हवाई जहाज पर से बनाया गया नक्शा निकाला और उसे देखने लगा।

"मेरे लिए यह जानना आवश्यक होगा कि आपकी जमीन की सीमा-रेखाएँ कहाँ हैं—" उसने कहा—"यों इस सम्बंध में मेरा काफी अच्छा अनुमान है; लेकिन मुझे निश्चित रूप से जानना है।"

"इस नक्शे के रहते हुए मेरी समझ से हमारे वहाँ जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी—" मैथ्यू ने कहा। वह उसकी ओर उत्सुकता से देख रहा था। खेतों से गुजरनेवाली उस सड़क पर वे खड़े थे, जो नदी की ओर चली गयी थी और सूरज उनके सिर पर चमक रहा था।

"हवाई जहाज पर से तैयार किये गये इन नक्शों में से आपने कभी किसी बच्चे को देखा है?" क्रैफोर्ड ने पूछा। उसने नक्शा मैथ्यू की ओर बढ़ा दिया। "एक हवाई जहाज की मदद से वे इसे तैयार करते हैं। ऊपर आकाश में वे हवाई जहाज आगे-पीछे उड़ाते रहते हैं और कैमरा से तस्वीरें लेते हैं। तब वे उन तस्वीरों को एक साथ मिलाकर नकशा तैयार करते हैं।"

मैथ्यू ने बड़ी सावधानी से नक्शे को पकड़ा; मानो वह उसके रुखड़े हाथों में फट जायेगा। "मुझे इसके बारे में बताओ—" उसने प्रशंसात्मक स्वर में कहा—"मुझे वह दिन याद है, जब यहाँ हवाई जहाज उड़ रहा था। वह एक ओर से उड़ता हुआ निकल गया और दूसरी ओर से उड़ता हुआ वापस आया। मुझे ताज्जुब हुआ था कि वह कर क्या रहा है?"

क्रैफोर्ड ने नक्शे पर अपनी उँगली रखी। "यह रही वह जगह—" उसने कहा—"और हम इस नक्शे से यह पता लगा सकते हैं कि कितनी एकड़ जमीन है और इसी तरह की अन्य बातें। निश्चय ही, लकड़ी और रस्सी लेकर जमीन नापने के पुराने तरीके से यह तरीका बाजी मार ले जाता है।"

मैथ्यू ने नक्शा खोल कर दोनों हाथों से पकड़ लिया। "ये रहे हम—" उसने कहा और नक्शे पर अपनी उँगली रखी। वह खुश था। "मैं इसे तुरत पहचान गया, यद्यपि मैंने कभी हवाई जहाज से इसे नहीं देखा है।"

नक्शे के जिस ओर से मैथ्यू ने अपना हाथ हटा लिया था, क्रैफोर्ड ने वह हिस्सा अपने हाथ में ले लिया। नक्शे के ऊपर झुकते हुए उसने मैथ्यू की ओर देखा। इस प्रकार घाटी को अपने हाथों में पकड़ कर, उसकी ओर देखना, मैथ्यू को अजीब-सा लग रहा था। उसने अपनी उँगली से, नक्शे में नदी को चिह्नित करने वाली रेखा बता दी और जहाँ इमारतें बतायी गयी थीं, वहाँ भी हाथ रख दिया। बिलकुल यह वैसा ही था, जैसे आप स्वयं अपनी तस्वीर देख रहे हों—वही अजीब ढंग, आधी जानी-पहचानी चीजें और उनका आकर्षण!

वह झेंपता हुआ मुस्कराया। "अगर तुम्हारी आँखें काफी तेज हैं, तो देखो, मैं यहीं कहीं खड़ा हूँ—" उसने कहा—"है न मार्के की बात?"

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा—"आप वहीं हैं, इसमें कोई शक नहीं!"

"और हैटी!" मैथ्यू ने कहा—"वह सम्भवतः उस वक्त झुरमुट में नसवार की बोतलों से खेल रही थी। और जैसे जान, पापा और बाकी सभी—यहाँ तक कि खच्चर, गायें और मुर्गियाँ—सभी इस कागज में दिखायी देती हैं।"

"आप चलने के लिए तैयार हैं ?" क्रैफोर्ड ने पूछा।

मैथ्यू चौंक पड़ा। "निश्चय ही—" वह बोला—"यहाँ मैं व्यर्थ ही तुम्हारा समय बरबाद कर रहा हूँ।"

उसने नक्शा क्रैफोर्ड को वापस दे दिया ओर खेतों से होकर गुजरने वाली उस सड़क पर वे चल पड़े। सड़क नदी की ओर चली गयी थी। घर से दूर निकल कर क्रैफोर्ड ने घाटी के चारों ओर देखा।

"यह एक खूबसूरत जगह है, मि. डनबार!" उसने धीरे से कहा—"बहुत ही खूबसूरत जगह!"

"हाँ!" मैथ्यू ने कहा। उस धूप में वह एक-सी चाल से झपटता हुआ चल रहा था। वह हमेशा उसी प्रकार चलता था। कुछ धीमी और एक-सी गति के साथ। चलते समय वह सोचता चलता था। "हाँ, यह खूबसूरत है। इसकी खूबसूरती से खुद मेरी तबीयत कभी नहीं भरती।"

"मेरे डैडी (पिता) लड़की चीरने का एक कारखाना चलाते थे—" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं एक खेमे में बड़ा हुआ हूँ। मेरे पास अपनी कहने लायक ऐसी कोई जगह न थी।" उसने अपना सिर घुमाया—"इसे त्यागने की पीड़ा मैं अनुभव कर सकता हूँ, मि. डनबार! मैं अनुभव कर सकता हूँ।"

"मैं इसे छोड़ने का इरादा ही नहीं रखता—" मैथ्यू ने धीरे से कहा।

क्रैफोर्ड क्षणभर तक चुप रहा। वे पुल के निकट पहुँचे और वह रुक गया। उसने फिर नक्शा फैलाया और उसे देखने लगा। उसने कोरे कागजों का पैड निकाला और लिखने लगा। "यहाँ इन सब में आप कपास उगाते हैं—" उसने कहा और एक उँगली से संकेत किया..."ठीक है न?"

"हाँ!" मैथ्यू ने उसके कंधों पर से होकर देखते हुए कहा—"मैं जितनी कपास उगाता हूँ, वह यही है।"

क्रैफोर्ड पैड पर लिखने लगा। "आप नक्शे से ही यह कह सकते हैं कि कहाँ क्या उगाया जा रहा है—" उसने कहा—"लेकिन हम इसकी जाँच कर लेते हैं। हर तरह से हम इसकी जाँच करते हैं। और यह वह जगह है, जहाँ से मकई आरम्भ होती है।" उसने पैड को उलट कर उस पर कुछ हिसाब लगाया। "और इस ओर यहाँ आपकी सीमा-रेखा पड़ेगी—क्यों?"

नक्शे पर व्यस्त भाव से दौड़ती उसकी उँगली को मैथ्यू ने गौर से देखा। "हाँ—" वह बोला—"यों वहाँ थोड़ी जगह मेरी और है, जहाँ हम इमारती लकड़ियों के पेड़ लगाते हैं।" उसने संकेत किया—"वह जगह भी मेरी है।"

शीघ्रता से क्रैफोर्ड ने सीमा-रेखा बदल दी। "मैं नहीं जानता था कि आपकी जमीन उतनी दूर तक है—" उसने कहा और मुस्कराया—"वहाँ हम आपको ठगने का विचार कर रहे थे। हम उस जगह को गिरजाघर की सम्पत्ति समझ रहे थे।"

उसने नक्शा मोड़ लिया और वे चलने लगे। क्रैफोर्ड सूरज की तीखी गर्मी महसूस कर रहा था। उसकी उष्ण किरणें उसकी खाकी कमीज को भेदकर उस तक पहुँच रही थीं; लेकिन अभी पसीना बहना नहीं शुरू हुआ था।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि सारी बातें आपको बताने के लिए कहाँ से शुरू करूँ—" उसने कहा—"काश! कोई ऐसा रास्ता होता कि जिस तरह मैंने आपको यह नक्शा दिखाया, उसी तरह पूरी टी. वी. ए. दिखा देता। तब आप स्वयं देखते कि यह कितनी बड़ी है और कितना सही काम करती है तथा इसी प्रकार की और बातें! काश, मैं ऐसा कर सकता!"

"कोई जरूरत नहीं है—" मैथ्यू ने कहा।

"मैं चाहूँगा कि कभी आप मेरे साथ वहाँ चलते, जहाँ बाँध बन रहा है—" क्रैफोर्ड ने कहा—"हो सकता है..."

"मैं एक व्यस्त आदमी हूँ, मि. गेट्स!" मैथ्यू बोला—"साल के इस मौक्त घूमने फिरने में बरबाद करने के लिए मेरे पास समय नहीं है। हमें इस जमीन से चारा भी मिलता है। समझ गये तुम?"

क्रैफोर्ड रुक कर कोरे कागजों के उस पैड पर कुछ नोट करने लगा। "मैं बिलकुल इसकी बगल से गुजर चुका हूँ—" वह बोला—"कभी आप अपने घर में बिजली नहीं ला सके हैं—है न?"

'हाँ!" मैथ्यू ने कहा—"एक बार बिजली-कम्पनी ने इधर से लाइन निकालने की बात की थी; किंतु कभी कुछ नहीं हुआ। उसने कहा, यह बहुत खर्चीला है—लोग यहाँ दूर-दूर रहते हैं भी!"

"देखा आपने—" क्रैफोर्ड ने कहा—"जब टी. वी. ए. को अपने काम में सफलता मिल जायेगी, तो यहाँ सब जगह बिजली की लाइनें होंगी। लोग एक साथ मिल जायेंगे, सहकारी संस्थाएँ बनायेंगे और खुद बिजली लायेंगे। मुश्किल से ही कोई ऐसा खलिहान तब होगा, जहाँ बिजली नहीं रहेगी।"

"हाँ!" मैथ्यू ने कहा। उसकी आवाज़ में अभी भी झुँझलाहट या गर्मी नहीं आयी थी—"सिर्फ तुम्हारे कहने के मुताबिक मैं इसका उपयोग करने के लिए यहाँ नहीं रहूँगा"

खेतों से होकर गुजरने वाली उस सड़क पर क्रैफोर्ड रुक गया। "लेकिन दूसरों को इसे प्राप्त करने से रोकने के लिए तो आप कुछ नहीं करेंगे?" उसने दबाव डालते हुए कहा—"आप यह तो नहीं चाहेंगे कि अगल-बगल में जो दूसरे लोग रहते हैं, उन्हें बिजली नहीं मिले? प्रौक्टर, शेल्डन और प्रेसाइज-परिवारों तथा बाकी सभी लोगों के बारे में मैं कह रहा हूँ।"

"नहीं—" मैथ्यू ने धीरे से कहा—"मैं वैसा करना कभी नहीं चाहूँगा।" वह अपने नीचे की जमीन गौर से देखने लगा—"वे मेरे पड़ोसी हैं और हमारी हमेशा निभती रही है। किसी भी रूप में उन्हें नुकसान पहुँचाने वाला काम मैं नहीं करूँगा।"

"आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है—" क्रैफोर्ड ने छूटते ही कहा—"आपको सिर्फ इतना ही करना है कि आप अपनी जिद पर अड़े रहिये। और उस तरह आप पूरे गाँव को नुकसान पहुँचायेंगे और इसे प्रगति तथा विकास के रास्ते पर नहीं बढ़ने देंगे, जिसकी इसे जरूरत है।" वह आगे की ओर झुक आया—"सुनिये! किसी ने यहाँ के लिए कभी कुछ नहीं किया है। यह जगह बस योंही पड़ी है। सिर्फ कुछ लोग अपनी रोटी पाने के लिए खेत जोत लेते हैं। अब तक यह जमीन और नदी वैसी ही है, जैसी रेड इंडियनों के समय में थी। यही कारण है हमें अभी यहाँ परिवर्तन लाना है—एक साथ ही सब—जब तक कि हम ऐसा कर सकते हैं। बढ़ते हुए जमाने का साथ पकड़ने के लिए हमें जल्दी करनी है।"

क्रैफोर्ड के चेहरे की ओर देखने के लिए मैथ्यू ने अपनी आँखें ऊपर उठायीं। "मेरे विचार से हम आगे बढ़ें, तो अच्छा है—" उसने कहा—"अधिक देर होने के पहले ही मुझे लकड़ी काटने के अपने काम पर लौटना है।"

उसने सड़क पर नीचे की ओर चलना आरम्भ कर दिया। उसका साथ देने के लिए क्रैफोर्ड को तेज चलना पड़ा। "पत्थर की दीवार के समान ही है यह—" उसने सोचा। वह अपने भीतर निराशाजन्य क्रोध को उभरते हुए अनुभव कर रहा था। उसने उसे दबा दिया और आगे बढ़ कर मैथ्यू के साथ हो लिया।

"मि. डनबार!" उसने कहा—"आपको कभी मलेरिया हुआ था? बताइये मुझे।"

"हाँ!" मैथ्यू ने कहा—"एक या दो बार मुझे जोरों का जाड़ा देकर बुखार हुआ है। मेरे खयाल से ज्यादातर आदमियों को हो चुका है।"

"आपने कभी इसकी उम्मीद की थी?" क्रैफोर्ड ने पूछा—"आप क्या अपने परिवार के लोगों के मलेरिया-पीड़ित होने की बात सोचते हैं? क्या आपने सोचा है कि इसके सम्बंध में कुछ भी नहीं किया जा सकता?"

मैथ्यू की भौंहें सिकुड़ गयीं। वह इस लड़के को—क्रैफोर्ड को—पसंद करता था। उसके बात करने का तरीका उसे पसंद था—इतना ईमानदार, जोश-भरा और कार्य के प्रति सचेत और उसे देखते समय आर्लिस की आँखों में जो भाव रहता था, वह भी उसे पसंद था। लेकिन वह (क्रैफोर्ड) स्वयं किसी मच्छर के समान ही था—भनभनाना, बातें करना और एक आदमी को तंग करना, जब कि उस आदमी के दिमाग में कहीं अधिक जरूरी बातें घर किये होती हैं।

"मेरे खयाल से मैंने कभी इस बारे में सोचा भी नहीं—" उसने कहा—"मुझे जाड़ा देकर बुखार आया और मैंने उससे मुक्ति पाने के लिए कुनैन खा ली। मुझे बिलकुल ही याद नहीं आता कि मैंने इस सम्बंध में कभी कुछ सोचा भी हो।"

"देखा आपने?" क्रैफोर्ड ने कहा—"आपको यह विश्वास ही नहीं था कि इस सम्बंध में कुछ किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए भी रास्ता है। टी. वी. ए. इस इलाके से मलेरिया दूर कर देनेवाली है। सिर्फ बिजली ही नहीं मिलेगी; नदी में नावें चल सकेंगी और बाढ़ पर काबू पाया जा सकेगा। इतनी ही बात नहीं है, यद्यपि भगवान जानता है कि ये चीजें अपने में ही काफी हैं। पूरे इलाके का सवाल है। यहाँ आसपास ढलान की वे नालियाँ देखी हैं न आपने! आपके यहाँ वैसी नालियाँ नहीं हैं; क्योंकि आप भाग्यवान हैं। किंतु आपने उन्हें देखा तो है। टी. वी. ए. उनकी व्यवस्था भी करने जा रही है।"

मैथ्यू फिर रुक गया। उस धूल-भरी सड़क के ठीक बीच में वह खड़ा था और उत्सुकता से क्रैफोर्ड की ओर देख रहा था। "तुम तो इस टी. वी. ए. के बारे में ऐसा कह रहे हो, जैसे वह भगवान है—" उसने कहा—"मानो पृथ्वी पर इसी की सत्ता और नियंत्रण है।"

क्रैफोर्ड उस तपते सूरज के नीचे हाँफने लगा था। पसीना बहना अभी तक शुरू नहीं हुआ था और वह बेहद गर्मी महसूस कर रहा था। "एक बात मैं आपसे कहूँगा—" उसने कहा—"भगवान ने जितना कुछ किया है, उससे अधिक टी. वी. ए. इस इलाके के लिए करने वाली है।"

मैथ्यू फिर चलने लगा। "तुम यहाँ जमीन देखने आये हो या फिर मुझे उपदेश देने आये हो?" उसने कहा—"अगर तुम्हारा इरादा उपदेश देने

का था, तो वहाँ से चलने के पहले ही तुम्हें मुझसे कह देना चाहिए था।"

"मि. मैथ्यू......"

मैथ्यू कहता रहा, उसकी आवाज़ में कठोरता थी—"मैं तुमसे एक बात कहूँगा, बेटे! टी. वी. ए. मनुष्य का निर्माण है और जब तुम्हारे सामने किसी मनुष्य का निर्माण हो, तो उसके प्रति वफादार होने और उस पर विश्वास करने के पहले, तुम्हें उस सम्बंध में काफी अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर लेनी चाहिए। तुम भगवान पर भरोसा रख सकते हो; लेकिन मनुष्य-जाति...... उसने अपना सिर हिलाया—"बात ही दूसरी है।"

"आप कहते हैं, मैं आपको उपदेश दे रहा हूँ—" क्रैफोर्ड ने कहा—"मि. मैथ्यू, आप मेरे उपदेश देने की बात कहते रहें; लेकिन मुझे एक बात बताइये। सिर्फ एक बात और तब मैं खामोश हो जाऊँगा।" मैथ्यू के आगे आकर उसने उसे बढ़ने से रोक दिया। "अगर मैं आपको दिखला दूँ कि टी. वी. ए. कितनी बड़ी संस्था है, अगर मैं आपके दिल में यह यकीन दिला दूँ कि यह इस इलाके के लोगों के लिए कितनी महत्वपूर्ण है..." उसने रुक कर गहरी साँस ली—"अगर मैं यह सब कर सका, तो आप डनबार-घाटी बेचने को तैयार हो जायेंगे?"

मैथ्यू ने इस सम्बंध में सोचा। वह काफी देर तक इसके बारे में सोचता रहा। सूरज की प्रखर रोशनी से बचने के लिए उसने सिर झुका रखा था। है यह सोचने की बात, इसमें शक नहीं। क्रैफोर्ड ने जिस ढंग से यह बात सामने रखी है, उससे इनकार करने का अर्थ होगा, भगवान, बाइबिल और गिरजा की इच्छा और उसके काम के प्रति इनकार करना। और यद्यपि वह गिरजाघर में विश्वास नहीं करता था, मात्र उसके आनंद को पुनर्जीवित करने के लिए कुछेक मरतबा के सिवा वहाँ कभी गया नहीं था और यद्यपि उसने भगवान की जरूरत उस तरह नहीं महसूस की थी, जैसा कि कुछ लोग करते हैं; फिर भी उन सबके प्रति उसके मन में अभी भी आदर था। पर तब भी—टी. वी. ए. मनुष्य का निर्माण है। सो, ईश्वर के विरुद्ध जाने का जो भय क्रैफोर्ड उसके मन में उत्पन्न कर रहा था, वह निरर्थक था।

उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा। उसके होंठों पर हल्की मुस्कान खेल रही थी। "बेटे!" उसने कहा—"अगर तुम वह सब कर सके...अगर तुमने वह सब कर दिखाया...तो भी मैं डनबार घाटी नहीं बेचूँगा।"

क्रैफोर्ड के कंधे झुक गये। उसने अनिश्चित ढंग से अपने हाथ हिलाये।

उसकी आँखें अपने हाथों को देख रही थीं, जिससे उसे मैथ्यू की ओर नहीं देखना पड़े। वह उस पर बड़े वेग से 'सच' फेंक देना चाहता था और उसके भार से मैथ्यू को अपने इरादे से विमुख कर देना चाहता था। अपनी पसंद का यहाँ सवाल ही नहीं था। उसके (क्रैफोर्ड के) मुँह से मात्र एक शब्द और उसके कहते ही टी. वी. ए. वाले मैथ्यू के विरुद्ध सरकारी कार्रवाई आरम्भ कर देंगे। वहाँ अपने दफ्तर में बैठे, वे उस पर भरोसा कर रहे हैं कि वह इन लोगों को समझेगा, इनके बारे में सही जानकारी लायेगा। "सुनो!" उसने स्वयं से कहा—"मैं उसे अपने इरादे से नहीं हटा सकता। कानूनी कार्रवाई के सिवा उसे कोई अपनी जगह से नहीं हटाने जा रहा है और तब तुम्हें सम्भवतः उसे बलपूर्वक उठाकर यहाँ से ले जाना होगा। अतः अच्छा होगा कि तुम यही काम शुरू कर दो अब; क्योंकि इस तरीके से भी काफी समय लगने वाला है!"

लेकिन उसने इस विचार को दबा दिया। वह रास्ता आसान हो सकता है; लेकिन वह सही रास्ता नहीं था। अभी नहीं। हो सकता है, अंत में उसे ही अपनाना पड़े। किंतु पहले उसे हर दूसरे सम्भव तरीके से कोशिश कर लेनी होगी—सिर्फ टी. वी. ए. के लिए ही नहीं, बल्कि मैथ्यू के लिए भी। उसने मैथ्यू की ओर देखा। वह सोच रहा था, अगर उन्होंने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसकी जमीन ले ली, तो जीते-जी उससे उसका दिल निकाल लेने की तरह ही यह होगा। आर्लिस! उसने घबरा कर सोचा—सम्भव है, आर्लिस मैथ्यू के मन में विश्वास दिला सके। मैथ्यू उसे उतना ही प्यार करता है, जितना वह इस घाटी को प्यार करता है। हो सकता है वह...और तब अचानक ही वह जान गया कि यह भी सर्वथा असम्भव है। वह कभी अपने पिता से संघर्ष नहीं करेगी। किंतु कड़ा रास्ता अपनाने के पहले उसे हर तरीके को आजमाने की कोशिश करनी होगी—अगर उसे इसके लिए आर्लिस का उपयोग करना पड़ा, तो वह भी!

उसने मुस्कराने की चेष्टा की। "मैं समझता हूँ, मुझे अपना जवाब मिल गया—" उसने रंजीदा होकर कहा—"आइये, हम अपना काम खत्म कर लें। इस तरह मैं आपका बहुत ही ज्यादा समय ले रहा हूँ।"

मैथ्यू खड़ा उसे देख रहा था। क्रैफोर्ड के लिए उसे भी दुःख था। उसके चेहरे पर बदलते रहने वाले भाव तथा क्रोध और फिर वास्तविकता समझ लेने की भावना मैथ्यू ने उसके चेहरे पर बारी-बारी से आते-जाते देखा था।

"बेटे!" उसने कहा—"अगर तुम बातें करना चाहो, तो कर सकते हो। मैंने किसी फौलाद के फाटक की तरह अपना दिमाग अभी बंद नहीं कर लिया है। अतः अगर तुम्हें बातें करनी हैं, तो तुम बातें करते चलो!"

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कटुतापूर्वक सोचा—"आप कभी अपना दिमाग बंद मत कीजिये। आपको कभी ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।" उसने फिर नक्शे की ओर देखा। पहले उसे सब-कुछ धुँधला-धुँधला दिखायी दिया; फिर उसकी आँखों के सामने वह स्पष्ट हो उठा।

"वहाँ ऊपर, वह आपकी सीमा-रेखा है?" उसने उँगली से संकेत करते हुए पूछा।

"हाँ!" मैथ्यू ने कहा—"वह सीधी उस कोने तक चली गयी है और तब दाहिनी ओर मुड़ती हुई फिर घर तक वापस आ गयी है।" वह प्रशंसा-भरी नजरों से नक्शे को निहारता रहा—"अरे, इसमें तो तुम दिन के समान ही, विभाजित करने वाली उन रेखाओं को, स्पष्ट देख सकते हो!"

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा—"वे वहाँ ऊपर से दिखायी देती हैं। यही कारण है कि इन नक्शों का उपयोग इतना सरल है। और यहाँ चरी उपजाते हैं आप—है न? मेरे विचार से, मैंने पहले दिन ही देखा था।"

"हाँ!" मैथ्यू ने कहा—"छोआ के लिए मैं खुद ही चरी उगाना पसंद करता हूँ।" और वे साथ-साथ चलते रहे।

खलिहान में लौटकर आने के पहले, काम खत्म करने में उन्हें घंटा-भर और लग गया। वहाँ पहुँचकर क्रैफोर्ड रुक गया और जो-कुछ उसने लिखा था, उसे गौर से देखने लगा।

"मेरे अनुमान से बस, इतनी ही बात है—" उसने कहा और चारों ओर देखा—"इमारतें—आपका घर, मुर्गियों का दरबा, सूअरों के रहने की जगह, खलिहान, माँस-मछली रखने के लिए खास तौर पर बनाया गया घर और लकड़ी रखने का यह छप्पर! आपका मकान कितना पुराना है, मि. डनबार? कब बनाया गया था यह?"

"यह कहना मुश्किल है—" मैथ्यू ने हँसते हुए कहा—"अलग-अलग समय में यह बनाया गया है, जैसा तुम स्वयं देख सकते हो। मेरे खयाल से इसका सबसे पुराना हिस्सा लगभग सन् १८८० का बना है ..मेरे विचार से उसी वक्त लोगों ने पुराना लकड़ी का मकान तोड़ कर नया मकान बनाया था।"

वे चलकर सामने के आँगन में उस बड़े बलूत के साया में आ पहुँचे।

बाहरी बरामदे में पैर फैलाकर लेटे लड़कों की ओर मैथ्यू ने देखा। वे गहरी नींद में सोये हुए थे और उलटकर रखी गयी सीधी कुर्सियों पर उनके सिर टिके हुए थे। वे कुर्सियाँ मकान की दीवार से सटाकर खड़ी की गयी थीं।

"हे भगवान!" उसने जोर से कहा—"यहाँ सूरज डूबने को आया और तुम लोग अभी तक सो रहे हो!"

उसी क्षण नाक्स और राइस, दोनों एक साथ ही, नींद से जाग, उछल कर खड़े हो गये। भौंचक-सा उन्होंने चारों ओर देखा और मैथ्यू हँसने लगा।

"ठीक है, ठीक है।" उसने कहा—" हम लोगों ने अधिक समय नहीं खोया है। अभी दो से अधिक समय नहीं हुआ है।"

नाक्स ने अपनी उनींदी आँखों को अपने हाथ के पिछले हिस्से से रगड़ा। "मैंने सोचा, घर ही गिरा जा रहा है—" उसने कहा—"मैं समझता हूँ, पिछली रात मैं काफी देर तक बाहर रुक गया था।"

"तुम जानते ही हो कि मैं हमेशा क्या कहता रहा हूँ—" मैथ्यू ने कहा—"जब तक तुम चाहो, रात में, देर तक बाहर रह सकते हो। लेकिन मेरे इरादे के मुताबिक सुबह तुम्हें भी उसी वक्त काम पर जाना होगा, जब मैं जाता हूँ।"

राइस ने जूते पहनना शुरू कर दिया था—"आज शाम तक हमें वह पेड़ खतम कर देना चाहिए—" उसने कहा और नाक्स की ओर देखा—"बशर्ते नाक्स फिर मुझे अकेला ही काम करने के लिए नहीं छोड़ दे।"

"तुम्हें अकेला काम करने के लिए छोड़ देना!" नाक्स ने जोर से कहा—"विश्राम के लिए तुम्हीं रो रहे थे, बेटे! मैं नहीं।"

क्रैफोर्ड बरामदे के किनारे बैठा हुआ, कोरे कागजों के उस पैड के पीछे हिसाब लगा रहा था। अपना काम खतम कर उसने आँखें ऊपर उठायीं। "हमने आपकी जमीन के लगभग दो सौ पचास एकड़ होने का अनुमान लगाया था—" उसने कहा—"वह जंगल, जिसे हमने आपकी सम्पत्ति नहीं समझी थी, लगभग छब्बीस-सत्ताइस एकड़ होगा। उसे जोड़ देने पर आपकी कुल जमीन अनुमानतः दो सौ अस्सी एकड़ होती है।"

वे दिलचस्पी के साथ उसकी बात सुन रहे थे—खास कर मैथ्यू। कई बार उसने अपनी पूरी जमीन का चक्कर लगाया था; लेकिन उसके सामने पहले कभी यह हिसाब नहीं लगाया गया था कि कितनी एकड़ जमीन है।

"निश्चय ही—" क्रैफोर्ड ने कहा—"दफ्तर में हमें ठीक-ठीक पता लग जायेगा और मैं स्वयं इसकी कीमत लगा भी नहीं सकता—यह काम तो

जमीनों का समुचित मूल्य आँकने वाली समिति का है।" वह रुक गया और उसने अपने होंठ दबाये—"किंतु जितनी एकड़ जमीन आपकी है, उसे और अन्य विकासों को देखते हुए...मकान और खलिहान और बाकी सब चीजें... मेरा अनुमान है कि आपको इसके लिए बीस से पचीस हजार डालर के आसपास मिलेगा।"

"इतना ज्यादा?" मैथ्यू ने कहा। वह प्रभावित हो चुका था। उसने मकान और आसपास की जमीन को धीरे से आँख उठाकर देखा—"मैंने कभी अनुमान नहीं लगाया था कि इसका इतना मूल्य है! पचीस हजार डालर!"

"निश्चय ही—" क्रैफोर्ड ने जल्दी से कहा—"यह एक अनुमान ही है!"

राइस उत्तेजित हो बैठ गया। "हे भगवान, पापा!" उसने कहा—"हम यह पैसा लेकर एक डेरी फार्म (दुग्धालय) खोल सकते हैं।"

उसे देखने के लिए मैथ्यू धीरे से घूमा। राइस उठ खड़ा हुआ और बरामदे के किनारे तक चला आया। वह अपने हाथ घुमा रहा था।

"सुनिये, पापा!" उसने कहा—"शहर के निकट हमें कुछ अच्छी जमीन ले लेनी चाहिए, जहाँ काफी अच्छे चरागाह की सुविधा हो। हमें अच्छी नस्ल की कुछ गायें खरीद लेनी चाहिए—बढ़िया-से-बढ़िया नस्ल की गायें, जो हमें मिल सकें और उनके लिए एक बढ़िया खलिहान बना लेना चाहिए। क्यों..." उसने अपने हाथ घुमाये, उसकी आँखें चमक उठीं। "पापा, इतना अधिक रुपया...फिर हम दूध दूह सकते हैं, उसकी जाँच कर सकते हैं, बोतल में बंद कर सकते हैं और तब अपने ग्राहकों के पास पहुँचा दे सकते हैं। दूध के व्यवसाय में काफी पैसा मिलता है।"

मैथ्यू अविश्वास-भरी नज़रों से उसे घूरता रहा। "इसी के बारे में मैं सोचा करता था—" उसने सोचा—"इसी के ऊपर मैं भरोसा किये था—अगर नाक्स मेरे विपरीत चला जाता, तो मेरे मन के सुदूर कोने में यही समाया हुआ था!"

"दूध के इस व्यवसाय के बारे में तुम क्या जानते हो?" उसने पूछा।

"मैं काफी दिनों से इस पर विचार कर रहा था—" राइस ने कहा—"वह बड़ी आसान खेती है, पापा! कोड़ने-खोदने की जरूरत नहीं, रोपनी की झंझट नहीं...कुछ श्रम तो करना ही पड़ेगा; क्योंकि आपको अपना जीविकोपार्जन

तो करना ही है; लेकिन खेती की तरह श्रम नहीं करना पड़ेगा। खेती के समान यह बिलकुल ही नहीं है।"

मैथ्यू को लगा, जैसे उसका खून सर्द होता जा रहा है। "यह चीज उसके भीतर घर किये थी—" उसने सोचा—"और बाहर आने का इंतज़ार कर रही थी। लोगों द्वारा देखे जाने का इंतज़ार-भर बाकी था।" उसने अपना सिर घुमाया बहुत धीरे से और सावधानीपूर्वक। फिर उसने नाक्स की ओर देखा। वह बरामदे में बैठा अपने जूते पहन रहा था।

"तुम इसके बारे में क्या जानते हो?" मैथ्यू ने कहा—"क्या तुम..."

"ओह, यह उसका अपना विचार है—" नाक्स ने तटस्थता से कहा—"जब पहली बार इस घाटी के बेचने का जिक्र हुआ, तब से वह बराबर यही बातें करता रहा है।"

मैथ्यू ने पुनः राइस की ओर देखा। मैथ्यू की भेदती नजरों के सामने राइस का उत्साह ठंडा पड़ता जा रहा था और तब राइस ने अपना चेहरा घुमा लिया और वापस बरामदे में चला गया।

"हम लोगों को जंगल में चलकर, जलाने के लिए लकड़ियाँ काट लेनी चाहिए—" मैथ्यू ने भरे दिल से कहा—"नाक्स, जाओ और जेसे जान को चलने के लिए कहो। उसे जल्दी करने के लिए कहना। हम लोगों ने आधी शाम तो पहले ही गँवा दी है।" उसने मुड़कर क्रैफोर्ड की ओर देखा—"जो कुछ तुमको करना था, तुम कर चुके, मि. गेट्स? मुझे अपने काम पर वापस जाना है।"

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा। उसने मकान की ओर देखा—"मैं आलिस से मिलना चाहता था..."

"शनिवार की रात में तुम उससे मिल लोगे—" मैथ्यू ने कहा। जेसे जान और नाक्स मकान के भीतर से आ गये। जेसे जान अपनी वह भूरी कमीज पहन रहा था, जो वह काम करने के समय पहना करता था। मैथ्यू ने कहा—"विदा, मि. गेट्स! फिर आना।"

मैथ्यू लड़कों के आगे-आगे मकान की बगल से चलकर आँखों से ओझल हो गया और क्रैफोर्ड अकेला खड़ा, उन्हें जाते देखता रहा। आँखों से ओझल होती मैथ्यू की पीठ वह देख रहा था। वह नहीं समझ पा रहा था कि क्या हो गया और फिर भी वह आभास लगा रहा था—अच्छी तरह आभास लगा रहा था। वह अकेला आँगन में खड़ा रहा और उसके सामने मैथ्यू का बूढ़ा

पिता सामने के दरवाजे से रेंगते हुए बाहर निकला, बरामदे में चलकर आया और अंत की सीढ़ियों से नीचे उतर गया। क्रैफोर्ड उसे देखता रहा, जब तक कोने पर पहुँचकर वह भी गायब नहीं हो गया।

क्रैफोर्ड वहाँ से हटा और सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। "मैं उससे शनिवार को मिलूँगा—" उसने सोचा। "आलिस—" उसने पुकारा—"आलिस!" और उसे ढूँढ़ने के लिए वह मकान के भीतर चला गया।

दृश्य तीन

तीन-चार-नौ मील

वह बेनाम जगह थी, जहाँ नदी दक्षिण की ओर बढ़ती बढ़ती, उससे परे, फिर उत्तर की ओर मुड़ गयी थी। उसकी वह मोड़ काफी लम्बी थी और जब तक इंजीनियर नहीं आये, उसका कोई नाम नहीं रख गया था। उन्होंने पहले उसे 'तीन-चार-नौ मील' के नाम से पुकारा। यह नाम किसी उपयोगितावादी उपाधि के समान था, जो उनकी यथार्थप्रिय आत्मा के बिलकुल अनुकूल ही था। किंतु धीरे-धीरे, बड़ी सूक्ष्मतापूर्वक, उनकी योजनाओं के यथार्थ में बदलते ही, यह भी बदल गया। अब नदी के उस हिस्से के सम्बंध में बेनाम 'तीन सौ उनचास मील' फिर नहीं दुहराया गया। इसके बजाय इसका नाम चिकसा हो गया—विचार और यथार्थ दोनों में। यह अब बेनाम नहीं रह गयी थी, बल्कि संसार ने इसका नाम दे दिया था—इसका विश्लेषण किया था।

नदी यहाँ संकीर्ण हो गयी है। हजार फुट से थोड़ी अधिक चौड़ी होगी। हरे-ऊँचे देवदार के वृक्षों के बीच यह पतली होती चली गयी है। नदी ने अपने बहाव की दिशा बदलना—अपना स्थान परिवर्तित करना—प्रारम्भ कर दिया है। सामान्यतः दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ते बढ़ते चक्कर काटती हुई यह थोड़ा उत्तर की ओर बढ़ गयी है; सूरज जहाँ डूबता है, उससे थोड़ा उत्तर की ओर! उत्तर की बाढ़-सतह भी संकीर्ण है—नदी के उत्तर की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति के कारण ही ऐसा है। किंतु दक्षिण की बाढ़-सतह नदी के उस स्थान तक पहुँचने के पहले, काफी फैली हुई है, जहाँ पुराने चट्टानों की दीवार पाँच सौ फुट ऊँची पहाड़ी के रूप में खड़ी हो गयी है।

इस चिकसा बाँध के तीन हिस्से होंगे—एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक बँधे, और एक पुरानी-मजबूत चट्टान इसकी सतह का काम देगी। पहले, पहाड़ी जहाँ शुरू हुई है, वहाँ से लेकर नदी के किनारे तक की जमीन भर कर चौरस और बराबर की जायेगी। बाद में, नदी की सतह के विरुद्ध बड़े श्रम से तैयार

की गयी ठोस कंक्रीट की दीवार खड़ी की जायेगी और तब फिर दक्षिणी सतह के लम्बे वेगयुक्त और ऊबा देनेवाले बहाव के उस ओर की जमीन होगी—यहाँ से लेकर पहाड़ियों तक!

स्थायित्व की ओर तीव्र खिसकाव के बाद ट्रक, झाड़-झंखाड़ बराबर करने वाला ट्रैक्टर और भारी रोलर के द्वारा सतह-पर-सतह जमा कर, धीरे-धीरे, सावधानीपूर्वक, इस बाँध की ठोस नींव, उसी सूक्ष्मता से तैयार की जायेगी, जिस प्रकार एक औरत एक केक बनाती है। किंतु इसके बावजूद यह जमीन जमीन ही रहेगी, यह फिर बीज उगायेगी। किंतु नदी—उसकी बात दूसरी है। यहाँ पानी के उत्प्लावन दबाव के विरुद्ध बाँझ और ऊसर कंक्रीट की जरूरत है—अच्छे कंक्रीट की, जो लम्बे वर्षों के थपेड़े सहने के लिए बड़ी सावधानी और श्रम से बनायी गयी हो—परिवर्तशील मौसम, नदी के जल और समय—यहाँ तक कि नीचे पड़े स्वयं उस चट्टान के लिये स्मरणातीत दबाव को झेलने की जिसमें शक्ति हो और इन सब को ध्यान में रखते हुए जिसकी हर प्रकार से जाँच कर ली गयी हो!

कंक्रीट की इस दीवार के भीतर ही उसके बनने का कारण भी निहित होगा। उत्तरी किनारे से बिलकुल सट कर ही जहाजों का अबाध रूप से आना-जाना शुरू हो जायेगा। यह प्रथम प्रयास है; क्योंकि चिकसा के विकसित और प्रौढ़ होने तक भी वाणिज्य-व्यवसाय नहीं रुकेगा। चिकसा का साठ फुट चौड़ा और तीन सौ साठ फुट लम्बा हिस्सा सम्पूर्ण बाँध बनने के बहुत पहले ही तैयार हो जायेगा और काम भी करने लगेगा। इसकी एक ओर से जहाज प्रवेश करेंगे और दूसरी ओर जाकर यह उन्हें अपने उदर से निकाल देगा—छोटे-बड़े सभी तरह के जहाज होंगे—साठ फुट चौड़ा और तीन सौ साठ फुट लम्बा यह एक छोटा 'स्वेज़' ही होगा इस 'तीन-चार-नौ मील' पर।

नदी की चौड़ाई और उसके उत्प्लावन भार के भीतर ही उसका अतिरिक्त जल निकालने का मार्ग होगा। अठारह चौड़ी जल-नालियाँ होंगी, जिनमें पानी के बड़े बहाव को नियंत्रित और नियमित करने के लिए दरवाजे बने होंगे। वहाँ पड़ने वाले तनाव और दबाव के सूक्ष्म मापों के आधार पर ही इन दरवाजों या फाटकों की रूप-रेखा होगी—उनका निर्माण होगा। दूर, दक्षिणी किनारे पर एक बड़ा-सा बिजलीघर बनकर खड़ा होगा, जिसमें ऐसी व्यवस्था होगी कि लोहे के दांतेदार फाटक के जरिये वह एक निश्चित परिमाण में पानी भीतर लेगा और पनचक्की से होते हुए उसे नदी में वापस गिरा देगा। पानी लेने

और फिर नदी में वापस गिराने की उसकी गति प्रति सेकेंड दस हजार घन फुट होगी और इससे उसे बिजली उपलब्ध हो जायेगी।

यह 'तीन-चार-नौ मील' है। एक ऐसी नदी पर है यह जगह, जो दक्षिण से हटकर पश्चिम होते हुए उत्तर की ओर बहने लगी है। यह चिकसा है; मिट्टी का बाँध, जल-प्रवाह को रोकने के लिए घिरा हुआ स्थान, अधिक जल निकालने का मार्ग, बिजलीघर—मिट्टी के बाँध और इसके अलावा ये सारी चीजें! यह बाँध उतना बड़ा नहीं है, जैसे कि कुछ और बाँध हैं और जैसे कुछ बाँध ख्यातिप्राप्त हैं, वैसे ही यह एक अप्रसिद्ध बाँध है। किंतु चिकसा अपने एकांत ऐश्वर्य को लेकर ही खड़ा नहीं रहेगा—एक निर्जन पर्वत की दृश्यावली में यह मात्र एक प्रेरणादायक भयावह निर्माण के रूप में ही नहीं रह जायेगा। यह तो उस पर्वत की एक ढलान-मात्र है—एक शृंखला, जंजीर की एक कड़ी—सम्पूर्ण योजना का एक मुख्य आधार-भर है! यह नदी के बाढ़ को किसी नाटकीय ढंग से नियंत्रित नहीं कर लेगा; यह इस भयंकर नदी के विरुद्ध कोई एकाकी विजेता नहीं है। इसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए इसकी पैमाइश नहीं हुई है—और एक प्रयोजन तथा एक उपयोग के लिए भी नहीं, बल्कि कई प्रयोजनों तथा कई उपयोगों को दृष्टि में रखकर इसका निर्माण हुआ है। सर्वोपरि प्रयोजन से इसकी दीवार बड़ी ठोस बनायी गयी है और इसकी सीमेंट की दीवार में लगनेवाली कंक्रीट जिस तरह अन्य विभागों के निर्माण-कार्यों में लगने वाली कंक्रीट से भिन्न नहीं है, वैसे ही यह भी उन निर्माण-कार्यों से सम्बंधित है—जुड़ा हुआ है। इस तीन-चार-नौ मील स्थान पर यह अपना कार्य तब आरम्भ करेगा, जब यहाँ निर्माण-कार्य में जुटे व्यक्ति दूसरे महत्वपूर्ण कामों पर चले जायेंगे। यह अन्य बाँधों के साथ, जो इसी की तरह नदी के चढ़ाव और उतार पर बने होंगे, शांतिपूर्वक और प्रभावोत्पादक ढंग से अपना काम करेगा—सम्पूर्ण योजना के महान प्रयोजन में यह अपने जल-संचय, उत्पादित बिजली, जल अवरुद्ध करने और उसे मार्ग देने के साधन, जल-मार्ग की गहराई आदि से योगदान देगा। गणतंत्र में जो महत्व एक मत का है, चिकसा का भी वही महत्व है—जैसे अपने जीवन के निर्धारित स्थान पर मनुष्य शांति के साथ और प्रभावोत्पादक ढंग से काम करता रहता है, ठीक वही बात चिकसा के सम्बंध में भी है।

अभी, अगस्त में, यह सिर्फ शुरुआत ही है। योजनाएँ बना ली गयी हैं, जाँच पूरी कर ली गयी है, नक्शे तैयार कर लिये गये हैं और जनवरी से ही,

जब से उन्होंने सड़कें बनाना और इस 'तीन-चार-नौ मील' तक आकर समाप्त हो जानेवाली रेल की पटरियाँ बिछाना आरम्भ किया, लोग धरती का अतिरिक्त बोझ खोद-खोद कर दूर करते हुए नीचे पड़ी ठोस चट्टान तक पहुँचने के प्रयास में जुटे हुए हैं। उन्होंने शिविर बनाये हैं, इमारतें खड़ी की हैं, कई व्यक्तियों के सोने लायक शयनागार, मकान, आमोद-प्रमोद-गृह और कुटीर तैयार किये हैं। उन्होंने वह यंत्र भी खड़ा करना शुरू कर दिया है, जिसमें कंक्रीट डालकर उसे मिलाया जायेगा। उन्होंने उसके परिवहन-यंत्र का भी निर्माण कर लिया है। बड़े-बड़े ट्रैक्टर चलाकर उन्होंने घास, पेड़-पौधों की जड़ें और इधर-उधर दबे पत्थरों को उखाड़ फेंका है तथा उत्तर-दक्षिण की पूरी जमीन चौरस कर दी है। उनके सामने जो काम पड़ा है, उसमें लोग जुट गये हैं और तथ्य को ध्यान में रखकर ही योजनाएँ बनायी गयी हैं। लोग उन्हीं के अनुसार काम भी कर रहे हैं। भविष्य के प्रति विश्वास रखकर ही—आशा सँजोकर ही—उन्होंने कार्य की रूपरेखा तैयार की है। नींव और सतह की चट्टान के असाधारण विचारों के बावजूद, कड़ाके की ठंड और खून जमा देने वाले मौसम के बावजूद और चोट खाकर, पसीना बहाकर, बीमार पड़कर भी तथा मनुष्य, जमीन और नदी की दुराराध्यताओं के बावजूद—हर हालत में अब उन्हें इसे बनाये रखना है।

उत्तर की ओर जमीन भरी और बराबर की जा रही है। बाँध की दीवार के आधार-स्तम्भ के लिए लकड़ी के लट्ठे वहाँ इकट्ठे हो रहे हैं। लट्ठे ढो ढोकर लानेवाले उनके भार से दबे, जोरों से धप-धप की आवाज करते, हाँफते हुए अपने काम में जुटे हैं। नदी में, जल-विकास के मार्ग बनकर तैयार हो गये हैं और जल इकट्ठा किये जानेवाले क्षेत्र से, इंजीनियरों की प्रिय, भद्दी वाक्य शैली में कहा जाये, तो पानी निकाल दिया गया है। पर यहाँ एक दिक्कत हो गयी है; नींव की चट्टान टूट गयी है और जल निकलने का जो मार्ग बना है, उससे पानी चू-चू कर, काम करने वाली जगह में भरता जाता है। इसका अर्थ है, उस जल-मार्ग को ढँक देना होगा और नीचे, सतह की चट्टान की दरारों पर सीमेंट की प्लास्तर करनी होगी। इसका अर्थ है निर्माण के निर्धारित समय की बरबादी और इसका अर्थ है संकट-काल! किंतु वे आकस्मिक उन्माद और सनक में इसे पूरा कर देते हैं और उन्होंने भविष्य के लिए सबक हासिल कर लिया है। नदी में अब जो जल-मार्ग बनेंगे, उनकी नींवों में वे सीमेंट की प्लास्तर कर देंगे। उसके बाद ही उनसे काम लिया जायेगा। जहाँ जल

इकट्ठा किया जायेगा, उस क्षेत्र में, विद्युत्-चालित फावड़ों, ट्रकों और बड़े ट्रैक्टरों की मदद से नीचे की चट्टान तक पहुँचने के लिए खुदाई का काम चल रहा है। चट्टान मिलेगी, तो विद्युत्-चालित बरमों और डाइनामाइट से खुदाई का काम चलेगा, जब तक वे एक मजबूत और ठोस सतह-चट्टान तक नहीं पहुँच जाते; ऐसी चट्टान, जिस पर एक इंजीनियर निर्भर रह सकता है।

दक्षिणी बाढ़-सतह पर भी बाँध की दीवार के आधार-स्तम्भ के लिए लकड़ी के लट्ठे काट-काट कर पहुँचाये जा रहे हैं; नींव तैयार हो रही है और प्लास्तर किया जा रहा है। किंतु यहाँ भी कठिनाई है, यहाँ भी देर हो रही है। लकड़ी के वे लट्ठे ठीक काम नहीं कर पा रहे हैं। जहाँ नीचे की ठोस चट्टान होनी चाहिए थी, वहाँ पर्यवेक्षण-खाइयों को जल के बहने से गोल हुए पत्थर मिले हैं। इसका अर्थ है और खाइयाँ, और प्लास्तर तथा दरारों और कंदराओं को फिर से भरने का कार्य तथा फौलाद के और आधारस्तम्भों की भी जरूरत पड़ेगी। जो समय निर्धारित था, उसमें देर होगी, अधिक श्रम करना होगा, कष्ट सहना पड़ेगा—क्योंकि चिकसा के निर्माण में यह सबसे बड़ी समस्या सामने आ खड़ी हुई है और इस पर विजय पाने के लिए काफी समय लगेगा। इंजीनियर को ऐसी ठोस चट्टान मिलनी ही चाहिए, जिस पर वह निर्भर रह सके।

और इस तरह काम चल रहा है। बाँध का निर्माण संगीत-साधना के समान ही है—सुझाव, आरम्भिक प्रसंग, जमीन की प्रयोगात्मक खुदाई; और तब आवाज़ और उसके प्रभाव का आर्केस्ट्रा, सुमधुर तारों का निर्माण और फिर संकट का अचानक संघर्ष! किंतु इन सबसे ऊपर संगीत-स्वर के अंतरा के समान ही ढाँचा के ऊपर बढ़ने का स्वर है। फिर बाँध के टूटने, गिर पड़ने पर धमाके का निस्पंद संगीत, जिसमें मौसम, काल और समय के अनुकूल उतार-चढ़ाव रहता है। पर तो भी उठ-उठकर वह अंततः अपनी पूर्णता प्राप्त कर लेता है। इस संगीत के वाद्ययंत्र अद्भुत हैं—ये धमाके उत्पन्न करने वाले, ये बर्मियाँ, ये बड़े-बड़े ट्रैक्टर, ये रोलरें (जमीन बराबर करने वालीं), कें, परिवहन-यंत्र और लट्ठे ढो-ढोकर लाने वालों के पैरों के 'धप-धप' का नीरस नगाड़ा! और कंक्रीट तथा फौलाद के इस आकार और बनावट का यह संगीत भी अद्भुत है। यह स्वर और ध्वनि का ऐसा चिरस्थायी मेल है, जिसे आँखों के सामने ही बनाया गया और ठोस रूप दिया गया है; फिर भी यह 'बीथोवेन' (एक प्रकार का संगीत) के समान ही तत्काल मनुष्य की आत्मा को छू लेता है।

प्रकरण पाँच

घाटी में फिर लौट कर आना काफी अच्छा लग रहा था, यद्यपि वह सिर्फ सुबह ही यहाँ से गया था। नदी के किनारे के साथ-साथ समानांतर चली गयी सड़क पर अपनी टी-माडेल मोटर मोड़ते ही मैथ्यू के तन-मन पर एक प्रकार की शांति-सी छा गयी। उसे नहीं मालूम था कि वहाँ की जमीन में इतनी तेजी से तब्दीली आती जा रही थी; क्योंकि अपने खेत में पहली फसल खड़ी करने के बाद से वह घाटी के बाहर नहीं गया था। लेकिन आज उसे गाँठें बनाने के लिए तार लाने शहर जाना पड़ा था। भीतर प्रवेश करते ही उसने स्वयं को सुरक्षित अनुभव किया और गाड़ी रोक दी, एंजिन बंद कर दिया तथा अपने घर तक जाने वाली उस सड़क को देखा। आज जो उसने वैभिन्न्य—जो अंतर—देखा था, उससे भीतर ही-भीतर स्वयं को वह विचलित अनुभव कर रहा था।

घाटी के प्रवेश-द्वार से आधे मील से भी कम दूर जाते ही वह सब शुरू हो गया था। नदी के किनारे से नंगी, फसल-विहीन जमीन की एक बिलकुल सीधी-सी रेखा चली गयी थी, जो मुड़कर उस धरातल तक वापस चली आयी थी, जो किसी सुस्थित छज्जे के समान धरती के ढाँचे के अनुरूप ही था! मैथ्यू जानता था कि वहाँ पानी आनेवाला है और मन-ही-मन उसने यह कल्पना की कि पानी का बहाव किस तरह इस घाटी से होकर गुजरेगा। उसकी जमीन का जो ऊँचा भाग है, उसके सिवा सब जगह पानी-ही-पानी हो जायेगा—मकान, पेड़, खलिहान और खेत—सब पानी से भर जायेंगे। डनबार की घाटी का कुछ भी बाकी नहीं रह जायेगा—सिर्फ एक काँच की-सी सफेद-चमकदार सतह चारों ओर होगी, जो उसकी इस पैतृक सम्पत्ति को ढँक लेगी, अपने भीतर छुपा लेगी।

और इसके लिए वे उसे पैसे देने को तैयार थे। उसने अपनी बगल की सीट पर पड़े पत्रों पर नजर डाली। कई पत्र थे और प्रत्येक पत्र के एक कोने पर ये शब्द थे—'टेनेसी वैली अथारिटी।' उसने उन्हें खोला नहीं था; पर वह जानता था, उनमें क्या लिखा होगा। हफ्तों पहले क्रैफोर्ड गेट्स उस सम्बंध में उसके पास आया था। उन पत्रों से वह उतनी परेशानी भी नहीं अनुभव कर रहा था, जैसी परेशानी उसे वृक्षों और फसल से खाली जमीन देखकर हुई थी। शहर में जो-कुछ उसने सुना था, उससे भी उसे उतनी परेशानी नहीं हुई थी।

उसने तय किया था कि वह शहर से लौटने में जल्दी नहीं करेगा; लेकिन आखिर वह ज्यादा देर नहीं ठहरा वहाँ। नाई की दूकान में जितने आदमी थे, वे सिर्फ बाँध के बारे में ही बातें कर रहे थे। खच्चरों के बाड़े में भी लोग यही बातें कर रहे थे कि टी. वी. ए. वाले कितनी अच्छी मजदूरी देते हैं। वे यह भी कह रहे थे कि अगर कोई चाहे, तो किस तरह उन व्यक्तियों में तो बहाल किया ही जा सकता है, जो गर्मी के दिनों में जलाशय साफ करने वाले हैं। यह मैथ्यू का शहर नहीं था, जहाँ मौसम, फसल और इसी तरह की घिसी-पिटी बातें होती थीं और जो जुबान के लिए परिचित रहने के बावजूद भीतर से आकर्षक लगती थीं।

वह बैंक गया था और बैंक के प्रवेश-द्वार के निकट ही एक तीर का चिह्न बना कर सीढ़ियों की ओर संकेत किया गया था। ताजे रंगे हुए अक्षरों में वहाँ लिखा था—'टी. वी. ए. लैंड-आफिस (जमीन-कार्यालय)'। वह खड़ा होकर उसे देख रहा था कि उसने क्रैफोर्ड गेट्स को अपनी मोटर वहाँ रोकते देखा। मोटर रोककर वह उतरा और फुटपाथ से होता हुआ, सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया। उसने मैथ्यू को नहीं देखा। मैथ्यू मन-ही-मन विचलित हो उठा था। वह बैंक के भीतर गया और वहाँ उसने जल्दी-जल्दी अपना काम समाप्त किया। वह घाटी में—अपने घर में—वापस पहुँचने के लिए चिंतित हो उठा था। शहर की सभ्यता और व्यवसाय की भाग-दौड़ और शोरोगुल में उसे तनिक आनंद नहीं आ रहा था। लेकिन उसे देर हो गयी थी। बैंक का मैनेजर जान विल्स उसे रोक कर बातें करने लगा था। वह उसे बता रहा था कि टी. वी. ए. और जल के लिए रास्ता दे देने के बाद उस घाटी से हटकर मैथ्यू को कहाँ जमीन खरीदनी चाहिए। मैथ्यू नम्रतापूर्वक सुनता रहा। उसने 'हाँ'-'ना' कुछ नहीं कहा और जितनी जल्दी हो सका, वहाँ से चल पड़ा।

उसने अपनी बगल में पड़े उन पत्रों पर हाथ रखा। वह उन्हें खोलना नहीं चाहता था। शहर में उसने स्वयं से कहा था कि घर पहुँचने तक वह उन पत्रों को खोलने के लिए इंतज़ार करेगा। लेकिन वापसी में दुबारा उस रास्ते से गुजरने के बाद जहाँ पहले दोनों ओर के वृक्षों का साया रहता था और अब जहाँ सूरज की तेज रोशनी उसे मिली थी, उसे उन पत्रों को खोलने की इच्छा ही नहीं हो रही थी।

जब तक वह घाटी में नहीं पहुँच गया, उसे ऐसी कोई जगह नहीं मिली रास्ते-भर, जहाँ उसकी आँखें टिकी रह सकतीं। हाँ, घाटी में सब पहले के

समान ही था। बायीं ओर नजदीक ही सोता था, जो धीरे-धीरे बह रहा था; क्योंकि नदी भी वहाँ से नजदीक ही थी और सोते के किनारे वृक्ष उसी प्रकार कतार से खड़े सोते के जल को अपना साया दे रहे थे। अपने सामने, वह रहनेवाले कमरे की चिमनी के ऊपर चक्कर काटते हुए धुएँ को देख रहा था, जो वहाँ के शांत वायुमंडल में सीधा ऊपर की ओर उठता चला जा रहा था। बड़े बलूत का पेड़ उसी तरह वहाँ खड़ा था। उसकी घनी छाया आँगन में पड़ रही थी और सामने के बरामदे में बैठी हैटी भी उसे दिखायी दे रही थी।

"यह नहीं बदलेगा—" उसने स्वयं से कहा—"मैं इसे बदलने नहीं दूँगा। मेरी जायदाद की सीमा-रेखा तक वे आ सकते हैं; लेकिन बिना मेरे कहे, वे इससे अधिक निकट नहीं आ सकते।" अचानक उसने उन पत्रों को उठा लिया और एक झटके से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। लैंप जलाने के काम आ जायेंगे ये टुकड़े—उसने सोचा। जिस आकस्मिक तीव्रता से उसने उन्हें फाड़ा था, उससे शहर की यात्रा की जो कड़वाहट थी उसके मन में, वह दूर हो गयी। उसने ड्रायविंग व्हील (मोटर चलाने का गोल चक्र, जिसे 'स्टीयरिंग' कहते हैं) के नीचे गैस लीवर को नीचे झुका दिया और वह पुरानी मोटर खड़-खड़ करती हुई चलने को तैयार हो गयी।

"बर्फ सब पिघल जाये—" उसने जोर से अपने-आप से कहा—"इसके पहले मुझे यहाँ से चल देना चाहिए।"

मोटर चलाता हुआ वह फिर सूरज की रोशनी के नीचे से निकला और मकान की बगल में खड़े उस बड़े पेड़ की छाया में पहुँच गया। उसने मोटर रोक दी और उतर पड़ा। मोटर की हलचल धीरे-धीरे बंद हो रही थी—मैथ्यू ने यह महसूस कर लिया और मोटर के बफर के आगे लगे हुए लोहे के मोटे सरिये से बँधी बर्फ उसने खोल ली। सौ पौंड बर्फ थी। उसने उसे उठा लिया। बेजान और चिकनी बर्फ उसके हाथों में भारी लग रही थी। तेजी से वह पिछले बरामदे की ओर बढ़ा। अगस्त महीने की गर्मी में बर्फ बूँद-बूँद में पिघल कर चू रही थी और जब तक वह चलकर, एक हाथ में बर्फ पकड़े, उस ज़ालीदार दरवाजे को खोलने के लिए वहाँ पहुँचकर बेढंगे ढंग से झुका, तब तक उसकी पोशाक का अगला हिस्सा भीग चुका था। लड़खड़ाता हुआ बरामदे पर चढ़कर वह बर्फ को जमीन पर रखने के लिए फिर नीचे झुका। बर्फ उसके पैरों के नजदीक रखते ही फिसल गयी; लेकिन उसे रोकने के लिए उसने अपना एक जूता उसके सामने सटाकर रख दिया।

"आर्लिस!" उसने पुकारा—"बर्फ को लपेटकर रखने के लिए कुछ लेती आओ। जल्दी करो!"

उसने उसे रसोईघर में चलते सुना और धैर्य के साथ प्रतीक्षा करता रहा, जब तक वह दरवाजे तक नहीं आ गयी। वह अपने हाथों में एक पुराना लिहाफ लिये हुई थी। मैथ्यू ने लिहाफ उसके हाथ से ले लिया और उसमें सावधानीपूर्वक बर्फ लपेटने लगा।

"आज रात हमें कुछ आइसक्रीम खिलाओ—" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"आज जैसे गर्म दिन के लिए मेरे विचार से यह काफी अच्छा रहेगा।"

"रात के खाने पर मैं थोड़ी चाय भी तैयार कर लूँगी—" आर्लिस ने कहा—"बशर्ते आप इतनी ज्यादा बर्फ लाये हों कि चाय में भी काम आ सके।"

"हाँ-हाँ!" मैथ्यू बोला—"जल्दी इसे काम में ले आओ, नहीं तो यह पिघल जायेगी। लड़के सब कहाँ है?"

आर्लिस मुस्करायी—"आपके जाने के ठीक बाद ही नाक्स उन्हें जंगल में वापस ले गया है।" उसने कहा।

मैथ्यू हँस पड़ा—"नाक्स जानता है कि मैं इस तरह काम में मदद पाना पसंद करता हूँ।" वह बोला। उसने वह जालीदार दरवाजा खोल दिया।

"देखो, तुम इसे लेकर अपने काम में लग जाओ। मैं जाकर देखता हूँ कि लड़के किस तरह काम कर रहे हैं।"

"क्या आप खाना नहीं खायेंगे?" आर्लिस ने कहा—"मैंने आपका खाना......"

मैथ्यू ने सिर हिलाया। "मैंने शहर में कुछ बिस्कुट और केक खा लिये हैं—" उसने कहा। रुककर उसने वापस उसकी ओर देखा—"मैंने आज तुम्हारे उस मित्र को देखा था।"

उसने आर्लिस के चेहरे पर लाली आते देखी। जब तक कि वह लाली दूर नहीं हो गयी और उसने अपनी आवाज़ पर काबू नहीं पा लिया, उसने मैथ्यू की ओर नहीं देखा। "क्या वह......"

मैथ्यू ने फिर सिर हिलाया। "मैंने उससे बात भी नहीं की। उसने मुझे देखा नहीं।" वह कुछ कठोरता से हँसा—"मेरा अंदाज है, बहुत जल्दी ही तुम उसे फिर देखोगी। वह या तो तुमसे प्रेम जताने आयेगा या मुझसे बहस करने। सम्भव हो, दोनों इरादों से एक साथ ही आये। मैं यह देखने जा रहा हूँ कि लड़के किस प्रकार काम कर रहे हैं।"

मैथ्यू लौटकर फिर मोटर में आ बैठा। मोटर चलाता हुआ वह खलिहान के बगल में पहुँचा, जहाँ साया था। शहर से जो वह तार लाया था, उसे निकाल कर उसने अलग रख दिया। ये तार लम्बे-लम्बे तारों से बँधे थे और ये चमक-से रहे थे। अगले सप्ताह तक चरी काटने का समय हो जायेगा। वह कठिन और थका देने वाला काम होगा। भूसा उनके कपड़ों के भीतर चला जायेगा और वे और भी गर्मी महसूस करेंगे। हुआ तो, और अगर रात चाँदनी रही, तो वे रात में ज्यादा काम कर सकेंगे।

वह खलिहान से होकर दूसरी ओर निकल गया। जमीन के उस छोटे-से टुकड़े से होकर, जिसमें सुपारी के पेड़ लगे थे, वह पहाड़ियों की ओर जा रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, जैसी कि उसकी आदत थी। जमीन पर उसके पाँव कहाँ पड़ रहे हैं, वह यह देखता चलता था। नाक्स जहाँ हमेशा शराब तैयार करता था, वह जगह वहाँ से पैदल पंद्रह मिनट की दूरी पर थी। वहाँ तेजी से बहने वाला एक सोता था, जिसका पानी काफी अच्छा था और उसके चारों ओर घने पेड़ तथा झाड़ियाँ थीं। नजदीक पहुँचकर मैथ्यू अपनी नजरें दौड़ाता रहा कि कहाँ से धुआँ निकलता दिखायी दे रहा है। क्योंकि नाक्स कभी-कभी थोड़ा उतावला होता था और हरी लकड़ियाँ जलाने बैठ जाता था। अपना पता आप बता देने का यह निश्चित तरीका था, यद्यपि जब तक कोई व्यक्ति सिर्फ अपने चखने-भर के लिए थोड़ी व्हिस्की बनाता रहे, शेरिफ उसे परेशान करेगा, इसकी कोई सम्भावना नहीं थी। लेकिन जब तक वह व्यक्ति शराब बनाकर उसे बेचने नहीं ले जाता है, तभी तक। और नाक्स में वैसी प्रवृत्ति भी थी।

वह लगभग चश्मे पर पहुँच ही चुका था कि उसने ऊपर आकाश में उठते हुए धुआँ और आग की चमक देखी। खैर, नाक्स आज सावधानी बरत रहा था। वह खुली जगह में पहुँच गया और एक-ब-एक रुक गया। शराब से भरे जलपात्रों और कलसों को, जो एक साथ रखे हुए थे, वह निहारता रहा। नाक्स अब दूसरे खेप की तैयारी कर रहा था और चमकीले ताम्बे की नली से सफेद तरल पदार्थ बाहर बूँद-बूँद चू रहा था।

"हे भगवान, बेटे!" उसने कहा—"तुम तो इतनी ज्यादा शराब बना रहे हो, जो तुम्हारी बाकी जिंदगी तक चलती रहे।"

भट्टी के नजदीक खड़ा नाक्स, जहाँ वह और लकड़ियाँ डाल रहा था, झटके से घूम पड़ा। राइस और जेसे जान ने भी अपना काम रोक दिया और मैथ्यू

क्या कहा रहा है, उसे सुनने के लिए घूम पड़े। आश्चर्य से नाक्स का मुँह खुला रह गया।

"मैंने सोचा था, आप दिन-भर शहर में रहनेवाले हैं—" उसने कहा—"मैं......" वह बातें करता-करता रुक गया और क्रोध से अपना मुँह बंद करते हुए घूम पड़ा। "घर लौट जाइये, पापा! हम यह काम मजे में कर लेंगे!"

मैथ्यू और नजदीक खिसक आया। वह अपने चारों ओर गौर से देख रहा था। नाक्स की पीठ फिर उसकी ओर हो चुकी थी और वह रोषपूर्वक भट्ठी में लकड़ियाँ झोंक रहा था। जहाँ शराब चुआई जा रही थी, उसके नीचे से जेसे जान ने एक भरा हुआ कलस उठाया और फुर्ती से उसकी जगह पर दूसरा रख दिया।

"इन सारी व्हिस्की का आखिर तुम करोगे क्या?" मैथ्यू ने पूछा। उसकी आवाज़ में उसका आश्चर्य और उसकी व्याकुलता स्पष्ट लक्षित थी—"इतनी सारी शराब तुम नहीं पी सकते......"

नाक्स घूम पड़ा। "मैं टी. वी. ए. से किसी-न-किसी तरह कुछ रुपये कमानेवाला हूँ—" उसने कहा—"नीचे, जलाशय में जो लोग काम कर रहे हैं, वे अच्छी व्हिस्की के लिए परेशान हैं। मैं उन्हें व्हिस्की देने वाला हूँ।"

नाक्स क्रुद्ध था और भयभीत भी। लेकिन वह मैथ्यू की ओर ही देख रहा था। मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। नाक्स के शब्द उसके दिमाग में छुरी की तरह चुभ रहे थे। उन शब्दों के पीछे नाक्स का क्रोध था, जो उन्हें उसके दिमाग में ढकेल रहा था—निर्दयता और तीव्रता से। शहर जाने वाली सड़क पर विनाश का जो दृश्य उसे देखने को मिला था, उससे यह ज्यादा दुःखदायी था।

"तुम बेचने के लिए व्हिस्की बना रहे हो?" उसने कहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसका दिमाग किसी तरह इस पर विश्वास नहीं कर पा रहा था।

"आप मुझे वहाँ काम करने जाने नहीं देंगे—" नाक्स ने उद्दंडता से कहा—"मैं घर पर ही रह रहा हूँ—ठीक आपकी इच्छा के अनुरूप। लेकिन मुझे अपनी चीज बेचने के लिए बाजार मिल गया है और मेरा इरादा है..."

मैथ्यू निस्तब्ध खड़ा रहा। वह भीतर-ही-भीतर स्वयं से लड़ रहा था। लेकिन नहीं, वह स्वयं को नाराज नहीं होने देगा। जब तक वह अपने क्रोध पर काबू नहीं पा लेता है, वह अपने मुँह से एक शब्द नहीं निकलने देगा।

"किसी भी डनबार ने नहीं..." अंततः उसने कहा। वह रुका और उसने फिर कोशिश की—"कभी किसी डनबार ने इसे बेचकर अपने को नीचा नहीं गिराया..." उसे रुकना पड़ा। वह नाक्स को और अधिक देखने में असमर्थ था। उसकी उपस्थिति उसे असह्य हो रही थी। घूमकर मैथ्यू वहाँ से जेसे जान और राइस की ओर आया। "वह कुल्हाड़ी लो—" उसने कहा। उसकी आवाज धीमी, पर दृढ़ थी—"वह कुल्हाड़ी उठाओ और इन शीशे के बर्तनों को तोड़ना आरम्भ कर दो, जब तक कि मैं तुम्हें रुकने को न कहूँ।"

जेसे जान उठ खड़ा हुआ; लेकिन वह कुछ तय नहीं कर पा रहा था।

"नहीं!" नाक्स ने कहा।

मैथ्यू ने मुड़कर फिर उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में उत्सुकता की झलक थी। "अच्छी बात है, जेसे जान!" उसने स्थिरता से कहा—"तुम वहीं ठहरो, जहाँ तुम हो। बिलकुल ठीक!"

वह उस खुली जगह से होकर वहाँ गया, जहाँ देवदार के एक पेड़ से सटाकर कुल्हाड़ी रखी थी। तीनों लड़के उसे देख रहे थे। उसने कुल्हाड़ी उठा ली, उसे एक हाथ में पकड़ा और फिर नाक्स के पास लौट आया।

"तुम्हारा कहना ठीक है—" उसने कहा—"तुम्हारी खुद की शराब को नष्ट करने का अधिकार उन्हें नहीं है।" उसने धार की ओर से पकड़ कर कुल्हाड़ी का मूठवाला हिस्सा नाक्स की ओर बढ़ाया—"यह कुल्हाड़ी लो और इन बर्तनों को तोड़ना शुरू कर दो। जब तक मैं कहूँ नहीं, रुकना मत।"

क्षणभर के लिए मैथ्यू को लगा कि नाक्स इनकार कर देगा—उसकी अवज्ञा करेगा। किंतु धीरे से नाक्स का हाथ कुल्हाड़ी लेने को बढ़ा। मैथ्यू के अधिकार-भार के नीचे अचानक ही उसका चेहरा सफेद और निर्विकार हो उठा था। कुल्हाड़ी मैथ्यू के हाथ से छूट कर नाक्स की बगल में झूल गयी और उसकी एकहरी धार का पिछला हिस्सा नाक्स की पिंडली से टकराया। कुल्हाड़ी गिर पड़ी; लेकिन नाक्स ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

"आप मुझे यह करने के लिए मजबूर कर रहे हैं!" उसने रूखे स्वर में कहा।

"डनबार की जमीन पर बेचने के लिए कोई शराब नहीं बनायी जा सकती"—मैथ्यू ने कहा—"जब तक मैं यहाँ का मालिक हूँ, तब तक नहीं।"

अचानक दबा दिये गये क्रोध के साथ नाक्स ने कुल्हाड़ी उठा ली। फिर तेजी से चलकर वह उन बरतनों के निकट पहुँचा। उसने कुल्हाड़ी हवा में

उठायी और बड़े वेग से चलाया। अविलम्ब ही व्हिस्की की तीखी गंध हवा में फैल गयी। जेसे जान और राइस खड़े देखते रहे और नाक्स पूरी ताकत से उन बर्तनों को तोड़ता रहा। कुल्हाड़ी बार-बार हवा में उठती और वेग से नीचे गिरती। जब वह वेग से कुल्हाड़ी हवा में घुमाता, उसकी एकहरी चमकीली धार सूरज की रोशनी में और चमक उठती थी।

"ठीक है—" मैथ्यू ने अंत में कहा। कुल पाँच घड़े बच गये थे। "काफी है अब यह!"

कुल्हाड़ी ऊपर उठाये नाक्स रुका और उसने मुड़कर अपने कंधों पर से मैथ्यू की ओर देखा। उसका चेहरा अवज्ञा की भावना से ऐसा बना हुआ था, जो मैथ्यू नहीं पढ़ पाया। क्षणभर के लिए ही नाक्स रुका, कुल्हाड़ी उसके सिर के ऊपर हवा में टँगी रही और तब वह फिर नीचे आयी। एक ही वेगवान प्रहार और अंतिम पाँच बरतन भी टूट गये। उनमें की अवैध वस्तु बह निकली और जमीन उसे सोखने लगी। टूटे हुए चमकते शीशों के टुकड़ों के बीच नाक्स ने कुल्हाड़ी फेंक दी और वह वहाँ से चला गया। वह जंगल में अपना रास्ता आप बनाता सीधा चला जा रहा था। मैथ्यू उसे जाते देखता रहा। वह जान गया था कि उसकी जीत नहीं हुई। इस बार उसकी जीत नहीं हुई थी, यद्यपि नाक्स ने उसके आदेश का पालन किया था।

"बाकी बचे शराब को भी नष्ट कर दो—" उसने जेसे जान और राइस से कहा—"और उसकी वह शराब बनाने वाली ताम्बे की पेंचदार नली खलिहान में लेते आओ। उसे आहिस्ते से ऊपर उठाओ। हम लोग इसे उससे दूर रख देंगे, जब तक वह फिर इससे काम लेने को तैयार नहीं हो जाता।"

वह उन्हें सारी चीजों को इकट्ठा करते हुए देखता रहा और तब वह उनके पास से चल पड़ा। अपना काम पूरा करने के लिए उसने उन्हें अकेले छोड़ दिया। लेकिन वह घर की ओर नहीं गया। अभी नाक्स से दुबारा मिलने का यह समय नहीं था। हो सकता है, काफी लम्बे समय तक यह वक्त नहीं आये। घर जाने के बजाय वह खेतों की ओर चल पड़ा, जहाँ वह चरी उपजाने वाली जगह तक जा सकता था और वहाँ देख-सुन कर यह तय कर ले सकता था कि गाँठें बनाने के लिए चरी कहाँ तक तैयार हो चुकी है। लेकिन जब वह जंगल के बाहर आया, तो घर की ओर देखने से स्वयं को नहीं रोक सका। नाक्स कहीं नहीं दिखायी दे रहा था। मकान अभी शांत और वीरान था और यहाँ से वह आँगन की धूल में लोटती मुर्गियों को भी नहीं देख पा रहा था। वह घर की

ओर देखता रहा और तब उसने कौनी को देखा। वह उजले कपड़े पहने थी और घर से निकल कर घाटी के प्रवेश-द्वार की ओर जानेवाली सड़क पर धीरे-धीरे बढ़ रही थी। वही एक आकृति वहाँ थी, जो चल रही थी। नाक्स कहीं भी नहीं दिखायी दे रहा था। वह घूम पड़ा और चरी देखने के लिए चल पड़ा।

कौनी ने जेसे जान का काफी देर तक इंतजार किया था। आज सुबह उसने जेसे जान से कहा था कि वह सोते में तैरने जाना चाहती है और यद्यपि जेसे जान ने उससे कह दिया था कि वह दिन-भर शराब बनाने में बुरी तरह फँसा रहेगा, फिर भी कौनी को यकीन था कि वह उसे ले जाने के लिए आयेगा अवश्य; क्योंकि जेसे जान कौनी का वहाँ अकेले जा कर तैरना पसंद नहीं करता था। लेकिन कौनी अब और इंतजार करने नहीं जा रही थी।

वह धीरे-धीरे चलती रही। गर्मी से चेहरे पर झलक आये स्वेद-बिंदुओं को वह अनुभव कर रही थी। उसकी उजली पोशाक के नीचे नहाने की पोशाक उसके शरीर से बिलकुल चिपकी हुई थी और वह सोते के ठंडे पानी के बारे में सोचती रही, जिस पर वृक्षों का साया था। "कुछ भी हो, वहाँ अकेले तैरने में सचमुच ही ज्यादा मज़ा है—" उसने स्वयं से कहा। तब वह उस सम्बंध में सोचने लगी...उसने सोचना बंद कर दिया और तेजी से चलने लगी। वृक्षों के उस साये में पहुँचने के लिए वह काफी तेज चल रही थी। सूरज की सीधी रोशनी की गरमी वह कभी नहीं सहन कर सकी थी।

वृक्षों के नीचे की जगह खाली थी और किनारे की वह जगह साफ थी, जहाँ की झाड़ियाँ लड़कों ने काट कर फेंक दी थी। पानी के ऊपर आगे की ओर निकला तैरने का एक तख्ता था, जो घर में ही बनाया गया था। चश्मा यहाँ चौड़ा और गहरा था और यहाँ पानी का वेग भी धीमा था। तैरने के लिए ही मानो प्रकृति ने यह जगह बनायी थी। गर्मी के मौसम में भी यहाँ का पानी शांत-निस्तब्ध और पेड़ों की छाँह में ठंडा रहता था। सोता जहाँ ज्यादा चौड़ा हो गया था, वहाँ लकड़ी का एक कुंदा दोनों किनारों को मिलाता हुआ पुल का काम दे रहा था। उससे उधर का रास्ता छोटे-छोटे पेड़ों के बीच से होकर गया था, जिनमें अंगूर की बेलें लिपटी हुई थीं। वे उनके भार से झुक गये थे और रास्ता सीधा खेतों की ओर निकल गया था। काम से वापस आते समय लड़के बहुधा इसी रास्ते से आया करते थे, जिससे रात का खाना खाने के पहले वे थोड़ी देर यहाँ तैर सकें।

वह नीचे बैठकर अपने उजले जूते उतारने लगी। जूते उतार कर उसने उस खूँटे पर रख दिया, जिससे तैरने का तख्ता बँधा हुआ था। तब उसने अपनी पोशाक को दोनों किनारों से उठाकर अपने सिर के ऊपर कर लिया। वह अपनी नहाने की पोशाक में कशमकश करती अपने कोमल पैरों से किनारे तक पहुँची। क्षणभर तक वह वहाँ ऐसे खड़ी रही, जैसे वह बड़ी शान से डुबकी लगाने वाली है। यद्यपि वह जानती थी कि वह नीचे उतर कर सावधानीपूर्वक पानी में पैठेगी।

"क्या किस्मत है मेरी भी—" एक आवाज़ आयी—"नहाने की पोशाक!"

वह स्तम्भित रह गयी और स्वयं को गिरने से बचाने के लिए उसने अपने पंजे किनारे पर गड़ा-से दिये। पर उसने स्वयं को सँभाल किया। वह सीधी खड़ी हो गयी और उसने उसे सोते के दूसरे किनारे पर खड़ा देखा।

"कौन—कौन हो तुम?" उसने कहा। उसकी आवाज़ में भय उतर आया था और वह इसे महसूस कर रही थी।

वह लम्बा था। उसका चेहरा चिकना और तना हुआ था और उसके ऊपरी होंठ पर छोटी-छोटी काली मूँछें काफी अच्छी लग रही थीं। उसने एक लम्बी चेस्टर की तरह की पोशाक पहन रखी थी और फेल्ट हैट लगा रखी थी, जो पहनते-पहनते खराब हो चली थी। "जितनी किताबें मैंने अपनी ज़िंदगी में पढ़ी हैं, उनमें किसी में यह नहीं बताया गया है कि अगर कोई मर्द किसी औरत को अकेले में तैरने जाते हुए देखता है, तो वह उसे नहाने की पोशाक पहने देखता है।" उसने कहा। उसने रंजीदा होकर अपना सिर हिलाया और उसकी ओर देखकर मुस्कराया—"सिर्फ मेरी बद-किस्मती!"

उसकी आँखें अपनी ओर गड़ी पा कौनी को ऐसा लगा कि अपने शरीर को छुपाने के लिए उसने जो कपड़ा पहन रखा था, वह भी उसके शरीर पर नहीं है। स्वयं को छुपाने के लिए वह जल्दी से पानी में उतर गयी। अपने बचाव का यह उपाय अख्तियार करते वक्त, कौनी ने अपना चेहरा उसकी ओर घुमा रखा था, जैसे वह डर रही थी कि उसे नहीं देखती रही, तो वह उस तक चला आयेगा।

"कौन हो तुम?" उसने पूछा—"क्यों..."

"मैं?" वह खुलकर मुस्कराया—"मेरा नाम केरम हास्किन्स है।" उसने

नदी की ओर अपना सिर मोड़ कर संकेत किया—"वहाँ जो लोग सफाई कर रहे हैं, मैं उनमें से एक दल का प्रधान हूँ।"

कौनी अब पहले से अच्छा अनुभव कर रही थी। वह अजनबी था, यह बिलकुल सत्य था; लेकिन वह बोलने के समय जिस ढंग से शब्दों का उच्चारण करता था, उससे वह परिचित थी। वह मूर्खों की तरह मुस्करायी। पानी के ऊपर अपने हाथ अपने चारों ओर हिलाते हुए वह उसकी ओर देख रही थी।

"मान लो, मैं नहाने की यह पोशाक नहीं पहने होती?" उसने कहा—"तुम्हें इस तरह ताक-झाँक नहीं करना चाहिए, जहाँ कि......कोई लड़की तैरने का इरादा करती हो।"

उसने अपने कंधे उचकाये। "ताक-झाँक करने का मेरा इरादा नहीं था। मैं कुछ देर आराम करने के लिए किसी सायेदार जगह की तलाश कर रहा था। यह तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?"

"कौनी।" उसने कहा। इसके बाद का नाम उसने नहीं बताया। उसने अपने घुटने मोड़ लिये और पानी के और भीतर चली गयी। पानी ठंडा था और वह उस भीगी नहाने की पोशाक को अपने शरीर से बिलकुल चिपकी महसूस कर रही थी। अब वह सिर्फ उसका चेहरा देख सकता था।

"तुम ऊपर, यहाँ, क्यों नहीं आ जाती हो?" उसने कहा—"इस सोते की चौड़ाई को अपने बीच रखे बिना हम ज्यादा अच्छी तरह बातें कर सकते हैं।"

उसने तेजी से अपना सिर झटक दिया—"मेरा खयाल है, मेरे पास तुमसे बातें करने के लिए कुछ भी नहीं है—" वह बोली—"किसी अजनबी के साथ नहीं, जो यों टपकता फिरता है......"

"ठीक है, तब—" उसने कहा—"मुझे तुम्हारे पास आना पड़ेगा।"

बिना किसी पूर्वसूचना और तैयारी के वह पूरे कपड़े पहने पानी में कूद पड़ा। उसके इस तरह कूदने से पानी की एक लहर कौनी की ओर बढ़कर उसके चेहरे पर से होकर गुजर गयी। वह हाँफती हुई पीछे हट गयी। वह अपने हाथों से अपनी आँखों पर छलक आये पानी की बूंदों को पोंछने लगी। जब वह उन्हें पोंछ कर अपनी आँखें साफ कर चुकी, केरम उसकी बगल में खड़ा था। और उसके कंधे के नीचे का भाग पानी के भीतर था।

"कैसी हो तुम?" उसने गम्भीरता से कहा—"क्या तुम यहाँ बहुधा तैरने आया करती हो?"

यह किसी पतली झिल्ली की तरह काँप रही थी। केरम की कमीज उसके शरीर से चिपक गयी थी और उसकी गतिशील हृष्ट-पुष्ट माँसपेशियाँ कमीज के भीतर से कौनी को दिखायी दे रही थीं। यह उसकी नग्नता से अधिक उत्तेजक था।

"बस......कभी-कदात्—" उसने कहा—"अब मुझे जाना है। मैं........"

केरम ने अपने हाथ बढ़ाकर उसकी बाँहें थाम लीं। उसके हाथ बड़े थे और कौनी को कसकर पकड़े हुए थे। "तुम अभी यहाँ आयी हो—" उसने कहा—"और जब मैंने तुम्हारा साथ देने का निश्चय किया, तो अब यहाँ से जाओ मत।"

वह हिली-डुली नहीं। "अच्छी बात है—" वह बोली। पानी उतना ठंडा नहीं था; लेकिन उसके दाँत बज रहे थे। "अच्छी बात है, मैं कुछ मिनटों तक और ठहर जाऊँगी।"

केरम ने उसे छोड़ दिया और आराम की साँस ली। "तुम यहाँ नजदीक ही रहती हो, कौनी?"

कौनी ने घाटी की ओर अपना सिर घुमाया—"पीछे, वहाँ! बस, थोड़ी ही देर का रास्ता है।"

वह उसे साहसपूर्वक घूरता रहा। उसकी आँखों में प्रशंसा थी—"तुम बड़ी खूबसूरत हो—यहाँ रहने के लायक नहीं।" उसने अपने होंठ दबाये और अपना सिर एक ओर झुका लिया। "मैं काफी घूमा हूँ और बहुत-सी लड़कियाँ देखी हैं। लेकिन मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने तुमसे अधिक सुंदर लड़की भी कभी देखी हो।" उसने अपना एक हाथ उठाकर कौनी का गाल छू लिया—"भीगे और नीचे लटक कर चेहरे पर झूलते बालों के साथ भी कोई लड़की मुझे तुमसे अधिक सुंदर नहीं दिखी।"

कौनी उसके हाथ के स्पर्श से दूर हट गयी। "नहीं—" उसने तीखे स्वर स्वर में कहा।

केरम मुस्कराया; लेकिन उसकी आँखों में इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उसकी आँखों में वैसी ही गर्मी भरी थी और वे कुछ पूछ रही थीं। कौनी अपने चेहरे पर पड़ती उन आँखों में झलकनेवाले प्रश्न का अनुभव कर रही थी। उसने केरम से परे देखा। वह अपने हाथ हिला रही थी, जैसे वह तैर कर वहाँ से चली जाने वाली है और पानी के भीतर उसके हाथ केरम को अपनी बगल

से धकेल रहे थे। वह दूर खिसक आयी और अचानक बड़ी तेजी से तैरने लगी। उसका यह कार्य बिलकुल किसी पागल की तरह ही था और वह कुत्ते की तरह पानी काटती सोते के उस दूर के किनारे की ओर बढ़ रही थी। लेकिन केरम उसके पीछे-पीछे तैरता रहा और जब वह दूसरी ओर पहुँचकर, कठिनाई से साँस लेती हुई खड़ी हुई, केरम पहले के समान ही उससे सटकर खड़ा था।

"छिः!" वह बोला—"तुम खूबसूरत हो। आज रात क्या तुम मेरे साथ सिनेमा देखने चल सकती हो?"

कौनी ने अपने सिर को झटका दिया और पूरी तरह घूमकर उसके सामने हो गयी। अब वह सुरक्षित थी। वह इसे जानती थी और वह इसे काम में भी लाने वाली थी। सो उसने केरम की ओर गौर से देखा। वह जैसे जान से बड़ा था और उसके कंधे नाक्स के कंधों के समान ही भारी और चौड़े थे। अजाने ही उन कंधों का स्पर्श उसे याद हो आया, जब उसने नाक्स की बाँहों की बगल से अपनी बाँहें उलझाकर उन्हें ऊपर ला, कसकर पकड़ लिया था और नाक्स को स्वयं से बिलकुल चिपका रखा था।

"मैं ऐसा नहीं सोचती—" वह बोली—"और मेरा पति इसे पसंद भी नहीं करने वाला है।"

मानो वे जादू के शब्द थे, जो केरम को उसकी नजरों के आगे से गायब कर देते। किंतु केरम वहाँ से नहीं हिला। बस, उसकी आँखों में एक चमक आ गयी थी। कौनी ने उन आँखों में पहले जो सवाल देखा था, उसका जवाब अब उन्हीं आँखों में देख रही थी और उसे फिर डर लगने लगा। सिहरन महसूस करती हुई उसने अपने शरीर को अपनी बाँहों में कस लिया और फिर भी वह सिहरन से कुछ अधिक महसूस कर रही थी। अपने भीतर वह एक प्रकार की उष्णता अनुभव कर रही थी, जिसमें उत्सुकता की भावना भी थी और अपनी उस उष्णता को वह छू नहीं पा रही थी।

"कोई भी पति, जो तुम जैसी खूबसूरत औरत को अकेली तैरने जाने देता है, अक्लमंद नहीं है।" केरम बोला। अब उसे विश्वास हो गया था। वह सोच रहा था, अगर बात ऐसी नहीं होती, तो कौनी शुरू में ही वहाँ से चली गयी होती। किंतु अब उसे किसी प्रकार का संदेह नहीं था। अपने भीतर उसने चिर-परिचित उत्तेजना-सी अनुभव की, जो उसे सिहरा दे रही थी। और वह सिर्फ एक ही तरीका जानता था—साहस! हमेशा उसका यही

तरीका रहा है, कभी काम दे जाता था, कभी नहीं। यह तो उस औरत पर निर्भर करता था।

कौनी ने पानी के नीचे केरम के हाथ का स्पर्श अनुभव किया। वह हाथ उसके नंगे पैरों पर औंधा पड़ा रहा; फिर ऊपर की ओर बढ़ने लगा। अब वह उसके योनि-पट को ढँकने वाले कपड़े को दबा रहा था। दबाता हुआ हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़ा और कौनी ने मानो अपने-आप से ही, यहाँ से छिटक कर दूर हो जाने और भागकर घर के सुरक्षित वातावरण में लौट जाने की बात कही।

"नहीं!" वह तीखे स्वर में चिल्लायी—"क्या तुम नहीं..."

किंतु वह हिली नहीं। उसने अपने पैरों को अलग करने के लिए वेग से हिलाया और जब यह खींच-तान समाप्त हो गयी, वह केरम के पहले से ज्यादा करीब खड़ी थी। वह आश्चर्यचकित रह गयी। इस परिणाम की उसने कल्पना नहीं की थी। केरम की दूसरी बाँह ने उसे अपने घेरे में लेकर दोनों को एक-दूसरे से सटा दिया और कौनी उसके पैरों की ताकत और तनाव महसूस कर रही थी।

"हे भगवान!" वह बोली—"हे भगवान! नहीं!" उसने उसके सीने की दूसरी ओर सिर घुमाकर अपना मुँह छिपा लिया। उसके पैर काँप रहे थे और वह उनकी कमजोरी महसूस कर रही थी। उनकी इच्छाशक्ति कमजोर पड़ती जा रही थी। वह जेसे जान के प्रति ऐसा नहीं करना चाहती थी। मैं जेसे जान के प्रति ऐसा नहीं कर सकती—उसने सोचा। लेकिन केरम के कंधे, उनकी बनावट, उनकी विशालता—नाक्स के बाद से फिर ऐसी उत्तेजना उसने कभी नहीं अनुभव की थी। जेसे जान कभी उसे इस गहराई तक नहीं ले आ पाया था—सम्भोग के द्वारा भी नहीं!

"अच्छी बात है, बेबी!" केरम ने कहा। उन दोनों के बीच जो व्यवधान था, उसके तनाव से उसकी आवाज़ धीमी, रूखी और सख्त थी! "अच्छी बात है, प्रिये। आओ!"

पानी से निकल कर वह चुपचाप उसके पीछे हो ली। किनारे पर ऊपर की ओर चढ़ते हुए वह अपने-आप से कह रही थी—"नहीं, यह सच नहीं है। ऐसा नहीं होगा। जेसे जान के प्रति वह ऐसा नहीं कर सकती। जेसे जान उसके प्रति कितना दयालु है। उसने उसे वह शृंगार-मेज खरीद दी थी, जिसे वह बहुत चाहती थी और वह उसके प्रति ऐसा नहीं करेगी। उसकी नहाने की

पोशाक उसे बचायेगी। उसके और उसके विश्वासघात के बीच उसकी पोशाक का अजेय कवच है—" और उसके दिमाग ने फुसफुसा कर कहा—"लेकिन इससे बाहर निकल आना भी बुरा होगा। वह बड़ा भद्दा और सिहरन पैदा करने वाला होगा......"

वे उस रास्ते से होकर पेड़ों में भीतर की ओर चलते रहे। केरम उसके आगे-आगे चल रहा था। वह उसे देखने के लिए पीछे की ओर तब तक मुड़ा भी नहीं, जब तक वह रुक नहीं गया। उसने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया और जमीन पर लेटा दिया। कौनी उससे जंगल में और भीतर, नदी की ओर चलने को कहना चाहती थी; लेकिन वह कह नहीं सकी। वह अगले दो कदम भी नहीं चल पाती। वे अगल-बगल लेट गये और केरम ने उसके पैरों के बीच में अपने पैर लगा दिये। उसने उसे अपने से चिपका लिया और कौनी के हाथ उसके कंधों की ओर बढ़े। उसने उसके कन्धों के नीचे से अपने हाथ निकाल कर फँसा लिये और उसे कसकर अपने से चिपका लिया। "नाक्स के साथ जैसा होता, वैसा ही यह भी होने जा रहा है—" उसने सोचा—"मैं अपनी आँखें बंद कर ले सकती हूँ और यह कल्पना कर ले सकती हूँ कि यह नाक्स है। और मैं जेसे के साथ ऐसा कभी नहीं सोच सकी।" केरम अपने हाथ उसके नहाने की पोशाक के भीतर उसके शरीर पर फिरा रहा था। उसके हाथ के दबाव से वह सिकुड़ती जा रही थी। उसकी नहाने की पोशाक उत्तेजना असह्य होने से ऐंठ कर फट गयी।

"उतारो इसे—" केरम ने कहा—"उतारो इसे। मैं......"

कौनी ने नहाने की पोशाक की पट्टियों पर अपने हाथ रखकर उन्हें खोल दिया और उस भीगी हुई पोशाक को केरम से अलग हटकर जल्दी-जल्दी उतारने लगी। केरम उठकर बैठ गया। कौनी के नंगे शरीर पर रखे उसके गर्म हाथों के समान ही उसकी आँखों में भी गरमाहट झलक आयी थी। उसने पोशाक उतारने में कौनी की मदद करनी चाहिए; लेकिन उसने यहाँ अपना फूहड़पन ही दिखाया और कौनी ने उसे अधीरता से दूर ढकेल दिया, जबतक कि वह बदन पर चिपकी उस पोशाक से बिलकुल मुक्त नहीं हो गयी।

"हे भगवान!" केरम ने कहा। उसेन उसे फिर नीचे खींच लिया और कौनी ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह मन-ही-मन "नाक्स, नाक्स, नाक्स" बार-बार दुहरा रही थी और अपने ऊपर झुकते आ रहे केरम के शरीर का भारीपन और वजन महसूस कर रही थी।

और तब, जब वह अपनी साँस रोक, उसके लिए अपना शरीर थोड़ा ऊपर उठा रही थी, केरम विस्मय से सर्द बन दूर हट गया। उसी क्षण उन्हें एक आवाज़ सुनायी दी—"यह क्या हरकत हो रही है यहाँ?"

कौनी उठकर बैठ गयी। वह केरम से अलग सिकुड़ती जा रही थी, मानो उसके भीतर की उत्तेजना उसे ऐसा नहीं करने देगी। उसने नाक्स को वहाँ खड़ा देखा। "ओह! नहीं!" उसने भीतर-ही-भीतर भयभीत होकर सोचा। "यह सत्य नहीं है। यह सब मेरे साथ बिलकुल ही नहीं घट रहा है।" नाक्स के हाथ उसकी बगल में लटक रहे थे और उसकी मुट्ठियाँ कसकर बँधी हुई थीं। सख्ती से मिंचे उसके होंठों के भीतर क्रोध से सटे उसके दाँतों को कौनी जैसे देख रही थी।

"देखिये, महाशय!" केरम ने कहा। वह अब तक उठकर खड़ा हो चुका था। वह स्तम्भित था, उसकी आँखों में विस्मय की छाया थी और उसके चेहरे के साथ ही वे सफेद नजर आने लगी थीं—"देखिये, महाशय! मैं......

नाक्स उसकी ओर आगे बढ़ा। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये। केरम मुड़ा और भागने लगा और तब नाक्स उछला। उसने घुमाकर अपना एक पैर उसके डगमगाते पैरों में अड़ा दिया और केरम अचानक मुँह के बल जोरों से जमीन पर गिर पड़ा। कौनी ने तेजी से एक साथ उसके दाँतों को बजते सुना। केरम ने फिर उठने की कोशिश की। उसने अपने हाथ अपने सामने कर लिये थे। नाक्स ने उसकी मदद की। उसने उसकी वह लम्बी पोशाक गर्दन के नजदीक कसकर पकड़ते हुए उसे उठाकर खड़ा कर दिया।

"मैं तुम्हें दोष नहीं देता।" उसने कहा। उसने उसके सिर की बगल में एक जोरदार घूँसा मारा। "यह तुम्हारा दोष नहीं है। अंगूर की नीची लटकती बेलों पर लगे अंगूरों के समान ही तुम्हें यह मिल गयी। लेकिन तुम यहाँ से चले जाओ। सुन रहे हो न? सीधे यहाँ से भाग जाओ।"

उसने फिर केरम को मारा और उसे दूर ढकेल दिया, जैसे उसने अपने हाथों से कोई गंदी चीज पकड़ रखी थी। केरम लड़खड़ाया; लेकिन उसने स्वयं को सँभाल लिया। वह नाक्स से दूर, पीछे की ओर खिसकता जा रहा था।

"देखिये, महाशय!" उसने कहा—"मैं बस......."

"भागो यहाँ से—" नाक्स बोला—"मुझे इसके बारे में मत बताओ। बस, यहाँ से भाग जाओ।"

कौनी की उत्तेजना धीरे-धीरे कम हो रही थी। वह जमीन पर स्तब्ध बैठी दोनों को निहारती रही और उसे यह होश नहीं था कि उसकी वासना आखिर बिना पूरा हुए ही, समाप्त हो गयी थी। तब नाक्स उसकी ओर मुड़ा। उसकी आँखें कौनी के नंगे जिस्म को जैसे खुरच रही थीं और कौनी ने लपक कर अपने नहाने की पोशाक उठा ली और उसे अपने और नाक्स के बीच कर लिया।

नाक्स खड़ा उसके गोरे शरीर और उसकी अभी भी चमक रहीं चौड़ी आँखों को घूरता रहा। "यह सोचना कि मैं..." उसने सोचा—"यह सोचना कि मैं ...... और जेसे जान ......" खजूर के कसैले स्वाद के समान ही वह अपने भीतर अनुभव कर रहा था।

"निर्लज्ज!" उसने कहा—"मुझे चाहिए था..."

वह उसकी ओर बढ़ा और वह उससे दूर सिकुड़ गयी। "मैं इसे रोक नहीं सकी—" उसने उन्मत्त की तरह कहा—"मैं नहीं रोक सकी। मैं कह रही हूँ तुमसे, मैं..."

"नहीं।" नाक्स ने कहा—"मेरा भी अनुमान है, तुम इसे नहीं रोक सकी। तुम्हारी पैदाइश ही ऐसी है।" वह रुक गया और उसने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया—"लेकिन तुम रोक सको या नहीं, मैं तुम्हें इसी रूप में घर ले चलकर जेसे जान को दिखा देनेवाला हूँ। सम्भव है, उसने तुम्हारे सम्बंध में जो सुंदर तस्वीर अपने दिमाग में रख छोड़ी है, वह इससे सदा के लिए समाप्त हो जाये।"

वह अपने नहाने की भीगी पोशाक पर भहरा गयी। "उससे मत कहना यह—" उसने संतापयुक्त स्वर में कहा।

"वह मेरा भाई है—" नाक्स ने उग्र रूप से कहा—"जो-कुछ मैंने आज देखा है, उसे उससे छिपाने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।"

वह सीधी खड़ी हो गयी और तेज स्वर में बोली—"तुम्हें यह कहने का अधिकार है। तुम्हीं ने इसे शुरू किया, नाक्स डनबार! तुम्हीं पहले थे। तुमने शुरू किया इसे।"

वह उसकी ओर बढ़ता-बढ़ता रुक गया। उसका हाथ पकड़ कर उसी प्रकार नंगी, उसे जेसे जान के पास वह ले जाने के लिए तैयार था।

"मुझे दोष मत दो—" उसने कहा—"मैंने तुम्हें ऐसा नहीं बनाया, एक...'

"हाँ!" वह बोली। उसकी आवाज़ अब धीमी थी—"तुम्हीं दोषी हो। तुमने मुझे अपनी ओर अकार्षित किया, मुझे वश में कर लिया और तब तुमने मुझे छोड़ दिया।" उसने उसकी ओर आँखें उठाकर देखा—"मैंने इसीलिए जेसे जान से विवाह किया, जिससे मैं उसी घर में रह सकूँ—जिससे मैं तुम्हें देख सकूँ।"

नाक्स ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया। और फिर भी उसे विश्वास करना पड़ रहा था। उसे याद हो आया कि कुछ रातें एक साथ बिताने के बाद कौनी उसे किस प्रकार देखती रहती थी। दूसरी लड़कियों के साथ उसे नाचते और घुलते-मिलते समय कौनी की आँखें उसे देखती रहती थीं। नाचों के बीच में वह हमेशा उससे इधर-उधर की साधारण बातें करने आती थी। उसकी आवाज़ हल्की और उत्साह से भरी होती थी। किंतु अब वह जान गया था कि कौनी की वह आवाज़ उसकी सही आवाज़ नहीं थी। जेसे जान से शादी करने के बाद भी, घर में उसके साथ रह कर, यही बात थी और इसीसे वह स्वयं को उसके निकट अशांत-सा अनुभव करता था। उसने सोचा था, वह एक स्मृति-भर थी; लेकिन इसके बजाय, वह भावना हमेशा बनी रही।

"तब तुम्हें जेसे जान से शादी नहीं करनी चाहिए थी—" उसने कहा। वह अब और शांत हो चुका था। वह स्थिर खड़ा था और उसकी ओर उदासीनता से देख रहा था। वह सोच रहा था—"काश! घर पर किसी के मिल जाने से बचने के लिए इधर से न आकर, घाटी से सीधी बाहर जानेवाली सड़क से ही जाता वह। अगर वह सीधा उस रास्ते चला गया होता, तो अब तक टी. वी. ए. वालों के पास पहुँच चुका होता और उसके साथ ही घाटी और घाटी की सारी चीजें पीछे छूट चुकी होतीं।" अचानक उसकी इच्छा हुई कि वह उसे उसी जगह छोड़कर अपनी राह चला जाये और कौनी अपनी अतृप्त कामना और अपनी बेवफाई को खुद सुलझाती रहे—अपने किये पर पश्चात्ताप करे।

"मैंने सोचा..." वह बोली।

नाक्स को फिर क्रोध चढ़ आया—"तुमने सोचा, मैं भी तुम्हें इसी तरह झाड़ियों में ले जाया करूँगा—" वह बोला—"यही तुमने सोचा था—है न?"

उसे जवाब नहीं मिला। जवाब की उसने उम्मीद भी नहीं की थी। उसकी ओर गौर से देखते हुए वह फिर शांत हो गया।

"अच्छी बात है—" अंततः उसने कहा। उसका क्रोध बिलकुल ही खत्म

हो चुका था और उसके स्थान पर नफरत और कौनी के शब्दों से अचानक ही पहुँची चोट की भावना आ गयी थी—"तुम सुरक्षित हो। तुम बिलकुल सुरक्षित हो। मैं जेसे जान से अब फिर नहीं मिलूँगा। मैं इसी वक्त यह घाटी छोड़ रहा हूँ। मैं टी. वी. ए. वालों के लिए काम करने जा रहा हूँ।"

"तुम जा रहे हो ?" वह बोली—"तुम नहीं..."

"नहीं!" वह बोला। उसकी आवाज़ सख्त और तेज थी—"लेकिन एक बात मुझे कह लेने दो, कौनी ! अगर मैंने तुम्हारे और किसी दूसरे आदमी के बारे में फुसफुसाहट भी सुनी, तो मैं वापस आ जाऊँगा। अगर तुमने मेरे भाई के पीठ-पीछे कभी झाड़ियों में इस तरह पड़ रहने की बात सोची भी, तो मुझे यह मालूम हो जायेगा। और तब मैं लौट आऊँगा और अपने भाई की पत्नी का तुम्हारा रूप नष्ट कर दूँगा। तुम सुन रही हो न ?"

"हाँ!" वह बोली—"मैं सुन रही हूँ।"

वह उसके निकट एक डग बढ़ आया। "और मैं इसका विश्वास कर लेना चाहता हूँ कि तुम इसे याद रखोगी—" उसने कहा—"मैं तुम्हें सजा देनेवाला हूँ—ठीक उसी तरह, जैसा मैं जेसे जान की जगह पर होने से देता।" उसने उसकी बाँह पर अपना हाथ रख दिया। कौनी ने जब झटका देकर अपने को छुड़ाने की कोशिश की, तो उसने अपनी पकड़ मजबूत कर दी। उसने कौनी को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। उसके नहाने की पोशाक उसकी पकड़ से छूट कर गिर पड़ी। "मैं तुम्हें आज का यह दिन सदा के लिए याद करा देनेवाला हूँ।"

उसने हाथ घुमाकर पूरे वेग से उसकी कोमल चमड़ी पर प्रहार किया और वह रो पड़ी। उसने अपना हाथ फिर उठाया और अपनी खुली हथेली से फिर मारा उसे। पीड़ा से कौनी का शरीर ऐंठ-सा उठा और नाक्स ने उसे गिरने से बचाने के लिए कूल्हे के पास पकड़ लिया। उसके हाथ कड़े थे। उसकी हथेली भी सींग के समान सख्त थी और कौनी की आँखों में आँसू छलक आये। नाक्स उसे मारता रहा, मारता रहा और तब कौनी ने अपने को छुड़ाने का प्रयास बंद कर दिया। वह फिर खड़ी इंतजार करती रही कि नाक्स उसे मारे।

"नाक्स!" उसने कहा—"उसने अभी शुरू भी नहीं किया था। तुम खतम कर डालो। खतम कर डालो मुझे अब।"

वह उसके सामने निर्लज्ज-सी खड़ी थी और जानवर की तरह छोटे-छोटे डग भरती अपना शरीर उसके निकट ले आती जा रही थी। नाक्स रुक गया।

उसका हाथ ऊपर उठा रह गया और उसने कौनी के चेहरे पर आँखें गड़ा दीं।

"क्या ?" उसने पूछा। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"मैं चाहती हूँ..." वह बोली—"मैं अभी भी चाहती हूँ..." उसने अपना खाली हाथ बढ़ाकर नाक्स की बाँह पकड़ ली और उसे अपने पास खींचा। वह उसकी ओर बड़ी गम्भीरता से देख रही थी। "तुम जा रहे हो, नाक्स ! तुम फिर जेसे जान से कभी नहीं मिलोगे। तुम वैसा कर......"

नाक्स ने उसकी बाँह छोड़ दी। कौनी को मारने के लिए उसने अपना जो हाथ ऊपर उठा रखा था, उसे नीचे गिरा लिया। वह उसे फिर नहीं छू सकता था—सजा देने के लिए भी नहीं।

"तुम्हारे साथ बस, एक ही बात गलत है—" उसने रुखाई से कहा—"तुम बेशर्म हो। तुम कुतिया हो।"

पर ये शब्द कौनी को विचलित नहीं कर सके। वह नजदीक चली आयी और उस पर झुक गयी। उसकी आँखों में चमक और निर्लज्जता झाँक रही थी। "नाक्स !" वह बोली—"एक बार तुमने इसे पसंद किया था। तुम..."

उसे रोकने का एक ही रास्ता था। नाक्स ने उसे अपने करीब आने दिया। कौनी उसके जिस्म से कसकर चिपटती गयी और नाक्स इंतजार करता रहा। कौनी की लालसा के बोझ के नीचे वह स्थिर खड़ा था। उसके लिए ऐसा करना मुश्किल नहीं था; क्योंकि उसमें सचमुच ही स्वयं पर काबू पाने की माद्दा थी। वह इंतजार करता रहा और कौनी उससे चिपटती गयी और वह उसी तरह इन्तजार करता रहा। और तब कौनी रुक गयी। उसने नजरें उठाकर नाक्स की ओर देखा और नाक्स ने उसकी आँखों की चमक को बुझते देखा। उससे चिपटने की प्रक्रिया रुक गयी और कौनी नाक्स की तरह ही शांत और स्थिर खड़ी हो गयी।

वह उससे दूर हट आयी और झुककर उसने अपने नहाने की पोशाक उठा ली। वह उसके सामने लज्जित नहीं थी और बिना किसी संकोच के उसने अपने नहाने की पोशाक फिर-से पहन ली। यह ऐसा था, जैसे संकोच और आत्मप्यार की भावना भी उसके मन से बिलकुल निकल चुकी थी। नहाने की वह पोशाक ठंडी और सिगसिपी थी और जमीन पर पड़ी रहने के कारण उसमें रेत और गर्द लग गयी थी। लेकिन उसने इसकी परवाह नहीं की।

"विदा, कौनी !" वह बोला—"मैं अब जा रहा हूँ।"

"विदा, नाक्स!" उसने कहा। उसकी आवाज़ नाक्स को अपने से उतनी ही दूर लगी, जितनी दूर उससे उसके पिता का आशीर्वाद था।

वह मुड़ा और चलने लगा। फिर वह रुक गया और घूमकर उसकी ओर देखा। "जेसे जान तुम्हें प्यार करता है, कौनी!" उसने कहा—"मैं चाहता हूँ, तुम इसे याद रखो। मैंने ऐसा कोई और आदमी नहीं देखा है, जो अपनी पत्नी को जेसे जान की तरह प्यार करता हो।"

कौनी सीधी खड़ी उसकी ओर देखती रही। उसका चेहरा निर्विकार था और आँखें शांत थीं—जैसे नाक्स के शरीर का स्पर्श, उसे लालसा से निराशा और फिर लालसा से निराशा की स्थिति में लाने के बजाय, उसके जिस्म में समा गया था और उसे संतुष्ट कर गया था। वह शांत, निर्विकार खड़ी रही और उसका मस्तिष्क शरीर के समान ही सर्द था।

"विदा, नाक्स!" उसने कहा और नाक्स यह जान भी नहीं पाया कि कौनी ने उसकी बात सुनी थी या नहीं। वह चलता हुआ उससे दूर होता गया। वह जान रहा था कि सब समाप्त हो चुका था अब—उसी तरह, जिस तरह उसका घाटी का जीवन समाप्त हो चुका था। वह मैथ्यू से रुष्ट नहीं था; लेकिन वह जानता था कि उसकी लम्बी प्रतीक्षा के बाद अब उसके जाने का समय आ गया था। लेकिन वह घाटी और वहाँ की सारी चीजों को अपने दिमाग से तब तक पीछे नहीं ढकेल सका, जब तक नदी पर पड़े लकड़ी के कुंदे से होकर उसे पार करता हुआ वह शहर जाने के रास्ते पर नहीं आ गया। वह अब तेजी से चल रहा था और उस काम और जीवन की ओर बढ़ता जा रहा था, जिसे उसने अपने लिए प्राप्त कर लेने की आशा कर रखी थी।

जब तक वह पेड़ों से होकर ओझल नहीं हो गया, कौनी खड़ी उसे देखती रही। तब वह धीरे-धीरे उसके पीछे, सोते की ओर चलने लगी। वह थकान अनुभव कर रही थी और चोट खाया हुआ उसका शरीर उसे शून्य-सा लग रहा था। लकड़ी के उस पुल के सीधे रास्ते की उपेक्षा करती हुई वह पानी में उतर पड़ी और तैर कर दूसरी ओर पहुँच गयी। बाहर निकल कर उसने अपने जिस्म से चूते पानी की परवाह नहीं की और बिना तौलिया से जिस्म पोंछे अपनी उजली पोशाक और जूते पहनने लगी। उसके भीगे बाल बेतरतीबी से लटक आये थे और उसके चेहरे के चारों ओर छितरा गये थे। इस नुकसान को पूरा करने में काफी देर लगेगी और इसी वज़ह से वह कभी तैरना पसंद नहीं करती थी।

जब वह चलने को तैयार हो गयी, तो उसने देर कर दी। वह लगभग शून्य-चित्त हो गयी थी। नाक्स के चले जाने से घाटी अब सूनी होगी। और उसके जाने का तरीका......कौनी अब जान गयी थी कि अब वह किसी भी आदमी के साथ, अपनी आँखें बंद कर, नाक्स की उपस्थिति अपने भीतर नहीं अनुभव कर सकती थी। यह बात भी अब चली गयी थी—खत्म हो गयी थी, उसी प्रकार जैसे कि नाक्स के मन में यह भावना बहुत पहले ही मर चुकी थी। अब उसके पास सिर्फ जेसे जान होगा और उसका विनम्र प्यार, जब कि वह मर्द का हिम्मती और सीधे तरीके से प्यार जतलानेवाला होना पसंद करती थी।

उसने घर की ओर मुँह किया और चलने लगी। वह धीरे-धीरे चल रही थी और साये से बाहर आते ही, उसने अचानक सूरज की तेज रोशनी महसूस की। लेकिन केरम के कंधे पुष्ट और विशाल थे और उनसे आसानी से लटका जा सकता था। और वह किसी भी औरत के लिए निश्चय ही पर्याप्त रूप से साहसी और सीधे तरीकों से काम लेने वाला था। केरम की याद आते ही कौनी के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान खिल उठी।

और नाक्स हमेशा के लिए जा चुका था।

वह चलती हुई घर तक आयी और सीढ़ियाँ चढ़कर बरामदे में पहुँच गयी। उसके कदमों की आहट सुन मैथ्यू ने रसोई-घर से अपना सिर बाहर निकाल कर देखा। कौनी को देख कर मैथ्यू के मुख पर निराशा छा गयी और कौनी उसे अपनी ओर देखते देखकर भी उससे बिना कुछ बोले अपने कमरे के दरवाजे तक चली आयी। उसका हाथ जब दरवाजे के मुठ्ठे पर था, तब मैथ्यू की आवाज़ ने उसे रोक दिया।

"कौनी!" वह बोला—"नाक्स को तुमने कहीं देखा है?"

वह उसकी ओर घूम पड़ी। "हाँ!" वह बोली—"तैरने के उस स्थान के निकट उसने रुककर मुझसे बातें की थीं। उसने मुझसे कहा कि वह यहाँ से जा रहा है, वह टी. वी. ए. के लिए काम करने जा रहा है। वहाँ आकर उसने चलने के पहले मुझसे विदा ली।"

मैथ्यू उसकी ओर देखता रह गया। कौनी की आवाज़ में तटस्थता और बेफिक्री थी। "धन्यवाद!" मैथ्यू ने अंततः कहा—"धन्यवाद, कौनी! मैं सिर्फ उसके सम्बंध में जानना चाहता था।"

वह कमरे के भीतर चली गयी और उसने भीतर से दरवाजा बंद कर दिया। मैथ्यू स्थिर खड़ा रहा। क्षणभर तक वह नीचे फर्श की ओर देखता

रहा। उसका मन भारी हो गया था। निश्चय ही, वह इसे जानता था। भट्टी के निकट से नाक्स के रवाना होने के क्षण से उसे ऐसा ही कुछ महसूस हो रहा था। लेकिन उसने स्वयं को इस पर विश्वास नहीं करने दिया था, जब तक कि अब यह समाप्त भी हो गया था।

वह बरामदे से होते हुए उस कमरे में पहुँचा, जहाँ उसका बूढ़ा पिता छोटी-सी अंगीठी के पास झुका बैठा हुआ था। मैथ्यू ने झुककर उसके लिए अंगीठी की बुझती आग को कुरेद दिया। उस बूढ़े आदमी को अपने काँपते हाथों से ऐसा करने में बड़ी दिक्कत हो रही थी। मैथ्यू जब पूरे एहतियात से अपना यह काम समाप्त कर चुका, तो उसने नजरें उठाकर अपने बूढ़े पिता के चेहरे पर गड़ा दीं। वह अभी भी उसके सामने झुक कर खड़ा था।

"आप कैसे हैं, पापा?" उसने पूछा—"आज आपकी तबीयत कैसी है?"

"अच्छा हूँ, बेटे!" उसकी घरघराती आवाज़ फुसफुसायी—"बस, अच्छा हूँ।"

मैथ्यू खड़ा हो गया। "पापा!" उसने कहा—"नाक्स चला गया। टी. बी. ए. में काम करने के लिए नाक्स घाटी से चला गया।"

उसका बूढ़ा पिता नहीं हिला, उसने नजरें उठाकर देखा भी नहीं। और मैथ्यू यह नहीं कह सकता था कि उसने उसकी बात सुनी भी थी या नहीं। मैथ्यू ने अपनी आवाज धीमी कर ली, जिससे वह निश्चित हो जा सके कि अपने बहरे कानों से उसका बूढ़ा पिता उसकी बात नहीं सुन पायेगा।

"आपके सबसे बड़े लड़के ने भी घाटी छोड़ दी थी, मुझे याद है—" वह बोला—"और आप भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सके थे। कर सके थे क्या? कुछ भी तो नहीं कर सके थे आप।"

मैथ्यू ने देखा कि उसके बूढ़े पिता का सिर अब ऊपर उसकी ओर उठ रहा है। उसका सिर पूरा ऊपर उठने तक और जब तक कि उसके पिता की धुँधली नीली आँखें उसके चेहरे पर नहीं पड़ने लगीं, मैथ्यू चुपचाप खड़ा इंतजार करता रहा।

"अच्छा हूँ, बेटे!" बूढ़े पिता ने कहा—"बिलकुल अच्छा हूँ।"

प्रकरण छः

उस दिन रविवार नहीं था और दिन के उस उजाले में बिना टीका-टिप्पणी का विषय बने राइस अच्छी तरह सज-सँवर नहीं सकता था। लेकिन चारलेन से मिलने जाने के पहले वह सोते में तैरने के लिए जरूर ठहर गया। जाने के पहले वह इतमीनान से नहा लेना चाहता था। उसने काम पर पहनकर जायी जानेवाली एक उजली कमीज और चेस्टर की तरह की लम्बी पोशाक पहन रखी थी। उसने उन्हें उतारकर सावधानी से उनकी तह की और उसे तैरने के लिए बने तख्ते की खूंटी पर रख दिया। फिर वह पानी में गोते लगा गया। पिछली रात से पानी अभी भी ठंडा था। वह साबुन की एक टिकिया भी लेता आया था और उसने बदन रगड़-रगड़ कर साबुन से साफ किया। सोते की बहती लहरों पर चक्कर काटती हुई उजली झाग को वह देखता रहा, जो साबुन से निकली थीं। तब वह अपना बदन सुखाने के लिए पानी से बाहर निकल आया। वह धूप में बैठकर अधीरतापूर्वक अपना बदन सूखने की प्रतीक्षा करने लगा; क्योंकि उसके पास तौलिया नहीं था। बदन सूखने तक वह वहाँ बैठा रहा। अपने भीतर जिस उत्तेजना का वह अनुभव कर रहा था, उसके कारण, वहाँ बैठकर प्रतीक्षा करना भी बड़ा कठिन था।

वह और चारलेन—दोनों आज का दिन साथ ही बिताने वाले थे। जब उसने चारलेन से इसका प्रस्ताव रखा था, तो उसे ऐसा आभास दिलाने की चेष्टा की थी कि वे पिकनिक मनायेंगे; किंतु बात ऐसी नहीं थी। वे जंगल में साथ-साथ घूमनेवाले थे, जो उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। और इसके बारे में सोचते ही वह सिहरा देनेवाली उत्तेजना अनुभव करने लगता था। वह जानता था कि आज उन दोनों के जीवन में कोई बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण घटना घटने वाली है। आज तक उसके इस युवा जीवन में कोई भी लड़की—चाहे वह एक साधारण ही लड़की क्यों न हो—चारलेन की तरह उत्साह दिखाये और प्रेम जताये बिना भी, उसके साथ जंगल में घूमने जाने को राजी नहीं हुई थी। और उसके इस उत्तेजना की वजह सिर्फ चारलेन ही नहीं थी; पिछली रात स्वयं अपना एक अलग कमरा होने की खुशी का भी इसमें थोड़ा हिस्सा था। रात वह अपने कमरे में अकेला था। कमरे में बिछे दूसरे बिस्तरे पर नाक्स हमेशा की भाँति मौजूद नहीं था और पूरे घर में वही

एक ऐसा व्यक्ति था, जिसके पास, मैथ्यू के समान ही, अपना एक अलग कमरा था।

दिन-भर चारलेन के साथ बिताने की यह बात भी कुछ ऐसी ही थी, जैसा नाक्स किया करता था। वह दिन-भर या रात-भर गायब रहता, कभी-कभी तो दिन-रात दोनों समय गायब रहता और जब वह लौटता था, तो थका नजर आता था। वह बिलकुल चुप रहता था और 'हाँ-ना' कुछ नहीं कहता था। इसके अलावा, राइस अब नाक्स की जगह ले रहा था; क्योंकि पिछली रात खाना खाने के समय उसने मैथ्यू की आँखें अपनी ओर गड़ी देखी थीं। वह जैसे बड़ी बारीकी से आँखों-ही-आँखों में उसे परख रहा था। नाक्स जा चुका था और अब राइस और जेसे जान ही बच गये थे।

फिर भी कमरे में एक प्रकार का सूनापन तो था ही। एक या दो बार रात में जब वह जग गया था, उसे ऐसा लगा था, जैसे देर से आने वाला नाक्स अपनी आदत के मुताबिक ही चुपचाप कमरे में आ गया है और दबे पाँव चलते हुए अपने कपड़े उतार कर अंधेरे में ही, अपने बिस्तरे पर लेट जाने वाला है। उसे लगा था, जैसे बिस्तर पर लेटते ही नाक्स के मुख से आराम की एक क्षणिक 'हाय' सुनायी पड़ेगी और जिसका मतलब होगा, वह वह काफी थका हुआ है। लेकिन हर बार राइस को कमरे में अपने सिवा सिर्फ चाँदनी बिखरी दिखायी दी और जब वह अंतिम बार जगा, उसके लिए फिर से नींद लाना बड़ा मुश्किल लग रहा था। आजादी और जिम्मेदारी में एक सूनापन होता है—उसमें राहत नहीं होती और उसे इस प्रकार रहना सीखना होगा।

उसने अपने कपड़े पहन लिये और लकड़ी के उस पुल से होकर उस ओर के रास्ते पर चलने लगा। वह चिंतित था। उसे अब यह आशंका हो रही थी कि चारलेन वहाँ नहीं होगी—ठंडे दिमाग से सोचने के बाद उसने आज के इस कार्यक्रम से अपना हाथ खींच लिया होगा। चाँदनी रात के उल्लास में यह योजना उन्होंने बनायी थी और दिन के इस प्रकाश में उसे भी यह अब पहले से भिन्न लग रही थी। उसने अपनी चाल तेज कर दी। वास्तविकता क्या है, इससे अधिक देर तक अनभिज्ञ रहना उसके लिए असह्य हो उठा था। लेकिन चारलेन वहाँ होगी। उसे वहाँ मौजूद होना ही है। उनकी इस साहसिक योजना में अब तक सब कुछ ठीक ढंग से होता चला आया था और वह जानता था कि यह अब तक के अनुभवों से भिन्न होगा—कोई बहुत बड़ी चीज—कोई बहुत बड़ी घटना घटेगी। आज जब वह चारलेन के शरीर पर हाथ रखेगा,

उसके होंठ चूमेगा—तो यह सब पहले से भिन्न होगा। उनमें एक अधिकार, एक स्वामित्व की भावना होगी, जिसका उसने पहले किसी औरत के साथ कभी अनुभव नहीं किया था।

वह कपास के खेत के किनारे पर पहुँचा और रुक गया। उस गहरी धूप में चमकती अंगूर की उस बेल को वह देख रहा था, जिसके उस ओर अंधेरा था, छाया थी, जिधर जंगल था और दूसरी ओर प्रकाश था, जहाँ से सूरज बिलकुल साफ दिखायी दे रहा था। हरी पत्तियों के बीच पक कर तैयार हो गये काले-काले अंगूरों के गुच्छे उसकी ओर इस तरह देख रहे थे कि वह मन-ही-मन उनका स्वाद भी अनुभव करने लगा। वह अपनी राह छोड़कर बगल से मुड़कर उस पेड़ की जड़ के निकट जा पहुँचा, जिससे अंगूर की बेल लिपटी हुई थी। वहाँ खड़े होकर उसने ऊपर अंगूरों की ओर देखा। अपने अभी-अभी स्नान करने और साफ-धुले कपड़ों की बात याद कर वह क्षणभर के लिए हिचकिचाया और तब पेड़ पर चढ़ने लगा। अचानक ही उसमें इसके लिए स्फूर्ति आ गयी थी।

कुछ दूर तक ऊपर चढ़ने के बाद उसने पेड़ की शाखाओं और अंगूर की लताओं को पकड़ कर उनके सहारे फुर्ती से स्वयं को ऊपर खींच लिया। वह पेड़ के ऊपर एक आरामदेह स्थान पर बैठ गया और अंगूरों के एक गुच्छे की ओर उसने हाथ बढ़ाया। उसने बड़ी सावधानी और कोमलता से उस गुच्छे को तोड़ लिया, जिससे पके अंगूर कहीं छटक कर नीचे जमीन पर नहीं गिर पड़ें। उसने गुच्छे से अंगूर तोड़ कर धीरे से अपने मुँह में रख लिया। कस्तूरी के गंध की तरह उसका कसैला स्वाद उसके मुँह में भर गया। उसने दूसरा अंगूर मुँह में रखा। पेड़ हवा से हिल उठा—बस, एक हल्का कम्पन, जो आरामदेह था, भयोत्पादक नहीं और वह हवा से हिलते पेड़ के साथ आराम से झूलता हुआ अंगूर खाने लगा। दूर पहाड़ियों की ढलान की ओर वह घाटी के खेतों को देख रहा था। सूरज निकले अभी अधिक देर नहीं हुई थी और चारों ओर की हरीतिमा ओस की बूँदों से चमक रही थी। दूर एक मकड़ी के जाले पर उसकी नजर पड़ी और हवा के झोंके से वह जाला सूरज की रोशनी में पड़ते ही किसी आइने के समान चमक उठा। राइस ने अंगूरों के दूसरे गुच्छे के लिए हाथ बढ़ाया। थोड़ी दूर पर जो अंगूरों का गुच्छा था, वह उसके मन में लोभ उत्पन्न कर रहा था और उसे पाने के लिए उसे थोड़ा आगे की ओर झुकना पड़ा। तब वह फिर आराम से वापस अपनी जगह पर बैठ गया।

उसने खेत की ओर जाने वाले रास्ते पर मैथ्यू को देखा। वह घास काटने वाली एक मशीन पर सवार था, जिसे प्रिंस और मौली खींच रहे थे। तभी मुँह की ओर ले जाते समय हाथ से छूट जानेवाले एक अंगूर की ओर वह देखता रह गया। वह स्वयं को दोषी अनुभव कर रहा था कि आज घास काटने में मैथ्यू की सहायता नहीं कर रहा है। लेकिन आज, राइस ने निश्चय किया, मैथ्यू को सचमुच किसी मदद की जरूरत नहीं थी। घास काटने वाली मशीन को एक ही आदमी एक समय में चला सकता था। चरी काटकर जब एक जगह कर दी जायेगी, तो कल या परसों वह वहाँ होगा। मैथ्यू को जब सही मानी में उसकी जरूरत पड़ेगी, वह हमेशा वहीं होगा।

उसने अंगूर जल्दी से खतम कर दिये और दूसरे गुच्छे के बारे में विचार करने लगा। लेकिन अब तक वह काफी अंगूर खा चुका था और वह सिर्फ इस डर से देर कर रहा था कि जब वह पहुँचेगा, तो चारलेन वहाँ नहीं होगी। वह पेड़ से नीचे उतरने लगा, जवानी की स्वाभाविक उतावली फिर उस पर सवार हो गयी और एक डाल पर उसका पैर फिसल गया। वह अधर में लटकने लगा। पेड़ के तने को उसने कसकर पकड़ लिया। इस वक्त वह चारलेन को भूल गया, अपने धुले हुए कपड़ों को भूल गया। नीचे गिर पड़ने के आकस्मिक भय में वह सब कुछ भूल गया। उसे वे कभी नहीं खोज पायेंगे। अंगूर की बेल से लगे इस पेड़ के नीचे उसे खोजने की वे कभी नहीं सोचेंगे —हो सकता है, वे यह भी सोच लें कि राइस भी नाक्स के पीछे-पीछे चुपके से घाटी के बाहर चला गया है।

वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक उसकी कँपकँपाहट दूर नहीं हो गयी और उसके सामने का संसार अपनी निकटता में प्रत्यक्ष नहीं हो उठा। वह अंगूरों के एक पके और घने गुच्छे की ओर एकटक देख रहा था, जो उसकी आँखों से कुछ ही इंच नीचे था। उधर काफी देर तक देखने के बाद वह गुच्छा उसे दिखायी पड़ा था और वह उसे देखता रहा। अंगूरों का वह गुच्छा बड़ा सुडौल और दोषरहित था। एक-एक अंगूर पककर बिलकुल तैयार हो गया था और वृक्ष के उस तने के ऊपर आँसू की बूंदों की तरह ही अंगूर उस गुच्छे में एक-दूसरे से सटे हुए थे। मैं इसे चारलेन के लिए लेता चलूँगा—उसने सोचा।

उसने सावधानी और बड़ी कोमलता से उसे तोड़ लिया। एक अंगूर भी टूट कर उसकी सुडौलता नष्ट न कर दे, इसकी उसने पूरी सावधानी बरती

और उसे एक हाथ में सँभाले, एक ही हाथ के सहारे पेड़ से नीचे उतरने लगा। वह धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से उतर रहा था, जब तक कि उसके पैरों ने जमीन नहीं छू लिया। तब वह कपास के उस खेत के किनारे-किनारे चलने लगा और अंततः पहाड़ी की ओर वाली चढ़ान भी वह चढ़ रहा था। वहाँ दूर, कपास रखने का एक पुराना घर था, जहाँ उन दोनों ने मिलने की बात तय की थी। राइस जब वहाँ पहुँचा, चारलेन उसका इंतजार कर रही थी। वह दरवाजे की सीढ़ी पर बैठी थी और उसने एक उजली पोशाक पहन रखी थी, जो उसके बैठी रहने से चारों ओर फैल सी गयी थी। राइस पेड़ों से निकल कर जब खुली जगह में पहुँचा, तो उसने नजरें ऊपर कीं ओर सूरज की रोशनी में उसके लाल बाल राइस की आँखों के सामने चमक उठे। राइस इससे चौंधिया गया।

"चारलेन !" वह बोला।

"मैं पन्द्रह मिनटों से इन्तजार कर रही हूँ—" वह बोली—"तुमने मुझसे कहा था, तुम इंतजार नहीं करवाओगे।"

उसके इस तरह अधीरता और झुंझलाहट से बोलने से राइस रुक गया। फिर वह आगे बढ़ा ओर उसने अंगूरों का वह गुच्छा उसकी ओर बढ़ा दिया। "मैं तुम्हारे लिए इन्हें लेने में लगा हुआ था—" वह बोला—"ये पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर थे। इन्हें लेने की चेष्टा में मैं तो पेड़ से लगभग गिर ही गया था।"

उसके इस तरह अंगूर अपनी ओर बढ़ाने से चारलेन ने एक झटके के साथ स्वयं को उससे दूर, पीछे की ओर खींच लिया। "नहीं—" उसने कहा—"ये मेरे कपड़े खराब कर देंगे। इन्हें दूर फेंक दो।"

वह फिर स्तब्ध खड़ा रह गया। उसके आगे बढ़े हुए हाथ में सुडौल और बिलकुल तैयार अंगूर लटक रहे थे। यह सब सही तरीके से नहीं हो रहा है—उस तरीके से नहीं, जिसकी उसने कल्पना कर रखी थी। पके हुए गोल अंगूरों की तरह ही दोष-रहित तरीके की उसने कल्पना की थी। अपनी कल्पना में उसने स्वयं को जंगल से निकल कर चारलेन से मिलने के लिए आते देखा था; चारलेन ने बड़ी प्रसन्नता से उसका उपहार स्वीकार कर लिया था और तब उसने उसे कोमलता से अपनी बाँहों में हार्दिक प्रसन्नता से ले लिया था और वे...इसके बाद वह स्पष्ट रूप से अपनी कल्पना भी आँखों से कुछ नहीं देख पाया था; लेकिन इतना उसे विश्वास था कि जो कुछ होगा, वह नवीन और

विशाल होगा तथा उसे इन नाजुक अंगूरों से उसमें ज्यादा मजा आयेगा।

उसने उस विचार को, सहसा यह अनुभव करते ही कि वह कैसी निरर्थक कल्पना कर रहा था, अपना सिर झटक कर दूर फेंक दिया। चारलेन एक लड़की थी, एक औरत; और अलावे, जिस तरह आप लोगों के कहने और करने की कल्पना करते हैं, स्वप्न सँजोते हैं, वे उस तरह कभी नहीं करते हैं—उस तरह कभी नहीं बातें करते हैं। सोची हुई बात कभी बिलकुल सही नहीं उतरती—मानवीय आचरण में उसमें रुकावट आती ही है—बाधा पड़ती ही है। फिर, इन अंगूरों का कोई महत्व भी नहीं था—और चारलेन सफेद पोशाक पहने हुई थी। एक लड़की को अपनी सफेद पोशाकों की तरह की चीजों के बारे में सोचना ही पड़ता है।

"साल के इस वक्त ये थोड़े खट्टे होने लग गये हैं—" उसने कहा। फिर उसने अंगूरों को पीछे जंगल की ओर दूर फेंक दिया और एक छपाक के साथ उनका जमीन पर छितराना देखता रहा। उसने अपनी उँगलियों की ओर देखा। जिस तरह एक लालची के समान उसने अंगूर खाये थे, उससे उसकी उँगलियों में बैंगनी रंग के धब्बे लग गये थे। उसने अपनी उस लम्बी पोशाक के निचले हिस्से में चोरी से उन्हें रगड़ कर साफ कर लिया। नहीं तो, उसकी उँगलियों के ये धब्बे चारलेन की उजली पोशाक में भी धब्बे बना देंगे और वह उसे छू भी नहीं सकता था।

"क्या करने का इरादा है तुम्हारा?" उसने चारलेन की ओर देखते हुए पूछा। दरवाजे पर सफेद पोशाक में उसके बैठने की वह सुंदरता अभी भी उसमें सिहरन पैदा कर रही थी। चारलेन के पीछे के कपास रखने के उस पुराने और ढहते हुए घर की कुरूपता, चारलेन के वहाँ मौजूद रहने से मिट गयी थी और वह भी जब वह दिन उसका अपना दिन था।

वह खूबसूरती के साथ उठ खड़ी हुई और उसके चलते ही उसकी सफेद पोशाक हवा में फहरा उठी। "चलो, हम जंगल में घूमने चलें—" वह बोली।

राइस ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसका छोटा, सुकुमार और नर्म हाथ राइस के हाथों में उष्णता प्रदान कर रहा था और वे उस कपास रखने वाले घर से साथ-साथ चल पड़े। चारलेन उसकी बगल में उससे सटकर चल रही थी। उसका सिर नीचे झुका हुआ था और वह अपने पैरों के आगे की खुरदरी जमीन देख रही थी। राइस को ताज्जुब हो रहा था कि वह

क्या सोच रही है—शायद वह आज के दिन के लिए पछता रही है, इस अकेलेपन का उसे दुख हो रहा है और उनके साथ जो घटना घटने वाली है, उसकी अपरिहार्यता के बारे में चिंतित है। उसे फिर से आश्वस्त करने के लिए वह उसे अपनी बाँह के घेरे में लेने लगा; लेकिन अपनी बाँह बढ़ाते ही उसे अंगूरों के धब्बे की याद हो आयी।

"मुझे खुशी है कि तुम आ गयी—" कुछ दूर तक मौन चल लेने के बाद वह बोला। वह मुस्कराया—"मैं डर रहा था कि तुम नहीं आओगी। जिस क्षण मैंने तुम्हें वहाँ बैठी देखा, उस क्षण के पहले तक मेरे मन में वह डर समाया हुआ था।"

चारलेन ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। "मैं जो वादा करती हूँ, उसे हमेशा पूरा करती हूँ—" वह बोली—"तुमने यह तो नहीं सोचा था कि मैं अपने वादे से मुकर जाऊँगी—क्यों?"

"नहीं......" वह अटक-अटक कर बोला—"मैं बस डर रहा था ...तुम..."

चारलेन ने राइस का हाथ अपनी पीठ के पीछे से खिसकाते हुए अपना हाथ मोड़कर उसका हाथ पकड़ लिया। इससे वह उसके और निकट आ गयी। वह स्वयं को सिर्फ हाथ में हाथ पकड़े रहने की तुलना में, अब अधिक आश्वस्त अनुभव कर रही थी—पहले से अधिक गरमाहट अनुभव कर रही थी।

"मुझे तुमसे डर नहीं लगता, राइस—" वह बोली—"अगर तुम्हारे कहने का मतलब यही है, तो।"

राइस अपने दिल का जोरों से धड़कना महसूस कर रहा था और आखिर अब सब ठीक हो गया था। उसने अचानक बड़ी सफाई से चारलेन की ओर देखा। चारलेन स्वयं भी उसे भयभीत और अनिश्चित-सी दीख पड़ी। शुरू में चारलेन ने अपने स्वयं की आश्वस्तता को प्रमाणित करने के लिए उससे खिंची रहने की जरूरत महसूस की थी। राइस के समान ही वह भी अपने भीतर कँपकँपी अनुभव कर रही थी और राइस अचानक यह जान गया कि अगर वह अपना हाथ उसके दिल पर रख दे, तो उसके अपने दिल की तरह उसका दिल भी उसे जोरों से धड़कता सुनायी देगा।

वह उसे देखने में लीन, उसकी बगल में खामोशी से चलता रहा। इसके पहले वह हमेशा उससे दूर-दूर, रहस्यमय और उत्तेजित रहती थी—स्वयं पर नियंत्रण पाने में—स्वयं को रोकने में वह लगभग अमानवीय हो जाती थी।

जिन भावनाओं से वह परिचित था, उनसे वह कभी तरंगित और विचलित नहीं प्रतीत हुई थी। उसके चुम्बन, उसके गतिशील हाथ, चारलेन को प्रत्युत्तर में अपने नियंत्रित नारीत्व से कभी विचलित नहीं कर पाये थे। आज ऐसा इसलिए है कि हम अभी अकेले हैं—उसने सोचा—मैं और चारलेन और पूरी दुनिया हमारे बीच नहीं है।

किंतु उसके इस आचरण को बिलकुल खुले रूप में प्रत्यक्ष करने के लिए वह आगे कदम नहीं बढ़ायेगा। वह इसे शांति के साथ, उसकी आशा के अनुकूल ही, स्वीकार कर लेगा और अपने दोनों के बीच दिन को अपने स्वाभाविक सही तरीके से ही अपना निर्माण करने देगा। यह दिन उसी तरह उन दोनों के बीच बढ़ेगा, जिस तरह वसंत की जरूरत के मुताबिक अंगूर पैदा हो गये थे।

"नाक्स चला गया—" वह बोला—"वह टी. वी. ए. के लिए काम करने गया है।"

"कब ?" चारलेन इस विषय-परिवर्तन से स्तम्भित रह गयी थी, राइस ने इसे लक्ष्य कर लिया और शायद उसने यह ठीक नहीं किया था आखिर। शायद उसने अपने दोनों के बीच के एकमात्र स्वर्णिम क्षण को अपनी पकड़ से फिसल जाने दिया था और वह क्षण फिर नहीं आयेगा।

"कल—" वह बोला—"वह अचानक उठा और चला गया। पापा इससे विचलित हो उठे हैं, यह मैं तुम्हें कह सकता हूँ।"

"नाक्स क्या शहर में ही काम करेगा ?" वह बोली।

राइस हँस पड़ा—"हो सकता है। लेकिन मेरा खयाल है कि वह काम पाने के लिए बाँध बननेवाली जगह पर जा रहा था। वह उस बड़े बाँध का एक भाग स्वयं बनाना चाहता है।"

वह आगे चलती रही। उसका सिर फिर नीचे झुक गया था और वह अपने ही विचारों में खोयी हुई थी।" मैंने डैडी को यह समझाने की कोशिश की कि वह अपनी जमीन बेच दें और शहर में चलकर रहें—" वह बोली—"लेकिन वे ऐसा नहीं करेंगे। उनका कहना है, गाँव के लोग गाँव के ही योग्य होते हैं।"

"मेरे विचार से, वे ठीक कहते हैं—" राइस ने बड़े आराम से कहा—"तुम तो जानती हो कि हमें मजबूरन अपनी जमीन बेचनी......"

वह एक झटके से रुक गयी। "मैं गाँव की नहीं हूँ—" वह बोली—"मुझे तुम देहाती कभी कहना भी नहीं।"

वह भौंचक-सा उसकी ओर देखता रह गया। उसे ताज्जुब हो रहा था कि चारलेन के मन में यह भावना आयी कहाँ से। निश्चय ही, वह आज अद्‌भुत बरताव कर रही है—पहले वे अंगूर, फिर प्रणय-संकेत और अब उसके बाद इतनी जल्दी यह !

वह मुस्कराया और उसने अपने मन से इस विचार को धो डाला। उस दिन पहली बार उसने उसे अपने बाँहों के घेरे में ले लिया। वह फुर्ती से खुशी-खुशी उस घेरे में चली आयी और राइस ने जब उसे चूमा—तो वह अपने में उष्णता लिये उससे बिलकुल सटी हुई थी। राइस के होंठ काफी देर तक उसके होंठों पर चिपके रहे।

"परमात्मा जानता है, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ —" उसने साँस रोक कर कहा। खुले हुए दिन के प्रकाश में यह चुम्बन बिलकुल भिन्न और उत्तेजक था। इसके पहले उनके बीच सदा रात की आड़ और सुरक्षा रहती थी।

चारलेन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और चलती रही। दस, पंद्रह, बीस कदमों तक वह फिर खामोश रही। राइस अपनी राह में पड़ने वाली झाड़ियों के प्रति सावधानी बरत रहा था और परेशान था, जो उन्हें उसे छूने से रोक देती थीं। वह उन्हें पीछे की ओर झुकाता चल रहा था।

चारलेन ने उसकी ओर तिरछी निगाहों से देखा। "मैं कभी किसी लड़के के साथ जंगलों में नहीं घूमी हूँ"—वह बोली—"मेरे पिता को अगर मालूम हो जाये, तो वे मुझे गोली मार देंगे।"

"या मुझे !" राइस ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

"वह सम्भवतः तुम्हें मुझसे शादी करने के लिए बाध्य कर देंगे—" चारलेन ने चतुरता से बात बनायी— "अगर यहाँ सिर्फ......घूमते ही रहे तो भी !"

राइस ने उसकी पतली कमर अपने हाथ के घेरे में ले ली। "उन्हें मुझ पर बंदूक उठाने की जरूरत नहीं पड़ेगी—" वह बोला—"सच तो यह है कि मैं इसे उनका अनुग्रह समझूँगा।"

वह अचानक रुक गयी और अचानक ही घूमकर उसके ठीक सामने आ गयी। उसने अपने हाथ उसकी कमर पर रख दिये। राइस ने उन हाथों की नमी अपनी पतली कमीज के भीतर से होकर अपने शरीर को जलाती महसूस की, जैसे उसके वे हाथ बुखार ला देने वाले थे।

"क्या तुम सचमुच ऐसा करने वाले हो ?" वह बोली। उसकी आवाज़

तेज थी और आश्चर्य-स्तम्भित रह जाने के कारण वह जल्दी-जल्दी बोल रही थी—"तुम्हारा मतलब है कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो ?"

राइस हिचकिचाता हुए रुक गया और उसने चारलेन के चेहरे की ओर देखा। सच तो यह था कि वह मन से ऐसा नहीं चाहता था। वह विवाह के सम्बंध में नहीं सोच रहा था। इसके बजाय वह अपने इस दिन के अकेलेपन और अवैधता के बारे में सोच रहा था। लेकिन वह उसके शरमाने, उसकी व्यग्रता और अनिश्चितता पर मुस्कराया। वह सोच रहा था—"लगता है, मैंने इस वक्त उसे आश्चर्यचकित कर दिया है।"

"निश्चय ही, मैं इसे चाहता हूँ—" वह बोला—"ओह, हो सकता है, अभी नहीं; लेकिन..."

और तब इस बार चारलेन ने उसे चूम लिया और यह चुम्बन दूसरी तरह का था। उसके होंठ कोमल हो गये थे, जैसे कुछ खोज रहे थे और राइस तत्क्षण समझ गया कि चारलेन ने इसके पहले उसे कभी नहीं चूमा था—सिर्फ चूमने की क्रिया में उसने साथ-भर दिया था। अपनी इस खोज से वह खुश हो गया। उसने उसे कस कर चिपटा लिया और फिर उसे चूम लिया। इस बार चुम्बन का स्वाद अपरिचित और नवीन होने के साथ ही अपने में एक अनोखा माधुर्य लिये हुए था।

चारलेन की आवाज़ राइस की छाती में मुँह छिपाये रहने से उसकी कमीज के कारण फँस-सी गयी—"मैं आज के बारे में......अब उतना बुरा नहीं महसूस कर रही हूँ। मैं नहीं......"

राइस उसकी पीठ पर हौले-हौले अपने हाथ फिराता रहा। वह उसे सहलाते हुए सांत्वना दे रहा था। वह तब तक इंतजार कर रहा था, जब तक कि यह नवीनता और अजनबीपन की भावना चारलेन में स्थिर नहीं हो जाती है। वह अपनी इस सत्रह साल की उम्र में भी, यह बात अच्छी तरह जानता था कि ऐसे मामलों में प्रतीक्षा करनी चाहिए, धैर्य रखना चाहिए; क्योंकि चारलेन कभी किसी लड़के के साथ इस तरह नहीं घूमी थी।

क्षणभर बाद वह दूर हट गयी और वे साथ-साथ चलते रहे। उसकी आवाज़ में अब चमक आ गयी थी, जैसे राइस ने अंगूर खाते वक्त पेड़ के ऊपर से ओस की बूँदों को चमकते देखा था।

"जब हमारी शादी हो जायेगी—" चारलेन बोली—"तब हम लोग शहर में चले जायेंगे। वहाँ किराये पर हम अपने लिए एक छोटा-सा मकान

तलाश कर ले सकते हैं और तुम्हारे लिए एक नौकरी ढूँढ़ी जा सकती है और......"

वह हँस पड़ा—"ठहरो अब। मैंने यह सब पहले से ही सोच रखा है।" वह उसकी ओर आतुरता से घूमा—"सुनो, हम लोगों को यह जगह बेच देनी ही होगी। टी. वी. ए. इसे खरीदने जा रही है और इसके लिए हमें अच्छी कीमत भी देगी। और तब तुम जानती हो, हम क्या करने वाले हैं?"

वह रुक गया। चारलेन की ओर देखते हुए, वह उसकी खामोशी पर ताज्जुब कर रहा था। चारलेन की आँखें उसके मुँह पर जमी थीं और राइस सोच रहा था कि कहीं वह उस चुम्बन की यथार्थता को ही स्मरण करने में तो नहीं खोयी है और उसने जो कहा है, उसे उसने सुना भी नहीं है।

"पापा से मैंने इस सम्बंध में बातें कर ली हैं—शुरू से यह विचार मेरा अपना ही रहा है और हम लोग तब शहर के नजदीक ही कोई जगह खरीदने वाले हैं, जहाँ हम अपना एक दुग्धालय खोल सकें। हम लोग, जितनी अच्छी दुधारू गायें मिल सकती हैं, खरीद लेंगे, नयी नस्लों के लिए एक हृष्ट-पुष्ट बैल खरीदेंगे, एक ट्रक लेंगे और दूध का व्यवसाय आरम्भ कर देंगे। जिस तरह गाँवों में लोग अपने घरों को गर्म रखते हैं, हम लोग उसी तरह अपना खलिहान गर्म रखा करेंगे। हम फसल नहीं उगायेंगे, बस, गायों के लिए चरी उगायेंगे—" रुक कर उसने साँस ली—"क्यों, टी. वी. ए. द्वारा बिजली आ जाने से, हम वे यंत्र भी तो खरीद लेंगे, जिनके जरिये बिजली से दूध दुहा जायेगा और हम दूध ठंडा रखनेवाला यंत्र भी खरीद लेंगे और..." उसने रुक कर चारलेन की ओर देखा। वह जान गया था कि अब वह उसे कह सकता है—"और मैं चाहता हूँ, तुम हमारे साथ वहाँ हो, चारलेन! मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।" उसने उसके चारों ओर अपनी बाँहें डाल दीं—"लेकिन हमें इन्तजार करने की जरूरत नहीं है। हम..."

वह क्षणभर के लिए उसकी बाँहों में जकड़ी रही और तब उसने उसे दूर धकेल दिया। "अगर मुझे पता होता, तो मैं यहाँ आती ही नहीं—" उसने कटुता से कहा—"अगर मैंने कभी कल्पना भी की होती कि जिस तरह तुम जब भी चाहो, अपने खेतों में काम करनेवाली किसी लड़की को कपास की पंक्तियों के बीच लिटा देते हो, उसी तरह मुझे भी एक साधारण लड़की के समान यहाँ इन वृक्षों की जमीन पर गिरी हुई पत्तियों पर लिटाने का इरादा रखते हो, तो मैं तुम्हारे साथ कभी आती ही नहीं।"

उसके रूखे शब्दों और बोलने के लहजे से राइस स्तम्भित रह गया। वह वे भद्दी बातें कर रही थीं, जिनके सम्बंध में राइस की धारणा थी कि वह जानती भी नहीं। उससे बातें करते समय यह सब कितना यथार्थ, कितना सत्य लग रहा था—यहाँ तक कि दुग्धालय की वह कल्पना भी राइस को सच लगने लगी थी, जिसके बारे में उसने मैथ्यू से बातें करने की चेष्टा की थी। यह सब सत्य, यथार्थ और अनुभव किये जाने के योग्य था और अब सब समाप्त हो गया था। इनमें से कोई भी बात अब नहीं होगी—न चारलेन और न ही उसका उज्ज्वल भविष्य, जिसका उसने स्वप्न सँजोया था और जिसे उसने शब्दों के रूप में चारलेन की आँखों के आगे चित्रित कर दिया था—यहाँ तक कि आज के दिन की उसने जैसी कल्पना कर रखी थी, वह दिन भी वैसा नहीं होगा।

उसने चारलेन की ओर देखा। उन शब्दों की ऐंठन की कड़वाहट अभी भी उसके मुँह पर लक्षित थी और उसका दिल उसकी ओर से फिर गया। पराजय की मुद्रा में उसने अपने हाथ हिलाये और चारलेन के चेहरे की ओर गौर से देखते हुए धीरे से बोला।

"निश्चय ही, ऐसा नहीं भी हो सकता है—" उसने स्पष्ट कह दिया—"पापा ने मेरे इस सुझाव पर विशेष ध्यान नहीं दिया। और अगर यह नहीं हुआ, तो मेरा अंदाज है, हम लोग शहर में चलकर शहरियों के समान ही वहाँ रह सकते हैं। हो सकता है, किसी पेट्रोल-पम्प में मुझे नौकरी मिल जाये अथवा रूई से बीज अलग निकालने वाले कारखाने में काम मिल जाये।"

उसने चारलेन की आँखों के भाव को फिर से बदलते देखा। उसकी आँखों में फिर से समर्पण की भावना उभर आयी थी। और राइस समझ गया कि बिना किसी आपत्ति के वह चारलेन का स्पर्श कर सकता है। उसने चारलेन का हाथ अपने हाथ में ले लिया; लेकिन उसने किसी प्रकार की सिहरन-सी अनुभव नहीं की और उसने उसे घुमा कर उस ओर कर दिया, जिधर से वे आये थे।

"मैंने तुमसे कहा नहीं—" राइस बोला—"लेकिन मैं अधिक देर तक नहीं रुक सकता। चरी काटने और उसे घर ले जाने में मुझे अपने पापा की मदद करनी है।"

चारलेन ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। वह शांत और स्थिर थी—बिलकुल सर्द—उसकी उस छोटी हथेली की उष्णता जैसे बिलकुल समाप्त हो चुकी थी। उस पुराने कपास रखने वाले घर तक वे खामोश चलते रहे। जंगल से निकल

कर उस खुली जगह में उन्होंने आहिस्ते से प्रवेश किया और उन दोनों के बीच का वह दिन एक साधारण दिन की तरह ही था—दूसरे किसी दिन की तुलना में उसमें कोई भिन्नता नहीं थी। राइस के भीतर अब दर्द और पीड़ा आरम्भ हो गयी थी और उसके दर्द पर एक प्रकार की अवशता छाती जा रही थी। उसने अंगूरों के उस बिखरे हुए गुच्छे को जमीन पर पड़े देखा, जहाँ उसने उसे फेंका था—जमीन पर बह निकला अंगूरों का नीलारुण रस, सूरज की गरमी से सूखता जा रहा था।

"लेकिन एक बात मैं तुम्हें कह देता हूँ—" वहाँ भी निस्तब्धता भंग करते हुए वह एकाएक बोला—"अगर उस दुग्धालय को पाने का कोई भी रास्ता हुआ, तो मैं उसे पाकर रहूँगा—अगर उसका कोई रास्ता है तो।" रुक कर उसने उसकी ओर देखा—"तुम चाहती हो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ आऊँ?"

चारलेन की आवाज़ मित्रवत् थी; लेकिन जैसे कहीं दूर से आ रही थी। "नहीं।" वह बोली—"अच्छा होगा, तुम मुझे यहीं छोड़ दो। कोई हम लोगों को साथ-साथ देख ले सकता है और सोच सकता है......"

"हाँ!" राइस बोला—"हमें उन लोगों को ऐसा सोचने का मौका नहीं देना चाहिए।" वह घूम पड़ा—"अच्छा होगा, अगर मैं चरीवाले खेत पर चला जाऊँ। पापा ताज्जुब कर रहे होंगे कि मैं कहाँ चला गया हूँ।"

जैसे मैं ताज्जुब कर रहा हूँ—उसने सोचा। उसने अपने एक पैर के आगे दूसरा पैर रखा। उसे ऐसा लगा कि जिस तरह पहले-पहल लोग चलते रहे होंगे, वह वैसे चलने की आदत डाल सकता है। उसका दूसरा कदम, पहले कदम की अपेक्षा, आसानी से उठा और तब चारलेन बिलकुल उसके पीछे आ गयी। कपास रखने के उस पुराने ढहते घर के सामने वह अपनी उजली पोशाक में खड़ी थी। जब वह जंगल में सुरक्षित पहुँच गया, तब उसके मन में फिर पीड़ा की भावना उठी और वह दौड़ने लगा। अब वह चारलेन की नजरों से दूर था। वह दौड़ता रहा, जब तक कि वह बिलकुल थककर हाँफने नहीं लगा।

हैटी अंगूर की लताओं वाले उस पेड़ पर चढ़ी थी, जब उसने राइस को जंगल से निकल, घाटी की ओर जाने वाली ढलान पर बढ़ते देखा। उतनी दूर पर वह काफी छोटा दिखायी दे रहा था और खेतों से होकर वह मैथ्यू और धीरे-धीरे चलने वाले खच्चरों की ओर जा रहा था। हैटी में पहले

जो बालोचित भावनाएँ थीं, वे अब जा चुकी थीं और अब वह लोगों को बड़े ध्यान से देखने के काम में दिलचस्पी लेने लगी थी। उसकी सबसे अधिक दिलचस्पी कौनी में थी; क्योंकि जब उसे याद आता था कि समझ आने के पहले वह किस तरह कौनी से व्यवहार करती थी, तो मन-ही मन वह स्वयं को थोड़ा अपराधी अनुभव करती थी। लेकिन आज सुबह, राइस के वहाँ से चोरी-चोरी निकल आने के प्रति वह आकर्षित हो गयी थी। उसने उस तैरने के स्थान तक उसका पीछा किया था और जब राइस साबुन मल-मल कर अपना बदन साफ कर रहा था, हैटी पीछे की झाड़ी में खड़ी थी। प्रतिक्षण उसके मन का आश्चर्य बढ़ता ही जा रहा था। अलावे, कौनी उस वक्त तक अपने कमरे में ही थी और उस कमरे के खाली दरवाजे में हैटी की तलाश करनेवाली आँखों के लिए कुछ भी नहीं था।

अंगूरों की बेल वाले उस पेड़ तक उसने राइस का पीछा किया था। राइस जब पेड़ पर चढ़कर अंगूर खाता रहा, वह आश्चर्य से उसकी ओर देखती रही! उसने उसे नीचे उतर कर वहाँ से जाते भी देखा था। उसने उसके साथ-साथ चलने की कोशिश की थी; लेकिन राइस उसके हिसाब से काफी तेज चल रहा था और जब घाटी के ऊपर के उस जंगल में वह पहुँची थी, राइस का कहीं पता नहीं था। सो वह अंगूर की बेलों वाले उस पेड़ के पास लौट आयी थी। वह यह देखना चाहती थी कि उस पेड़ पर राइस ने क्या पाया था। राइस के समान ही वह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गयी। वह उस उतावली में यह भी भूल गयी कि अब उसे पेड़ों पर नहीं चढ़ना चाहिए था। राइस ने आज सुबह जिन अंगूरों का स्वाद लिया था, वह उन्हें चखना चाहती थी। लेकिन उसके लिए वे सिर्फ जाने-पहचाने अंगूर-भर थे—उसके मुँह में अपना बैंगनी रंग भर कर उसे एक प्रकार-से उन्मत्त बना देने वाले अंगूर। राइस चूँकि उसकी नजरों से ओझल हो गया था, वह वहीं उस पेड़ पर बैठी रही थी। हवा के झोंकों से हिलते उस पेड़ के साथ वह हौले-हौले झूल रही थी। खेतों में मैथ्यू और काम कर रहे अन्य लोगों की ओर वह अपनी सूनी-सूनी आँखों से निहार रही थी। यहाँ से वह, घास काटनेवाली मशीन के आगे-पीछे होने के समय उसके दाँतों के आपस में किटकिटाने और उनके बातचीत करने की धीमी-सी आवाज़ सुन पा रही थी। किसी लालची के समान ही घासों को धीरे-धीरे अपने मुँह में लेते वे जैसे आपस में कानाफूसी कर रहे थे।

राइस को जंगल से निकलते देखकर वह तन कर बैठ गयी। वह फिर सतर्क हो गयी थी और उसकी आँखों ने खेतों से होकर घास काटनेवाली उस मशीन तक राइस का पीछा किया। "मुझे उसके पीछे-पीछे रहना चाहिए था—" उसने बड़ी कठोरता से स्वयं से कहा—"तुम्हें प्रतिक्षण उनके साथ रहना है, अन्यथा तुम कभी कुछ नहीं सीख पाओगी।"

वह पेड़ से उतर पड़ी और मुड़ कर उसी रास्ते से सोते की ओर बढ़ी। वह खेत तक जाना चाहती थी, जहाँ वह राइस को निकट से देख सकती थी। शायद तब वह राइस की सुबह की हरकतों के कारण का आभास पा सके। लेकिन जब वह सोते के इस लकड़ी के पुल के बीच में थी, उसने कौनी को उस सड़क पर जाते देखा, जो घाटी से बाहर की ओर चली गयी थी। वह उस लकड़ी के कुंदे पर सँभल कर रुक गयी, हिचकिचायी। वह मन-ही-मन यह तय कर रही थी कि उसे कौनी का पीछा करना चाहिए, या जो उसने पहले सोचा था, उसे। लेकिन राइस को जो कुछ करना था, वह उसे कर आया था, जब कि कौनी ने अभी शुरू ही किया था। वह जल्दी से उस पुल पर से सोते के किनारे पर आ गयी और झाड़ियों में छुपकर उस सड़क के समानांतर चलने लगी। वह कौनी को अपनी नजरों की पहुँच में रखे हुए थी और दूसरे लोगों के काम को गौर से देखने वाले किसी नये व्यक्ति के समान ही वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती रही—चाहे उसे कुछ भी देखने को मिले।

कौनी की आँखें आज भारी-भारी थीं और वह थकान महसूस कर रही थी—जैसे रात नींद से उसे आराम नहीं मिला था। लेकिन वह तेज चल रही थी। एक बार चलना आरम्भ कर देने के बाद वह एक निश्चय के भाव से चल रही थी। जैसे जान के उठ जाने के बाद वह नींद का बहाना कर तब तक बिस्तरे पर पड़ी रही थी, जब तक वह कमरे से बाहर नहीं चला गया। लेकिन वह काफी देर तक उसके बाद भी कुछ करने के बजाय सोचती रही। उसके मन में जो निश्चय उमड़ रहा था, उसे नहीं मानने के लिए वह काफी देर तक कोशिश करती रही। अंत में, वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई थी और दरवाजा खोलकर बाहर निकल पड़ी थी। वहाँ से वह उसी प्रकार लगातार चलती आ रही थी। उसका दिमाग खाली-खाली था—उसने सही-गलत की ओर से जैसे आँखें मूँद ली थीं। उसकी आँखें रात के विचारों से भारी थीं; फिर भी उसके पाँव अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे थे। वह ठीक से सजने-सँवरने के लिए भी नहीं रुकी थी। बस, घर में पहने जानेवाली एक

पुरानी पोशाक उसने पहन ली थी और पैरों में जूते डाल लिये थे, जिनकी एड़ियाँ घिस गयी थीं। न उसके होंठों पर लिपस्टिक था, न चेहरे पर पाउडर। लिपस्टिक के अभाव में, उसके होंठ पीले और मुर्झाये लग रहे थे और उनकी मुलायम चमड़ी धूमिल प्रतीत हो रही थी। लेकिन आज उसे सुंदरता की आवश्यकता नहीं थी।

वह वहाँ पहुँची, जहाँ घाटी से होकर आनेवाली सड़क, नदी की बगल से होकर शहर जानेवाली धूल-भरी सड़क की ओर मुड़ गयी थी। क्षण-भर को वह हिचकिचायी और उसने पीछे मुड़ कर देखा। वह वहाँ से अपना घर देख सकती थी। पेड़ों के बीच से होकर, उसे घर के बाहरी बरामदे और धूप में चमकते उसकी बगल के हिस्से की एक झलक दिखायी दे रही थी। अपने बचपन के दिनों में, जब वह धीरे-धीरे जवानी की ओर कदम रख रही थी, उसे अपनी घाटी की तुलना में डनबार की घाटी हमेशा अधिक सम्पन्न मालूम पड़ती थी, जहाँ स्थिरता और सुगमता से रहा जा सकता था। वहाँ नाक्स था, उसका पिता था और दूसरे लोग थे, जिनके लिए और लोगों के समान अधिक उत्तेजना और दृढ़ता से काम करने की जरूरत कभी महसूस ही नहीं होती थी, मानो घाटी स्वयं ही, उनके अधिकांश व्यक्तियों की तुलना में अधिक अच्छे ढंग से रहने का इन्तजाम कर देती थी। उनके जीवन में हास्य था—सरलता थी—उसके पिता की तरह कठोरता नहीं और जब उनके ऊपर कठिन और रूखे काम का बोझ रहता था, तब भी, अन्य घाटियों में रहनेवाले लोगों की तुलना में, उनकी सरल हँसी उसे जैसे आसान और हल्का बना देती थी।

लेकिन अब वह वहाँ रह चुकी थी और वह जगह अपना सारा आकर्षण खोकर, उसके लिए अपने में एक सूनापन समेट लायी थी। जब उसने पीछे मुड़ कर देखा, तो उसके मन में नाम-मात्र को भी दुःख और पश्चात्ताप नहीं था। नाक्स ने जब कल उससे कहा था कि वह घाटी से जा रहा है, उस वक्त उसने जो सूनापन महसूस किया था, अभी भी वह केवल वही सूनापन महसूस कर रही थी। जब वह उसकी लालसा के विरुद्ध, उसके नारीत्व को प्रमाणित करने देने के लिए तनिक भी विचलित हुए या अपनी कमजोरी का कोई संकेत दिये बिना, स्थिर खड़ा रहा था, तब जो सूनापन कौनी ने अनुभव किया था, वही अभी भी उसे अनुभव हो रहा था। वह बिना तनिक मोह अनुभव किये, उस थकी-थकी सड़क की ओर एक क्षण तक स्थिर भाव से देखती रही, जो दूर पेड़ों के साये में बने उस घर तक चली गयी थी, जिसका थोड़ा-सा हिस्सा-भर ही

राइस को जंगल से निकलते देखकर वह तन कर बैठ गयी। वह फिर सतर्क हो गयी थी और उसकी आँखों ने खेतों से होकर घास काटनेवाली उस मशीन तक राइस का पीछा किया। "मुझे उसके पीछे-पीछे रहना चाहिए था—" उसने बड़ी कठोरता से स्वयं से कहा—"तुम्हें प्रतिक्षण उनके साथ रहना है, अन्यथा तुम कभी कुछ नहीं सीख पाओगी।"

वह पेड़ से उतर पड़ी और मुड़ कर उसी रास्ते से सोते की ओर बढ़ी। वह खेत तक जाना चाहती थी, जहाँ वह राइस को निकट से देख सकती थी। शायद तब वह राइस की सुबह की हरकतों के कारण का आभास पा सके। लेकिन जब वह सोते के इस लकड़ी के पुल के बीच में थी, उसने कौनी को उस सड़क पर जाते देखा, जो घाटी से बाहर की ओर चली गयी थी। वह उस लकड़ी के कुंदे पर सँभल कर रुक गयी, हिचकिचायी। वह मन-ही-मन यह तय कर रही थी कि उसे कौनी का पीछा करना चाहिए, या जो उसने पहले सोचा था, उसे। लेकिन राइस को जो कुछ करना था, वह उसे कर आया था, जब कि कौनी ने अभी शुरू ही किया था। वह जल्दी से उस पुल पर से सोते के किनारे पर आ गयी और झाड़ियों में छुपकर उस सड़क के समानांतर चलने लगी। वह कौनी को अपनी नजरों की पहुँच में रखे हुए थी और दूसरे लोगों के काम को गौर से देखने वाले किसी नये व्यक्ति के समान ही वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती रही—चाहे उसे कुछ भी देखने को मिले।

कौनी की आँखें आज भारी-भारी थीं और वह थकान महसूस कर रही थी—जैसे रात नींद से उसे आराम नहीं मिला था। लेकिन वह तेज चल रही थी। एक बार चलना आरम्भ कर देने के बाद वह एक निश्चय के भाव से चल रही थी। जैसे जान के उठ जाने के बाद वह नींद का बहाना कर तब तक बिस्तरे पर पड़ी रही थी, जब तक वह कमरे से बाहर नहीं चला गया। लेकिन वह काफी देर तक उसके बाद भी कुछ करने के बजाय सोचती रही। उसके मन में जो निश्चय उमड़ रहा था, उसे नहीं मानने के लिए वह काफी देर तक कोशिश करती रही। अंत में, वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई थी और दरवाजा खोलकर बाहर निकल पड़ी थी। वहाँ से वह उसी प्रकार लगातार चलती आ रही थी। उसका दिमाग खाली-खाली था—उसने सही-गलत की ओर से जैसे आँखें मूँद ली थीं। उसकी आँखें रात के विचारों से भारी थीं; फिर भी उसके पाँव अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे थे। वह ठीक से सजने-सँवरने के लिए भी नहीं रुकी थी। बस, घर में पहने जानेवाली एक

पुरानी पोशाक उसने पहन ली थी और पैरों में जूते डाल लिये थे, जिनकी एड़ियाँ घिस गयी थीं। न उसके होंठों पर लिपस्टिक था, न चेहरे पर पाउडर। लिपस्टिक के अभाव में, उसके होंठ पीले और मुर्झाये लग रहे थे और उनकी मुलायम चमड़ी धूमिल प्रतीत हो रही थी। लेकिन आज उसे सुंदरता की आवश्यकता नहीं थी।

वह वहाँ पहुँची, जहाँ घाटी से होकर आनेवाली सड़क, नदी की बगल से होकर शहर जानेवाली धूल-भरी सड़क की ओर मुड़ गयी थी। क्षण-भर को वह हिचकिचायी और उसने पीछे मुड़ कर देखा। वह वहाँ से अपना घर देख सकती थी। पेड़ों के बीच से होकर, उसे घर के बाहरी बरामदे और धूप में चमकते उसकी बगल के हिस्से की एक झलक दिखायी दे रही थी। अपने बचपन के दिनों में, जब वह धीरे-धीरे जवानी की ओर कदम रख रही थी, उसे अपनी घाटी की तुलना में डनबार की घ टी हमेशा अधिक सम्पन्न मालूम पड़ती थी, जहाँ स्थिरता और सुगमता से रहा जा सकता था। वहाँ नाक्स था, उसका पिता था और दूसरे लोग थे, जिनके लिए और लोगों के समान अधिक उत्तेजना और दृढ़ता से काम करने की जरूरत कभी महसूस ही नहीं होती थी, मानो घाटी स्वयं ही, उनके अधिकांश व्यक्तियों की तुलना में अधिक अच्छे ढंग से रहने का इन्तजाम कर देती थी। उनके जीवन में हास्य था—सरलता थी—उसके पिता की तरह कठोरता नहीं और जब उनके ऊपर कठिन और रूखे काम का बोझ रहता था, तब भी, अन्य घाटियों में रहनेवाले लोगों की तुलना में, उनकी सरल हँसी उसे जैसे आसान और हल्का बना देती थी।

लेकिन अब वह वहाँ रह चुकी थी और वह जगह अपना सारा आकर्षण खोकर, उसके लिए अपने में एक सूनापन समेट लायी थी। जब उसने पीछे मुड़ कर देखा, तो उसके मन में नाम-मात्र को भी दुःख और पश्चात्ताप नहीं था। नाक्स ने जब कल उससे कहा था कि वह घाटी से जा रहा है, उस वक्त उसने जो सूनापन महसूस किया था, अभी भी वह केवल वही सूनापन महसूस कर रही थी। जब वह उसकी लालसा के विरुद्ध, उसके नारीत्व को प्रमाणित करने देने के लिए तनिक भी विचलित हुए या अपनी कमजोरी का कोई संकेत दिये बिना, स्थिर खड़ा रहा था, तब जो सूनापन कौनी ने अनुभव किया था, वही अभी भी उसे अनुभव हो रहा था। वह बिना तनिक मोह अनुभव किये, उस थकी-थकी सड़क की ओर एक क्षण तक स्थिर भाव से देखती रही, जो दूर पेड़ों के साये में बने उस घर तक चली गयी थी, जिसका थोड़ा-सा हिस्सा-भर ही

दिखायी दे रहा था। और तब, उसने अपना सिर मोड़ लिया और चलने लगी। वह उस धूल-भरी सड़क के बीचोबीच चल रही थी। अपने जूतों के नीचे उस धूल के कोमल समर्पण का वह अनुभव कर रही थी और उसके बिना सजे-सँवरे चेहरे पर उसकी दृढ़ता और निर्णय के क़ारण स्थिरता और तनाव के भाव थे।

एक मील के चौथाई हिस्से से भी अधिक, वह पेड़के साये में चलती रही—बिना तनिक रुके और हिचकिचाये और कुछ देर बाद विचारों का संघर्ष और आँखों की नींद समाप्त हो जाने से, उसने अपनी हड्डियों, अपनी माँसपेशियों, में एक प्रकार का हल्कापन अनुभव किया। वह अब अपने को प्रसन्न अनुभव कर रही थी। जब वह एक छोटी बच्ची थी, तब अपने पिता की घाटी में अकेले घूमने में जिस प्रकार की प्रसन्नता अनुभव करती थी, यह प्रसन्नता भी कुछ ऐसी ही थी। अचानक साये से निकल कर वह वहाँ आ गयी, जहाँ पेड़ और झाड़-झंखाड़ काट दिये गये थे और दूर तक ऊबड़-खाबड़ जमीन की एक सीधी-सी रेखा चली गयी थी। सूरज की तीखी रोशनी में वह घबरा-सी गयी। उसने हाथों से अपनी आँखों पर आड़ करते हुए, सामने की ओर देखा। वह उन आदमियों को देख सकती थी, जो सड़क से कुछ ही दूर पर काम कर रहे थे। झाड़ियों और पेड़ों को काटने के लिए जब उनकी कुल्हाड़ियाँ हवा में ऊपर उठती, तो सूरज की रोशनी में चमक उठती थीं। वे नदी के पानी को रास्ता देने के लिए जगह साफ कर रहे थे। वह क्षण-भर खड़ी उन्हें देखती रही और तब उसने अपना हाथ अपनी बगल में, नीचे गिरा लिया। वह उस धूप में धीरे-धीरे चलने लगी। सड़क के किनारे धीरे-धीरे बढ़ती हुई, उन लोगों की आँखों के सामने वह आती जा रही थी। वह बड़ी सुगमता से अपने कूल्हे मटका कर चल रही थी और जानती थी कि उन लोगों के सामने से धीरे धीरे चल कर जब वह आगे के उन पेड़ों तक पहुँचने के लिए बढ़ेगी, उनकी पुरुषोचित भावना उसे निश्चय ही देख लेगी।

वह वहाँ से प्रायः आगे बढ़ ही चुकी थी, जब केरम ने उसे देखा। वहाँ काम करनेवाले व्यक्तियों में से एक ने भद्दे और अशिष्ट ढंग से हाथ से कौनी की ओर संकेत करते हुए जब केरम से आकर कहा, तभी उसने उधर ध्यान दिया। उसने अपना सिर घुमाया और देखा। वह कौनी को उसी क्षण पहचान गया और सुन्न खड़ा रह गया, मानो किसी मनुष्य ने उसे जोरों से घूँसा मारा हो—"वह मेरे लिए ही इधर आयी है। कल की घटना के बाद भी, वह मेरे लिए ही इधर आयी है।"

उसके साथ काम करनेवाले व्यक्ति इसी इलाके के रहनेवाले हैं और वे तुरत कौनी को पहचान लेंगे—यह याद करने के लिए केरम रुका नहीं। वे अपनी सुस्त आवाज में कौनी की ही चर्चा कर रहे थे, अफवाहों और तरह-तरह की कहानियों को जन्म दे रहे थे, इस पर भी केरम ने ध्यान नहीं दिया—वह सिर घुमाये खड़ा देखता रहा और तब उसने वहाँ काम करनेवालों के समय का हिसाब रखनेवाली किताब मोड़ ली और उसे अपनी कमीज की जेब में ठूँस लिया। उसने अपनी पेंसिल भी सावधानी से अलग रख ली और उन आदमियों के पास से चल पड़ा। हाल ही में साफ की गयी ऊबड़-खाबड़ जमीन से होता हुआ वह उस जगह की ओर बढ़ रहा था, जहाँ कौनी पेड़ों के बीच गायब हो गयी थी। अब वह कल की याद पोंछ डालेगा और कौनी के शरीर पर, जहाँ उसके शरीर का स्पर्श होने से, कल उस विशाल शरीरवाले क्रोध-उन्मत्त व्यक्ति ने रोक दिया था, वहाँ वह अपने शरीर का स्पर्श करायेगा। इस व्यक्ति के शरीर की सुदृढ़-स्वस्थ बनावट और उसका क्रोध भी अब उसे नहीं रोक सकता था; क्योंकि इस बार कौनी स्वयं उसके पास आयी थी।

उसके पीछे काम करनेवाले आदमी निस्तब्ध खड़े हो गये थे, इसकी उसे खबर थी। उन्होंने अचानक कुल्हाड़ियाँ चलाना रोक दिया था और मौन-स्थिर केरम को जाते देख रहे थे। केरम को उनके देखने की परवाह नहीं थी। सच तो यह है कि अपने भीतर वह खुश था कि लोग उसे कौनी की ओर बढ़ते देख रहे थे। लोग कौनी को पहचान लगे और इस सम्बंध में वे बातें करेंगे, जब तक कि कलवाले उस विशालकाय व्यक्ति के कानों में यह खबर नहीं पहुँच जायेगी और तब वह क्रोध और पराजय से दाँत पीस कर रह जायेगा। केरम हास्किन्स में अहंकार और गर्व की भावना प्रबल थी और कल की बात वह इतनी जल्दी भूल जानेवाला नहीं था।

वह जंगल में पहुँच गया। अब वह तेज चल रहा था। उसे डर लग रहा था कि वह चलती चली गयी होगी—उसने कौनी के उधर से गुजरते समय जो सोचा था, शायद कौनी का मतलब वह न रहा हो; लेकिन, जहाँ वृक्ष कुछ घने होकर अपने साये में किसी को ढँकने-लायक हो गये थे, ठीक वहीं कौनी उसका इंतजार कर रही थी। वह रास्ते में चुपचाप खड़ी थी। वह केरम को अपनी ओर आते देख भी नहीं रही थी। किंतु वह उसकी मौजूदगी से बेखबर नहीं थी। इस सायेदार स्थान में आने के पहले उसने कनखियों से केरम को, अपनी ओर निहारते आदमियों के झुंड से अलग होते देख लिया था। वह

चलती गयी थी और अब रुक कर उसका इंतजार कर रही थी। वह जानती थी कि केरम आयेगा—वह यह भी जानती थी कि केरम का दिमाग अभी क्या सोच रहा होगा।

"तुम्हें मुझे यहाँ से ले चलना होगा—" वह बोली—"तुम्हें ले चलना ही होगा।"

केरम उसके इन शब्दों से भयभीत हो, उसके सामने रुक गया। उसने कौनी के कुछ कहने की उम्मीद नहीं की थी। उसने उम्मीद की थी कि कौनी उसकी आतुरता से प्रतीक्षा कर रही होगी और उसे वहाँ पहुँच कर एक खुले रास्ते पर कदम-भर रख देना होगा।

"क्या बात है?"—वह बोला—"क्या हुआ?"

कौनी ने उसकी ओर देखा। लिपस्टिक अथवा पाउडर के बिना उसका चेहरा दिन के उस तीखे प्रकाश में, पीला और बिल्कुल उतरा हुआ लग रहा था। उसकी आँखें बड़ी थीं और वह उन्हें पूरी तरह खोल कर उसकी ओर देख रही थी—उसके चेहरे के झुकाव को, उसके वजनदार और भारी कंधों को, देख रही थी और कल से जो उसके भीतर एक मौत-सी मनहूसी छा गयी थी, पहली बार उसमें उत्तेजना आरम्भ हुई और उसकी आँखों में झलक आयी।

"उसने मुझे लगभग मार ही डाला था—" वह बोली—"वह मुझे जान से मार देनेवाला था...लेकिन उसके भाई ने उसे रोक दिया। तुम्हें मुझे यहाँ से ले चलना ही होगा।"

केरम खड़ा उसे देखता रहा। उसकी वासना की लहर बिल्कुल ठंडी पड़ गयी थी। "मैं तुम्हें कहीं नहीं ले जा सकता—" वह बोला—"मैं यहाँ काफी दिनों तक काम पर रहनेवाला हूँ। निश्चय ही, वह हमें ढूँढ़ लेगा।"

"संसार में एक यही बाँध नहीं है—" कौनी ने स्थिरता से कहा। उसकी आवाज घातक, निष्ठुर और तर्कहीन थी— "तुम्हारे-जैसा व्यक्ति कहीं भी काम पा जा सकता है।" उसने उसकी आँखों के सामने ही अपनी पोशाक का सामने का हिस्सा खोल दिया और अपनी छाती पर से उसका आवरण हटाती हुई बोली—"देखो!"

मार का एक गहरा निशान वहाँ उभर आया था और नाक्स के वजनदार हाथ के दबाव को याद करती हुई उसने सिर झुका कर स्वयं भी उसे देखा। उसने एक गहरी साँस ली और काँप गयी। उसने आशा की कि उसका यह

कम्पन एक सुखद स्मृति के परिणाम के बजाय, भय से उत्पन्न हुआ ही प्रतीत हुआ होगा।

"वह मुझे मार डालनेवाला था—" वह बोली—"अपने हाथों से। और वह मुझे मार डालेगा, अगर मैं वापस गयी तो।"

केरम ने वह निशान देखा भी नहीं। उसने कौनी की छातियाँ ही देखीं, जिस निर्लज्जता से वे उसके सामने खुली थीं, उसे देखा और उसमें फिर लालसा की सिहरन आरम्भ हो गयी, जो धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। लेकिन उनके इस मिलन से उसे जो निराशा हुई थी, उसकी यथार्थता को छिपाने के लिए वह सिहरन अभी पर्याप्त नहीं थी।

"सुनो—" उसने फटी-फटी आवाज में कहा—"मैं...हम लोगों ने तो...वह जानता है कि हम लोगों ने तो......"

कौनी ने अपनी झलमलाती और खुली आँखों से उसकी ओर देखा। वह उसे ऊपर से नीचे तक देख रही थी और उसके कंधों के स्पर्श का अनुभव कर रही थी। "लेकिन हम अब उसे करने जा रहे हैं—" वह बोली—"फिर हम यहाँ से साथ साथ चले जायेंगे—दूसरे बाँध पर, दूसरे काम पर। हम लोग आज और अभी जायेंगे। हम आज ही सब-कुछ कर लेंगे।"

उसने अपनी पोशाक फिर बंद कर ली और केरम के निकट आ गयी। उसने केरम का हाथ पकड़ लिया, जैसे किसी छोटे बच्चे का हाथ पकड़ रही हो! एक बच्चे के समान ही केरम उसके पीछे पीछे सड़क से उतर कर, खाई में पेड़ों के बीच चलता रहा। उसके दिमाग में वासना जोर मार रही थी। कल की उस घटना को मिटा देने की उसकी इच्छा बलवती हो उठी थी। साथ ही, उसे कौनी पर आश्चर्य भी हो रहा था, जिसे उसने अनायास ही पा लिया था; फिर भी उसकी यह खोज कितनी पूर्ण थी।

जब वे सड़क से दूर, आड़ में पहुँच गये, तो वह रुक गयी, मुड़ी और केरम की ओर बढ़ी।

"मैं सोचती रही हूँ—" वह बोली—"ठीक है, मैं सोचती रही हूँ..." वह काँप रही थी और केरम की बाँहें उसके काँपते शरीर को अपने घेरे में थामे हुए थीं। किंतु उसके भीतर गहराई में कठोर वास्तविकता की जो भावना थी, वह उसकी लालसा के बराबर ही प्रबल थी और वह उसकी बाँहों में स्थिर खड़ी रही। "तुम मुझे यहाँ से दूर ले चल रहे हो?" वह बोली—"तुम ले चल रहे..."

वह उन आदमियों के बारे में, उन्हें फिर जाकर अपना चेहरा दिखाने की असाध्यता के बारे में सोच भी नहीं रहा था। वह उस औरत के बारे में सोच रहा था, उसकी उष्णता, चमक के बारे में सोच रहा था। उसके अब तक के साहसिक जीवन में कौनी के समान कोई औरत कभी भी नहीं आयी थी।

"हाँ!" वह बोला—"मैं तुम्हें ले जाऊँगा। भगवान जानता है, मैं तुम्हें यहाँ से ले चलूँगा।"

इन शब्दों को सुनते ही कौनी ने आत्मसमर्पण कर दिया। जिस वास्तविकता, जिस विश्लेषण और जिस निर्णय ने केरम को इस तरह नग्न रूप में कहने के लिए बाध्य कर दिया था, कौनी ने उसे स्वयं के भीतर से निकल जाने दिया था। उसकी लालसा अब अधिक प्रबल हो उठी थी। एक-दूसरे से लिपटे हुए वे वहाँ जमीन पर बिछी कोमल पत्तियों पर लेट गये और कौनी ने केरम के सामने अपने शरीर को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। कल उन दोनों के बीच जो अपूर्णता रह गयी थी, वह पूर्ण हो गयी—कुछ भी शेष नहीं रहा।

हैटी यह सब-कुछ देखना और सुनना चाहती थी; लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी। सड़क पर पेड़ों के बीच खड़े होकर उन दोनों ने जो बातें की थीं, हैटी ने उसे बिलकुल स्पष्ट सुना था। सड़क से उतर कर जब वे पेड़ों के बीच से होते हुए यहाँ तक आये थे, तो भी हैटी उनका पीछा करती रही थी और निकट ही छुप कर खड़ी सब सुनती रही थी। लेकिन जब वे एक-दूसरे से लिपटे, जमीन पर लेट गये तो वह और अधिक नहीं देख सकी। अजाने ही वह वहाँ से चल पड़ी, घूमी और दौड़ती हुई उनसे दूर भागने लगी। डर कर दौड़ती हुई, जंगल के बीच से होकर वह सड़क पर पहुँची और फिर दूसरे किनारे के जंगल में पहुँच गयी। अपने सुरक्षित स्थान से अचानक निकल कर इधर-उधर भटकनेवाला हिरण जिस तरह किसी शिकारी की आँखों के सामने से डर कर दौड़ता हुआ अपने सुरक्षित स्थान में आ जाता है, हैटी की दशा भी वैसी ही थी।

वह वहाँ पहुँच कर भी रुकी नहीं, भागती रही। लड़खड़ाती, ठोकर खाती, तेज कदमों से वह तब तक भागती रही, जब तक वृक्षों के घेरे से निकल कर, सारा रास्ता तय करते हुए, वह घाटी के भीतर सुरक्षित स्थान में नहीं पहुँच गयी। तब उसके पाँव थरथरा गये और वह जमीन पर बैठ गयी।

जो कुछ उसने देखा था उसे और उससे उत्पन्न आघात को याद कर वह सिहर उठी—"तो यह है वह! तो यह है वह।"

निश्चय ही, वह यह पहले से जानती थी। लेकिन सही माने में वह इससे परिचित नहीं थी। कभी भी वह वासना और समर्पण के प्रबल वेग में इसके रूप की सही-सही कल्पना नहीं कर पायी थी। उसने एक नवीन आदर की भावना से अपने शरीर को देखा। अब वह जान गयी थी कि जिस तरह कौनी का अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं रहा था, उसी तरह उसका शरीर भी उसके नियंत्रण से कभी निकल जा सकता है। वह कभी फिर अपने शरीर के सम्बंध में कोई बात निश्चित रूप से नहीं मान लेगी—अपने शरीर में निहित नारीत्व को वह अब सदा याद रखेगी।

तब उसे कुछ और भी याद हो आया। कौनी आखिर अपनी मनोकामना का व्यक्ति पा चुकी थी। आज उसमें बेचैनी और तलाश करने की भावना नहीं थी। उस प्रथम क्षण में भी नहीं, जब हैटी ने उसे घाटी से बाहर जानेवाली सड़क पर बढ़ते देखा था। लेकिन क्या वह आज सुबह बिस्तरे से उठ कर बस यों ही खोजने चल दी थी और क्या सड़क पर चलते-चलते ही—जब तक कि उसकी मनोकामना का व्यक्ति उसके पास नहीं आ गया था—कौनी ने उसे पा लिया था? उन लोगों ने आपस में बातें भी की थीं—कौनी की छाती पर मार के निशान भी थे। हैटी ने एक ठंडी साँस ली। ये सारी चीजें उसके आसपास घट रही हैं और सिर्फ इन दो आँखों से सारी चीजें देखने की उम्मीद नहीं की जा सकती। उन्हें समझने और किसी को बता पाने की उम्मीद तो और भी कम है।

वह धीरे से उठ खड़ी हुई और घर की ओर चलने लगी। ऊपर सूरज की ओर देख कर उसने यह समझ लिया कि दोपहर के खाने का वक्त करीब है। खलिहान से होकर वह घर के पिछवाड़े की तरफ जा रही थी। उसके कानों में एक आवाज पड़ी और वह घूम पड़ी। खलिहान में बने उस कुटीर के दरवाजे पर खड़े जेसे जान को उसने देखा। उसकी बाँहों में भूसा भरा था। वह खच्चरों के लिए दोपहर का खाना तैयार कर रहा था।

"क्या कौनी अब जग गयी, हैटी? मैं जब वहाँ से आया, तो वह सो ही रही थी।"

हैटी ने जेसे जान के सम्बन्ध में नहीं सोचा था। उसके विचारों में वह बिल्कुल आया ही नहीं था। अब वह अपने सफेद पड़ गये चेहरे से उसकी

ओर देखती रह गयी। अब जैसे जान के प्रति वह सहानुभूति और प्रेम अनुभव कर रही थी, जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया। जेसे जान उसका भाई था और कौनी ने उसे धोखा दिया था—उसके प्रेम के घेरे से वह बाहर निकल गयी थी। जेसे जान के प्रति कौनी का प्यार सच्चा नहीं था, लेकिन हैटी जानती थी कि इस खबर से जेसे जान को दुःख पहुँचेगा।

उसने जेसे जान के अनभिज्ञ चेहरे पर से अपनी आँखें हटा लीं और खलिहान की धूल में सने अपने नंगे-गंदे पैरों की ओर देखने लगी। "हाँ!" उसने कुछ बताये बिना कहा—"मैंने आज सुबह उसे देखा था।"

दरवाजे से हट कर जेसे जान अस्तबलों की ओर बढ़ा। उसने अपनी बाँहों में ऊपर तक भरा भूसा एक अस्तबल में डाल दिया और वापस कुटीर की ओर चल पड़ा।

"हे भगवान, मैं नहीं जानता, इतनी देर तक सोना उसने कहाँ से सीखा—" वह बोला—"क्या कर रही थी वह?"

हैटी ने उसके चेहरे की ओर देखा। भीतर-ही-भीतर उसका दिल जैसे फिर सिकुड़ा जा रहा था। "काश, आज सुबह मैं अपने नसवार की बोतलों से खेलती रहती—" उसने सोचा—"क्या ही अच्छा होता, अगर मैं अपने झुरमुट में चली जाती और कौनी जो-कुछ कर रही थी, उस पर अपनी नजरें नहीं डालती।" झूठ बोलने का कोई रास्ता नहीं था। उसकी आवाज से ही जेसे जान समझ जाता कि वह झूठ बोल रही है।

"मुझे कहने के लिए बाध्य मत करो, जेसे जान!" वह बोली—"मुझे कहने के लिए बाध्य मत करो।"

जेसे जान ने अपने भीतर जकड़ते भय का अनुभव किया और वह तेजी से हैटी की ओर घूम पड़ा। "क्या मतलब है तुम्हारा?"—उसने तीखे स्वर में कहा—"क्या बात कर रही हो तुम?"

किंतु वह उसकी ओर देख रहा था और उसका जवाब सुनने की जरूरत उसे नहीं रही। बिना सुने ही वह जवाब जान गया। सीधी और स्थिर खड़ी हैटी के चेहरे पर उसका जवाब साफ-साफ झलक उठा था।

"वह दूसरे आदमी के साथ चली गयी—" हैटी बोली—"मैंने उसे देखा था। इस सड़क पर मैंने तब तक उसका पीछा किया, जब तक वह उस आदमी से मिली नहीं और मैंने उन्हें बातें करते भी सुना और तब—वह उसके साथ चली गयी।"

अचानक जेसे जान की कड़ी पकड़ में उसकी बाँह दब गयी। "कब से तुम इस सम्बंध में जानती हो?" जेसे जान बोला—"कभी से इस सम्बंध में जान कर भी तुमने एक शब्द नहीं कहा, जब कि बहुत देर हो चुकी है—जब कि......"

उसके हाथ के कड़े दबाव से हैटी पीड़ा-से ऐंठ सी गयी। "मैं नहीं जानती थी।" वह बोली। वह रो रही थी और उसके आँसू चेहरे से होते हुए, नीचे धूल में एक रेखा-सी बना रहे थे—"मैं नहीं जानती थी, जेसे जान! मैं कसम खाती हूँ, मैं नहीं जानती थी।"

जेसे जान ने हैटी के अब तक के जीवन में उसे कभी चोट नहीं पहुँचायी थी। उसने कभी किसी को चोट नहीं पहुँचायी थी। लेकिन उसकी शराफत अब एक झटके से हिल गयी थी और हैटी ने जो कहा था, उसकी सचाई में उसने संदेह नहीं किया। हैटी के कहने के पहले ही उसने उसके चेहरे पर अंकित सत्य पढ़ लिया था। वह हैटी को छोड़, खलिहान में बने उस कुटीर के खुले दरवाजे पर बैठ गया और उससे अपने आँसुओं को छिपाने के लिए उसने अपने चेहरे को हाथों से ढँक लिया।

"मैं जानता था, वह ऐसा करेगी—" वह बोला। एक-एक शब्द पर उसकी आवाज टूट रही थी—"जिस दिन उसने मुझसे शादी की, उसी दिन से मैं यह जान रहा था। मैं जानता था; लेकिन मैं इस पर विश्वास नहीं कर पाता था।"

हैटी उसके निकट चली गयी और उसके सिर पर अपना हाथ रख दिया। जेसे जान को दुःखी देख कर वह अपने को किसी बड़ी और समझदार औरत के समान ही महसूस कर रही थी। लेकिन उसकी यह भावना उस दुःख में घुल-मिल गयी थी, जो जेसे जान के दुःख से उसके दिल में उत्पन्न हुआ था।

"तुम इसमें कुछ नहीं कर सकते थे—" वह बोली—"प्रत्येक औरत के लिए सिर्फ एक मर्द होता है—और कौनी के लिए तुम वह नहीं थे, जेसे जान! यह तुम्हारा दोष नहीं है।"

जेसे जान ने अपना सिर उठाया। "कोई भी आदमी उसे इतना प्यार नहीं कर सकता, जितना मैंने किया—" वह बोला—"जितनी अच्छाई से मैंने उसका साथ निभाने की कोशिश की, उतना कोई आदमी नहीं कर सकता।"

हैटी आश्चर्यचकित खड़ी रह गयी। "हो सकता है, अच्छाई ही काफी नहीं हो। हो सकता है, कुछ और......" वह रुक गयी। अपने बच्चे होने की

भावना फिर उसमें उभर आयी थी। जो बुद्धिमत्ता और विचारने की शक्ति उसने अपने भीतर अनुभव की थी, वह जा चुकी थी। "मैं नहीं जानती—" वह कर्कश स्वर में बोली—"कैसे तुम यह उम्मीद करते हो कि मैं यह सब जानूँगी? बड़े तो तुम हो।"

वह उसके पास से घर की ओर भाग गयी। वह फिर रो रही थी और सूरज उसकी आँखों को चौंधिया रहा था। "मैं नहीं जानती—" वह सोच रही थी—"मैं यह भी नहीं जानती कि मर्द होना कठिन है या औरत। मर्द अथवा औरत होने के बजाय कुछ और होने की छूट दी जाती, तो मैं उसे पसंद कर लेती और मर्द या औरत बनने की सोचती भी नहीं।" वह पिछली सीढ़ियों पर बैठ गयी और अपनी गोद में उसने अपना सिर छुपा लिया। वह रोती रही। वह काफी देर तक रोती रही, जब तक कि रोने से उसका जी हल्का नहीं हो गया और वह कुछ आराम नहीं अनुभव करने लगी।

खलिहान में, जेसे जान बैठा तब तक इंतजार करता रहा, जब तक उसे भीतर-ही-भीतर कुतरनेवाली भावना उसके दिमाग से निकल नहीं जाती। लेकिन वह भावना गयी नहीं। किसी शरारती गिलहरी के समान ही वह उसके भीतर चपलता से उछल-कूद मचाती रही और कुछ देर बाद निराशा के बीच ही वह उठा। वह खेतों की ओर, जहाँ मैथ्यू था, चल पड़ा। एक बूढ़े आदमी के समान ही वह भारी कदमों से चल रहा था, जैसे चलने में उसे बड़ी मेहनत पड़ रही थी!

खेत से आनेवाली सड़क पर उसकी मुलाकात मैथ्यू और राइस से हो गयी। वे खाना खाने आ रहे थे। जेसे जान चलते-चलते किसी छोटे पालतू कुत्ते के समान ही उनके सामने झुक कर खड़ा हो गया। "पापा!" वह बोला—"मैं आपको ही ढूँढ़ता आया हूँ।"

"बात क्या है?"—मैथ्यू ने तुरन्त ही चौकन्ना होकर पूछा।

मैथ्यू की आँखों के सामने जेसे जान का चेहरा बिल्कुल खुला हुआ था। "कौनी मुझे छोड़ कर चली गयी—" जेसे जान बोला। उसकी आवाज सुस्त और भारी थी।

मैथ्यू के लिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी। कौनी की बेचैनी और अनिश्चितता से वह परिचित था। उसने धीरे से अपना सिर घुमा कर राइस की ओर देखा।

"खच्चरों को खलिहान में ले जाओ—" वह बोला—"और उन्हें अच्छी तरह खिलाओ।"

"मैंने नादों में भूसा रख दिया है—" जेसे जान ने कहा—"पर्याप्त भूसा।" पहले की तरह ही वह बोला—उसके शब्दों में वही वजन था, वही सुस्ती थी, वही भारीपन था।

"लेकिन......"—राइस बोला।

"जाओ अब—" मैथ्यू ने कहा—"मेरे साथ बहस मत करो। बस, जो मैं कहता हूँ, उसे करो।"

"हाँ, महाशय!" राइस ने दबे शब्दों में कहा। उसने मैथ्यू के हाथ से लगाम ले ली और खलिहान की ओर चला गया।

"वह टी. वी. ए. के आदमियों में से एक था?"—मैथ्यू बोला।

जेसे जान ने अपना सिर हिलाया। "मैं नहीं जानता—" वह बोला—"मैं यह भी नहीं जानता कि वह......"

मैथ्यू उसके निकट चला आया। तुम अब क्या करोगे, बेटा?" वह शांतिपूर्वक बोला—"तुम कर भी क्या सकते हो?"

जेसे जान की आवाज फटी हुई थी—"मैं नहीं जानता। मैंने कभी विश्वास नहीं किया था कि वह मुझे छोड़ देगी। मैंने सोचा था, वह यहीं जम कर रहेगी और इसे पसंद करने लगी। मैंने सोचा था, हम लोग......"

"तुम्हें उसकी गोद में एक बच्चा दे देना था—" मैथ्यू ने कहा—"यह जानने के लिए कि वह विवाहित है, एक औरत को बच्चे की जरूरत होती है।"

जेसे जान का चेहरा विकृत हो उठा। "वह मुझे ऐसा नहीं करने देती थी।" —वह बोला—"बच्चों को पालने के लिए वह अभी तैयार नहीं थी।"

मैथ्यू ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया। "मैं जानता हूँ, बेटा!"—वह बोला—"लेकिन कोई भी मर्द किसी औरत को नहीं रख सकता है, जब वह रहना नहीं चाहती—संसार का कोई भी मनुष्य!"

जेसे जान का चेहरा कड़ा हो गया। उस पर हठ की रेखाएँ उभर आयीं—"मैं उसके पीछे जा रहा हूँ। मैं उसे ढूँढ़ने और उसे वापस लाने जा रहा हूँ।"

मैथ्यू ने उसके चेहरे की ओर देखा—"तुम अब भी उसे चाहते हो? दूसरे आदमी ने उस पर अपना हाथ रख दिया, फिर भी?"

लज्जित होकर जेसे जान ने अपना सिर हिलाया। "मैं उसे प्यार करता हूँ, पापा।"—वह बोला—"मुझे उसे ढूँढ़ निकालना ही है।"

मैथ्यू ने उससे दूर, उस ओर देखा—"कितना समय लगेगा इसमें? कब तक उसे ढूँढ़ने का तुम इरादा करते हो?"

जेसे जान की आवाज दयनीय थी। "जब तक मैं उसे पा नहीं लेता· " वह बोला—"मैं नहीं जानता, इसमें कितनी देर लगेगी।"

काफी देर तक मैथ्यू उसे गौर से देखता रहा। जेसे जान जिस तरह सदा से आज्ञापालक और विनम्र रहता आया था, उससे उसके भीतर मैथ्यू ने इस प्रकार की कड़ी भावना की आशा नहीं की थी। और अब, जब वह भी घाटी से बाहर जा रहा था, यह जानने-समझने का वक्त आ गया था। कौनी को ढूँढ़ने में काफी वक्त लगेगा। कौनी अपने इस नये आदमी के साथ बड़ी जल्दी काफी दूर चली जायेगी; क्योंकि कम-से-कम यह अपने पति की इस जिद से जरूर परिचित होगी।

"अगर तुम ऐसा अनुभव करते हो, तो तुम्हें जाना ही होगा—" वह धीरे से बोला—"मैं तुम्हें रोकने की कोशिश करनेवाला नहीं हूँ।" उसे ऐसा लगा कि उसकी आवाज रुँध गयी है और उसने खाँस कर अपना गला साफ किया—"अगर नाक्स ने जाने के पहले रुक कर मुझसे पूछा होता, तो मैं उसे भी यही जवाब देता। तुम अब मर्द बन चुके हो। तुम अपना भला-बुरा जानते हो।"

जेसे जान उसकी ओर से घूम पड़ा। "आपको छोड़ने का मेरा इरादा नहीं है, पापा!" वह बोला—"अभी मुझे, बस, उसे ढूँढ़ निकालना ही है।"

मैथ्यू ने फिर उसके कंधे पर हाथ रख दिया। उन दोनों के बीच की जो यह निकटता थी, उसके वे अभ्यस्त नहीं थे। "जाओ—" वह बोला—"लेकिन जब वापस आ सको, आ जाओ। निकट भविष्य में ही मुझे एक आदमी की जरूरत होगी, जो मेरे बाद इन सबकी देखभाल करेगा। इसे भूलना मत।"

"मै आऊँगा—" जेसे जान बोला—"मैं आपको वचन देता हूँ, पापा! लेकिन जब मेरी खोज समाप्त हो जायेगी, तब।"

मैथ्यू जेसे जान को अपने से दूर जाते देखता रहा। वह घर की ओर वापस जा रहा था। "अगर तुम नाक्स से मिलो—" उसने पीछे से आवाज दी—"अगर तुम नाक्स से मिलो—तो उससे कह देना कि उसका भी यहाँ स्वागत है।"

"मैं उससे कह दूँगा—" जाते-जाते जेसे जान बोला। मैथ्यू उसे देखता रहा। वह जानता था कि जेसे जान तुरन्त ही घाटी से बाहर जानेवाले रास्ते पर नहीं हो लेगा। वह अपने धीमे कदमों से सावधानीपूर्वक जायेगा। वह

अपने कपड़े सहेजेगा और हैटी, आर्लिस तथा अपने दादा से, जाने के पहले, विदा लेगा।

उसके वहाँ से जाने के पहले मैथ्यू उससे दुबारा नहीं मिलना चाहता था। वह खलिहान की ओर चला गया और उसने अस्तबल से खच्चर बाहर निकाल लिये। खच्चरों का खाना अभी समाप्त नहीं हुआ था। मैथ्यू ने खच्चरों को फिर खेत पर ले जाने के लिए तैयार कर दिया। मकान की ओर देखे बिना, वह खेत की ओर वापस चला गया। वह वहाँ घास काटने के काम में फिर से जुट जाना चाहता था। अब उसके दो बेटे उसके पास से चले गये थे और स्वभावतः ही उसके ऊपर काम का भार दुहरा हो जाता। अब बस, राइस ही उसके पास बच गया था।

जेसे जान की आवाज दयनीय थी। "जब तक मैं उसे पा नहीं लेता—" वह बोला—"मैं नहीं जानता, इसमें कितनी देर लगेगी।"

काफी देर तक मैथ्यू उसे गौर से देखता रहा। जेसे जान जिस तरह सदा से आज्ञापालक और विनम्र रहता आया था, उससे उसके भीतर मैथ्यू ने इस प्रकार की कड़ी भावना की आशा नहीं की थी। और अब, जब वह भी घाटी से बाहर जा रहा था, यह जानने-समझने का वक्त आ गया था। कौनी को ढूँढ़ने में काफी वक्त लगेगा। कौनी अपने इस नये आदमी के साथ बड़ी जल्दी काफी दूर चली जायेगी; क्योंकि कम-से-कम यह अपने पति की इस जिद से जरूर परिचित होगी।

"अगर तुम ऐसा अनुभव करते हो, तो तुम्हें जाना ही होगा—" वह धीरे से बोला—"मैं तुम्हें रोकने की कोशिश करनेवाला नहीं हूँ।" उसे ऐसा लगा कि उसकी आवाज रुँध गयी है और उसने खाँस कर अपना गला साफ किया—"अगर नाक्स ने जाने के पहले रुक कर मुझसे पूछा होता, तो मैं उसे भी यही जवाब देता। तुम अब मर्द बन चुके हो। तुम अपना भला-बुरा जानते हो।"

जेसे जान उसकी ओर से घूम पड़ा। "आपको छोड़ने का मेरा इरादा नहीं है, पापा!" वह बोला—"अभी मुझे, बस, उसे ढूंढ़ निकालना ही है।"

मैथ्यू ने फिर उसके कंधे पर हाथ रख दिया। उन दोनों के बीच की जो यह निकटता थी, उसके वे अभ्यस्त नहीं थे। "जाओ—" वह बोला—"लेकिन जब वापस आ सको, आ जाओ। निकट भविष्य में ही मुझे एक आदमी की जरूरत होगी, जो मेरे बाद इन सबकी देखभाल करेगा। इसे भूलना मत।"

"मै आऊँगा—" जेसे जान बोला—"मैं आपको वचन देता हूँ, पापा! लेकिन जब मेरी खोज समाप्त हो जायेगी, तब।"

मैथ्यू जेसे जान को अपने से दूर जाते देखता रहा। वह घर की ओर वापस जा रहा था। "अगर तुम नाक्स से मिलो—" उसने पीछे से आवाज दी—"अगर तुम नाक्स से मिलो—तो उससे कह देना कि उसका भी यहाँ स्वागत है।"

"मैं उससे कह दूँगा—" जाते-जाते जेसे जान बोला। मैथ्यू उसे देखता रहा। वह जानता था कि जेसे जान तुरन्त ही घाटी से बाहर जानेवाले रास्ते पर नहीं हो लेगा। वह अपने धीमे कदमों से सावधानीपूर्वक जायेगा। वह

अपने कपड़े सहेजेगा और हैटी, आर्लिस तथा अपने दादा से, जाने के पहले, विदा लेगा।

उसके वहाँ से जाने के पहले मैथ्यू उससे दुबारा नहीं मिलना चाहता था। वह खलिहान की ओर चला गया और उसने अस्तबल से खच्चर बाहर निकाल लिये। खच्चरों का खाना अभी समाप्त नहीं हुआ था। मैथ्यू ने खच्चरों को फिर खेत पर ले जाने के लिए तैयार कर दिया। मकान की ओर देखे बिना, वह खेत की ओर वापस चला गया। वह वहाँ घास काटने के काम में फिर से जुट जाना चाहता था। अब उसके दो बेटे उसके पास से चले गये थे और स्वभावतः ही उसके ऊपर काम का भार दुहरा हो जाता। अब बस, राइस ही उसके पास बच गया था।

दृश्य चार

निर्माता

निर्माण के महान स्वर-सम में कुछ ऐसे प्रसंग, कुछ ऐसी गतियाँ होती हैं, जो मौसम के द्वारा नियंत्रित होती हैं। अब यह नवम्बर माह है और कोई नया काम आरम्भ नहीं हुआ है। सिर्फ आनेवाले शरत् काल की तैयारी के लिए किये जानेवाले पुराने प्रयत्नों पर ही सारा ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। चरी से तैयार किये जानेवाले छोए के समान ही काम करने की लहर कम और धीमी हो जायेगी। वसंत में नये आरम्भों और प्रयासों से यह फिर तीव्र हो उठेगी। ठंड में न मनुष्य अच्छी तरह काम करते हैं, न यंत्र। वे काम में धीमापन दिखाते हैं, दुराराध्य और हठी बन जाते हैं। जहाँ काम होता है, वहाँ ठंड के दिनों में आग जल उठती है और उसे घेर कर लोग खड़े हो जाते हैं। वे अपने हाथ आगे बढ़ा कर या आग की ओर अपने कुल्हे झुका कर अपने शरीर में गर्मी पहुँचाते हैं। नाक बहने लगती है और उन्हें रुक-रुक कर साँस लेनी पड़ती है। प्रयास की आकस्मिक स्फूर्ति में दस्ताने पहने दोनों हाथ एक-दूसरे से मिलते हैं, पालेदार, सख्त जमीन पर उनके पैरों की भारी आवाज सुनायी देती है। काम करनेवालों के रहने की जो जगह बनायी गयी है —उनके रहने का जो शिविर बनाया गया है—वहाँ से जब सुबह में लोग अपने काम पर जाते हैं, तो जहाँ धरती खाली है, वहाँ उनके पैर बर्फ को कुचल देते हैं।

लेकिन वास्तविकता अभी यही नहीं हैं। नवम्बर में, इस ओर दूर दक्षिण में बहुत कम काम हुआ है। उन्होंने अभी लोगों को काम करना सिखा कर तैयार किया है। सुरक्षित क्षेत्र और नदी के दक्षिणी किनारे पर कार्य की एकाग्रता है, जहाँ कि नींव डालने को लेकर ही बुरी तरह संघर्ष हो गया था। सब सामानों को मिलानेवाला यंत्र लगाने का काम समाप्त हो चुका था और वह नियमित रूप से अपने पेट से खड़खड़ की आवाज करते हुए गीली कंक्रीट के ढेर उगलता चला जा रहा है। ये ढेर पचाये जाने के योग्य नहीं हैं। इसे यंत्र के

जरिये फिर सुरक्षित क्षेत्र में पहुँचा दिया जाता है, जहाँ ऐसे ढेर-के-ढेर पहुँचते हैं और मनुष्य उन्हें साँचे में ढालते हैं। ये मनुष्य इनके जरिये पानी और नावों के आने-जाने पर नियंत्रण रखेंगे। दक्षिणी किनारे पर विनाश के विरुद्ध संघर्ष अभी भी जारी है। वे कूट-पीट कर नींव में प्लास्तर कर रहे हैं। उसे मजबूत बनाने और कमजोर दरारों को भरने का उनका यह प्रयास है। अगर उन्हें सफलता नहीं मिली, तो पूरी योजना निरर्थक हो जायेगी; क्योंकि पानी अपने बहाव के लिए सदा सबसे आसान रास्ता ढूँढ़ता है। अगर यहाँ कोई कमजोरी रह गयी, तो पानी उसे ढूँढ़ निकालेगा।

प्रति दिन बाँध पर काम करने के लिए नये आदमी आते हैं। वे अच्छी मजदूरी की आशा और नयी चीजों की उत्तेजना, सिहरन और उनके आश्चर्य से बँध कर पहाड़ियों और घाटियों से आते हैं। खाली हाथ, अपनी लम्बी पोशाक और पैरों में भारी जूते पहने वे भर्ती करने के दफ्तर में पहुँचते हैं। बड़ी शिष्टता, संकोच और आशा से वे सवाल पूछते हैं, जिन्हें पूछने के लिए वे आते हैं। उनकी जाँच की आवश्यकता के सम्बंध में, बड़ी कठिनाई से सुनते हैं। रजिस्टर में नाम लिखा कर अपनी बारी आने तक प्रतीक्षा करने की बात भी वे बड़ी मुश्किल से मानते हैं। स्कूल में पढ़नेवाले बच्चों के समान वे डेस्क के सामने बैठते हैं। अपनी दाहिनी बाँह वे शरीर से सटा कर रखते हैं, जिससे उन्हें लिखने की जगह मिल सके और वे मोटे तथा बड़े फार्मों को भर सकें। वे उन फार्मों पर बिल्कुल झुक जाते हैं, जैसे निकट-दृष्टि वाले हों, यद्यपि उनमें से अधिकांश व्यक्ति दो सौ गज की दूरी पर किसी पेड़ पर चढ़ी गिलहरी को देख सकते हैं। अपनी अनभ्यस्त उँगलियों से, जो हल और कुल्हाड़ी की बेंट पकड़ते-पकड़ते कड़ी और रुखड़ी हो जाती हैं, वे पेंसिल का छीला हुआ भाग पकड़ते हैं। वे होंठ हिलाते हुए उन्हें पढ़ते हैं और तब बैठ कर उसके जवाब के लिए कागज की ओर भौंचक घूरते रहते हैं। स्कूल के लड़कों के समान ही, वे पेंसिल की नोक जोर से दबा कर, बड़े श्रम से लिखते हैं। वे कागज पर बड़ी सावधानी से सही-सही जवाब लिखते हैं और एक-एक शब्द पर जोर डाल कर लिखते हैं। जब उनके हाथों से कागज ले लिये जाते हैं, तो वे चुपचाप देखते रहते हैं। वे धैर्य, उम्मीद और संकोच के साथ बैठ कर अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा करते हैं। इन सब चीजों से वे भौंचक हो जाते हैं; लेकिन उनमें शक्ति है, उम्मीद है और अच्छी मजदूरी पर, जो उन्होंने पहले कभी नहीं पायी, एक बड़ा बाँध बनाने की इच्छा है।

जिनकी भर्ती हो जाती है, उन्हें ज्ञात होता है कि उन्हें एक दल बना कर काम करना है और काम कठिन है। वे अकेले काम करने के आदी होते हैं—अपने खेतों में बिना किसी की देख-रेख के काम करने के आदी! लेकिन अब उन आदमियों का एक दल है और एक ऐसा आदमी है, जो उन्हें कहता है कि क्या करना है। यह डब्ल्यू. पी. ए. नहीं है......यह पी. डब्ल्यू. ए. नहीं हैं......(यह टी. वी. ए. है) ......यह एक बाँध के निर्माण का काम है और समय पर काम पूरा होने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पूरे आठ घण्टों तक कठिन श्रम करना ही होगा। मिट्टी, पत्थर और कंक्रीट का मिश्रण, मनुष्य-नियंत्रित यंत्रों में पहुँचाया ही जाना चाहिए। काम करने के इच्छुक हाथों के लिए खोदने, फावड़े चलाने और काट-काट कर मिट्टी फेंकने के लिए काफी जगह है। काम कठिन है, लेकिन अच्छा है। यह चीजें उपजाने के समान ही है, क्योंकि वे अपनी आँखों के सामने बाँध को धीरे-धीरे ऊपर उठते देख सकते हैं।

दूसरी विचित्रताएँ भी यहाँ हैं। शिविर आरामदेह और गर्म है। बड़े-बड़े हिस्सों को प्लाईवुड (एक विशेष लकड़ी) से छोटे-छोटे कमरों में विभाजित कर दिया गया है। प्रत्येक कमरे में दो आदमी सबसे अलग थलग होकर, एकांत में, रह सकते हैं। बिजली की बत्तियाँ हैं और बिजली के चूल्हे हैं। प्रतिदिन काम की समाप्ति पर देह की धूल को धो डालने के लिए गर्म पानी के फौवारे हैं। एक जलपान-गृह है, जहाँ, अधिकांश लोगों ने अब तक जैसा खाया होगा, उससे अच्छा खाना मिलता है। मिल-जुल कर बास्केट-बाल, वाली-बाल और पिंग-पांग (टेबिल-टेनिस)—जैसे निर्दोष खेल खेलने की भी व्यवस्था है। शिविरों में होनेवाले पोकर (ताश का एक खेल) और इसी तरह के दूसरे खेलों की तरह के ये खेल बहुधा दिलचस्प नहीं होते। पोकर व अन्य उसी तरह के खेल लोगों को मजदूरी मिल जाने के बाद कभी-कभी किसी शनिवार को अथवा कभी अन्य दिनों को भी रात-रात भर चला करते हैं। एक विचारशील सरकार ने उनके लिए इन सब चीजों की व्यवस्था की है।

काम कठिन और मेहनत का है—उसी तरह का अनभ्यस्त श्रम, जो उन्होंने हमेशा किया है। उनके साथ काम करनेवालों में कुछ चतुर और अभ्यस्त व्यक्ति भी हैं, जो दूसरे बाँधों और दूसरे क्षेत्रों से लाये गये हैं। ये अभ्यस्त व्यक्ति ऊँचे-ऊँचे यंत्रों पर बैठे रहते हैं और नीचे काम करनेवाले

व्यक्तियों को तिरस्कार से देखते हैं। वे अपने ज्ञान के हर्ष में जोरों से रूखे स्वर में चिल्लाते हैं। लेकिन यहाँ कुछ ऐसी नवीनता है, कोई ऐसी चीज—जिसे पहाड़ों से आनेवाले व्यक्तियों ने पहले कभी नहीं देखा। एक मनुष्य के लिए यहाँ काम में अभ्यस्त होना, एक व्यवसाय सीखना और बड़ा हथौड़ा, बड़ा ट्रैक्टर और वजन उठानेवाले यंत्र को चलाना जान लेना सम्भव है। वह नीले रंग के कागज पर बने नक्शों का अध्ययन कर सकता है, नलियों को ठोक-पीट कर जोड़ने और उन्हें अपने स्थान पर बैठाने का काम सीख सकता है। कागज-पेंसिल लेकर लिखने के काम में ये व्यक्ति धीमे और सिकुड़े हुए हैं, पर उनमें काम करने की एक क्षमता है, शारीरिक श्रम के अलावा कुछ और करने की इच्छा है। स्वयं को सुयोग्य, चतुर बनाने की आवश्यकता वे अनुभव करते हैं। यह समाचार भी छन कर पहाड़ियों में वापस पहुँचता है और प्रतिदिन वहाँ से एक, दो या आधे दर्जन आदमियों को भर्ती करनेवाले दफ्तर में ले आता है।

चिकसा-बाँध के निर्माण का कार्य शुरू हो गया है। अच्छे मौसम का पहला भाग पीछे छूट चुका है और बुरे मौसम का पहला भाग आनेवाला है। लोग काम करने के आदी हो गये हैं। नियत समय पर पहुँचने, काम करने और फिर वहाँ से चल देने की उन्होंने आदत डाल ली है। उनके शिविर अब पहले के समान नये नहीं हैं, उन पर दाग और निशान पड़ चुके हैं। रात में लोग फौवारेवाले कमरे में इकट्ठा होते हैं और घुटने टेक कर एक वृत्त बनाते हुए बैठ, मन-ही-मन प्रार्थना करते हुए, दीवार की ओर पासे उछालते हैं। वे अपने सोने के तख्तों पर अपने दोनों हाथों के तकिये बना, अपना सिर डाल लेटे लेटे, धरन की ओर देखते रहते हैं अथवा उन सामग्रियों को पढ़ते रहते हैं, जो उन्हें अपने वर्गों के लिए पढ़ने को दी गयी हैं। वे अपनी सरल-स्वाभाविक अवस्था में हैं। वे आराम और स्वयं को आश्वस्त अनुभव करते हैं। वे काम कर रहे हैं, वे चिकसा का निर्माण कर रहे हैं। वेतन के प्रत्येक दिन नीले रंग के मनीआर्डर फार्म पहाड़ियों में पहुँचते हैं। और, दूसरे दिन जब भर्ती का दफ्तर खुलता है, तो उसके सामने नये आदमी खड़े रहते हैं। शिष्टता, संकोच और उम्मीद सँजोये वे उन प्रश्नों को पूछने की प्रतीक्षा करते रहते हैं, जिन्हें पूछने के लिए वे आये हैं।

प्रकरण सात

दिन के चार बजे तक पूरे खेत की फसल इकट्ठी कर लेना दो व्यक्तियों के लिए बड़ा कठिन था। उस साल पतझड़ के मौसम से लेकर कपास और मकई की फसल पूरी तरह तैयार हो जाने तक मैथ्यू बड़ी कड़ी मेहनत करता रहा। अपनी याद में उसने इतनी मेहनत और कभी नहीं की थी। दिन का प्रकाश फैलने के पहले ही वह रोज खेतों में पहुँच जाता और अंधेरा होने तक काम करता रहता। अगर आकाश में चाँद बड़ा होता और रात उजेरी होती, तो खाना खाने के बाद वह फिर खेतों में लौट जाता। काम करते-करते वह भविष्य के बारे में विचार करता—अगले साल की योजनाएँ बनाता। अगले साल वह और ज्यादा जमीन में मकई और चरी उपजायेगा। कपास उगाने की अपेक्षा उसमें कम मेहनत पड़ती है। चरी और मकई की पूरी-पूरी खपत के लिए वह कुछ बछड़े खरीद लेगा। इस तरह वह अपनी सारी जमीन में खेती कर सकेगा। कोई भी जमीन बेकार नहीं पड़ेगी। साल-दो साल या उससे भी अधिक वह ऐसा ही करेगा, जब तक उसके बेटे घर वापस नहीं आ जाते।

राइस उसके साथ काम करता—उतनी ही स्थिरता से, जितनी स्थिरता से मैथ्यू स्वयं काम करता था। और, मैथ्यू इसके लिए मन-ही-मन उसका आभार मानता था। जीवन में नाक्स की रुचि की सूचना देनेवाले उसके शोर-गुल और उसकी चिल्लाहट के बिना—जैसे जान की चुप्पी के बिना—खेत इन दिनों सूने-सूने लगते थे। मैथ्यू को कौनी की अनुपस्थिति भी खल रही थी, जो अपने बाथरोब (नहाने के बाद पहनी जानेवाली गाउन की तरह की एक पोशाक) में, खाली पैर घर-भर में घूमा करती थी। उसके खुले बाल चेहरे पर लटकते रहते थे। कभी-कभी इसकी ठीक उल्टी वेश-भूषा रहती थी उसकी—तब वह बड़ी सुंदरता से सजी-सँवरी रहती थी, होंठों पर लिपस्टिक की सावधानी से लगायी गयी परत होती, भौंहें सँवरी होतीं और वह ताजी-धुली और 'स्टार्च' की हुई पोशाक पहने रहती थी। घर में, बस, अब मैथ्यू और राइस थे—आर्लिस और हैटी थीं और मैथ्यू का बूढ़ा पिता था। उस पुराने सूने घर में उनकी उपस्थिति भी शून्य बन कर रह गयी थी। खाने के समय रसोईघर में बलूत की उस बड़ी मेज के सामने छिट-पुट बैठे वे बड़े अजीब-से लगते थे।

कुछ समय के बाद, मैथ्यू यह जान गया कि राइस अब चारलेन से नहीं मिला करता है। मैथ्यू जब भी कभी उसे अचानक, बिना उसकी जानकारी के

उसकी ओर देखता, उसका चेहरा सूना-सूना और उदास दिखायी देता था। किंतु मैथ्यू कुछ नहीं कर सकता था; क्योंकि राइस चारलेन के सम्बंध में कभी कोई बात ही नहीं करता था। वह सिर्फ अपने काम, दिन और मौसम के बारे में ही बातें करता। एक या दो बार उसने बड़े उत्साह से अपनी दुग्धालय-योजना के बारे में बातें की थीं। एक गर्म खलिहान में विद्युत्-चालित बड़े-बड़े यंत्रों-द्वारा किस तरह दूध दुहा जायेगा, इसका भी उसने एक रोचक चित्र खींचा था।

"उसके लिए हम लोग शहर से बहुत दूर हैं।"—मैथ्यू ने उससे कहा था।

"किंतु..." राइस बोला था— "हम लोगों को..."

"हम लोगों को कुछ नहीं करना है—" मैथ्यू ने सख्ती से कहा था— "मैंने कहा न, उसके लिए हम लोग शहर से काफी दूर हैं।"

दोनों लड़कों में से अभी तक कोई घर वापस नहीं आया था। एक पोस्ट-कार्ड लिख कर भी उन्होंने मैथ्यू को अपने बारे में कोई सूचना नहीं दी थी। किंतु मैथ्यू ने उनसे कोई समाचार पाने की आशा नहीं की थी। जब वह उन्हें घाटी में प्रवेश करते देखता, तभी वह समझता कि वे वापस आ गये हैं। अमेरिका से डनबार-परिवार का अधिक पत्राचार नहीं होता था।

उनसे मिलने सिर्फ क्रैफोर्ड गेट्स ही आता था। सप्ताह में वह कम-से-कम एक बार अवश्य आता था। सामान्यतः वह शनिवार को आता था और आर्लिस को सिनेमा दिखाने शहर ले जाता था। मैथ्यू उसके प्रति शिष्ट था; लेकिन उनके बीच जो पहले मित्रता-सी थी, मिलने के साथ ही जो उनमें एक घनिष्ठता—एक अपनत्व स्थापित हो गया था—वह अब समाप्त हो चुका था। क्रैफोर्ड जब घाटी में होता था, मैथ्यू अपने भीतर एक तनाव महसूस करता था। क्षण-भर के लिए उसे ऐसा लगता, जैसे उसके भीतर, उसके बचावों के ऊपर आक्रमण की प्रवृत्ति हावी हो जायेगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं कभी। क्रैफोर्ड प्रत्यक्षतः सिर्फ आर्लिस के लिए ही आता था और मैथ्यू के प्रति उसका व्यवहार, बस, एक मित्र की तरह था।

पर हेमंत में किये जानेवाले काम भी तो थे—कपास की फसल तैयार हो जाने के बाद बिनौलों को तेजी से चुनना और अँगीठी में जलाने के लिए गर्मी के मौसम में काट कर रखी गयी लकड़ियों को चीरना। फिर रात में उत्तर की ओर से उड़ कर दक्षिण की ओर जाते हुए कलहंसों की चीख भी सुनायी देती थी। अपने जीवन में पहली बार मैथ्यू ने बिनौले चुननेवालों को बहाल किया और कुछ दिनों तक घाटी में काफी चहल-पहल रही। कपास की क्यारियों में झुक-झुक

कर बिनौले चुनते हुए आदमियों के कारण, जिनकी पीठ पर लम्बे बोरे बँधे होते, घाटी में जीवन की भाग-दौड़ फिर नजर आने लगी। वे बिनौले चुन-चुन कर तौलने की मशीन के पास ले आते, जहाँ मैथ्यू श्रमपूर्वक, एक नोटबुक में, प्रत्येक बिनौले चुननेवाले के नाम के आगे, उसके प्रत्येक बोरे का वजन नोट कर लेता। बड़ी बाल्टियों और बड़ी तश्तरियों में सफेद कपड़े ढँक कर खाना आता और कपास की क्यारियाँ जहाँ खत्म होती थीं, वहाँ सबके बीच उसे बाँट दिया जाता।

बिनौले चुनने का काम जब समाप्त होने को आया, तो मकई पक कर तैयार हो गयी। मैथ्यू और राइस तब खेतों में गाड़ी लेकर पहुँचने लगे। खच्चरों के लगाम नहीं लगी होती और वे धीरे-धीरे गाड़ी खींचते हुए मकई के पौधों की कतारों से होकर एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाते, जहाँ मैथ्यू उन्हें दूसरी दिशा में मोड़ देता। गाड़ी के साथ दोनों ओर मैथ्यू और राइस चलते और डंठल से मकई तोड़-तोड़ कर गाड़ी में फेंकते जाते और एक खोखली धप की आवाज के साथ वे गाड़ी में गिर जातीं। गाड़ी को रास्ता देने के लिए, उसके वजन से, मकई की सूखी-कड़ी डंठलें झुक कर टूट जातीं। गर्मी के लम्बे हरे-भरे मौसम-भर सीधे तन कर खड़े रहने के बाद, वे झुक कर—टूट कर—जमीन से जा लगतीं।

तब वे मन में उत्तेजना छुपाये, रुई से भरी गाड़ी को, रुई साफ करनेवाली चर्खी तक ले जाते। खच्चर गाड़ी को खींचते हुए धीरे-धीरे काफी देर में अपना रास्ता तय करते थे और वहाँ पहुँच कर रुई लेकर आये हुए व्यक्ति तौलनेवाली मशीन के सामने एक कतार में खड़े प्रतीक्षा करते रहते। गाड़ी से रुई निकालते ही, अचानक हवा में उसकी गंध व्याप्त हो जाती और उसके साथ ही, नजदीक की ही गाड़ी से मुर्गी के माँस के तले हुए टुकड़ों के तेल की गंध भी फैल जाती थी। उसके बाद गोल-भूरे रंग के कागज में अपनी रुई के नमूने दबाये मैथ्यू कपास खरीदनेवाले दफ्तरों में पहुँचता। वहाँ वह उन लोगों को गौर से देखा करता था, जो बड़ी सावधानी और बारीकी से रुई के रेशे निकाल कर उसकी जाँच करते थे। वे उसे खींच कर उसकी मजबूती का अंदाजा लगाते थे। रेशे की जाँच करते वक्त और उसकी लम्बाई नापते समय अचानक ही, उनके बड़े हैटों के नीचे, उनके चेहरे पर तल्लीनता और गम्भीरता उभर आती। फिर वे उसकी कीमत लगाते। इस बार रुई का भाव अच्छा था और फसल भी अच्छी हुई थी।

और तब, नवम्बर में, उनके लिए हेमंत की सबसे सुंदर विधि का अवसर आया। एक रात खाना खाने के बाद मैथ्यू 'सीअर्स रोएबक' कम्पनी का सूचीपत्र ताक से ले आया, जहाँ उसके आते ही, उसने उसे रख दिया था। सूचीपत्र काफी मोटा और भारी था—मैथ्यू के हाथों में वह सम्पन्नता का भंडार था। जादू की पुस्तक थी वह, उनकी इच्छाओं की पुस्तक थी! वह उसे खाने की मेज तक ले आया और जहाँ पहले उसकी तश्तरियाँ रखी हुई थीं। वहाँ उसने उसे खोल कर फैला दिया।

फिर उसने अपने निकट खड़े व्यक्तियों की ओर देखा। "मेरे विचार से, अपने आर्डर भेज देने का समय आ गया है—" वह बोला—"हममें से प्रत्येक आदमी को जाड़े के कपड़ों की जरूरत पड़ेगी।"

आर्लिस, हैटी और राइस जिस तेजी के साथ उसकी ओर झुके और उनके चेहरों पर जो उल्लास चमक उठा, मैथ्यू उसे देखता रहा। वह उन्हें प्यार-भरी नजरों से निहार रहा था। काफी लम्बे अर्से से सँजोये सपने के पूरा उतरने की खुशी और नयी आशा की झलक मैथ्यू को उनकी आँखों में दिखायी दे रही थी। उनमें से हर कोई ने किसी-न-किसी समय गुप्त रूप से ताक पर से वह सूचीपत्र उतारा था और उसके मोटे, चिकने रंगीन पृष्ठों को उलट कर देखा था—उसमें पतले भूरे कागजों पर छपे कथई रंग के चित्रों को देखा था—उन बहुमूल्य खजानों का वह आश्चर्यजनक भंडार सिर्फ डाक-पार्सल और थोड़े रुपयों से ही प्र त किया जा सकता था।

मैथ्यू हँस पड़ा। "अच्छी बात है—" वह बोला—"अब मुझे बताना शुरू करो कि तुम लोग क्या चाहते हो और मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या मिल सकता है!"

आर्लिस ने अपने दोनों हाथ यों मिला दिये, जैसे किसी फैसले पर पहुँचते हुए उसे तकलीफ हो रही है। "मुझे घर के लिए कुछ चीजों की जरूरत होगी—" वह बोली—" जैसे सबसे पहले काफी तैयार करने का एक नया बर्तन। हमारे पास जो है, उसकी पेंदी लगभग जल चुकी है।

मैथ्यू ने उसकी ओर खिझाती हुई नजरों से देखा। "कुछ सुंदर-से कपड़ों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?" वह बोला—"उजली पोशाकें और साटिन के स्कार्फ तुम्हारे मित्र को बहुत पसंद आयेंगे।"

वह शर्मा गयी। "मुझे नये कपड़ों की जरूरत नहीं है—" वह बोली—"हो सकता है, घर में पहनने के लिए मुझे एक या दो कपड़ों की जरूरत हो—

मेरे पास जो हैं, वे अब बहुत पुराने हो गये हैं।"

मैथ्यू फिर हँसा। सूचीपत्र के पीछे से वह हरे रंगवाला सादा कागज फाड़ने लगा, जिस पर उस कम्पनी के पास उन्हें अपने 'आर्डर' भेजने थे। "रुई का भाव इस साल अच्छा था—" वह बोला—"इसलिए हरेक को कोई ऐसी चीज भी मिलेगी, जिसकी उन्हें जरूरत नहीं है। अच्छा होगा, अगर तुम लोग जल्दी से तय करके मुझे बताओ।"

उसने सूचीपत्र का वह पृष्ठ निकाला, जिसमें मर्दों की पोशाक के बारे में छपा था। "पहले मैं, पापा के लिए जो चीजें आयेंगी, उनसे लिखना शुरू करूँगा।" वह बोला—"उन्हें कुछ नये लम्बे कोटों और कमीजों की जरूरत पड़ेगी। दो जोड़े लम्बे अंडरवीयर (जाँघिये) भी!" उस सादे 'आर्डर फार्म' पर वह सावधानी से लिखने लगा। उसकी उँगलियाँ, पोशाकों के नम्बर, उनकी कीमत और वजन, ढूँढ़ निकालती थीं और पेंसिल की नोक को गीली बनाने के लिए वह उसे होंठों में दबा लेता था। उसने लिखना बंद कर दिया और उस सादे 'आर्डर-फार्म' की ओर देखा। "मेरे विचार से उन्हें अब इसके सिवा और किसी चीज की इच्छा नहीं होगी—" वह उदासी से बोला—"किसी वस्तु को पाने की इच्छा करने का समय उनके लिए बीत चुका है। बस, गर्म कपड़े, भोजन और तापने को निकट में आग, जाड़े के लम्बे मौसम-भर के लिए, उनके लिए पर्याप्त होगा।"

उसने राइस की ओर देखा—"और तुम्हारे लिए, राइस?"

"मुझे एक लम्बे कुरते की जरूरत है—" राइस ने कहा—"कम्बल की धारियोंवाले वे कुरते मुझे पसंद हैं...और एक जोड़ा जूता।"

"अपने बूढ़े पिता के लिए जूतों की बात तो मैं भूल ही गया—" मैथ्यू बोला— "यह जूता मजबूत नहीं है—उन्हें मुलायम चमड़े के ऊँचे जूते चाहिए। और कुछ वे अपने पैरों में पहनने को तैयार ही नहीं हैं।" वह रुका—" और क्या चाहिए, राइस?"

राइस ने मेज पर रखे अपने हाथों की ओर देखा। "कुछ नहीं—" वह बोला—"मुझे जो चाहिए, मेरे पास है।"

मैथ्यू में फिर खिझाने की भावना उभर आयी। "रविवार को पहन कर घूमने के लिए तुम्हें कुछ पैंट और चमकदार जूते नहीं चाहिए, जिनमें तुम सज-धज कर निकल सको? तुम क्या समझते हो, कम्बल की धारियोंवाले कुरते और उन भारी जूतों में लड़कियाँ तुम्हारी ओर आकर्षित हो जायेंगी?"

राइस उसकी ओर से घूम पड़ा। "मैं लड़कियों को आकर्षित करता नहीं चलता।" वह बोला—"मैंने वह मूर्खता छोड़ दी है।"

मैथ्यू हँसा। "वसंत का मौसम आने दो, तुम उसे फिर शुरू कर दोगे—" वह बोला—"हाँ, इन पैंटों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? पसंद हैं तुम्हें?"

सूचीपत्र के उस खुले पृष्ठ पर राइस की आँखें खिंच आयी थीं। "नहीं" वह बोला—"वे दूसरे, जो बगल में हैं।"

मैथ्यू की भौंहें सिकुड़ आयीं। "पैंट पसंद करना आता है तुम्हें, इसमें शक नहीं—" वह बोला—"उनमें एक जोड़े की कीमत इन पैंटों से तीन डालर अधिक है।" उसने राइस के चेहरे में होनेवाली हलचल को देखा—"मैं इसके लिए बहस नहीं कर रहा हूँ। किसी लड़की को आकर्षित करने के लिए उनकी तीन डालर अधिक कीमत सम्भवतः ठीक ही है।"

वे देखते रहे और मैथ्यू फिर लिखने लगा। वह सावधानीपूर्वक पोशाकों के वजन, नम्बर और नाप नोट कर रहा था। तब उसने हैटी की ओर आँखें घुमायीं।

"और अब हैटी के लिए? तुम्हें झुरमुट की उस सड़क के लिए नसावर की दर्जनों खाली बोतलें चाहिए, हैटी?"

अपने दाँतों में अपनी जीभ दबाये हैटी सोच रही थी। कितनी सारी चीजें थीं......आश्चर्यजनक चीजें......किंतु अभी वह उनके बारे में जानती नहीं थी। लिपस्टिक, पाउडर और रुज—औरत की खूबसूरती और जरूरत के लिए सभी अद्भुत चीजें और साधन। बस, वह उनके बारे में जानती नहीं थी।

"मैं नहीं समझती कि उस पुराने 'सीयर्स ऐंड रोएबक' से हमें आर्डर देकर चीजें क्यों मँगानी पड़ती हैं?" वह बोली—"जब तक किसी वस्तु को आप स्वयं छू परख कर नहीं देख लें, आप नहीं कह सकते—आपको क्या चाहिए।"

"मैं आपको एक बात बताऊँगी—" आर्लिस ने दृढ़ता से कहा—"इस लड़की के लिए आपको कुछ 'ब्रेसियरों' (कंचुकियों) के आर्डर देने होंगे। लगभग चार—माप ३५, दुहरी और 'ए' ढक्कन, पापा! आप सूचीपत्र में देख सकते हैं कि 'ए' ढक्कन, 'बी' ढक्कन वगैरह कहाँ लिखा है......"

उसकी आवाज खामोशी में विलीन हो गयी। मैथ्यू निस्तब्ध बैठा हैटी को देख रहा था।

हैटी सुलग उठी। "मुझे इन ब्रेसियरों की जरूरत नहीं है—" उसने रूँधी आवाज में कहा।

आलिस हँस पड़ी—"अगर तुम उन्हें जल्दी पहनना शुरू नहीं करोगी, तो तुम सारे परिवार को दूसरों के सामने शर्म से गरदन झुका देने के लिए मजबूर कर दोगी, हैटी!" उसने मैथ्यू की ओर देखा—"अगर आप चार की जगह छः का आर्डर दें, तो अच्छा है, पापा!"

मैथ्यू ने हैटी पर से अपनी आँखें हटा लीं। वह सूचीपत्र के पन्ने उलटने लगा। उसने उसमें ब्रेसियर, चोली पहने माडलों को गौर से देखा। अब तक उसके लिए यह सिर्फ एक दिलचस्पी की चीज थी, जिस प्रकार हेमंत में अपनी जरूरत की चीजों का आर्डर देने में वह दिलचस्पी लेता था। दो लड़कों के चले जाने के बाद भी और उनकी जरूरत की और मनलायक चीजों के अभाव में 'आर्डर' कम होने पर भी मैथ्यू को उसमें आनंद आ रहा था। लेकिन अब—वह नहीं जानता था कि हैटी बढ़ रही है—अब वह एक बच्ची नहीं रही थी और औरत भी नहीं बन पायी थी अभी। हैटी को वह हमेशा से सबसे ज्यादा चाहता था—सबसे छोटी और सबसे प्यारी। वही एक ऐसी थी, जो उसे 'महाशय' और 'पापा' कह कर नहीं पुकारती थी। उसने उसे सारी छूट और स्वतंत्रताएँ दे रखी थीं, जो दूसरों को नहीं मिली थीं और फिर भी उन लोगों ने इसका बुरा नहीं माना था; क्योंकि वह उनकी भी प्रिय थी। घर-भर में वह सबसे छोटी थी और उसके छोटे होने में भी जैसे एक विशेषता थी।

उसके दिमाग और उसकी उँगली ने सूचीपत्र में वह विवरण ढूँढ़ निकाला—"एक चपल लड़की के लिए उत्तम सूती ब्रेसियर...बिना किसी तकलीफ के पहनी जा सकनेवाली, गोल सिलाई...रिबन की सुंदर गाँठवाली...." उसने सोचना बंद कर दिया और पैड पर लिखने लगा।

"आप इसे लिखियेगा नहीं—" हैटी ने जैसे लड़ने के लिए उद्यत हो कहा—"आप मुझे ऐसी किसी चीज को पहनने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। वे औरतों के लिए हैं।"

मैथ्यू ने अपना सिर ऊपर उठाया—"यहाँ आओ, हैटी!"

हैटी अनिच्छापूर्वक पास आ गयी। वह उसकी बगल में खड़ी हो गयी। सूचीपत्र के उस पृष्ठ की ओर से उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा रखा था।

"यह तो स्वाभाविक चीज है, लाड़ली!" मैथ्यू ने कोमलता से कहा—"तुम किसी स्वाभाविक चीज के विरुद्ध नहीं लड़ सकतीं। कोशिश करना भी बेकार है।"

"मैं..." वह बोली।

"हर चीज बढ़ती और बदलती है—" मैथ्यू बोला—"धरती और पेड़ों के समान ही तुम भी बढ़ रही हो—बदल रही हो। तुम्हें तो इसका गर्व होना चाहिए।" उसने दूसरे लोगों की ओर देखा; लेकिन वे उसकी ओर नहीं देख रहे थे। राइस अपनी कुर्सी में पीछे झुका धीरे धीरे मुँह से सीटी बजा रहा था। वह सुस्त भाव से खिड़की के बाहर के अंधेरे को देख रहा था। आर्लिस उठ गयी थी और भीतरी बरामदे में खुलनेवाले दरवाजे में खड़ी जैसे कुछ सुन रही थी।

"मेरे खयाल से, मैंने किसी मोटर के आने की आवाज सुनी है—" वह बोली।

मैथ्यू ने सूचीपत्र का पृष्ठ उलटा। उसने हैटी की ओर देखा, जैसे कोई साजिश कर रहा हो। "इनमें से कुछ लोगी?" वह बोला—"वे, जिनके नीचे गोटा लगा है।"

हैटी की आँखें उस खुले पृष्ठ पर पहुँच गयीं, जहाँ मैथ्यू अपनी उँगली से बता रहा था। उसने अजाने ही एक साँस खींची और पूछा—"असली गोटा?"

"असली गोटा—" मैथ्यू ने हामी भरी—"वहाँ यह लिखा हुआ है। तुम्हारी नयी ब्रेसियरों के लिए इनमें से छः के लिए आर्डर दे दिया जाये, तो कैसा रहेगा?"

हैटी अब तक मेज पर झुक कर वह विवरण पढ़ रही थी। संतुष्ट होकर मैथ्यू ने तेजी से लिखना शुरू कर दिया। वह दबी हुई हँसी हँसा। "मेरे खयाल से तुम्हें पहलीवाली में से छः और दूसरीवाली में से छः चाहिए।" वह बोला।

आर्लिस ने कहा—"मैं मोटर के आने की आवाज़ सुन रही हूँ। ताज्जुब है कि कौन..."

मैथ्यू सुनने लगा। राइस ने अपना सिर ऊपर की ओर उठाया और खिड़की की ओर घूम पड़ा। उस निस्तब्धता में मोटर की आवाज अब जोर से सुनायी दे रही थी और मैथ्यू ने आर्लिस के चेहरे में परिवर्तन आते देखा।

"यह क्रैफोर्ड है—" आर्लिस बोली—"मैं पहचानती हूँ..."

वह रुक गयी और मैथ्यू की ओर से उसने अपनी नजरें हटा लीं। मैथ्यू का दिल जैसे बैठने लगा। सब-के-सब मौन प्रतीक्षा करते रहे, जब तक कि मोटर का एंजिन बन्द नहीं हो गया। उसका दरवाजा बन्द होने की आवाज आयी और फिर छः सीढ़ियाँ पार कर किसी के बाहरी बरामदे में पहुँचने तक सन्नाटा रहा। तब उन्होंने क्रैफोर्ड की आवाज सुनी—"हेलो, हेलो!"

लेकिन मैथ्यू अभी भी नहीं हिला। वह बस आर्लिस की ओर देखता रहा, जब तक कि आर्लिस ने उसकी ओर अपना सिर घुमाया और फिर दूसरी ओर मोड़ लिया। वह दरवाजे तक गयी और उसे खोल कर भीतरी बरामदे से होती हुई, बाहर अंधेरे में निकल गयी।

मैथ्यू ने वापस अपने सामने पड़े सूचीपत्र की ओर देखा। वह उदासीन भाव से उसके पृष्ठ उलटने लगा। मकान के बाहरी हिस्से में होनेवाली आर्लिस और क्रैफोर्ड की भनभनाहट उसे सुनायी दे रही थी। और तब, उसने निर्णयात्मक रूप से वह मोटी पुस्तक बंद कर दी।

"हम लोग कल यह काम खत्म कर लेंगे।"—वह बोला।

आर्लिस क्रैफोर्ड को रसोईघर में ले आयी। क्रैफोर्ड जल्दी-जल्दी बातें कर रहा था और उत्तेजना से उसका चेहरा चमक रहा था। "हेलो, मि० डनबार!" वह बोला—"वह जीत गया। वह फिर जीत गया।"

"तुमने उसके हारने की उम्मीद नहीं की थी—की थी क्या?" मैथ्यू ने कहा। वह आर्लिस की ओर मुड़ा—"आर्लिस! मुझे एक कप कॉफी और चाहिए, बशर्ते उसे तुम थोड़ा गरम बना सको!"

"हाँ, पापा!"—आर्लिस ने कहा।

"कौन जीता?"—राइस ने पूछा।

"रूजवेल्ट!" क्रैफोर्ड ने कहा—"लैंडन कुछ नहीं कर सका। रूजवेल्ट ने उसे जैसे पहाड़ से गिरा कर उसका अस्तित्व ही मिटा दिया।"

मैथ्यू ने हैटी को सूचीपत्र की ओर बढ़ते और उसे अपने सामने खींचते देखा। जब उसने देखा कि हैटी क्या देख रही है, तो वह मुस्कराया। हैटी औरतों की निरर्थक प्रसाधन-सामग्रियों के पृष्ठ देख रही थी। वह बड़े ध्यान से एकाग्रचित्त हो उन चमकीले पृष्ठों के ऊपर रुकी हुई थी। "ठीक हो जायेगी वह—" मैथ्यू ने स्वयं से कहा—"वह एक औरत है और वह ठीक हो जायेगी।" उसने वापस क्रैफोर्ड की ओर देखा।

"ऐसा लगता है, तुम इस सम्बंध में चिंतित थे—" वह बोला—"छिः! तुम सिर्फ आधे दिन तक घाटियों में घूमे होते और तुम्हें पता चल जाता कि लैंडन के जीतने की कोई उम्मीद नहीं थी।"

क्रैफोर्ड मेज के किनारे बैठ गया। उसके ललाट पर सिकुड़नें उभर आयी थीं। "लगता है, अब यह अध्याय समाप्त हो गया—" वह बोला—"जिस तरह पिछले वसंत में सर्वोच्च न्यायालय ने हमारे विरुद्ध रुख अख्तियार किया

था और अदालतों का सहारा ले तथा अन्य तरीकों से वे टी. वी. ए. के पीछे पड़े हैं—वह सब समाप्त हो गया अब।" वह मुस्कराया—"मुझे आपसे यह बताने में कोई झिझक नहीं है कि मैं डर गया था। कुछ भी हो, जिस तरह से देश-भर के समाचारपत्र उल्टी-सीधी भविष्यवाणियाँ कर रहे थे और लैंडन के पक्ष में थे— वह आपको डरा देने और काले को सफेद बनवा देने के लिए पर्याप्त था। मुझे समझना चाहिए था कि लोगों में बुद्धि है और वे रूजवेल्ट को हराना नहीं चाहेंगे।"

मैथ्यू आर्लिस को प्यालियाँ लाकर, उनमें कॉफी ढालते देखता रहा। कॉफी का बरतन उसने अँगीठी पर वापस रख दिया और मेज के निकट चली आयी। सरल-स्वाभाविक ढंग से वह क्रैफोर्ड की बगल में बैठ गयी। मैथ्यू ने अपने चेहरे पर सिकुड़नें नहीं उमटने दीं। उसने झुक कर कॉफी का प्याला उठा लिया और उसे पीते हुए अपने चेहरे के भावों पर पर्दा डाल दिया। गरमी-भर जो भय उसे सताता रहा था, वह फिर उभर आया और इस बार भय की यह भावना, पहले से तीव्र और सशक्त थी।

अपन जीवन में पहली बार उस लम्बे ग्रीष्म और हेमंत में मैथ्यू को भय लग रहा था। क्रोध, उपद्रव और घृणा का भय उसे नहीं सता रहा था—उसे भय लग रहा था एक लड़की और एक लड़के से—उनके प्रेम से। उसने क्रैफोर्ड और आर्लिस को बड़े ध्यान से देखा था। प्रति शनिवार की रात को वह क्रैफोर्ड की बाँहों में बाँहें डाल कर आर्लिस को जाते देखता। वे दोनों बड़े प्रसन्न रहते और ऐसे-ऐसे मजाक पर हँस पड़ते, जो समझ में ही न आते। अपने प्रतिदिन के कामों के बीच आर्लिस के चेहरे पर अचानक स्निग्धता छा जाती, जब वह क्रैफोर्ड के बारे में सोचने लगती थी। घर में झाड़ू लगाते-लगाते, अचानक उसके हाथों में शिथिलता आ जाती, आलू छीलने में जुटे उसके हाथ अचानक निर्जीव-से हो उसकी गोद में गिर पड़ते और क्रैफोर्ड के बारे में कुछ सोचते ही उसका मुख स्निग्ध हो उठता, उसकी आँखें सुदूर कहीं देखने लग जातीं। मैथ्यू ने यह सब देखा था और वह जानता था कि उन क्षणों में आर्लिस उससे दूर चली जाती थी, घाटी से दूर चली जाती थी। वह उस वक्त डनबारों के अब तक के इतिहास और उनकी वर्तमान स्थिति—सबको भुला देती थी। और, मैथ्यू को इससे भय लगने लगा था।

वह क्रैफोर्ड का घाटी में आना रोक देना चाहता था। गाड़ी आने की आवाज सुनायी देती, क्रैफोर्ड उससे उतर कर सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उनके पास

आता, शिष्टता और गम्भीरतापूर्वक अभिवादन करता और आर्लिस की बाँह थाम कर उसे उनसे दूर अपने साथ ले जाता। मैथ्यू ने जब-जब यह देखा था, उसने स्वयं के भीतर क्रोध की भावना जकड़ती महसूस की थी। वह जानता था कि ऐसे ही मौक़ों में, एक मौक़ा वह भी आयेगा, जब आर्लिस उससे सदा के लिए दूर चली जायेगी और वह डर रहा था।

किंतु वह कुछ नहीं कर सकता था। घाटी छोड़ कर जानेवालों-द्वारा दिये गये घाव अभी तक ताजे थे। नाक्स के छुप कर टी. वी. ए. में चले जाने और जेसे जान—यहाँ तक कि कौनी का भी—अभाव वह भूला नहीं था। इन सबकी चोट और पीड़ा उसके दिल को मथ डालती थी। वह अपने विचारों के बारे में एक शब्द भी बोलने का साहस नहीं कर पा रहा था; क्योंकि वह जानता था कि आर्लिस भी उसे छोड़ दे सकती थी—वह भी अपना सामान बाँध, क्रैफोर्ड के साथ हँसी-खुशी, बिना एक बार भी पीछे देखे, चली जा सकती थी। वह डर रहा था और अपने इस डर के सम्बंध में उसके पास कुछ भी करने को नहीं था। वह इतना ही कर सकता था कि अपने विचार स्वयं अपने में ही छुपाये रखे और मित्रतापूर्ण ढंग से बिना कुछ 'हाँ'-'ना' किये उनसे बातें करता रहे। वह व्यर्थ ही अपने मन को तसल्ली देने का प्रयास करता कि अगर वह विरोध नहीं करेगा, तो साहस के अभाव में उसका भय पूरा नहीं उतरेगा—आर्लिस उसके विरुद्ध कदम नहीं उठायेगी। बाद के दिनों में नदी के पानी की अपरिहार्य बढ़ती के समान ही यह भी था—जब अपनी जानकारी के आधार पर मनुष्य सिर्फ इंतजार करता है, अपनी आशा को जीवित रखता है और फिर इंतजार करता है कि देखें, इस बार बाढ़ का पानी कितना ऊँचा आता है।

अपने विचारों और विश्वासों को किसी के सामने प्रकट करने में मैथ्यू अपने आज तक के जीवन में कभी भयभीत नहीं हुआ था। लेकिन अब उसके भीतर किसी कसी हुई गाँठ के समान ही वे पड़े हुए थे, यद्यपि वह जानता था कि उसके इन विचारों में आंशिक रूप में उसकी घाटी का भय समाया था—टी. वी. ए. का भय समाया था। पहले उसने क्रैफोर्ड को पसंद किया था और अगर वह टी. वी. ए. में नहीं काम करता होता, तो आर्लिस और क्रैफोर्ड की जोड़ी मैथ्यू को पसंद थी और वह इसे जानता था, क्योंकि आर्लिस अब तक अविवाहित थी—घर के कामों और परिवार के प्रति उसके कर्तव्य ने, जिसे उसने स्वेच्छापूर्वक पंद्रह साल की उम्र में स्वीकार किया था, उसे अब तक

विवाहित बनने से रोक रखा था। लेकिन अपनी भावना के इस संघर्ष, अपने भय के विभिन्न सूत्रों को समझने के बाद भी, क्रैफोर्ड को वह अपनी घाटी में देखना इस एक कारण से नहीं पसंद करता था कि एक-न-एक दिन क्रैफोर्ड उसके पास टी. वी. ए. की ओर से युद्ध की घोषणा का अंतिम निर्णय लेकर आनेवाला था और मैथ्यू इसे जानता था। और, इन सबके बावजूद मैथ्यू अपने भीतर पनपनेवाले भय और क्रोध की भावना की वर्तमान स्थिति को नहीं बदल पा रहा था। पक्षपात, घृणा या प्रेम के समान ही यह बात भी प्रत्यक्ष थी।

क्रैफोर्ड ने अपनी कॉफी का प्याला नीचे रख दिया। "टी. वी. ए. आगे बढ़ सकती है—" वह बोला—"हमें मालूम है कि, कार्य की समाप्ति के लिए हमें जिस समर्थन और द्रव्य की आवश्यकता है, वह हमें अब उपलब्ध होगा। अगर इस चुनाव का परिणाम दूसरे पक्ष में होता, तो टी. वी. ए. की प्रगति सदा के लिए अवरुद्ध हो जाती।"

"तब तो मुझे सम्भवतः लैंडन के पक्ष में मत देना चाहिए था—" मैथ्यू ने कोमलता से कहा—"टी. वी. ए. सिर्फ मुझे पीड़ा पहुँचाने के लिए आयी है। टी. वी. ए. की प्रगति रोकने में सहायता पहुँचाना मेरी व्यक्तिगत और सच्ची रुचि का काम होगा।"

क्रैफोर्ड ने उसे गौर से देखा। "आप सचमुच ही, ऐसा नहीं चाहते—" वह बोला—"आपकी ओर देख कर मैं यह कह सकता हूँ कि आप वास्तव में, ऐसा नहीं चाहते हैं।"

मैथ्यू ने अपना प्याला फिर उठाया, कॉफी की घूँट ली और उसे तश्तरी में वापस रख दिया। कॉफी कड़ी थी और उसके मुँह में उसकी कड़वाहट छा गयी "सच तो यह है कि, मैंने रूजवेल्ट के पक्ष में मत दिया—" वह बोला—"जिस तरह मैंने सन् '३१ में उसके लिए मत दिया था। लोकतंत्रवादियों के समय में—हूवर, कूलिज और हार्डिंग के समय में—इस देश को जो क्षति पहुँची थी, वह मैंने देखा था। मुझे रूजवेल्ट के पक्ष का आदमी बनाने के लिए तुम्हें चिंता करने की जरूरत नाहीं है। तुम और आर्लिस अपने गपशप में अब लग जाओ।" उसने हैटी के सामने पड़े सूचीपत्र की ओर देखा—" मि. सीअर्स और मि. रोएब्रक के लिए मुझे अपने शरद्-काल की आवश्यकताओं का आर्डर तैयार करना है। अगर इस सप्ताह में मैंने आर्डर तैयार करके नहीं भेजा, तो सही माने में उन्हें बड़ी निराशा होगी।"

लेकिन इससे कोई लाभ नहीं हुआ। क्रैफोर्ड अब अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुका बैठा था और उसके हाथ मेज पर सीधे और स्थिर पड़े थे। "मैं इस बार आर्लिस से मिलने नहीं आया हूँ, महाशय।" वह बोला— "मैं आपसे मिलने के लिए आया हूँ।"

मैथ्यू भी स्थिर बैठा रहा। शतरंज के मुहरों के समान ही वे मेज के दोनों ओर एक-दूसरे के सामने बैठे थे—अपनी इस प्रतियोगिता में वे सख्त, शिष्ट और औपचारिक थे। "कल रूजवेल्ट फिर चुना गया—" वह बोला "और आज तुम उस काम को खत्म करने के लिए, जिसके लिए तुम्हें नियुक्त किया गया है, शोरगुल और जल्दी कर रहे हो।" वह वक्रता से मुस्कराया— "आदेश बहुत जल्दी मिला करते हैं—है न?"

क्रैफोर्ड ने अधीरतापूर्वक अपने हाथ हिलाये। "चुनाव की बात नहीं है—" वह बोला, फिर रुक गया और उसने अपने होंठ कस कर दबा लिये। फिर वह फट पड़ा—"इस लम्बे गर्मी के मौसम-भर मैं कार्यालय में आपके लिए अपनी गर्दन फँसाता रहा, महाशय! मैं उनसे कहता रहा कि आप में अक्ल आयेगी—हम लोग जो करने की कोशिश कर रहे हैं, उसकी भलाई और वास्तविकता आप समझ जायेंगे। मैंने उनसे कहा कि आपके दिल में भी भावनाएँ हैं और आप समझदार आदमी हैं—जरूरत है, सिर्फ बात आपकी समझ में आने की—और तब आप दूसरों की भलाई के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थ का मोह त्याग देंगे।" वह रुक गया। उसे साँस लेने में भी जैसे कठिनाई हो रही थी। मैथ्यू कठोर-स्थिर बैठा उसे देखता रहा। आर्लिस चुप थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और मेज के किनारे के नीचे, उसकी गोद में उसके हाथ एक-दूसरे से उलझे पड़े थे। हैटी और राइस मौन सब देख रहे थे।

मेज के उस ओर बैठे क्रैफोर्ड मैथ्यू की ओर घूरता रहा। उसे क्रोध आ रहा था और उसके दिमाग में कटु शब्द उथल पुथल मचा रहे थे। वह उन शब्दों को फूहड़ों की तरह टटोल रहा था। मात्र स्पर्श के जरिये पत्थरों के बीच जिस तरह कोई संगमरमर पा जाने की आशा रखता है, उसी तरह वह भी आँखें मूँद कर बोलने के लिए उन शब्दों में से सही शब्द चुनने की कोशिश कर रहा था।

"मि. डनबार!" वह बोला—"आप हर व्यक्ति से बहुत पीछे पड़ते जा रहे हैं। हम लोगों ने कुछ जमीन खरीद भी ली है। हम लोगों ने खरीदा है, उचित मूल्यांकन किया है, कीमत तय की है और कागजों पर हस्ताक्षर भी

हो गये हैं—आपके सिवा सबके साथ हम इतना कर चुके हैं। इस सम्पूर्ण जलाशय-क्षेत्र में आप रुकावट बन कर खड़े हैं।" शब्द तेज और कठोर हो गये—"इस बार यह आसान था; क्योंकि हर कोई ने टी. वी. ए. के बाँधों के बारे में सुन रखा था। वे जानते थे कि पानी को रास्ता देने के लिए जमीन खरीदने की आवश्यकता होगी। सर्वाधिक उपजाऊ और सबसे बढ़िया जमीन की भी जरूरत होगी; क्योंकि बढ़िया जमीन नदी के निकट ही पड़ती है—इससे वे परिचित थे। वे जानते थे कि जब यहाँ बाँध बनेगा, तो सबकी भलाई के लिए उन्हें अपनी जमीन बेच देनी होगी—कहीं और उन्हें दूसरा घर, दूसरा खेत तलाश करना होगा, जिससे वे भी बाँध के लाभों का आनंद ले सकें। आपके सिवा सब इसे समझते थे और आप यहाँ चुपचाप डनबार की घाटी में बैठ कर, बाहर क्या हो रहा था, इसके प्रति उदासीन बने रहे। बिना देखे ही, इस परिवर्तन को आपने अपने सामने की सीढ़ियों तक बढ़ आने दिया और तब आप जम कर बैठ गये और कहने लगे—'यह आगे नहीं बढ़ सकता। मैंने कभी इसके बारे में सुना भी नहीं। मेरी समझ में यह बात नहीं आती और मैं इस सम्बंध में कुछ नहीं करना चाहता।'"

"बेटा!" मैथ्यू बोला। उसकी आवाज अभी तक कोमल थी—"आज तक इस प्रकार किसी ने मुझसे बातें नहीं की थीं। जब से मैं पैदा हुआ हूँ—तब से ही। क्या अधिकार है तुम्हें कि इस तरह तुम किसी व्यक्ति के घर में घुस आओ और..."

क्रैफोर्ड खड़ा हो गया। क्रोधोत्तेजना से उसके हाथ हिल रहे थे। "मुझे यह अधिकार है, मि. मैथ्यू!" वह बोला—"क्योंकि मैंने आप पर अपनी नौकरी का दाँव लगा दिया है—आपके भीतर जो न्याय-संगतता है, समझदारी और अच्छाई की भावना है—उसी पर!" उसके नथुने फड़क रहे थे और साँस लेने में उसे कष्ट हो रहा था! "अपने अधिकारी की डेस्क के सामने खड़ा होकर मैंने कहा है कि अगर शक्ति, उपद्रव अथवा कानून की सहायता के बिना मैं यह काम नहीं कर सका, तो मैं अपनी नौकरी उसे सौंप दूँगा।"

"बैठ जाओ, बेटे!" मैथ्यू ने शांतिपूर्वक कहा। उसने नजरें उठा कर क्रैफोर्ड की ओर देखा—"मैंने कहा, बैठ जाओ।" क्रैफोर्ड तब बैठ गया और इसके साथ ही, उसका गुस्सा भी दब गया। मैथ्यू ने सिर घुमा कर आर्लिस की ओर देखा। "इसे एक कप कॉफी और दो।"—वह बोला।

वे खामोशी से बैठे रहे और आर्लिस अँगीठी तक जाकर काफी का बर्तन

ले आयी। प्याले में जब वह काफी ढालने के लिए झुकी, तो उसका हाथ क्रैफोर्ड के कंधे पर टिक गया। मैथ्यू ने इसे देखा और उसके भीतर फिर भय की लहर दौड़ गयी।

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था—" उसने क्रैफोर्ड से कहा। उसकी आवाज में तेजी और कठोरता आ रही थी, जो शब्दों से मेल नहीं खा रही थी—"मैंने तुमसे मदद की माँग नहीं की थी। मुझ पर अपना अहसान लादने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं था। और इसी कारण, मैं तुम्हारा कोई अहसान नहीं मानता!"

क्रैफोर्ड ने अपना सिर घुमाया और निकट ही खड़ी आर्लिस की ओर देखा "मैंने यह आपके लिए नहीं कहा—" वह बोला। उसने वापस मैथ्यू की ओर देखा—"मेरा अनुमान है, थोड़ी-सी भावना आपके प्रति भी काम कर रही थी, लेकिन मैंने यह आर्लिस का खयाल रख कर किया है।"

मैथ्यू ने भी आर्लिस की ओर देखा—"तुमने उसे ऐसा करने के लिए कहा था?"

"नहीं!" आर्लिस बोली—"मैंने उससे नहीं कहा था!"

मैथ्यू ने वापस क्रैफोर्ड की ओर देखा और क्षण-भर के लिए उसके चेहरे पर क्रोध झलक उठा। पार्क से झगड़ा होने के बाद उसने इस तरह क्रोध नहीं अनुभव किया था। "तब क्यों तुमने......"

"लेकिन मैं खुश हूँ कि, उसने ऐसा किया।"—आर्लिस बोली।

क्रोध के ज्वार का आरम्भ ही था कि मैथ्यू रुक गया। उसने आर्लिस के चेहरे की ओर देखा। इस सम्बंध में सोचने की कोई जरूरत नहीं थी। उसके बिना ही वह समझ गया कि आर्लिस अब सदा क्रैफोर्ड के पक्ष में रहेगी। वह उस पर निर्भर नहीं कर सकता था। उसने राइस की ओर देखा। राइस विस्मय-विमूढ़ रसोईघर के शांत वातावरण में तेजी से बोले जानेवाले इन कर्कश शब्दों को सुन रहा था। उसकी इच्छा थी कि शहर के निकट उसका एक दुग्धालय हो, बिजली से दूध दुहा जाये और एक ट्रैक्टर हो, जिस पर सवार हो, वह धरती की छाती को रौंदता चले और अपने हाथ मिट्टी में सानने का श्रम उसे न करना पड़े। हैटी भी इस सारे व्यापार को गौर से देख रही थी, पर उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसकी आँखों में उत्सुकता की चमक थी। और जैसे जान तथा नाक्स घाटी से जा चुके थे—बहुत पहले, हमेशा के लिए। मैथ्यू अकेला था। उसके सिवा सिर्फ उसका बूढ़ा बाप था,

जो दिन-भर आग के सामने बैठा रहता था, आग की लपटों और गर्म कपड़ों से वह अपना सर्द खून गर्म रखता था और अपने थके-पुराने फेफड़ों में हवा की हर खड़खड़ाहट भर लेने का इच्छुक था। फिर उसके पास स्वयं को व्यस्त रहने के लिए अपने निजी काम और विचार भी थे।

मैथ्यू आगे की ओर झुका। उसने अपना हाथ अपने चेहरे पर रख लिया और अँगूठे और तर्जनी से अपनी ठुड्डी ऊपर उठायी और मजबूत हाथों पर उसे टिका कर बैठ गया।

"क्रैफोर्ड!"––वह बोला। उसकी आवाज थकी हुई थी और वह पुरानी बातें दुहराने जा रहा था––"जिस दिन तुम पहली बार इस घाटी में आये थे, उस दिन जहाँ मैं खड़ा था, वहीं आज भी खड़ा हूँ। डनबार की यह घाटी मुझसे और तुमसे बहुत पुरानी है। उस प्रथम अर्द्धगौर इंडियन डनबार के द्वारा यह घाटी बसायी गयी है, जिसने इस बलूत के पेड़ को रोपा था और यहाँ रोशनी जलायी थी और तब से यह घाटी डनबार-घाटी रही है। यह एक अच्छी और ठोस चीज है, क्रैफोर्ड, जिसकी उसने यहाँ स्थापना की और एक नयी लहर इसे यहाँ से नहीं उखाड़ सकती।"

रुक कर उसने सबकी ओर देखा––"मैं अब क्रैफोर्ड से बातें नहीं कर रहा हूँ। मैं अपने रक्त, अपनी हड्डी––स्वयं अपने से बातें कर रहा हूँ। मैं तुम्हें यह कह दे रहा हूँ कि इस धरा पर मेरे पास एक काम है––सिर्फ एक काम। मैं यहाँ इसे बचाने और सुरक्षित रखने के लिए हूँ––इसे नष्ट करने या टुकड़े-टुकड़े करने के लिए नहीं। डनबार की घाटी मुझे सौंपी गयी थी कि मैं आनेवाली पीढ़ी तक इसकी देखभाल करूँ और मेरे बाद जो इसकी देखभाल करेगा, उस व्यक्ति का चुनाव करूँ।"

उसके शब्दों से जैसे खिंच कर सब-के-सब आगे की ओर झुके हुए थे। और, उसके भीतर उसके कथन की इस गहराई और सचाई को वे नहीं जानते थे। मैथ्यू ने कभी इस तरह इन शब्दों में कुछ नहीं कहा था। वह मन ही-मन अनुभव करने और विश्वास करनेवाला व्यक्ति था। जो वह अनुभव करता था और जिस पर उसका विश्वास था, उसके सम्बंध में वह सदा आश्वस्त रहता था। पहले उसने कभी इसे कहने की चेष्टा भी नहीं की थी; लेकिन अब उसे कहना पड़ा था। उसे इस उत्तराधिकार की ही नहीं, बल्कि अपनी भावना और विश्वास की बात भी बतानी पड़ी थी, क्योंकि अपने बच्चों को इनके अनुकूल बना पाने में वह असफल रहा था। उसने सोचा था कि स्वाभाविक रूप से

उनमें भी यह भावना पनपेगी और इसके लिए सोचने की जरूरत नहीं है। साँस लेने और काम करने की तरह ही यह भी स्वाभाविक रूप से उनके खून में मिली होगी, जैसी कि उसमें थी। लेकिन वह गलत साबित हुआ था और अब उनके इतने बड़े हो जाने पर, उसे यह कार्य आरम्भ करना था, जिसके बारे में उसे विश्वास नहीं था कि वह उसे पूरा कर पायेगा; क्योंकि शब्दों का माहिर वह कभी नहीं रहा—बोलने की कला उसे नहीं आती थी।

"मैं प्यार कर सकता था, बड़े लाड़ से पालन-पोषण कर सकता था, हँस सकता था और रो सकता था—मैं वह सब कर सकता था, जो एक मनुष्य इस धरती पर अपने जीवन का उपयोग करने के लिए करता है—" वह धीमे से बोला—"लेकिन ये सारी बातें मुख्य उद्देश्य के पीछे थीं और अगर इनमें से कोई भी चीज उसके विपरीत गयी, तो मैं उसे अपने से दूर कर दूँगा।" उसने उन लोगों की ओर देखा—"प्यार भी। बच्चे भी!" उसकी आँखों के प्रभाव के नीचे वे शांत बैठे थे। मैथ्यू ने वापस क्रैफोर्ड की ओर अपनी नजरें गड़ा दीं—"मेरे पीछे ये सारी बातें हैं और तुम उम्मीद करते हो कि तुम हाथ में कागज का टुकड़ा लेकर एक नये विचार के साथ घाटी में प्रवेश करोगे और सिर्फ तुम्हारे कहने से मैं आत्मसमर्पण कर दूँगा—जिस काम को करने के लिए मुझे यहाँ रखा गया है, मैं उससे हाथ खींच लूँगा? बिना मेरी इच्छा के अथवा मेरी जानाकरी के तुम स्वयं को मेरे कारण विपत्ति में डाल लेते हो और उम्मीद करते हो कि मैं तुम्हारा इसके लिए बहुत अहसानमंद होऊँगा और तुम्हारी इस तुच्छ हरकत के लिए पिछले सौ वर्षों पर पानी फेर दूँगा!" उसने अपना सिर हिलाया—"क्रैफोर्ड! तुम..."

"मेरे लिए नहीं—" क्रैफोर्ड ने जल्दी से कहा—"आप मेरे लिए ऐसा करेंगे, इसकी उम्मीद मैंने नहीं की थी। जिन लोगों के बीच आप रहे हैं, बड़े हुए हैं, उनके सिवा और किसी भी चीज के लिए आप ऐसा करेंगे, इसकी उम्मीद भी मैंने नहीं की थी। टी. वी. ए. वालों के पास अपना एक विचार भी है मि. मैथ्यू, और मैं इससे इनकार नहीं करूँगा कि यह विचार नया है। उनकी धारणा है कि एक किसान शहर की तरह की आसान जिंदगी मजे में बिता सकता है, जहाँ विद्युत् उसके कामों के लिए उपलब्ध होगी, प्रसाधन की व्यवस्था घर के भीतर ही होगी और उसके कठिन श्रम को आसान करने के लिए ट्रैक्टर होंगे। उनकी जमीन हवा और पानी के प्रकोप से और बाढ़ के विनाश से बचायी जा सकती है। उनकी फसल और उनका

उत्पादन नदी-यातायात के जरिये बाजार में कम खर्चे में पहुँचाया जा सकता है। लेकिन उनकी यह धारणा सही भी है—यह धारणा उतनी ही सत्य है, जितनी कि डनबार की घाटी। डनबार घाटी की धारणा सिर्फ एक व्यक्ति के लिए है, जब कि टी. वी. ए. की धारणा पूरे देश के लिए है।"

वह आगे की ओर झुक आया—"लोग कहते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। और तब वे कहते हैं कि ऐसा नहीं होना चाहिए—लोगों को इन सब मदद की जरूरत नहीं है और लोगों को त्याग करते हुए दुःख होगा—वे अपने भीतर कमजोरी महसूस करेंगे। लेकिन वे गलती कर रहे हैं, मि. मैथ्यू! क्या आप गलत पक्ष का समर्थन करना चाहते हैं?"

मैथ्यू ने सिर हिलाया। "मैं इसकी राजनीति में नहीं पड़ना चाहता—" वह बोला—"मैं रूजवेल्ट के पक्ष का आदमी हूँ। मैंने उसे लोगों को धूल से उठा कर, अपने पैरों पर फिर से खड़ा कराते देखा है। '३१ में कपास का भाव क्या था, मैं जानता हूँ और '३६ में भी मैंने अभी कुछ गाँठें बेची हैं। लेकिन उनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि मुझे अपने घर से ज्यादा दिलचस्पी है। डनबार की इस घाटी से मुझे अधिक लगाव है—और मैंने तुमसे कह दिया है कि प्यार और प्रसन्नता भी—जो-कुछ भी एक मनुष्य के जीवन में है—मेरे उस मुख्य कार्य की राह में, जो मुझे करने के लिए सौंपा गया है—रुकावट नहीं डाल सकती।"

क्रॅफोर्ड ने अपने कंधे झुका लिये। "मैंने उससे कहा था कि आप उनकी बात सुन लेंगे—" वह बोला। उसकी आवाज बहुत धीमी थी और ठीक से सुनायी भी नहीं दे रही थी। "मैं वहाँ बैठ कर अपने अधिकारी से आपके बारे में बहस करता रहा, मि. मैथ्यू! मैंने हर बार उसकी बात नहीं चलने दी; क्योंकि हमारे पास समय था। हमारे पास अभी भी समय है। सम्भव है, अगले साल तक, लेकिन उससे अधिक नहीं। उसके बाद कुछ-न-कुछ होना ही है। यही कारण है कि मैं आज रात यहाँ आया हूँ—यह बताने आया हूँ कि आपको इस सम्बंध में विचार करना है, अपने अब तक के विश्वास की आपको फिर से जाँच करनी है—देखना है, आप कहाँ गलती कर रहे हैं और टी. वी. ए. सही कर रहा है। डनबार-घाटी आपके लिए एक बड़ी चीज है; लेकिन टी. वी. ए उससे भी बड़ी है। यह......"

"बड़े होने से ही कोई सही नहीं हो जाता—" मैथ्यू ने हठीले स्वर में कहा—"कानून सही ही हो—यह बात नहीं।" वह चुप हो गया और

उसने क्रैफोर्ड की ओर भेदती नजरों से देखा—"और जो-कुछ तुमने मेरे लिए किया है, उस सम्बंध में तुम बातें करना छोड़ दो, तो अच्छा है। जहाँ तक मेरा सवाल है, तुमने कुछ भी नहीं किया है। मुझ पर इसका कोई असर नहीं होने का; क्योंकि मैंने तुमसे यह सब करने के लिए नहीं कहा था। अगर मुझे मालूम होता, तो मैं तुम्हें यह करने भी नहीं देता।"

"मैंने यह आपके लिए नहीं किया—" उत्तेजना से क्रैफोर्ड चिल्ला पड़ा—"मैंने यह आर्लिस के लिए किया। मैंने ऐसा इसलिए किया कि मैं उसे प्यार करता हूँ, मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ और मैं........."

उस भारी सन्नाटे में उसके शब्द रुक गये। मैथ्यू आर्लिस की ओर देख रहा था। उसने आर्लिस के चेहरे को बदलते देखा—उसके चेहरे पर पैदा होकर तुरत ही दबा दी जानेवाली चमक को देखा।

"क्या तुम इस बारे में जानती थीं?" वह बोला।

"उसने यह कभी नहीं कहा था—" आर्लिस बोली। मेज पर झुके क्रैफोर्ड के सिर की ओर उसने देखा—"पहले उसने कभी नहीं कहा—इस क्षण के पहले कभी नहीं कहा उसने!"

"क्रैफोर्ड गेट्स!" मैथ्यू बोला—"अब मुझे कुछ कहने दो तुम। पिछले वसंत में एक दिन तुम इस घाटी में आये। तब मेरा बेटा नाक्स टी. वी. ए. के लिए काम करने नहीं गया था। तब तक वह प्रतिदिन मजदूरी पानेवाला एक किराये का आदमी नहीं बना था, वह किराये के बिस्तरे पर नहीं सोता था और अजानी-अपरिचित जगह से खरीद कर खाना नहीं खाता था। मेरी बहू कौनी ने तब तक किसी अजनबी के साथ सम्पर्क स्थापित करने की—उसके साथ चले जाने की—इच्छा नहीं की थी। उस वक्त तक किसी अजनबी ने उसके सामने अपने रुपयों, अपने भ्रमण और अपनी बहादुरी की शेखी नहीं मारी थी। उसकी तलाश में मेरे बेटे जैसे जान को भटकने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ा था। मेरे बेटे राइस ने इसके पहले गर्म खलिहानों, बिजली से दूध दुहनेवाले यंत्रों और एक ऐसी खेती का पागलों-सा स्वप्न नहीं सँजोया था, जहाँ काम नहीं है, जो एक खिलवाड़ है और इस धरती पर वह कभी सम्भव नहीं होगा—जिसका यहाँ कभी अस्तित्व नहीं होगा। उसमें यह असंतोष और बेचैनी नहीं थी, जो मैं अभी भी नहीं जानता, उसे कहाँ ले जा रही है।" वह क्षण-भर को रुका और फिर बोलने लगा—"और आर्लिस! तुम्हारे आने के उस दिन तक वह यहाँ इस घर में खुश थी। उसकी माँ ने जो काम उसके

लिए छोड़ा था, उसे वह प्रसन्नतापूर्वक कर रही थी। यह सच है कि इसके लिए उसकी उम्र अभी नहीं हुई थी; लेकिन सड़क पर किसी मोटर को देखने के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए बेचैन हुए बिना, वह यह काम करती आयी थी। वह अपने डैडी से संतुष्ट थी। उसे अपने पिता का विरोध करने की जरूरत कभी नहीं हुई थी, जैसा वह अब तुम्हारे कारण कर रही है—हमारे बीच अब एक ऐसी दूरी आ गयी है, जो पहले कभी नहीं थी। वास्तविकता यही है, क्रैफोर्ड! तुमने हम लोगों को एक साथ से अलग-अलग कर दिया—तुमने हममें से प्रत्येक को अलग-अलग सड़कों पर रख दिया, जो मुड़ती हुई, अकेली, एक-दूसरे से दूर चली जाती हैं। जब तुम पहली बार आये थे, उसके बाद के कुछ महीनों में तुमने यही सब किया है। क्या तुम इसी भरपाई के बारे में कह रहे हो, क्रैफोर्ड—तुम टी. वी. ए. की इसी शक्ति और उसके सही होने के बारे में कह रहे हो?"

क्रैफोर्ड ने काफी देर तक कोई जवाब नहीं दिया। मेज पर पड़े अपने हाथों को वह निहारता रहा और मैथ्यू ने उसके कंधे तक पुनः आर्लिस का हाथ पहुँचते देखा। आर्लिस का हाथ क्रैफोर्ड के कंधे पर हल्के-से रुक गया और मैथ्यू को अपने दिल में एक ऐंठन प्रतीत हुई।

तब क्रैफोर्ड ने उसकी ओर देखा। "मैं ऐसा नहीं कर सकता था, मि. मैथ्यू—" वह बोला—"अगर यह बात उनमें पहले से ही नहीं होती। मेरे और टी. वी. ए. के बिना यह कुछ और रूप धारण कर लेता; क्योंकि स्वयं को अलग-अलग करने के रास्ते उन्होंने ही तैयार किये। मेरी ओर मत देखिये, मि. मैथ्यू! अपने बच्चों की ओर देखिये—अपने इस विचार को देखिये कि विश्व में हो रहे परिवर्तनों और प्रगतियों के बावजूद डनबार-घाटी ऐसी-की-ऐसी, अपरिवर्तित, पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक-दूसरे को सौंप दी जाती रहे। मेरी ओर मत देखिये।"

मैथ्यू उठ खड़ा हुआ। "मैं तुम्हारी ओर देख रहा हूँ—" वह बोला—"मैं......"

क्रैफोर्ड भी खड़ा हो गया। उसकी आवाज मैथ्यू की आवाज से भी तेज थी—"और यह अभी समाप्त नहीं हुआ, मैथ्यू डनबार! अभी तो और भी बहुत-सी बातें होनेवाली हैं—जितने से तुम निभा सकते हो, सहयोग कर सकते हो, उससे कहीं अधिक। तुम परिवर्तन को नहीं रोक सकते। तुम्हें इसके साथ चलना होगा, इसका पथ-प्रदर्शन करना होगा, इसे एक रूप देना होगा। तुम्हें

सत्य की जानकारी प्राप्त करनी ही होगी मैथ्यू, और यह अभी प्राप्त कर लो, जब तक कि इसे प्राप्त करना इतना कठिन और घातक नहीं है।"

"इनबार की इस घाटी को मैं ऐसा ही रख रहा हूँ, जैसा यह है—" मैथ्यू बोला—"तुम सारी रात बातें कर सकते हो; पर इस सम्बंध में मेरे दिमाग को—मेरे तरीके को—नहीं बदल सकते। मैं यहाँ यही करने के लिए लाया गया था और कसम परमात्मा की, मैं इसे करूँगा।" वह रुका। उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी—"मैंने कहा न कि प्यार और मेरे बच्चे भी उस सम्बंध में मेरे लिए कोई अंतर नहीं डाल सकते और मैं इस पर दृढ़ हूँ—यह कठोर सत्य है।"

"किंतु तुम वह भी नहीं कर सकते—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम्हारे लिए मुझे अपनी नौकरी—इतनी अच्छी नौकरी—दाँव पर लगाने की जरूरत नहीं है और न कभी होगी—आर्लिस के लिए भी नहीं। क्योंकि जब समय आयेगा, टी. वी. ए. तुमसे तुम्हारी जमीन ले ले सकती है—चाहे तुम इसे पसंद करो या नहीं। हम वैसा करना नहीं चाहते; लेकिन अगर करना पड़ा, तो हम ऐसा कर सकते हैं। तुम्हें हम उचित मूल्य दे देंगे! हम उचित मूल्य देकर यह जमीन ले सकते हैं।"

मैथ्यू का चेहरा लाल हो उठा। "तुम झूठ बोलते हो—" उसने कहा। शब्द अटक रहे थे, क्रोध के कारण वे गले में ही फँस गये थे—"तुम झूठ बोलते हो, क्रैफोर्ड! कोई सरकार किसी व्यक्ति की जमीन नहीं..."

"हाँ!" क्रैफोर्ड बोला—"टी. वी. ए. के कानून में ऐसा एक तरीका है। सर्वसाधारण के लिए, उचित मूल्य देकर जमीन हमारे अधिकार में आ सकती है और तब यह तुम्हारी सम्पत्ति नहीं रह जायेगी। हम लोग ऐसा नहीं करते, जब तक कि हम बाध्य नहीं कर दिये जाते। स्वयं अपनी इच्छा और अपने विचार से लोगों का हमारे पास आना ही हमे पसंद है..."

मैथ्यू मेज की उस ओर बढ़ा! "निकल जाओ यहाँ से—" वह बोला—"इस घाटी में फिर कभी पैर नहीं रखना। सुन रहे हो तुम..."

"इससे कोई लाभ नहीं होगा—" क्रैफोर्ड ने कहा—"तुम..."

"निकल जाओ—" मैथ्यू ने अविचलित भाव से कहा—"यह मेरा घर है। यह मेरी जमीन है। यह अभी मेरी है और मेरी रहेगी भी। और मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मेरी जमीन से तुम हमेशा के लिए चले जाओ।"

"लेकिन आर्लिस......"

"मुझे परवाह नहीं......"

"पापा!" आर्लिस बोली—"मैं क्रैफोर्ड को प्यार करती हूँ, पापा! मैं उसे प्यार करती हूँ!"

ये शब्द फिर भारी थे। पहले के समान ही कमरे में निस्तब्धता छा गयी। मैथ्यू को अपनी छाती कस कर जकड़ती महसूस हुई और उसने अपने हाथ वहाँ रख कर जोरों से दबाया। हैटी अपनी कुर्सी पर बिलकुल सिकुड़ कर बैठी थी, जैसे वातावरण की इस गम्भीरता में लुप्त हो जाने की कोशिश कर रही हो। राइस अनिश्चित-सा खड़ा था। उसके चेहरे और आँखों में आश्चर्य झाँक रहा था।

"मैंने भी उससे नहीं कहा था—" आर्लिस बोली। उसकी आवाज काँप रही थी और वह कुछ तय नहीं कर पा रही थी—"जैसे उसने मुझे कभी नहीं कहा था, हम अब तक साथ-साथ सिनेमा देखने जाते थे, बातें करते थे और हँसते थे, बस......लेकिन मैं उसे प्यार करती हूँ, पापा!"

मैथ्यू ने एक लम्बी साँस ली और उसकी छाती में जो अटक रहा, वह जैसे निकल गया। "इससे मेरा निर्णय नहीं बदल सकता—" वह बोला—"चले जाओ यहाँ से, क्रैफोर्ड! फिर कभी अपना चेहरा नहीं दिखाना मुझे!"

आर्लिस रो पड़ी—"लेकिन पापा ..." मैथ्यू ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह क्रैफोर्ड की ओर देखता रहा। क्रैफोर्ड ने भी मिनट-भर तक उसकी ओर घूर कर देखा। लगता था, यह कभी समाप्त ही नहीं होगा। और तब क्रैफोर्ड मुस्कराया—असहाय-सी मुस्कान और आर्लिस की ओर घूम पड़ा। उसने उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया।

मैथ्यू के भीतर भय जाग उठा। मकई से बनी ह्विस्की के स्वाद की तरह ही इस बार यह भय सशक्त और स्पष्ट था। लेकिन उसे अब यह करना ही था—उसे अब यह समाप्त कर ही देना था; एक बार और हमेशा के लिए निर्णय कर लेना था।

"मत छूओ उसे—" वह तीखे स्वर में बोला—"जाओ अब। मैं तुमसे अंतिम बार कह रहा हूँ यह!"

क्रैफोर्ड ने अपना हाथ वापस खींच लिया। वह मुड़ा और बिना एक शब्द बोले दरवाजे से बाहर चला गया। भीतरी बरामदे के अंधकार से गुज़रते हुए वह चलता गया और वे उसके भारी पैरों की आवाज बाहरी बरामदे और तब नीचे आँगन की स्तब्धता में सुनते रहे।

मैथ्यू ने डरते हुए आर्लिस की ओर गौर से देखा। लेकिन वह तब तक नहीं हिली, जब तक कि क्रैफोर्ड के पैरों की आवाज का सुनायी देना बंद नहीं हो गया। उसका सिर ऊपर उठा हुआ था और वह कुछ सुनने की मुद्रा में खड़ी थी, जैसे क्रैफोर्ड उससे दूर जाने के बजाय उसके पास आ रहा हो। जब उसके पैरों की आवाज आँगन की धूल में बंद हो गयी, तब आर्लिस उस कुर्सी में धँस गयी, जिस पर क्रैफोर्ड बैठा था। उसने अपना सिर मेज पर रख कर दूसरों की नजरों से अपना चेहरा छुपा लिया।

अंततः मैथ्यू वहाँ से हिला और वापस अपनी कुर्सी तक आया। वह बैठ गया और उसने सूचीपत्र अपने सामने खींच लिया। सूचीपत्र में वह जगह उसने ढूँढ़ निकाली, जहाँ उसने पेंसिल से निशान लगाया था। उसने अपने चारों ओर देखा—हैटी की ओर, राइस की ओर और अंत में, वापस आर्लिस की ओर!

"अच्छा!" वह बोला। कमरे की निस्तब्धता में उसकी आवाज चौंका देनेवाली थी—"हम अब 'सीअर्स ऍंड रोएबक' को आर्डर भेजने का काम समाप्त कर लें। वृद्ध मि. सीअर्स और मि. रोएबक निश्चय ही इसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। किसी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया। तब कुछ देर बाद मैथ्यू उठा और कमरे के बाहर चला गया।

प्रकरण आठ

अगली रात, जब वे पिछली रात का 'सीअर्स रोएबक' को आर्डर देने का अधूरा काम पूरा भी नहीं कर पाये थे, हार्न बजा। अब यह मकई उपजाने और सूअरों को खिलाने की तरह का ही एक काम बन गया था, जिसका पूरा होना जरूरी था। राइस कहीं गया हुआ था और सिर्फ आर्लिस, हैटी और मैथ्यू मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए थे।

सिर्फ जरूरी बातों के अलावा आर्लिस ने और कोई बातचीत नहीं की थी वह गौर से मैथ्यू की बातें सुनती रही थी और उस हरे आर्डर-फार्म को भरने में बिना किसी आलोचना अथवा हर्ष के उसने भाग लिया था। घर से कोई ऐसी चीज चली गयी थी, जिसके जाने से पहले, उन्होंने उसके सम्बंध में कभी

सोचा भी नहीं था। मकान की दीवारें बिलकुल शांत-निर्जीव थीं, मानो इस जाड़े में, ठंड से बचने के लिए, आग जलायी ही नहीं गयी थी। मैथ्यू के लिए ये दिन, उसकी पत्नी कान्ना की मृत्यु के बाद के दिनों के समान ही थे। उन दिनों भी यह घर ऐसा ही शांत था—उसकी प्रिय पत्नी के शरीर के समान ही निर्जीव, जिसे उसने पहाड़ी पर, देवदार के वृक्षों के बीच, कब्र में आराम करने के लिए सुला दिया था। उसके साथ ही कुछ और भी चला गया था और अपने पीछे एक ऐसा सूनापन छोड़ गया था, जिसे मैथ्यू ने अपने जीवन के मध्य कभी आने की आशा नहीं की थी। बच्चे उस वक्त कमरों और फर्नीचरों के बीच यों सावधानी के साथ और अप्राकृतिक ढंग से चलते, जैसे वे किसी अपरिचित घर में बिना बुलाये आ गये हों। वे बिलकुल शांत थे और जो कहा जाता, चुपचाप मान लेते थे। उनमें एक विचित्रता आ गयी थी और वे चूहे के समान ही डरे-सहमे थे। शोक मनाने के लिए जमा हुए सगे-सम्बंधियों के अपने-अपने काम पर चले जाने के दो दिनों बाद तक यही वातावरण रहा था।

और तब, तीसरे दिन, मैथ्यू जब खलिहान से घर में वापस आया था, तो आर्लिस अँगीठी पर झुकी हुई थी। उसके बाल उसके चेहरे पर झूल रहे थे और अँगीठी में बेतरतीबी से रखी लकड़ियों से निकलती तेज आग की गर्मी के कारण उसका चेहरा लाल हो उठा था। वह रसोईघर के दरवाजे में खड़ा उसकी ओर देखता रह गया था। पंद्रह साल की उम्र में भी वह भारी और छोटी थी। और तभी वह उसकी ओर मुड़ी थी। वह अपने गाल में लगा आटा पोंछने के लिए अपना हाथ वहाँ रखे थी और उसके आटा साफ करते समय नीचे जमीन पर आटे की उजली-सी एक रेखा बन गयी।

"खाना एक मिनट के अंदर ही तैयार हो जायेगा, पापा!" वह बोली थी —"सिर्फ हाथ मुँह धोने-भर का समय है आपके पास। लड़के सब कहाँ हैं?"

उनके बीच की निर्जीवता उसी क्षण समाप्त हो गयी थी। रसोईघर में फिर आनन्द और सजीवता की लहर दौड़ गयी थी और उस रात खाने की मेज पर हँसी के फौव्वारे-से छूट रहे थे। लेकिन तुरन्त ही हँसी दबा दी गयी थी और उन्होंने चोरी-चोरी मैथ्यू की ओर देखा था, जो अपनी सदा की जगह पर उदास-खामोश बैठा था। पर मैथ्यू ने अपना सिर उठा कर उनकी ओर देखा था और वह मुस्कराया था। तब हँसी फिर लौट आयी थी।

अभी भी यह वैसा ही था और यह तो पहला ही दिन था। तो भी मैथ्यू

को दिल में ऐसा अनुभव हो रहा था कि तीसरे दिन भी इस बार वह सजीवता नहीं लौटेगी। आर्लिस धीमी-अलसायी आवाज में जरूरत की सारी चीजों का विस्तृत ब्यौरा बता रही थी और मैथ्यू भारी दिल से ध्यानपूर्वक उसे सुन रहा था —मि. सीअर्स और मि. रोएब्रक के लिए उस हरे आर्डर-फार्म पर भयभीत-सा चुपचाप पेंसिल से नोट करता चला जा रहा था।

तब हार्न बजा। दो बार तेजी से हार्न की संगीतमय आवाज दूर सड़क से आती हुई घाटी-भर में तैर गयी और आर्लिस झटके से अपना सिर ऊपर उठा कर सुनने की मुद्रा में बैठ गयी। वह इसे फिर से सुनने का इंतजार कर रही थी। वहाँ खामोशी छायी रही और वे कान लगाये सुनते रहे। मैथ्यू ने स्वयं के भीतर एक तनाव अनुभव किया। वह हार्न की आवाज वापस सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था और हार्न फिर बजा—घाटी के बाहर से सीधे उनके उस आवाज की प्रतीक्षा करनेवाले कानों में हार्न की तेज आवाज आयी, जैसे कोई उसके जरिये बुला रहा हो।

आर्लिस ने मैथ्यू की ओर देखा। हार्न की आवाज सुनने से उसमें जो तनाव-सा आ गया था, उससे उसकी आँखें झुकी हुई थीं। "आप अकेले ही यह काम समाप्त कर ले सकते हैं—कर सकते हैं न?" वह बोली।

"हाँ!" मैथ्यू बोला—"हमारे पास सब चीजें हैं, जहाँ तक मैं सोचता हूँ। तुम कहाँ..."

वह खड़ी हो गयी। "मैं आ जाऊँगी—" वह बोली। उसकी आवाज हमेशा की तरह शान्त, स्वाभाविक और आश्वस्त थी, यद्यपि मैथ्यू ने उसमें अंतर ढूँढ़ निकालने की चेष्टा की। "मुझे ज्यादा देर नहीं लगेगी।"

आर्लिस ने मैथ्यू को इसका समय दिया कि वह उसे जाने से मना करे। मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। वह जान रहा था कि उसके मना करने पर भी वह चली जायेगी और इसी से वह नहीं बोला। दरवाजे से लग कर सीधी कठोर मुद्रा में खड़ी वह इंतजार करती रही। उसकी जाने की इच्छा के आगे मैथ्यू की आवाज का कुछ प्रभाव नहीं पड़नेवाला था। मैथ्यू हैटी की ओर मुड़ा, जो बैठी चुपचाप उन लोगों को देख रही थी और बोला—"तुम मेरा हाथ बँटा सकती हो, हैटी! तुम मेरा हाथ बँटाओगी—बँटाओगी न?"

"हाँ, पापा!" वह बोली और जब तक आर्लिस चली नहीं गयी, मैथ्यू ने यह ध्यान नहीं दिया कि हैटी ने उसके लिए उस शब्द का प्रयोग किया था, जो वह कभी नहीं बोलती थी—ऐसा शब्द, जो हैटी के सिवा सब बच्चे उसके लिए बोलते थे।

आर्लिस तेजी से सड़क पर होती घाटी के प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ी। सारे दिन वह यह जान रही थी कि क्रैफोर्ड वापस आयेगा। वह यह भी जानती थी कि क्रैफ्रोर्ड के ध्यान में मैथ्यू के निषेध की बात भी होगी और वह दिन-भर कान लगाये सुनती रही थी। अब, यद्यपि वह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, फिर भी आर्लिस अपनी उतावली कम नहीं कर पा रही थी। जब वह पहुँची, तो सड़क खाली थी और वह हिचकिचाती हुई रुक गयी। वह सोच रही थी कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह अपने-आप को ठगती रही है और हार्न बजने की आवाज उसने अपनी कल्पना में ही सुनी है। कहीं अपने इच्छा-लोक में ही तो उसने हार्न के दूसरी बार बजने की कल्पना नहीं कर ली है। ठंडी हवा के झोंके से वह सिहर गयी और तत्काल ही उसने महसूस किया कि वह सिर्फ उस पतले स्वेटर को पहने हुए ही घर से चली आयी थी, जो वह घर में हमेशा पहना करती थी। उत्तर की ओर से बहनेवाली ठंडी हवा के पहले झोंके से आज रात बाहर सिहरन-सी थी और अचानक उसने अपनी बाँहों के ऊपरी हिस्से को ठंड से सुन्न होता महसूस किया।

उसने सड़क पर मोटर के सामने की बत्तियों की रोशनी लहराती देखी और हार्न के फिर बजते ही उसने मोटर पहचान भी ली। वह प्रकाश के दायरे में चली आयी, जिससे क्रैफोर्ड उसे देख ले और क्रैफोर्ड ने मोटर रोक दी। उसने दरवाजा खोला और बाहर निकल आया। उसने आर्लिस को अपनी सशक्त बाहुओं के घेरे में ले लिया और उसके चेहरे पर अपना चेहरा रख दिया।

"तुमने दिल से कहा था न—" वह बोला—"पिछली रात जो तुमने कहा था, दिल से कहा था न!"

वह उससे अलग हो गयी। रात के अंधेरे से आवरित उसके चेहरे की ओर उसने देखा। "निश्चय ही," वह बोली—"मैंने कहा ही नहीं होता, अगर..."

क्रैफोर्ड ने उसे बोलने से रोक दिया। उत्तर की ओर से चलनेवाली हवा के ठंडे स्पर्श से उसके सर्द होंठ आर्लिस के होंठों पर रखे हुए थे।

क्रैफोर्ड ने अपना मुँह हटा लिया। "चलो, हम लोग गाड़ी में चल कर बैठें—" उसने ठंड से काँपते हुए कहा—"यहाँ मेरे पास हीटर (गर्मी उत्पन्न करनेवाला यंत्र) है..."

वह स्टीयरिंग ह्वील के नीचे, दूसरी ओर, बैठ गयी। अपने पैरों पर वह

हीटर से निकलनेवाली गर्मी अनुभव कर रही थी। क्रैफोर्ड ने अपनी ओर का शीशा चढ़ा लिया और तुरन्त ही मोटर बिलकुल आरामदेह हो गयी। उनकी बातचीत के बीच मोटर के एंजिन की थरथराहट सुनायी देती रही। हीटर से, उन्हें बाहर भी, अपने प्यार के लिए घर का सुखद वातावरण मिल रहा था।

क्रैफोर्ड आर्लिस की ओर घूमा और अपने हाथ से उसने उसके कंधे का स्पर्श किया। "मैं नहीं जानता था कि तुम आओगी भी—" वह बोला—"तुम हार्न की आवाज सुनोगी भी या..."

"मैंने आवाज़ सुनी थी—" आर्लिस शांति के साथ बोली—"पापा ने भी सुनी। हम लोग मेज के पास बैठे थे..."

"क्या करेंगे हम अब?" वह बोला। उसने उसके लिए अपने हाथ बढ़ाये और वह तुरन्त उसकी बाँहों में आ गयी। वे स्वयं में ही किसी गर्म घर के समान थे। "तुमने पहले कभी मुझे क्यों नहीं कहा?" वह बोला—"इस लम्बे गर्मी-भर मैं..."

आर्लिस मधुरता से हँसी—"तुमने भी मुझसे नहीं कहा था।"

"मैं डर रहा था। मैं बिलकुल डर रहा था कि..."

"मै भी।" वह बोली—"निश्चय ही, एक लड़की..."

वे फिर हँस पड़े और क्रैफोर्ड ने कस कर उसे स्वयं से चिपटा लिया। अपने शरीर के भूख की चेतावनी महसूस करती हुई वह क्षण-भर बाद उससे दूर हट आयी। प्रेम की स्वीकृति और उसके स्पष्टीकरण से उन दोनों के मन की भावनाओं में अन्तर आ गया था और आर्लिस जब फिर बोली, तो उसकी आवाज़ गम्भीर थी।

"हम लोग अब क्या करने जा रहे हैं, क्रैफोर्ड?"

क्रैफोर्ड ने एक सिगरेट सुलगाया और बैठा उसे देखता रहा। उस क्षणिक चमक में आर्लिस का चेहरा उसके सामने प्रकाशित हो उठा। क्रैफोर्ड ने पहले कभी प्यार नहीं किया था। वह कुछ औरतों को जानता था; लेकिन इसके पहले उसने कभी किसी के प्रति अपने शरीर की यह मधुर सिहरन—भूख—महसूस नहीं की थी, जो अब वह आर्लिस को देखने-मात्र से अनुभव कर रहा था। उसने आर्लिस को तीक्ष्ण निगाहों से देखा। ढँकी हुई मोटर में बैठी आर्लिस के स्वस्थ और भारी-भरकम शरीर को वह देख रहा था और वह जानता था कि इसके शरीर में एक उष्णता है, जीवन है और उसके शरीर से उसका स्वास्थ्य फूटा पड़ रहा है। उसके पैर बड़े थे और उसकी जाँघ तथा टखने माँसल थे

और उसके नितम्ब चौड़े तथा फैले हुए थे। आसानी से वह कई बच्चों की माँ बन सकती थी और फिर भी उसके शरीर की शक्ति किसी भी मर्द के बिस्तरे पर उसे तरंगित कर देने के लिए पर्याप्त रहती। वह उसे प्यार करता था। अपने दिमाग में उसने सदा एक ऐसी औरत की कल्पना कर रखी थी, जो दुबली-पतली, विजातीय और तिरछी आँखोंवाली हो, जिसके होंठ उत्तेजित कर देनेवाले हों। उसने हमेशा ही एक ऐसी औरत का स्वप्न सँजोया था, जो छोटी होने के कारण उसकी बाँहों में सिमट कर एकरूप हो जाये, जिसके बाल लाल हों और आँखें हरी हों। किन्तु फिर भी वह उसे प्यार करता था।

दिन-भर आर्लिस के वे शब्द उसके दिमाग में घंटियों की तरह बजते रहे और वह अपने कार्यालय के नीरस कामों में लगा हुआ था। उसने अपने सब कागजों को मिला दिया था, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ा था, और फिर से उसे तरतीब से रख दिया था—जैसा उसे कभी-कभी करना पड़ता था। उसने अपने कार्य की प्रगति की रिपोर्ट देते हुए अपने उच्च अधिकारी से घंटे-भर से भी अधिक देर तक बातें की थीं। मैथ्यू की डनबार-घाटी की समस्या का उल्लेख उसने जानबूझ कर नहीं किया था और उसके अधिकारी ने उस सम्बंध में कुछ पूछा भी नहीं था, यद्यपि वह जानता था कि क्रैफोर्ड जान-बूझ कर डनबार-घाटी और मैथ्यू डनबार का उल्लेख नहीं कर रहा है। लेकिन दिन-भर की इस नीरसता के बीच आर्लिस की स्मृति उसके भीतर उष्णता पैदा करती रही और वह जानता था कि काम समाप्त करते ही वह आर्लिस को ढूँढ़ निकालेगा।

उसे पहले यकीन था कि वह निडरतापूर्वक मैथ्यू के घर के सामने के आँगन तक गाड़ी हाँक कर ले जायेगा और सबके सामने खुले रूप में आर्लिस को अपने साथ ले आयेगा। किंतु वह जानता था कि इससे मैथ्यू बड़ी जल्दी और आसानी से क्रुद्ध हो उठेगा और कुछ ऐसा अप्रिय कर गुजरेगा, जो स्वयं मैथ्यू भी नहीं करना चाहता था। इसी से जब समय आया, तो सड़क पर गुजरते हुए उसने सिर्फ दो बार अपनी मोटर का हार्न बजाया था। वह अपनी गाड़ी धीरे-धीरे हाँक रहा था। बिना कहीं मुड़े वह सीधा चलता गया और फिर उसी रास्ते वापस लौटा। वह बड़े ध्यान से देखता हुआ मोटर चला रहा था कि आर्लिस सड़क के किनारे कब दिख जाती है। वह यह भी जानता था कि आर्लिस को अगर यह पता चल गया कि वह उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, तो वह आ जायेगी।

"हम शादी कर लें—" वह बोला। उसे स्वयं ताज्जुब हो रहा था कि वह

इतनी स्थिरता से इसे कैसे कह सका। वह उसकी ओर झुका—"और कोई रास्ता नहीं है, आर्लिस—विवाह करने के सिवा हम कुछ कर नहीं सकते।"

आर्लिस ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उसकी बगल में शांतिपूर्वक बैठी रही। उसके हाथ उसकी गोद में मुड़े पड़े थे। "हम ऐसा नहीं कर सकते, क्रैफोर्ड!" वह उदासी से बोली—"तुम जानते हो, हम नहीं कर सकते।"

"तब क्या तुम..."

आर्लिस ने जल्दी से अपना सिर हिलाया—"नहीं क्रैफोर्ड! वह नहीं। मुझसे कभी उस सम्बंध में कहो भी नहीं।"

"तुमने कहा था, तुम मुझे प्यार करती हो। तुमने कहा था..."

वह उसकी ओर मुड़ी। उसने उसकी गर्दन पर एक हाथ रख दिया और अपनी पूरी खुली हथेली उसने वहाँ फिराई। उसकी हथेली का यह स्पर्श उष्ण और सिहरा देनेवाला था।

"हाँ!" वह बोली—"मैंने कहा था। मैंने इसे पापा के सामने कहा था और मुझे इसका गर्व है। मुझे ऐसा कुछ करने के लिए न कहो, जिससे मुझे लज्जित होना पड़े।"

वह तब रुक गया। "तब ऐसा करना बुरा होगा—" धीमे स्वर में उसने सहमति बतायी।

वह फिर शांत बैठी थी। क्रैफोर्ड ने खिड़की का शीशा नीचा किया और अपना सिगरेट बाहर फेंक दिया। बर्फ-सी सर्द हवा मोटर में घुस आयी और क्रैफोर्ड ने फुर्ती से शीशा चढ़ा दिया। जब वे एक-दूसरे के आलिंगन से अलग हुए थे, तभी से उनकी मनःस्थिति बदल गयी थी। उनका मन भारी हो गया था और अपने बीच की दूरी की जानकारी से उनके बीच एक उदासी व्याप्त हो गयी थी। क्रैफोर्ड काफी देर तक स्थिर बैठा रहा। वह स्वयं को आर्लिस का स्पर्श करने से रोक रहा था।

"सिर्फ एक ही मार्ग है हमारे सामने—" वह अंत में बोला—"प्रतीक्षा करने से बात कुछ बननेवाली नहीं है—इससे बात और भी बिगड़ जायेगी। तुम वहाँ वापस भी मत जाओ। आज रात ही मेरे साथ यहाँ से चल दो।"

आर्लिस ने अपना सिर हिलाया—"मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्रैफोर्ड! नाक्स ने उन्हें छोड़ दिया, जैसे जान ने उन्हें छोड़ दिया। और तब मैं..."

क्रैफोर्ड उसकी ओर घूमा—"समय की समाप्ति तक अपनी इस घाटी को वह सारे संसार से अलग नहीं रख सकता, आर्लिस। उसे यह समझना ही

होगा। और वह तुम्हें भी यों अलग नहीं रख सकता। तुम्हें अपनी जिंदगी आप बिताने का अधिकार है—अपने प्रेम के रास्ते पर तुम्हें भी उसी तरह चलने का अधिकार है, जैसा सब औरतों को होता है। क्या वह इसे नहीं समझता है?"

"पापा के समान ही मेरा भी कुछ कर्तव्य है, क्रैफोर्ड—" आर्लिस बोली—"घर साफ़-सुथरा रखना, उसे चमकाना, सारी वस्तुएँ सुव्यवस्थित रखना, खाना पकाना, बर्तन धोना और फसल के वक्त अनाज को सहेजना मेरा काम है। जब से माँ मरी, मैं यह करती आयी हूँ और अगर मैं ऐसा नहीं करती......"

"हैटी हैं वहाँ—" क्रैफोर्ड ने कहा—"उसकी उम्र भी तो उतनी ही है, जितनी उम्र में तुमने यह सब शुरू किया था।"

आर्लिस ने अपना सिर हिलाया—"ऐसी बात नहीं है। वह अभी भी बच्ची है। वह ये काम करना नहीं जानती।"

वे खामोश बैठे रहे। क्रैफोर्ड ने उसके कंधों पर अपनी बाँह रख दी और उसे अपने निकट अपने आलिंगन में खींच लिया। हीटर की गर्म हवा उनके पैरों पर लगती रही और बाहर अंधेरा था। उत्तर से सर्द हवा चल रही थी और रात ठंड और सर्द थी। हवा फुसफुसाती हुई आती और मोटर के उन पतले शीशों से टकरा कर लौट जाती, जो आर्लिस और क्रैफोर्ड के चारों ओर का वातावरण गर्म बनाये हुए थे। क्रैफोर्ड की बाहों में आर्लिस सिहर उठी, जैसे सर्द हवा का झोंका उसे छू गया हो।

"क्या होने जा रहा है, क्रैफोर्ड? क्या वे..."

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने रुखाई से कहा—"यह घाटी उसके हाथ से निकल जायेगी। अंत में, उसे त्यागना ही होगा। इसे बदलने का कोई रास्ता नहीं है।"

वह उसकी बाँहों में कसमसायी—"लेकिन क्या यह काम तुम्हें ही करना पड़ेगा?"

क्षण-भर के लिए वह हिला नहीं। "नहीं!" उसने अंत में कहा—"मैं अपना काम छोड़ सकता हूँ। मेरी जगह पर वे कोई दूसरा आदमी रख लेंगे और काम चलता रहेगा। टी. वी. ए. का मतलब कोई एक, दो या सौ व्यक्तियों से ही नहीं है। हम सब लोगों को मिला कर ही टी. वी. ए. है, एक फौज के समान ही—सिवा इसके कि यह विनाश के लिए नहीं, निर्माण के लिए है। अगर मैं छोड़ दूँ, तो मेरे छोड़े हुए काम को करने के लिए मेरी जगह पर दूसरा आदमी आ जायेगा।" वह रुका और फिर बोलने लगा—"मैं नौकरी छोड़ना

नहीं चाहता, आर्लिस! मैं अपना काम पूरा करना चाहता हूँ। अगर मेरा यह काम टी. वी. ए. के लिए जगह बनाने के विचार से मैथ्यू डनबार को अपनी जमीन से हटाना है, तो भी! क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह एक महान् कार्य है और इसकी महानता बनाये रखने के लिए अगर यहाँ-वहाँ थोड़ा अन्याय भी हो जाये, तो वह उचित है।" उसकी आवाज कड़वी हो गयी—"और लोगों से स्वयं को भिन्न रखना है—मैथ्यू ऐसा क्यों सोचता है? दूसरे लोग अपनी जमीन से हट रहे हैं। कुछ लोग इससे प्रसन्न हैं, रुपये पाकर वे खुश हैं। दूसरे इसे पसंद नहीं करते; लेकिन वे समझते हैं कि यह काम होना ही है और असंतोषपूर्वक ही सही, वे अपनी जमीन छोड़ देते हैं। इससे भिन्न रास्ता अख्तियार करने वाला मैथ्यू डनबार कौन है?"

"वे मैथ्यू डनबार हैं—" आर्लिस ने कोमलता से कहा—"यही वह अंतर है और उन्हें इसका अधिकार है। अगर उनकी इच्छा नहीं हो, तो उन्हें किसी और के समान बनने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।"

"वह स्वयं अपने सिर पर दुःख डाल रहा है—" क्रैफोर्ड बोला—"उसके लड़कों ने घाटी छोड़ दी, इसके लिए वह स्वयं दोषी है। और अब, वह मेरे और तुम्हारे बीच स्वयं को और अपनी जमीन को रख रहा है, जहाँ कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं..."

आर्लिस ने उसे चुप करने के लिए उसके मुँह पर अपना हाथ रख दिया और अपनी उँगलियों से उसके होंठों का हौले से स्पर्श किया। "अपने-आप में कड़वाहट मत लाओ—" वह बोली।

क्रैफोर्ड के होंठ हिले और उसने आर्लिस की उँगलियों को चूम लिया। "अच्छी बात है—" वह बोला—"अच्छी बात है। मैं उस बूढ़े खूसट को पसंद करता हूँ—और इसी से मैं उस पर यों झल्ला उठता हूँ। तुम जानती हो, पहले दिन जब हम साथ-साथ तुम्हारे घर की ओर आ रहे थे, रास्ते में वह रुका और उसने नदी से दो तरबूज निकाले। उसने दोनों तरबूज स्वयं ले चलने के बजाय, एक तरबूज मुझे ले चलने को दे दिया, जैसे मैं उसका पुराना दोस्त था। मेहमान मान कर उसने मुझे अपनी बगल में खाली हाथों नहीं चलने दिया।" उसने आर्लिस की ओर अपना सिर घुमाया—"तुम जानती हो, मैं कैसे चला हूँ। लकड़ी चीरने के एक कारखाने के निकट एक जीर्ण खेमे में कठोर श्रम कर, मैं धीरे-धीरे इस पद पर पहुँचा हूँ। जिस हार्दिकता से मैथ्यू ने मुझे अपनाया, कभी किसी ने उस तरह मेरा स्वागत नहीं किया

था—यद्यपि मैथ्यू इससे पहले मुझे जानता भी नहीं था।"

आर्लिस के वजन के दबाव से जहाँ उसकी माँसपेशियों में रक्त-संचालन बंद हो गया था, उसने अपनी बाँह खिसका कर उसे ठीक कर लिया। उसने आर्लिस के कपोल पर एक उँगली रखी और उसे दबाते हुए उसकी ठुड्डी तक मानो एक सीधी रेखा खींच दी। "यह सोचना भी कि...मैं नहीं जानता था, तुम मुझे प्यार करती हो......" उसने बड़ी मधुरता से कहा—"हमेशा मैं तुमसे इसे कहने में डर रहा था और हमेशा तुम......"

"मैं भी इसे कहने से डर रही थी—" वह बोली और हँस पड़ी। उसकी यह हँसी अद्भुत और कोमल थी।

"तुम जानती हो—" वह गम्भीरतापूर्वक बोला—"तुमसे विवाह कर मैथ्यू के साथ इस घाटी में रहने से अधिक मैं और कुछ नहीं पसंद करूँगा। वह हमें घर का एक कमरा रहने के लिए दे देगा, खाने की मेज के निकट हमें सम्मान से बैठायेगा और मुझे करने के लिए काम भी देगा। वह हमारा घर होगा—एक ऐसा घर, जिससे मैं कभी परिचित नहीं रहा हूँ; क्योंकि मैं एक जीर्ण खेमे में बड़ा हुआ हूँ। और, मैथ्यू को भी इससे प्रसन्नता होगी; क्योंकि वह उस तरह का आदमी है, जो दुनिया में अलग-अलग छिटपुट रहने के बजाय, साल-दर-साल, पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक अपने परिवार को अपने निकट रखना पसंद करता है।"

उसने अपना सिर हिलाया—"लेकिन ऐसा हो नहीं सकता, आर्लिस! क्योंकि मेरे कर्त्तव्य की भी कोई पुकार है और यह पुकार उसके विरुद्ध है।" उसने अंधेरे में आर्लिस की ओर देखा—"जिस तरह वह पीछे नहीं हट सकता, मैं भी नहीं हट सकता, आर्लिस!"

आर्लिस ने अपना सिर झुका लिया। "हाँ!" उसने एक साँस ली—"हाँ, मैं समझती हूँ।" उसने अपना सिर उठाया—"मुझे अब जाना चाहिए। वे ताज्जुब कर रहे होंगे कि मैं कहाँ चली गयी।"

क्रैफोर्ड ने उसे स्वयं से चिपका लिया—"अभी मत जाओ। मैं..."

वह उसकी बाँहों के घेरे से निकल आयी। "इस संसार में औरतों के करने के लिए कुछ खास नहीं है—" वह बोली—"वह खाना पका सकती है, सफाई रख सकती है और फसल के समय अनाज सहेज कर सकती है। वह शादी कर सकती है और बच्चों को पाल सकती है, जो स्वयं एक बड़ा काम है। लेकिन जब पुरुष अपने पुरुषत्व में एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं,

तो औरत उनके बीच से अलग हट, सिर्फ उस आदमी के लिए भगवान् से प्रार्थना-भर ही कर सकती है, जिसे वह प्यार करती है।" उसे रुलाई आ गयी, उसने सिसकी ली और उसका गला जैसे रुँधने लगा, लेकिन वह स्वयं को कहने से नहीं रोक सकी—"कोई भी औरत क्या कर सकती है, जब वह पिता को प्यार करती है और..."

"वह किसी एक को चुन सकती है—" क्रैफोर्ड ने जल्दी से कहा—"उसे इनमें से एक को चुनना ही है और अपने चुनाव पर दृढ़ रहना है।"

आर्लिस ने अपना सिर हिलाया। "मैं ऐसा नहीं कर सकती—" वह बोली—"मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्रैफोर्ड! तुम क्या देख नहीं पा रहे हो कि मैं ऐसा नहीं कर सकती?" वह काफी देर तक उसे स्थिर निगाहों से देखती रही—"मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, क्रैफोर्ड! मैंने इसे गर्व के साथ कहा है और यह मेरे हृदय की आवाज है। किन्तु अगर मैं तुम्हारे साथ चली गयी, तो कोई यह नहीं कह सकता कि मैथ्यू डनबार क्या कर बैठेंगे। मैं उन्हें उतनी दूर तक नहीं जाने दे सकती।"

"लेकिन..." क्रैफोर्ड बोला। आर्लिस ने उसे चुप करा दिया।

"वे एक उदार व्यक्ति हैं—" वह बोली—"अपने जीवन-भर में सिर्फ एक बार के सिवा उन्हें कभी अपनी उदारता नहीं त्यागनी पड़ी। एक बार वे घर के सामनेवाले आँगन में अपने भाई से लड़े थे—घाटी को उनके हाथों में पड़ कर बरबाद होने से बचाने के लिए। वे उनसे अपने घूँसों से लड़े थे, दाँतों से काटा था, उन पर पैर चलाये थे—ऐसी लड़ाई मैंने कभी नहीं देखी। उन्होंने अपने भाई की जान ले ली होती, अगर उनके भाई मजबूत नहीं होते।" वह फिर सिहर गयी—"कैसे यह घटना घटी थी, मुझे याद नहीं है; लेकिन उस दिन मेरे पिता कैसे उत्तेजित थे, यह मैंने सुना है। मैं उन्हें फिर उतनी दूर तक नहीं जाने दे सकती। मैं ही एक ऐसी हूँ, जो उन्हें उतनी दूर तक जाने से रोक सकती हूँ।"

"तब..." क्रैफोर्ड बोला।

आर्लिस ने बाहर अंधेरे में देखा। "मुझे अब जाना ही होगा—" वह बोली। उसने वापस क्रैफोर्ड की ओर देखा—"हम इंतजार कर सकते हैं, क्रैफोर्ड! क्योंकि हमारे दिल में एक-दूसरे के प्रति जो प्यार है, वह अभिन्न है। हमें जल्दी करने की जरूरत नहीं है; क्योंकि हम जानते हैं कि हमेशा हम एक-दूसरे को प्यार करते रहेंगे।"

उसे एकटक निहारते हुए क्रैफोर्ड ने अपना हाथ स्टीयरिंग ह्वील पर रख दिया। "हो सकता है—" वह बोला—"हो सकता है। तुम्हारी तरह मुझे इसका इतना विश्वास नहीं है।" उसने एक गहरी साँस ली—"तब मैं तुमसे फिर नहीं मिल रहा हूँ? मुझे बस..."

"तुम मेरे घर तक नहीं आ सकते—" आर्लिस ने जल्दी से कहा—"उससे हमारी स्थिति खराब हो जायेगी और मेरे पिता क्रुद्ध हो उठेंगे—" उसने फिर अपने हाथ से बड़ी कोमलता से उसकी गर्दन सहलायी, जैसे वह किसी बच्चे की गर्दन सहला रही थी। "लेकिन जब भी तुम अपना हार्न बजाओगे, मैं यहाँ आ जाऊँगी—" वह हँसी—"अगर मैं जूठी तश्तरियाँ साफ करती रही, तो भी उसे यों ही छोड़ कर मैं आ जाऊँगी।"

क्रैफोर्ड ने फिर उसे अपनी बाँहों में समेट लिया। उन्होंने एक-दूसरे को चूमा, फिर चूमा और फिर चूमा। आर्लिस ने क्रैफोर्ड के होंठों से अपने होंठ हटा लिये और फिर उन्हें वहाँ वापस ले आयी। उनके इस चुम्बन में उनके हताश हो उठने की भावना काम कर रही थी, जैसे वे एक-दूसरे से हमेशा के लिए बिछुड़ रहे थे। वे एक-दूसरे को चूमते रहे, जब तक कि आर्लिस निश्चित रूप से अलग नहीं हो गयी। उसने उसी रौ में यह व्यापार समाप्त कर देने के लिए अपनी तरफ का मोटर का दरवाजा खोला और ठंडी हवा मोटर के भीतर घुस आयी और उसने उस छोटे-से हीटर से निकलनेवाली उष्णता को बाहर निकाल फेंका। आर्लिस बाहर सड़क पर उतर आयी और तेजी से चल कर मोटर के सामने की ओर आ गयी।

शीशा नीचे गिरी खिड़की से क्रैफोर्ड ने बाहर झाँक कर देखा "कल रात!" उसने आवाज दी—"यहीं। कल रात!"

आर्लिस ने सहमति जताते हुए अपना सिर हिलाया और अपना हाथ हिलाया। फिर वह तेजी से वापस घाटी की ओर चल पड़ी। ठंड से बचने के लिए उसने अपनी कुहनियों को कस कर पकड़ते हुए अपने सामने की ओर अपनी बाँहें मोड़ लीं। सर्द हवा के झोंकों से बचने के लिए उसने अपना सिर नीचे झुका लिया। उस पतले स्वेटर से होकर ठंड उसके शरीर को सिहरा दे रही थी। मोटर के उष्ण वातावरण से जो उष्णता वह स्वयं में समेट कर ले चली थी, ज्यादा देर तक वह उसका साथ न दे सकी। उसने अपने कदम तेज किये; लेकिन घर के भीतरी बरामदे तक पहुँचते-पहुँचते वह ठंड से पूरी तरह काँप रही थी। उसने कृतज्ञ-भाव से दरवाजे से होकर भीतर रसोईघर में पैर

रखा, जहाँ का वातावरण उष्ण था। एक औरत की स्वाभाविक आदत के अनुसार ही वह यह सोच रही थी कि पूरे जाड़े-भर उन्हें इसी तरह ठंड खा-खाकर प्यार करना होगा। वह यह उम्मीद बाँध रही थी कि पिछले कुछ सालों की तरह, इस बार बहुत अधिक ठंड नहीं पड़ेगी।

हैटी रसोईघर में अकेली ही थी। आर्लिस को जल्दी से अँगीठी के निकट पहुँच कर और उधर अपनी पीठ कर अपना स्कर्ट (घाघरा) ऊपर उठाते हुए वह देखती रही। जिस तरह वह कौनी के पीछे-पीछे गयी थी, उसी तरह वह आर्लिस के पीछे भी जाना चाहती थी। लेकिन वह डर गयी थी। वह डर रही थी कि आर्लिस भी यहाँ से चली जा रही है और रसोईघर में चुपचाप बैठी इंतजार करती हुई वह सोच रही थी कि सुबह में नाश्ता उसे ही तैयार करना होगा।

"तुम लौट आयीं—" वह बोली—"मैं......"

"हाँ!" आर्लिस ने कहा और कमरे में अपनी नजरें दौड़ायीं—"पापा कहाँ हैं?"

"दादा के पास, भीतर—" हैटी बोली। वह मेज के निकट से उठ गयी और आर्लिस के पास चली आयी—"मैंने सोचा था, तुम......"

आर्लिस हँस पड़ी। उसने हाथ बढ़ा कर हैटी को अपने आलिंगन में ले लिया और उसे अपने हृदय से चिपटा लिया। "तुमने सोचा कि कौनी के समान ही मैं भी यहाँ से चली जाऊँगी? मैं इस प्रकार से नहीं जाऊँगी, हैटी! मुझे इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरे पास क्रैफोर्ड है और मैं उस पर निर्भर रह सकती हूँ।"

"किंतु तुमने कहा था कि तुम उसे प्यार करती हो—" हैटी ने भर्त्सना के स्वर में कहा—"और उसने कहा था कि वह तुम्हें प्यार करता है......"

"निश्चय ही, हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं—" आर्लिस बोली—"हमारा प्यार सँच्चा है। इसीलिए हमें छुपने और यहाँ से भागने की जरूरत नहीं है। हम गर्व से सिर उठा कर लोगों के सामने खड़े रह सकते हैं।"

हैटी के ललाट पर सिकुड़नें पड़ गयीं। वह कौनी और उस अजनबी के बारे में सोच रही थी कि किस तरह वे दोनों मिल कर एक हो गये थे और तुरन्त ही जमीन पर जानवरों के समान एक-दूसरे से लिपट कर लेट गये थे।

"आर्लिस!" वह बेलाग बोली—"मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे एक चीज के सम्बंध में बताओ। मुझे बताओ कि प्यार क्या है?"

आर्लिस स्तम्भित रह गयी। जिस तरह वह अँगीठी की ओर घूम कर अपने शरीर में गर्मी पहुँचा रही थी, उसी तरह वह निस्तब्ध खड़ी रह गयी। "तुम तो वाहियात-से वाहियात सवाल पूछ सकती हो—" उसने अधीरता-पूर्वक विरोध दर्शाया—"यह...देखो..." उसकी भौंहें सिकुड़ गयीं। तब वह फिर मुस्करायी और हैटी ने उसकी आँखों में सुदूर स्थिर भाव से जलती किसी मोमबत्ती की चमक-सी उभरती देखी। "तुम्हें इसे समझाने का मैं एक ही रास्ता जानती हूँ, हैटी! प्यार ही एक ऐसी चीज है, जो मेरी जैसी घरेलू लड़की को कमरे के इस सुखद उष्ण वातावरण से अंधेरी सर्द रात में, बाहर ले जा सकती है। मेरे खयाल से किसी अन्य व्याख्या के समान ही प्यार की यह व्याख्या भी सुंदर और संतोषजनक है।"

किंतु हैटी अभी भी संतुष्ट नहीं हो पायी थी। वह धीरे-धीरे चल कर वापस मेज के निकट पहुँची और बैठ गयी। उसने वह सूचीपत्र अपने सामने खींच लिया और उनके खुले पृष्ठों को देखने लगी। किंतु वस्तुतः वह उन्हें देख नहीं रही थी। उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं और वह सोच रही थी। कौनी और उस अजनबी के घुल-मिल कर बिलकुल एक हो जाने तथा आर्लिस और क्रैफोर्ड गेट्स के प्रेम की इस साहसिक घोषणा के बीच बहुत दूरी थी—काफी अंतर था इन दोनों में। यह दूरी ऐसी थी, जो उसकी समझ के दायरे और माप के परे थी। किंतु एक बात निश्चित थी—सीअर्स और रोएबक से आनेवाली उन गोटेदार पैंटों को वह पसंद करेगी। उन गोटों के कारण ब्रेसियर भी पहनने-लायक बन जायेंगी।

आर्लिस ने, रहनेवाले कमरे में जो दरवाजा खुलता था, उसकी ओर देखा। वह जान रही थी कि आज या कल मैथ्यू से उसका सामना होगा ही। अब वह गर्मा गयी थी और बाहर की उस सर्द से सिहरती हुई, जिस तेजी से घर में घुसी थी, उसकी अपेक्षा अब पुनः आराम अनुभव कर रही थी। वह दरवाजे तक पहुँची और उसे खोल कर रहनेवाले कमरे के भीतर झाँका।

कमरे की अँगीठी में तेज आग जल रही थी और कमरा बहुत गर्म था। वहाँ की गर्म लहर अपेक्षाकृत सर्द रसोईघर में घुस आयी। अँगीठी के निकट नहलाने का एक टब रखा हुआ था और मैथ्यू का बूढ़ा पिता उसमें नग्न खड़ा था। अपने घुटनों के बल बैठा मैथ्यू एक कपड़े से फुर्ती के साथ उसका बदन साफ करते हुए उसे नहला रहा था। उसके बूढ़े पिता को सर्दी लग जाये, इसके पहले ही वह अपना काम खत्म कर देने की कोशिश कर रहा था।

आर्लिस कमरे के भीतर चली आयी और मैथ्यू ने आँखें उठा कर उसकी ओर देखा। उसे देखते ही, मैथ्यू के बूढ़े पिता ने अपनी नग्नता को ढँकने का दुर्बल प्रयास किया; लेकिन आर्लिस ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह अँगीठी में जलती आग की ओर देख रही थी।

"बाहर ठंड पड़ रही है—" वह बोली—"और तेजी से बढ़ती चली जा रही है।"

"मौसम का पहला सर्द झोंका—" मैथ्यू ने कहा—"मेरे विचार से घर में काफी गर्मी है; लेकिन मुझे पिताजी को स्नान कराना था।"

आर्लिस आग के निकट चली गयी और उनकी ओर पीठ कर खड़ी हो गयी, जिससे उसके कारण उसका बूढ़ा दादा संकोच नहीं अनुभव करे। मैथ्यू पानी झिड़क कर कपड़े के टुकड़े में साबुन लगा रहा था और आर्लिस को इसकी आवाज सुनायी दे रही थी। मैथ्यू यह काम नियमित रूप से स्वयं करता था। जाड़े अथवा गर्मी—कभी भी किसी दूसरे को वह यह काम नहीं करने देता था। मैथ्यू अपने बूढ़े पिता के शरीर की हड्डियों की दुर्बलता महसूस कर रहा था। साबुन लगा कर नहलाते समय उसके शरीर की चमड़ी किसी सूखे कागज के समान ही थी। मैथ्यू ने जब उसकी एक बाँह ऊपर उठायी, तो वह बिलकुल हल्की थी, जैसे उसमें कोई वजन ही नहीं रह गया था, हड्डियाँ सूख गयी थीं और उनका आकार बिगड़ गया था तथा वे लकड़ियों के समान ही कुड़कीली हो गयी थीं। अपने इस बुढ़ापे में मैथ्यू का पिता अपनी सारी शक्ति खो चुका था और उसकी दुर्बल आकृति में एक औंस भी अतिरिक्त माँस नहीं था। उसकी चमड़ी पारदर्शक बन गयी थी और उसके भीतर की वे धूमिल नीली शिराएँ साफ-साफ दिखायी दे रही थीं, जिनसे जीवन देनेवाला रक्त प्रवाहित हो रहा था।

मैथ्यू ने आर्लिस की ओर अपना सिर घुमाया। "क्रैफोर्ड गेट्स था न!" —वह बोला।

"हाँ! क्रैफोर्ड!" आर्लिस ने कहा। उसने मुड़ कर मैथ्यू की ओर नहीं देखा और मैथ्यू यह निश्चित रूप से नहीं समझ सका कि आर्लिस का उसकी ओर नहीं देखने का कारण उसके वृद्ध पिता की नग्नता थी या कुछ और।

मैथ्यू अपने पिता को नहलाता रहा। वह अब जल्दी कर रहा था; क्योंकि उसने उस बूढ़े शरीर में एक कम्पन महसूस की थी। आज रात बहुत ठंडक थी। किंतु पिछले एक सप्ताह से मैथ्यू ने अपने बूढ़े पिता को नहलाया नहीं

था; अतः आज रात उसने उसे नहला देना जरूरी समझा। और उसके पिता को इस तरह नहलाया जाना पसंद था।

"बैठ कर प्रेम-भरी बातें करने के हिसाब से भी यह ठंड काफी है—" वह बोला।

आर्लिस थोड़ा हँसी। "हमने फिर भी बातें कर लीं—" वह बोली—"आपने आर्डर का वह काम खत्म कर लिया?"

मैथ्यू ने आँखें ऊपर उठायीं, उसकी ओर देखा और फिर दूसरी ओर देखने लगा। "हाँ, क्यों?" वह बोला—"कल की डाक से चले जाने के लिए वह तैयार पड़ा है। क्या तुम्हें किसी और चीज की भी जरूरत पड़ गयी है?"

आर्लिस ने इन्कार में अपना सिर हिलाया। "नहीं!" वह बोली। उसने अपनी दोनों हथेलियाँ आपस में रगड़ीं। "बाहर ठंड थी। निश्चय ही, आज रात खून जमा देनेवाली सर्दी पड़ेगी। सम्भव है, बर्फ भी गिरे। हवा में इसका आभास भी था।"

मैथ्यू अपनी एँड़ियों पर पीछे की ओर झुक गया। "मेरे विचार से तुम चाहती हो कि उसे घर तक आने की छूट मैं दे दूँ—" उसने खुरदरी आवाज में कहा—"क्यों, तुम यही सोच रही हो न?"

आर्लिस उसकी ओर देखने के लिए मुड़ी। "क्यों, नहीं तो—" वह बोली—"हम बाहर ही मिल लिया करेंगे।"

मैथ्यू ने अपना सिर झुका लिया और अपने बूढ़े पिता के दाहिने पाँव को साफ करने लगा। उसके हाथ बड़े उत्साह से अपना काम कर रहे थे।

"मैंने क्रैफोर्ड को घाटी में आने से मना कर दिया है और जो-कुछ मैंने कहा है, उस पर टिका हुआ हूँ। लेकिन मैंने अनुमान लगाया था कि शायद तुम मुझसे अपना यह विचार बदलने को कहो।"

"क्रैफोर्ड के प्रति मेरी क्या भावना है, आप जानते ही हैं—" आर्लिस शांति के साथ बोली—"लेकिन मैं आपको अपना विचार बदलने के लिए नहीं कहूँगी। अगर घाटी में उसका आना आप पसंद नहीं करते हैं, तो मैं उससे बाहर मिल ले सकती हूँ। इसमें कोई ज्यादा असुविधा नहीं होने वाली है।"

मैथ्यू ने पिता के पैर को साफ करना आरम्भ किया। उसने जल्दी ही अपना यह काम समाप्त कर डाला और टब से बाहर निकलने में उसकी मदद की। "वहाँ पड़ा वह तौलिया मुझे देना—" उसने बिस्तरे की ओर संकेत करते हुए कहा।

आर्लिस बिस्तरे तक जाकर तौलिया ले आयी। मैथ्यू ने उसके हाथ से तौलिया ले लिया, क्षण-भर उसकी ओर देखा और तब वापस अपने बूढ़े पिता की ओर मुड़ गया। वह रुखाई और तेजी से तौलिये से उसका बदन पोंछने लगा और उसका बूढ़ा पिता सहिष्णुतापूर्वक खड़ा रहा। आर्लिस के व्यवहार से मैथ्यू आश्चर्यचकित रह गया था। आर्लिस को उसने कभी ऐसा नहीं देखा था—अपने उद्देश्य में इतनी दृढ़, इतनी निश्चिंत और फिर भी वह इसे कोई विशेष तूल नहीं दे रही थी। मैथ्यू ने एक ठंडी साँस ली।

"मैं समझता हूँ, हर पिता के जीवन में यह समय आता है—" वह बोला—"जब उसकी लड़की विवाह कर दूर चली जाती है अथवा घर में पड़ी रहती है। यद्यपि मैंने हमेशा यह उम्मीद की थी कि तुम..." उसने स्वयं को आगे कुछ कहने से रोक लिया—"मेरा अंदाज है, अब तुम शीघ्र ही यहाँ से चली जाओगी।"

"नहीं पापा!" आर्लिस ने कहा—"मैं आपको छोड़ कर नहीं जा रही हूँ।"

वह आश्चर्य से ठहर गया—"तुमने..."

"मैंने कहा कि मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा रही हूँ, पापा!" उसने स्पष्ट शब्दों में कहा—"और यह सच है। जिस तरह मैंने आपसे कहा था कि मैं क्रैफोर्ड को प्यार करती हूँ, उसी तरह यह भी सच है।"

"लेकिन..." मैथ्यू कहते-कहते रुक गया। उसने फिर कोशिश की—"तुम क्रैफोर्ड से प्यार करती हो। मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ और क्रैफोर्ड यहाँ आनेवाला नहीं है। अतः तुम..."

आर्लिस घूम कर उसके सामने हो गयी। मैथ्यू के बूढ़े पिता के चेहरे पर परेशानी की रेखाएँ उभरीं और आर्लिस की दृष्टि से बचाने के लिए उसने जल्दी से अपने हाथों से अपने सूखे-नंगे शरीर को ढँक लिया।

"पापा!" आर्लिस बोली—"मैं क्रैफोर्ड से प्यार करती हूँ। अगर मुझे उससे मिलने के लिए घाटी से बाहर भी जाना पड़ा, तो मैं जाकर मिलती रहूँगी। आप मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकते—" वह उसके निकट चली आयी। उसने अपनी आँखें मैथ्यू के चेहरे पर गड़ा रखी थीं—"लेकिन मैं उससे शादी नहीं करने जा रही हूँ, पापा! तब तक नहीं, जब तक मुझे आपका आशीर्वाद नहीं मिल जाता। आपके सामने खड़े होकर आपसे अनुमति लिये बिना मैं शादी नहीं करूँगी।"

मैथ्यू विचलित हो उठा। उसने तौलिये को अपने हाथों में लपेट लिया

और नीचे की ओर देखता रहा। उसका हृदय जैसे जकड़ता जा रहा था। "मेरी बेटी—" वह बोला—"मेरी बेटी..." वह आगे नहीं बोल सका। वह अपने अंतर की भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाया।

आर्लिस मुड़ कर रसोईघर के दरवाजे की ओर चल पड़ी। "आप जो कर रहे हैं, उसे खत्म कर लीजिये—" वह बोली—"तब तक मैं कुछ ताजी कॉफी बना लेती हूँ।" वह उसकी ओर देख कर मुस्करायी—"ठंड की इस पहली रात में एक प्याली गर्म ताजी कॉफी के समान और कोई चीज नहीं हो सकती।"

आर्लिस अपने पीछे दरवाजा बन्द करती चली गयी। मैथ्यू वापस अपने बूढ़े पिता के शरीर को तौलिये से पोंछने में जुट गया। रोषपूर्वक, बिना कुछ विचारे, वह काम करता रहा। तब बदन पोंछने का काम समाप्त कर उसने अपने पिता की, लम्बे जाँघिये पहनने में, मदद की। अँगीठी के सामने पड़े उन जाँघियों को पहनाने में, जो आग की गरमी से गर्म बने हुए थे, उसे काफी श्रम करना पड़ा। उसने अपने पिता को, बिस्तरे पर लिटाने के पहले, कुछ देर आराम करने के लिए उस कुर्सी पर बैठा दिया।

"पापा!" वह बोला—"आर्लिस ने अपना साथी ढूँढ़ लिया है आर्लिस ने अपना प्रेमी पा लिया है।"

सम्भवतः यह स्नान से प्राप्त नवजीवन और उसकी बूढ़ी चमड़ी की कोमलतापूर्वक की गयी मालिश की स्फूर्ति थी; किंतु इस बार उसका बूढ़ा पिता उसकी बात समझ गया। वह जोरों से रूखी हँसी हँसा। हँसते-हँसते वह झुक गया। उसे हँसने में तकलीफ हो रही थी और उसने अपना कंठ पकड़ लिया था। लेकिन यह दिखाने के लिए कि वह मैथ्यू की बात समझ गया था, वह बड़े बेढंगे तरीके से हँसा।

प्रकरण नौ

मैथ्यू जब नाश्ते के लिए घर में धप्-धप् करता हुआ आया, तो ठंड के कारण उसके मुँह से भाप निकल रही थी। पिछले सहन में रुक कर उसने अपने दोनों हाथ रगड़े और उनकी सिहरन दूर करने का प्रयास किया। पिछली रात अचानक ही ठंड पड़ने लगी थी और काफी तेज ठंड पड़ी थी। दिन साफ था

और धूप निकली हुई थी। आकाश में सूरज चमक रहा था; लकिन ठंड के प्रभाव से वह भी अछूता नहीं था। उसका प्रकाश उतना प्रखर नहीं था। जमीन पाला पड़ने के कारण सफेद नजर आ रही थी। मैथ्यू ने अपनी उँगलियों को फूँक मार कर, गर्मी पहुँचाने की चेष्टा की और अपने कानों पर अपने हाथ रख लिये। तत्काल ही उसने एक सुखद गर्मी-सी महसूस की। वह मुस्कराया और जोर से धक्का देकर रसोईघर का दरवाजा खोल दिया।

"तुम लोगों की बात तो मैं नहीं जानता—" वह बोला—"लेकिन मेरा इरादा आज कुछ सूअर मारने का है।"

उन्होंने अपने-अपने काम रोक दिये और जो जहाँ था, वहीं रह गया। राइस मेज के निकट बैठा हुआ था, हैटी प्याले और तश्तरियाँ रख रही थी और आर्लिस माँस तल रही थी। उनके लिए किसी अन्य दिन के समान ही आज का दिन भी था; लेकिन मैथ्यू की इस बात ने जैसे एकबारगी कोई परिवर्तन ला दिया।

मैथ्यू अपने शरीर में गर्मी लाने के लिए अँगीठी के पास चला आया। "हाँ, महाशय!" वह बोला—"मुझे तो सूअर का ताजा माँस खाने की इच्छा हो रही है। अलावे, हमारे पास बहुत ज्यादा सूअर हैं और उन्हें एक साथ ही हम नहीं मार सकते। अच्छा होगा, अगर हम यह काम पहले ही आरम्भ कर दें।"

"कितने सूअर मारने का इरादा है आपका?" राइस ने पूछा। इस प्रस्ताव से वह अत्यधिक प्रसन्न हो उठा था और उसकी उत्तेजना स्पष्टतः लक्षित थी। वह बड़ी व्यग्रता से मेज के निकट से उठ खड़ा हुआ।

"बैठ जाओ और पहले अपना नाश्ता कर लो, बेटे। खाली पेट हम सूअर नहीं मार सकते।" मैथ्यू बोला—"मेरे विचार से दो सूअरों को मारना काफी रहेगा। बाकी सूअरों को हम क्रिसमस के पहले तक निपटा सकते हैं।" वह आर्लिस की ओर मुड़ा—"मेज पर कुछ खाने के लिए रखो, बेटी! हमारे सामने पूरे दिन का काम पड़ा है।"

वह बैठ गया और आर्लिस पतीली मेज तक ले आयी। उसने उस तले माँस को अलग-अलग टुकड़ों में बाँटा। मैथ्यू को खाने के लिए देते समय उसने उसकी ओर गौर से देखा; लेकिन रात की घटना का कोई प्रभाव मैथ्यू में लक्षित नहीं था। और सच ही, आज का दिन, मैथ्यू के लिए एक नया आरम्भ लेकर आया था। ऐसा प्रतीत होता था कि ठंड के मौसम ने अब

साल-भर के लिए गर्मी बिलकुल समाप्त कर दी थी। निश्चित रूप से गर्मी का मौसम उनके काफी पीछे छूट गया था, और जाड़ा आने के साथ ही, इस घाटी में, उनके लिए जैसे कोई नया काम आ गया था। मैथ्यू उत्तेजित था, उसके रग-रग में स्फूर्ति दौड़ रही थी और वह बड़े मनोयोग से अपना नाश्ता करता रहा।

"राइस!" खाते-खाते वह बोला—"तुम जाकर आग सुलगाओ। उस पीपे में हमें काफी पानी गर्म करना होगा। लकड़ी बचाने की मत सोचना। पानी जितना ज्यादा गर्म होगा, उसकी खाल खुरचने में उतनी ही कम देर लगेगी।"

"मुझे आप क्या करने के लिए कहते हैं, डैडी?" हैटी ने पूछा—"पिछले साल आपने मुझे कुछ नहीं करने दिया था।"

"बहुत-से काम करने को पड़े हैं, बेटी!" मैथ्यू बोला—"उसकी चिंता मत करो।"

बिना बोले ही उसके दिमाग में यह विचार उभर आया; क्योंकि नाक्स और जेसे जान वहाँ से जा चुके थे। किंतु आज इस विचार से उसने अपने मन पर दुःख को नहीं हावी होने दिया। वह जल्दी-जल्दी खाता रहा। काम में जुट पड़ने के लिए वह चिंतित था। किंतु राइस तथा अन्य व्यक्तियों की तुलना में वह कोई अधिक चिंतित—अधिक उतावला—नहीं था। जब तक उसने कॉफी का दूसरा प्याला खाली किया, राइस अपना नाश्ता समाप्त कर मेज के निकट से उठ गया था। मैथ्यू जब बाहर आया, तो राइस दो बड़े-बड़े बर्तनों में पानी भर कर उनके नीचे आग सुलगाने जा रहा था। सूरज अब ऊपर चढ़ आया था। लेकिन अभी भी चारों तरफ पाला पड़े रहने के कारण, उसकी रोशनी तीखी नहीं थी। हवा के स्पर्श से मैथ्यू यह कह सकता था कि कुछ समय तक ऐसी ही ठंड बनी रहेगी, यद्यपि मौसम का यह पहला ही सर्द झोंका था। उतनी देर में कुछ सूअरों को मार कर, उनके माँस में नमक लगा कर उन्हें तैयार कर लेने का काम आसानी से निबट जायेगा। हवा में अभी ठंड के बने रहने की गंध व्याप्त थी।

"काफी पानी उबाल लो—" राइस की बगल से गुजरते हुए वह बोला। माँस के लिए बनाये गये घर तक वह पहुँचा और उसने भीतर एक कोने में रखा बड़ा-सा हथौड़ा ले लिया। उसने उसे हाथ में उठा लिया और अपने चारों ओर एक नजर डाली। हैटी रसोईघर के दरवाजे से दौड़ती हुई बाहर आयी और चिल्लायी—"मेरे लिए रुकिये, डैडी! मेरे लिए जरा रुक जाइये।"

"सूअरों को मारना शुरू करने के पहले हमें बहुत-से काम करने हैं।" मैथ्यू बोला। उसने हथौड़ा उठा लिया और सूअरों के बाड़े के पास पहुँचा। वहाँ उसने हथौड़े को घेरे से टिका कर रख दिया। अपने-अपने खाने के बर्तनों से मुँह उठा कर गुर्राते हुए सूअरों ने उसकी ओर देखा। अभी तक वे अपने ऊपर आनेवाली विपत्ति नहीं भाँप पाये थे। किंतु शीघ्र ही उन्हें ज्ञात हो जाता कि सूअरों को मारने का समय आ गया है। सुरक्षा की किसी गहरी भावना से प्रेरित हो, वे हमेशा यह जान जाते थे।

मैथ्यू खलिहान में गया और वहाँ से उसने दो जुए ले लिये। हैटी उसके ठीक पीछे-पीछे थी। पशुओं को जोतनेवाले उन जुओं के जरिये सूअरों को आसानी से बाड़े से निकाल कर घिरनियों से होते हुए उन डंडों तक पहुँचा दिया जाता, जो पिछले बरामदे से दूर, मकान की बगल में, मजबूती से बँधे थे और जहाँ उन डंडों के बीच दबा कर उन्हें मार डाला जाता। वहीं उनका खून बहता और फिर उनकी चमड़ी साफ की जाती।

"मेरे पीछे-पीछे यों मत घूमती रहो—" उसने हैटी से कहा—"घर में चली जाओ और हमारे पास जितने भी चाकू हैं, उनकी धार तेज करो। हमें उन सबकी जरूरत पड़नेवाली है।"

लजा कर, हैटी फुर्ती से रसोईघर में फिर चली आयी। मैथ्यू ने रुक कर देखा कि राइस क्या कर रहा था। उसने आग जला दी थी और वहाँ अधिक लकड़ियाँ जमा कर रहा था। गर्मी पहुँचने के साथ ही पानी उबलने लगा था। उसकी सतह से छोटे-छोटे बुलबुले उठते थे और नष्ट हो जाते थे।

"पीपा को यहाँ से निकाल ले जाने में मेरी मदद करो—" मैथ्यू ने राइस से कहा—"और वह फावड़ा भी लेते आना।"

दोनों साथ-साथ खलिहान में गये और तेल का पुराना पीपा उन्होंने निकाला। वे उसे वहाँ ले आये, जहाँ पानी गर्म हो रहा था और मैथ्यू ने उसे साफ करने के लिए काफी पानी उसमें डाल दिया। आग पर रख कर उसमें पानी उबाले जाने के कारण, पीपा झुलस गया था और वर्षों से जहाँ यह झुलसा हुआ पीपा जमीन में रखा हुआ था, वहाँ गड्ढा पड़ गया था। पिछली बार जब उन्होंने सूअर मारे थे, उसके बाद यहाँ की जमीन छोड़ कर फिर भर दी गयी थी। राइस ने फावड़े से जमीन खोद कर उसे निकाल लिया और उसने लापरवाही से वहाँ की मिट्टी एक ओर फेंक दी। आग के निकट लाकर उन्होंने उस साफ पीपे को जमीन पर रख दिया और उसके ऊपरी भाग को उन्होंने

थोड़ा-सा तिरछा करके रखा। राइस लकड़ी के कुछ टुकड़े ले आया और उन्हें पीपे के नीचे अड़ा दिया, जिससे पीपा लुढ़क न सके।

वे जल्दी-जल्दी काम कर रहे थे और काम की गर्मी उनके शरीर में भी पहुँच रही थी। पीपे को उस स्थान पर ठीक से स्थिर करते समय वे हँसते और एक-दूसरे से जोर-जोर से बोलते रहे और रसोईघर के भीतर से उन्हें हैटी की ऊँची और उत्तेजना से भरी आवाज सुनायी दे रही थी। आज का दिन बड़े आनंद का दिन होगा। वे हँसेंगे-बोलेंगे, आपस में झगड़ेंगे और दोपहर में खाने के समय उन्हें ताजा-चिकना सूअर का माँस खाने को मिलेगा। और उसके बाद मैथ्यू अपनी उस पुरानी टी. माडेल गाड़ी में बैठ कर अपने पड़ोसियों के पास भी ताजा माँस दे आयेगा।

मैथ्यू सीधा खड़ा हो गया और उसने चारों ओर नजरें दौड़ायीं। आग तेज थी और उसकी गर्मी से आसपास की बर्फ पिघल कर वहाँ जमीन को गीली बना रही थी। पानी से भरे वे देग निकट ही थे और उनसे तत्काल ही काम लिया जा सकता था। राइस ने धुन्नियों पर लकड़ी के लम्बे-लम्बे तख्ते जमा कर रख दिये थे। इन तख्तों से माँस काटने के लिए मेज का काम लिया जानेवाला था। बाड़े में सूअर चीत्कार कर रहे थे। उनकी समझ में अब यह आ रहा था कि उनमें से कुछ आज मरनेवाले हैं। वे ऊँचे और करुण स्वर में चीख रहे थे। इस बर्फीली हवा में उनकी आवाज दूर तक फैल जाती। रसोईघर के दरवाजे से हैटी और आर्लिस बाहर आयीं। माँस काटनेवाली छूरियों को उन्होंने तेज कर लिया था और उन्हें अपने साथ लिये हुए थीं। उन्होंने उन छूरियों को माँस काटी जानेवाली उस मेज पर रख दिया। हैटी फिर उन देगों के पास दौड़ गयी और आग के चारों ओर घूम-घूम कर नाचने लगी। उत्तेजना से वह उछली पड़ती थी। उसे देखता हुआ मैथ्यू मुस्कराया। वह सोच रहा था कि पिछली रात हैटी ने औरतों के पहनने-लायक असली गोटेवाले ब्रेसियरों की इच्छा प्रकट की थी और आज वह फिर एक छोटी बच्ची बन गयी थी।

वह राइस की ओर मुड़ा। "देखो!" वह बोला—"हमें अब चल कर उन सूअरों के सिर पर प्रहार करना चाहिए।" वे साथ-साथ सूअरों के बाड़े तक पहुँचे। हैटी और आर्लिस उनके ठीक पीछे थीं। "तुम मौली को अस्तबल से बाहर निकालो और उसे साज पहना दो।" मैथ्यू ने राइस से कहा—"अकेले ही इन सूअरों को घसीटने और घिरनी पर चढ़ाने का मेरा इरादा बिलकुल

नही है।" पहले उन लोगों को यह सब कभी नहीं करना पड़ा था। जैसे जान और नाक्स जब वहाँ होते थे, तो वे इसे आसानी से कर लेते थे—और किसी की जरूरत ही नहीं पड़ती थी।

सूअरों के चीखने का स्वर लगभग तीव्र विलाप में बदल गया था। वे बाड़े में घबड़ाये हुए आगे-पीछे दौड़ रहे थे और एक-दूसरे के पीछे कोनों में लिपटने की चेष्टा कर रहे थे। बाड़े में सूअरों के घुटनों तक पहुँचनेवाली कीचड़ थी; लेकिन पाला पड़ने से उस पर बर्फ की एक परत जम गयी थी और सूअरों के बाड़े से हमेशा निकलनेवाली वह सड़ी गंध दब गयी थी। पागलों के समान बाड़े में दौड़ते हुए सूअरों के पैरों के नीचे वह बर्फ की परत उनके भार से टूट जाती थी और वे उसके नीचे की सर्द कीचड़ में धँस जाते थे। घेरे के निकट पहुँच कर मैथ्यू रुका। वह उन सूअरों की ओर देखता हुआ यह सोच रहा था कि किसे अभी मारा जाये और किसे बाद के लिए बचा कर रखा जाये। सूअर दूर कोने में एक चक्करदार घेरे में घूमते रहे और फिर मैथ्यू के नजदीक से गुजरते हुए बाड़े में चारों ओर भागने लगे। बाड़े के घेरे पर झुकी हैटी सूअरों के समान ही जोर-जोर से चिल्ला रही थी। मैथ्यू ने आज के दिन मारे जानेवाले सूअरों को चुन लिया और अपने इस चुनाव से संतुष्ट हो उसने फावड़े का पुराना हत्था पकड़ लिया और बाड़े की छिटकनी खोलने के लिए बढ़ा। वह झुक कर और दोनों हाथ से फावड़े का हत्था पकड़े इसका इंतजार करता रहा कि कब सूअरों का झुंड फिर गोल चक्कर काटता हुआ उसके निकट से गुजरे। उसने उन भागते हुए सूअरों में से एक सूअर की नाक पर तेजी से फावड़े के हत्थे से प्रहार किया। दौड़ता हुआ वह सूअर आधे रास्ते में ही रुक गया और तब तेजी से चीखता हुआ, दूसरों से अलग, फाटक की ओर भागा। सूअर के मुँह से निकलनेवाली निराशा की वह तीव्र चीख तुरत ही वहाँ गूँज उठी। वह जान गया था कि आज उसका वध किया जानेवाला है और यह उसकी पूर्व-सूचना थी। प्रत्युत्तर में दूसरे सूअर भी जोरों से चीखे। लगा, कान के पर्दे फट जायेंगे। आर्लिस और हैटी ने अपने हाथों से अपने-अपने कान बंद कर लिये।

"मैं नहीं देख सकती इसे—" आर्लिस ने घबड़ा कर कहा और मुड़ कर वह घर की ओर चल पड़ी। हमेशा ऐसा ही होता था। वह उत्साह और उत्तेजना से भरपूर बाहर निकलती; लेकिन सूअरों के मारे जाने के पहले ही वह जल्दी से चली जाती। जब वह छोटी-सी बच्ची थी, तब भी ऐसा ही करती

थी और मैथ्यू को आज भी यह याद था। किंतु हैटी व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी; उसकी आँखें उत्तेजना से चमक रही थीं।

उस बड़े हथौड़े को लेने के लिए मैथ्यू उस घेरे से उतर आया और राइस की तलाश में अपनी नजरें दौड़ायीं। वह मौली के साथ चला आ रहा था। मौली सबसे अधिक शान्त और सबसे ज्यादा उम्र का खच्चर था। सूअरों की निराश चिल्लाहट का प्रभाव मौली पर भी पड़ रहा था और उसकी घबराहट उसकी आँखों में लक्षित थी। मैथ्यू ने हिचकिचाते हुए वह बड़ा हथौड़ा उठा लिया। तब वह उस सूअर के साथ बाड़े के भीतर उतर गया। सूअर अपने प्राणों के मोह में तेजी से इधर-उधर भागने लगा। भागते हुए वह मैथ्यू के पैरों के बीच से निकला। मैथ्यू ने अपना संतुलन सम्भाल लिया और हथौड़ा सूअर की ओर चलाया। पैर मजबूती से जमा कर वह स्थिर खड़ा था और हथौड़ा उसने ऊपर उठा रखा था। किंतु सूअर फिर से चीखता हुआ उसके पैरों के बीच से भागा और बाड़े से बाहर निकलने के छोटे मार्ग की ओर मुड़ा। मैथ्यू ने इस बार स्वयं को स्थिर रखा और सूअर के वहाँ से खिसकने के पहले ही, घुमा कर हथौड़ा चला दिया। मृत्यु को इतना निकट देख सूअर को जैसे लकवा मार गया था और वह प्रहार की प्रतीक्षा में शांत-स्थिर खड़ा था। अपनी मृत्यु अवश्यम्भावी देख, वह अब किसी प्रकार की कातरता दिखाये बिना उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। आँखों के बीच में बिलकुल उपयुक्त स्थान पर पूरे वजन के साथ हथौड़े का प्रहार हुआ और जैसे कोई वजनदार वस्तु जमीन पर फेंक दी गयी हो, सूअर नीचे गिर पड़ा। जोरों से चीत्कार करते हुए उसने बड़े कष्टपूर्वक अंतिम साँस छोड़ी। बचने के प्रयास में उसने बड़े बेढंगे ढंग से अपने पैर ऐंठे; किंतु अब बहुत देर हो चुकी थी। राइस, मैथ्यू, वगैरह सब शान्त खड़े थे और वे उस सूअर को देख रहे थे, जो अचानक ही निर्जीव माँस का लोथड़ा बन गया था। सूअर की नाक से खून की धार निकल रही थी और जमीन पर एक रेखा-सी बनाती जा रही थी। बाकी सूअर डर कर बाड़े के दूर के कोने में जमा हो गये थे। वे अपनी छोटी छोटी आँखों से मैथ्यू की ओर देख रहे थे और हाथियों के समान उनके बड़े-बड़े कान आगे की ओर ऊँचे उठे हुए थे। लेकिन क्षण-भर तक ही यह स्थिति रही; फिर वे चिल्लाते हुए इधर-उधर बिखर गये और भागने लगे। मृत्यु से बचने के लिए वे बड़ी व्यग्रतापूर्वक बाड़े-भर में दौड़ रहे थे।

"इसका माँस खाने में मजा देगा—" मैथ्यू बोला। उसने मृत सूअर का एक कान पकड़ लिया और उसका भारी सिर अपनी ओर घुमाया। "जल्दी, हैटी—" वह चिल्लाया—"छूरी!"

माँस काटनेवाले उस बड़े-से चाकू को लेकर हैटी दौड़ती हुई उसके पास आ गयी। मैथ्यू ने चाकू पकड़ लिया और फिर मृत सूअर के ऊपर झुक गया। उसने सूअर के गले के निकट से खुरचना आरम्भ किया। तेजी से खून बह निकला और मैथ्यू के हाथ हटाने के पहले ही उसे भिगो गया। जमीन पर गाढ़े खून की एक गहरी लकीर बन गयी। खून का बहाव पहले तेज था; लेकिन बाद में, वह बूँद-बूँद टपकने लगा।

"ले जाओ इसे घसीट कर और इसे लटका दो, जिससे खून सब निकल जाये—" बाड़े का बाहरी दरवाजा खोलते हुए मैथ्यू ने चिल्ला कर राइस से कहा। वह सूअर के पिछले पैरों की ओर गया और एक-एक कर उन्हें ऊपर उठाते हुए उसने बड़ी निपुणता से उसके उजले पुट्ठे काट डाले! उसने उस मृत सूअर को उलट दिया और जुए के हुकों को उसके दोनों पुट्ठों में फँसा दिया। फिर मौली उसे घसीटता हुआ मकान की ओर ले चला।

तब वह दूसरे सूअरों की ओर मुड़ा। उसने उनमें से दूसरा सूअर भी चुन लिया और उसे खदेड़ कर बाड़े के भीतर कर दिया। यह सूअर पहले सूअर की अपेक्षा अधिक उग्र था। साथ ही, यह अधिक भयभीत भी था और इसने बाड़े की दीवार पर चढ़ कर भाग निकलने की चेष्टा की। बच निकलने के अपने प्रयास में वह एक बार पागल-सरीखा घूमा और मैथ्यू को उसने जमीन पर गिरा दिया। खुल कर उसे कोसता हुआ मैथ्यू उठ खड़ा हुआ और उसने उस सूअर को बाड़े के एक कोने में घेर लिया। उसे घेर कर वह दृढ़तापूर्वक अविचल खड़ा था और तब उसने वह बड़ा हथौड़ा चलाया।

उसके इस सूअर के मारने तक राइस मौली को लेकर वापस आ चुका था। वे इस दूसरे सूअर को भी मकान की बगल में बाँधे गये उन डंडों तक घसीट कर ले आये। उन्होंने जंजीर खोल दी और घिरनी घूमने लगी! मौली उस मृत सूअर के शरीर को ऊपर उठाता गया, जब तक कि उसके दोनों पैरों को स्वयं से बाँध कर अलग-अलग फैला कर रखनेवाला जुआ घिरनी से बिलकुल सट नहीं गया। तब उन्होंने घिरनी की जंजीर बाँध दी और तब तक के लिए मौली को खोल दिया।

मैथ्यू राइस की ओर देख कर मुस्कराया। "चलो, हम खलिहान तक

चलें—" वह बोला—" वहाँ एक ऐसा काम है, जो हमें अभी ही निपटा लेना है।"

राइस उसके साथ ही हँस पड़ा और वे तेजी से खलिहान की ओर बढ़े। रास्ते में, मैथ्यू वहाँ रुका, जहाँ देगों में पानी उबल रहा था और उसने आग को कुरेद दिया। खलिहान में पहुँचकर मैथ्यू ने कुटीर का दरवाजा खोला और कील में टँगा टिन का प्याला उतार लिया। उसने पीपे को झुकाकर तिरछा किया और व्हिस्की से आधा प्याला भर लिया। फिर उसने वह प्याला राइस की ओर बढ़ा दिया। राइस एक ही घूँट में उसे खाली कर गया और उसने प्याला वापस मैथ्यू को दे दिया। बारी-बारी से वे अपने गले के नीचे व्हिस्की उतारते रहे। सर्द से निर्जीव से बने उनके शरीर में एक तीखी उष्णता का संचार हो गया और उनमें जीवन जैसे फिर लौट आया।

"हाँ," मैथ्यू बोला—" किसी ठंडे दिन में शराब के समान सुखद और कोई चीज नहीं हो सकती।"

जब तक वे लौटकर आये, सूअरों के मृत शरीर से सारा खून निकल चुका था। उन्होंने पहले सूअर को नीचे उतारा और मौली को जुए में जोत कर फिर जंजीर बाँध दी। तब उसे खींचकर वे वहाँ ले आये, जहाँ पानी गर्म हो रहा था। देगों से उबलता हुआ पानी उन्होंने पीपे में ढाला और आधा पीपा पानी से भर दिया। उन्होंने उस मृत सूअर को श्रमपूर्वक उस पीपे में डाल दिया। उसके पिछले पैर अभी तक जुए से बँधे थे। पीपे में सूअर का मृत शरीर डाल देने के बाद उनका काम कुछ आसान हो गया था। मौली को आगे-पीछे चलाकर, उसके जरिये ही वे अपना काम निकालने लगे; क्योंकि मौली जब आगे की ओर बढ़ता और फिर पीछे की ओर चलता, तब उसके साथ ही पीपे में रखा सूअर का मृत शरीर आगे-पीछे होता था। राइस खच्चर के सिर के निकट चला गया और मैथ्यू के आदेशानुसार वह खच्चर को आगे चलाता अथवा पीछे हटाता। मैथ्यू दूसरे छोर पर खड़ा सारी कार्रवाई का निरीक्षण करता रहा। उन्होने उस खौलते पानी से मृत सूअर का पूरा शरीर अच्छी तरह साफ कर लिया। मैथ्यू इस सम्बन्ध में पूरी सावधानी बरत रहा था, जिससे सूअर के शरीर का एक इंच भाग भी मैला न रह जाये। वह बाल्टी में गर्म पानी ले सूअर के पैरों को भी भिगा रहा था। गर्म पानी से निकलती भाप उसके चेहरे का स्पर्श कर रही थी। सूअर के मृत शरीर के बालों से गर्म पानी पड़ने पर जो गंध निकल रही थी, मैथ्यू के नथुनों तक पहुँच रही थी। तब

उन्होंने एक झटके से उसे बाहर निकाल लिया और फिर लटका दिया। वे अब तेजी से काम कर रहे थे।

"सब काम में जुट जाओ—" मैथ्यू ने मेज पर से एक चाकू उठाते हुए कहा—"इसके पहले कि यह सूख कर कड़ा हो जाये, हम लोग इसकी खाल उतार लें।"

गर्म पानी से साफ किये गये उस मृत सूअर के चारों ओर सब जमा हो गये। अपने-अपने हाथों में चाकू पकड़े उसकी खाल खुरचने में वे व्यस्त हो गये। मैथ्यू ने उसके लम्बी, ऊँची, मांसल पीठ की चमड़ी उतारनी शुरू की। चाकू की धार से सूअर के शरीर के बाल जब मुड़ कर कट जाते, वह देखता रहता। तब उसने दोनों हाथों से उसके थोड़े-से बालों को पकड़ कर और बाकी बचे हिस्से को खुरचने लगा। थोड़ी देर में ही खुरचने का काम समाप्त हो गया और सूअर की उजली और साफ चमड़ी नजर आने लगी। वे तेजी से काम कर रहे थे। वे आपस में बातें भी नहीं कर रहे थे; क्योंकि इस समय काम की गति में तेजी जरूरी थी। अगर गर्म पानी से गरम की गयी खाल कड़ी हो गयी और वे लोग अपना काम खत्म नहीं कर पाये, तो उसे खत्म करना असम्भव-सा ही हो जायेगा। जब उनका काम समाप्त हो गया, तो मृत सूअर का उजला और कोमल ढाँचा लटकता रह गया। अब यह मृत्यु का विरोध करनेवाले किसी जीवित सूअर की तरह नहीं प्रतीत हो रहा था; अब यह माँस था—खाने की मेज पर सूअर का स्वादिष्ट माँस और मैथ्यू ताज्जुब कर रहा था कि पहला सूअर मारने के बाद से ही उन लोगों के बीच कैसा मौन छा गया है।

पहले सूअर को छील-छाल कर उसका माँस तैयार करने के बाद, वे विश्राम करने के लिए रुके और तब पहले के समान ही दूसरे सूअर का भी माँस निकाल लिया। अब तक सूरज आकाश में ऊपर चढ़ आया था; लेकिन हवा में अभी भी ठंडक थी। दिन साफ, ठंडा और कड़े श्रम करने के योग्य था—सूअर मारने के लिए सर्वथा उपयुक्त दिन! काम के श्रम से उनके शरीर में गर्मी का संचार होता रहा। सिवा उनके हाथ-पैरों के उन्हें कहीं ठंड नहीं महसूस हो रही और वे आग पर चढ़ी देगची के निकट बारी बारी से जाकर उन्हें गर्मी पहुँचाने लगे। बाहर के उस छोटे-से मकान से लौटते हुए, मैथ्यू का बूढ़ा पिता रुका, क्षण भर तक उन्हें देखता रहा और फिर घर के उष्ण वातावरण में लौट गया।

खाल उतारने का काम जब समाप्त हो गया और सूअरों के भारी-भरकम

शरीरों के स्थान उनके सफेद और पुष्ट माँस का ढाँचा-भर लटकता रह गया, तो मैथ्यू को छोड़ कर बाकी लोग पीछे हट आये। खाल इस सफाई से उतारी गयी थी कि उसकी हड्डियाँ भी दिखायी देने लगी थीं। मैथ्यू अब उसे अलग-अलग टुकड़ों में काटने के काम में लगा। सबसे पहले उसने चाकू से पेट का भाग चीर डाला। सीने की हड्डियों को काटने के लिए उसे कुल्हाड़ी से काम लेना पड़ा और उसने अँतड़ियों को निकाल कर उस टब में डाल दिया, जिसे राइस और आर्लिस पकड़े हुए थे। अँतड़ियाँ उसकी उँगलियों में ठंडी और चिकनी लग रही थीं। उसने अपनी उँगलियों से अँतड़ियों में लगी चर्बी से उन्हें अलग कर दिया और राइस के साथ माँस काटने में जुट गया। आर्लिस और हैटी औरतों के उस काम में लग गयीं, जो बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा था। वे अँतड़ियों से चर्बी साफ करने लगीं। वे इस बात की पूरी-पूरी सावधानी बरत रही थीं कि अँतड़ियाँ कट न जायें और वह टब कहीं गंदा न हो जाये, जिस पर झुकी वे काम कर रही थीं। अँतड़ियाँ भरी-भरी, ठंडी और चिकनी थीं और उनके हाथों के दबाव से वे फिसल-फिसल जाती थीं।

मैथ्यू माँस के टुकड़े काटता जा रहा था और राइस उन्हें लकड़ी के तख्तों से बनी उस मेज पर रखता जा रहा था। बाद में, सूअर की माँसल पीठ और पेट वाले हिस्सों में नमक लगाया जायेगा और उन्हें माँस-मछलीवाले घर में रख कर धुआँ दिखाया जायेगा, जिससे वे खराब न हों। कुछ हिस्से—लीवर तथा अन्य मुलायम और जल्दी पच जानेवाले हिस्से—वे तुरत ही खा लेंगे। जब तक वे ताजे रहते हैं, तभी तक उनके खाने का स्वाद है। और निश्चय ही, इस ताजे माँस में से थोड़ा पड़ोसियों को भी देना होगा।

जब तक मैथ्यू ने दूसरे सूअर को भी कील-साफ कर काट नहीं लिया, वे अपने-अपने काम में लगे रहे। "यह दूसरा टब भी अँतड़ियों से भरा है—" सूअर के पेट का हिस्सा काट लेने के बाद उसने आर्लिस और हैटी को पुकार कर कहा—"तुम कुछ चिटलिन (सूअर के माँस से तैयार किया जानेवाला खाद्य-विशेष) बनाओगी न, बेटी ?"

आर्लिस ने तिरस्कारपूर्वक इनकार में अपना सिर हिला दिया। "अगर आपको चिटलिन बनवाने हों, तो आपको किसी दूसरी औरत की तलाश करनी होगी, जो सूअर मारने में निपुण हो—" वह बोली—"मैं उन्हें लेकर गींजने से रही!" वह हँस पड़ी—"हाँ, मैं क्रैकलिंग ब्रेड (सूअर के माँस से तैयार की जानेवाली रोटी) जरूर बना दूँगी।"

मैथ्यू ने अपना काम रोक दिया और चारों ओर नजर दौड़ायी। जहाँ तक मर्दों के काम का सवाल था, वह लगभग खत्म हो चुका था। बाकी काम औरतों का था, यद्यपि मैथ्यू हमेशा उसमें भी उनकी मदद करता था। पर काम कल ही समाप्त होगा। जब तक इन निर्जीव शरीरों से गरमाहट बिलकुल नहीं निकल जाती और माँस बिलकुल ठंडा नहीं हो जाता, तब तक नमक लगा कर इन्हें माँस रखने के बक्से में नहीं रखा जा सकेगा और न माँस-मछली वाले घर में टाँग कर धुआँ दिखाया जा सकेगा। माँस के सूखे अथवा कुचले हुए भागों की भी अलग व्यवस्था करनी पड़ेगी। वह घर के भीतर जाकर सूखे माँस के पीसनेवाले यन्त्र को ले आया और उस मेज के दूसरे छोर पर राइस को खड़ा करा कर तत्काल ही काम में जुट गया। किंतु इसके अलावा चर्बी भी तो निकालनी होगी—यह औरतों का काम है; जिस प्रकार अँतड़ियाँ साफ की गयी थीं। तब मोटे माँसल हिस्सों से रस निचोड़ा जायेगा और आर्लिस उसके बाद क्रैकलिंग ब्रेड बनाने के लिए उन्हें अलग रख देगी। मकई का आटा मिला कर तैयार की गयी क्रैकलिंग ब्रेड डनबारों को बहुत पसद थी और वह उनका एक प्रकार का विशिष्ट खाद्य पदार्थ था। किंतु सूअर मारने का काम अब खत्म हो चुका था। बाकी बचा था शरत्, आगामी बसंत और ग्रीष्म काल के लिए, जब तक कि ठंड का पहला झोंका फिर शुरू नहीं हो जाता और फिर सूअर मारने का समय नहीं आ जाता, तब तक के लिए माँस सावधानीपूर्वक तैयार करके रखने का काम। आर्लिस जो काम कर रही थी, मैथ्यू स्वयं उसे करने बैठ गया, जिससे आर्लिस घर में जाकर खाना बना सके। आज का खाना बड़ा अच्छा था। सूअर के नरम और ताजे माँस के टुकड़े खाने में थे। सूअरों को मारने का जब समय आता था, तब हमेशा ये उसकी निशानी के रूप में खाने की मेज पर रखे होते थे। जब तक खाना समाप्त हुआ, वे पूर्णरूपेण तुष्ट हो चुके थे। सूअर का ताजा-ताजा माँस खाने से उनका मुँह चपचपा रहा था और वे अधिक खा लेने से आलस्य महसूस कर रहे थे। किंतु वे अनिच्छापूर्वक ही सही, पुनः काम में लग गये।

खाना खाने के बाद, मैथ्यू अंततः मौली को खलिहान में ले गया और उसे जुए से खोल दिया। सुबह से लेकर अब तक मौली ऑगन में जुती खड़ी रही थी। उसे खाने के लिए कुछ चरी देकर मैथ्यू खलिहान में थोड़ी देर के लिए रुक गया। मकान के नजदीक अपने-अपने कामों में व्यस्त लोगों की ओर वह देखता रहा। अगर हमेशा ऐसा ही होता—उसने सोचा—कि सब मिलकर

व्यस्त भाव से काम में जुटे रहते और वह काम में लगकर घाटी के बाहर की चीजों को भूल जाता, तो कितना अच्छा होता। और तब उसने महसूस किया कि और दिनों की अपेक्षा, आज उसे जैसे जान और नाक्स की कमी बहुत बुरी तरह खली थी। कई बार काम करते करते उसने अपने हाथ का चाकू उस ओर बढ़ा दिया था, जिधर कोई मौजूद नहीं था कि शीघ्र ही उसकी धार तेज कर चाकू उसे लौटा दिया जाये। एक दो बार उसने राइस को नाक्स के नाम से पुकार दिया था और राइस अजीब ढंग से उसकी ओर देखता रह गया था।

आवश्यक काम के आधिक्य के कारण वह इस सम्बंध में अधिक नहीं सोच पाया था; किंतु इस व्यस्तता के बावजूद, दिन सूना-सूना लगता था। मैथ्यू खलिहान में बने उस कुटीर में गया और वहाँ बलूत की लकड़ी के बने उस पीपे से उसने आधा प्याला व्हिस्की भर लिया। उसने कुटीर का दरवाजा खोला और दरवाजे पर ही बैठ गया। दोनों हाथों से टिन का वह प्याला पकड़ कर उसने उसे ऊपर उठाया और होंठों से लगा लिया। उस गर्म और बढ़िया व्हिस्की ने उसके शरीर में उष्णता की लहर दौड़ा दी; लेकिन आज सुबह के समान वह उत्फुल्लता का अनुभव नहीं कर सका। हम लोग उसी ढंग से सूअर मारते चले आ रहे हैं—उसने सोचा—जब से याद है, तब से हम इसी ढंग से सूअर मारते रहे हैं। तब से इसमें न कोई अंतर आया है और न ही इससे बढ़िया तरीका कोई है। इसी प्रकार बाकी हर वस्तु भी अपने पुराने ढर्रे के अनुसार क्यों नहीं चलती? उसने व्हिस्की का दूसरा घूँट लिया और उन लोगों की ओर देखा, जो जाड़े के लिए सूअर का माँस सुरक्षित रखने के पुराने काम में श्रमपूर्वक जुटे हुए थे। इसमें एक क्रमबद्धता थी, एक उम्मीद थी और यह जानकारी थी कि यह काम ऐसे ही चलता रहेगा। जिस दिन उसने यह तय कर लिया था कि सूअरों के किन-किन बच्चों को मारना है और बचे हुए बच्चों को शहर ले जाकर बेच देना है, उसी दिन से काम का यह सिलसिला आरम्भ हो गया था। उसके पास पोलैंड-चीन की अच्छी नस्ल के सूअर थे—लम्बे, भारी-भरकम और काफी माँसवाले सूअर और यह भी पहले से ही सोचकर बनायी गयी योजना के अनुसार ही था।

"अच्छी बात है—" उसने स्वयं से कहा—"योजना! अब थोड़ा और सोचो—कुछ और योजना बनाओ, मैथ्यू! यह अंदाज लगा लो कि तुम क्या कर सकते हो और तब उसे कर डालो।"

इसकी जरूरत वह हमेशा ही महसूस करता रहा था। शांत बैठ कर जब वह

सागर में वसंत में उठनेवाले ज्वार की बाढ़ के समान ही इस विचार को स्वयं पर से गुजर जाने देता था, तब भी वह इसकी जरूरत से बेखबर नहीं रहता था। उसके लिए यह जरूरी था कि और श्रम करे और टी. वी. ए. वालों से एक कदम आगे रहे। किंतु जिस प्रकार शरत्, वसंत और आगामी ग्रीष्म के लिए कार्यक्रम निर्धारित करना आसान था, उतना यह उसके लिए आसान नहीं था। उसने शराब का आखिरी घूँट भी पी लिया और प्याला खाली कर कुटीर के भीतर फेंक दिया। हमेशा वह बड़ी सावधानी से उसे कील में लटका दिया करता था, किंतु आज उसने उधर ध्यान भी नहीं दिया।

विभिन्न मौसमों के अनुरूप ही मानो उसे बनाया गया था। मौसमों के सम्बंध में उसे शिक्षा मिली थी, और उसे इस सम्बंध की जानकारी भी थी। यह सब उसकी पैतृक देन थी। प्रायः एक नैसर्गिक भावना के कारण ही वह जान जाता था कि कल या उससे बाद वाले दिन का मौसम कैसा होगा। पूरे सप्ताह भर मौसम का क्या रुख रहेगा, यह भी वह जान जाता था। वह हाथ में मुट्ठी-भर माटी लेकर मात्र स्पर्श से कह देता था कि वह अभी बीज डालने लायक हुई या नहीं। यह सारी बातें उसके भीतर गहराई से अपनी जड़ें जमाये हुई थीं—उसकी आँखों और उसके बाल के रंग के समान ही यह भी उसका एक अंग बन चुका था और अपनी इन्हीं खूबियों से, उस प्रथम अनाम गोरे इंडियन डनबार से लेकर, जिसने इसका आरम्भ किया था, अब तक के सभी डनबारों की लम्बी कतार में से वह चुन लिया गया था।

किंतु यह भिन्न था। टी. वी. ए. को न मौसमों से मतलब था, न किसी कारण के प्रति उसकी दिलचस्पी थी। बादल, हवा और वर्षा के उस ढर्रे से भी उसे कोई मतलब नहीं था, जिसे एक डनबार अपना सके। और फिर भी मैथ्यू शांत बैठकर बाढ़ के पानी को इस तरह सब कुछ बहाकर ले जाने नहीं दे सकता। उसने मकान की ओर बड़े गौर से देखा। उसकी कल्पना में बाढ़ का दृश्य जैसे साकार हो उठा—जहाँ उसके बच्चे व्यस्त भाव से काम कर रहे थे, पानी धीरे-धीरे बढ़ने लगा और गिलहरी की-सी सावधानी से अपने खाने के लिए माँस की रक्षा करते हुए बच्चों को उसने अपने अंतर में छुपा लिया। नदी के चढ़ाव में पानी के साथ-साथ बहनेवाले किसी लकड़ी के समान ही पानी की लहर उन्हें अपने साथ बहा ले गयी। पानी जिधर बहता, उसी के इच्छानुसार वे भी बहते, इधर-उधर निरुद्देश्य भाव से टकराते और हाथ-पाँव फटकारते। गड्ढों में पानी जमा हो-हो कर सड़नेवाला अपनी मनमानी कर रहा था।

मैथ्यू उठ खड़ा हुआ। तब वह फिर एक-ब-एक बैठ गया। उसने स्वयं से प्रश्न किया—क्या करने का निश्चय किया आखिर? किंतु उसके करने के लिए कुछ भी शेष नहीं था। वह अब कुछ नहीं कर सकता था। वह कुटीर के दरवाजे पर बैठा था; उसके हाथ खाली थे, अब उन हाथों में उष्णता का संचार करने वाली व्हिस्की नहीं थी और उसके सामने सारी बातें अपनी नग्नता और यथार्थता में खड़ी थीं। ना, वह कुछ नहीं कर सकता था। नाक्स और जेसे जान जा चुके थे। यह बात मृत्यु के समान ही स्पष्ट थी और वह उन्हें वापस आने के लिए विवश नहीं कर सका था। जिस तरह वह सूअरों को अपने सामने हाँक कर बाड़े के भीतर बंद कर देता था, उस प्रकार वह उन्हें घाटी में ला कर उसका दरवाजा हमेशा के लिए नहीं बंद कर पाया था। वे मर्द थे; उनका अपना व्यक्तित्व था, अपनी शक्ति थी और उनकी अपनी कामनाएँ थीं। नाक्स को पैसा चाहिए था, आराम की जिंदगी चाहिए थी और उस अद्भुत निर्माण-कार्य में उसकी रुचि थी। जेसे जान अपनी पत्नी के पीछे सारी दुनिया की खाक छान रहा था। वह इस सरल सत्य पर भी विश्वास नहीं कर रहा था कि जो औरत रहना नहीं चाहती, उसे किसी भी तरीके से अपने पास नहीं रखा जा सकता। और, शीघ्र ही, आर्लिस भी उनके पीछे-पीछे चली जायेगी।

आर्लिस! उसने आर्लिस के बारे में सोचा, पुनः उठ खड़ा हुआ और वहाँ से चल कर खलिहान के सामने आ खड़ा हुआ, जिससे वह आर्लिस को साफ-साफ देख सके। वह बरतन धोनेवाली बेंच पर बैठी थी। उसके सामने अँतड़ियों से भरा टब था और उसके हाथ अँतड़ियों से चर्बी अलग करने में व्यस्त थे। किंतु मैथ्यू जानता था कि सिर्फ उसके हाथ ही काम में लगे थे, उसका दिमाग कहीं दूर था। उसका दिमाग क्रैफोर्ड गेट्स के साथ था और शीघ्र ही उसका शरीर भी दिमाग का अनुसरण करेगा। और, फिर, मैथ्यू कुछ नहीं कर सकेगा। वह औरत थी, उसका अपना व्यक्तित्व था, अपनी शक्ति थी और अपनी कामना थी।

पिछली रात उसने कहा था कि वह मैथ्यू की स्वीकृति के बिना उससे शादी नहीं करेगी। उसने इसे कहा था और दिल से कहा था और उसकी यह बात मैथ्यू के मन को इस प्रकार छू गयी थी कि वह सिर्फ "बेटी, बेटी!" ही कह सका था। फिर वह उसकी ओर से घूम पड़ा था। आर्लिस अपनी बात पर डटी भी रहेगी और यह मैथ्यू के ऊपर एक और बोझ बन जायेगा। वह यह अच्छी तरह समझ रहा था। आर्लिस ने निष्कपटतापूर्वक उसके कंधों पर अपने कौमार्य

का उत्तरदायित्व डाल दिया था और मैथ्यू जानता था कि प्रति दिन वह आलिस के इस त्याग, बंधन और कामना के बोझ के नीचे दब कर जीयेगा। "अच्छी बात है—" उसने स्वयं से उग्रतापूर्वक कहा—"वह सोचती है, मैं ऐसा नहीं कर सकता।" और एक दिन, औरत होने के नाते, प्यार किये जाने के नाते, उससे वंचित किये जाने के नाते, वह गलत कदम उठायेगी और उसे एक जारज नाती भेंट में देगी।

मैथ्यू कुटीर की ओर लौट पड़ा। उसने फिर शराब से प्याला भर लिया। लबालब भरे प्याले की ओर देखता हुआ, वह सोचता रहा। हाँ, ऐसा ही होगा। वह क्रैफोर्ड से मिलने के लिए घाटी के बाहर जायेगी। वे मोटर में साथ-साथ रहेंगे, एक दूसरे से अलग-अलग रहेंगे, एक दूसरे से चिपकेंगे और एक दूसरे से तथा स्वयं से झगड़ेंगे। वे आपस में कड़े कड़े शब्दों का प्रयोग करेंगे, मीठे बोल बोलेंगे, एक दूसरे के करीब आयेंगे और मैथ्यू की मनाही की स्मृति में एक-दूसरे से अलग-अलग हो जायेंगे। और तब यह घटित होगा। सूअर के मारे जाने और शरत् के इस ठंडे झोंके के समान ही वसंत के आगमन और उसकी प्रगति के समान ही—यह भी अपरिहार्य है! मैथ्यू तब एक जारज बालक का नाना बन जायेगा।

उसने प्याले से एक घूँट लिया और उसकी ओर देखता रहा। "मैथ्यू—" उसने खामोशी से अपने-आपसे पूछा—"क्या तुम शराब पीकर मदहोश होने जा रहे हो? क्या तुम्हारा यही इरादा है?" धीरे से उसने व्हिस्की अपने पैरों के बीच उड़ेल दी और उस कड़ी मिट्टी को, जो मनुष्य और खच्चरों के पैरों के नीचे दब-दब कर बिलकुल सख्त हो गयी थी, उसे सोखते देखता रहा। किंतु उसने व्हिस्की की तरलता को स्वयं में समेट लिया और व्हिस्की उड़ेलते-उड़ेलते, सहसा मैथ्यू को याद हो आया कि किस प्रकार जंगल की जमीन ने देखते-देखते उस व्हिस्की को सोख लिया था, जिसे उसने शीशे के बर्तनों को तोड़ कर नाक्स को उसे नष्ट कर देने के लिए बाध्य कर दिया था। एक जकड़न-सी उसने महसूस की और उसने व्हिस्की उड़ेलना बंद कर दिया। बची हुई व्हिस्की से और कुछ काम नहीं लिया जा सकता था, अतः वह उसे पी गया।

"अच्छी बात है—" उसने स्वयं से कहा—"यह संसार में पैदा होनेवाला पहला ही जारज बालक नहीं होगा—और यह फिर भी डनबार ही रहेगा। भगवान की शपथ, यह फिर भी डनबार ही रहेगा।"

किंतु इस मामले में उसकी दृढ़ता नाक्स और जेसे जान के मामले में कोई

मदद नहीं पहुँचा सकती। यह उन्हें घाटी में वापस नहीं ले आयेगी; उन्हें वापस लाने के लिए वह कोई भी रास्ता नहीं जानता था। और शीघ्र ही, अब राइस के जाने की बारी होगी। क्षण भर के लिए उसने राइस के बारे में सोचा। वह जानता था कि उसके बारे में भी यह सच है। राइस में एक प्रकार की बेचैनी घर कर गयी थी। ग्रीष्मकाल में जब उसने अपनी प्रेयसी खो दी थी, तब से ही यह बेचैनी धीरे-धीरे घनी होती जा रही थी। उसने कभी इस सम्बंध में कुछ कहा नहीं था। इसे उसने अपने भीतर बड़ी दृढ़ता से दबा रखा था; किंतु अंत में, अपने इस एकाकीपन को हल करने का मार्ग वह भी ढूँढ़ निकालेगा। अपने भाइयों के पद-चिह्नों पर चलते हुए, वह भी यह घाटी छोड़ देगा।

मैथ्यू तनकर बैठ गया। वे डनबार थे। उनमें जो डनबार होने की भावना थी, उससे इन्कार नहीं किया जा सकता। और मार्क डनबार में भी—उसके उस उग्र स्वभाववाले सगे भाई में भी यह ताब मौजूद था, जिसने रात के अंधेरे में खिड़की की राह घर छोड़ दिया था और आखिर वापस गया था, यहाँ ठहरने की उसने योजना बनायी थी और इसके लिए संघर्ष भी किया था। और वे भी—नाक्स, जेसे जान, राइस और कौनी तक—सब डनबार थे। "आसान-सी तो बात है—" उसने आश्चर्य के भाव से सोचा—"बस, घाटी को अपने अधिकार में रखो। उन्हें डनबारों से यह घाटी नहीं छीनने दो और डनबार इस घाटी में लौट आयेंगे। मुझे सिर्फ इतना ही करना है कि इसे अपने अधिकार में रखना है और प्रतीक्षा करनी है—अधिकार में रखना और प्रतीक्षा करते रहना। वे सब घर लौट आयेंगे; क्योंकि डनबार का खून उन्हें पुकारता है। जिस तरह मेरे बाध्य करने पर नाक्स द्वारा जमीन पर गिरायी गयी व्हिस्की जमीन ने सोख ली थी, उसी प्रकार डनबार का खून भी इस मिट्टी के कण-कण में समाया हुआ है।"

वह उठ खड़ा हुआ और खलिहान के दालान से होता हुआ एक किनारे चला आया। किंतु यों यह काम एक अकेले व्यक्ति के करने का नहीं है। उसे सहायता की आवश्यकता होगी और नदी के चढ़ाव तथा उतार की ओर बसे उन दूसरे व्यक्तियों से उत्तम सहायक और कौन होगा, जिन्हें उसके समान ही बेजमीन किया जा रहा था? वह उनसे बातें करेगा, उनकी बातें सुनेगा, उनके साथ योजना निर्धारित करेगा और वे दृढ़तापूर्वक मिलकर टी. वी. ए. से मुकाबला करेंगे।

वह साये में पहुँचा, जहाँ उसकी टी-माडेल मोटर खड़ी थी और उसे 'स्टार्ट' करने का प्रयास करने लगा। एंजिन ठंडा था और मोटर को 'स्टार्ट' करने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। मैथ्यू ने रोषपूर्वक एक झटका दिया और तब उसे महसूस हुआ कि मोटर ऐसे चलनेवाली नहीं है। उसे कुछ करना होगा। उसके हाथों का दबाव पा मोटर जोरों से आवाज कर जैसे अपनी अनिच्छा प्रकट करती हुई धीरे-से मुड़ी। वह 'स्टीयरिंग व्हील' के निकट आया और 'स्पार्क' तथा 'गैस' लीवरों को उसने सावधानीपूर्वक ठीक किया। फिर वह लौटा और पूरी शक्ति से झटके के साथ हैंडिल चारों ओर घुमाते हुए उसने 'एंजिन स्टार्ट' करने की कोशिश की। मोटर से घर्-घर् की आवाज हुई और तत्काल ही मर भी गयी। उसने फिर हैंडिल घुमाया, फिर घुमाया। पसीना बहने लगा और अंततः मोटर 'स्टार्ट' हो गयी और घर्-घर् की आवाज करती रही। वह दौड़ कर दूसरी ओर से 'स्टीयरिंग व्हील' के पास पहुँचा और लीवरों की ओर हाथ बढ़ाया, जिससे एंजिन के फिर बंद होने के पहले ही वह उसे उसकी खुराक पहुँचा सके।

तब वह मोटर में चढ़कर 'स्टीयरिंग व्हील' के नीचे, सीट पर बैठ गया और मोटर चलाता हुआ आँगन में आया। उसने मोटर रोक दी और उतर कर दूसरे लोगों के पास आया। "इस ताजे माँस में से कुछ बाँधकर मुझे दे दो"—वह आर्लिस से बोला—"मैं इसे अपने पड़ोसियों को देने जा रहा हूँ।"

इसमें अधिक देर नहीं लगी। कागज में लिपटे माँस के पैकेटों को उसने अपनी बगल की सीट पर रख दिया और मोटर चलाता हुआ घाटी के बाहर निकल आया। अब उसे जल्दी थी। जब से क्रैफोर्ड गेट्स अपने साथ इस घाटी में टी. वी. ए. को ले आया था, तब से पहली बार वह कुछ करने जा रहा था और उसे यह करना ही था। अगर सब एक साथ मिल जायें, अपनी जमीन बेचने से इनकार कर दें, तो वे टी. वी. ए. के विरुद्ध यह मोर्चा जीत सकते हैं—पूरे अमरीका की सरकार के विरुद्ध मोर्चा जीत सकते हैं। उसे ताज्जुब हुआ कि पहले उसने यह क्यों नहीं सोचा था और तत्काल ही, साथ-साथ उसे इसका जवाब भी मिल गया। अपनी तकलीफों को दूसरों के पास ले जाना उसके स्वभाव में शामिल नहीं था। वह हमेशा से अकेला रहा था, अकेला उसने काम किया था, अकेले ही अपनी समस्याएँ सुलझायी थीं।

पहले वह कैम्पेल ग्रिडर के पास जायेगा। वह ऊपर की ओर, बगलवाली घाटी में रहता था और वहाँ तक जाने के लिए उसे उस रास्ते से नहीं गुजरना

होगा, जिसके दोनों ओर की जमीन पिछली गर्मी में टी. वी. ए. ने साफ करवा डाली थी। घाटी के बाहर आकर उसने मोटर मोड़ी और नदीवाली सड़क पर हो लिया। नदी से सटे-सटे उसने लगभग एक-चौथाई मील का फासला तय कर लिया और उस सड़क तक पहुँच गया, जो पीछे की ओर मुड़कर एक घाटी में चली गयी थी। उसने उस सड़क पर मोड़ दी और घाटी में प्रवेश कर गया। ग्रिडर का मकान घाटी में बिलकुल पीछे की ओर था और मैथ्यू तेजी से गाड़ी हाँकने लगा। अब वह यह जानने को चिंतित हो उठा था कि उसकी बात का वहाँ कैसा स्वागत होगा!

सड़क जहाँ मुड़ी थी, वहाँ वह वृक्षों के बीच से निकलकर बाहर आ गया। तुरत ही, उसने मोटर रोक दी और वहीं बैठा-बैठा, सामने खड़ा मकान की ओर घूरता रहा। मकान खाली था। पहली नजर में ही, देखने के साथ ही, वह इसे जान गया। मकान के वातावरण में निर्जनता की वह अवर्णनीय गंध व्याप्त थी, जिससे यह प्रकट हो जाता है कि मकान में रहनेवालों का वहाँ लौटकर आने का इरादा नहीं है। पिछले कुछ सप्ताहों में ही कभी ग्रिडर-परिवार यह मकान छोड़कर चला गया था।

मैथ्यू ने मोटर फिर 'स्टार्ट' की और मकान तक जा पहुँचा। मोटर से बाहर उतरकर चारों ओर देखते हुए उसने सोचा—"कम से कम एक साल और यहाँ वे खेती कर सकते थे। मकान अधिक ऊँचा नहीं था; किंतु काफी मजबूत बना था और इस पूरी शताब्दी-भर मजे में खड़ा रह सकता था। खिड़कियों में से एक टूट चुकी थी; मकान जब खाली छोड़ दिये जाते हैं, तो बड़ी तेजी से उसकी खिड़कियाँ गायब होने लग जाती हैं। वह बरामदे की ओर बढ़ा। वह स्वयं भी नहीं जानता था कि मकान की निर्जनता की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए भला खिड़कियों से झाँक कर भीतर देखने की क्या जरूरत है! बरामदे में आकर उसने एक बिल्ली को देखा, जो मकान के बंद दरवाजे के सामने पड़ी हुई थी।

वह रुककर बिल्ली की ओर देखने लगा। वह उस बंद दरवाजे से बिलकुल सट कर अपना पूरा बदन सिकोड़ कर, गोल गेंद की तरह, सोयी हुई थी, मानो काफी समय से मकान के भीतर जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। "वे यहाँ से चले गये और इस गरीब को छोड़ दिया—" मैथ्यू ने सोचा—"कुछ ही सप्ताहों में यह बिल्ली जंगली बन जायेगी। खलिहान में इधर-उधर अनाज के लोभ में दौड़नेवाले चूहों और छोटी-छोटी चिड़ियों पर ही इसे यह कष्टसाध्य

जाड़ा गुजारना होगा। फिर खलिहान में के वे चूहे भी यहाँ से अन्यत्र चले जायेंगे। खलिहान से जब अनाज हटा लिया जाता था, तब वे हमेशा वहाँ से चले जाते थे और तब यह आगे जंगलों में पागलों के समान भोजन की तलाश में भटकेगी।"

वह अपने एक घुटने पर भार देकर झुक गया और अपना एक हाथ आगे बढ़ाते हुए उसने आवाज़ की—"यहाँ किटी, यहाँ किटी, किटी, किटी!"

मनुष्य की आवाज सुनकर बिल्ली के शरीर में हरकत पैदा हुई और उसने अपना सिर उठाकर मैथ्यू की ओर देखा। तब वह एक अजनबी को देखकर हिचकिचायी और उसने संदिग्ध तथा सतर्क भाव से अपनी पीठ सिकोड़ ली। मैथ्यू आगे की ओर झुका। उसने अपना हाथ अभी भी बढ़ा रखा था और उसे पुचकार रहा था।

"यहाँ आओ, किटी—" वह बोला—"आओ भी! चलो, हम घर चलें, किटी! तुम्हारे लिए मेरे खलिहान में बहुत-से चूहे हैं, किटी!"

उसकी आवाज धीमी और मधुर थी। बिल्ली ने उसकी ओर गौर से देखा और तब तक देखती रही, जब तक मैथ्यू का हाथ उसे एक प्रकार से छून न लग गया। वह उसके हाथ के नीचे सिकुड़ गयी और उछली और गुर्राती हुई, बरामदे के दूसरे किनारे की ओर भागी। मैथ्यू खड़ा हो गया। क्षण भर तक वह उसकी ओर असंतुष्ट भाव से देखता रहा और फिर उसने खिड़की से होकर भीतर झाँका। मकान खाली-निर्जन था और वहाँ निस्तब्धता व्याप्त थी।

वह बरामदे से उतर कर अपनी मोटर तक पहुँचा और भीतर बैठ गया। उसने मोटर 'स्टार्ट' की और वहाँ की निस्तब्धता में उसकी आवाज़ गूंज उठी। "वे कम-से-कम बिल्ली को तो अपने साथ ले गये होते—" वह जोर से बोल पड़ा, जैसे उसके इस तरह बोलने से कुछ होने ही वाला हो! उसने अपनी गाड़ी मोड़ दी और घाटी से बाहर कंकरीली सड़क की ओर चल पड़ा। ग्रिडर-परिवार के चले जाने से उसे दुःख हो रहा था, मानो स्वयं उसकी शक्ति, उसके स्थायित्व में से कुछ चला गया हो। उसने अपने दाँत एक-दूसरे पर बैठा लिये और नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर, अन्य व्यक्तियों की तलाश में चल पड़ा।

पूरे पाँच मिनिटों तक वह स्थिर भाव से मोटर चलाता रहा। उसका सिर 'स्टीयरिंग व्हील' पर झुका हुआ था। जमीन अब चौरस हो गयी थी और वह जानता था कि अगला मकान हाज-परिवार का था। नदी के किनारे से एक

सड़क उस चौरस जमीन में चली गयी थी और उसने उस सड़क पर अपनी गाड़ी मोड़ दी। किंतु मकान तक जानेवाले उस सँकरे रास्ते पर उसने अपनी मोटर नहीं मोड़ी। बस, उसने मोटर रोक दी और मकान की ओर देखता रहा। एक बड़े पेड़ के साये में वह लम्बा, पुराना और दोमंजिला मकान था। मकान के पीछे खलिहान थे; लेकिन उनकी हालत अच्छी नहीं थी। हाज-परिवार काफी बड़ा था; किंतु मैथ्यू मोटर में बैठे-बैठे यहीं से कह सकता था कि आँगन और मकान दोनों खाली थे। चिमनियों से धुआँ चक्कर काटता हुआ ऊपर की ओर नहीं उठ रहा था और खलिहानों में मवेशी नहीं नजर आ रहे थे।

उसने कार वापस मोड़ी और अपने घर की ओर चल पड़ा। अभी भी वह उग्र और दृढ़ भाव से गाड़ी चला रहा था। उसने अपनी बगल में उन पैकेटों को देखा, जिसमें ताजे माँस लपेटे हुए थे। वह सोच रहा था कि अब उसका कोई ऐसा पड़ोसी भी नहीं रहा, जिसके साथ वह इस ताजे माँस में हिस्सा बटा सके—अपने सुख की घड़ियों में उसे भी शामिल कर सके। वे चले गये थे; टी. वी. ए. द्वारा वहाँ से चले जाने के लिए बाध्य किये जाने के पहले ही वे चले गये थे। पानी के विस्तार से बचने के लिए पहले ही वे रहने के लिए नयी जगहों की तलाश में चले गये थे।

अपनी घाटी के भीतर जानेवाले रास्ते को पार करता हुआ, बिना उसकी ओर देखे, वह गाड़ी आगे बढ़ा ले गया। वह दूसरी ओर रहनेवाले शेल्टन-परिवार के पास जा रहा था। टी. वी. ए. के कर्मचारियों ने गर्मी के दिनों में यहाँ काफी दूर तक की जमीन साफ कर दी थी और जमीन बिलकुल नंगी, उदास और बेआसरा नजर आ रही थी। जमीन में चारों ओर ठूँठ खड़े थे—नंगे और निर्जीव ठूँठ। मैथ्यू ने उस ओर देखा और उसकी नग्नता—उसका यों आवरणहीन होना, उसके भीतर चोट पहुँचा गयी। "वे सारी जमीन को ऐसी ही बना देनेवाले हैं—" उसने सोचा—"सारी हरीतिमा को यहाँ से हटा देने से क्या विकास हो गया यहाँ! वे कुछ भी कहें, मैं इसे नहीं मानता!"

जब वह शेल्टन की घाटी में घुसा, तो वृक्षों के ऊपर आकाश की ओर उठता धुआँ उसे दिखायी दे गया और वह प्रसन्न हो उठा। कम से कम वे लोग अभी तक यहीं थे। आखिर कोई और यहाँ छूट गया था। उसने अपनी पुरानी मोटर की रफ्तार तेज की और मोटर जोरों से खड़खड़ करती हुई दौड़ने लगी।

वह प्रसन्नतापूर्वक गाड़ी चलाता हुआ मकान तक पहुँच गया। मकान में रहने वालों ने उसके आने की आवाज सुन ली थी। और जब तक मकान तक पहुँच कर उसने गाड़ी रोकी, शेल्टन बाहर बरामदे में खड़ा था। मैथ्यू मोटर से बाहर कूद पड़ा।

"अच्छा, अच्छा, मि. शेल्टन!" वह बोला—"मैं देख रहा हूँ, आप अभी तक यहीं हैं।"

"आप कैसे हैं, मि. डनबार—" शेल्टन ने कहा—"कैसी तबीयत है आपकी?"

"अच्छा हूँ, अभी!" मैथ्यू ने उल्लासपूर्वक कहा। वह जबरन हँसा—"बिलकुल तुरत ही मारे गये सूअर का थोड़ा-सा माँस मैं अपने पड़ोसियों को देने निकला था। लेकिन ऐसा लग रहा है, जैसे पड़ोसी कोई रह ही नहीं गये हैं।"

उत्तर में शेल्टन ने अपना सिर हिलाया। "लोग यहाँ से अन्यत्र जा रहे हैं—" वह बोला—"अभी पिछले सप्ताह ही मैंने ग्रिडर-परिवार को जाते देखा।

"हाँ—" मैथ्यू ने कहा—"कुछ ही देर पहले मैं वहाँ था। वे अपने पीछे अपनी बिल्ली वहाँ छोड़ गये हैं।" उसने उसकी ओर देखा। "लोग अपने पीछे काफी चीजें छोड़ कर जा रहे हैं—" वह बोला—"जितना वे समझते हैं, उससे कहीं अधिक।" उसने वापस शेल्टन की ओर देखा—"हम लोग जो बच गये हैं, हमें उनसे संघर्ष करना है, मि. शेल्टन! यहाँ आ कर, हम अपने साथ उन्हें यह सब नहीं करने देंगे।"

शेल्टन ने अपना सिर घुमा लिया—"संघर्ष करने की कोई जरूरत नहीं है, मि. डनबार! वे उचित मूल्य दे रहे हैं।"

मैथ्यू आगे बढ़ते-बढ़ते रुक गया—"डनबार की जमीन के लिए कोई भी मूल्य उचित नहीं है। मैंने उनसे यह कह दिया है।"

शेल्टन उसकी ओर देखता रहा—"मैंने सुना है कि आपका सबसे बड़ा लड़का वहाँ बाँध पर काम कर रहा है। कैसा कमा रहा है वह?"

मैथ्यू फिर रुक गया। उसने शेल्टन की ओर देखा। उसने उसके भीतर एक रुखाई-सी महसूस की थी; लेकिन अब तक उसने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। शेल्टन लम्बा-तगड़ा और मित्रवत् व्यवहार करनेवाला व्यक्ति था। यहाँ तक कि उसकी नीची आँखों और श्वेत मूँछों में भी मैत्री की झलक थी।

किंतु आज वह रुखा और ऊपर से विनम्र था। और वह तथा मैथ्यू वर्षों से पड़ोसी थे।

"अच्छी बात है—" मैथ्यू ने सोचा—"हमें पहले अपने बीच से यह रुखाई दूर करनी होगी।"

"मि. शेल्टन!" वह बोला—"कौनी ने आपके पास अपना कोई समाचार भेजा है?"

"नहीं!" शेल्टन ने संक्षिप्त जवाब दे दिया—"एक शब्द भी नहीं!"

मैथ्यू उसके निकट खिसक आया! "मैंने भी कोई समाचार नहीं पाया है उसका।" वह बोला—"आप जानते हैं, जेसे जान उसकी तलाश में गया है। अभी तक उसने भी कोई समाचार नहीं भेजा है।" उसने अपना सिर हिलाया—"वे दोनों अपनी मुसीबतों आप सह लेंगे, मि. शेल्टन! मैं सिर्फ यह उम्मीद-भर ही कर सकता हूँ कि जेसे जान उसे ढूँढ़ निकालेगा और घर वापस ले आयेगा।"

शेल्टन के चेहरे पर शर्म उभर आयी। "मैं नहीं जानता, उसे क्या हो गया—" वह कर्कशतापूर्वक बोला—"इस तरह दूसरे आदमी के साथ भाग जाना। मैंने उसे इसलिए नहीं पाल-पोसकर बड़ा..."

मैथ्यू ने उसके शरीर पर अपना हाथ रख दिया। "उसके दिल में क्या था, यह हम नहीं जान सकते थे, जान!" उसने शांतिपूर्वक कहा—" मैं उसे दोषी नहीं ठहराता इसके लिए—और तुम्हें भी ऐसा नहीं करना चाहिए।"

शेल्टन ने उसकी ओर कृतज्ञता-भरी दृष्टि से देखा।

"मुझे पहले ही आकर आपसे इस सम्बंध में बातें करनी चाहिए थी—" मैथ्यू बोला। वह क्षण भर के लिए हँसा—"मेरा खयाल है, मैं अपनी पुरानी घाटी में ही इतना बैठा रहता हूँ कि मैं अड़ोस-पड़ोस को भी भूलता जा रहा हूँ। मुझे आ कर कह जाना चाहिए था कि तुम्हारी बेटी मेरे बेटे को छोड़ कर, दूसरे के साथ जो भाग गयी है, उसके लिए डनबार की घाटी में कोई तुमसे रुष्ट नहीं है। जन्म और मौत के समान ही हमारे जीवन में घटनेवाली घटनाओं में एक घटना यह भी है।"

अपनी श्वेत मूँछों के नीचे शेल्टन मुस्कराया—"तुमसे यह कहने में मुझे कोई एतराज नहीं है कि—" वह बोला—"तुम्हें उस सड़क पर से अपनी मोटर में आते देखकर मुझे बड़ा नागवार लगा। मैंने सोचा, तुम मुझे झिड़कियाँ देने आ रहे हो कि मैंने अपनी बच्ची को किस तरह पाला-पोसा था।"

मैथ्यू ने उसकी ओर से नजरें हटा कर दूर कहीं देखा—"मेरा खयाल है, मैंने भी अपने पालन-पोषण में भूल की, जान!" वह रुक गया और उसने दोनों के बीच से यह भावना बिलकुल निकल जाने दी—"मैं तुम्हारे लिए कुछ ताजा माँस लाया हूँ।"

वह मोटर तक गया ओर एक पैकेट उसने उठा लिया। फिर उसने दूसरा पैकेट भी उठाया और दोनों हाथ में एक-एक पैकेट लिये वापस आया। "पड़ोसी कम होते जा रहे हैं, सो माँस का परिमाण बढ़ता जा रहा है—" वह बोला और फिर हँस पड़ा। शेल्टन भी उसके साथ हँसा। मैथ्यू कहता गया—"मेरे विचार से मुझे घर वापस चल देना चाहिए।" उसने सूरज की ओर देखते हुए समय का अंदाज लगाया—"शीघ्र ही रात के खाने का समय हो जायेगा और अंधेरा होने के बाद काफी ठंड पड़नेवाली है।"

"माँस लाने के लिए मैं आभारी हूँ—" शेल्टन ने कहा—"रविवार के दिन महीने में काफी दिनों से सुअर का बढ़िया माँस नहीं मिला था।"

"मि. शेल्टन!" मैथ्यू ने सावधानीपूर्वक कहा—"अपने जमीन के बारे में क्या करने का इरादा है आपका!"

ताजे माँस के उन दो पैकेटों को अपने हाथ में लिए शेल्टन खड़ा रहा। "मैंने तो कागजों पर दस्तखत कर दिये—" वह बोला—"मैं यहाँ अपनी एक फसल और उगानेवाला हूँ—उन्होंने कहा है, मैं ऐसा कर सकता हूँ। किंतु मैंने कागजों पर हस्ताक्षर भी कर दिये हैं।"

"खैर!" मैथ्यू बोला। उसने अपने पैर हिलाये—"मि. शेल्टन! कभी वहाँ आकर हम लोगों से मिलिये न!"

"आप फिर आइये—" शेल्टन ने पीछे से पुकार कर कहा—"और परिवार के और लोगों को भी लेते आइये।"

अब, जब कि औपचारिकता कायदे से निभा दी गयी थी, मैथ्यू वहाँ से जल्दी चला जाना चाहता था। किंतु इसके विपरीत, मोटर का एंजिन ठंडा हो गया था और वह मोटर 'स्टार्ट' नहीं कर सका। उसके साथ वह पूरे पाँच मिनटों तक उलझता रहा और तब कहीं एंजिन 'स्टार्ट' हुआ। शेल्टन बेवकूफों के समान खड़ा चुपचाप देखता रहा।

अंततः मैथ्यू को अपने प्रयास में सफलता मिल गयी और वह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। उसने शेल्टन की ओर देखकर हाथ हिलाया। कुछ और कहने के लिए वह मन-ही-मन तलाश कर रहा था। मोटर चलने की शोरगुल को अपनी

आवाज से दबाते हुए वह बोला—"हम लोगों से मिलने वहाँ आइयेगा।"

"आप एक बार और आइये—" शेल्टन ने पुकार कर कहा और तब मैथ्यू वहाँ से जा चुका था।

"मैं सिर्फ इतना ही कर सकता हूँ कि—" मैथ्यू ने सोचा—"कोशिश करता रहूँ।" घर जाने के बजाय वह नदी के उतार की ओर घाटियों की तलाशी लेने चल पड़ा। पहली घाटी में कोई नहीं था—मकान में यहाँ भी निर्जनता व्याप्त रही थी। उसके नीचे की दूसरी घाटी खाली थी और बादवाली भी! अब चूँकि लोगों को वहाँ से जाना ही था, सो वे जल्दी-जल्दी चले जा रहे थे, यद्यपि अभी साल-भर वे वहाँ और रह सकते थे। क्रैफोर्ड की बातें सुन कर उसने सोचा था कि वस्तुतः कोई खास बात अभी नहीं घटित हुई है। किंतु जैसा उसने सोचा था, उससे अधिक तेजी से परिवर्तन होता जा रहा था। अगले मकान में लोग अभी थे, किंतु कोल्स्टन घर पर नहीं था। उसकी बीबी ने मैथ्यू को बताया कि कोल्स्टन बाँध पर काम कर रहा था। पूरी गरमी-भर वह वहाँ काम करता रहा था, जब कि इधर उसके बेटों ने फसल उगा ली थी। मकान की बगल में एक नयी मोटर खड़ी थी।

मैथ्यू वापस लौटा और पुल पार कर, दूसरी ओर नदी के चढ़ाव की ओर बढ़ने लगा। इस ओर रहनेवाले व्यक्तियों को वह उतनी अच्छी तरह नहीं जानता था, जितनी अच्छी तरह वह अपनी ओर रहनेवाले व्यक्तियों को जानता था। क्योंकि नदी उनके बीच एक विभाजन-रेखा के समान थी। सूरज नीचे उतरता जा रहा था; किंतु मैथ्यू अपनी मोटर में आगे बढ़ता ही गया। वह बारी-बारी से प्रत्येक घाटी में जाकर देख ले रहा था। पहली घाटी बसी हुई थी। वहाँ एक युवक रहता था और वह जब मैथ्यू के पहुँचने पर दरवाजे के पास आया, तो तीन छोटे-छोटे बच्चे उसकी पतलून को पकड़ कर उसके पैरों से लिपटे हुए थे। नहीं, अभी तक उसने अपनी जमीन नहीं बेची थी। हाँ, वह उसे बेचने का इरादा रखता था। उसे उम्मीद थी कि अगली गरमी में उसे बाँध पर काम मिल जायेगा। काफी अच्छे पैसे मिल रहे थे। मैथ्यू ने उसे माँस का एक पैकेट दिया और गाड़ी आगे बढ़ा ले चला।

बाद वाली घाटी में वायलिन-वादक प्रेसाइज का भाई वाल्टर प्रेसाइज रहता था। वह बूढ़ा और कृशकाय था। मैथ्यू उससे कुछ देर तक बड़े आराम से बातें करता रहा। वह सर्दी आरम्भ होने की बातें कर रहा था और मैथ्यू उससे अपने सूअर मारने के बारे में बताता रहा। तब उसने टी. वी. ए. के बारे में पूछा।

मैथ्यू ने उसकी ओर से नजरें हटा कर दूर कहीं देखा—"मेरा खयाल है, मैंने भी अपने पालन-पोषण में भूल की, जान!" वह रुक गया और उसने दोनों के बीच से यह भावना बिलकुल निकल जाने दी—"मैं तुम्हारे लिए कुछ ताजा माँस लाया हूँ।"

वह मोटर तक गया और एक पैकेट उसने उठा लिया। फिर उसने दूसरा पैकेट भी उठाया और दोनों हाथ में एक-एक पैकेट लिये वापस आया। "पड़ोसी कम होते जा रहे हैं, सो मॅांस का परिमाण बढ़ता जा रहा है—" वह बोला और फिर हँस पड़ा। शेल्टन भी उसके साथ हँसा। मैथ्यू कहता गया—"मेरे विचार से मुझे घर वापस चल देना चाहिए।" उसने सूरज की ओर देखते हुए समय का अंदाज लगाया—"शीघ्र ही रात के खाने का समय हो जायेगा और अंधेरा होने के बाद काफी ठंड पड़नेवाली है।"

"माँस लाने के लिए मैं आभारी हूँ—" शेल्टन ने कहा—"रविवार के दिन महीने में काफी दिनों से सूअर का बढ़िया माँस नहीं मिला था।"

"मि. शेल्टन!" मैथ्यू ने सावधानीपूर्वक कहा—"अपने जमीन के बारे में क्या करने का इरादा है आपका!"

ताजे माँस के उन दो पैकेटों को अपने हाथ में लिए शेल्टन खड़ा रहा। "मैंने तो कागजों पर दस्तखत कर दिये—" वह बोला—"मैं यहाँ अपनी एक फसल और उगानेवाला हूँ—उन्होंने कहा है, मैं ऐसा कर सकता हूँ। किंतु मैंने कागजों पर हस्ताक्षर भी कर दिये हैं।"

"खैर!" मैथ्यू बोला। उसने अपने पैर हिलाये—"मि. शेल्टन! कभी वहाँ आकर हम लोगों से मिलिये न!"

"आप फिर आइये—" शेल्टन ने पीछे से पुकार कर कहा—"और परिवार के और लोगों को भी लेते आइये।"

अब, जब कि औपचारिकता कायदे से निभा दी गयी थी, मैथ्यू वहाँ से जल्दी चला जाना चाहता था। किंतु इसके विपरीत, मोटर का एंजिन ठंडा हो गया था और वह मोटर 'स्टार्ट' नहीं कर सका। उसके साथ वह पूरे पाँच मिनटों तक उलझता रहा और तब कहीं एंजिन 'स्टार्ट' हुआ। शेल्टन बेवकूफों के समान खड़ा चुपचाप देखता रहा।

अंततः मैथ्यू को अपने प्रयास में सफलता मिल गयी और वह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। उसने शेल्टन की ओर देखकर हाथ हिलाया। कुछ और कहने के लिए वह मन-ही-मन तलाश कर रहा था। मोटर चलने की शोरगुल को अपनी

आवाज से दबाते हुए वह बोला—"हम लोगों से मिलने वहाँ आइयेगा।"

"आप एक बार और आइये—" शेल्टन ने पुकार कर कहा और तब मैथ्यू वहाँ से जा चुका था।

"मैं सिर्फ इतना ही कर सकता हूँ कि—" मैथ्यू ने सोचा—"कोशिश करता रहूँ।" घर जाने के बजाय वह नदी के उतार की ओर घाटियों की तलाशी लेने चल पड़ा। पहली घाटी में कोई नहीं था—मकान में यहाँ भी निर्जनता व्याप्त रही थी। उसके नीचे की दूसरी घाटी खाली थी और बादवाली भी! अब चूँकि लोगों को वहाँ से जाना ही था, सो वे जल्दी-जल्दी चले जा रहे थे, यद्यपि अभी साल-भर वे वहाँ और रह सकते थे। क्रैफोर्ड की बातें सुन कर उसने सोचा था कि वस्तुतः कोई खास बात अभी नहीं घटित हुई है। किंतु जैसा उसने सोचा था, उससे अधिक तेजी से परिवर्तन होता जा रहा था। अगले मकान में लोग अभी थे, किंतु कोल्स्टन घर पर नहीं था। उसकी बीबी ने मैथ्यू को बताया कि कोल्स्टन बाँध पर काम कर रहा था। पूरी गरमी-भर वह वहाँ काम करता रहा था, जब कि इधर उसके बेटों ने फसल उगा ली थी। मकान की बगल में एक नयी मोटर खड़ी थी।

मैथ्यू वापस लौटा और पुल पार कर, दूसरी ओर नदी के चढ़ाव की ओर बढ़ने लगा। इस ओर रहनेवाले व्यक्तियों को वह उतनी अच्छी तरह नहीं जानता था, जितनी अच्छी तरह वह अपनी ओर रहनेवाले व्यक्तियों को जानता था। क्योंकि नदी उनके बीच एक विभाजन-रेखा के समान थी। सूरज नीचे उतरता जा रहा था; किंतु मैथ्यू अपनी मोटर में आगे बढ़ता ही गया। वह बारी-बारी से प्रत्येक घाटी में जाकर देख ले रहा था। पहली घाटी बसी हुई थी। वहाँ एक युवक रहता था और वह जब मैथ्यू के पहुँचने पर दरवाजे के पास आया, तो तीन छोटे-छोटे बच्चे उसकी पतलून को पकड़ कर उसके पैरों से लिपटे हुए थे। नहीं, अभी तक उसने अपनी जमीन नहीं बेची थी। हाँ, वह उसे बेचने का इरादा रखता था। उसे उम्मीद थी कि अगली गरमी में उसे बाँध पर काम मिल जायेगा। काफी अच्छे पैसे मिल रहे थे। मैथ्यू ने उसे माँस का एक पैकेट दिया और गाड़ी आगे बढ़ा ले चला।

बाद वाली घाटी में वायलिन-वादक प्रेसाइज का भाई वाल्टर प्रेसाइज रहता था। वह बूढ़ा और कृशकाय था। मैथ्यू उससे कुछ देर तक बड़े आराम से बातें करता रहा। वह सर्दी आरम्भ होने की बातें कर रहा था और मैथ्यू उससे अपने सूअर मारने के बारे में बताता रहा। तब उसने टी. वी. ए. के बारे में पूछा।

"देखो, मुझे वे लोग कुछ अधिक अच्छे नहीं लगे—" वाल्टर प्रेसाइज ने गम्भीरतापूर्वक सोचते हुए कहा—"किंतु कोई फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट और पूरी सरकार से नहीं लड़ सकता।" जब टी. वी. ए. वाले उसके पास कागजात लेकर आये और उसे जगह खाली कर देने के लिए कहा, उसने कह दिया कि वह जगह खाली कर देगा, यद्यपि उसने अपनी पूरी जिंदगी यहीं बिता दी है और उसके पिता की जिंदगी भी यहीं गुजरी थी।

"अब मेरे उस भाई को ही देखो—" वाल्टर ने कटुता से कहा—"उसे सिर्फ वायलिन की ही चिंता है। जमीन में फसल उगाने और पैसा कमाने की ओर वह ध्यान नहीं देगा। किंतु वह एक ऊँची पहाड़ी पर रहता है, जहाँ कि पानी उसे छू भी नहीं सकता।"

मैथ्यू ने माँस का पैकेट दे दिया और जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते लौट चला। सूरज अब बिलकुल डूब-सा चुका था और रात्रि-आगमन की सूचना देनेवाली ठंडी हवा बहने लगी थी। मैथ्यू सिहरन महसूस कर रहा था। आगे जाने में कोई लाभ नहीं था। उसके पास माँस के दो पैकेट बच गये थे; किंतु नजदीक में ऐसा कोई व्यक्ति और नहीं था, जिसे वह अच्छी तरह जानता हो और उसे माँस का पैकेट दे सके। उसने पुल पार किया और अपने घर की ओर मोटर चलाने लगा। वह फिर धीरे-धीरे मोटर चला रहा था। जहाँ जमीन एक सीध में साफ कर दी गयी थी, वह वहाँ पहुँचा और उस नंगे रास्ते से मोटर हाँकने लगा। बीच में पहुँचकर उसने एक झटके से मोटर रोक दी और अपनी चारों ओर देखा।

"टी. वी. ए. वालों को इन ठूँठों से छुटकारा पाना होगा। सम्भवतः अगली गरमी में वे डायनामाइट से इसे यहाँ से उखाड़ते रहेंगे—" उसने उदासीन भाव से सोचा—"जिससे प्रत्येक विस्फोट के साथ लोग बुरी तरह भयभीत हो उठें।" उसने अपनी बाँहों में अपना मुँह छिपा लिया, जिससे शरत् काल और मनुष्य द्वारा निर्मित यह निर्जनता उसे नहीं देखनी पड़े। वह एक सूनापन, जीर्णता, थकान और निरर्थकता का अनुभव कर रहा था। वह वहाँ तब तक बैठा रहा, जब तक कि ठंड से उसकी देह सिहर कर अकड़ने नहीं लगी। जिन पुराने मकानों को उसने आज देखा था, वह स्वयं भी मानो उन्हीं के समान था—निर्जन और निर्जीव—उसकी उम्मीद की चिमनी से धुआँ ऊपर नहीं निकल रहा था। और व्हिस्की की उष्णता और संघर्ष की भावना ले वह कितनी बहादुरी से अपनी घाटी से बाहर निकला था कि वह अपने पड़ोसियों को संगठित कर अपना पक्ष सबल कर लेगा।

अंततः उसने अपना सिर ऊपर उठाया। वह सोच रहा था कि अब उसे वहाँ से चल देना चाहिए। उसने एक झटके और बड़ी तेजी से मोटर आगे बढ़ायी और अपने चारों ओर जानबूझ कर नजरें दौड़ायीं। वह उस निर्जनता पर बलपूर्वक अपनी आँखें ठहराने का प्रयास कर रहा था। उन सभी खाली घाटियों तक शीघ्र ही यह निर्जनता व्याप्त हो जायेगी और जहाँ-जहाँ पानी जायेगा, वहाँ-वहाँ तक यह फैलती जायेगी। और वह कुछ भी नहीं कर सकता था। कुछ भी नहीं! अगर उसने अपनी घाटी अपने पास ही रखी, तो अंततः उसके लड़के वापस आ जायेंगे; क्योंकि वे डनबार थे और उन्हें वापस आना ही होगा। कोई दूसरी जमीन उन्हें अपनी ओर नहीं खींच सकती; क्योंकि किसी दूसरी जमीन में डनबार का खून नहीं मिलता था। किंतु उनके लौटने के समय तक वह घाटी अपने अधिकार में ही नहीं रख सकता था।

उसने रोषपूर्वक कस कर अपना मुँह बंद कर लिया। उसका कोई पड़ोसी नहीं था। उसे यह अकेले ही करना पड़ेगा। उसने अपने सारे काम हमेशा अकेले किये हैं—वह सिर्फ स्वयं पर निर्भर रहता आया है और सम्भव है, एक नये रास्ते पर चलने—मदद के लिए अपने पड़ोसियों पर निर्भर रहने—के लिए काफी देर हो चुकी हो।

उसने फिर मोटर 'स्टार्ट' की। जब तक वह घर पहुँचकर अपने रात के काम निबटायेगा, चारों ओर अंधेरा हो जायेगा और ठंड पड़ने लगेगी। उसके बाद वे खाने की मेज की चारों ओर जमा होंगे। गर्म रसोईघर में सूअर का माँस पकने की गंध फैली रहेगी और वे उष्णता अनुभव करते हुए बेतकल्लुफी से बातें करेंगे। फिर ताजे-ताजे मारे गये सूअरों के माँस की शानदार दावत होगी। उनकी उँगलियों और मुँह में तेल चपचपा जायेगा, पेट में बढ़िया खाना होगा और वे मुस्करायेंगे, हँसेंगे—उसी प्रकार, जिस प्रकार, बढ़िया खाना खानेवाले लोग हमेशा किया करते हैं। यह फसल काटने का समय था; यह सूअर मारने का समय था; यह हेमंत का मौसम था।

फिर भी, सिर्फ सोचने, प्रयास करने और उम्मीद सँजोने के सिवा वह कुछ नहीं कर सकता था। प्रतीक्षा करने के अलावा कोई राह नहीं थी और जब तक सम्भव होगा, वह दृढ़तापूर्वक, मन में उदासी छिपाये डटा रहेगा। किंतु आज रात खाने के समय जब कि सूअर के माँस की दावत होगी, वे सब-कुछ भूल कर ँसेंगे—बातें करेंगे।

दृश्य दस

क्रिसमस की सुबह लड़के घर आ गये।

हैटी अभी भी उस सुबह उठ कर घर का काम सँभालने के लिए काफी छोटी थी। हमेशा की भांति उस बड़े रहनेवाले कमरे में ही उन्होंने 'क्रिसमस ट्री' (बड़े दिनों का त्यौहार मनाते समय लगाया जानेवाला वृक्ष) लगाया था और रात में मैथ्यू फल, बदामों और कैंडी के सम्बंध में लुभावनी बातें की थीं। क्रिसमस के समय यह हमेशा इस घर के लिए एक नवीनता होती थी। सिर्फ इसी दिन डनबार-घाटी में विदेशों से आनेवाले फल-मेवा आते थे—नारंगी और बड़े-बड़े संतरे, पिपरमिंट लगी हुई कैंडी (एक प्रकार की मिठाई), कागज में लिपटे अखरोट और इसी प्रकार के अन्य फल व मेवा! बिलकुल तड़के ठंडी हवा सिहराती हुई बह रही थी और मकान भी उस वक्त तक गर्म नहीं हो पाया था; क्योंकि अंगीठी नहीं जलायी गयी थी। मकान के भीतर सब बड़े उत्साह से 'क्रिसमस-ट्री' के इर्द गिर्द घूम रहे थे। आनंद और उछाह से वे उत्तेजित थे और आपस में हँसी-मजाक करते हुए ठहाके लगा रहे थे, चिल्ला रहे थे। सबके लिए क्रिसमस-उपहार थे। हैटी के लिए छोटे-छोटे ब्रेसियर और कपड़े थे; मैथ्यू के लिए गर्म दस्ताने और सिगरेटों का डब्बा था और आर्लिस के लिए कंघी और ब्रश का सेट था तथा मैथ्यू के बूढ़े पिता के लिए गर्म कपड़े थे [इसके अलावा, उसे किसी चीज की न जरूरत थी, न इच्छा—सिवा अपने फेंफड़ों में ताजी हवा के और कोई सांता-क्लास (अंग्रजों की मान्यता के अनुसार एक स्वस्थ-मोटा-ताजा वृद्ध पुरुष, जो बड़े दिन में बच्चों के लिए उपहार लाता है।) उसे वह नहीं दे सकता था]। राइस के लिए स्कार्फसहित उजली पोशाक थी। क्रिसमस मनाने का उन लोगों का यही तरीका था। वे उपहारों का आदान-प्रदान नहीं करते थे; सिर्फ उन्हें उपहार मिलते थे। सब के उपहारों का चुनाव मैथ्यू ने किया था, सिवा अपनी चीजों का और मैथ्यू की चीजें खरीदने के लिए आर्लिस उसके

साथ बाजार गयी थी। क्रिसमस-दिन का आरम्भ हो चुका था तथा बच्चों की हँसी-खुशी और आश्चर्य-मिश्रित चीखों के बीच मैथ्यू अंगीठी की ओर पीठ करके खड़ा उन्हें निहार रहा था। साथ ही, वह अपनी हथेलियों के बीच दो अखरोट भी तोड़ता जा रहा था। तभी उसने घाटी में प्रवेश करती किसी अपरिचित मोटर की आवाज सुनी। वह उसे सुनता रहा और उसे ताज्जुब हो रहा था कि यह किसकी मोटर हो सकती है। तब तक बाकी लोगों ने भी मोटर की आवाज सुन ली। वे सब मैथ्यू की ओर घूम पड़े, मानो वह जानता हो कि कौन आ रहा है। मैथ्यू के दिल में जो भावना उठ रही थी वही उनके दिल में भी उठ रही थी और उनके चेहरों पर भी मैथ्यू के समान ही आश्चर्य और विश्वास उभर रहा था।

"नहीं—" मैथ्यू बोला—"यह वह नहीं हो......"

बोलते-बोलते वह दरवाजे तक पहुँच गया था और उसके बाहर चले जाने से बात अधूरी ही रह गयी। सामने की आँगन में मोटर रुक रही थी और नाक्स ड्राइवर की सीट से बाहर उतर रहा था। उसके चौड़े चेहरे पर हर्ष की मुस्कान थी और वह चिल्लाया—"क्रिसमस-भेंट, पापा। क्रिसमस-भेंट।"

"ओह, भगवान्।" मैथ्यू ने काँपते हुए स्वर में कहा—"इस बार तुम मेरे लिए क्रिसमस-भेंट लेकर आये हो, ओह, भगवान्......" उसने नाक्स को गले लगा लिया और अपनी पीठ पर नाक्स के हाथों की थपथपाहट अनुभव करता रहा। बाकी लोग भी घर के भीतर से दौड़ते चले आ रहे थे।

नाक्स ने हैटी को गोद में उठाकर हवा में उछाल दिया और मैथ्यू मोटर की दूसरी ओर से धीरे-धीरे उतरते हुए जेसे जान को देखता रहा। अनिच्छा-पूर्वक मैथ्यू ने जेसे जान की उस ओर देखा कि कौनी भी है या नहीं; किंतु कौनी नहीं थी और तत्काल ही अपने दिमाग से उसका विचार दूर ढकेल दिया।

"जेसे जान!" वह बोला! उन्होंने मुस्कराते हुए एक-दूसरे से हाथ मिलाये और मैथ्यू ने अपने दूसरे हाथ से स्नेहपूर्वक उसके कंधे पर मारा।

"हम लोगों को घर के भीतर चलना चाहिए—" नाक्स आँगन में धमाचौकड़ी मचाते हुए चिल्लाया—"बाहर ठंड है, मेरी मानों, बाहर ठंड है!"

वह तेजी से मोटर के निकट पहुँचा। उसका पिछला दरवाजा उसने खोल दिया। पिछली सीट पर पड़े हुए पैकेटों को वह बेतरतीबी से जल्दी-जल्दी उठाने लगा। "हर व्यक्ति के लिए क्रिसमस-सौगात है—" वह बोला—"यहाँ के किसी भी व्यक्ति को नहीं भूला मैं—सिवा उस 'बेढंगे जान' के—

वही खच्चर, जिसे मैं जोता करता था। वहाँ जाकर जितनी जल्दी मैं उसे भूल सकता था, भूल गया!"

वह मोटर के अगले हिस्से की ओर आया और वहाँ जैसे जान उसके भार में हाथ बँटाने के लिए आ गया। अपने उस हाथ से, जो खाली था, नाक्स ने मोटर का फेंडर थपथपाया।

"निश्चय ही, मैं अपने इरादे भी नहीं भूला। इसे एक नजर देखो तो!"

सब चुप लगा गये। मोटर की ओर देखते हुए मन-ही-मन वे उसके बारे में सोच रहे थे। मोटर बिलकुल नयी फोर्ड थी। उसके नये होने की चमक दिखायी दे रही थी और उस पुराने मकान की बगल में वह बड़ी अद्‌भुत-सी लग रही थी।

मैथ्यू हँसा। "टी-मोडल के सिवा मैंने कभी दूसरी मोटर नहीं चलायी—" वह बोला—"वे तुम्हें वहाँ काफी अच्छे पैसे दे रहे होंगे, बेटे!"

नाक्स मुस्कराया। "अभी इसकी कीमत नहीं दी गयी है—" उसने रहस्य प्रकट कर दिया—"बस, थोड़ी-सी रकम दी गयी है और बाकी रकम हर माह किश्त में चुका दी जायेगी, जब तक कि पूरी कीमत अदा नहीं हो जाती। यह नयी चीज है—मोटर आप काम में लाते रहिये और कीमत चुकाते रहिये।" उसने फिर फेंडर को थपथपाया—"किंतु यह मेरी है—यह बिलकुल मेरी है।"

वे घर के भीतर होकर वहाँ से गर्म रसोईघर में चले आये और नाक्स ने मेज पर अपने हाथ के पैकेट पटक दिये। उसने उपहासजनक हास्य से उन्हें इधर-उधर कर दिया।

"अब, मुझे देखने दो—" वह बोला—"मैं जानता था, इनमें क्या था। किंतु अब मैं याद नहीं कर पा रहा हूँ।"

हैटी हर्षजन्य उत्तेजना से कमरे में उछल रही थी। आर्लिस ने अंगीठी के निकट जाकर आग को कुरेदा और काफी का बर्तन अंगीठी पर रख दिया। काफी देर के बाद उन लोगों में से किसी को नाश्ते की भी सुध आयेगी। तब वह कुछ फल और कैंडी लाने के लिए तेजी से, रहनेवाले उस बड़े कमरे में घुस गयी। नारंगी मिलाकर तैयार की उसने एक पूरी और फिर आधी कैंडी ले ली। दूसरे सभी लोगों से क्षणभर के लिए अलग हो, उसने एकांत की आवश्यकता अनुभव की थी। पिछली रात वह इंतजार कर रही थी कि क्रैफोर्ड की मोटर का हार्न सुनायी देगा और वह सड़क से होती हुई वहाँ पहुँचकर उसकी बाँहों में समा जायेगी। किंतु हार्न नहीं सुनायी पड़ा था और हँसी-खुशी

क्रिसमस मनाते हुए अपने परिवार के सभी लोगों के बीच वह स्वयं को परित्यक्ता अनुभव कर रही थी।

वह रसोईघर की ओर वापस जाने ही वाली थी कि उसने हार्न की संगीत-मय आवाज सुनी। वह भयभीत-सी खड़ी रह गयी। वह आज सुबह बाकी समय छोड़, क्रिसमस की इस सुबह—नहीं आयेगा। किंतु यह वही था। आर्लिस हार्न की यह आवाज इतना पहचानती थी कि भूल करने की गुंजाइश ही नहीं थी। और वह उससे मिलने जा भी रही थी। घर के लोग उसका अभाव इस थोड़े-से समय के लिए कभी नहीं महसूस करेंगे। उसने कैंडी से भरे बोरों को वहीं छोड़ दिया और भीतरी बरामदे में निकल गयी। वह वहाँ से निकल जाने की जल्दी कर रही थी। किंतु उस शोर-शराबे में भी मैथ्यू ने हार्न सुन लिया था। उसने रसोईघर का दरवाजा खोलकर देखा।

"क्रैफोर्ड ?" उसने निरर्थक प्रश्न किया।

अपनी इस भगदड़ के बीच में ही आर्लिस रुक गयी। "हाँ—" वह हाँफती हुई-सी बोली—"और मैं उससे मिलने जा रही हूँ। मुझे एक..." तब उसे सावधानीपूर्वक लपेट कर रखे गये स्कार्फ की याद हो आयी, जो उसने क्रिसमस-सौगात खरीदने के लिए शहर जाने पर खरीदी थी। उसे लेने के लिए वह जल्दी से अपने शयनागार में चली गयी। फिर वह जब भीतरी बरामदे में वापस आयी, तो बड़ी जल्दी में थी; क्योंकि उसने जाने में काफी देर कर दी थी और शायद क्रैफोर्ड सोच लेता कि वह नहीं आ रही है।

मैथ्यू उसके सामने खड़ा हो गया। "आर्लिस!" वह बोला।

पहली बार आर्लिस को रुलाई-सी आ गयी। आज मैथ्यू के पास उसके सभी लड़के थे; वह कम-से-कम दस मिनट तो अपने क्रैफोर्ड के साथ बिता सकती थी। "पापा—" वह बोली—"मैं जा रही हूँ।"

मैथ्यू ने उसकी बाँहों पर अपना हाथ रखकर उसे बढ़ने से रोक दिया। "आर्लिस—" वह उसी लहजे में बोला—"उसे घर पर ले आओ।"

"किंतु पापा—" वह बोली—"आपने......"

मैथ्यू उसकी ओर देख कर मुस्कराया। "आज सब लोगों के एक स्थान पर इकट्ठा होने का दिन है—" वह बोला—"तुम क्रैफोर्ड को यहाँ ले आओ। जल्दी करो अब। नाक्स और जेसे जान तुम्हारे लिए क्रिसमस-उपहार लाये हैं।"

आर्लिस जल्दी से चली गयी और मैथ्यू रसोईघर की ओर वापस मुड़ा। आर्लिस के चेहरे पर और उसकी आँखों में जो उल्लास चमक उठा था उसे

याद करता हुआ, मैथ्यू रसोईघर की ओर बढ़ा। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि चंद सिक्कों की जो चीजें उपहार में वह आर्लिस के लिए लाया था, उससे कहीं कीमती उपहार उसे देने की उदारता उसने अभी-अभी बरती थी।

"पापा!" उसकी ओर एक पैकेट फेंकता हुआ नाक्स चिल्लाया—"यह आपके लिए है, पापा! मैंने सबसे बढ़िया किस्म की चुनी है आपके लिए।"

हर्ष के आवेग से उत्तेजित, हँसते हुए मैथ्यू ने पैकेट खोल डाला और बोतल हाथ में ऊपर उठा लिया। "दूकान से खरीदी हुइ व्हिस्की—" वह बोला–"मैंने अपने लिए कभी—"

"मेरा अनुमान था कि आपके लिए यह बिलकुल उपयुक्त रहेगी—" नाक्स बोला। उसने अपने अंगूठे से उसे जोर से दबाया—"निश्चय ही, क्रिसमस के लिए व्हिस्की खरीदने में कोई कृपणता नहीं दिखा सकता।"

मैथ्यू ने नाक्स की ओर देखा। वह उसमें, क्रिसमस और घर आने के उल्लास से परे, नये नाक्स को ढूँढ़ने की चेष्टा कर रहा था। हवा के थपेड़ों से लाल हो गये उसके चेहरे की ओर उसने देखा। नाक्स पहले से अधिक व्यवहार-बात में खुल गया था और उसके चलने-फिरने के ढंग में भी परिवर्तन आ गया था। उसकी वैसी आवाज़ भी मैथ्यू ने पहले कभी नहीं सुनी थी। उसने मुड़ कर जेसे जान की ओर भी उसी प्रकार देखा। जेसे जान पहले से दुबला हो गया था, स्वयं में खोया-खोया था और जो प्रश्न उसे परेशान किये हुए था, उसके भार से उसकी आँखें झुकी झुकी थीं। किंतु वह भी मुस्कराते हुए, मैथ्यू को, क्रिसमस के अवसर पर लायी गयी, शराब की बोतल को पैकेट से बाहर निकालते हुए देख रहा था।

"बेटो!" मैथ्यू ने कहा। किंतु अपने मन की बात को कह देने का कोई रास्ता नहीं था। वे सब उसे देख रहे थे और उनके मन में यह भय समाया हुआ था कि अपनी किसी बात से मैथ्यू कहीं उनके बीच कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न न कर दे, जिससे उनके बीच एक-दूसरे के प्रति रुखाई और पृथकत्व की भावना जन्म ले ले—कहीं वह उन्हें आत्म-सचेत और अप्रसन्न न कर दे।

"आप उसे जरा पीकर तो देखिये, पापा—" नाक्स चिल्लाया—"दूकान से खरीद कर आपके लिए जो यह व्हिस्की लायी गयी है, उसमें से पीकर तो देखिये।"

"नाश्ता करने के पहले?" मैथ्यू ने दुःख-स्तंभित स्वर में कहा—"नहीं!" उसने दृढ़ता से बोतल एक ओर रख दिया—"मेरे डैडी हमेशा कहते थे—

'बेटे, जब तक तुम पेट में कुछ डाल नहीं लो, शराब कभी मत पीओ। तब तुम कभी शराबी नहीं बनोगे।' " वह मुस्कराया—"किंतु हम लोगों को अब नाश्ता मिलने में अधिक देर नहीं लगेगी।"

हृदय को स्पर्श करनेवाली भावना का क्षण उनके बीच से गुजर चुका था और नाक्स ने दूसरों के लिए लाये उपहारों को उन्हें देने की ओर ध्यान दिया। राइस के लिए 'स्पोर्ट शर्ट' (खेल-कूद के समय पहनी जाने वाली कमीज-विशेष) थी, हैटी के लिए शृंगार-सामग्रियों का सेट था और मैथ्यू के बूढ़े पिता के लिए स्वेटर था। नाक्स ने अंतिम पैकेट हाथ में ऊपर उठाया और चारों ओर नज़र दौड़ायी।

"आर्लिस कहाँ है?" उसने पूछा।

"ठीक यहाँ, नाक्स भाई!" रसोईघर के दरवाजे से आर्लिस की आवाज़ आयी और वह भीतर आ गयी। उनकी बगल में क्रैफोर्ड था। वह खुश और उल्लसित थी और मैथ्यू ने उसके गले में एक पतली सोने की जंजीर से लटकती नयी लाकेट देखी। रह-रह कर कुछ ही मिनटों के अंतर पर आर्लिस का हाथ अपनी गर्दन पर पहुँच जाता था और उस जंजीर से खेलने लगता था।

"सब तुम्हारे लिए है—" नाक्स ने बेढंगे ढंग से बँधा वह पैकेट उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा। "क्यों, क्रैफोर्ड गेट्स—" वह कहता गया—"अगर मुझे मालूम होता कि तुम भी यहाँ आज आने वाले हो, तो मैं तुम्हारे लिए भी कुछ जरूर लाता। सिवा उस पुराने खच्चर को छोड़कर, जिसे मैं जोता करता था, प्रत्येक प्राणी के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य—यही मेरा इरादा था।"

उन्होंने बड़े प्रेम से हाथ मिलाये। "बाँध का काम कैसा चल रहा है?" क्रैफोर्ड ने पूछा—"तुम्हें वह काफी अच्छा काम करने को मिला है न?"

"मैंने उनसे कहा कि मैं ट्रैक्टर चला सकता हूँ—" नाक्स बोला—"और जब तक उन्हें यह असलियत मालूम हो कि मैं ट्रैक्टर नहीं चला सकता, तब तक मैं ट्रैक्टर चलाना जान गया। अगले महीने से मुझे बुल डोजर (झाड़-झंखाड़ साफ करनेवाला एक तरह का ट्रैक्टर) चलाना होगा।"

आर्लिस अपने शृंगार-सामग्रियों के सेट पर, जो हैटी को दिये गये सेट के अनुरूप ही था, हर्ष युक्त विस्मय प्रकट कर रही थी। उसे एक ओर रख कर वह नाक्स से लिपट कर उसे चूमने के लिए आगे बढ़ी। नाक्स ने उससे दूर भाग जाने का नाट्य किया; किंतु बड़ी आसानी से वह पकड़ाई में आ गया।

क्रैफोर्ड मैथ्यू की ओर मुड़ा। "हेलो, मि॰ डनबार!" वह बोला—"मैं..."

"क्रिसमस-उपहार, क्रैफोर्ड !" "मैथ्यू बोला—"क्रिसमस-उपहार !"

क्रैफोर्ड हँस पड़ा—"आपने मुझे पराजित कर दिया इस बार, मि. मैथ्यू! निश्चय ही, बाजी आपके हाथ रही।"

"अगर तुम मर्दों को कुछ नाश्ता दिया जाये, तो कैसा रहेगा?" आर्लिस ने चपलतापूर्वक पूछा।

नाक्स ने उसे अपने आलिंगन में ले, उसे जमीन से ऊपर उठा लिया। "यह है, मेरी लाड़ली !" वह बोला—"आज सुबह चार बजे से ही मैं ये उपहार जमा करता फिर रहा हूँ।"

अंगीठी पर रखे काफी के बर्तन से भाप निकल रही थी। उसे वहाँ से मेज पर लाती हुई आर्लिस बोली—"शुरू करने के लिए यह काफी मौजूद है।"

उस बड़ी गोल मेज के चारों ओर वे बैठने लगे। मैथ्यू उनकी ओर देख सस्नेह मुस्कराता हुआ अपनी कुर्सी पर बैठ गया। मेज के निकट भीड़ हो गयी थी, जैसा कि होना चाहिए था। हर जगह भर गयी थी और सब की मिली-जुली आवाज घर-भर में भर उठी थी। रहनेवाले कमरे से मैथ्यू का बूढ़ा पिता धीरे-धीरे इस ओर चला आ रहा था। उसके कुछ ऊँचा सुनने वाले कान प्यालियों और तश्तरियों की खनखनाहट हमेशा सुन लिया करते थे। मैथ्यू अपनी बगल में बैठे जेसे जान की ओर धीमी आवाज में बोला—

"तुम्हें कोई समाचार मिला, जेसे जान?"

जेसे जान ने इन्कार में सिर हिलाया—"कोई भी समाचार नहीं, पापा! मैं बस तलाश जारी रखे हूँ।"

"जेसे जान......" मैथ्यू ने कहा।

"मेरे खयाल से, वह यह इलाका छोड़कर अन्यत्र जा चुकी है—" जेसे जान ने कहा। उसने अपनी काफी के प्याले की ओर देखा—"मेरे खयाल से, मैं भी अब यह जगह छोड़ दूँगा—नये साल के तुरत बाद ही। मैंने एक नया बाँध बनने की बात सुनी है और मैं सोचता हूँ, सम्भव है..."

"जेसे जान!" मैथ्यू बोला—"तुम......"

जेसे जान ने उसकी ओर देखा। उनके चेहरे पर फीकी मुस्कान दौड़ गयी—"क्रिसमस का उपहार, पापा!" वह बोला।

मैथ्यू उसका मतलब समझ गया। वही मतलब, जिसे लेकर उसने क्रैफोर्ड से यही बात कही थी। जेसे जान उस दिन घर इसलिए आया था; क्योंकि उस दिन क्रिसमस था; क्योंकि नाक्स घर आ रहा था—यद्यपि उसके पास अपनी

ओर से भेंट-सामग्री लाने के लिए पैसे नहीं थे। और आपस के मतभेदों को बढ़ाने के लिए क्रिसमस का दिन उचित नहीं था।

मैथ्यू हँसा—"तुमने मुझे मात दे दी, जेसे जान! तुम लोगों के लिए मैंने कुछ भी नहीं खरीदा; क्योंकि तुम लोग आ रहे हो, यह मैं नहीं जानता था।" उसने जेसे जान की ओर अपना सिर झुका लिया—"किंतु रूई की बिक्री से मिले रुपयों में से मैंने सौ डालर बचा रखे हैं। ये तुम्हारे हैं—जैसे तुम उचित समझो, इन्हें काम में लाओ।"

"इससे मुझे मदद मिलेगी—" जेसे जान ने कहा—"किंतु आप..."

मैथ्यू उसकी ओर से घूम पड़ा। "देखो, नाक्स—" वह बोला—"मैं आशा करता हूँ, दूकान से खरीदी तुम्हारी यह शराब उतनी ही अच्छी होगी, जितनी अच्छी तुम स्वयं बना लेते हो!"

"उससे अच्छी—" नाक्स बोला—"स्वयं मकई छूने की जरूरत भी नहीं और इस बूढ़े नाक्स के लिए इससे बढ़कर अच्छी बात और क्या हो सकती है!"

मैथ्यू ने आश्चर्य के भाव से सिर हिलाया। "तुम निश्चय ही बड़े ठाठ से रह रहे होगे—" वह बोला—"नयी मोटरें, दूकान से खरीदी गयी व्हिस्की..."

"यह तो रोजमर्रा की-सी चीजे हैं—" नाक्स बोला—"अगर प्रतिदिन ऐसा हो, तो भी! जेसे जान को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है; किंतु वह भी ठीक हो जायेगा, बशर्ते वह काम में जुटा रहा, तो। किंतु कभी-कभी वह एक साथ एक दिन, दो दिन या तीन दिनों की छुट्टी ले लेता है और कौनी की तलाश में घूमता है।"

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर देखा। क्रैफोर्ड अंगीठी के निकट खड़ी आर्लिस को एकटक देख रहा था। उसकी आँखों में कोमलता और प्यार की झलक थी और वह उनकी बातचीत के दायरे से दूर खिंचा हुआ था। मैथ्यू के मुख पर क्षीण मुस्कान दौड़ गयी, जब उसने उसके गले में लिपटा नया स्कार्फ देखा।

"अच्छा, बच्चो, आज हम लोग शिकार भी करने वाले हैं न?" मैथ्यू बोला।

नाक्स उठ खड़ा हुआ और कमरे के बाहर चला गया। थोड़ी देर में ही वह भेड़ की खाल के धारीदार खोल में लिपटी अपनी बंदूक लेकर वापस आ गया। "आप शिकार करने की बात करते हैं—" वह बोला—"मेरे यहाँ आने का

एक कारण यह भी है। क्रिसमस के दिन शिकार खेलने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सका।"

उसने अपनी बंदूक खोल से बाहर निकाली और उसे बड़े प्यार से अपने हाथों में ले लिया। फिर उसने उसकी नली अलग की और भीतर झाँक कर देखा कि सब-कुछ ठीक तो है। उसने बंदूक एक खिड़की की ओर तान दी और ट्रिगर खींचा।

"हमारे पास एक अतिरिक्त बंदूक है—" मैथ्यू ने क्रैफोर्ड से कहा—"अगर तुम्हारा इरादा हम लोगों का साथ देने का हो तो!"

"सुंदर!" क्रैफोर्ड ने उल्लासपूर्वक कहा—"आज थोड़ा शिकार खेलना मैं बहुत पसंद करूँगा।"

उन्होंने नाश्ता किया। नाश्ता बड़ा स्वादिष्ट था और वे इतमीनान से खाते रहे। आर्लिस इस बीच अंगीठी से मेज के निकट आती-जाती रही। वह उन लोगों के लिए सूअर का भूना हुआ माँस और अंडे ला लाकर रख रही थी और उनके प्यालों में रह-रहकर काफी उड़ेलती रहती थी। वे आपस में बातें करते रहे, हँसते रहे। रसोईघर में उनका सुखद शोरगुल छा गया था और अच्छे खाने की गंध वहाँ व्याप्त थी।

जब वे शिकार पर जाने के लिए तैयार होकर बाहर निकले, तो बादल छाये हुए थे। हवा में बर्फ पड़ने के भी आसार थे और तेज हवा बहने लगी थी। मैथ्यू ने अपने पैर की उँगलियों में ठंड-सी महसूस की और उसने जूतों के भीतर अपने पैर सिकोड़ लिये। उसने अपनी बाँह की मोड़ पर बंदूक लटका ली और गर्मी लाने के लिए अपनी दोनों हथेलियाँ रगड़ने लगा।

"चलने के लिए तैयार?" उसने इकट्ठे सबसे पूछा।

आर्लिस रसोईघर से दौड़ती हुई आयी। "पापा!" उसने आवाज दी—"अगर आप सब लोगों का इरादा दिन का खाना खाने का हो, तो जाने के पहले आप मेरे लिए कुछ मुर्गियाँ मार दीजिये।"

नाक्स चिल्लाया—"खाने के वक्त मुर्गियाँ। यह मेरी बहन बोल रही है वहाँ!"

"वह इस बात को नहीं सोच रही है कि, सम्भव है, हम वापसी में अपना खाना अपने साथ लेते आयें।" मैथ्यू ने कहा। उसने मकान की बगल में अपनी बंदूक टिकाकर रख दी और लकड़ी के उस लट्ठे की ओर चला, जिस पर रखकर माँस काटा जाता है।" दो अच्छी मुर्गियाँ पकड़ कर मुझे दो—"

वह चिल्लाया—"तीन ले आओ तो अच्छा है। लौटकर आने तक हम लोगों को जोरों की भूख लग आयेगी।"

वह इंतजार करता रहा, जब तक लड़के मुर्गियों के घर के भीतर गये। अचानक मुर्गियों के बीच भगदड़ मच गयी, वे चीखने लगीं और कुछ तो खुली जगह में निकल भागीं। अपने डैने फैलाये, भय से शोर मचाती, वे खुले आँगन से होकर सुरक्षित स्थान की ओर भागी जा रही थीं। नाक्स अपने दोनों हाथों में एक-एक जवान पालतू मुर्गी पकड़े बाहर निकला। मुर्गियाँ अपने डैने फड़फड़ा रही थी और नाक्स के चेहरे पर प्रहार कर रही थीं। नाक्स माँस काटनेवाली उस लकड़ी और मैथ्यू की ओर दौड़ पड़ा। मैथ्यू ने उसके हाथ से एक मुर्गी ले ली और झुककर उसने उसके डैनों पर वजन रख दिया, जिससे वे अधिक इधर-उधर न कर सकें और बड़ी सफाई से उसका सिर उड़ा दिया।

तब उसने उस मुर्गी को ढीला छोड़ दिया और सिर-विहीन उस शरीर को जमीन पर गिरते देखता रहा। कटी गर्दन से खून की पतली धारा मेहराब बनाती हुई निकल पड़ी। मूत्रण के समान ही खून की वह धार वेगवान थी। मैथ्यू ने दूसरी मुर्गी ले ली और तब तक राइस तीसरी मुर्गी लिये उधर चला आ रहा था। वह मुर्गी के निरीह डैनों को अपने हाथों से दबाये हुए था। मुर्गियों के कटे हुए शरीर को ले जाने के लिए आर्लिस बाहर आयी। उसने उन्हें पैरो की ओर से पकड़ कर अपने से दूर टाँग लिया, जिससे उनसे बूँद-बूँद चूता हुआ खून उसके जूतों पर न पड़ जाये।

"अब आप लोग खाने के लिए आने में देर नहीं लगाइयेगा—" वह बोली—"इसे पका लेने के साथ ही खाने की मेज पर सजा देने का इरादा है मेरा।"

"हम लोग उस वक्त यहाँ होंगे—" जेसे जान ने कहा—"उसके लिए चिंता न करो। मुर्गी के तलने की गंध हम लोग दो मील दूर से ही जान जायेंगे।"

उन्होंने अपनी बंदूकें उठा लीं और एक झुंड में आगे बढ़ गये। आर्लिस और हैटी क्षण भर तक उन्हें जाते देखती रहीं और तब आर्लिस तेजी से घूम पड़ी।

"आओ, हैटी—" वह बोली—"इन मुर्गियों को ढोकर ले चलने में मेरा हाथ बँटाओ।"

हैटी उन जाते हुए व्यक्तियों की ओर ही देखती रही। "सब मजे मर्दों को ही हैं—" उसने बड़ी दीनता से कहा—"वे सारे समय शिकार पर जाया करते हैं, जब कि हम औरतें......"

"चुप भी रहो अब—" आर्लिस बोली—"पापा दिन-भर जो घर के आगे-पीछे भाग दौड़ करते हैं, उससे यह अच्छा है। नाक्स और जेसे जान के आने के पहले उन्होंने शिकार पर जाने की बात सोची भी नहीं थी—" उसकी आवाज़ में एक गर्व उभर आया—"और क्रैफोर्ड उनके साथ है।"

जिस पहले खेत में वे पहुँचे, उसकी हरी मटमैली घास को कुचलते हुए उन्होंने खरगोशों की तलाश की। किसी प्रकार डनबार-घाटी में शिकारी कुत्ते नहीं रखने की एक प्रथा-सी बन गयी थी, यद्यपि डनबार-परिवार हमेशा शिकार खेलने जाया करता था। वे स्वयं ही शिकार मारने पर निर्भर रहा करते थे। मैथ्यू बीच में चल रहा था और उसकी एक ओर नाक्स तथा राइस शिकार तलाश करते चल रहे थे। क्रैफोर्ड और जेसे जान उसकी दूसरी ओर थे। झाड़ियों को अपने पैरों से कुचलते हुए वे धीरे-धीरे चल रहे थे। क्योंकि बहुधा, कोई खरगोश, अगर उसे मौका मिलता, तो झाड़ियों में दुबक कर लेट रहता था, जब तक शिकारी वहाँ से गुजर नहीं जाते थे। खेत की लगभग आधी दूरी जब वे तय कर चुके थे, तब क्रैफोर्ड और मैथ्यू के मुड़ कर कंधे से बंदूक लगाकर निशाना लेने के पहले ही, एक खरगोश झाड़ियों से निकल कर भागा। किंतु यह क्रैफोर्ड का शिकार था और उसने बंदूक चला दी। क्षण भर में ही, बड़ी फुर्ती से बंदूक उठाकर क्रैफोर्ड ने गोली दाग दी। भागता हुआ खरगोश जमीन पर ऐसे लुढ़क गया, मानो उसके रास्ते में उधर-से-उधर कोई रस्सी बँधी हो और वह उससे उलझ गया हो।

"कसम परमात्मा की, यह क्रैफोर्ड तो शिकारी है!" मैथ्यू की दूसरी ओर से नाक्स चिल्लाया। उसी-बीच एक दूसरा खरगोश झाड़ियों से निकल भागा। नाक्स ने घूमकर बड़ी जल्दी से बंदूक चला दी। गोली वहाँ जाकर धूल में लगी, जहाँ वह खरगोश पहले दिखायी पड़ा था। नाक्स के पीछे ही राइस ने भी गोली चलायी और खरगोश जमीन पर लुढ़क गया।

क्रैफोर्ड प्रसन्नता से मुस्करा रहा था। "बंदूक चलाये मुझे काफी दिन बीत चुके हैं—" वह बोला—"मैं तो डर रहा था कि मैं बिलकुल ही निशाना नहीं लगा पाऊँगा।"

वे दूसरे खेत में पहुँच गये। हवा के थपेड़े रह-रह कर उन्हें आ लगते और

वे सिहरन-सी महसूस कर रहे थे। मैथ्यू जानता था कि ठंड से बचने के लिए खरगोश अपने-अपने बिलों में दुबक कर गर्माये बैठे होंगे। उसके नंगे हाथों में बंदूक की नली ठंडी-ठंडी लग रही थी और उसने क्षण भर के लिए अपना एक हाथ अपनी जेब में रख लिया। इस खेत में भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया और एक भी शिकार पाये बिना वे उसे पार कर गये। दूसरे खेत की घेर चढ़ कर वे उस पार उतर गये और अब वे पहाड़ के ढालू हिस्से की ओर थे, जहाँ हरी-मटमैली घास उनकी कमर तक ऊँची थी।

"सिर ऊपर उठाकर चलो, लड़को!" मैथ्यू ने उन्हें चेतावनी दी—"साल-भर से यहाँ तीतरों का एक झुंड रहता है।"

वे धीरे-धीरे चलते रहे। बंदूक उनके हाथ में तिरछी लटक रही थी। लगभग उसी क्षण, तीतरों का झुंड, अचानक जोरों से शोर करते हुए, बिलकुल मैथ्यू के पैरों के नीचे से, ऊपर उड़ चले। अचानक चौंक कर मैथ्यू ने झटके से अपनी बंदूक अपने हाथ में पकड़ ली। उसने गोली चलायी, निशाना चूक गया और तब उसे सिर्फ एक तीतर पर निशाना लगाने का मौका मिल गया। उसने उसे मार गिराया। बगल से दूसरे लोग भी बंदूक चला रहे थे। राइस और जेसे जान ने एक-एक तीतर और मार गिराया—बाकी दो उड़कर दूर कहीं गायब हो गये।

हँसते हुए मैथ्यू रुक गया और उसने अपनी दोनों हथेलियाँ आपस में रगड़ीं। "इतने सालों से शिकार करने के बाद भी, इस प्रकार अपने पैरों के नीचे से तीतरों के उड़ जाने पर उन्हें मार गिराने का मौका कभी नहीं आया मेरे जीवन में!" वह बोला—"मैं नहीं कह सकता, कितनी बार मैं चुपचाप खड़ा होकर उन्हें उड़ते हुए देखता रहा हूँ। मेरे खयाल से मैं कभी चिड़ियों का शिकार नहीं कर पाऊँगा।"

"आपने तो खैर एक मार भी गिराया—" नाक्स ने विषाद के स्वर में कहा—"मुझसे तो आप अच्छे ही रहे। दरअसल, हमें चिड़ियों का शिकार करनेवाले कुत्ते की जरूरत है।"

"कुत्ता मैं घर में नहीं रख सकता—" मैथ्यू ने दृढ़तापूर्वक कहा—"हेमंत के सिर्फ दो महीनों में वह चिड़ियों का शिकार करे, इसके लिए साल भर बिठाकर उसे अंडे और मुर्गियाँ खिलाने का मेरा इरादा नहीं है।"

वे खेत में चलते रहे और दूर, उस छोर पर जाकर फिर एक झुंड में एकत्र हो गये।

"ओह! हवा कितनी ठंडी है!" नाक्स ने शिकायत-सी की—"काश! आप व्हिस्की की वह बोतल अपने साथ लाये होते, पापा!"

मैथ्यू बोला—"अब देखो, यह भी तो हो सकता है कि मैं उसे अपने साथ लेता आया होऊँ।" उसने धीरे-धीरे अपनी सभी जेबों को थपथपा कर देखा, जैसे बाकी लोगों को तरसा रहा हो और तब अपनी लम्बी पोशाक के भीतर से उसे बाहर निकाल लिया। शराब की उस बोतल की ओर उसने ताज्जुब-भरी नजरों से देखा—"अरे, यह यहाँ कैसे आ गया? निश्चय ही, जब मैं अपने दाहिने हाथ से कोई और काम कर रहा होऊँगा, तो बायें हाथ ने अजाने ही, इसे वहाँ रख दिया होगा।" उसके होंठों पर शरारत की मुस्कान थी।

सबने व्हिस्की पी और उस सर्दीली हवा से पैदा होनेवाली सिहरन को दबाती उनके भीतर एक उष्णता का संचार हो गया। व्यक्तिगत रूप से मैथ्यू ने सोचा कि यह शराब नाक्स द्वारा मकई की बनायी जानेवाली शराब के समान स्वादिष्ट न थी; किंतु उसने अपनी यह धारणा स्वयं तक ही सीमित रखी। कोई कहीं दूर से स्नेह के साथ क्रिसमस-उपहार लाकर दे, तो उसकी नुक्ताचीनी नहीं किया करते। बाद में वे फिर शिकार की तलाश में चल पड़े और जंगल में एक साथ जमा होने के पहले उन्होंने दो खरगोश और मारे। जंगल में उन्हें कुछ ऐसे पेड़ों की तलाश थी, जो अखरोट के पेड़ के समान ही होते हैं और जिनकी छाल मोटी तथा सख्त होती है। मैथ्यू को इन पेड़ों की जानकारी थी!

वे खामोश हो गये; क्योंकि गिलहरियाँ बड़ी सतर्क होती हैं। पहले वृक्ष के निकट आते ही, उसे चारों ओर से घेर कर वे अपनी-अपनी जगह गये। उन्होंने वृक्ष की नंगी शाखाओं की तलाश आरम्भ कर दी। मैथ्यू को रोएँदार गोल-सी चीज दिखायी दी और वह रुक कर अपनी बंदूक धीरे-धीरे ऊपर उठाने लगा। गिलहरी बड़ी तेजी से पेड़ के तने की दूसरी ओर चली गयी और नाक्स ने बंदूक दाग दी। गोली पेड़ की शाखाओं के बीच से एक आवाज-सी करती हुई निकली। गिलहरी क्षण भर के लिए चीखती हुई पेड़ से चिपटी रही; फिर धप से नीचे गिर पड़ी। मैथ्यू ने उसके रोएँदार शरीर के जमीन पर गिरने की हल्की धप-सी आवाज सुनी।

किंतु देखने का समय नहीं था। तीन गिलहरियाँ पेड़ के खोड़र से निकलीं और पेड़ के निचले हिस्से की ओर भागीं। उनमें से एक बड़ी और भूरे रंग की गिलहरी थी। वह इतनी बड़ी थी कि देखने में किसी लोमड़ी की तरह ही लगती थी और वह मैथ्यू की ओर ही उतरती आ रही थी। मैथ्यू ने बंदूक

उठ कर चला दी। गोली गिलहरी के बिल्कुल निकट पेड़ के तने में जाकर धँस गयी और गिलहरी क्षण-भर के लिए पेड़ से चिपकी रही। तब वह फुर्ती से एक शाखा पर चढ़ गयी और दाँत किटकिटाती हुई सीधा मैथ्यू के चेहरे की ओर उछली। मैथ्यू एक ओर हट गया और उसने अपनी एक बाँह अपने चेहरे के सामने कर दी। गिलहरी कूदी और उसने उसकी बाँह में काट खाया। फिर वह जमीन पर गिर पड़ी और तेजी से वहाँ से भाग गयी।

बाकी सभी व्यक्ति हँसते हुए देख रहे थे। "बड़ी विक्षिप्त गिलहरी थी वह—" नाक्स बोला—"मैंने तो सोचा कि वह आपकी बंदूक छीन कर उसी से आपके सिर पर प्रहार करनेवाली है।"

"उसने मुझ पर ही आक्रमण किया था, यह तो तय है—" मैथ्यू ने काँपते हुए कहा। उसने कभी किसी गिलहरी को वैसा करते नहीं देखा था और इस गिलहरी द्वारा निडरतापूर्वक किये गये इस आक्रमण से वह भयभीत हो उठा था।

इस उत्तेजना के बीच दूसरी गिलहारियाँ गायब हो चुकी थीं और ह्विस्की की उस बोतल से दूसरी बार थोड़ी-थोड़ी शराब पीकर यह दल आगे बढ़ा। बोतल अब आधी खाली हो चुकी थी और मैथ्यू ने उसकी ओर विचार-पूर्ण मुद्रा से देखा।

उन्होंने दो और वृक्षों पर अपने शिकार के लिए घेरा डाला और दोनों वृक्षों पर उन्होंने एक-एक गिलहरी मारी। प्रत्येक शिकार के बाद वे रुक कर थोड़ी शराब पी लेते थे। तब वे फिर जंगल से निकल कर खेतों में आ गये। मैथ्यू वहाँ रुक गया और उस ठंडी हवा में जोरों से साँस लेने लगा। शिकार की भाग-दौड़ और शराब—वह गर्मी का अनुभव कर रहा था। बादलों के बीच से गुजरते धुँधले-से सूर्य की ओर उसने आँखें उठा कर देखा।

"लड़को!" वह बोला—"मेरे खयाल से हम अब घर वापस चलें, तो अच्छा है। हम बहुत ज्यादा ह्विस्की पी चुके हैं।"

"ओह पापा!" नाक्स बोला—"हमें तो बहुत-सा शिकार करना है अभी..."

मैथ्यू ने इन्कार में अपना सिर हिलाया। "ना, जल्दी ही हममें से कोई पागलों के समान गोली चलाने लगेगा—" वह बोला। अपनी इस मनाही की कड़वाहट को धोने के लिए वह हँसा—"क्यों, पिछली दो बार जब मैंने गोली चलायी, तो ऐसा लगा, जैसे सामने के दृश्य नाच-से रहे हों।"

अपने तथा अन्य लोगों की बेल्टों से लटकते खरगोशों, चिड़ियों और गिलहरियों की ओर जेसे जान ने देखा। खरगोशों और गिलहरियों के शरीर से खून उनके पैरों पर टपक रहा था।

"हमारे पास पर्याप्त शिकार है—" वह बोला—"दिन के खाने के समय मुर्गियाँ और रात के खाने के समय ये सारी चीजें। इस जगह जितने जीव-जंतु हैं, सबको मारने की कोई जरूरत नहीं है।"

नाक्स ने अपना सिर ऊपर की ओर झटक दिया। "क्या मैं गलत कह रहा हूँ, लड़को?" उसने पूछा—"या मुर्गी तलने की सुगंध सचमुच ही आ रही है।"

वे घर लौट आये। आँगन में सब एकत्र हुए। उन्होंने अपनी बाँहों से बंदूकें उतार दीं और रसोईघर के गर्म कमरे के भीतर घुस आये। वे बड़े उत्साहपूर्वक हँस-हँस कर बातें कर रहे थे, चल-फिर रहे थे। आर्लिस खाना मेज पर लगाने तक उन्हें रहनेवाले उस बड़े कमरे में पहुँचा गयी। वे उस कमरे में अँगीठी के इर्द-गिर्द जमा हो गये, जहाँ आग जल रही थी और उन्होंने मार कर लाये गये उन जानवरों को, मैथ्यू के बूढ़े पिता को दिखाया। अच्छे खाने की कल्पना कर मैथ्यू के बूढ़े पिता के चेहरे पर प्रसन्नता खिल उठी। वह मुस्कराया। उसने बड़े उत्साहपूर्वक उन लोगों को अपनी कहानी सुनायी कि किस तरह सामने के बरामदे में, नाश्ता करने के पहले, प्रति सुबह, खड़ा होकर नाश्ते के लिए वह पर्याप्त गिलहरियों का शिकार किया करता था। किंतु वे दिन अब हमेशा के लिए जा चुके थे।

काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद आखिर वे खाने बैठे। खाने में मुर्गियाँ थीं, गर्म बिस्कुट थे, आर्लिस-द्वारा तैयार की गयी क्रिसमस-केक के बड़े बड़े टुकड़े थे, चाकलेट थे, केले थे और अखरोट देकर तैयार की गयी केक थी। उन्होंने मजे ले-लेकर खाना खाया और बाद में वे अलसाते हुए आग के चारों ओर बैठ कर बातें करने लगे। बाँध का जो काम चल रहा था, मैथ्यू उसके सम्बंध में सभी तरह के सवाल पूछना चाहता था—कब नाक्स और जेसे जान फिर घर आने की सोच रहे थे—क्या उन्होंने उसकी आशा के अनुकूल ही घाटी से दूर रहने की कमी अनुभव की थी। किंतु उसने पूछा नहीं—आज का दिन इन बातों के लिए नहीं था। आज क्रिसमस था और वह बहुत प्रसन्न था। साथ ही, वह दिन-भर के काम से एक प्रकार की थकावट महसूस कर रहा था। उनकी थकावट और आराम से बैठे रहने में ही सारा दिन गुजर

गया और मैथ्यू तथा उसके बेटे आग के निकट बैठे इधर-उधर की तरह-तरह की बातें करते रहे। क्रैफोर्ड आर्लिस के साथ रसोईघर में चला गया। हैटी रसोईघर और रहनेवाले घर के बीच आती-जाती रही। वह रह-रह कर मैथ्यू के कंधे पर झूल जाती थी। मैथ्यू तब तक नाक्स के साथ शतरंज खेलता रहा और तीन बाजियों में दो बाजी उसने जीती। कोने में मैथ्यू का बूढ़ा पिता अपने बुढ़ापे की नींद सोता रहा। उन लोगों की बातचीत की आवाज से वह कभी-कभी जाग जाता था, किन्तु तत्काल ही वह फिर सो जाता था।

तीसरे पहर की ढलती बेला में, नाक्स ने बाँह उठा कर अँगड़ाई ली और जेसे जान की ओर मुड़ कर कहा—"मेरे खयाल से, अब हम यहाँ से वापस चल दें, तो अच्छा रहेगा।"

"रात में शिकार करके लाये गये जानवरों के खाने की जो बात थी, उसका क्या हुआ?" मैथ्यू ने विरोध किया—"उतना सारा शिकार हम लोग अकेले कभी नहीं खा पायेंगे।"

"मुँह में तो मेरे भी पानी आ रहा है—" नाक्स ने स्वीकार किया। उसने जेसे जान की ओर देखा। "लेकिन अब हम लोग चल दें, तो अच्छा है—" वह मुस्कराया—"हकीकत यह है कि आज रात, होटल में काम करनेवाली एक खूबसूरत-सी परिचारिका ने मुझसे मिलने का वादा कर रखा है।"

उन्होंने जाने की तैयारी शुरू कर दी। नाक्स और जेसे जान जाने के पहले आर्लिस से विदा लेने रसोईघर में पहुँचे। आर्लिस उनसे चिपट गयी। उसने उन्हें चूम लिया और उनके जाने की बात लेकर थोड़ा रोई-धोई। इस बीच क्रैफोर्ड रहनेवाले कमरे में मैथ्यू के निकट चला आया।

"मेरे खयाल से मैं भी अब चलूँ, तो अच्छा होगा—" वह मैथ्यू से बोला—"आपने जो आज मुझे आमंत्रित किया, मि. मैथ्यू, उसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूँ। मैं सच ही, बहुत शुक्रगुजार हूँ।"

मैथ्यू ने आँखें उठा कर उसकी ओर विचारपूर्ण मुद्रा में देखा। "तुम्हें अपने लोगों के बीच पाकर मैं प्रसन्न हूँ, क्रैफोर्ड! क्रिसमस अच्छे ढंग से बीता न?"

क्रैफोर्ड मुस्कराया। "जैसी मैंने आशा की थी, उससे अच्छे ढंग से।" वह बोला—"मैंने सोचा था कि दिन-भर अपने कमरे में बैठा रहूँगा और खाने के नाम पर वही बोर्डिंग हाऊस का खाना मिलेगा।'

मैथ्यू उठ कर खड़ा हो गया। "तुम्हें अपने बीच पाकर हमें खुशी हुई- -" उसने शिष्टाचार बरता।

क्रैफोर्ड रुका रहा, इंतजार करता रहा। वह चाहता था कि मैथ्यू कुछ और कहे। उसने मैथ्यू की ओर देखा, जो उसके इतना निकट था और अचानक वह जान गया कि उसके पिता की मृत्यु के बाद जिस तरह और सारे लोग उसके जीवन में आये थे, मैथ्यू भी उन्हीं के समान था। उसने कुछ कहने के लिए मन-ही-मन शब्द ढूँढ़ने की चेष्टा की। किंतु उसे कुछ सूझ नहीं पड़ा। उनके बीच समझौता के लिए उसके पास अचानक ही ऐसी कोई चाबी नहीं आ गयी थी, जो गुत्थी सुलझा दे—ऐसा कोई जादू नहीं था उसके पास। अतः वह मैथ्यू की ओर से इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि शायद किसी प्रकार मैथ्यू के पास वह जादू आ जाये, जो उसके पास नहीं था। मैथ्यू जानता था कि क्रैफोर्ड क्यों रुका हुआ है और वह भविष्य में भी क्रिसमस के लिए आमंत्रित करने को चाह रहा था—वह कहना चाहता था कि क्रैफोर्ड जब भी चाहे, घाटी में आ सकता है, आर्लिस से मिल सकता है।

किंतु वह नहीं कह सका और क्रैफोर्ड आर्लिस से विदा लेने के लिए फिर रसोईघर में चला गया। क्षण-भर में ही मैथ्यू ने उसकी मोटर 'स्टार्ट' होने और उसके जाने की आवाज सुनी। उसे विदा कर आती हुई आर्लिस को उसने देखा। भीतरी बरामदे तक आनेवाली तेज सर्द हवा से बचने के लिए आर्लिस ने अपना सिर झुका लिया था और अब रात उतरने लगी थी। लड़के भी अब तक तैयार हो चुके थे और वे सब बाहर आँगन में निकल आये। आर्लिस को वे फिर अपने साथ बाहर लेते आये। नाक्स आर्लिस के कंधों पर अपनी बाँह रखे मोटर की ओर बढ़ रहा था। उसने अपनी नयी फोर्ड के 'फेंडर' को थपथपाया।

"इसकी ओर देखो, आर्लिस—" वह बोला—"किसी दिन मैं फिर आऊँगा और तुम्हें इस पर घुमाने ले जाऊँगा। यह बिल्कुल मेरी है—" वह प्रसन्नतापूर्वक बोला—"हो सकता है, इन्हीं दिनों में किसी एक दिन यह मोटर मेरे नाम पर लिखी जाये।"

"तुम लोगों को जाने देना मुझे तनिक अच्छा नहीं लग रहा है—" मैथ्यू बोला। वह जेसे जान और नाक्स, दोनों पर एक-एक हाथ रख कर खड़ा था।

"हमें वापस जाना ही है, पापा!" नाक्स ने उल्लासपूर्वक कहा। वह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। जेसे जान ने गाड़ी की दूसरी ओर का दरवाजा खोला और मोटर के भीतर हो गया।

"मुझे भी इस पर घुमाने ले चलना—" हैटी बोली—"वादा करो नाक्स, वादा!"

"मैं वादा करता हूँ—" नाक्स बोला—"मैं तुम सब लोगों को इस पर सैर कराने ले चलूँगा।"

"फिर आना—" मैथ्यू ने पुकार कर कहा और रुक कर उनके चेहरे देखने लगा—"जब भी आ सको, आना जरूर।"

नाक्स और जेसे जान ने हाथ हिलाये और नाक्स ने मोटर 'स्टार्ट' की। उसने मोटर को एक बड़े घेरे में घुमाया और उसे घर से दूर मोड़ने लगा। राइस अलग खड़ा था और अपनी जैकेट की जेबों में हाथ डाले मौन उन्हें निहार रहा था।

नाक्स ने मोटर की अपनी ओर की खिड़की का शीशा नीचे कर लिया। "सुखद क्रिसमस—" उसने पुकार कर कहा—"सुखद क्रिसमस, पापा और एक सुखद नया साल!"

"तुम दोनों फिर आना—" मैथ्यू ने उन्हें पीछे से पुकार कर कहा—"जल्दी वापस आना।"

वे मोटर में बैठ कर चले गये और मैथ्यू, आर्लिस, हैटी और राइस खड़े-खड़े उनका जाना देखते रहे। आकाश में सूरज काफी नीचे उतर आया था और हवा में पहले से ठंडक बढ़ गयी थी। दिन जैसे समाप्त हो गया था—एक उदासीनता-सी छा गयी—स्पात की सी सर्द-निर्जीव उदासीनता। किंतु मैथ्यू खड़ा तब तक देखता रहा, जब तक मोटर आँखों से ओझल नहीं हो गयी।

और डनबार की घाटी में, डनबार-परिवार के लिए यही १९३६ का क्रिसमस था!

दृश्य पाँच

बाढ

नया वर्ष आने के साथ ही नदी में पानी बढ़ने लगा। दिसम्बर के महीने में, चिकसा में, पानी निकलने के नये रास्तों के जरिये पानी निकाल देना जरूरी हो गया था, जिससे अधिक पानी बाहर निकालने के मार्गों का निर्माण-कार्य चलता रह सके। किंतु जनवरी में पानी इतना बढ़ गया कि उसे बाहर निकालना सम्भव नहीं रह गया। स्वभावतः ही काम स्थगित कर देना पड़ा। बाँध बनाने में जितने व्यक्ति जुटे हुए थे, उन्हें दूसरे कामों में लग जाना पड़ा और काम पहले से आधा रह गया। सो, स्वभावतः ही, उन्हें आधे काम के हिसाब से रखा गया।

पानी धीरे-धीरे खतरनाक रूप में बढ़ता जा रहा था। मैथ्यू प्रति दिन सुबह नदी के बढ़ते हुए पानी को उसके कीचड़युक्त किनारे के पास खड़ा हो देखता। नदी की सतह पर बाढ़ का उग्र पानी चक्कर काटता हुआ मौन बढ़ता जाता और मैथ्यू चुपचाप पानी की इन सशक्त और उद्दंड लहरों को निहारता रहता। चक्कर काटता हुआ और भँवर बनाता हुआ नदी का गड़गड़ करता पानी बढ़ता जाता था। प्रति सुबह नदी का पानी कुछ बढ़ जाता, कूड़े-करकट का ढेर पहले से और अधिक ऊँचा होता। पानी की बड़ी-बड़ी धाराएँ किनारे से टकरा-टकरा कर भँवर बनातीं और उनके वेग में झाड़ियाँ, पेड़ों की शाखाएँ और लकड़ी के कुंदे बहते नजर आते। अपने पीछे नदी का पानी कूड़े-करकटों के छोटे-छोटे ढेर छोड़ता हुआ बढ़ जाता, जब तक कि उसका रास्ता बदल नहीं जाता अथवा पीछे से आनेवाली वेगवान लहरें उन ढेरों को अपने साथ बहा नहीं ले जातीं।

नदी के किनारे ही मैथ्यू ने अपनी जिंदगी गुजार दी थी। अब वह प्रति सुबह और दोपहर खड़ा होकर नदी के बढ़ते पानी को निहारा करता। एक दिन पहले गाड़े गये लकड़ी के डंडे को देख कर यह अनुमान लगाता कि पानी कितना बढ़ा और फिर निराशाजनक भाव से सिर हिलाता। ऐसा प्रतीत हो रहा

था कि नदी का यह पानी कहर ढाकर ही रहेगा। उसने राइस और आर्लिस से भी यह कहा था। वह जानता था कि सन् १९१७ में जो बाढ़ आयी थी, उसके सम्बन्ध में उन्हें कुछ याद नहीं होगा—सिर्फ उस बाढ़ की प्रचलित कहानियाँ ही उन्हें ज्ञात होंगी।

सन् '१७ में और जहाँ तक उसे स्मरण था, सिर्फ उसी बार, नदी का पानी मकान तक पहुँच गया था। पहले के डनबारों ने नदी की सतह से काफी ऊँची जमीन पर बहुत अच्छा मकान बनाया था और यद्यपि नदी और सोते में बहुत बाढ़ आ जाती, पानी खेतों में पहुँच जाता, तथापि सन् '१७ में ही सिर्फ पानी मकान तक पहुँचा था। अब नदी के किनारे खड़ा हो मैथ्यू उन दिनों की याद करता। उसे याद आ जाता कि किस तरह लोग ऊँची और सुरक्षित जमीन पर जाने के पहले अपनी सम्पत्ति को साथ ले जाने के लिए जल्दी करते, छीना-झपटी करते। बाद में जब वे नदी का पानी उतर जाने पर धीरे-धीरे लौट कर आते, तो उन्हें अपने रसोईघर की फर्श पर कीचड़ की तह जमी मिलती। घर की दीवारों में अधिक-से-अधिक एक फुट तक पानी पहुँचने के निशान बने होते। इस बार भी उतना ही बुरा परिणाम होनेवाला था। मैथ्यू अभी से ऐसा अनुभव कर रहा था।

मिसीसिपी से लेकर नदी में यहाँ तक बाढ़ आयी हुई थी। नदी अपने किनारों को पीछे छोड़ चुकी थी और नव-निर्मित बाँधों को इस वेग से विनष्ट करती जा रही थी, जो मटमैली मिसीसिपी की ही विशेषता है। ओहियो, जो साधारणतया शांत और स्वच्छ रहती है, गँदले-मटमैले पानी से भर गयी थी और यह वेगवान पानी तेजी से किनारों को तोड़ता हुआ फैलता जा रहा था। शहर डूबते जा रहे थे और मकानों, फैक्टरियों, सड़कों और रेल की पटरियों पर इसका गँदला पानी बह रहा था। नदी की घाटी जहाँ टेनेसी में पहुँचती थी, वहाँ तक चारों ओर बाढ़ आयी हुई थी। पहाड़ों में भी, जहाँ शरत्काल की वर्षा का पानी बूँद-बूँद के रूप में टपक कर बाढ़ के पानी से मिलता था, नदी यही उग्र रूप धारण किये हुए थी।

ओहियो से समाचार आने लगे, जहाँ कि बाढ़ ने विनाश के नजारे उपस्थित कर दिये थे। कहानियाँ सुनने में आती थीं कि कुछ लोग मशीनों को पानी से बचाने के लिए फैक्टरियों में गये थे और वहाँ स्वयं बाढ़ के पानी से घिर कर रह गये थे। अखबारों में मोटे-मोटे शीर्षकों में बाढ़ के समाचार छपते। मुसीबत और दुःख-अभाव के दिन आ गये थे—चारों ओर संकटकाल था। जनवरी के

सर्द मौसम में सिर्फ नदी में आयी बाढ़ जो भयावह स्थिति उत्पन्न कर सकती है, उसी के अनुरूप थी यह! एक दिन शहर में मैथ्यू ने एक रेड-क्रास-सहायता-कोष में पाँच डालर दिये थे और वहाँ से घर वापस आकर अपनी नदी को निहारता रहा था। पानी ऊपर उठ रहा था, आहिस्ता-आहिस्ता उठ रहा था। इतनी धीमी गति कभी नहीं रही थी; लेकिन एक दिन पानी ऊपर उठ कर ही रहेगा।

मैथ्यू नहीं जानता था कि मंत्रिमंडल के नेब्रास्का-निवासी एक दृढ़-प्रतिज्ञ सदस्य के नाम पर बाँध बनना शुरू हुआ था, जो मार्च, १९३६ में बंद कर दिया गया। और, जब बाँध के दरवाजे नीचे चले गये, तो लगभग बीस लाख एकड़ जगह में पानी भरने लगा।

टी. वी. ए. बाँध के पीछे जिन लोगों का हाथ था, वे घाटी में पानी की क्या स्थिति है, उससे अच्छी तरह परिचित थे। काम समाप्त कर जिस तरह वे अपने घर लौटने की बात से अच्छी तरह परिचित थे, उसी तरह वे यहाँ के सम्बंध में भी सारी बातें जानते थे। उस इलाके में कितनी बारिश होती थी और सोते के बहाव की कहाँ क्या स्थिति थी, इसके आँकड़े प्राप्त कर रखे थे। इन आँकड़ों को वे जलाशय-नियंत्रण-केंद्रों को भेज देते थे और वे उनके आधार पर जलाशय में पानी रोक रखने और उसे बहने का रास्ता देने के रास्तों की रूपरेखा बनाया करते थे। उसी रूपरेखा के अनुसार उनका काम चलता था। प्रति सुबह छपे अखबारों में मौसम के समाचार आते, जिनमें यह बताया जाता कि कुल कितनी वर्षा होने की सम्भावना है। यह भी बताया जाता था कि किस भाग में कितना पानी पड़ेगा। पूरे इलाके में टी. वी. ए. के जितने दफ्तर थे, वे टेलिफोन पर अपने प्रधान कार्यालय को सूचना देते थे कि वस्तुतः कितनी वर्षा उनके इलाके में हुई और नदी की क्या स्थिति है। और इन्हीं सारी बातों पर बाँध का निर्माण-कार्य निर्भर करता था। शक्ति का निर्माण महत्वपूर्ण है; किंतु बाढ़ के पानी का नियंत्रण अधिक महत्वपूर्ण है और यह नियंत्रण हमेशा ही सिर्फ विद्युत्-उत्पादन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणित होता है।

पूरे वर्ष-भर का एक चक्र है यह। वसंत के मौसम में जलाशय पूर्ण-रूपेण भरे होते हैं, जिससे अपेक्षाकृत गये मौसमों में पानी का अभाव न होने पाये। हेमंत के मौसम में जलाशय खाली करने के रास्ते खोल दिये जाते हैं और जलाशय की सतह पर कीचड़ नजर आने लगती है। किंतु यहाँ काम

करनेवाले व्यक्ति जानते हैं कि नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी में और भी अधिक बारिश होनेवाली है। वे जानते हैं कि मिसीसिपी और ओहियो नदी का पानी ऊपर उठेगा, उनमें बाढ़ आयेगी और गलत समय पर अगर टेनेसी का पानी उनसे जा मिला, तो और भी अधिक नुकसान और तबाही नजर आने लगेगी।

पानी जो रोक रखा गया है, आनेवाले और अधिक पानी के लिए जगह बनाने के विचार से, उसे निकलने का मार्ग देना ही होगा—पनचक्की से होकर विद्युत् उत्पादित करने के स्थान पर यह पानी जलाशय के दरवाजों से होकर बह निकले, तो भी! क्योंकि बिलकुल ठीक समय पर ही इस पानी को निकलने का रास्ता देना होगा। उद्देश्य एक ही है—नदी में पानी के बढ़ने और उसके बाद बाढ़ के पानी को फैलने के लिए जगह देना, जिससे पानी को रास्ता मिल सके। तब इस नये पानी, बाढ़ के पानी को इन बड़े बाँधों के पीछे तब तक रोक रखना जरूरी है, जब तक कि इससे चटनूगा, टेनेसी, गुंटसेविले, अलबामा, पाडुका, केंटकी और काहिरा, इलिनायस को क्षति पहुँचने की सम्भावना समाप्त न हो जाये। तब धीरे-धीरे इसे भी निकलने का रास्ता देना होगा।

इस काम को ठीक से पूरा करने के लिए अभी पर्याप्त बाँध नहीं। चिकसा में जो जल-निकास के रास्ते हैं, उनमें बाढ़ आ गयी है और लोग असंतोषपूर्वक सिर्फ आधे दिन के हिसाब से काम पर जाते हैं। वे पारी-पारी से काम कर रहे हैं, जिससे कोई भी व्यक्ति पूर्णतया बेकार न हो जाये। नयी साफ की गयी जलाशय की जमीन पर बाढ़ का पानी कूड़ा-करकट ला-लाकर ढेर लगाता जा रहा है। बाद में उसे हटाने और जलाने के लिए और जमीन को फिर से साफ करने के लिए अतिरिक्त श्रम की जरूरत पड़ेगी। इंजीनियर यह देख कर बौखला उठते हैं और काम की जो तय अवधि थी, जो तय रूप-रेखा थी, वह रखी रह जाती है।

किंतु बाढ़ की सतह कम है, पानी में अधिक तेजी भी नहीं है और अपेक्षाकृत निरापद भी है—नोरिस बाँध और मनुष्य के श्रम के कारण। एक दिन मैथ्यू जब अपने लकड़ी के डंडे को देखता है, तो उसे ज्ञात होता है कि पानी धीरे-धीरे कम हो रहा है। बिना क्षति पहुँचाये संकट टल चुका है; क्योंकि नोरिस-बाँध ने बाढ़ की धारा की उग्रता कम कर दी है और यद्यपि पानी ३५ फुट से ऊपर हो गया था, फिर भी यह ४८ फुट तक पहुँचा, जैसा १९१७ में हुआ था।

ओहियो में हुई भीषण क्षति के समाचार मैथ्यू ने सुने थे और उसे उम्मीद थी कि वही बरबादी यहाँ भी होगी। इस जनवरी में भयंकर बाढ़ के सभी लक्षण दृष्टिगोचर हुए थे; किंतु ऐसा हुआ नहीं।

डनबार-घाटी में वह अपनी नदी के किनारे खड़ा रहता है, नदी की ओर देखता है और अपना सिर हिलाता है। कोई-न कोई बात जरूर हुई है, इसे वह अच्छी तरह समझता है; क्योंकि इस नदी से वह बखूबी परिचित है। नदी का कब क्या रुख होगा, कैसा रंग पकड़ेगी वह—इन सबकी मैथ्यू को पूरी जानकारी है। वह उस लकड़ी के डंडे तक पहुँचता है, जो उसने नदी-किनारे कीचड़ में गाड़ रखा था, गौर से उसकी ओर देखता है और उसे उखाड़ कर, हाथ में लेकर धीरे-धीरे घर की ओर लौट पड़ता है। अब तक अपनी जिंदगी-भर उसने सन् '१७ के और सन् १८८६ की बाढ़ की कहानियाँ सुनी थीं। मैथ्यू ने सुना था कि सन् १८८६ में तो इतने जोरों की बाढ़ आयी थी कि चटनूगा के बाजार में नाव चलती थी। लेकिन अब वह स्वयं अपने पौत्रों को बाढ़ की कहानी सुना सकता है—एक दूसरे प्रकार की बाढ़ की कहानी—बाढ़ जो आकर नहीं आयी।

प्रकरण ग्यारह

वसंत आया और उसके साथ ही काम करने का समय भी आ गया। एक बेचैनी—एक भाग-दौड़-सी आ गयी। वृक्षों पर हरीतिमा आ गयी और आकाश तथा उनके बीच हरे-हरे पत्तों की पतली झिल्ली-सी छा गयी। उन पर पक्षी लौट आये—उन्मत्त आनंद से अपना सम्पूर्ण शरीर कँपाते वे प्रति सुबह मौज में आकर गाते। डनबार-घाटी में वसंत आ गया; रात के अंधेरे में नदी-किनारे की सड़क पर गाड़ी में एक-दूसरे से आलिंगनबद्ध क्रैफोर्ड और आर्लिस में वसंत का संचार हुआ। निर्दोष भाव से असंतुष्ट-सी घाटी में घूमती हैटी को भी वसंत ने अछूता नहीं छोड़ा। किसी पक्षी की उन्मुक्त उड़ान की भाँति ही उसकी मनोदशा भी थी। मैथ्यू को गर्म रातों में अपने विवाह के आरम्भ के दिन याद आने लगे, जबकि उसका बिस्तरा यों सूना सूना नहीं रहता था, बल्कि वहाँ उसके साथ उसकी पत्नी छाना होती थी और दिन-भर के श्रम के बाद भी, प्रत्येक रात्रि की थकान से उसे उन दिनों प्रसन्नता ही होती थी।

और राइस!

बुधवार की रात की प्रार्थना-सभा में राइस पहली बार उससे मिला था। फरवरी के महीने से वह वहाँ जाने लगा था। वसंत के मादक-मधुर स्पर्श-द्वारा मन में सिहरन का संचार होने के पूर्व ही, वह एक बेचैनी-सी अनुभव करने लगा था। उस मनहूस ग्रीष्म-काल से जो शून्यता उसमें आ गयी थी, उसे वह अधिक दिनों तक सहन नहीं कर सका। अतः उसने पाजामा और उजली कमीज पहन कर रात में शहर जाने की आदत अपने में डाल ली। वहाँ दवा की दूकान के सामने खड़ा होकर किसी चमत्कार के घटित होने की प्रतीक्षा करता, सिनेमा देखने जाता, अथवा जिन रातों में धर्मोपदेश होता, गान-समारोह या यों ही सामूहिक भीड़ जमा होती, वह निकट के गिरजाघर के पास चला जाता। वहाँ बाहर वह दूसरे लड़कों के साथ चक्कर काटता; किंतु उनका साथ देने के बावजूद वह तब भी मौन और स्वयं में खोया-खोया रहता। किंतु कहीं भी जाने, देखने या बातें करने में उसे अपनी बेचैनी का निदान नहीं मिला—जब तक कि उस रात वह दिखायी नहीं दे गयी।

राइस एक खिड़की के निकट किनारे की बेंच पर बैठा था, जब कि लोगों की भीड़ से उसका चेहरा राइस की ओर घूम पड़ा। वह वहाँ पहले भी जा चुकी थी। राइस उसका नाम जानता था, उसके परिवार के सम्बंध में जानता था, उनकी स्थिति जानता था; किंतु इस रात के पहले उसने उसे कभी नहीं देखा। वह एक छोटी-सी लड़की थी। बिल्कुल ही छोटी—गुड़िया-सी, उसके बाल भूरे थे और उसके होंठों पर एक प्रकार की कोमलता थी। उसकी बड़ी-बड़ी और भूरी आँखों में एक गम्भीरता थी और उसका नाम जो अन अलब्राइट था। उसे देखते हुए, राइस को याद हो आया कि वह उसके साथ प्राथमिक शाला में पढ़ चुकी है। हाई स्कूल में वह उससे एक श्रेणी पीछे थी, यद्यपि राइस से उसका कभी कोई परिचय नहीं था। किंतु अब भीड़ के बीच जब उसका चेहरा राइस को दिखायी पड़ा, तो वहाँ से अपनी आँखें हटा न सका। उसने भी राइस को देखा, क्षण-भर तक वह भी उसकी ओर अपलक देखती रही। वह स्तम्भित रह गयी थी और तब उसने अपने हाथ की संगीत-पुस्तिका पर अपनी आँखें झुका लीं और फिर से गाने लगी।

राइस बाहर इन्तजार करता रहा, जब तक वह गिरजे से बाहर आकर अपने घर की ओर नहीं चलने लगी। उसके साथ उसका भाई भी था। तब राइस उसके पीछे-पीछे उस सड़क पर, लड़कों के एक झुण्ड के साथ चल पड़ा,

यद्यपि अपने मन-ही-मन वह उसकी बगल में चलना चाहता था और कल्पना में वह उसकी बगल में चल भी रहा था। उस रात अपने अकेले कमरे में, जो नाक्स के चले जाने के बाद एकमात्र उसका रह गया था, वह काफी देर तक सो नहीं सका। चारलेन के अपने जीवन से चले जाने के बाद, उसने सोचा था, अब सब समाप्त हो गया। उसने एक नारी-विहीन और उदास-नीरस भविष्य की कल्पना कर रखी थी। उसके मन में यह विश्वास घर कर गया था कि वह फिर किसी को प्यार नहीं कर पायेगा—प्यार के आवेग में कहे जानेवाले निरर्थक शब्दों को वह फिर कभी नहीं कह पायेगा, वह उत्फुल्लता उसमें नहीं आयेगी। उसमें विरक्ति की भावना आ गयी थी और वह सबसे खिंचा-खिंचा, स्वयं में खोकर रह गया था और अब जिस क्षण जो का चेहरा उसे दिखायी पड़ा था, उसी क्षण से यह सब कुछ बदल गया था। चारलेन की याद, जो अभी भी उसके मन में कसक पैदा कर देती थी, एक धुँधली और अप्रिय स्मृति में बदल गयी।

वह फिर दो बार गिरजाघर गया और दोनों बार वह दिखायी पड़ी। राइस हमेशा एक ऐसी बेंच पर बैठता, जहाँ से जो का चेहरा बगल से दिखायी देता। जो ने एक बार भी घूम कर नहीं देखा था; लेकिन राइस को लग रहा था कि वह उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ नहीं थी। वह अपनी बेंच पर बड़ी शान्त-गम्भीर बैठी रहती और उसके कपोलों का नाजुक घुमाव राइस देखता रहता। उसके कपोलों पर उसके बालों का साया होता और उसकी नाक की एक हल्की-सी बाह्य आकृति उसे दिखायी दे जाती। वह इतनी छोटी, इतनी नाजुक थी कि उसे अपने बाहुओं में लेने के लिए राइस के हाथ मचल उठते। हर बार राइस एक किनारे खड़ा रहता। वह गिरजाघर से निकलती और राइस उसे अपने भाई, अपनी माँ, अपने पिता के साथ घर की ओर जाते देखता रहता। और हर बार वह उसके पीछे-पीछे लड़कों के एक झुंड के बीच सड़क पर मौन, स्वयं में खोया-खोया चलता।

घर पर भी उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन आ गया। खेतों में मैथ्यू की बगल में वह जी-तोड़ श्रम करता। काम करते-करते उसके शरीर से पसीना छूटने लगता और यह उसे अच्छा लगने लगा था। उन्हें अभी पूरे खेत में हल जोतना था और दो व्यक्तियों के लिए इतना बड़ा खेत जोतना कोई आसान काम नहीं था। उन्होंने खच्चरों को दो-दो के दल में बाँट लिया था और हर दूसरे दिन वे एक जोड़ को चरागाह में चरने छोड़ देते थे। किंतु स्वयं इनके शरीर

के लिए आराम नहीं था, यद्यपि मैथ्यू ने इस बार अपेक्षाकृत कम एकड़ जमीन में कपास की खेती की थी—वह ज्यादा चरी और मकई उपजा रहा था, विशेषतः चरी। उसने चरागाह में कुछ बछड़े भी रख छोड़े थे, जिन्हें खिला पिला कर हृष्ट-पुष्ट बनाने के बाद वह अच्छी कीमत में बेच सके। राइस हैटी के साथ शोर मचाता, उसे खिझाता—कभी हैटी प्रसन्न हो उठती, कभी झुँझला जाती। मैथ्यू बिना कुछ बोले राइस को आश्चर्य से निहारता रहता। वह प्रसन्न था, चाहे राइस के इस परिवर्तन का कारण कुछ भी हो, और उसने राइस से इस बारे में पूछताछ भी नहीं की।

तीसरी बार, राइस गिरजाघर के दरवाजे की सीढ़ियों के निकट खड़ा जो के आने का इंतजार करता रहा। गिरजा में प्रवचन आरम्भ होने के पहले, यही उपयुक्त समय था; क्योंकि राइस ने यह लक्ष्य कर लिया था कि वह अपने परिवार से अलग अकेले ही गिरजा आती थी और सिर्फ घर लौटते समय ही उनका साथ देती थी। जो के दिखायी देते ही, उसने अपने भीतर एक घबड़ाहट और जकड़न-सी अनुभव की। जो भी उसी क्षण जान गयी, जिस क्षण उसने उसे सीढ़ियों के निकट खड़ा अपनी ओर देखते देखा कि वह क्यों खड़ा था। वह उस आँगन से होकर धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। वह अनुभव कर रही थी कि उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे, उसकी उस पोशाक के नीचे उसके नितम्ब जैसे हिचकोले खा रहे थे और वह अपनी बाँह पर राइस के हाथ के स्पर्श का इंतजार ही कर रही थी।

"जो अन!" राइस बोला। उसकी आवाज उखड़ी और फटी-फटी थी और उसे आवश्यक क्षण में रोकने के लिए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया—"हेलो, जो अन!"

वह रुक गयी। "अरे, हेलो, राइस!" उसकी ओर मुस्कराती हुई देख कर वह बोली और उस मुस्कान से राइस का हृदय बल्लियों उछल पड़ा।

राइस ने उसके छोटे-से-शरीर पर एक नजर डाली और अचानक बड़े हताश भाव से उसने मन में सोचा, अगर आज रात वह नहीं आया होता, तो अच्छा था। वह किसी चौदह साल के लड़के के समान ही अनुभव कर रहा था, जो पहली बार किसी लड़की से मिलने की तारीख तय कर रहा हो!

"जो अन!" वह बोला—"मैं...आज रात तुम मुझे अपने साथ घर तक चलने दो।"

जो प्रत्यक्षतः ठिठकी, मानो इस पर विचार कर रही हो। "अच्छी बात

है—" वह अंततः बोली। वह क्षण-भर का समय जब तक जो मौन रही थी, कष्टप्रद था और उसे यह विश्वास हो गया था कि जो इनकार कर देगी। "अच्छी बात है—" जो बोली—"तुम्हारे साथ चलने में मुझे खुशी ही होगी।"

तब वह गिरजा के भीतर चली गयी। राइस ने एक गहरी साँस छोड़ी और अचानक उसने महसूस किया कि आज कितने दिनों बाद उसने संतोष की यह साँस ली थी। वह हँस पड़ा। मन-ही-मन वह सोच रहा था कि इस बार का वसंत बड़ा सुखद बीतेगा—खेतों में करने के लिए पर्याप्त काम और फिर जो अन का साथ। अब वह गिरजा के अहाते में जाकर और चुपचाप बैठ कर जो के वहाँ से रवाना होने के समय तक उसे निहारते रहना सहन नहीं कर सका। अतः वह बाहर ही इंतजार करता रहा। वह लोगों की मिली-जुली आवाजों के बीच उसके गाने को—उसके निष्पाप गले की मधुर आवाज को—सुनने की कोशिश करता रहा और एक-दो बार उसे विश्वास भी हो गया कि उसने उसकी आवाज सुनी थी।

प्रार्थना समाप्त हो जाने के बाद, वह उससे सीढ़ियों के निकट मिला। क्षण-भर के लिए उसने फिर एक अजीब-सी जकड़न महसूस की; किंतु वह उसे देख कर सिर्फ मुस्करायी और बड़े स्वाभाविक, अभ्यस्त ढंग से, सरलतापूर्वक जो ने उसकी बाँह थाम ली, मानो वे सदा से यों ही जाते रहे हों। दोनों ही जान रहे थे कि उन दोनों पर वृद्ध और युवक समान रूप से आलोचना कर रहे थे और कल यह बात सर्वत्र फैल जायेगी। उसके छोटे-नाजुक शरीर की बगल में चल रहा राइस उससे काफी लम्बा था और उसकी आवाज सुनने के लिए उसे अपना सिर झुकाना पड़ता था।

किंतु उस अंधेरी सड़क पर वे शीघ्र ही अकेले रह गये। बड़ी गम्भीरता-पूर्वक और यथासम्भव वे धीरे-धीरे चल रहे थे। वह एकांत और मौन जब असह्य हो उठा, तो राइस ने खँखार कर अपना गला साफ किया।

"मैं तुम्हें घर तक छोड़ आने का इंतजार किया करता था—" वह बोला।

जो ने आँखें उठा-कर उसे देखा—"और मैं इंतजार कर रही थी कि तुम कब मुझसे यह कहते हो।"

उसकी इस स्वीकृति पर, राइस ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया, जहाँ वह उसकी बाँह को हल्के से थामे हुए थी। जो ने तत्काल ही अपना हाथ दूर हटा लिया और कुछ देर तक वे अलग-अलग चलते रहे। तब राइस ने

फिर उसका हाथ अपनी कुहनी के नीचे ले लिया और इस बार जब उसने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा, तब उसने अपना हाथ हटाया नहीं।

"मैं सोच रही थी, तुम चारलेन से घनिष्ठता बढ़ा रहे हो—" वह बोली।

"ओह!" राइस लापरवाही से बोला—"काफी लम्बे अर्से से मैं चारलेन से नहीं मिला हूँ। लगभग एक साल हो गया।"

"काफी खूबसूरत है वह—" जो अन बोली—"मेरा अनुमान है, वह सबसे सुंदर लड़की है..."

"हाँ!" राइस बोला—"अगर तुम्हें लाल बाल पसंद हों, तब!" उसने जो के बालों की ओर देखा—"स्वयं मुझे भूरे बाल प्रिय हैं।"

जो उसकी ओर देख कर मुस्करायी और वे साथ-साथ चलते रहे। उनके बीच एक सरल-सुखद मैत्री की भावना थी, जो राइस ने चारलेन के साथ कभी नहीं अनुभव की थी। चारलेन के साथ उसने सदा एक तनाव-सा अनुभव किया था, एक दूरी-सी महसूस की थी, शारीरिक भूख महसूस की थी।

"सुनो, जो!" राइस बोला—"क्या मैं तुमसे फिर मिल सकता हूँ—अगले रविवार की रात में? तुम तो खैर गिरजा में रहोगी ही और मैं..."

"तुमने यह कैसे जान लिया कि जो अन कहलाना मुझे पसंद नहीं है?" वह बोली। उसकी आवाज से खुशी जाहिर हो रही थी।

राइस ने हँसते हुए अपना सिर हिलाया। "मैं नहीं जानता था—" वह बोला—"जो पुकारना तुम्हें ज्यादा जँचता है, बस! लेकिन रविवार की रात के बारे में क्या हुआ—मंजूर?"

और वे चलते रहे—मित्र के समान, एक-दूसरे के निकट—यह उनके बीच एक नये प्यार की शुरुआत थी। चारलेन से यह भिन्न था—एक प्रकार की भिन्नता, जो राइस स्वयं बता नहीं सकता था; किंतु यह जो के भिन्न स्वभाव की होने के कारण ही था। वह शांत-गम्भीर थी और उसका व्यवहार मित्रवत् था—राइस ने इसके पहले ऐसा कभी नहीं अनुभव किया था। कुल दो सप्ताहों के भीतर ही, राइस उसे सिर्फ घर तक छोड़ने के बजाय, गिरजाघर भी ले जाने लगा और इससे बाहर दूसरे लड़कों के साथ इंतजार करने के स्थान पर, उसके साथ गिरजाघर में बैठना पड़ता—उसी किताब से उसके साथ गाना पड़ता—दोनों उस किताब का एक-एक कोना पकड़े रहते। चूँकि वह इतनी शांत और शिष्ट थी—नारीत्व की भावना उसमें इतनी प्रबल थी कि राइस उससे थोड़ा भय खाता था और काफी समय तक उसने उसे चूमा भी नहीं।

किंतु अंततः यह भी हो गया। प्रथम बार जो ने इसके प्रति अपनी अनिच्छा प्रकट की, उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया और उसके सशक्त आलिंगन से अपना उष्ण और छोटा शरीर छुड़ाने का प्रयत्न करने लगी। वह चुपचाप, हताश भाव से उसका विरोध करती रही और उसके मुँह छुपा लेने से राइस के होंठ उसके चिकने गालों के किनारे को छू गये। राइस हँस पड़ा। वह उत्तेजित हो उठा था और जोर-जोर से साँस ले रहा था। उसने उसकी ठुड्डी में हाथ लगा कर मुँह ऊपर उठाते हुए अपनी ओर घुमा लिया और उनके होंठ मिल गये। भयभीत जो के होंठ अचानक ही खुले और राइस के होंठों से चिपट गये। वह उससे कस कर चिपट गयी। राइस ने उसके छोटे-से शरीर को देखते हुए उसके इतनी सशक्त होने की कल्पना नहीं की थी। वह हाँफने लगा।

सिहर कर जो उससे दूर हट गयी। उसने फिर अपना मुँह छिपा लिया था और राइस हाँफता हुआ खड़ा उसे देखता रहा। "जो......" वह बोला।

जो की आवाज में उसका रुदन राइस को स्पष्ट सुनाई दे गया। "मेरा खयाल है........." वह बोली—"मेरा खयाल है, अब तुम्हें संतोष हो गया—है न?"

"जो!" वह बोला। उसकी पीड़ा से वह व्यथित हो उठा था—"एक साधारण-सा चुम्बन.........यह सिर्फ मित्रवत् था......"

वह रोषपूर्वक बोली—"तुम अपनी हरकतें करते चलो और किसी लड़की को पूर्णतया रोमांचित कर दो और तब चूम कर कहो, यह तो एक साधारण-सा चुम्बन........."

राइस ने उसे अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया। अपनी माँस-पेशियों में वह एक उष्णता-सी अनुभव कर रहा था और जो का काँपता शरीर उससे सट कर खड़ा था। जो ने जिस गहराई से इस चुम्बन का अर्थ लिया था, उससे वह बुरी तरह विचलित हो उठा था। जो कितनी छोटी, शांत और खुशमिजाज लड़की थी! चारलेन में यह गम्भीरता न थी। उसमें तो एक खिंची-खिंची रहने और सताने की भावना थी—उसके साथ का प्यार एक निर्दोष और उत्तेजक खिलवाड़ था—उसमें तनिक भी गम्भीरता न थी।

"तुम्हें कोई अधिकार नहीं है—" जो ने कहा—"तुम यों ही किसी को चूम कर फिर किसी अन्य लड़की को चूमने नहीं जा सकते। तुम सप्ताहों से मुझे साथ ले जाते रहे—ले आते रहे और चुम्बन के सम्बंध में एक शब्द

नहीं कहा। और फिर अचानक तुम्हारे मन में एक छोटे-से चुम्बन की इच्छा उत्पन्न हुई......"

"जो!" राइस ने अनुनय के स्वर में कहा—"मैं नहीं जानता था। मैं.

वह उससे फिर दूर हट गयी। उसने अपने रुमाल से अपना मुँह पोंछा। "एक सिगरेट दो मुझे—" वह बोली। राइस उसकी इस माँग पर स्तम्भित-सा स्थिर खड़ा रह गया। "मैंने कहा—मुझे एक सिगरेट दो।"

राइस ने उसे एक सिगरेट दी और दियासलाई जला कर उसके मुँह तक ले गया। जो रोषपूर्वक सिगरेट के कश-पर-कश लेने लगी और राइस खड़ा उसे देखता रहा। पहले कश पर उसका गला फँस गया, लेकिन बाद में वह बिना किसी असुविधा के सिगरेट पीने लगी। उसने अपना सिर पीछे झटक दिया और सीधा अंधेरे आकाश की ओर, मुँह ऊपर कर धुआँ छोड़ने लगी।

"मेरा खयाल है, तुम दूसरा नाक्स डनबार बनने की सोच रहे हो—" वह बोली—"चारों ओर इलाके-भर में घूमना और जो दिखायी पड़ जाये, उसे चूम लेना—है न? नाक्स ने डनबारों की जो प्रतिष्ठा बना रखी है, वह मैं जानती हूँ। और अगर तुम सोचते हो कि तुम......"

"मैं वैसा सोचूँगा भी नहीं—" राइस ने विरोध किया—"मैं जानता हूँ, नाक्स ने ऐसा किया......लेकिन मैं—..."

जो ने फिर सिगरेट का कश लिया और उसे स्वयं से दूर फेंक दिया। "अगर मैं ऐसी कोई बात नहीं सुनूँ, तभी अच्छा है—" वह उग्रतापूर्वक बोली—"और जब तुम मुझे चूमने की बात सोचो......" वह अपने पंजों के बल खड़ी हो गयी और उसके मुँह पर अपना मुँह रख दिया। अपने छोटे-छोटे हाथों से उसने उसकी पसलियाँ कस कर पकड़ लीं।......

"इसे कभी मामूली चीज मत समझो। तुम सुन रहे हो न? जब तुम मुझे चूमो, तो सच्चे मन से चूमो—खिलवाड़ समझ कर नहीं!" उसकी आवाज निष्ठुर थी, कुछ हद तक उसमें तिरस्कार भी था और वह बहुत-बहुत गम्भीर थी। उसकी हँसी और उसके क्रोध में जो यह गम्भीरता थी, राइस उस पर मुग्ध था और इसीलिए वह उसे प्यार करता था। किंतु इस प्यार के पीछे वह खुश भी था और चिंतित भी। उसकी जानकारी में कोई ऐसी लड़की नहीं आयी थी, जो इस तरह बिल्कुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष ढंग से अपने मन की बात कह दे और इस जानकारी ने उसे ऐसा स्तब्ध कर दिया कि वह उसके

रोष पर विजय पाने के लिए कुछ नहीं कर सका। उस रात उसने फिर उसे नहीं चूमा—सिर्फ उससे विदा लेने के पहले काफी देर तक उसका हाथ अपने हाथ में लिये रहा।

और जहाँ तक जो का प्रश्न था—वह उसे जाता देखती रही। अपने भीतर वह उस प्यार को उमड़ता अनुभव कर रही थी, जिसे उसने एक लम्बे अर्से से अपने मन में सँजो रखा था। हाईस्कूल में जब राइस उससे एक श्रेणी आगे पढ़ता था, तभी से वह स्कूल के बास्केट-बाल-टीम के इस लम्बे, दुबले-पतले, फुर्तीले लड़के को प्यार करती आ रही थी। राइस टीम में सदा आगे रहता था। जो जानती थी कि जिस स्पष्ट ढंग से उसने अपने मन की बात कह दी थी, राइस उससे स्तम्भित हो उठा था; लेकिन राइस यह नहीं जानता था कि जो के मन में यह भावना हाईस्कूल के समय से ही पनप रही थी। वह यह नहीं जानता था कि गिरजाघर, नाच-समारोह और स्कूल में, जो मन में यह स्वप्न सँजोये, रह-रहकर, उसके सामने से गुजरती थी कि वह उसे भीड़ में भी देख लेगा और अपनी प्यार-भरी नजरों से उसकी ओर निहारेगा। राइस जब उस चपटे चेहरेवाली चारलेन के साथ अधिक मिलने-जुलने लगा था, तो जो के मन में एक कटुता और ईर्ष्या आ गयी थी। राइस चारलेन के प्रति जितनी आसक्ति दिखाता, जो मन-ही-मन उतनी ही क्रुद्ध हो उठती। और अब अंततः राइस ने जो की ओर ध्यान दिया था। स्कूल के बास्केट-बाल-प्रतियोगिताओं में राइस को बड़ी दक्षता से खेलते देख कर, जो ने उसके प्रति मन में भक्ति सँजो ली थी और उसके प्यार की प्रतीक्षा करती रही थी। अंततः उसका पर्याप्त पुरस्कार उसे मिल गया था।

जब वह घर के भीतर गयी, तो उसकी माँ उसी की प्रतीक्षा कर रही थी। "आज कल गिरजाघर से घर वापस आने में तुम काफी देर लगा देती हो—" उसकी माँ ने हल्की झिड़की के स्वर में कहा—"घण्टों पहले से हम अपने बिस्तरों पर सोने के लिए आ चुके हैं।"

"मेरे लिए इंतजार मत किया करो, माँ!" जो छूटते ही बोली। और तब उसने माँ की ओर देखा—एक औरत के समान—"क्योंकि मैं उस लड़के से शादी करने जा रही हूँ, माँ!"

"इस मामले में सावधानी से काम लो, तो अच्छा है—" उसकी माँ ने कहा—"ये डनबार लड़के......तुम बस, सोच-समझ कर कदम उठाना।"

राइस धीरे-धीरे, सोचता हुआ चलता रहा। आज रात उसे जो जानकारी

प्राप्त हुई थी, वह उसी के सम्बंध में सोच रहा था। वह जो को पा सकता था; आज रात ही वह उसे अपनी बना सकता था। वह जानता था कि उसके हाथ के दबाव के नीचे जो इनकार नहीं कर सकती थी और उसके साथ सोने को तैयार हो जाती और वह स्वयं डर गया था। उसे ताज्जुब हो रहा था कि नाक्स के मन में भी कभी यह भय आया था या नहीं—किंतु जो के समर्पण के पीछे जो घातक गम्भीरता थी, उसकी ओर नाक्स ने ध्यान नहीं दिया होगा। बिना कुछ सोचे, वह उससे अपनी वासना की पूर्ति कर लेता। जो की इच्छा क्या थी और उसके विरुद्ध जाने का परिणाम घातक भी हो सकता है, यह सब वह सोचता भी नहीं। लेकिन राइस जानता था। जो सारी परिस्थितियों को जितना समझती थी, उतना ही वह भी समझता था, यद्यपि इस सम्बंध में उनके बीच कोई बातचीत नहीं हुई थी। जो उसकी थी—साथ घूमने के लिए, बातें करने के लिए, चूमने के लिए और प्यार करने के लिए! किंतु यह यथार्थ था, कोई खिलवाड़ नहीं था और जब राइस उस पर अपना हाथ रखेगा, तो वह वापस नहीं मुड़ सकता।

राइस इस सम्बंध में सोचना चाहता था। वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक इसका निर्णय करना चाहता था कि क्या वह जो को सचमुच इस बुरी तरह चाहता था! लेकिन वह सोच नहीं सका। वसंत उसके मन में हिलोरें ले रहा था और उस अंधेरी सड़क पर वह मस्ती से चला जा रहा था। रुक कर उसने पैरों से जूते निकाल लिये, जिससे वह अपने पैरों की उँगलियों के बीच रात की इस सर्द धूल का आनंददायक स्पर्श अनुभव कर सके। उसे स्मरण हो आया कि अपने बचपन के दिनों में वह इस प्रकार किया करता था। वह अपनी जेबों में हाथ डाले, मुँह से सीटी बजाता, चलता रहा। उसके चमकते हुए जूते फीतों से बँधे उसके गले में लटक रहे थे और उसके सड़क पर मस्ती के साथ चलते समय उसकी छाती पर रह-रह कर टकरा उठते थे। नंगे पैर वह बड़ी सरलता और आसानी से चल रहा था और साथ ही, वह सोच रहा था कि जो मेरे प्यार को बंधन में रखना चाहती है। औरतें हमेशा ही अपने प्यार को सीमित रखना चाहती हैं—उसी में उन्हें संतोष मिलता है। किंतु वसंत के मौसम में मर्द को हमेशा उन्मुक्त होना चाहिए। घाटी में घुसने के रास्ते के निकट ही, सड़क पर खड़ी मोटर, अंधेरे में भी उसे दिखायी दे गयी। उसने सीटी बजाना बंद कर दिया और पेड़ों के साये में होता हुआ और भी धीमे से चलने लगा। वह उसी प्रकार सतर्कता से चलता रहा,

जब तक उसके कानों तक दो व्यक्तियों के बातचीत की भनभनाहट, उनका तर्क-वितर्क सुनायी नहीं देने लगा। तब वह मोटर की बगल में चला गया और खिड़की से होकर उसने अपना सिर भीतर डाल दिया।

"तुम दोनों आखिर शादी क्यों नहीं कर लेते?" वह बोला।

वे अचानक चौंक कर एक-दूसरे से अलग हो गये।

"राइस!" आर्लिस तीखे स्वर में बोली—"इस प्रकार आकर ताक-झाँक करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है..."

राइस मुस्कराया—"अगर तुम सुनती होती, तो आधा मील दूर से ही तुम मेरे आने की आवाज सुन सकती थी।"

क्रैफोर्ड हँस पड़ा। "मैंने उसे आते सुना था—" वह बोला—"लेकिन मैंने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बस!"

राइस मोटर की उस खिड़की पर झुक गया। "तुम लोग-जैसे वयस्क व्यक्तियों को इस तरह किसी मोटर में चोरी-छिपे बैठ कर प्यार नहीं करना चाहिए—" वह बोला—"इन मूर्खताओं का तुम एकबारगी खात्मा क्यों नहीं कर देते?"

आर्लिस हँसी—"हो सकता है, अपनी इस मूर्खता में ही हमें आनंद आता हो, राइस! जैसा कि तुम स्वयं करते हो।"

राइस ने पीछे मुड़ कर उस रास्ते को देखा, जिस पर चल कर वह आया था। "मैं तुम्हें एक बात बता दूँ—" वह बोला—"जहाँ से मैं आ रहा हूँ, वहाँ इस मूर्खता की गुंजाइश ही नहीं है। और कोई भी चीज हो सकती है; पर यह मूर्खता नहीं।" उसने वापस अंधेरे में छुपे उनके चेहरों की ओर देखा। "तुम्हारे पास एक सिगरेट है, क्रैफोर्ड?" क्रैफोर्ड ने उसे एक सिगरेट दिया और राइस ने उसे सुलगा लिया। दियासलाई की रोशनी में क्षण-भर के लिए उनके चेहरे अचानक दिखायी पड़े और फिर रोशनी बुझते ही अंधकार ने अपना आवरण डाल दिया। "तुम जानते हो, खाने की कोई चीज अगर फँसाने के लिए भी सामने रखी हो, तो उसे देख कर एक भूखे कुत्ते की क्या हालत होती है? मैं तुम्हें बता सकता हूँ। मैं जानता हूँ, भय और प्रलोभन के बीच उसके मन में वस्तुतः क्या भावना उठती है।"

"आखिर यह सब क्या बक रहे हो तुम?" आर्लिस बोली। उसकी आवाज में क्रोध की थोड़ी झलक थी—"चाँद का पागलपन तुम पर सवार हो गया है, राइस डनबार।"

राइस मोटर से दूर हट गया। "साल के इस मौसम में यह मलेरिया के समान ही सर्वत्र फैल जाता है।" अंधेरे की सुरक्षा का लाभ लेते हुए उसने उनकी ओर देखा—"मेरा खयाल है, तुममें भी कुत्ते की वह भावना है थोड़ी—" वह वहाँ से जाने के लिए मुड़ा। "तुम्हारे बदन में जो छलक है, उन्हें रात के इन ओस-कणों के कारण सर्द मत होने देना।" वह बोला। वह अब तक घर की ओर जाने भी लगा था; लेकिन वह रुका और उनकी ओर मुड़ कर चिल्लाया—"मैं शादी का एक सुनिश्चित तरीका जानता हूँ। यह एक ऐसा तरीका है, जहाँ पापा विरोध कर ही नहीं सकते।" वह हँसा—उन्मुक्त और खुश होकर और उनसे दूर जाते हुए बोला—"सच तो यह है कि पापा को तुम्हें अपनी बंदूक का निशाना बनाने में खुशी होगी।"

राइस के चले जाने के बाद, उसकी बातों को थाम कर आर्लिस और क्रैफोर्ड, दोनों हँस पड़े।

"वह ठीक कह रहा है, तुम जानती हो?" हँसी रुकने पर क्रैफोर्ड बोला—"तब मैथ्यू 'ना' नहीं कर सकता।"

आर्लिस अचानक बदल गयी। वह दूसरी ओर मुँह मोड़ कर बैठ गयी। "बस, तुम अभी वही सोच रहे हो सिर्फ—" वह बोली—"प्यार, या शादी करने या...टी. वी. ए. अथवा हमें क्यों प्रतीक्षा करनी पड़ रही है, यह तुम्हारे दिमाग में नहीं है अभी। तुम तो बस सिर्फ......"

"काफी दिन हो गये हमें एक दूसरे से प्यार करते हुए—" क्रैफोर्ड ने कुछ उतावलेपन के साथ कहा। इसी प्रकार उनके प्यार के बीच में कलह चलता रहता था—"काफी देर हो गयी है, आर्लिस! इस प्रकार हम प्रति रात्रि उससे स्वयं को वंचित नहीं रख सकते, जिसे करने की इजाजत प्यार देता है......"

"हम लोग एक साथ हैं—" आर्लिस बोली—"और यह पर्याप्त है। हम एक-दूसरे को देख सकते हैं, एक-दूसरे से बातें कर सकते हैं, एक-दूसरे का हाथ आपस में ले सकते हैं। उन्होंने हमें इन चीजों से वंचित नहीं रखा है—रखा है क्या?"

"नहीं!" क्रैफोर्ड ने कटुता से कहा—"उसने इतनी कृपा हम पर कर रखी है।"

वे कुछ देर तक खामोश बैठे रहे। उसी प्रकार, जिस प्रकार आज तक उन्होंने स्वयं अपने बीच इस मौन को पनपने दिया था। क्रैफोर्ड चुपचाप

सिगरेट पीता रहा। उसकी उत्तेजना धीरे-धीरे ठंडी पड़ती जा रही थी।

"मुझे खेद है—" अंततः वह बोला—"यह बस......"

आर्लिस उसकी ओर घूम पड़ी। "मैं जानती हूँ, क्रैफोर्ड!" वह बोली—"मैं जानती हूँ।" उसकी आवाज में इस मौन से परिवर्तन का और पुनः अपने बीच प्रसन्नता और आशा को स्थान देने का अनुरोध-सा था—"समय आने पर वे भी बदल जायेंगे। अगर हम सिर्फ धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे, तो उन्हें ज्ञात हो जायेगा कि हम वस्तुतः एक-दूसरे को प्यार करते हैं।"

क्रैफोर्ड ने उसकी ओर विचारपूर्ण मुद्रा में देखा। "विचार बुरा नहीं है—" वह धीरे से बोला—"अगर तुम्हें उससे यह कहने की नौबत आ जाये कि तुम गर्भवती हो, तो वह तुम्हारे रास्ते में रुकावट नहीं बन सकता। अगर तुममें यह हिम्मत हो, तो..."

"तुम मैथ्यू डनबार को नहीं जानते—" वह हल्की-सी हँसी हँसती हुई बोली—"वह उस बच्चे को तब भी हमेशा डनबार ही मानेगा।"

क्रैफोर्ड ने खिड़की से सिगरेट का टुकड़ा दूर फेंक दिया। "मैं उससे इस सम्बन्ध में बात करूँगा—" उसने दृढ़ता से कहा—"हम इस प्रकार..." वह फिर हँसा और उसने अपने मन से इस विचार को दूर हटाने का प्रयास किया। उनके अलग-अलग रहने की बात को लेकर आपस में लगातार कटुता बढ़ाते जाने से कोई लाभ नहीं था। "अगर हमारे प्यार की यही प्रगति रहेगी, तो शादी होने के पूर्व ही, रात्रि की यह ठंड हमारे अंग-अंग में पीड़ा उत्पन्न कर देगी।"

"तुम जानते हो, मैंने उन्हें क्या कहा है—" आर्लिस मधुरता से बोली—"और देर या सबेर उन्हें अपनी अनुमति देनी ही होगी..."

"मैंने कहा न, मैं उससे बातें करनेवाला हूँ—" क्रैफोर्ड ने कहा। उसकी आवाज बदल गयी थी और उसकी बाँहें आर्लिस की ओर बढ़ चुकी थीं—"अब, आओ भी यहाँ!"

वे एक-दूसरे से चिपट गये और बहुत देर तक उनके होंठ आपस में मिले रहे। वे जानते थे कि अलग-अलग होने के पहले वे कितनी देर तक एक-दूसरे से चिपक कर रह सकते थे। मोटर में साथ-साथ यों बैठ कर बिताने के लिए जाड़े की रात बहुत लम्बी हुआ करती थी। अब वसंत में हालत और भी खराब थी—बहुत ही खराब। क्रैफोर्ड ने अंधेरे में दूसरे सिगरेट की तलाश की।

"वह भूल गया है कि इस वक्त की भावनाएँ कैसी होती हैं—" वह

बोला—"वह काफी बूढ़ा हो चुका है और अब उसे यह याद रखने की जरूरत नहीं है कि जवानी में जब रक्त को वसंत का मादक स्पर्श सहला जाता है, तो उस वक्त मन की भावनाएँ क्या होती हैं। अगर उसे यह याद रहता, तो वह हम लोगों के साथ यह ज्यादती नहीं करता।"

किंतु मैथ्यू भी वसंत के प्रभाव से अछूता नहीं बचा था। बहुत पहले ही उस पर इसका असर हुआ—मन में एक ऐसी गहरी अकुलाहट उठी, जो वसंत की रोपनी की व्यस्तता और कड़े श्रम में जुटे रहने के बावजूद नहीं दब सकी। मौसम की तरंग के साथ दिन-पर-दिन यह अकुलाहट जोर पकड़ती गयी और वह अपने खाली कमरे में, खाली बिस्तरे पर, बेचैनी से छटपटाया करता। उसे वे दिन याद आ जाते, जब छाना अपनी सारी उष्णता ले बगल में उससे लिपट कर सोयी रहती थी। और, एक दिन जब वह खेतों में राइस के साथ काम कर रहा था, उसने अपना खच्चर कतार के अंत में एक पेड़ से बाँध दिया और राइस से कहा कि उसे कुछ काम से बाहर जाना है, सो राइस वहीं उसकी प्रतीक्षा करे।

वह घाटी के बाहर निकल आया। वह, जैसी कि उसकी आदत थी, धीरे-धीरे पहाड़ियों पर ऊपर की ओर बढ़ता चला गया। रह-रह कर उसकी माँस-पेशियाँ फड़क उठती थीं और वह मन में एक तरलता का अनुभव कर रहा था। उसमें अभी भी पर्याप्त स्फूर्ति थी—शक्ति थी, यद्यपि जितनी उसकी उम्र थी, वह उससे अधिक बूढ़ा नजर आता था; क्योंकि उसने जान-बूझ कर स्वयं को वैसा बना लिया था—धीमा! पाँच मील का रास्ता उसने बिना किसी जल्दीबाजी के तय किया। वह सीधे रास्ते से नहीं चल रहा था, बल्कि पहाड़ियों और घाटियों से, झाड़ियों तथा वृक्षों से होकर बढ़ता जा रहा था। वह इसी प्रकार तब तक चलता रहा, जब तक वह उस पथरीली चट्टान तक नहीं आ गया, जिसकी उसे तलाश थी। तब वह रुक गया और वहाँ से झाँक कर उसने नीचे बने उस छोटे-से साफ-सुथरे घर को देखा। मकान सफेद रंग से रँगा हुआ था और उसके किनारों पर बड़े सलीके से लगाया गया हरा रंग उसे और खूबसूरत बना दे रहा था। इस इलाके में अपने ढंग का यह अकेला ही मकान था और उसका आँगन बड़े तरीके से साफ-सुथरा रखा गया था। तार पर कपड़े टँगे हुए थे, जो हवा से फड़फड़ा रहे थे और वसंत की इस धूप में बेहद उजले नजर आ रहे थे। सामने का बरामदा खूँटे गाड़-गाड़ कर घेर दिया गया था और ये खूँटे सफेद रंग से पुते हुए थे। पुराने टायरों के काले-

काले घेरों में फूल लगे हुए थे। इन टायरों के रबर पुराने हो गये थे और किनारों पर फट गये थे। मकान की बगल में ही देवदार की लकड़ी का बना एक गिरजाघर था। गिरजाघर अब काफी पुराना हो चुका था और एक ओर झुक आया था। उसके दरवाजे खुल कर झूल रहे थे और हवा के झोंके बे-रोक-टोक भीतर घुस जाते थे, खिड़कियाँ लापरवाही और छोटे बच्चों की शरारतों के कारण टूट चुकी थीं। गिरजाघर के तीन ओर के हिस्सों में दरारें पड़ गयी थीं और उसके नीचे की लकड़ियों के अधूरे निशान बाकी रह गये थे।

किंतु मैथ्यू इस दृश्य को बेपरवाही से नहीं देख रहा था। वह मकान के रसोईघर की खिड़की के पर्दे को गौर से देख रहा था। पर्दा ऊपर उठा हुआ था, जिससे प्रकाश अंदर जा सके और मैथ्यू संतोष से मुस्कराया। निरर्थक ही पाँच मील चल कर आना उसे कभी पसंद नहीं आता। वह पहाड़ी के किनारे से नीचे उतरने लगा। अब वह तेज चल रहा था। झाड़ियों से होकर राह बनाता हुआ वह तब तक आगे बढ़ता गया, जब तक बिल्कुल खुले में नहीं आ गया। तब वह चरागाह से होकर मकान के पिछवाड़े की ओर बढ़ा। जब तक वह वहाँ पहुँचा, वह बाहर आँगन में निकल आयी थी और कुछ और कपड़े सूखने के लिए फैला रही थी। तार के उस घेरे के निकट पहुँच कर मैथ्यू रुक गया, जो पिछले आँगन के चारों ओर लगा हुआ था।

"कैसी हो, मिज ऐंसन!" वह बोला—"कैसी हो आज तुम?"

वह आश्चर्य से मुड़ी। "अरे मि. डनबार!" वह बोली और हँस पड़ी। हँसी से उसका भारी बदन हिल रहा था। "पिछले ही सप्ताह मैं स्वयं से कह रही थी—'मैथ्यू डनबार से तुम्हारी भेंट हुए काफी दिन बीत गये है, एडना! मुझे ताज्जुब हो रहा है, कैसा है, वह इन दिनों!'"

"बिल्कुल ठीक हूँ, मिज ऐंसन!" मैथ्यू ने कहा—"तुम कैसी हो इन दिनों?"

"मेरे विचार से, एक विधवा को जैसी रहना चाहिए, वैसी ही—अच्छी हूँ—" वह बोली—"तुम भीतर रसोईघर में आकर एक प्याला चाय क्यों नहीं पी लेते?"

"इस कृपा के लिए धन्यवाद, मैडम!" मैथ्यू बोला। वह उस तार के घेरे से झुक कर अंदर चला आया और वे साथ-साथ उस आँगन से होकर रसोईघर में पहुँच गये।

मैथ्यू मेज के निकट बैठ गया और उसे अँगीठी के पास जाकर व्यस्त भाव से

आग को कुदेरते हुए देखता रहा। उसने अँगीठी पर केतली रख दी और प्याले तथा तश्तरियाँ बाहर निकाल लीं। सारे समय वह कुछ-न-कुछ बात करती ही रही। एक बार, खिड़की के पास गुजरते हुए, वह रुकी और अपने में ही खोयी, उसने खिड़की का पर्दा नीचे गिरा दिया। वह हमेशा बड़ी कुशलता से यह काम कर लिया करती थी और उस वक्त ऐसा लगता था कि वह अजाने ही यह कर रही है।

मैथ्यू बैठा, धीरज के साथ उसे देखता हुआ, प्रतीक्षा करता रहा। काफी के बजाय गर्म चाय पीना मिज ऐंसन को बहुत प्रिय था और गर्मी के मौसम में स्वाद बदलने के लिए बर्फ देकर दूसरे ढंग से बनायी गयी चाय के अलावा, यही एक ऐसा घर था, जहाँ मैथ्यू को सदा चाय पीने को मिलती। वह एक बड़े और भरे-पूरे शरीरवाली गोल औरत थी। उसकी बाँहें मजबूत और भारी थीं। उसके बाल छोटे-छोटे थे और वह उन घुँघराले बालों को यों सँवार कर रखती थी कि उसका चेहरा जवान, निष्कपट और कोमल दीखता था। उसके शरीर की सभी रेखाएँ सीधी ऊपर की ओर चली थीं—उसके मुँह का घुमाव, उसकी आँखों का झुकाव; हँसने से उसके मुँह पर पड़ जानेवाली झुर्रियाँ!

मैथ्यू जानता था कि बहुत पहले, उसकी शादी एक भ्रमणशील धर्म-प्रचारक के साथ हुई थी, जिसका नाम लेफेयेटे ऐंसन था। उस वक्त, वे अपना सारा समय प्रति शनिवार को छोटे-छोटे शहरों में घूम कर धर्म-प्रचार करने में लगाते और जितने पैसे उनके पास आते, वे उन्हें उस गिरजाघर के निर्माण-कार्य में खर्च देते, जो इस मकान की बगल में बना था। सारी जिंदगी, जब तक कि गिरजाघर बनता रहा, दोनों पति-पत्नी एक खेमे में रहते आये थे; क्योंकि किराये के मकान या स्वयं मकान बनवाने के लिए ऐंसन एक अधेला भी खर्च करने को तैयार नहीं था। वह एक लम्बा, गहरे रंग का और जिद्दी स्वभाव का व्यक्ति था। जब उसे कहने का उत्साह नहीं होता, तो बहुत कम बोला करता था, जब कि मिज ऐंसन हमेशा से ऐसी ही थी, जैसी वह अब थी—हमेशा प्रसन्न और उन्मुक्त हास्य बिखेरनेवाली। मैथ्यू को बहुधा ताज्जुब हुआ करता था कि कैसे दोनों व्यक्तियों की आपस में मुलाकात हो गयी और दोनों ने शादी कर ली।

किंतु मिज ऐंसन संतुष्ट प्रतीत होती थी। साल-दर-साल वह खेमे में रह कर गुजारती गयी। खेमे के दरवाजे के सामने की जमीन में कुछ फूल-भर लगे होते और बहुधा वह अपने लबादे में अपने धर्मप्रचारक पति को उस गिरजाघर

के बनाने में मदद देती दिखायी दे जाती थी। वह सीढ़ी पर चढ़ा रहता और मिज ऐंसन उसे कीले और लकड़ियाँ उठा-उठा कर दिया करती। समाप्ति के निकट पहुँचकर, जब कि गिरजाघर का बनना लगभग समाप्त हो चुका था, तख्ते जमा कर छत बनाते समय, धर्मप्रचारक ऊपर से फिसल कर गिर पड़ा और उसकी टाँग टूट गयी। बचा हुआ काम मिज ऐंसन ने पूरा किया। वह अपने लबादे में भारी-भरकम शरीर लिये रेंग कर ऊपर चढ़ जाती, मुँह में वह तख्तों को जड़ने के लिए कीलें दबाये रहती, जब कि धर्म-प्रचारक नीचे जमीन पर बैठा रहता। उसकी प्लास्टर लगी हुई टाँग सीधी सामने की ओर पसरी रहती और रोषपूर्वक छोटी आरी और मुँगरी से नये तख्ते तैयार करने में जुटा रहता। जब उसके चारों ओर तख्ते के ढेर इकट्ठे हो जाते, तो वह हाथों और एक घुटने पर रेंगता हुआ उन तख्तों को सूखने के लिए उनके टाल लगा कर रख देता।

निर्माण-काल में गिरजाघर को विभिन्न मौसमों के थपेड़े सहन करने पड़े। जब पैसे की उपलब्धि नहीं होती, तो काम काफी समय तक रुका रहता और गिरजाघर की छत पानी के थपेड़ों को सहने के लिए वैसी ही खुली रहती। जब गिरजाघर बन कर इस लायक हुआ कि धर्म प्रचारक ऐंसन अपना धर्मोपदेश वहाँ दे सके, तब तक वह बहुत पुराना हो चुका था। इस गिरजाघर से बहुत-से परिवारों को कोई खास लगाव नहीं था—अलावे, धर्म-प्रचारक ऐंसन की मान्यताएँ, उसका सम्प्रदाय कुछ अस्पष्ट था और बहुत जल्दी ही वह फिर सड़क के नुक्कड़ों पर खड़ा होकर धर्म-प्रचार करने के अपने पुराने ढर्रे पर लौट आया, जिसका वह अभ्यस्त था। अपने खेमे—अपने घर—की बगल में खड़े उस गिरजाघर को उसने समय और मौसम के थपेड़े खाने के लिए यों ही खाली छोड़ दिया। प्रत्यक्षतः ही धर्म-प्रचारक को इसकी कोई विशेष चिंता नहीं थी। गिरजाघर के इस निर्माण के लिए भी वह कोई खास चिंतित नहीं था और उसने पर्याप्त शक्ति इसमें नहीं लगायी, अथवा, शायद, दीर्घ काल से अभ्यस्त होने के कारण, उसे शहर की सड़क पर खड़ा होकर धर्मोपदेश देना, गिरजाघर में धर्मोपदेश देने की अपेक्षा अधिक सुखद और सुविधाजनक लगा। गिरजाघर में वह सिर्फ अपनी बाइबिल पढ़ता और अपने धर्मोपदेश तैयार करता। वह अगली बेंच पर बैठ जाता और उसके सामने का खाली सूना व्याख्यान-मंच डेस्क का काम देता। कुछ तख्ते बिना पूरी तरह सुखाये जाने के पहले ही छत में लगा दिये गये थे और बहुत जल्दी ही वे अपनी जगह से

खिसक गये। स्वभावतः ही छत में बड़ी-बड़ी दरारें रह गयीं, जिनसे आकाश दिखायी देता था और वर्षा का पानी सीधा भीतर पहुँच जाता था। किंतु इससे भी उसे कोई परेशानी नहीं हुई। एक दिन मिज ऐंसन ने उसे वहाँ व्याख्यान-मंच की उस डेस्क पर लुढ़का हुआ पाया। वह काफी देर तक प्रतीक्षा करती रही —पूरा एक दिन-रात और दूसरे दिन में थोड़ी देर तक और। फिर वह उसे वहाँ देखने आयी थी। वह जानती थी कि उसके पति को यह पसंद नहीं था कि कोई उसके काम में बाधा पहुँचाये और मिज ऐंसन, सबसे अधिक एक कर्तव्यपरायणा पत्नी थी।

बीमे के पैसे से उसने—कुछ लोगों को इसका भी ताज्जुब था कि क्या उस धर्म-प्रचारक ने, जो गिरजा के लिए लकड़ियाँ जुटाने का इतना भूखा था, स्वयं वह बीमा-पालिसी ली थी—इस छोटे-से मकान को स्वयं के लिए किराये पर ले लिया था—उसी जमीन पर, जहाँ पहले उसका खेमा था। उसने ऐसा इसलिए किया था कि उसे नये सिरे से कहीं और फिर बगीचा लगाना न पड़े। उसने स्वयं ही इस मकान को अपने हाथों से सफेद रँगा था और किनारों पर हरा रंग लगाया था। बिना रंगी इमारतों के उस इलाके में उसका यह मकान वस्तुतः एक आश्चर्य था। तब वह स्वयं वहीं रहने लगी। वर्ष-पर-वर्ष गुजरते गये और वह पहले से अधिक भारी-भरकम तथा बूढ़ी होती गयी। धर्मोपदेशक के साथ इतने वर्ष रहने पर भी उसके चेहरे की जो खुश और मुस्कराती रेखाएँ थीं, वे कभी धूमिल नहीं हुईं—वे और अधिक गहरी होती गयीं। वह पहले से भी अधिक मस्त रहने लगी। वह घर को बहुत साफ-सुथरा रखती थी—फर्नीचर की धूल साफ की हुई होती थी और वे व्यवस्थित ढंग से रखे रहते थे तथा कुर्सियों की पीठ पर एवं मेजों पर बर्फ-से सफेद छोटे छोटे रुमाल रखे होते थे। रसोईघर में उसके बर्तन दीवार में लगे छोटे-छोटे चमकते खानों में करीने से सजा कर रखे रहते थे और एक दिन भी ऐसा नहीं जाता था, जब कि पिछवाड़े के आँगन में कपड़े टाँगने के लिए बाँधे हुए तारों पर, सफेद धुली हुई चादरें और तकिये के खोल नहीं सूखते होते थे। अपने जलावन के लिए वह धीरे-धीरे, प्रति वर्ष गिरजाघर की इमारत से लकड़ियाँ निकाल लेती—पुरानी लकड़ियाँ बड़े मजे में उसकी अँगीठी में धू-धू करके जल उठतीं।

कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे, जिन्हें ताज्जुब होता था कि उस छोटे-से साफ-सुथरे घर का पूरा खर्च सम्भालने के बाद, क्या बीमे से प्राप्त होनेवाली रकम इतनी

होती थी कि मिज ऐंसन इतने वर्षों तक इस शानो-शौकत से रह सके। लेकिन कुछ ऐसे लोग भी थे और ऐसे लोगों की संख्या ही अधिक थी—जो जानते थे कि मिज ऐंसन, बड़ी मेहमानवाज, मित्रवत् और संतोषी प्रवृत्ति की थी। कोई नहीं जानता था कि यह कब और कैसे आरम्भ हुआ था, कैसे यह खबर घाटियों और पहाड़ियों में फैल गयी थी; लेकिन ऐसे बहुत-से लोग थे, जो मिज ऐंसन के मकान की उस चट्टान तक पहुँचने लगे। वे वहाँ पहुँच कर रसोईघर की खिड़की के पर्दे की स्थिति जानने के लिए नीचे झाँक कर देखा करते थे; क्योंकि मिज ऐंसन को यह पसंद नहीं था कि कभी भी दो पुरुष एक साथ उसके घर पर मिलें और बातचीत करें।

मैथ्यू काफी पहले से मिज ऐंसन के पास आता था। छाना की मृत्यु के बाद साल-भर तक उसने स्वयं पर संयम रखा था और अभी भी वह साल में एक या दो बार से अधिक मिज ऐंसन के पास नहीं आता था। बहुधा वह खेतों में काम करते-करते रुक जाता और मिज ऐंसन के मकान की दिशा में देखने लगता, जैसे वह पहाड़ियों और घाटियों के ऊपर से होकर उस छोटे-से सफेद मकान को देख सकेगा, जिसके किनारों पर हरा रंग पुता हुआ था। और तब वह इन्कार में अपना सिर हिलाता और स्वयं से कहता कि अभी वहाँ जाने का समय नहीं आया है। और काफी दिनों बाद—साल में एक या दो बार—बिना इस सम्बंध में कुछ सोचे वह पाँच मील की दूरी तय कर मिज ऐंसन के मकान पहुँच जाता।

मिज ऐंसन अँगीठी के निकट से मेज के पास आयी और गर्म चाय का प्याला मैथ्यू के सामने रख दिया। जब तक वह उसके पास बैठ नहीं गयी, मैथ्यू अपने प्याले की ओर देखता खामोशी से इंतजार करता रहा। तब उसने अपना प्याला उठा लिया। प्याला बिल्कुल सादी किस्म का था—बिल्कुल पारदर्शक के समान स्वच्छ और मैथ्यू के बड़े और रुखे हाथों की तुलना में बड़ा कमजोर-सा दीख रहा था।

"नीबू ?" मिज ऐंसन ने पूछा—"चीनी ?"

मैथ्यू ने नीबू भी लिया और चीनी भी और चाँदी के एक छोटे-से चम्मच से उसने चाय में चीनी मिला ली। फिर उसने उस नाजुक प्याले को उठा लिया और चाय पीने लगा। उसके नथुनों में चाय की वह उष्ण गंध व्याप्त हो गयी। चाय की गंध मिज ऐंसन की तरह थी—उसने मन-ही-मन निर्णय किया—या फिर, हो सकता है, मिज ऐंसन ही गर्म और सुगंधित चाय के समान थी।

दोनों में कोई भी बात हो, गंध थी बड़ी प्यारी !

"परिवार के लोग कैसे हैं, मि. डनबार ?" वह बोली—"मैं बहुधा समय-समय पर सोचा करती हूँ कि कैसे दिन गुजार रहे हो तुम लोग !"

"अच्छे हैं सब—" मैथ्यू बोला—"नाक्स जा चुका है और जेसे जान तथा कौनी भी !"

मिज ऐंसन के चेहरे पर सहानुभूति झलक उठी। "मैंने सुना था कि कौनी किसी दूसरे आदमी के साथ भाग गयी—" वह बोली—"ताज्जुब है, उसके दिमाग में यह फितूर आया कहाँ से ?"

मैथ्यू हँसा। "मेरा खयाल है, जेसे जान उसे संतुष्ट नहीं रख सका—" वह बोला—"साधारणतया यही कारण हुआ करता है—है न ?"

उसने सिर हिला कर सहमति व्यक्त की—"साधारणतया ऐसा ही होता है। किंतु अगर कोई औरत धीरजवाली है......" उसने अपना सिर इन्कार में हिलाया और बात का विषय बदल दिया—"मैं शर्त बद कर कह सकती हूँ कि वह पुराना मकान तुम्हें बहुत खाली-खाली लगता होगा, मि. डनबार !"

"लगता तो है—" मैथ्यू ने कहा। उसने ठंडी साँस ली और कुर्सी में बैठे-बैठे कसमसाया। उसने फिर चाय की एक घूँट ली—"मुझे वे दिन याद हैं, जब घाटी में लोगों की चहल-पहल बनी रहती थी। मैं, मेरे सभी भाई, मेरी पत्नी और छोटे-छोटे बच्चे...अब यह बहुत सूना-सूना लगता है। बस, हम यों ही चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं—व्यर्थ की बातें करते रहते हैं।"

प्यालों में फिर से चाय भरने के लिए वह उठ गयी। मैथ्यू ने फिर चीनी और नीबू लिया और मिज ऐंसन अपनी जगह पर बैठ गयी।

"परिवार ऐसे ही चलता है और ऐसे ही बढ़ता भी है—" मिज ऐंसन बोली। वह आगे की ओर झुक आयी और उसने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया—"वे दिन वापस आ जायेंगे—जब आर्लिस, राइस और हैटी के बच्चे होंगे, तुम्हारे जानने-समझने के पहले ही घाटी में चारों ओर डनबार-ही-डनबार घूमते होंगे।"

मैथ्यू ने प्याला दूर खिसका दिया। "नहीं," वह बोला—"डनबार की घाटी में नहीं ! टी. वी. ए. सारी चीजें बदलकर रख दे रही है।"

मिज ऐंसन उसी प्रकार हँसती रही। "अगर टी. वी. ए. नहीं होती, तो उसकी जगह पर कोई और चीज यह परिवर्तन ले आती।" वह बोली—"हम सबके जीवन में परिवर्तन आते हैं, मि. डनबार ! अच्छे और बुरे—दोनों ही

तरह के परिवर्तन। तुम इन्हें पसंद नहीं करते हो; क्योंकि तुम्हारा पालन-पोषण पुराने संस्कारों के अनुसार हुआ है, जैसी कि मैं स्वयं हूँ। और तुम्हारे बच्चे भी इन परिवर्तनों को पसंद नहीं करेंगे—वे पीछे मुड़ कर अपने अतीत की ओर देखेंगे।" उसने अपनी उँगलियों से उसका हाथ थपथपाया और फिर अपना हाथ खींच लिया—"तुम, बस, उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हो, मि. डनबार! तुम्हारे साथ बस, यही बात है—आगे बढ़ रहे हो तुम—हम सब लोगों की तरह!"

मैथ्यू अपनी कुर्सी में धँस गया और चारों ओर उसने अपनी नजरें दौड़ायीं —"तुम्हारा रसोईघर काफी खूबसूरत है, मिज ऐंसन! काफी खूबसूरत!"

वह आत्मतुष्टि के भाव से मुस्करायी—"मैं इसे सुव्यवस्थित रखने की चेष्टा करती हूँ। मुझे अच्छी चीजें पसंद हैं। जीवन में एक बार जम कर रहने के लिए हर व्यक्ति को शांत और आरामदेह जगह की जरूरत पड़ती ही है। मेरे विचार से, अगर गिरजाघर बनाने के बजाय, धर्म-प्रचारक महोदय ने अपने रहने के लिए घर बनाया होता, तो वह ज्यादा दिनों तक जिंदा रहते। मैं हमेशा से यह कहती रही हूँ और मैंने इसे सत्य प्रमाणित कर दिया है।"

"बात बच्चों तक ही सीमित नहीं है—" मैथ्यू ने अचानक कहा—"टी. वी. ए. चाहती है कि मैं घाटी बेच दूँ। उसका कहना है कि पानी को रास्ता देने के लिए मुझे वहाँ से हट कर अन्यत्र जाना होगा।"

मिज ऐंसन क्षण भर चुप बैठी रही। "यह बात है—" वह मधुरता से बोली—"अपनी जगह को छोड़ कर अन्यत्र जाना किसी के लिए भी वस्तुतः बड़ा कठिन होता है।"

मैथ्यू ने रुखाई से सामने मेज पर अपने हाथ पटक दिये। "मैं ऐसा नहीं कर सकता, मिज ऐंसन!" वह बोला—"मैं ऐसा कर ही नहीं सकता। यह घाटी डनबार की घाटी है। वर्षों पहले से यह डनबार की जमीन रही है, मिज ऐंसन। उन्हें किसी व्यक्ति से ऐसा करने के लिए नहीं कहना चाहिए।"

मिज ऐंसन उठ पड़ी और पुनः अँगीठी तक गयी। "एक प्याला चाय और?" उसने पूछा। मैथ्यू ने अधीरतापूर्वक इन्कार में अपना सिर हिलाया। बड़ी विचारपूर्ण मुद्रा में मिज ऐंसन ने अपने प्याले में चाय भरी और उसे लेकर फिर मेज तक आ गयी।

"मिज ऐंसन!" मैथ्यू बोला—"टी. वी. ए. के बारे में तुम क्या सोचती हो? तुम क्या सोचती हो, जितनी अच्छी चीजों के बारे में वे बातें

करते हैं, वह सब वे करनेवाले हैं ? पानी का अबाध बहना और उससे उत्पादित बिजली—क्या ये सारी चीजें सचमुच ही लोगों के जीवन में महत्व-पूर्ण परिवर्तन लानेवाली हैं ?"

मिज ऐंसन ने अपने होंठ दबा लिये—"मेरी अब तक की जानकारी में मैंने यही लक्ष्य किया है कि लोगों में अच्छा या बुरा, कोई परिवर्तन किसी चीज से नहीं होता। वे हमेशा उसी तरह बने रहते हैं। वे कुछ चीजों से प्यार करते हैं, कुछ से घृणा करते हैं और आपस में लड़ते रहते हैं।" उसने अपना सिर घुमाया और पिछले दरवाजे से बाहर की ओर देखने लगी—"लेकिन इससे तनाव कुछ कम हो जायेगा, ऐसा मेरा अंदाज है। मैं अपने बारे में जानती हूँ—तब कपड़े धोने के पाट पर हर रोज मुझे अपनी कमर नहीं तोड़नी पड़ेगी और स्वभावतः ही मुझे तब खुशी होगी।" उसने मैथ्यू के कंधे पर अपना हाथ रख दिया—"और तुम्हें हल के हत्थों के बीच झुक कर चलते हुए खेत जोतने की जरूरत नहीं रह जायेगी। तब तुम्हारे पास खच्चर के स्थान पर ट्रैक्टर होगा।"

"लेकिन क्या इन सबसे बहुत अंतर पड़ जायेगा ?" मैथ्यू बोला—"क्रैफोर्ड गेट्स जैसी बातें करता है, उससे लगता है, टी. वी. ए. मानो दूसरा भगवान है। वह टी. वी. ए. का प्रचार इतनी बुरी तरह करता है कि......" वह रुक गया।

मिज ऐंसन के होंठ सिकुड़ गये। "जितनी कि धर्म-प्रचारक भी नहीं करता था—यही न ?" वह बोली और हँस पड़ी—"तुम जानते हो, धर्म के उस कठोर रूप में मेरी कभी आस्था नहीं रही। मेरे विचार से, अधिकांश लोगों को एक ऐसे शांत स्थान की जरूरत होती है, जिसे वे अपना कह सकें और जहाँ आराम से स्थिरतापूर्वक रह सकें। मेरे खयाल से, भगवान के जीवन में उसका भी स्थान है।"

मैथ्यू उसकी ओर कृतज्ञतापूर्वक होकर मुस्कराया—"खैर, तुमने मेरे लिए एक ऐसी जगह बना कर रखी है।" वह बोला—"मेरे घर में इस कुर्सी की तरह, जिस पर मैं अभी बैठा हूँ, एक भी आरामदेह कुर्सी नहीं है। कोई भी ऐसा कमरा नहीं है वहाँ..."

वह लजा गयी—"यह इस कुर्सी का अजनबीपन है, मि. डनबार, और कुछ नहीं। कभी-कभी मनुष्य को किसी अपरिचित-अजनबी कुर्सी पर बैठने की जरूरत होती है, जिससे वह अपनी कुर्सी से थोड़ा अधिक आनंद अनुभव कर सके।"

मैथ्यू ने उसकी ओर अपना एक हाथ बढ़ा दिया—"तुम बहुत ही अच्छी औरत हो, मिज ऐंसन! बहुत ही अच्छी औरत!"

वह खड़ी हो गयी और मैथ्यू का वह हाथ पकड़ कर उसने उसे भी खड़ा कर दिया। "मेरा खयाल है, अंधेरा होने के पहले ही तुम अपने घर लौट जाना चाहते होगे—" हँसती हुई वह बोली। उसकी यह हँसी सरल, उन्मुक्त और स्वाभाविक थी और उन दोनों के बीच एक सुखद वातावरण पैदा कर रही थी—"तुम सारा दिन किसी औरत के साथ यों ही बैठ कर, चाय पीकर और गप्पें मार कर नहीं बिता दे सकते।"

"मैं इसे पसंद करूँगा—" मैथ्यू बोला। वह कुछ अजीब-सा अनुभव कर रहा था—"तुम्हारे साथ बातें करने में बड़ा आनंद आता है, मिज ऐंसन!"

उसने अपना माँसल और भरा हुआ हाथ मैथ्यू की आस्तीन पर रख दिया। "बातें करना एक चीज है—" वह बोली। उसकी आवाज में एक प्रकार की रुखाई-सी थी—"और करना दूसरी चीज। तुम अपनी चाय खतम करो। मैं, बस, दो मिनिट में आयी।"

वह रसोईघर के दरवाजे तक चली गयी। मैथ्यू खड़ा उसे अपने से दूर जाते देखता रहा। वह एक अच्छी औरत थी, स्वस्थ-तगड़ी थी, साफसुथरी थी और मैथ्यू उसके पास पिछले कई वर्षों से आ रहा था। जितनी बार वह आया था, उसकी स्मृति उसके मस्तिष्क में वर्षा की बूँद की तरह ही सुरक्षित थी।

"मिज़ ऐंसन!"

वह दरवाजे में रुक गयी और घूम कर प्रश्नसूचक निगाहों से उसकी ओर देखा।

"तुम टी. वी. ए. के बारे में क्या सोचती हो?" वह बोला—"मेरा मतलब है......किस तरह......"

मिज ऐंसन इस सवाल पर कुछ देर तक सोचती रही। अंत में, उसने निर्णयात्मक लहजे में कहा—"मैं इसके पक्ष में हूँ। यह इस इलाके में पैसे लायी है—मर्दों के लिए कठिन श्रम और उसकी मजदूरी और यह औरतों का भार हल्का करनेवाली है। अतः मेरा खयाल है कि मैं इसके पक्ष में ही रहूँगी, मि. डनबार। कम-से-कम जब तक मुझे कोई इसका कोई भिन्न रूप न दिखाई दे।"

"किंतु तुम......" वह बोला—"वे तुम्हारे साथ तो कुछ नहीं कर रहे हैं?"

"नहीं?" वह गम्भीरतापूर्वक बोली। फिर अपनी सरल हँसी हँसी—

"सिवा इसके कि वे मुझे एक धनी महिला बनाने की तैयारी कर रहे हैं। तुम किसी मर्द की जेब में पैसे रख दो और उसे तुरत ही मिज ऐंसन की याद हो आती है।" क्षण-भर के लिए उसकी भौहें सिकुड़ आयीं—"लेकिन मैं इतना जरूर चाहती हूँ कि टी. वी. ए. के लोग थोड़ा ठीक से बरतना सीख लेते। बिना मेरी खिड़की के पर्दे की ओर ध्यान दिये वे एक साथ दो या कभी-कभी तीन व्यक्ति को लेकर मेरे पास आते हैं। तुम जानते हो, मुझे यह पसंद नहीं है।"

मैथ्यू को रसोईघर में इंतजार करते छोड़, वह दरवाजे के बाहर चली गयी। मैथ्यू ने मेज पर रखे उन नाजुक-पारदर्शक प्यालों और लोगों ने वहाँ बैठ कर जो आनंद मनाया था, उससे वहाँ उत्पन्न अस्त-व्यस्तता की ओर देखा। उसने चीनी के बरतन पर बड़ी सावधानी से उसका ढक्कन रख दिया और रसोईघर में चारों ओर अपनी नजरें दौड़ायीं और वहाँ जो सफाई थी, व्यवस्था थी, आराम था, उसका आनंद लेता रहा।

उसने अपने लबादे की घड़ी रखनेवाली जेब से अपना लम्बा बटुआ बाहर निकाला। बिल (एक प्रकार के नोट) बटुए के बिल्कुल भीतर रखे थे, एक साथ कस कर लपेटे हुए थे और उसने छुट्टे सिक्कों के बीच उन्हें ढूँढ़ने की कोशिश की। उसने उन्हे बाहर निकाला और मेज पर दस का एक 'बिल' रखकर उसे अपने चाय के प्याले से दबा दिया। वह रसोईघर के दरवाजे की ओर बढ़ा और बीच में रुक कर उसने पीछे की ओर देखा। तब उसने दरवाजा खोला और बाहर निकल आया। अंधेरे से निकल कर सहसा प्रकाश में आ जाने से उसकी आँखें क्षण-भर के लिए मुँद-सी गयीं। उसने एक ठंडी साँस ली। मिज ऐंसन उसे हमेशा से पसन्द थी, वह उसके पास आना पसंद करता था और अब वह भी समाप्त हो गया था। वह बड़ी तेजी से उस चट्टान की ओर ऊपर चढ़ने लगा, जब तक कि वह आँखों से ओझल न हो गया। वह यह देखने के लिए नहीं मुड़ा कि मिज ऐंसन अपने शयनागार की खिड़की के निकट खड़ी हो उसे देख रही थी। और, वह कभी यह नहीं जान पायेगा कि वह मिज ऐंसन के खुश और भरे-पूरे दीखनेवाले चेहरे पर आँसू ढलकते छोड़ आया था।

मैथ्यू ने अपनी चाल धीमी कर दी और अपनी हमेशा की चाल से घाटी की ओर बढ़ने लगा। जिस चाल से वह आया था, उसी चाल से उसने पाँच मील का वह सारा रास्ता तय किया। घाटी के ऊपर की चट्टान पर वह रुक कर

क्षण-भर तक विचार करता रहा और तब वह पेड़ों से होकर घाटी का चक्कर लगाता हुआ नीचे उतरने लगा। वह सीधा देवदार के उन हरे वृक्षों की ओर बढ़ रहा था, जहाँ कि डनबार-परिवार के मृतकों को दफनाया गया था।

उस देवदार-कुंज के चारों ओर जो घेरा लगाया था, उसके तारों में जंग लग गया था और ढीले होकर लटक आये थे। मैथ्यू ने मन-ही-मन कहा कि इस साल उसे निश्चय ही, देवदार के इन खम्भों में नये, चमकीले और मजबूत तार बाँधने पड़ेंगे। कब्रिस्तान में नयी-नयी घास चारों ओर उग आयी थी। सभी कब्र बहुत पुराने थे, उन पर घास उग आयी थी और वे जमीन में कुछ ऐसे छिप गये थे कि ठीक से दिखायी नहीं पड़ते थे। उनके ऊपर खुरदरे पत्थर की सिल्ली रखी हुई थी और नीचे एक-एक ईंट रखी हुई थी। मैथ्यू रुक गया। वह उनकी ओर विचारपूर्ण मुद्रा में देख रहा था। सब यहीं विश्राम कर रहे थे, छाना, मैथ्यू की माँ, उसकी छोटी बहन, जो बचपन में ही कंठ-रोग से मर गयी थी, और उस प्रथम गौर इंडियन डनबार से लेकर अब तक के सभी मृत डनबार! वे सब यहीं थे, सिवा मैथ्यू के भाई ल्यूक के, जो महायुद्ध में मारा गया था और जिसका शव कभी घर नहीं लाया गया।

कब्रों पर लगी सिल्ली जहाँ हवा के थपेड़ों से कुछ झुक गयी थी, मैथ्यू मनोयोगपूर्वक उन्हें सीधा करने और ठीक से जमाने में जुट गया। इस काम को हर वसंत में वह स्वयं करता था और इस तरह साल-दर-साल खयाल रखने से कभी-कदाच् ही उसे कोई सिल्ली बिल्कुल जमीन पर गिरी मिलती थी। इस बार वसंत में बाद में कभी वह मशीन लेकर आयेगा और बेतरतीबी से बढ़े इन घासों को काँट-छाँट कर अपने पुरखों की कब्रों को साफ-सुथरा बना देगा—ठीक जैसा उसका घर साफ-सुथरा रहता है। अपने बूढ़े पिता को नहाने की तरह ही यह भी उसका एक कर्त्तव्य था, जिसे वह हमेशा स्वयं ही करता था। वह यहाँ किसी गम्भीर चिंतन या दर्शन की बातें सोचने के लिए नहीं आया था और जब वह काम खत्म कर चुका, तब वहाँ से जाने के लिए मुड़ा। वसंत के इस मौसम में उसे जितने काम करने थे, वह उनका दबाव फिर अपने भीतर उभारता महसूस कर रहा था। बहुत-सारे काम करने थे और हाथ बँटाने के लिए सिर्फ राइस था...।

देवदार के एक खम्भे से टिका, तार के उस घेरे के पास एक अजनबी खड़ा था। उसका शरीर तना हुआ था और वह सतर्क भाव से खड़ा था। मैथ्यू ने

उसकी ओर देखा। उसके कपड़े पुराने और फटे हुए थे, चेहरे पर भी जर्जरता थी, नाक टूटी और चिपटी हुई थी। वह आदमी अपनी एक बाँह के नीचे कागज में लिपटा एक पैकेट दबाये हुए था, जिसके एक छोर से एक जोड़ा गंदा जाँघिया झाँक रहा था। मैथ्यू उसकी ओर देखता हुआ खड़ा रहा। वह स्वयं के भीतर एक प्रकार की अजीब-सी सिहरन अनुभव कर रहा था, जिसे समझने में वह असमर्थ था।

उसने उस भावना को दूर हटा दिया और कहा—"कहिये, क्या मैं...?"

"मैथ्यू!" वह आदमी बोला। मैथ्यू ने उसे पहचान लिया। वर्षों के इतने थपेड़े सहने के बाद भी उसने उसे तत्क्षण पहचान लिया और उसे अपने भीतर एक जकड़न-सी महसूस हुई।

उस आदमी ने मैथ्यू की ओर अपना एक हाथ उठाया। वह बहुत कमजोर था और अपना हाथ उठाने में उसे थोड़ा प्रयास करना पड़ा। "मैं वहाँ घाटी में आ रहा था—" वह बोला—"मैं तुम्हें ही ढूँढ़ने आ रहा था......"

"मार्क!" मैथ्यू बोला। वह उसकी ओर बढ़ा—तार के घेरे के निकट, जिससे वे इतने निकट खड़े हो सकें कि उनके हाथ एक-दूसरे तक पहुँच सकें। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और उन्हें अपनी पिछली भेंट याद हो आयी। मैथ्यू के बढ़ने के साथ ही, मार्क एक कदम पीछे हट गया था और मार्क के इस भय से मैथ्यू अचानक लज्जित हो उठा।

"मुझे घर आना ही पड़ा—" मार्क बोला—"मैथ्यू, मैं......"

मैथ्यू तेजी से उस टूटे तार के भीतर से बाहर निकल कर उसकी बगल में खड़ा हो गया। "निश्चय ही—" वह बोला—"प्रत्येक डनबार को देर या सबेर घर आना ही है, मार्क! हममें से प्रत्येक को!"

"मैं चाहता नहीं था" मार्क बोला—"मैं जितने समय तक रह सकता था, बाहर रहा। मैं जानता था, तुम......"

मैथ्यू ने उसके उस चोट खाये चेहरे की ओर देखा। उसका हाथ अजाने ही अपने कटे हुये कान को छूने के लिए ऊपर उठ गया, जो उनकी पिछली मुलाकात की निशानी और यादगार थी। किंतु चेहरे और हड्डियों की तुलना में मार्क स्वयं ही बहुत पस्त-सा हो चुका था। उसमें एक ऐसा शैथिल्य आ गया था, जो मैथ्यू ने कभी किसी मनुष्य में नहीं देखा था।

"चलो, घर चलो—" वह मधुरता से बोला—"तुम्हें बढ़िया और गर्म खाने की जरूरत है और तब तक...आओ, चलो अब!"

उसने जीर्ण-शीर्ण पैकेट को मार्क की बाँह के नीचे से लेने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया। वह उसे सम्मानपूर्वक घर की ओर ले चला और वे दोनों भाई-भाई की तरह ही चलते हुए डनबार की घाटी के भीतर पहुँच गये।

प्रकरण बारह

वे साथ-साथ घाटी के भीतर चलते रहे। खलिहान के पीछे से निकल कर वे घर की ओर बढ़े। मार्क रुक-रुक कर कदम उठा रहा था, जैसे उसके टूटे हुए जूतों में समाये उसके पैर इतने भारी थे कि उठाये नहीं उठते थे। उसके चलने का ढंग मैथ्यू के स्फूर्तिपूर्ण और सोद्देश्य ढंग से बहुत भिन्न था। उसका साथ देने के लिए मैथ्यू को धीरे-धीरे चलना पड़ रहा था। मार्क खलिहान के निकट रुका। उसकी आँखें चारों ओर दौड़ रही थीं—मकान से खलिहान, वहाँ से बाहरी मकान और फिर मुड़ कर खेतों की ओर। उसकी निगाह उस सोते पर भी पड़ी, जो घाटी की हरीतिमा से गुजरता हुआ नदी की ओर बढ़ गया था।

"यह बदला नहीं है—" वह बोला—"यह बिल्कुल नहीं बदला है।"

"नहीं!" मैथ्यू बोला—"यह अभी भी डनबार-घाटी है।"

मार्क ने घूम कर उसकी ओर देखा। "मैं तुम्हें कोई तकलीफ देना नहीं चाहता—" वह बोला—"मैं पड़ोस में ही था और मैंने सोचा, कुछ देर के लिए यहाँ हो लूँ..."

"तकलीफ की कोई बात नहीं"—"मैथ्यू ने दृढ़तापूर्वक कहा—"सचाई तो यह है कि मुझे अभी आदमी की जरूरत भी है। मेरे लड़के चले गये हैं, सो मेरे पास आदमी काफी कम हो गये हैं।"

मार्क के चेहरे पर एक आतुरता उभर आयी। "मैं काम कर सकता हूँ—" वह बोला—"मैं काफी अच्छा काम करनेवाला हूँ......"

"मैं जानता हूँ—" मैथ्यू बोला—"आओ, अब घर चलें, जिससे आर्लिस तुम्हारे लिए कुछ अंडे तैयार कर दें। खाना खाने के वक्त तक तुम फिर आसानी से रह लोगे।"

तब वे चलते गये और पिछले बरामदे से होकर रसोईघर में पहुँच गये।

आर्लिस फर्श साफ कर रही थी और उनके वहाँ पहुँचते ही घूम कर उसने उनकी ओर प्रश्नसूचक निगाहों से देखा।

"ये तुम्हारे चाचा मार्क हैं, आर्लिस!" मैथ्यू बोला—"ये हमारे साथ ही घर में रहने आये हैं।"

आर्लिस धीरे-धीरे उसके निकट आयी। "चाचा मार्क!" वह बोली। वह इस अजनबी को छाती से नहीं लगाना चाहती थी; पर वह उसकी छाती से जा लगी और मार्क उसकी ओर देख कर कृतज्ञतापूर्वक मुस्कराया।

"अभी—" मैथ्यू ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"कुछ अंडे इन्हें बिल्कुल स्वस्थ कर देंगे—काफी समय से ये सड़कों पर भटकते रहे हैं। मेरे खयाल से छः अंडे बना लो।"

काम करने का यह अवसर पा आर्लिस को प्रसन्नता ही हुई। वह जल्दी से अँगीठी के पास पहुँच गयी और आग सुलगाने लगी। "मैं अभी पल-भर में तैयारी कर देती हूँ—" वह बोली।

"खाना खाने के समय तक मैं इंतजार कर सकता हूँ—" मार्क ने विरोध किया—"मेरे लिए व्यर्थ ही तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं है।"

"नहीं महाशय!" मैथ्यू बोला—"आपको कुछ-न-कुछ अभी खाना ही है। मध्याह्न की इस बेला में हल्का सा नाश्ता ही।" उसने मार्क की बाँह पकड़ ली—"आओ, अब पापा के पास चलें, मार्क! तुम्हें देख कर वे खुश होंगे।"

मार्क ने क्षण-भर की देर कर दी। वह उस परिचित रसोईघर के चारों ओर देख रहा था। अपने बूढ़े पिता के पास जाने की इच्छा उसे नहीं हो रही थी। रात के अंधेरे में वह अपने शयनागार की खिड़की से किस तरह भाग गया था, यह उसे अब भी अच्छी तरह याद था और यद्यपि अब काफी समय बीत चुका था फिर भी मार्क जानता था कि उसके पिता अभी भी उसे उसके लिए फटकारेंगे।

काफी समय गुजर चुका था। वर्षों की लम्बाई से भी अधिक लम्बी अवधि बीत चुकी थी और उसके पीछे सड़कों, रेलगाड़ियों, तरह-तरह के काम, खाली हाथ रहने और देश के इस छोर से उस छोर तक की स्मृति थी। उसकी घुमक्कड़ प्रवृत्ति उसे कभी आराम नहीं लेने देती थी। एक नये शहर में कुछ महीने बिताये और फिर वहाँ से चलने को तैयार! वह देखना चाहता था कि इसके आगे क्या है, नयी चीज क्या है, इससे भिन्न क्या है? यह चलता रहा,

और अंततः इस तरह घूमते रहने की उसकी आदत ही बन गयी। यह उसके जीवन का एक ढर्रा ही बन गया। क्षुधा-तृप्ति के लिए ओरेगन में उसने हाप्स (एक प्रकार के तीखे फल, जो बीयर बनाने के काम आते हैं) चुने, कोलोरेडो में अपने चुकंदरों के लिए उसने छीना-झपटी की, केंटकी में लकड़ियाँ काटीं और साल्ट लेक शहर में उसने शराब बनायी। शराब के नशे में बुत होकर वह लड़ता था और फटेहाल औरतों के साथ उसने रातें गुजारी थीं। एक बार, मस्केडाइन (इओवा) में उसकी शादी हुई थी और दो साल तक उसने वैवाहिक जीवन बिताया था। यद्यपि उसकी प नी काफी अच्छी थी, तथापि एक रविवार को वह तीसरे पहर घूमने के लिए निकला था और लौटकर नहीं गया। जिस रात उसने घर छोड़ा था, उसके बाद किसी एक स्थान में यही उसका सबसे लम्बा ठहराव था।

तब यह आकर्षण, खोजने की प्रवृत्ति और घूमने का अनुराग कम होने लगा। उम्र अधिक हो जाने से घूमना उतना सुविधाजनक नहीं रह गया था, कहीं रहने और काम मिलने में दिक्कत होती थी। पुलिस स्वतः उसे संदेह की नजरों से देखने लगी और अंततः उसे बाध्य होकर इज्जतदार काम से उतर कर नीच और गंदे कामों में लिप्त होना पड़ा। और तब, उसे फिर अपनी घाटी अपनी ओर वापस खींचने लगी—वहीं एक निश्चिंतता थी—एक सुरक्षा-सी थी, जिसका अनुभव उसने अपनी घुमक्कड़ जिंदगी में कभी नहीं किया था। किंतु घाटी में उसे मैथ्यू का डर था—डर था, मैथ्यू कहीं फिर नहीं मारे उसे।

शुरू में, जब पहली बार क्षणिक आवेग में वह घर वापस आया था, तो वह मैथ्यू पर नाराज हो उठा था और तब यह क्रोध एक कटु और भयावह स्मृति में बदल गया। समय गुजरने के साथ और इतना घूम लेने से उसके मन से वह कटुता जाती रही थी और वह समझने लगा था कि मैथ्यू के उन सशक्त वेगवान घूँसों के पीछे कौन-सी भावना काम कर रही थी। उसकी समझ में यह बात आ गयी थी कि मैथ्यू ने जो किया था, ठीक किया था। उस समय मार्क साल-भर से अधिक घाटी में नहीं टिका होता; क्योंकि उसका घुमक्कड़पन अभी ताजा ही था!

अपनी इस अंतिम वापसी के विरुद्ध वह स्वयं से लड़ा था। किंतु घाटी की याद उसके भीतर धीरे-धीरे कचोटने लगी और अजाने ही, व्यर्थ ही इधर-उधर उसकी भटकने की आदत जाती रही और उसकी प्रत्येक यात्रा उसे अनिवार्य

रूप से उसे घाटी के नजदीक ले आने लगी। ऐसा लगता था, चाहे वह वापस आने की अपनी इस बीमारी के प्रति कितना ही क्यों न लड़े, रेलगाड़ियाँ सिर्फ एक ही दिशा में चलती थीं। पिछली रात के अंधेरे में वह मालगाड़ी से एक ऐसे शहर में उतरा था, जिसके बारे में वह नहीं जानता था और जब उसने पहली सड़क की संकेत-पट्टी पढ़ी, उसे वस्तुतः आश्चर्य हुआ। तब वह जान गया था कि घर की जो याद आ रही थी, उसे वह नहीं दबा सकता और पहले नाश्ता का इंतजाम किये बिना वह घाटी की ओर चल पड़ा था। पूरी सुबह वह घाटी के ऊपर जंगलों में भटकता फिरा था। नीचे घाटी में चलने-फिरने-वाले व्यक्तियों और उनके कार्यों को वह भूखी नजरों से देखता हुआ उन्हें पहचानने और विस्तृत विवरण प्राप्त करने का प्रयास करता रहा था। उसे भूख भी जोरों की लगी थी। उसने मैथ्यू को घाटी से निकलते और वापस आते देखा था। भय के कारण वह मैथ्यू के पास जाने में तब तक हिचकिचाता रहा, जब तक उसने मैथ्यू को कब्रिस्तान की ओर जाते नहीं देखा। किसी प्रकार उसके मन में ऐसा भाव पैदा हो गया था कि अपने उन पुरखों के सामने मैथ्यू उससे झगड़ा नहीं करेगा। और, अब वह घर पर था, वहाँ लोगों ने प्रेम से उसका स्वागत किया था और अब उसे भूख और भावना के आवेग से कँपकँपी महसूस हो रही थी। यह कँपकँपी भूख से सिकुड़े उसके पेट से लेकर उसके दुर्बल पैरों तक फैल गयी और उसके हाथ की टूटी तथा गंदी उँगलियाँ भी काँप उठीं।

उसने फिर मैथ्यू की ओर देखा। वह उसके चेहरे में जैसे कुछ खोज रहा था। "पापा क्या अभी जीवित हैं?" वह बोला—"मैंने बहुत पहले ही उन्हें मरा हुआ समझ लिया था। उस आरामकुर्सी पर बैठे-बैठे जिंदगी गुजारते हुए उन्हें काफी दिन बीत गये।"

मैथ्यू मुस्कराया। "वे अभी यहीं हैं—" वह बोला—"वे दुर्बल हो गये हैं; पर दिन में तीन बार खाना खाते हैं। अभी भी उनके बहुत-से दाँत मौजूद हैं।"

वे उस रहनेवाले कमरे में गये। "पापा!" मैथ्यू बोला—"देखो, मार्क घर आ गया है।"

वे अपने बूढ़े पिता के सामने खड़े रहे और उसने अपना सिर उठा कर उनकी ओर देखा। ऊपर उठाने से उसका सिर काँपा; किंतु उसकी आँखें मार्क पर गयी थीं—धुँधली-नीली आँखें, जो देखने की शक्ति लगभग खो चुकी थीं।

"मार्क........" वह बोला।

"हाँ, पापा!" मार्क ने कहा—"आप तो अच्छे दीख रहे हैं, पापा!"

कमरे की उस गर्म हवा में उनके बूढ़े पिता की आवाज बड़ी क्षीण थी, जो एक तरह से नहीं ही सुनायी पड़ रही थी। उसने जब अपना मुँह पोंछने के लिए हाथ उठाया, तो वह काँप गया और तब वह शिथिल होकर फिर उसकी गोद में गिर पड़ा।

"तुम भाग गये थे, मार्क!" वह फुसफुसाया—"तुम मुझे छोड़कर भाग गये थे!"

"किंतु अब वह लौट आया है, पापा!" मैथ्यू ने कहा। उसका बूढ़ा पिता सुन सके, इसलिए अजाने ही उसकी आवाज ऊँची हो गयी—"वह अब घर पर ही रहेगा।"

वे अपने बूढ़े पिता के कुछ कहने के लिए प्रतीक्षा करते रहे, मानो उनकी आवाज की लहरों को उस वृद्ध व्यक्ति के मस्तिष्क तक की यात्रा पूरी करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से मध्यांतर की आवश्यकता थी। किंतु उसका ध्यान केंद्रित नहीं रह गया था। मैथ्यू ने मार्क की ओर देखा और उसकी अनिश्चितता लक्ष्य की। वह देख रहा था कि मार्क अपने पिता की ओर अविश्वास-भरी नजरों से निहार रहा था।

"वे बूढ़े हो चुके हैं—" उसने मधुरता से कहा। उसके स्वर में क्षमा-याचना की भावना भी थी—"लेकिन अभी भी वे अच्छा खाते हैं। उनके अभी भी अधिकांश दाँत मौजूद हैं।"

अपने बूढ़े पिता को इसके शैथिल्य और विचारों के बीच अकेला छोड़, वे वापस रसोईघर में जाने के लिए मुड़े। उनके बूढ़े पिता ने क्षण-भर के लिए उनकी उपस्थिति जान ली थी; लेकिन यह जानकारी उससे फिर दूर चली गयी थी और उसने अपने बड़े बेटे के घर लौटने पर उसका स्वागत नहीं किया था, हार्दिकता नहीं दिखायी थी। किंतु बिना किसी उम्मीद के ही उनके रसोईघर के दरवाजे के निकट पहुँचने पर उन्हें जो उसकी आवाज सुनायी दी, वह सशक्त थी।

"मैंने इंतजार किया, मार्क!" वह बोला—"जितनी देर मैं इंतजार कर सकता था, मैंने किया।"

वे जब मुड़े, तो वह फिर अपने शैथिल्य में डूब चुका था। वे रसोईघर में चले आये। मैथ्यू अपने पिता के कहने का अर्थ जानता था; उसे याद था कि

किस प्रकार उसके पिता का हाथ उसके कंधों पर पड़ा था और उन्होंने किस प्रकार उसे घाटी का उत्तराधिकारी घोषित किया था। लेकिन वह पहले काफी समय तक मार्क के लौटने की प्रतीक्षा करता रहा था—जब तक कि वह यह नहीं जान गया कि उसे यह प्रतीक्षा त्यागनी पड़ेगी और किसी को यह घाटी देनी ही होगी।

वे खाने की मेज के निकट बैठ गये और आर्लिस मार्क के लिए एक तश्तरी में अंडे और कुछ गर्म बिस्कुट ले आयी। उसने उसके लिए एक प्याले में कॉफी भी उड़ेल दी और स्वयं अँगीठी के पास लौट गयी। मैथ्यू ने भूखे भेड़िये के समान मार्क को बहुत जल्दी-जल्दी खाते देखा और तब कुछ लजा कर और कुछ संतुष्ट हो, मार्क धीरे-धीरे खाने लगा। प्रत्येक निवाले के साथ वह बीच बीच में कॉफी पी-पीकर उसे इत्मीनान से खाने लगा।

"तुमने पापा की बात सुनी न?" मैथ्यू ने कहा—"उन्होंने इंतजार किया था। वे चाहते थे कि यह घाटी तुम्हें मिले।"

मार्क खाते-खाते रुक गया। तब उसने आँखें ऊपर उठा कर मैथ्यू के चेहरे की ओर देखा, काँटा-चम्मच अलग रख दिया और तश्तरी को दूर खिसका दिया। वह उस बूढ़े मार्क की अपेक्षा अब अधिक सशक्त और निश्चिंत प्रतीत हो रहा था।

"तुम्हें यह घाटी देकर उन्होंने उचित ही किया, मैथ्यू!" वह बोला—"मैं इसके उपयुक्त नहीं हूँ। मैं कभी था भी नहीं।"

"किंतु उन्होंने कहा......" मैथ्यू चुप हो गया। शब्द उसके गले में रुँध गये।

"उन्होंने अपना विचार बदल दिया होता—" मार्क ने कहा। उसके मुँह में इस कटु सत्य की एक ऐंठन थी। "यह तुम्हारा ही था, मैथ्यू, सदा तुम्हारा था और मैं इसे जानता था। इसीसे मैं चला गया था; क्योंकि मैं जानता था कि यह घाटी तुम्हारे हाथों में जानी चाहिए। पर पापा को इसे तुम्हें देते मैं देखना नहीं चाहता था—सो मैं रास्ते से हट गया। मैं हमेशा से यह जानता था कि मैं इसके लिए उपयुक्त नहीं हूँ।"

मैथ्यू ने मेज पर अपने हाथ फैला दिये और उनकी ओर देखने लगा। "अगर तुम चाहो......" वह आहिस्ते से बोला। ये शब्द व्यक्तिगत रूप से उसे पीड़ा पहुँचा रहे थे और भीतर-ही-भीतर उसे व्यथित बना दे रहे थे—"अगर......"

मार्क ने तश्तरी अपने सामने खींच ली। उसकी भूख और अधिक प्रतीक्षा नहीं सहन कर सकी। उसने अपना मुँह अंडे और गर्म बिस्कुटों से भर लिया तथा दूसरा हाथ बढ़ा कर कॉफी का प्याला उठा लिया। मुँह में लिये अंडे और बिस्कुटों को आराम से चबा कर उसने उन्हें पेट के भीतर पहुँचा दिया और अब वह फिर इंतजार कर सकता था।

"मैं ठहरने की जगह-भर चाहता हूँ—" उसने मैथ्यू से कहा और एक नजर स्वयं पर डाली—"एक बिस्तरा और तीन वक्त का खाना और ऐसी जगह, जहाँ पुलिस मुझे परेशान करने न पहुँच सके। बस, संसार-भर में मुझे इतनी ही चीजों की जरूरत है।" उसने मुस्कराने की चेष्टा की—"मैं अभी भी काम कर सकता हूँ, मैथ्यू। मैं श्रम कर सकता हूँ, यद्यपि काफी समय से मैंने हल नहीं चलाया है।"

"कोई भी डनबार घर आ सकता है—" मैथ्यू बोला—"यह घाटी इसी के लिए है। यही वजह है कि मैं इसे रखना चाहता हूँ, जिससे......" वह बोलते-बोलते रुक गया। उसने मार्क की ओर देखा और फिर आर्लिस की ओर मुड़ा—"अपने चाचा मार्क के लिए थोड़ा पानी गर्म कर दो, आर्लिस! उन्हें अच्छी तरह नहाने की जरूरत होगी और उनके लिए लबादों में से एक ले आओ। साथ ही, एक धुली कमीज भी लेती आना।"

मार्क फिर खा रहा था। अब वह पहले से धीरे-धीरे स्वाद ले-लेकर खा रहा था। भर-पेट भोजन मिलने से वह तुष्ट था और एक प्रकार का आलस्य-सा अनुभव कर रहा था। उसने कभी नहीं सोचा था कि अब यहाँ—घाटी में—लौटना इतना सुखद और आरामदेह होगा।

"जान कहाँ है अब?" उसने पूछा—"क्या वह यहाँ नहीं रह रहा है?"

"नहीं!" मैथ्यू बोला—"जान को गये काफी समय बीत चुका है। जब वह पच्चीस साल का था, उसने एक विधवा से शादी कर ली। विधवा के छः बच्चे थे और एक बड़ा खेत-खलिहान! पहले तो ऐसा लगा, यह वहाँ कुँवारा ही बन कर रहेगा; किंतु उस विधवा ने उसे अपनी ओर खींच लिया—" वह हँसा—"वह उसके छः बच्चों के साथ वहीं चला गया और उसके अपने भी तीन बच्चे हुए हैं। उसका खलिहान काफी सुंदर है।"

"खुशी हुई सुन कर कि वह मजे में है—" मार्क बोला—"तो उसे जीवन में स्थायित्व प्रदान करने के लिए एक विधवा की जरूरत पड़ी। मस्केडाइन (इओवा) में मैंने भी एक बार एक विधवा से शादी की थी..." वह चुप हो गया।

"उस पुरानी टी-माडेल गाड़ी पर ही हमें जान को देखने जाना होगा—" मैथ्यू बोला—"साल-भर या उससे कुछ अधिक ही हुआ होगा, मैं वहाँ नहीं गया हूँ। वह यहाँ से चालीस मील दूर रहता है और तुम तो जानते ही हो कि हम गाँव के लोग कैसे होते हैं। मेरा अनुमान है, तुमने देश का काफी हिस्सा घूम कर देख लिया है।"

"हाँ!" मार्क ने वक्रता से कहा—"मेरा अनुमान है, मैंने देख लिया है।" उसने खाना समाप्त कर लिया और तश्तरी में जब बिस्कुट का एक टुकड़ा बच गया था, उसने उसे दूर खिसका दिया। "धन्यवाद, आर्लिस!" वह बोला—"अच्छा खाना था। सचमुच ही, काफी अच्छा था।" मैथ्यू ने 'कंट्री जेंटलमैन' मार्का तम्बाकू निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला और उसे निकाल कर मेज पर मार्क की ओर बढ़ा दिया। मार्क ने आतुरता से उसे ले लिया और अपने लिए एक सिगरेट बनाने लगा।

जब उसने उसे वापस किया, तो मैथ्यू बोला—"तम्बाकू अपने पास ही रखो। मेरी जेब में दूसरा थैला है।" वह आर्लिस की ओर घूमा—"यह हैटी कहाँ है, आखिर?" वह बोला..."उसने अपने मार्क चाचा को कभी नहीं देखा है!"

"मैं उसे बुला लाऊँगी—" रसोईघर के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए आर्लिस बोली—"मैं नहीं जानती, वह कहाँ चली गयी है।"

मार्क उठ खड़ा हुआ। "मैं पहले जल्दी से स्नान कर लूँ, तो अच्छा—" वह बोला और मुस्कराया—" लड़के सब शायद खेत में हैं।"

"राइस है—" मैथ्यू बोला—"नाक्स और जेसे जान टी. वी. ए. में काम कर रहे हैं। किंतु क्रिसमस में वे घर आये थे।"

वह उस मेज के निकट अकेला बैठा रहा और आर्लिस एक हाथ में गर्म पानी की केतली और दूसरे हाथ में टब लेकर मार्क को शयनागार में ले गयी। अब मैथ्यू, जब कि उसे शांति और स्थिरता से बैठ कर सोचने का मौका मिला था, सोच रहा था कि मार्क का घर लौट आना अच्छा ही रहा। किसी भी प्रकार क्यों न हो, उसका फटा हुआ कान, उसकी शर्म की निशानी होने के बजाय सिर्फ एक फटा हुआ कान ही भर था और बस! पहले वह मार्क के फिर घर लौटने की बात सोच कर भयभीत हो उठता था और तब उसने उम्मीद बाँध रखी थी कि वह आयेगा और उसके इस बार घर आने से उन दोनों के बीच के उस पुराने झगड़े की कटु स्मृति भी धुल गयी थी। अब मार्क यहाँ था और

वह अपनी उम्र से अधिक बूढ़ा और थका हुआ लगता था। जिस तरह उसे अपनी जवानी में घाटी का उत्तरदायित्व सम्भालने की इच्छा नहीं थी, वैसे ही अभी भी उसकी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी। उसे जरूरत थी सिर्फ खाने की, रहने के लिए जगह की और स्वयं को व्यस्त रखने के लिए किसी छोटे-से काम की। और, भगवान जानता था, इन चीजों की वहाँ कोई कमी नहीं थी।

वह उठ खड़ा हुआ। वह वापस खेतों में जाने की सोच रहा था और तब उसके दिमाग में एक और विचार आया। वह रुक गया। कुछ ही देर पहले जब उसने मार्क को घाटी सौंपने की बात कही थी, तो उसकी यह तीव्र और हार्दिक इच्छा हो गयी थी कि वह घाटी मार्क को सौंप दे। उसने उम्मीद कर रखी थी कि इस तरह वह इस विरोध से बच सकेगा—घाटी को अपने अधिकार में रखने के लिए जो संघर्ष वह कर रहा था, उससे मुक्ति पा जायेगा। उसके मन में एक बड़ी जबर्दस्त आशा जाग उठी थी कि अब उसकी समस्या हल हो जायेगी। मार्क के घाटी का उत्तरदायित्व सम्भाल लेने पर मार्क यह सोचेगा कि क्या करना होगा और कैसे करना होगा और जब वह यह काम पूरा करता रहेगा—जिसे मैथ्यू समझ नहीं पा रहा था, कैसे करना चाहिए—उस वक्त मैथ्यू, अलग सुरक्षित रूप से खड़ा रह सकेगा। किंतु मार्क उसकी मुक्ति नहीं बन सकता था। उसका वह मार खाया चेहरा और उसकी खोखली निगाहें मैथ्यू को याद हो आयीं और वह जान गया कि मार्क मनुष्य का एक ढाँचा-मात्र रह गया था—उसकी शक्ति सदा के लिए उससे विदा ले चुकी थी।

मैथ्यू को स्वयं पर ही क्रोध आने लगा। अपनी इस विमुखता, इस कमजोरी से वह स्वयं परिचित नहीं था, जो उसके स्वामित्व की शक्ति के भीतर काम कर रही थी। परिणाम कुछ भी होता—उसने क्रुद्ध भाव से सोचा—तब मुझे स्वयं को दोष देने की जरूरत नहीं रह जाती। अपनी इस असफलता का जिम्मेदार मैं मार्क को ठहरा देता और सम्भव है, वह इसे सह लेता, क्योंकि वह मार खाने का अभ्यस्त हो चुका है।

अपने स्वयं के इस विश्लेषण से मैथ्यू काँप रहा था। वह अब तक शांतिपूर्वक रहता आया था, कलह की उसे कभी जरूरत महसूस नहीं हुई थी। वह सदा से शिष्ट, नम्र, शांत और समझदार था; क्योंकि इस घाटी ने उसे आश्रय दिया था। और सारे समय शांति और गम्भीरता, जिसे वह अपनी शक्ति समझता आया था, उसकी एक कमजोरी थी। अपने जीवन-भर में उसे एक बार ही संघर्ष करना पड़ा था और उस क्षण उसका क्रोध उसकी इच्छा-शक्ति द्वारा नहीं,

वरन् उसके शरीर के भौतिक रसायन-द्वारा नियंत्रित था। उसने अपने चौड़े और सशक्त हाथों की ओर देखा। वह स्वयं को समझा रहा था—"मैं बस यहाँ जम कर बैठा हूँ—" वह सोच रहा था—"डनबारों ने जो-कुछ मुझे दिया, मैंने ले लिया। उन्होंने जो-कुछ प्राप्त किया था, मैं उन्हींके भरोसे पर रहता आया हूँ, जिस तरह मैं उनकी इस जमीन पर रहता आया हूँ। किंतु मेरे बाद जो डनबार आनेवाले हैं, उनके लिए मैं क्या निर्माण कर रहा हूँ?"

वह फिर बैठ गया। उसका स्वयं का यह विश्लेषण धीरे-धीरे उसके मन के भीतर दृढ होता जा रहा था। वह एक डनबार था और उसके पहले के डनबारों ने जो किया था, वह भी कर सकता था। उसमें भी वही गोरा इंडियन रक्त प्रवाहित हो रहा था, जो उसके पिता, पितामह और प्रपितामह के शरीरों में था—जीत्र और अपने अधिकार में बनाये रखने की इच्छा और शक्ति। यह उसे उनसे उत्तराधिकार में मिली थी, जैसा कि उसे अपनी आँखों का रंग उनसे उत्तराधिकार में मिला था—यह कोई अभ्यास करके नहीं हासिल की गयी थी।

हैटी तेजी से दौड़ती हुई रसोईघर में आयी और अचानक ही रुक कर उसने चारों ओर देखा। "डैडी!" वह बोली—"आपके साथ वह आदमी कौन था?"

मैथ्यू ने उसकी ओर सिर उठा कर देखा। "वे तुम्हारे चाचा मार्क थे, हैटी!" वह बोला—"वे यहीं घर पर रहने आ गये हैं।"

"मार्क चाचा?" वह बोली। तब उसे याद हो आया और वह समझ गयी "वे हैं कहाँ?"

"स्नान कर रहे हैं—" वह बोला—"कुछ ही मिनटों में तुम उन्हें देख लोगी।" आर्लिस कमरे में वापस आ गयी और मैथ्यू फिर उठ खड़ा हुआ—"मार्क जब स्नान करके आये, उससे कह देना कि मैं खेत वापस चला गया हूँ। मुझे अभी जाकर खेत जोतना है।"

काफी देर तक वह काम से गायब रहा था और तेजी से वह घर से बाहर निकल गया। वह इस बात के लिए उतावला हो उठा था कि जाकर खेत जोतने के काम में जुट जाये और कड़े श्रम से उसके शरीर से पसीना बहने लगे। जुताई और रोपनी के इस मौसम में, दिन के अधिकांश समय इस तरह खच्चर को किसी पेड़ के नीचे खड़ा रख छोड़ने का उसे कोई अधिकार नहीं था। उसने अपने काम के प्रति आज लापरवाही बरती थी, आलस्य बरता

था, इधर-उधर घूमता रहा था, जैसे कोई लड़का अपने बचपन की उमंगों में करता है।

यद्यपि खेत की ओर जानेवाली सड़क पर, काफी दूर से ही, उसने देख लिया कि दोनों खच्चर खेत में चल रहे थे; उसकी जगह पर कोई और खेत जोत रहा था। मन-ही-मन आश्चर्य करते हुए, उसने अपनी चाल तेज कर दी। और तब उसने देखा कि वह क्रैफोर्ड गेट्स था। वह क्यारियों के बीच हल चला रहा था और हल चलाता हुआ राइस कई बार उसके सामने से गुजर जाता था। मैथ्यू की चाल अचानक धीमी हो गयी और खेत पहुँचने तक वह धीमी चाल से चलता रहा।

राइस हल चलाता हुआ इस छोर तक आया और मुड़ गया। मुस्कराते हुए उसने दूर से क्रैफोर्ड की ओर अपने सिर को झटका कर संकेत किया। तब वह फिर हल चलाने लगा। वे कपास की क्यारियाँ बना रहे थे। ताजी खुदी हुई मिट्टी के साथ, वे हल चला कर, पुरानी क्यारियाँ काटते चले जा रहे थे। बीच में नये घासों से भरी जमीन हरी-हरी लग रही थी। वह जगह, बीच की जमीन जोतनेवाले बड़े हल से जोती जानेवाली थी। मैथ्यू क्रैफोर्ड का इंतजार करता रहा। अपनी ओर हल चला कर आते हुए क्रैफोर्ड को ही वह तब देख रहा था।

"हेलो, मि. डनबार!" क्रैफोर्ड ने उल्लास के साथ कहा—"मैं आपसे बातें करने के लिए आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।"

मैथ्यू को मुस्कराने के लिए बाध्य होना पड़ा। "इंतजार का तुम काफी अच्छा उपयोग कर रहे हो—" वह बोला—"कितनी देर से तुम मेरी जगह हल चला रहे हो?"

अपने चेहरे से पसीना पोंछता हुआ क्रैफोर्ड हँसा—"मेरे लिए, आपका आ जाना बहुत देर का रहा, मि. मैथ्यू! हल चलाये मुझे काफी दिन बीत चुके हैं।"

मैथ्यू ने क्यारियों की ओर देखा। वह यह नहीं कह सकता था कि कहाँ उसने काम छोड़ा था और कहाँ से क्रैफोर्ड ने शुरू किया था। "तुम काफी अच्छा जोत लेते हो खेत—" मैथ्यू बोला—"हो सकता है, मैं यह काम तुम्हीं पर छोड़ दूँ, तो अच्छा रहेगा।"

उन्हें देखने के लिए क्रैफोर्ड भी मुड़ा। "हल चलाना मुझे पसंद है—" वह बोला—"यह नहीं कि मैंने कभी बहुत हल चलाया था—मुझे लकड़ी चीरने का काम सिखा कर पाला-पोसा गया है। किंबा मुझे खेत जोतना और

खेत की काली मिट्टी को खुद-खुद कर टूटते देखना पसंद है। बहुत ही सुंदर दृश्य होता है यह।"

मैथ्यू खड़ा उसे देखता रहा। क्रैफोर्ड लगातार गहरी साँसें ले रहा था और पसीने से उसकी कमीज नम हो गयी थी। उसके जूतों पर काली मिट्टी लगी थी और जब वे आपस में बातें कर रहे थे, वह हल के चमकते फाल को एक ओर झुका कर, उसे अपने पैर से खुरच रहा था।

उसने हल को फिर सीधा कर दिया और उसके हत्थे में रस्सियों की गाँठ लगा दी। "यद्यपि मैं आपके लिए हल चलाने नहीं आया था—" वह बोला—"मैं फिर आप से बातें करने आया था, मि. मैथ्यू!"

मैथ्यू ने अपने भीतर कठोरता उभरती महसूस की। क्रैफोर्ड का यही तरीका था—वह मित्र के समान खुले रूप में आता था और मैथ्यू के मन में ललक कर उसका स्वागत करने की इच्छा हो जाती थी। हर बार ऐसा होता था—पहले उसे देखने पर एक प्रकार की विमुखता पैदा हो जाती थी और तब उन दोनों के बीच एक ऐसी भावना आती थी, जो स्पष्ट और ईमानदार होती थी—और फिर बातें शुरू होती थीं, स्वयं का बचाव और आपस का संघर्ष!

"अगर तुम टी. वी. ए. के बारे में बातें करने वाले हो, तो......" उसने चेतावनी-सी दी।"

क्रैफोर्ड का चेहरा गम्भीर हो उठा। "इस बार मैं यहाँ टी. वी. ए. के काम के लिए नहीं आया हूँ।" वह बोला— "मैं स्वयं अपने काम के लिए आया हूँ।"

मैथ्यू अचानक घूम पड़ा—"इस सम्बंध में बातें करने का मेरा कोई इरादा नहीं है।" वह थोड़े में बोला—"इस सम्बंध में जो मेरे विचार हैं, तुम जानते ही हो!"

आर्लिस के साथ-साथ अपनी गाड़ी में रात बिताने के क्रोध तथा प्रेम, कामना और पृथकत्व के साथ अपने एकाकीपन के भार को ढोता हुआ क्रैफोर्ड इस घाटी में आया था। बोर्डिंग-हाउस के जीवन के खोखलेपन को भी वह ढोकर लेता आया था। आर्लिस और मैथ्यू के बारे में वह गम्भीरतापूर्वक सोचता भी रहा था। और अब, मैथ्यू इस सम्बंध में बात नहीं करना चाहता था।

क्रैफोर्ड के मन में आर्लिस का जो प्यार था, और इस सम्बंध में जो वह घंटों और दिनों तक सोचता रहा था, वह सब सिमट कर शादी की घड़ी में बदल गया था। जिस प्रकार उसके खून में नाश्ता की भूख समायी थी, वैसे ही

उसकी यह इच्छा भी प्रत्यक्ष थी। वह चाहता था, उसका अपना घर हो, आर्लिस हो और बच्चे हों। अब तक की उस जिंदगी के पीछे का जो इतिहास था, उसमें लकड़ी चीरने के कारखाने, सी. सी. सी. शिवरों और टी. वी. ए. के काम की कहानी थी, बोर्डिंग हाउस में एकाकी बितायी गयी रातों की कहानी थी। वर्षों के एकांत जीवन की कहानी और अब इस एकांत की समाप्ति होनी ही चाहिए—एक पुरुष और उसकी पत्नी के सामीप्य के घेरे में। और यहाँ मैथ्यू था कि उससे विमुख हो गया था—जिस मैत्री की भावना के वशीभूत क्रैफोर्ड यहाँ आया था, मैथ्यू ने उसकी ही उपेक्षा कर दी थी। उनके बीच जो अपनाव और सामीप्य की भावना थी, क्रैफोर्ड उसकी अवहेलना नहीं कर सका। वह खेत के उस दूसरे छोर पर बहुत दूर था, जब उसने मैथ्यू को वहाँ आते देखा था और उसने यह आशा सँजो रखी थी—जैसी कि उसने अपनी किशोरावस्था में उम्मीद बाँध रखी थी कि लकड़ी चीरने के कारखाने में कुंदे ढोनेवाली गाड़ी को सम्भाल कर लाने के लिए उसके पिता उसकी तारीफ करेंगे—मैथ्यू भी उसके खेत जोतने की, और वृक्ष में बँधे खच्चर को खोल कर मैथ्यू की जगह काम करने के लिए उसकी तारीफ करेगा—उसके काम को पसंद करेगा। और, जब मैथ्यू ने उसकी कार्यकुशलता की प्रशंसा की थी, तो क्रैफोर्ड को ऐसा प्रतीत हुआ था, मानो उसे सम्मान में कोई तगमा मिला हो।

उन दोनों के बीच तो इतनी निकटता होनी चाहिए थी, जितनी भाई-भाई में, बाप-बेटे में और दोस्त-दोस्त में होती है। उन लोगों की आदतें एक सी हैं। दोनों ही कार्य-सिद्धि में विश्वास करते हैं और शांति के साथ जीवन बिताने के पक्षपाती हैं। प्रत्येक मुलाकात पर दोनों के मन में यह भावना गतिशील हो उठती थी और क्रैफोर्ड जानता था कि जितनी सचाई से वह इसे अनुभव करता है, मैथ्यू भी उतनी ही सचाई से इसे अनुभव करता है। तो भी ऐसा नहीं हो सका। मैथ्यू अपनी घाटी से चिपका था और क्रैफोर्ड अपने इस स्थान से कि लोगों की भलाई के लिए इस जमीन पर नियंत्रण और शक्ति का बहुत बड़ा जाल होगा। मैथ्यू आर्लिस से जैसे चिपका हुआ था। वह उसे घाटी में ही रखना चाहता था, जैसे वह और हर चीज भी अपने पास रखना चाहता था। यहाँ तक कि प्रत्येक वसंत के मौसम में जब वह सूअर बेचने शहर जाता था, तो वह उनकी कीमत लेते वक्त बहुत धीरे-धीरे अपना हाथ आगे बढ़ाता था और अनिच्छापूर्वक सूअर को खरीददार के हवाले करता था। इधर क्रैफोर्ड आर्लिस को अपने लिए चाहता था। पुराने जमाने में, जैसे पश्चिम

की ओर जानेवाली मालगाड़ी में सब डिब्बे एक-दूसरे से जुड़े होते और नयी जमीन में हल चला कर, मिट्टी तोड़ कर जैसे नयी जमीन बनायी जाती है, वैसे ही उन दोनों के स्वप्न एक साथ हो सकते थे—आपस में एक हो सकते थे। तब उनका आपसी सम्बंध, आर्लिस के द्वारा, जमीन के द्वारा और भी सुदृढ़ हो जाता। किंतु अब, इस स्थिति में, जमीन पर अधिकार बनाये रखने, पुरानी परम्परा और नये और वृहत् प्रयासों को लेकर आगे बढ़ने के संघर्ष में, ऐसा नहीं हो सकता था। स्वप्न से स्वप्न टकराने से दोनों के बीच क्रोध ही बढ़ेगा—कलह पैदा होगा।

क्रैफोर्ड मैथ्यू की ओर बढ़ आया। "क्या तुम आर्लिस को बिल्कुल ही पस्त कर देना चाहते हो?" उसने उजड्डता से पूछा—"हमारे भीतर जो मानवीय भावनाएँ हैं, उससे तुम इनकार नहीं कर सकते, मैथ्यू! तुम..."

मैथ्यू विचलित हो उठा। वह क्रैफोर्ड की ओर घूम पड़ा और उसके चेहरे की ओर उसने खोज-भरी नजर डाली। "क्या तुमने...?" वह धीरे से बोला। उसकी आवाज भारी और दृढ़ थी और वह जैसे कुछ खोज रहा था।

उसके क्रोध के सम्मुख क्रैफोर्ड फिर पीछे हट आया। "मैं तुमसे झूठ नहीं बोलनेवाला हूँ—" वह बोला—"मैंने उसके साथ अभी पत्नी का सम्बंध स्थापित नहीं किया है। वह सदा इससे पीछे हटती रही है। जैसा कि उसने कहा था, वह तुम्हारी स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रही है।"

मैथ्यू ने आराम की साँस ली। "मुझे खुशी है कि तुम ऐसा कह सकते हो—" वह धीरे से बोला—"अगर तुम मेरे पास अपने कृत्यों का बखान करने आते, अपनी वीरता की कहानी सुनाने आते, तो मैं तुम्हें मार डालता..."

"लेकिन अंततः यही होगा—" क्रैफोर्ड चिल्ला पड़ा—"क्या तुम देख नहीं रहे हो कि तुम हम लोगों को ऐसी स्थिति की ओर ले जा रहे हो..." वह जोर-जोर से साँस लेते हुए रुक गया; क्योंकि राइस निकट ही हल चला रहा था। राइस उनकी ओर उत्सुकतापूर्वक देखते हुए जब तक मुड़ कर फिर दूर नहीं चला गया, वह प्रतीक्षा करता रहा। "सुनो, मैथ्यू! आर्लिस एक भली लड़की है। वह नहीं चाहती है कि उसका प्रणय व्यापार किसी मोटरगाड़ी में चले। उसने इसके लिए मुझसे झगड़ा किया है—स्वयं से झगड़ा किया है। मेरे चेहरे पर उसने अपने नाखूनों से खरोंच के निशान भी बना दिये हैं।"

"मैंने उसे पाला-पोसा ही इसी प्रकार है।"

क्रैफोर्ड ने अपने भीतर एक निराशाजन्य क्रोध अनुभव किया। एक मामूली-से बड़े हथौड़े से टी. वी. ए.-निर्मित किसी बाँध को नष्ट-भ्रष्ट करने के प्रयास के समान ही यह था। उसके हाथ की मुठ्ठियाँ तन कर बँधने लगीं और तब उसने उन पर काबू पा लिया, उँगलियाँ ढीली कर दीं और उसके हाथ दोनों ओर लटकने लगे।

"तुमने उसे इसी ढंग से पाला-पोसा है—" वह बोला—"काफी अच्छे ढंग से तुमने उसे पाला-पोसा। जिस प्रकार कुछ लड़कियाँ हर रात नये-नये आदमी के साथ खेल दिखा कर बड़े गंदे और विकृत ढंग से प्यार करना सीखती हैं, आर्लिस वैसा नहीं करनेवाली है। तुम्हें इसके लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है।" वह रुक गया। शब्द उसके गले में अटक-से गये थे—"लेकिन अब तुम उसे यही करने के लिए बाध्य कर रहे हो। इसी की ओर तुम उसे घसीटे लिये जा रहे हो।"

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर देखा। उसका चेहरा रोष से जैसे ऐंठ गया था। किंतु २९-वर्षीय इस युवक में क्रोध की घातक भावना नहीं थी। उसके चेहरे की रेखाएँ गहरी हो उठी थीं और वहाँ सिकुड़नें उभर आयीं थीं। आँखों में रोष और कामना की भावना झाँक रही थी। मैथ्यू की इच्छा हो रही थी कि अब वह इसे बंद कर दे और आर्लिस तथा क्रैफोर्ड, दोनों को एक हो जाने और सुखद जीवन बिताने का आशीर्वाद दे। किंतु उसने स्वयं को दृढ़-स्थिर रखा। यह विनम्रता और समझदारी दिखाने का, जो कि सदा उसकी कमजोरी रही है, मौका नहीं था।

"तुम मेरे पास आकर मेरे जारज नाती होने की जितनी धमकी देना चाहते हो, दे सकते हो—" वह बोला—"लेकिन मैं आर्लिस को जानता हूँ। वह मेरी बेटी है। वह डनबार है और मैं उस पर भरोसा रख सकता हूँ। जब तक मैं अपने मुँह से स्वीकृति नहीं दे दूँ, तुम उसके पेट में बच्चा नहीं ला सकते, क्रैफोर्ड!"

क्रैफोर्ड ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया। "तुम क्या चाहते हो?" वह बोला—"आखिर क्या चाहते हो तुम?"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा; फिर अपनी आँखें हटा लीं और अपने मकान की ओर देखा। वह स्वयं नहीं जानता था कि वह क्या चाहता था। वह सिर्फ इतना ही जानता था कि वह आर्लिस को क्रैफोर्ड के साथ नहीं जाने दे सकता। क्रैफोर्ड एक मनुष्य नहीं था, वह तो मानो एक शक्ति था। क्रैफोर्ड डनबार-घाटी को

नष्ट-भ्रष्ट करता था—जो-कुछ भी अब तक बना था वहाँ, क्रैफोर्ड ने उन्हें तोड़-फोड़ डाला था। उसने जो-कुछ किया था उससे उसके मनुष्यत्व को अलग करने का कोई मार्ग नहीं था, यद्यपि उसे अपना दामाद बना कर मैथ्यू को फख्र ही होता, बशर्ते उनके बीच क्रैफोर्ड की करतूतें नहीं आ जातीं।

"मैं चाहता हूँ, तुम हमें अकेला छोड़ दो—" वह बोला—"मैं चाहता हूँ, तुम स्वयं को और टी. वी. ए. तथा अपने काम करने के तरीकों को मेरी घाटी से बाहर ही रखो।"

क्रैफोर्ड अब स्थिर खड़ा था। उसके हाथ फिर उसकी बगल में बेजान-से लटक रहे थे। "और आर्लिस के सम्बंध में?" उसने शांतिपूर्वक कहा—"उसके सम्बंध में क्या सोचा तुमने?"

राइस हल चलाता हुआ फिर उधर आ निकला और उनकी बातचीत रुक गयी। मैथ्यू हल घुमाने के लिए रुका और व्यर्थ ही हल की चाल को अपने पैर से साफ करने लगा। उसे इधर व्यस्त पा, खच्चर थोड़ा आगे बढ़ गया और नयी उगी घास चरने लगा। मैथ्यू ने उसे रोकने के लिए रस्सियों को जोर से झटका दिया। पीड़ा से खच्चर का मुँह खुला रह गया और उसने जो घास चबाया था, उसका हरा-पीला रस उसके होंठों से होकर जमीन पर चू पड़ा।

"उसका जीवन-क्रम यों ही चलता रहेगा—" मैथ्यू ने पूर्ण विश्वास के स्वर में कहा—"कुछ दिनों तक वह तुमसे रात में, सड़क के किनारे मिलती रहेगी और फिर मिलना बंद कर देगी। और तब, उसके जीवन में दूसरा व्यक्ति आयेगा, जो उसके लिए पूर्णतया उपयुक्त होगा, जिसे मैं इस घाटी में, अपने परिवार में शामिल कर सकूँगा—मेरे नाती मेरे पास ही रह कर बड़े होंगे और वह व्यक्ति मेरी बगल में मेरे बेटे के समान मेरे कामों में मदद करेगा—उन कामों में, जो डनबार परिवार को करने पड़ते हैं—वह उन्हें विनष्ट करने नहीं आयेगा, घाटी को हमसे छीनने नहीं आयेगा।"

"आर्लिस भी क्या यही चाहती है?" क्रैफोर्ड ने कटुता से कहा—"क्या इसीलिए वह रात्रि के अंधेरे में मुझसे झगड़ती है—स्वयं से संघर्ष करती है? क्या इसीलिए वह मुझसे अधिक स्वयं से संघर्ष करती है?"

"आर्लिस एक डनबार है—" मैथ्यू ने स्थिरतापूर्वक कहा—"डनबार-भूमि और डनबार रक्त के लिए जिसमें भला है, वही वह चाहती है।" वह रुका। उसकी आवाज बदल गयी। कटु-कर्कश स्वर में वह बोला—"नाक्स मुझसे दूर चला गया है, क्रैफोर्ड! और अगर वह कभी वापस आया, तो उस वक्त वह

एक बूढ़ा और जीवन से परास्त इंसान होगा—उसे उस वक्त एक ऐसी जगह की तलाश होगी, जहाँ बैठ कर अपने जीवन के बाकी दिन शांतिपूर्वक गुजार सके। जैसे जान मेरे पास से चला गया है—वह एक ऐसी औरत का पीछा कर रहा है, जो उसके दिमाग के सिवा कभी उसके साथ थी ही नहीं। मेरे पास अब सिर्फ आर्लिस, राइस और हैटी, बस यही बच गये हैं—और यह घाटी!"

उनकी बातचीत को समाप्त करता हुई उनके बीच सन्नाटा छा गया। दोनों में अब न कोई क्रोधित था, न लम्बी-लम्बी साँसें ले रहा था। क्रैफोर्ड क्षण-भर तक अनिश्चित-सा खड़ा रहा, तब वह जमीन पर बैठ गया और एक-एक कर दोनों पैर से जूते निकाल कर उसने उसके भीतर चली गयी गर्द साफ कर ली। फिर उसने उन्हें धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक पहन लिया। मैथ्यू इस बीच हल के लट्ठे पर बैठा उसे देखता रहा। क्रैफोर्ड ने एक सिगरेट निकाल कर जलाया और पैकेट मैथ्यू की ओर बढ़ा दिया। मैथ्यू ने इन्कार में सिर हिलाया।

"तुम मुझे टी. वी. ए. के साथ मिला कर सब गड़बड़ कर दे रहे हो—" क्रैफोर्ड तब बोला—"तुम हमारे साथ—मेरे और आर्लिस के साथ—यही गलती कर रहे हो, मैथ्यू! मैं टी. वी. ए. नहीं हूँ। मैं एक मनुष्य हूँ—एक इंसान, जो टी. वी. ए. के लिए काम करता है। मुझे उसके लिए काम करने का गर्व है—जो काम मैं कर रहा हूँ, उसके लिए गर्व है। किंतु यह कोई कारण नहीं है कि तुम......"

आवाज अब धीमी और शांत थी। क्रैफोर्ड ने बहुत सोच-सोच कर इन शब्दों को कहा, मानो वह उन्हें स्वयं के लिए ही सोच रहा था और मैथ्यू ने भी उसे उसी ढंग से जवाब दिया।

"लेकिन तुम्हीं वह व्यक्ति हो, जो यहाँ आये—" वह बोला—"तुम्हीं वह व्यक्ति हो, जिसने कहा कि जो चीज आज तक डनबार की है, उसे मुझे त्यागना होगा।"

"अगर मैं टी. वी. ए. छोड़ देता हूँ, तो कल दूसरा व्यक्ति आयेगा—" क्रैफोर्ड ने कहा। उसकी आवाज में विरोध-सा था—"उससे क्या कोई अंतर पड़नेवाला है?"

मैथ्यू को मुस्कराना पड़ा। "सम्भव है, तुम्हारे मामले में इससे फर्क पड़ जाये—" वह बोला—"यद्यपि नये आदमी के लिए मेरे मन में तनिक भी प्यार नहीं रहेगा।"

"तब, अगर मैं अपनी नौकरी छोड़ दूँ, तो मैं आर्लिस से शादी कर सकता हूँ। तुम मुझसे यही कह रहे हो न?"

मैथ्यू ने नजरें झुका लीं और अपने हाथों की ओर देखने लगा। उसकी भौंहें सिकुड़ आयी थीं। "यह इतना आसान नहीं है, बेटे! सारी चीज कुछ ऐसी मिल गयी है एक साथ कि...तुम्हारे सोचने का ढंग और मेरे सोचने का ढंग..."

"नहीं!" क्रैफोर्ड बोला—"यह इतना आसान नहीं है। क्योंकि मैं टी. वी. ए. नहीं छोड़ने जा रहा हूँ।" उसने अपना सिर घुमाया और घाटी की ओर देखने लगा, जैसे वह इसे पहली बार देख रहा था। "मि. डनबार! मुझे सिर्फ एक बात पूछने दीजिये। जमीन, धूल, मिट्टी—यही पोषण देती है—जीवित पदार्थों को बल पहुँचाती है। इस मिट्टी में और दुनिया की किसी और स्थान की मिट्टी में ऐसा क्या अंतर है? इस मिट्टी में ऐसा क्या है, जिससे आप इससे इस प्रकार चिपके हुए हैं, जिस तरह मनुष्य अपने जीवन से चिपका रहता है?"

मैथ्यू सोच में पड़ गया। उसके ललाट पर सिकुड़नें उभर आयीं। "कहना मुश्किल है—" उसने स्वीकार किया—"खास कर तुम्हारे जैसे व्यक्ति से। तुम्हारे लिए धरती का एक टुकड़ा कुछ चीजें भर उपजाता है; वृक्षों को पोषण देता है, जिससे आगे चल कर उन्हें काट डाला जाये और चीर-चीर कर इमारती लकड़ियाँ बना ली जायें; कपास चुन लिया जाये और उसकी गाँठें बना ली जायें। जमीन एकड़ों में मापी जाती है और उसकी कीमत आँकी जाती है। ये आँकड़े मनुष्य ही तय करते हैं और इनका तथ्य से बड़ा होना आवश्यक है। किंतु यह मिट्टी भिन्न है। यह डनबार है, उसी प्रकार, जिस प्रकार मैं डनबार हूँ—जिस प्रकार हम सभी डनबार हैं—सूअरों और मुर्गियों तक। यह एक ऐसी भावना है, जो इस जमीन के साथ ही आयी है—जिस प्रकार उस पुराने डेविड डनबार ने प्रत्यक्ष रूप से यह जमीन हम लोगों के पास भेजी थी, वैसे ही यह भावना भी आयी है; क्योंकि यही एक ऐसी चीज है, जो हमेशा डनबार के हाथों में रही है।"

क्रैफोर्ड चुपचाप सिगरेट पीता हुआ, उसकी बातें सुन रहा था। खच्चर अपना एक पैर जोरों से झटक रहा था, जहाँ एक मक्खी ने उसे डंक मार दिया था और उसकी ढीली रस्सियाँ आपस में रगड़ खाकर एक अनोखा संगीत पैदा कर रही थीं। राइस वहाँ तक हल चलाता आया, मुड़ा और उसने घूम कर

उनकी ओर देखा। फिर वह हला चलाता हुआ उनसे दूर चला गया। वह एक-सी गति से धीरे-धीरे बढ़ता हुआ खेत के किनारे की ओर पहुँच रहा था। और दोनों व्यक्ति साथ बैठकर एक व्यक्ति की आवाज सुन रहे थे—

"डेविड डनबार अर्द्ध इंडियन था। वह इस इलाके में अकेला आया। उसके पास कुछ नहीं था, सिवा कुछ कपड़ों के, जिन्हें वह अपनी पीठ पर ढोकर ले चलता था और खाने के लिए सूखी मकई का एक बोरा! यह उसके दुश्मन, चिकामाउगों की जमीन थी; किंतु वह आया और यहीं रहने लगा; क्योंकि खुद उसका बाप भी वर्जीनिया से मिसीसिपी चला गया था और एक इंडियन औरत से उसने शादी कर ली थी।

"अगर उसके पिता ने औरत के साथ सम्भोग करके उसे छोड़ दिया होता, तो कोई बात ही नहीं उठती। उस इलाके में, जहाँ गोरी औरतें थीं ही नहीं, ऐसा खूब प्रचलित था। खिलौने और माला के मनके जैसी छोटी-छोटी चीजें देकर वे इंडियन औरतों को अपने साथ व्यभिचार करने के लिए तैयार कर लेते थे, उन्हें सूजाक और उपदेश दे देते थे और फिर भी वे पेट में उनके बच्चे लिये घूमा करती थीं। किंतु डेविड डनबार के पिता ने ऐसा कुछ नहीं किया—उसने उस इंडियन औरत से विवाह कर लिया और उसके रहने के लिए उसने लकड़ी का एक केबिन भी बनवा दिया। वे दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे। उनकी संतानों में डेविड सबसे बड़ा था, जो स्वयं में एक ओर इंडियन तथा दूसरी ओर गौर रक्त लेकर बढ़ने लगा। किंतु उस इलाके में डनबारों के प्रति लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं था; क्योंकि उनकी इंडियन माँ को उनके पिता ने विधिवत् पत्नी मान लिया था। वे गोरे, लाल और काले—सबसे एक-सरीखा ही अलग रहते थे और स्वयं में ही सीमित होकर रह गये थे। डेविड डनबार अपने वहाँ रहने के अधिकार के लिए लड़ने की भावना लेकर बड़ा हुआ। वह सही माने में एक वर्णसंकर बनना चाहता था और जब वह अठारह साल का था, तब उसने एक आदमी को, अपनी माँ के प्रति अपशब्द व्यवहार करने के लिए, जान से मार डाला।

"अपने शरीर में चिकसा-रक्त की अपनी अर्द्ध-पैतृक देन के साथ वह पूर्व की ओर आया—इस चिकामाउगा इलाके में, अपने पुराने दुश्मन की जमीन में और उसने उनसे अपनी व्यक्तिगत शांति स्थापित की। उसमें जो एक यूरोपीय का खून दौड़ रहा था, उसी ने उसे ऐसा कर लेने दिया; क्योंकि एक ऐसे व्यक्ति से जो पूर्णरूपेण चिकसा होता, वहाँ के लोग बात भी नहीं करते। कहते हैं कि

पिछले सैकड़ों वर्षों से दोनों कबीलों के बीच लड़ाई चली आ रही थी। नदी के दोनों ओर रहनेवाले ये कबीले कुछ समय तक तो शांतिपूर्वक अपना-अपना शिकार करते और फिर उनका पुराना झगड़ा शुरू हो जाता।

"किंतु डेविड का उससे कोई सम्बंध नहीं था। चिकामाउगों ने उसे अपने यहाँ आने दिया। उन्होंने उसे यह घाटी उसी प्रकार अपने कब्जे में रख लेने दी, जैसे गोरे लोग जमीन पर अधिकार कर लिया करते थे। किंतु उस वक्त कोई गोरा भी ऐसा नहीं कर सकता था—यहाँ उसके पहले जितने व्यक्ति रह चुके थे, सबमें इंडियन और गोरा खून मिला हुआ था। डेविड डनबार के शरीर में प्रवाहित होनेवाले इंडियन रक्त ने उसे इस घाटी का स्वामी बना दिया और गोरे रक्त ने खुल कर उन लोगों के बीच रहने की छूट दिलवा दी।

"और यही वह डनबार था। डेविड डनबार ने इस घाटी को अपना बना लिया—पूर्णरूपेण अपना। मिसीसिपी में, वर्जीनिया में या नदी के उस पार, जहाँ से वे आरम्भ में आये थे, डनबारों के पास इस प्रकार अपना कहने-लायक कुछ नहीं था। और, डेविड डनबार ने अपने खून में यह भावना पैदा कर ली कि यह डनबारों की जगह है—इस पूरे विश्व में एकमात्र ऐसी जगह, जहाँ सम्भवतः कोई भी डनबारों को बुरा नहीं कह सकता। भगवान ही जानता है कि बड़े होने के साथ डेविड के भीतर कैसी कड़वाहट घर करती गयी थी। वह जानता था कि वर्णसंकर होने के कारण वह नीची नजर से देखा जाता था—किंतु सिर्फ इसलिए नहीं कि वह वर्णसंकर था, बल्कि इसलिए कि उसके पिता ने उसकी माँ के पेट में बच्चा डाल कर छोड़ देने के बजाय, उससे शादी कर ली थी। यह एक अन्याय था, जिसे कोई मनुष्य नहीं सह सकता, क्रैफोर्ड! क्योंकि अगर वह इसे बर्दाश्त कर सकता है, तो वह मनुष्य ही नहीं है। और डेविड डनबार ने तय कर लिया कि वह इस सम्पूर्ण घाटी को अपने अधिकार में रखेगा; इसे अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित नहीं करेगा, बल्कि पूरी घाटी को एक सुदृढ़ किले के रूप में अपने पास रखेगा, जिससे यह कभी हाथ से निकल न जाये, पानी में इसे डुबोया न जा सके, इसे नष्ट नहीं किया जा सके। और, उसने अपने लड़कों से यही कहा और उनके मन में भी यही विश्वास पैदा करा दिया। उसके लड़कों ने अपने लड़कों से कहा और उनके मन में भी यहीं रहने और इसे अपने कब्जे में रखने की भावना जगा दी—ठीक वैसे ही, मुझे भी अपने लड़कों से कहना है।"

"किंतु कितने तो जा चुके हैं—" क्रैफोर्ड बोला—"अपनी पीढ़ी में

बस, तुम्हीं बचे हो सिर्फ। क्या तुम्हारे भाई नहीं थे? और नाक्स तथा जेसे जान......"

मैथ्यू ने, घर में बैठे मार्क के विषय में सोचा। "हाँ!" वह उदासी से बोला—"कुछ लोग गुमराह हो गये हैं। और कुछ और भी गुमराह होंगे। लेकिन हममें एक व्यक्ति हमेशा ऐसा होगा, जो इसे अपने अधिकार में रखना चाहेगा। अगर वह सच्चा हो, सशक्त हो, और टिका रहनेवाला हो, तो वह एक ही काफी है।" वह रुका। उसके चेहरे पर गिरजाघर की-सी गम्भीरता थी और वह इस सम्बंध में सोच रहा था—"आज मेरा सगा भाई घर वापस आया है, क्रैफोर्ड! अगर डनबार-घाटी यहाँ नहीं होती, तो क्या होता? अगर वह पहाड़ियों से होता हुआ यहाँ पहुँचता और एक अजानी-अपरिचित जगह देखता, तब क्या होता, सोचो तो! उसकी आखिरी शक्ति, उसकी आखिरी हिम्मत भी मर जाती, क्रैफोर्ड, और वह हमेशा के लिए समाप्त हो जाता।"

क्रैफोर्ड विक्षुब्ध हो उठा। "तब मुझे और टी. वी. ए. को क्यों दोष देते हो?" वह बोला। उसकी आवाज में जिद और दृढ़ता थी—"तुम्हारे पिता ने तुम्हारे भाई को घाटी छोड़ कर जाते देखा और जहाँ तक उसकी जानकारी का सवाल है, वह जानता था कि तुम्हारा भाई कभी नहीं लौटेगा। उसने अपने समय में ही अपनी पीढ़ी को तितर-बितर होकर संसार में घुल-मिल जाते देखा।"

"किंतु टी. वी. ए. मेरी है—" मैथ्यू ने कोमलता से कहा—"टी. वी. ए. से मुझे लड़ना है। मेरे पिता के जमाने में वह महायुद्ध था, जिसने हमसे मेरा भाई ल्यूक छीन लिया; क्योंकि युद्ध की खबर सुनते ही ल्यूक वहाँ जाने के लिए दीवाना हो उठा। उसे अपने हाथ में बंदूक लेनी पड़ी और वह युद्ध में चला गया। अपने मरने के दिन तक मेरे पिता उस युद्ध से घृणा करेंगे।" वह रुका। "मैं जानता हूँ, यह कोई नयी चीज नहीं है। किंतु यह मेरा समय है और यह मेरा काम है। वह दिन भी आयेगा, जब नाक्स उस पहाड़ी से चलता हुआ घर वापस आयेगा। हो सकता है, वह उस वक्त बूढ़ा हो गया हो, फटेहाल हो; लेकिन उसके भीतर घर लौट आने की भावना बलवती होगी और तब उसके लिए यह जरूरी होगा कि वह इस पहाड़ी के नीचे फैली इस डनबार-घाटी को देखे, जो उसकी घर वापसी के लिए पलकें बिछाये होगी—इसके लिए या किसी भी डनबार के लिए जिसके दरवाजे खुले होंगे।"

वे खामोश बैठे रहे। उसकी बात कुछ देर के लिए बंद हो गयी।

अंततः मैथ्यू ने नजरें उठा कर क्रैफोर्ड की ओर देखा। "वे क्या करने जा रहे हैं?" वह बोला—"क्या होने जा रहा है यहाँ?"

मैथ्यू का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा था, क्रैफोर्ड इससे परिचित था। "अभी भी तुम्हारे पास समय है—" वह बोला—"तुम अपनी य फसल पूरी कर लोगे और इसे इकट्ठा भी कर लोगे। बिल्कुल अंत के पहले—जब तक उन लोगों से वे निबट नहीं लेंगे, जो टी. वी. ए. का प्रस्ताव मान लेते हैं, वे यहाँ नहीं आयेंगे। अतः अभी भी तुम्हारे पास थोड़ा समय है!"

"और तब?" मैथ्यू ने पूछा। वह अब जानना चाहता था कि खतरा कितना दूर था और उसकी पहुँच कहाँ तक थी! अब अधिक देर तक वह इससे अपना सिर नहीं छुपाता फिरेगा—यह भुलावा नहीं देगा स्वयं को कि इसका कोई अस्तित्व नहीं है। युद्ध शुरू करने के पहले जानकारी आवश्यक थी और अब वह एकचित्त होकर जानकारी पाने में जुटा था। "और तब?"

उसके इस तरह खोद-खोद कर पूछने से क्रैफोर्ड बेचैन हो उठा था। "और तब—" वह बोला—"वे इसके विरुद्ध निर्णय देंगे। कुछ निष्पक्ष व्यक्तियों के दल के सामने वे यह तय करेंगे कि इसकी कीमत कितनी है और तुम्हारे पास इस सम्बंध के सरकारी कागजात आ जायेंगे। तुम्हें यह जगह छोड़ देनी पड़ेगी। इसमें कहीं से किसी प्रकार की सहायता की गुंजाइश नहीं है—बस, तुम्हें यह जगह छोड़नी पड़ेगी!"

"अगर मैं नहीं छोड़ूँ, तो क्या होगा?" मैथ्यू बोला—"अगर मैं यहाँ से जाने से इन्कार कर दूँ, तो वे क्या कर सकते हैं?" उसकी आवाज में उसके आत्म-विश्वास की पुट थी और वह बड़े सुलझे ढंग से इन सवालों को पूछ रहा था।

क्रैफोर्ड ने इन्कार में अपना सिर हिलाया। "मैं नहीं जानता हूँ—" उसने स्पष्ट कह दिया—"मैं नहीं जानता हूँ। किंतु वे कुछ करेंगे जरूर।"

"क्या वे पानी को तब आगे बढ़ने का रास्ता दे सकते हैं?" मैथ्यू ने जानना चाहा—"मेरे घर में बैठे रहने पर भी क्या वे यहाँ बाढ़ ला सकते हैं?"

"ऐसा कभी नहीं किया गया है—" क्रैफोर्ड बोला। वह चुप हो गया। फिर उत्तेजित हो बोला—"देखो, मैथ्यू, उन्हें यहाँ नदी के पानी को रास्ता देना ही है। यह रुक नहीं सकता—बचने का कोई मार्ग नहीं है।"

मैथ्यू ने दबाव डाला—"क्या वे बंदूकें लेकर आयेंगे?" वह बोला—"क्या मुझे मेरी ही जमीन से हटाने के लिए वे लड़ने की कोशिश करेंगे?"

"मैं नहीं जानता—" क्रैफोर्ड ने क्रुद्ध होकर कहा—"यद्यपि वे तुम्हें यह जगह

छोड़ने के लिए बाध्य कर देंगे। बस, इतना याद रखो। तुम्हारे कहने से कुछ नहीं होने का। तुम एक अकेले व्यक्ति सारे देश की राह में बाधा नहीं डाल सकते।"

"मैं ऐसे करूँगा।" मैथ्यू ने कहा—"मैं अपनी जमीन पर ही डटा रहूँगा और नदी के पानी को अपने दरवाजे से वापस कर दूँगा। तुम जाकर अपने उच्च अधिकारी से कह सकते हो कि मैंने ऐसा कहा है। कह दो जाकर उससे, कि तुमने मुझे टी. वी. ए. की महानता और अच्छाई समझाने की, उसे मनवाने की, कोशिश की और असफल रहे। तुमने मेरे दिमाग में यह भरने की चेष्टा की कि किस तरह टी. वी. ए. लोगों का दिल बदल देनेवाली है, लोगों की आत्मा बदल देनेवाली है, लोगों की हालत बदल देनेवाली है—किंतु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। जाकर कह दो उसे—" उसने एक गहरी साँस ली—"सिवा डनबारों के किसी और के दिल, आत्मा और परिस्थिति में मेरी रुचि नहीं है। इस मामले में मैं अपने प्रपितामह डेविड डनबार के समान ही वर्णसंकर हूँ। मैं इस मानव-जाति का अर्द्धांश हूँ और दूसरा आधा भाग डनबार है। तुम अपने उच्च अधिकारी से, मैं जो-कुछ कह रहा हूँ, उसे कह सकते हो और इसकी सच्चाई में विश्वास करने को भी कह सकते हो।"

क्रैफोर्ड उसकी ओर घूरता रहा। "मैथ्यू!" वह बोला—"तुम नहीं जानते, तुम क्या कह रहे हो। जिस संसार में तुम रह रहे हो, उसी का तुम परित्याग नहीं कर सकते। तुम पुराने जमाने के उस राजा की तरह नहीं हो सकते, जिसने समुद्र को आदेश दिया था कि वह उसके पाँव भिगोने का दुस्साहस न करे। तुम ऐसा नहीं कर सकते, मैथ्यू!"

मैथ्यू मुस्कराया—"जब तुम पहली बार यहाँ आये, तुमने मुझे मि. डनबार कह कर पुकारा। अब तुम मुझे मि. मैथ्यू कह कर पुकारने लगे। अब तुम मुझे—जो तुम्हारे पिता की उम्र का है—सिर्फ मैथ्यू कह कर पुकार रहे हो।"

क्रैफोर्ड का चेहरा जैसे विकृत हो उठा। नहीं चाहते हुए भी, वह मैथ्यू की ओर आगे बढ़ आया और अपने हाथ से उसने कस कर उसकी बाँह पकड़ ली। "जरा सोचो, मैथ्यू!" वह बोला—"जो तुम कर रहे हो, उस पर जरा गौर करो। तुम एक अच्छे आदमी हो, जिसने अच्छी जिंदगी बितायी। तुम एक ऐसे व्यक्ति हो, जिसे मैं अपना पिता कहने में गर्व अनुभव कर सकता हूँ। तुम अपने रास्ते पर, अपने तरीके में सुदृढ़ रहे हो और तुमने अपने बच्चों का पालन-पोषण कुशलता से किया है। वे तुम्हें प्यार करते हैं, तुम्हारी इज्जत करते हैं। वे जब तुमसे बातें करते हैं, तो उनकी जबान पर सरलतापूर्वक और आदर के

साथ 'महाशय' सम्बोधन आ जाता है। अब इसे विकृत रूप मत दो, मत दो..."

मैथ्यू ने उसकी पकड़ के नीचे अपने हाथ को हिलाया। उसने झटका नहीं दिया, बल्कि उसे बिना किसी विशेष प्रयास के तब तक हिलाता रहा, जब तक वह क्रैफोर्ड की पकड़ से मुक्त नहीं हो गया।

"तुम मुझसे अपनी बात नहीं मनवा सकते, बेटे!" वह बोला—"मैं तुमसे यह कह चुका हूँ।"

क्रैफोर्ड उसके सामने सीधा खड़ा रहा। वह उसे साफ-साफ देख पा रहा था। उसकी आँखों में मैथ्यू के प्रति प्यार था और उसे खो देने का भय! उन दोनों के बीच जो भावना काम कर रही थी, उसके बारे में कुछ कहना कठिन था—बाप-बेटे की, भाई भाई की, अथवा दोस्त-दोस्त की! एक-दूसरे को खो देने का दुःख दोनों के ही अंतर की गहराई को छू रहा था और क्रैफोर्ड का मन चाह रहा था कि वह रो पड़े—जी-भर कर रोये, जैसे वह अपने पिता की मृत्यु पर रोया था। और मैथ्यू के लिए—उसका नाक्स जैसे फिर उससे बिछुड़ रहा था—सिर्फ इस बार बिछोह अधिक गहरा, अधिक यथार्थ और अधिक पीड़ा पहुँचानेवाला था। यह नाक्स और मार्क दोनों के बिछुड़ने के दुःख-जैसा था और इसमें आर्लिस के मिल जाने से उसके अंतर में और भी गहरी पीड़ा हो रही थी, उसका जी मतला रहा था और उसे वमन करने की इच्छा हो रही थी।

"मैथ्यू!" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ, मैथ्यू! मेरी ओर देखो। जब भी मुझे देखो, जान जाओ कि मैं तुम्हारा शत्रु हूँ।"

मैथ्यू उसकी ओर से अपनी आँखें नहीं हटा सका। क्रैफोर्ड जो-कुछ कह रहा था, उसे रोकने के लिए वह अपना हाथ भी नहीं उठा सका।

"हाँ!" वह बोला—"मैं तुम्हारी ओर देख रहा हूँ।"

क्रैफोर्ड ने शपथ लेने की मुद्रा में अपना हाथ ऊपर उठाया, जैसे कोई भारी तलवार अपनी पीठ पर रख रहा हो—"मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने जा रहा हूँ, मैथ्यू! मैं टी. वी. ए. के लिए यह जमीन तुमसे ले लेनेवाला हूँ और मैं आर्लिस को भी ले जाऊँगा। देखो मेरी ओर अब!"

"मैं जानता हूँ तुम्हें—" मैथ्यू बोला—"मैं तुम्हें जानता हूँ।"

क्रैफोर्ड ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और तब बिना मैथ्यू का स्पर्श किये ही उसने उसे वापस खींच लिया। यह उनके बीच अंतिम अभिनंदन था—अंतिम नमस्कार था!

और तब वह वहाँ से चला गया!

दृश्य छः

जीवनी–वह

जन्म के साथ ही मृत्यु वहाँ मौजूद थी। टेनेसी पर्वत की एक पश्चिमी ढलान पर वह पैदा हुआ था। लम्बे-लम्बे पायोंवाली लपेटकर रख दी जानेवाली खाट पर बिस्तरा बिछा था और उस पर एक औरत लेटी थी—उसकी माँ! एक धूमिल भूरे रंग की चादर बिस्तरे के चारों ओर, उसके प्रत्येक पाये से बँधी थी और उसकी माँ प्रसव-पीड़ा से छटपटाती और कराहती हुई बिस्तरे पर लुढ़क रही थी। वह दर्द अधिक होने पर कस कर चादर को पकड़ लेती। उस औरत का पति—उसका बाप बाहर आँगन में श्वेत बलूत-वृक्ष के एक ठूँठ पर बैठा था। वह मन-ही-मन बड़ा भयभीत था और अपने हाथ की गहरे लाल रंग की देवदार की छड़ी को बैठा-बैठा छील रहा था। उसकी पत्नी जब प्रसव-पीड़ा से चीखी, तो वह घबड़ा गया। उसके हाथ के चाकू को झटका-सा लगा और चाकू छड़ी को बड़ी बेदर्दी और गहराई से काटता हुआ निकल गया। उसे फिर से छील-छाल कर चिकनी करने में उसे बड़ी सावधानी बरतनी पड़ी।

वह पैदा होना नहीं चाहता था। बूढ़ी धाय उसे गर्भाशय से बलपूर्वक बाहर निकालने का प्रयास कर रही थी और वह इसके विरुद्ध संघर्ष करता रहा और वहाँ से बाहर निकलने के लिए तैयार होने के पहले ही उसने अपनी माँ को मार डाला। वह चौथी संतान था—अकेला लड़का और जब वे उसकी माँ को दफ़ना रहे थे, वह एक बोतल में लगे पुराने चुचुक को चूमता रहा था। वह उस वक्त हाथ के बने एक पालने पर लेटा था, जिस पर उससे पहले तीन बच्चे और झूल चुके थे।

जन्म के समय वह बहुत बड़ा था—दस पौंड से भी अधिक; किंतु बाद में, उसकी सौतेली माँ उसे ठीक से खाने को भी नहीं देने लगी और उसका विकास रुक गया, वजन कम हो गया। छः साल का होते ही वह खेतों में काम करने लगा। हल के हत्थों को स्थिरता से पकड़ पाने के लिए उसे अपनी बाँहें

अपने सिर तक ऊँची उठानी पड़तीं और उसके छोटे-छोटे कदमों की तुलना में हल को खींचनेवाले खच्चर बड़ी तेज और लम्बी चाल से चलते।

किंतु वह खुश था। संगीत के प्रति उसकी रुझान थी और उसने अपने बाप को वायलिन बजाते देखा था। एक दिन, जब उसका पिता कहीं बाहर गया हुआ था, उसने वायलिन उठा ली और उसके तारों को छेड़ कर उसे बजाने का प्रथम प्रयास किया। लेकिन अभी उसका यह प्रयोग अधूरा ही था कि वृक्ष की एक मोटी शाख से उसकी जोरदार पिटाई हुई और वह आश्चर्यस्तंभित रह गया। लेकिन दूसरे ही दिन वह खूबसूरत-सी वायलिन फिर उसके हाथ में थी। इस प्यार ने उसे उसके दूध से वंचित कर दिया, मकान के बाहरी आँगन में तथा खलिहान के पीछे छुप कर खेलने से वंचित कर दिया; किंतु वायलिन के प्रति उसका मोह फिर भी नहीं छूटा और जन्म लेने के बाद यह पहली लड़ाई थी, जिसमें उसकी जीत हुई—पैदा न होने के प्रयास में पहली सबसे बड़ी पराजय के बाद यही उसकी पहली जीत भी थी! कुछ काल के बाद वह वायलिन भी उसी की हो गयी; क्योंकि सालों तक उसे पीटने की कड़ी मेहनत से उसके पिता के हाथ खुरदरे हो गये, फूल गये और थक कर उन्होंने छोड़ दिया। प्रत्येक रात्रि और प्रत्येक रविवार को वह फिर बाहरी बरामदे में बैठ जाता, वायलिन उसके बायें कंधे से टिकी होती और वह उसके तारों को छेड़-छेड़ कर स्वयं ही उसे बजाने का प्रयास करता, उसकी गुत्थियाँ समझने की चेष्टा करता—उसके उतार-चढ़ाव सीखने की कोशिश करता।

दस वर्ष की उम्र में वह स्त्री-पुरुष के सम्बंध से भी परिचित हो गया। एक रविवार को पहली बार उसकी एक चचेरी बहन वहाँ आयी थी। जहाँ उसने जन्म लेने में अपनी माँ को मार डाला था, वहाँ से लगभग चौथाई मील दूर बेरों की एक झाड़ी थी। उसकी चचेरी बहन उसे वहीं ले गयी थी और उसके साथ सम्भोग किया था। यह उसे बहुत ही अच्छा लगा था और उसने उसके बाद उम्मीद बाँध रखी थी कि उसकी वह चचेरी बहन शीघ्र ही फिर उससे मिलने आयेगी। किंतु दूसरी बार जब वह लड़की आयी, तो उसने उस घनिष्ठता का तनिक आभास भी नहीं दिया। यही नहीं, उस लड़की ने बड़ी रूखाई और तेजी से उसके हाथ को झटक दिया और दुबारा जब उसके जीवन में यह मौका आया, तब उसकी उम्र बारह साल की थी। इस बार का अनुभव पहले से कहीं भिन्न था—कहीं नवीन-अपरिचित, कहीं अधिक गहराई से उसके मन को छू जानेवाला और पहली बार उसके जीवन में वायलिन का जो

स्थान था, उस पर अन्य किसी भावना ने बलपूर्वक अधिकार कर लिया।

आठवीं श्रेणी तक वह स्कूल जाता था। तब तक उसके जीवन में स्कूल, वायलिन और काम—बस, ये ही चीजें थीं। उसकी सौतेली माँ एक भारी-भरकम और बड़ी दयालु औरत थी, जो हर साल होनेवाले अपने बच्चे को लेकर ही इतना अधिक व्यस्त रहती थी कि उसकी ओर ध्यान देने का समय ही नहीं निकाल पाती थी। उसका पिता दुबला-पतला, लम्बा और उदास चेहरेवाला व्यक्ति था, जिसके हाथ फूल गये थे, खाल सख्त हो गयी थी और चेष्टा करने पर भी वह ठीक-ठीक वायलिन नहीं बजा पाता था। नित्य वह अपनी खुरदरी उँगलियों से वायलिन बजाने की चेष्टा करता और अंत में झुँझलाकर, बड़ी कड़वाहट के साथ उसे अपने बेटे की ओर वापस फेंक देता। फिर वह अपनी कुर्सी पर वापस बैठ जाता और उस खूबसूरत वायलिन और उसके सजीव तारों पर जब उनकी उँगलियाँ दौड़तीं, तो उसका पिता उनसे निकलनेवाली आवाज सुना करता।

आठवीं श्रेणी में ही उसकी स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो गयी। स्कूल के काम में कभी वह बहुत अच्छा लड़का नहीं रहा था। चुपचाप बैठ कर वह व्यर्थ की बातों में खोया रहता और स्कूल में जो-कुछ पढ़ाया जाता, वह उसे सुन भी नहीं पाता था। उसकी लिखावट अपने पिता के समान ही, टेढ़ी मेढ़ी और न पढ़े जाने-योग्य होती थी और हिज्जे-क्लास में उसे सदा अपने पैरों पर खड़ा रहना पड़ता था। स्कूल में जब उसका क्लास नहीं होता और खाना खाने के समय, वह दूसरे लड़कों के साथ खेलता, उनसे झगड़ता, लड़कियों पर व्यंग्य कसता। एक बार उसके स्कूल में साल-भर के लिए एक अध्यापिका आयी, जो बड़ी खूबसूरत थी। उस मुलायम और गोरी चमड़ीवाली अध्यापिका के प्रति उसके मन में जबर्दस्त वासना जाग गयी। किंतु उस अध्यापिका को लेकर बहुत-सी अफवाहें उड़ीं और मिथ्या कलंक का शिकार हो, साल समाप्त होने के पहले ही वह वहाँ से चली गयी। किंतु इस कलंक का जिम्मेदार वह नहीं था—वह तो उस अध्यापिका की नजर में एक आवारा लड़का-भर था। उसकी बदनामी के जिम्मेदार तो वे युवक थे, जो प्रति दिन तीसरे पहर, मीलों की दूरी तय कर स्कूल पहुँचते थे, जिससे उस अध्यापिका के स्कूल से छुट्टी होने के बाद, वहाँ से उसे उस स्थान तक जाते देख सकें, जहाँ वह ठहरी हुई थी। उसके चलने का ढंग बड़ा सुंदर और निराला था और पचास साल से कम उम्र के प्रत्येक व्यक्ति के मन में उसे देख सपने जाग उठते थे। वहाँ से जाते

वक्त उसकी आँखों में आँसू थे; किंतु उसके मन में किसी के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी; क्योंकि इस कलंक की उत्पत्ति उन निराश युवकों की बड़ी-बड़ी बातों से हुई थी, जो उसका सामीप्य नहीं पा सके थे और व्यर्थ ही अपने और उसके सम्बंध में शेखी मारते थे। वे खुल कर उसके आचरण पर आक्षेप करते और अपने मन की जलन शांत करते थे। उस अध्यापिका के जाने के बाद वह अजीब सा सूनापन महसूस करने लगा और अगला साल उसके स्कूल-जीवन का अंतिम साल था।

उसके बाद शीघ्र ही उसने नाचों में भाग लेना शुरू कर दिया और उसके जीवन में आनंद-उल्लास का अधिक स्थान आ गया। वह दिन में देर तक सोता और अपने खच्चर से खेत जोतने के बजाय, उस पर सवार होकर किसी नाच में चला जाता। वहाँ कुछ देर तक नाच करने के लिए उसे थोड़े-से पैसे मिल जाते, एक-दो बार पीने को शराब मिल जाती और नाच खत्म होने के बाद जब वह खच्चर पर सवार हो, घर की ओर लौटता, तो बहुधा उसके साथ एक खूबसूरत-सी लड़की भी होती। वह उसके पीछे खच्चर पर बैठी रहती। उसने खच्चर को बहुत धीरे-धीरे चलने की शिक्षा दी थी और अगर वह उस पर से उतर कर, बीच सड़क पर भी उसे बिना बाँधे छोड़ देता, तो खच्चर चुपचाप खड़ा रहता।

उसके जीवन में जो भी अच्छाइयाँ थीं, सब उसे वायलिन की बदौलत ही मिली थीं। वह देखने में लम्बा, दुबला-पतला और कुरूप था। उसके हाथ बड़े-बड़े और मुलायम थे। वह बहुत हँसता था और शराब पीना उसे पसंद था। फिर भी वह इतनी शराब कभी नहीं पीता था कि अपना होश खो बैठे अथवा वायलिन ठीक से नहीं बजा सके। दस वर्ष की उम्र में उसे सम्भोग जितना अच्छा लगा था, उससे अधिक अब वह उसे पसंद करता था। उसने उम्मीद कर रखी थी कि वह इसी प्रकार संतोषपूर्वक अपना जीवन बिता देगा। वह कभी यह नहीं चाहता था कि कड़े श्रम करने से उसके हाथ भी उसके पिता के समान खुरदरे हो जायें, फूल जायें और वह वायलिन न बजा सके।

किंतु तब उसके जीवन में क्लारा आयी। क्लारा का रंग और उसकी गोरी चमड़ी ठीक स्कूल की उस अध्यापिका की तरह थी, वैसे ही घने बाल और उसे देखने से वैसी ही उत्तेजना अनुभव होती थी। क्लारा के सम्मुख उसका स्वयं पर से नियंत्रण जाता रहा—वह उससे पराजित हो गया। जब वह पहली बार उसे खच्चर पर अपने पीछे बैठा कर ले चला, वह उससे एक प्रकार का भय-सा

अनुभव करता हुआ मन-ही-मन काँप रहा था और उसकी आवाज में चिंता और तनाव का बड़ा गहरा पुट था। वह उससे भयभीत था—वह, जो दस साल की उम्र से ही औरतों को जानता आया था और क्लारा की रूपहली हँसी उसे अपने भीतर किसी बम-विस्फोट के समान लग रही थी।

क्लारा उसे अपने पीछे-पीछे घुमाती रही, उससे मन बहलाती रही और तीन महीनों के भीतर ही उसने उससे शादी कर ली। और तब क्लारा ने उसका वायलिन उठा कर घर में टाँग दिया; क्योंकि जिस ढग से उसने उसे पाया था, वह जानती थी और वह यह जानती थी कि उसका प्रणय-व्यापार सिर्फ उसी से नहीं चलता था। क्लारा ने उसके जीवन का वह आनंद-स्रोत बंद कर दिया, उसके उस प्रकार वायलिन बजाने पर रोक लगा दी और सात महीने में ही एक बच्चे को जन्म देकर क्लारा ने उसे गृहस्थी में जकड़ दिया। जिस जीवन को उसने नहीं अपनाने की कसम खायी थी, उसे वही जीवन अपनाना पड़ा और किराये पर लिये गये एक खेत में वह हल चलाने लगा। और वह उसे पसंद करता था; वह खुश था।

किंतु क्लारा स्वयं इसे पसंद नहीं करती थी। क्लारा ने सोचा था कि कृषक-जीवन उनके लिए अच्छा और पर्याप्त होगा; किंतु वह वायलिन की धुन और नाच-गाना अधिक पसंद करती थी। जब वह अपनी पूरी लम्बाई में तन कर खड़ा होते हुए बेंजो, गिटार और वायलिन के आकार का बड़ा-सा वाद्य-यंत्र बजाया करता था, वह उसकी ओर एकटक देखती रह जाती थी। किंतु जब उसने जो उसे उसके पुरुषोचित काम के लिए मजबूर कर दिया था, स्वयं उसे ही पसंद नहीं था और बच्चे के दो वर्ष पूरा होने के पहले ही क्लारा के मन में उसके लिए तनिक प्यार नहीं रह गया। किंतु वह अभी भी उसके लिए पागल था—इतना पागल कि अभी भी उसे खेतो में हल चलाना और कठिन श्रम करना पसंद था। रात में वह थक कर चूर, खाने की मेज के निकट जा बैठता और क्लारा उसके सामने खाना लाकर रख देती। क्लारा अब बड़ी फूहड़ता और मलिनता से रहने लगी थी और उसका शरीर मोटा होता जा रहा था। उसके चेहरे पर आच्छादित बादलों-सरीखे उसके बाल, सिवा उसके, अन्य किसी के लिए अब आकर्षक नहीं रह गये थे। प्रत्येक महीने के तीसरे मंगलवार को क्लारा उसके प्रति विश्वासघात करती थी। वह उस दिन वाट-किन्स के साथ प्रणय-क्रीड़ा करती थी, जो एक पुरानी टी-माडेल मोटर में आता था। वह उसे अपने पास से लोशन, हाथ में लगाने के क्रीम और

उबटनें देता था और क्लारा बदले में उसे अपना शरीर सौंप देती थी।

वह इसे नहीं जानता था; पर वह जानता था कि कहीं कुछ गड़बड़ी जरूर है। उसने क्लारा की अतृप्ति भाँप ली थी। वह उसे सूचीपत्रों के पृष्ठों को उलट-उलट कर उन कीमती चीजों को गौर से निहारते हुए देखता, जिन्हें वह खरीद नहीं सकती थी। वह क्लारा को सुगंधित उबटनों और प्रसाधन-सामग्रियों को व्यवहार करते देखता और उसकी धारणा थी कि क्लारा ने किसी प्रकार मुर्गियों और अण्डों की बिक्री से उन प्रसाधन-सामग्रियों के खरीदने की व्यवस्था कर ली थी। अतः उसने मन-ही-मन क्लारा को प्रसन्न रखने का निश्चय-सा कर लिया।

साल-भर से लोगों के बीच यह चर्चा चल रही थी कि नोरिस-बाँध जहाँ बन रहा था, वहाँ काफी अच्छी तनख्वाह पर लोगों को काम दिया जाता था। अतः एक दिन वह अपने खच्चर पर सवार होकर नोरिस-बाँध की ओर चल पड़ा। उस दिन, रात और उसके बाद के दो दिन तक वह बाहर ही रहा और जब वह वापस आया, तो उसने क्लारा से अपने इस प्रवास के बारे में कुछ नहीं कहा। वह उसके मन में असंतोष नहीं जगाना चाहता था। दो महीनों के बाद, जब तक उसे नोरिस-बाँध पर काम पाने का नियुक्तिपत्र डाक से नहीं मिल गया, उसने क्लारा से कुछ नहीं कहा। उसके जीवन में उसे अब तक जितने पत्र मिले थे, उनमें यह पत्र तीसरा था।

वे पहाड़ी से उतर कर, नीचे नोरिस गाँव में, उसके काम के स्थान के निकट, रहने के लिए चले आये; क्योंकि उनकी एक नियमित और बँधी आमदनी हो गयी थी और वे आसानी से इस नये निवासस्थान का खर्च उठा सकते थे। उसे दिन-भर काम करना पड़ा था और वह अपनी पीठ पर बड़े-बड़े पत्थर उठा कर, कड़ी मेहनत करता और उस बड़े बाँध के निर्माण-कर्म में योग देता। कठिन श्रम से उसके हाथ खुरदरे हो गये, उनमें गाँठें पड़ गयीं। किंतु क्लारा खुश थी। वह एक अच्छे मकान में रह रही थी, जहाँ चौबीस घंटे नल में पानी आता रहता था और मकान के भीतर ही प्रसाधन की सारी व्यवस्था थी। फिर वहाँ बहुत-से आदमी काफी खूबसूरत चीजें बेचने के लिए लेकर आते थे—उस अकेले वाटकिन्स के समान नहीं, जो महीने में सिर्फ एक बार आता था और वह भी सीमित सामान के साथ।

वह एक अच्छा श्रमिक था। उसे अपना काम पसंद था। उस किराये के खेत में अकेले काम करने के बजाय, लोगों की भीड़ में यहाँ काम करना उसे अच्छा

लगता था; क्योंकि यहाँ वह उन लोगों के साथ दोस्तों की तरह हँस कर-चिल्ला कर काम करते हुए समय बिता देता था—नाचने और वायलिन बजाने में उसे जिस आनंद की प्राप्ति होती थी, वैसा ही कुछ-कुछ यह भी था। कभी-कभी वह काम करते करते रुक जाता और बड़े गौर से अपने हाथों की ओर देखता। अब वह कभी-कदाच् ही वायलिन छूता था और यह अवधि धीरे-धीरे बढ़ती जाती थी और तब वह झुक कर पत्थरों से लदा ठेला ढकेलने लगता।

आठ साल तक स्कूल में रह कर भी उसने अपनी जिस बुद्धि का उपयोग वहाँ नहीं किया था, वह सारी बुद्धि उसने यहाँ अपने काम में लगा दी। रात में वह प्रशिक्षण-क्लासों में जाता, जहाँ वह अधिक पढ़-लिख सके, सीख सके और ऊँची तनख्वाहवाला काम पा सके। तब एक समय ऐसा भी आया, जब उसे चारों ओर घूमनेवाले क्रेन को चलाना सीखने का मौका दिया गया।

यह भी कुछ-कुछ वायलिन बजाने के समान ही था। उसके नियंत्रकों पर एक हल्के और संगीतमय स्पर्श की जरूरत होती थी, अप्रयास ही उसकी उँगलियाँ लीवरों को आवश्यकतानुसार ऊपर उठातीं, पकड़े रहतीं और नीचे गिरातीं—मानो वे किसी वाद्य-यंत्र के तारों पर दौड़ रही हों! और वह यह बड़ी कुशलता से कर लेता था। वह उस भारी यंत्र को यों खिसकाता था, जैसे वह उसके हाथों का ही कोई विस्तार हो। जिस खूबी और तालबद्ध क्रम से वह मशीन से संगीतमय लय के साथ काम लेता था, उस पर उसे गर्व था। वह स्वयं को बड़ा और बड़ा महसूस करने लगा—जैसा वह पहले कभी नहीं था और लोगों के बीच चलते समय वह बिल्कुल तन कर चलता था। वह अपने केबिन में बड़े-बड़े चक्कोंवाली मशीन पर झुका हुआ नीचे और अपने आसपास की भीड़ को देखता। वह अपने हाथों में दस्ताने पहने रहता था और उन्हें बड़े प्यार तथा कोमलता से मशीन को नियंत्रित करनेवाले पुरजों पर रखे रहता। वायलिन बजाने में भी उसे कभी इतना आनंद नहीं आता था। यह उससे अच्छा था।

अब उसे काफी अच्छे पैसे मिलते थे, उसकी इज्जत थी और वह कभी-कभी अपने अतीत के बारे में सोचता, जब बचपन से लेकर उनका जीवन बिल्कुल आवारों का जीवन था—औरत से वायलिन और वायलिन से औरत! उसे बड़ा ताज्जुब हो रहा था कि उसका जीवन अब कितना अच्छा और सुव्यवस्थित था। वह अब घर लौटता, तो प्रसन्न और मुस्कराता हुआ और चूँकि अब वे

एक मोटर खरीद चुके थे, वह अपनी पत्नी और बच्चे को मोटर में घुमाने ले जाता। स्वयं मोटर चलाता हुआ वह उन्हें सिनेमा ले जाता या कभी-कभी नीचे शहर में, जहाँ दवाइयों की एक दूकान से वह कोकीन लिया करता था। उनकी जिंदगी में ऐसे समय भी आते थे, जब वह अपने रहनेवाले कमरे के लिए खरीदे गये बढ़िया सोफे पर बैठता और उस पुराने वायलिन पर, जो उसकी अकेली पैतृक सम्पत्ति थी, वह आसान धुनें बजाया करता। किंतु अब यह सिर्फ समय काटने के लिए ही था—वायलिन अब उसकी जिंदगी नहीं थी—अब उसकी जिंदगी तो क्रेन थी!

क्लारा भी उस आदमी के इस नये रूप से, जिसे वह अच्छी तरह जानती थी और जिससे उसने शादी की थी, खुश थी। उन फेरीवालों से, जो उसके दरवाजे पर भीड़ लगाने पहुँच जाते थे, वह खिंची-खिंची और नाराज रहने लगी। वह यहाँ तक कहने लगी कि उन फेरीवालों के इस तरह दरवाजे-दरवाजे आकर सामान बेचने पर रोक लगा दी जानी चाहिए। उसने नये कपड़े खरीदे—सूचीपत्र में देख कर नहीं, बल्कि नाक्स विले की बड़ी दूकानों में जाकर और उसके वैवाहिक जीवन ने जो यह सुखद रूप ले लिया था, इससे वह बहुत खुश थी।

तब नोरिस-बाँध का काम समाप्त हो गया। उसे अलबामा में, चिकसा-बाँध पर भेज दिया गया। जहाँ उसने अपना जीवन शुरू किया था, उस जगह को छोड़ने और वहाँ से अन्यत्र जाने से उसे घृणा थी; किंतु वस्तुतः यह कोई ऐसी बात नहीं थी। अब जहाँ कहीं भी वह जाता, उसके क्रेन के लिए, लीवरों के ऊपर अभ्यस्त उसके नृत्यलीन और तालबद्ध हाथों के लिए, काम था ही—अब वह एक ऐसा व्यक्ति था, जो एक व्यवसाय जानता था और उसमें निपुण था। जब तक वह चिकसा आया, तब तक वहाँ का काम काफी आगे बढ़ चुका था। यह बाँध नोरिस-बाँध की तरह बड़ा नहीं था; लेकिन इसके लिए वह चिंतित नहीं था। उसके लिए बाँधों का कोई महत्व था ही नहीं—उसके लिए महत्त्व था उस काम का, जिसे वह स्वयं करता था—व्यक्तिगत रूप से याने स्वयं की स्थिति ही उसके लिए महत्वपूर्ण थी—उस वस्तु का उपयोग और उद्देश्य नहीं। वह एक लगन, एक लक्ष्यवाला आदमी था और अपने जीवन में पूरी गम्भीरता और तीव्रता से एक ही चीज में रुचि लेता था।

जिस दिन वह गाड़ी से पानी पीने और गैस लेने के लिए उतरा, उसे चिकसा में काम करते हुए पूरा एक महीना होने को आया था। वह लम्बे-

लम्बे पैरों से उस ओर चलने लगा, जहाँ काम चल रहा था। अपने एक हाथ में वह चमड़े के अपने भारी दस्ताने लिये हुए था। वह लम्बा और कुरूप व्यक्ति था, स्वयं में आश्वस्त—एक ऐसा व्यक्ति जो एक व्यवसाय का जानकार था, जिसके मन में प्यार था, लगन थी, काम करने की धुन थी। उसने अपने बारे में ज़ोर से लोगों को चिल्लाते सुना और वहीं ठहर कर झुक गया। उसने आँखें ऊपर की ओर उठायीं और वह लोहे के उस बड़े लट्ठ को अपनी ओर आते देख-भर सका, जो उसके ऊपर के एक दूसरी क्रेन की पकड़ से छूट गया था।

चिकसा के रेकार्डों में उसकी मृत्यु पहली थी!

प्रकरण तेरह

मैथ्यू सोचने लगा। वसंत के मौसम में अपने खेत में लम्बी-लम्बी क्यारियों के बीच हल चलाते हुए, खच्चरों के पीछे-पीछे जब वह इस ओर से उस ओर आ-जा रहा था, उसका मन वहीं और भटक रहा था। वसंती मौसम उसे छू नहीं पा रहा था और वह यह भी अनुभव नहीं कर रहा था कि वह खेत जोत रहा है। रोपनी के समय उसके मन में हमेशा जो एक मौन अव्यक्त प्रसन्नता छा जाती थी, वह भी उससे दूर थी। वह मन-ही मन कुछ सोचते हुए, अपने ही विचारों में पूर्णरूपेण खोया हुआ था। अपने इस सोचने से वह कभी-कभी ही सिर उठा कर देखता और तब उसे यह देख कर आश्चर्य होता कि अजाने ही उसने कितना काम कर डाला था। खाने की मेज पर भी वह चुपचाप खाता रहा और उसके इस मौन ने घर में एक मनहूसियत पैदा कर दी। उनके जीवन का नियमित हास्य जैसे रुक गया। यहाँ तक कि हैटी भी उससे दूर-दूर थी। उसका अपने प्रति पक्षपातपूर्ण प्यार होने के बावजूद वह उसके पास जाने में डर रही थी।

अब अधिक देर तक इंतजार नहीं किया जा सकता था, चुपचाप सब सहते हुए टी. वी. ए. को पराजित नहीं किया जा सकता था, जैसा उसने आरम्भ में सोचा था कि पर्याप्त होगा। उसे सोचना था, योजना बनानी थी और उसके अनुसार कार्य करना था, जैसा डेविड डनबार, स्वयं उसके पिता और उसके पितामह ने किया होता। काफी अर्से तक उसने अपना उद्देश्य सिर्फ घाटी को

अपने कब्जे में बनाये रखने तक सीमित रखा था और अपने इस उद्देश्य में वह एक भला आदमी सिद्ध हुआ था। उसने किसी को चोट नहीं पहुँचायी थी और वह अपनी नम्रता और आत्मनिर्भरता को लेकर संतुष्ट था। किंतु यह अधिक समय तक सम्भव नहीं था। यह अब अधिक समय तक पर्याप्त नहीं था।

किंतु वह सोचने को एकबारगी कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सकता था। काफी सालों तक वह अपने पुरखों से प्राप्त इस घाटी में रहता आया था और इसे बदलना आसान नहीं था, यद्यपि वह इसकी जरूरत से परिचित हो चुका था। उसके भीतर एक सूनापन व्याप्त हो चुका था। पहले उसका विश्वास था कि यह सूनापन उसके शत्रु के बहुत बड़ा होने के कारण है और तब उसे यह जान कर बड़ी पीड़ा हुई—दर्द हुआ कि इस सूनेपन का जन्म उसके शत्रु के बहुत बड़ा होने से नहीं, वरन् स्वयं के बहुत छोटा होने से हुआ था।

बड़ा खूबसरत मौसम था वसंत का। उस साल ऐसा लगता था, जैसे इनबार घाटी की प्रत्येक चीज को सँवारने-सजाने के लिए मौसम एक विशेष प्रयास कर रहा था। ठीक समय पर बरसात हुई—हल्की और पानी की नर्म फुहारें, जिन्हें धरती सोख गयी। तब बर्फ रुक गयी और धरती ने अतिरिक्त नमी अपने भीतर से भाप के रूप में बाहर निकाल दी और दो घंटों में ही वह फिर हल के स्पर्श के लिए तैयार हो गयी। मिट्टी आसानी से खुद जानेवाली भुरभुरी और उपजाऊ हो गयी थी। वसंत का हरा रंग वृक्ष के पत्तों की हरीतिमा में गहरा हो उठा और झाड़ियों में सूअरों ने माँसल और फुर्तीले बच्चों को जन्म दिया—मनुष्य की करतूतों से दूर रहने की शिक्षा देने के लिए। सूअरियों ने बच्चे जने और मैथ्यू सुबह बड़े तड़के उन कोमल और साफ पाँववाले नये सूअरों को देखने आता, जो कराहती सूअरी से अपने नथुने रगड़ते रहते। सूअरों के ये नवजात बच्चे काफी थे और स्वस्थ तथा सशक्त थे। सूअरियों ने भी अपने जने बच्चों में से एक भी नहीं खाया। गायों के नये बछड़े चरागाह में आनंद-पूर्वक उछलते हुए हरी-हरी घास चरते। वे मोटे और चमकीले थे और उनके शरीर की लाल चमड़ी स्वास्थ्य से दमकती थी। खेतों में पहली रोपनी बड़ी घनी और हरी-भरी थी—रात-भर में फसल जैसे कई इंच बढ़ जाती और राइस कसम खाकर कह सकता था कि वह उन पौधों के बढ़ने की आवाज सुन सकता था। बड़ा ही प्यारा वसंत था। मैथ्यू के भीतर पुरानी हड्डियों की पीड़ा के समान ही दर्द अनुभव होता और वह उसके सघन विचारों के कवच को भेद कर उसे छू जाता!

उसने रात का खाना खाने के बाद रहनेवाले कमरे में अपने बूढ़े पिता के पास बैठने की आदत डाल ली। उसका बूढ़ा पिता अकेला रहने का आदी हो चुका था; क्योंकि परिवार ने उसके बुढ़ापे में, उसकी कमजोरी में, एक प्रकार से उसकी उपेक्षा-सी कर दी थी। वे उसे खाना खिलाते थे, कपड़े पहना देते थे, उसका खयाल रखते थे; लेकिन यों वह अकेला ही था। उसकी उम्र के द्वीप के चारों ओर उनकी सशक्त युवा जिंदगी चक्कर काट रही थी। अपनी प्राणशक्ति के लिए वह जिंदगी की आखिरी लड़ाई में डूबा हुआ था, जीवन की आखिरी घाटी को अपने अधिकार में बनाये रखने के प्रयत्न में खोया हुआ था; किंतु मैथ्यू को उस दहकती आग के निकट उसकी बगल में बैठने में आराम मिलता था। वह उसके बूढ़े और जबड़े भीतर की ओर धँसे हुए चेहरे, उसकी धुँधली नीली आँखों की ओर देखता रहता और उससे बातें करता।

"समझ में नहीं आता, क्या किया जाये, पापा!" वह कहता—"तुम क्या करोगे, पापा? तुम्हारे पिता क्या किये होते?"

उसका बूढ़ा पिता सुनता नहीं। वह आग की लपटों की ओर देखता हुआ अपने ही सपनों में डूबा रहता था। वह धीरे-धीरे ऐसी बातें सोचता रहता था, जिन्हे सिर्फ वृद्धावस्था ही सोच सकती है। मैथ्यू उसके विचारों तक पहुँच ही नहीं पाता था। कभी-कभी दिन में भी, जब कि उसे काम करते रहना चाहिए, मैथ्यू खाना खाने के बाद उसके साथ घंटे-भर बैठता और बातें करता जब कि उसके बूढ़े पिता के कानों में कुछ सुनायी ही नहीं देता था।

"यह एक बहुत बड़ी चीज है, पापा!" मैथ्यू ने उससे कहा—"मेरा मतलब टी. वी. ए. से है। उसने यहाँ की जमीन पर अपना सशक्त हाथ रख दिया है और मैं उसकी दो उँगलियों के बीच जकड़ा जा रहा हूँ। परमात्मा के हाथ के समान ही यह हाथ है, पापा, जो किसी मनुष्य पर उसकी भलाई के लिए पड़ता है, चाहे वह भलाई चाहता है अथवा नहीं।"

वह चुप हो गया और वहाँ निस्तब्धता छा गयी। दूर कहीं, एक भारी धप की आवाज हुई—दबी हुई गरजने की-सी आवाज और वह इस आवाज से चौंक पड़ा। कभी वह आवाज वहाँ प्रसन्नता की द्योतक थी; क्योंकि वह लुहार की निहाइयों से निकलनेवाली आवाज के समान थी, जब क्रिसमस के दिनों में गाँव के लोग बड़े हथौड़ों से उन्हें पीटते थे। मैथ्यू स्वयं भी वैसी आवाज करता था। वह बलूत के एक ठूँठ को खोद कर खोखला कर देता था और उसमें काला-काला बारूद भर दिया करता था और तब दो या तीन आदमी किसी

प्रकार लुहार की एक भारी निहाई उठा कर ले आते थे और उसे बारूद के ऊपर ठीक से जमा कर रख देते थे। तब वे हमेशा ही ठहर कर शराब पीते और फिर एक आदमी वह बड़ा हथौड़ा उठाता। बाकी लोग एक बगल में खड़े आपस में हँसी-मजाक करते। वह व्यक्ति हथौड़ा उठाता और एक बार हवा में चारों ओर घुमा कर, नीचे ला जोरों से उसे निहाई पर दे मारता। नीचे की बारूद की दबी हुई शक्ति तब विस्फोट कर उठती। जोरों की यह आवाज चारों ओर गूँज उठती, ठंडी हवा उस भारी आवाज को अपने साथ बाकी सभी घाटियों में ले जाती और उन घाटियों के लोग अपना-अपना काम बंद कर देते। वे ऊपर की ओर देखते और मुस्कराते—तब वे जल्दी-जल्दी शायद उस आवाज का जवाब देने की तैयारियों में लग जाते।

किंतु यह आवाज वैसी नहीं थी। यह डायनामाइट (बारूद) द्वारा बिल्कुल हिसाब लगा कर की जानवाली बरबादियों की आवाज थी। जहाँ जलाशय बननेवाला था, उस इलाके के पेड़ के ठूँठों को टी. वी. ए. वाले बारूद लगा कर उड़ा रहे थे। वे उस जमीन को साफ कर रहे थे, जहाँ नदी के पानी को रास्ता मिलनेवाला था। अब यह प्रति दिन का एक कार्य हो गया था। सभी दिन अनियमित और अप्रत्याशित मध्यांतरों पर एक, दो या तीन विस्फोटों की आवाज एक-के-बाद एक गूँज जाती और मैथ्यू इसका अभ्यस्त नहीं हो पाया था।

"भगवान या टी. वी. ए. के विरुद्ध एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए, पापा?" वह बोला—"अकेला आदमी क्या कर सकता है?" और तब वह रुक गया। इस सम्बंध में सोचते हुए, वह अपने बूढ़े पिता के साथ-साथ आग की ओर गौर से देखने लगा। "किंतु अकेले आदमी ही ने इस घाटी में डनबारों को ला बसाया—" वह उदासीनता से बोला—"अकेले एक आदमी ने। वह अपनी बगल में खाने के लिए सूखी मकई, एक थैले में लेकर पैदल चलता हुआ यहाँ आया और यहाँ की धरती पर अपना नाम छोड़ गया। अतः एक आदमी......" वह रुक गया और खड़ा हो गया। अपने बूढ़े बाप के निकट पहुँच कर उसने उसका कंधा हिलाया। "तुम क्या करोगे, पापा?" वह बोला—"बताओ मुझे, तुम क्या करोगे?"

उसके बूढ़े बाप के शरीर में हरकत हुई, उसने अपना सिर ऊपर उठाया और उसकी ओर देखा। "मार्क घर लौट आया—" वह बोला—"अंततः वह घर वापस आ गया—आया न?"

"हाँ, पापा!" मैथ्यू बोला। निराश होकर, वह फिर बैठ गया। तभी बारूद

का विस्फोट हुआ और वह उसकी आवाज सुन कर अपनी कुर्सी में झुक गया। "मुझे अपने काम पर वापस जाना है—" उसने सोचा—"सारे दिन मैं यहाँ किसी मरते हुए बूढ़े के समान ही नहीं बैठा रह सकता।" वह उठ खड़ा हुआ।

"हाँ, पापा!" वह बोला—"मार्क अभी पिछवाड़े के आँगन में है।"

उसके बूढ़े पिता ने सुना नहीं। वह एक बूढ़ी ट्राउट (एक मछली) के समान था और कभी-कभी ही समझ की सतह तक उभर पाता था। मैथ्यू खड़ा उसकी ओर देखता रहा।

"पापा!" वह अचानक बोला—"मेरी बात सुनो, पापा! यह घाटी हमारे हाथों से निकल जानेवाली है। तुम्हें एक नये-अपरिचित घर में ही मरना होगा।" वह रुक गया और जब फिर बोलने लगा, तो उसका चेहरा सीधा अपने बूढ़े बाप की ओर था और वह सीधा उसे ही लक्ष्य कर कह रहा था—"जैसा कि मनुष्य चाहता है और जैसा कि करने में उसे समर्थ होना चाहिए, तुम उस प्रकार अपने घर में नहीं मरोगे। तुम पापा, एक ऐसे घर में मरोगे, जिसकी दीवारों को तुमने कभी देखा भी नहीं होगा। तुम सुन रहे हो?"

किंतु इससे कोई लाभ नहीं था। कई बार वह उसे हर बात सावधानीपूर्वक समझा चुका था—विस्तार से बता चुका था कि किस तरह टी. वी. ए. आयी, क्या करने की योजना है उसकी और उसकी अच्छाई क्या है, बुराई क्या है। हताश भाव से उसने यह उम्मीद बाँध रखी थी कि कभी-न-कभी तो उसका बूढ़ा बाप इन सारी चीजों को जान जायेगा—समझ जायेगा। और शायद अपनी उम्र की गहराइयों से वह इसका जवाब जानता हो, जो मैथ्यू अपने विचारों की शून्यता में नहीं पा सका था। किंतु उसके बूढ़े पिता ने सुना ही नहीं, यद्यपि जब मेज पर खाने अथवा नाश्ते के लिए सामान रखा जाता था, तो वह प्यालियों से टकराने वाले चम्मच की खनखनाहट सुन लेता था और ठीक समय पर वहाँ पहुँच जाता था। प्रकृति की पुकार वह समय पर ही सुन लेता था और अपने नित्य कर्मों से निबटने के लिए धीरे-धीरे घर से बाहर के रास्ते पर चल पड़ता था। किंतु मैथ्यू की आवाज, जो उसे पुकारती थी, वह नहीं सुन पाता था।

मैथ्यू सीधा खड़ा हो गया और रसोईघर से होते हुए बाहर निकल आया। आर्लिस से बिना कुछ बोले वह उसकी बगल से गुजर गया। अब उन दोनों में अधिक बातें नहीं होती थीं। बिना आपस में बातें किये वे दोनों अपने-अपने हिस्से का काम करते रहते। उनके सम्बन्ध के बीच कोई रुखाई भी नहीं

थी, एक-दूसरे से खिंचे-खिंचे रहने-जैसी बात भी नहीं थी—सिर्फ एक सूनापन घर कर गया था। पिछले बरामदे में मैथ्यू रुका और मार्क की तलाश में उसने नजरें दौड़ायीं। उसकी आँखों ने खलिहान की बगलवाले गोदाम में उसे ढूँढ़ लिया। उसने अपने सामने हल को उलट रखा था और बड़ी साव-धानी से उसमें तेल डाल रहा था। गोदाम की ठंडी छाँव में वह बड़े आराम से धीरे-धीरे काम कर रहा था।

मैथ्यू अब तक जान गया था कि कठिन श्रम मार्क के वश की बात नहीं थी। पहले उसने उसकी ओर इस विचार से देखा था कि वह खेतों में उसकी सहायता करेगा—नाक्स और जेसे जान के चले जाने के कारण उसे इसकी सख्त जरूरत भी थी। और मार्क ने कोशिश की थी। किंतु पचास से भी कम उम्र में वह जैसे बूढ़ा हो गया था और अपनी कमजोरी को छिपाने, अपनी कार्य कर सकने की अक्षमता पर पर्दा डालने के लिए वह औजारों के साथ इधर-उधर करता रहा। उसने पूरी सुबह अपने हल को ठीक करने में ही बिता दी, जिससे वह बिल्कुल ठीक-ठीक खेत जोत सके। उसके पहली बार खेत में हल जोतने के लिए सचमुच ही तैयार होने के पहले, उसमें मकई की फसल तैयार हो जाती। महीने-भर के भीतर ही उसने खेतों में जाने का खोखला प्रदर्शन बंद कर दिया और घर पर ही रह कर गोदाम में बैठा औजारों को सुधारने में लगा रहता—खलिहान के चारों ओर लगे हुए तार को कसता, उसे मजबूती से बाँधता। जिस काम को मैथ्यू कुछ घण्टों में पूरा कर देता, उस काम में वह कई दिन लगा देता।

किंतु मैथ्यू उसके प्रति न तो उतावला ही हुआ था और न उससे नाराज। मार्क चाहे जिस तरह से अपने दिन गुजार रहा था, मैथ्यू उससे संतुष्ट था। मार्क ने कार्य करने की अपनी इच्छा को सही प्रमाणित करने के लिए जो आतुरता दिखायी थी, उसने उसे मान लिया था और उसके प्रयासों की निष्फलता की ओर वह ध्यान ही नहीं देता था। क्योंकि मैथ्यू यह नहीं जान सकता था कि घाटी से बाहर रह कर जितने साल मार्क ने गुजारे थे, उस जीवन में क्या-क्या दुर्घटनाएँ उसके साथ हुई थीं—क्या-क्या चोट खायी थी उसने। बेकारी और भूखे रह कर, शराब पीकर, चकलों के चक्कर काट कर उसने कैसी मनुष्यत्वहीन जिंदगी बितायी थी, मैथ्यू नहीं जानता था। मैथ्यू ने महसूस किया था कि मार्क की इस स्थिति के लिए वही उत्तरदायी था, उसके जवानी से भरपूर वर्षों में उसने उसे इधर-उधर भटकने के लिए बाध्य कर दिया था और अपनी इस अधेड़ावस्था में अब

जो भी आराम और छूट पा सकता था, मैथ्यू उसके लिए उसका कर्जदार था!

"जब तुम इसे काम में लाने के लिए तैयार होओगे, मैं इस हल को बिल्कुल बढ़िया बना देनेवाला हूँ—" मार्क ने उसे पुकार कर रहा—"यह इस तरह खेत जोतेगा, जैसे बिल्कुल नया हल हो!"

"जान कर खुशी हुई—" मैथ्यू बोला—"मैं सोच रहा था, मुझे इस वर्ष एक नया हल खरीदना होगा। और बहुत जल्दी ही मुझे इसकी जरूरत पड़ेगी!"

राइस अब तक खेत पर जा चुका था। हैटी खलिहान से निकल कर आयी और चुपचाप उसकी बगल में खेत की ओर चलने लगी। मैथ्यू उसका मित्रवत् साथ अनुभव कर रहा था, यद्यपि वह हाथ बढ़ा कर उसे छू नहीं सकता था। वह लम्बा स्वेटर और राइस की एक कमीज पहने थी। खेत की ओर जानेवाली उस सड़क पर वह नंगे पैरों चल रही थी। कल उसने क्रीज की हुई तहदार पोशाक पहन रखी थी और आर्लिस के पाउडर तथा लिपस्टिक में से भी थोड़ा लगा रखा था। कल दिन का तीसरा पहर उसने सामनेवाले बरामदे में बैठ कर बिताया था। सीधी तन कर बड़े कायदे से बैठी हुई वह घाटी के प्रवेश-द्वार से मकान तक आनेवाली सड़क को देखती रही थी। मैथ्यू जानता था कि पिछले साल हेमंत में उसके लिए सीअर्स ऐंड रोएबक से जो जाँघिये और कंचुकियाँ खरीद दी गयी थीं, उन्हें वह बड़ी सावधानी से साफ करती थी और उसकी बाहरी पोशाक कुछ भी हो, वह उसके नीचे उन्हें जरूर पहनती थी। शीघ्र ही उससे बचपन की सभी निशानियाँ विदा ले लेंगी और तब वह एक युवा नारी बन जायेगी। इस बारे में सोचना मैथ्यू के लिए एक सिरदर्द ही था। वह ताज्जुब कर रहा था कि कहीं वह भी तो आर्लिस के समान ही, उससे दूर किसी ऐसे व्यक्ति की बाँहों में नहीं समा जायेगी, जिसके लिए वह स्वीकृति नहीं दे सकेगा।

"आज तुम क्या मेरे खेत जोतने वाले में मदद करने वाली हो?"—वह बोला। स्वभातः ही वह अपने और उसके बीच के पहले की सन्निकटता, एकता स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। कभी वह दिन-दिन-भर उसके खेतों में गुजार देती थी। वह उसके खच्चर पर सवार हो, दोनों हाथों से लगाम कस कर पकड़ लेती। लगाम के जोर से वह स्वयं ही अपने इच्छानुसार खच्चर को खेतों में चला कर जोताई करती और मैथ्यू उसे चुपचाप वैसा करने देता। वह खच्चर पर बैठ कर हँसती, प्रसन्नता से चिल्लाती और जोर जोर से आवाजें देकर खच्चर खेत की क्यारियों के बीच घुमाती।

हैटी ने अपनी पिछली जेब से धागे का एक गोला निकाला। "मैं मछली मारने जा रही हूँ।" वह बोला—"वहाँ खेत में बहुत गर्मी है।"

काम करने की जगह पर दोनों के पहुँचने के पहले ही, हैटी, मैथ्यू की ओर हाथ उठा कर हिलाती हुई, एक ओर मुड़ गयी। अब उसके उरोज हो आये थे। छोटे-छोटे, नासपाती के आकार के उसके उरोज उस बड़ी कमीज के भीतर से दिखायी दे रहे थे और उसका दुबला-पतला शरीर भर रहा था। उसके शरीर की बनावट अब एक औरत का रूप ले रही थी। उसके चलने का ढंग भी बदल गया था। वह अपने नारीत्व के प्रति सचेत हो गयी। जब वह चलती, उसके कोमल नितम्ब, जो पहले किसी लड़के के नितम्बों के समान दुबले और बड़े थे, नारी-सुलभ कमनीयता के साथ हिलते रहते। वह इस तीसरे पहर, सारे समय बैठ कर मछली मारती रहेगी, जैसी वह बहुधा प्रत्येक साल वसंत के मौसम में करती आयी थी। किंतु अब वह घंटों बैठ कर वहाँ अपने लिए आनेवाले पुरुष के स्वप्न सँजोयेगी। उसका दिमाग अन्यत्र भटकता रहेगा, मछली फँसाने के लिए लगाये गये चारे की ओर वह नहीं देखती रहेगी और अपने विचारों में खोयी उसे समय तथा मछली के निकल जाने का भान ही नहीं होगा। अपनी इस यात्रा और प्रयास की वापसी में अपने साथ वह एक भी मछली नहीं ला सकेगी।

मैथ्यू खड़ा होकर उसे देखने लगा था। अब वह फिर खेत की ओर चलने लगा। उसका खच्चर एक गोंद-वृक्ष के साये में बँधा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। मकई के खेत में जो पहली घास उग आयी थी, उसे वे साफ कर रहे थे और मकई के पौधे घुटनों की ऊँचाई तक आ गये थे और लम्बी क्यारियों के बीच हरी हरी दूब मौन-शांत खड़ी थी। राइस का खच्चर हल से बँधा खड़ा था और उसने हल को क्यारियों के ऊपर से खींच कर, अपने मुख पर लगी जाली के भीतर से ही मकई खाने की कोशिश की। हल से उसने मकई के कुछ नवजात पौधों को तोड़ डाला था—कुचल डाला था; किंतु अधिक नुकसान पहुँचाने के पहले ही वह रस्सियों में उलझ कर रह गया था। अपनी इस संकटापन्न स्थिति से मुक्ति के लिए वह धीरतापूर्वक खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। मैथ्यू उसके पास चला गया और उसने उसकी रस्सियाँ खोल दीं; जिससे हल सीधा किया जा सके। यह काम समाप्त कर वह खड़ा हो गया और राइस की तलाश में उसने नजरें दौड़ायीं। तब उसने उसे चरागाह की ओर से आते देखा। जब वह पहुँचा, तो पसीने से लथपथ था और बुरी तरह हाँफ रहा था।

"उन बछड़ों में से तीन बाहर निकल आये थे—" वह मैथ्यू से बोला—"निश्चय ही, वे दौड़ना जानते हैं।"

वह जमीन पर बैठ गया। उसने अपने चेहरे से पसीना पोंछा और कहा—"मैं उनमें से किसी के पीछे भी दौड़ना पसंद नहीं करता।"

"क्या उन्होंने घेरा तोड़ दिया?" मैथ्यू बोला।

"नहीं!" राइस ने कहा—"मैं नहीं जानता, वे कैसे बाहर निकल आये। निश्चय ही, वे उसे लाँघ गये होंगे या उससे होकर निकल भागे होंगे या और कुछ। उन जंगली बछड़ों के बजाय अगर हमारे पास दुधारू गायें होतीं..." एक-ब-एक वह चुप हो गया और उठ खड़ा हुआ—"मेरे विचार से, अब मैं अपने काम में वापस जुट जाऊँ, तो अच्छा है।"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। "काम खत्म करने के बाद हम उस घेरे तक चलेंगे—" वह बोला—"कहीं-न-कहीं से रस्सी जरूर ढीली होगी। मैं नहीं सोचता कि वे उसे फाँद सकते हैं।"

वह राइस की ओर देखता रहा। अब वही अंतिम था। वह मैथ्यू के साथ ठहर गया था और खेतों में प्रतिदिन काम करता—मैथ्यू के समान ही वह कठोर श्रम करता और जितनी देर तक मैथ्यू काम करता रहता, वह भी जुटा रहता। और, मैथ्यू जानता था कि अपने उस दूसरे स्वप्न के बावजूद, राइस इसे पसंद करता था। अपने हाथों में हल का स्पर्श उसे पसंद था, जमीन जब हल के चमकते हुए फालों से खुदती चलती, उसे अच्छा लगता और खेत के किनारों पर लगे गोंद के वृक्षों पर मिमस पक्षियों की चहचहाहट और फुदकना तथा खेत में फसल का बढ़ना उसे प्रिय लगता था। राइस ने यह कहा था कि किस प्रकार उसने रात में फसल के बढ़ने की आवाज सुनी थी और मैथ्यू जानता था कि वह चाँदनी में यहाँ टहलता हुआ आया था। बिस्तरे पर सोने जाने के पूर्व वह पहले तो अपनी नयी प्रेयसी के बारे में सोचता हुआ आया होगा; लेकिन बाद में रात्रि के समय अपने चारों ओर खेत के इस सुखद स्पर्श में खो गया होगा। मैथ्यू ने भी ऐसा किया था, जब वह युवा था— और यहाँ तक कि पिछले साल भी वह रात का खाना खा लेने के बाद अकेला खेतों तक टहलता हुआ आया करता था—अपनी सम्पत्ति उन खेतों को देख कर आनंद अनुभव करने के लिए।

राइस अधिकांशतः उसके समान था। नाक्स मैथ्यू को अधिक प्रिय था; क्योंकि राइस लम्बा और दुबला था; किंतु नाक्स में जो उतावलापन और क्रुद्ध हो उठने की प्रवृत्ति थी और जो उसे घाटी से दूर ले गयी थी, वह मैथ्यू से

बिल्कुल ही मेल नहीं खाती थी। इनग्रामों के खून में जो तनाव की छिपी और गहरी भावना थी, नाक्स की यह प्रवृत्ति उसी की देन थी और यह मार्क से अधिक मिलती थी। जैसे जान बहुत शांत, बहुत सीधा था—जरूरत के समय के लिए भी उसके भीतर तनिक क्रोध नहीं था। और राइस अंतिम था।

"मेरा चुनाव बुरा हो सकता है—" मैथ्यू ने अपने सबसे छोटे लड़के की ओर देखते हुए सोचा। इस तरह दूर से राइस को देखने पर उसकी वह पुरानी अस्पष्ट बेचैनी फिर उभर आयी। वह राइस को अपने बेटे की तरह नहीं, बल्कि जैसा वह था, जिस तरह उसके अपने ढर्रे पर—अपने ढाँचे पर—उसका विकास हो रहा था, उस रूप में देखने की कोशिश कर रहा था। क्या यही वह ढाँचा था, जिसे ढूँढ़ने का काम उसके सुपुर्द किया गया था—यही वह ढाँचा था, जो उसके स्वयं के ढाँचे का अनुकरण करनेवाला था? किंतु जिस प्रकार उसने अपने पिता की इस देन को बनाये रखा था, राइस वैसा नहीं कर पायेगा। उसमें एक तब्दीली थी, वैभिन्न्य की इच्छा थी। उसकी डेरी (दुग्धशाला)-योजना उससे घाटी की आत्मनिर्भरता छीन लेगी और उसके लिए तब शहर से लगातार सम्पर्क बनाये रखना अवश्यक हो जायेगा। अपने विचारों में खोये-खोये ही मैथ्यू ने अपने खच्चर को हल में जोत लिया था और हल चलाना आरम्भ कर दिया था। बिना जाने ही वह तीन या चार क्यारियों के बीच की जमीन जोत चुका था। सूरज की तीखी रोशनी उसकी पीठ पर पड़ रही थी। उसे उसकी जरूरत भी थी और वह गर्मी महसूस कर रहा था। पसीना बहना आरम्भ हो गया था। वह हमेशा एक लम्बा और गर्म स्वेटर पहन कर खेत जोता करता था, जिससे उसके बदन से पसीना जल्दी छूटने लगता था और वह उसके शरीर के निकट ही रह जाता था। पहले तो बड़ी गर्मी लगती थी; किंतु पसीना बहना शुरू होने के बाद स्वेटर उसके वाष्प से नम और ठंडा हो जाता था। किंतु उसके लड़के कभी इस सिद्धांत को नहीं समझ पाते थे, हमेशा पतली कमीज पहन कर हल चलाते थे। उनकी कमीज की बाँहें उनकी कुहनियों तक ऊपर की ओर मुड़ी रहती थीं और उनके बदन से निकलनेवाला पसीना तत्काल ही सूख जाता था।

मैथ्यू ने इस विचार को अपने दिमाग से निकाल फेंका और उसने खेत जोतने पर अपना सारा ध्यान लगा दिया। काम की संगीतमय लय में वह मानो खो गया। वह हल चलाते हुए राइस की बगल से गुजरा, फिर गुजरा। हर बार वह उसके खच्चर के साज की झुनझुनाहट पहले से निकट, निकट और निकट

महसूस करता, उसकी धीमी सीटी की आवाज सुनायी देती; फिर वह पुनः दूर जाकर सन्नाटे में विलीन हो जाती। पहले जो वह सोच रहा था, अब उसके बारे में बिना किसी प्रयास के सोचना आसान था। श्रम, स्वेद-कणों और इस संगीतमय लय से, ऐसा प्रतीत होता था कि उसका दिमाग साफ हो गया था और पहले उसने जिस एकाग्रचित्त से इस सम्बंध में सोचा था, उसकी तुलना में अब इस समस्या पर अधिक तर्कसंगत ढंग से वह सोच सकता था। उसने अपना सिर झुका लिया और अपने पैरों के नीचे से गुजरनेवाली जमीन को देखने लगा। अपने शरीर के पसीने की दुर्गंध और पीठ पर पड़नेवाली सूरज की रोशनी को अनुभव करने के बजाय उसने इसी पर एकाग्रचित्त हो ध्यान दिया और धरती, खच्चर तथा स्वयं उसके शरीर की महक सब मिल कर जैसे एक सुगंध में बदल गयी।

अंततः वह खेत के एक छोर पर रुका और अपने खच्चर को एक पेड़ के साये में ले आया। खच्चर उसकी बगल में खड़ा जोरों से हिनहिना रहा था और उसके पार्श्वभागों से काला-काला पसीना बह रहा था। राइस हल चलाता हुआ उसकी बगल में आया और रुक गया। वह मुस्करा रहा था।

"आप तो उस खच्चर से काम करा कर उसे जैसे मार ही डालते हैं, पापा!" वह बोला—"मैं ताज्जुब कर रहा था कि आप क्या उसे बिल्कुल ही खत्म कर देनेवाले हैं!"

मैथ्यू हँसा। "वह चार पैरों पर चलता है, जब कि मैं सिर्फ दो पैरों पर—" वह बोला—"उसे चाहिए था, मुझे थका दे!" वह अपनी एँड़ियों के बल नीचे बैठ गया और अपने लिए एक सिगरेट बनाने लगा—"तुम अपने खच्चर को भी थोड़ा आराम करने दो तो अच्छा है, बेटे!"

"हाँ, महाशय!" राइस बोला। उसने अपने खच्चर को साये में कर दिया और स्वयं नीचे बैठ कर, अपने जूतों को हिला कर उसकी गर्द साफ करने लगा। उसने अपनी बाँह के अगले हिस्से से अपने चेहरे को पोंछा और वहाँ धूल की एक लकीर-सी बन गयी। "अब इस खेत का काम हम जल्दी खत्म कर लेंगे।"

"हाँ!" मैथ्यू बोला। उसने अपना सिगरेट जलाया और दियासलाई की जलती तीली जमीन से रगड़कर तुरत उसे बुझा दिया। "बेटे, तुम अब अठारह वर्ष के हो गये हो और एक मर्द के समान ही काम कर रहे हो...कुछ समय भी बीत गया तुम्हें काम करते!"

इन शब्दों में एक अनोखी गम्भीरता थी। राइस तन कर बैठ गया। "हाँ, महाशय।" वह बोला। उसने मैथ्यू को देखने के लिए अपना सिर घुमाया।

मैथ्यू अपनी एँड़ियों के बल बैठा पीछे की ओर झुका हुआ था, उसका सिगरेट उसके मुँह के एक कोने में दबा लटक रहा था और उसका धुआँ निकल कर चक्कर काटता हुआ उसकी आँखों का स्पर्श कर रहा था। उसने अपने मुँह से सिगरेट निकाल लिया और उँगली से झटका देकर उसकी राख झाड़ी।

"तुम जानते हो, जब जैसे जान और नाक्स अठारह साल के हुए, तब से मैं उनकी मेहनत की आय उन्हें भी देने लगा था। वे जितना काम करते थे, उसी का मेहनताना। मैंने तुम्हारे लिए अभी तक ऐसा नहीं किया है—बस, तुम्हें जेबखर्च के लिए जब-तब कुछ देता रहा हूँ।"

अब इस चर्चा की अच्छाई राइस की समझ में धीरे-धीरे आने लगी थी। उसने मुस्कराना शुरू किया; लेकिन तभी उसकी समझ में आ गया कि इतनी जल्दी आनंद मनाना उचित नहीं था और तुरन्त ही उसने मुस्कराना बंद कर दिया। "हाँ, महाशय!" वह बोला—"अपना पैसा पाकर सचमुच ही मैं स्वयं को बड़ा गौरवान्वित अनुभव करूँगा......"

मैथ्यू कहता गया। "तुम्हारा हिस्सा बाकी है—" वह बोला—"सच तो यह है कि तुम्हारा कुछ ज्यादा ही जमा हो गया है मेरे पास। अनुमान से मैं पिछले हेमंत के वक्त का भी तुम्हारा कर्जदार हूँ, जब सिर्फ हम दोनों ने ही मिल कर फसल तैयार की थी। अतः तुम्हें काफी अच्छी रकम मिलेगी।"

"मैं आपका शुक्रगुजार हूँ, पापा!" राइस बोला—" और मैं कठिन श्रम करूँगा। मैं......"

"मैं जानता हूँ, तुम ऐसा करोगे—" मैथ्यू जल्दी से बोला—"तुमने अभी तक मेरे साथ अपने काम में कभी शिथिलता नहीं दिखायी है, राइस!" तब वह चुप हो गया और उसके ये शब्द, मुँह से आगे निकलनेवाले शब्दों की प्रतीक्षा करने लगे। उसने अपना सिर झुकाया और राइस की ओर देखा—"तुम अपने पैसे से जो भी उचित समझो, कर सकते हो। नाक्स के समान तुम चाहो, तो तुम भी इसे औरतों पर खर्च कर सकते हो, इधर-उधर बर्बाद कर सकते हो—अथवा तुम अपने लिए दुग्धशाला के कुछ सामान खरीद सकते हो और......"

"पापा!" राइस बोला—"पापा......"

मैथ्यू ने अपना एक हाथ ऊपर उठा कर उसे चुप रहने का संकेत किया।

"अगर तुम अपने पैसे से दुग्धशाला खोलने की इच्छा रखते हो, तो मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं—" वह बोला—"तुम अपनी गायों को मेरे इन बछड़ों के

साथ-साथ चरागाह में चरने के लिए छोड़ दे सकते हो। मैं तुम्हें उनके लिए मकई और चरी उगाने की जमीन भी दूँगा—किन्तु उस जमीन में तुम्हें स्वयं ही काम करना होगा। मैं इसमें शामिल होने का इरादा नहीं रखता..." वह क्षण-भर को मुस्कराया... "जब तक कि तुम मुझे उस दिन तक अपने साथ काम करने के लिए राजी न कर लो।"

राइस उठ खड़ा हुआ। "मेरा अपना एक खलिहान होगा—" वह बोला—"एक बड़ा, गर्म खलिहान, जैसा मैंने प्रगतिशील किसान की तस्वीरों में देखा है। मैं वहाँ गायें रखूँगा, विद्युत् के जरिए उनका दूध दुहा जायेगा और दूध को ग्राहकों के पास पहुँचाने के लिए मेरे पास एक ट्रक होगी। मैं 'होल्टीन्स' खरीदूँगा...दूध दूहनेवाले यंत्रों में ये सर्वोत्तम होते हैं......और उनकी नस्ल बनाने के लिए एक बढ़िया साँड़ रखूँगा।" वह रुका और उसने घूम कर मैथ्यू की ओर देखा। "पापा, मैं..." उसके शब्द गले में ही अटक गये।

मैथ्यू भी उठ खड़ा हुआ। सावधानीपूर्वक उसने अपना सिगरेट बुझा दिया। "मै नहीं समझता हूँ कि तुम यह सब कल ही कर लोगे—" वह बोला—"लेकिन तुम इतना तो कर ही सकते हो कि काम शुरू करने के लिए दूध दूहनेवाले कुछ यंत्र खरीद लो। तुम उनके जरिये दूध दूह सकते हो और दूध बाँटनेवाली जो ट्रक आती है, उससे ऐसी व्यवस्था कर सकते हो कि हर सुबह आकर वह तुम्हारा दूध भी ले जाकर बाँट दिया करे। प्रति दो सप्ताहों के बाद वे लोग तुम्हारे दूध के मूल्य का चेक तुम्हें दे दिया करेंगे और तुम अपने चेक से..." उसने अपने कंधे उचकाये और अपने हल की ओर बढ़ा। "हो सकता है, जब तक मैं तुम्हारे दादा के समान घर में बैठे रहने लायक होऊँ, तब तक तुम्हारे पास तुम्हारा अपना बड़ा खलिहान हो जाये, अच्छी दुधारू गायें रहें—" वह मुस्कराया—"और उन गायों को खुश रखने के लिए एक बड़ा-सा साँड़ भी।"

वह अब राइस को नहीं खोयेगा—उसे खोने का वह कोई रास्ता ही नहीं रहने देगा। उसने खच्चर को घुमाया और बड़ी तेजी से हल चलाता हुआ दूर निकल गया। राइस खड़ा उसकी ओर देखता रहा। वह अभी तक मैथ्यू के शब्दों को जैसे ठीक-ठीक समझ नहीं पाया था। बस, अपने दिमाग में उसे सुरक्षित सँजो कर रखे हुआ था। उसे रोने की इच्छा हो रही थी। उसके भीतर जो रुदन था, उसके साथ-साथ हँस पड़ने की इच्छा हो रही थी उसे। सारे समय वह दूध दूहनेवाले खूबसूरत यंत्रों की कल्पना मन-ही-मन सँजोया करता था—यह जानते हुए भी कि मैथ्यू इसे पसंद नहीं करता था, इस सम्बंध में

उसकी कोई बात नहीं सुनेगा और तब अचानक, थोड़े-से शब्दों में, मैथ्यू ने उसके उस स्वप्न की शुरुआत कर दी थी।

तब उसे याद आया। जब तक जो लौट कर नहीं आती थी, वह उससे यह शुभ समाचार नहीं कह सकता था। जो दो सप्ताहों के लिए कहीं बाहर गयी थी और राइस को उसके वहाँ जाने की कोई जरूरत ही नहीं समझ में आयी थी। किंतु तब, अचानक वह जान गया कि जब वह जो को यह समाचार देगा, जो की शर्तों का पालन करने का साहस भी उसमें होगा। अंततः वह उसकी शतरंज की चुनौती स्वीकार कर सकता था—और उसके लिए इंतजार करने को दो सप्ताह का समय कुछ ऐसा अधिक नहीं था।

हर सुबह जब क्रैफोर्ड अपने दफ्तर पहुँचता, वह यह सोच कर जाता था कि मैथ्यू के साथ टी. वी. ए. के चल रहे इस संघर्ष से वह अलग हट जायेगा—इसका उत्तरदायित्व वह किसी दूसरे अजनबी हाथों में सौंप देगा—और हर सुबह वह इसे स्थगित कर देता। इस बीच वह बिल्कुल बदल जाता था। अपने साथ काम करनेवाले व्यक्तियों के बीच उसका व्यवहार बिल्कुल अपरिचितों-सा तथा उखड़ा-उखड़ा रहता। वह उनके जीवन से, उनके मजाकों से, उनकी हँसी से हमेशा दूर रहता आया था; क्योंकि उनमें से अधिकांश उम्र में उससे छोटे थे; किंतु अब इस दूरी में एक कटुता आ गयी थी। औरत से खाली, अपने बिस्तरे पर लेटा वह रातें बड़ी बेचैनी से गुजारता। पड़ा-पड़ा वह अंधेरी छत की ओर देखता रहता और उसके मन में यह धारणा घर करती जाती कि जो-कुछ उसे करना है, उसके लिए वह बहुत कमजोर है, बहुत छोटा है। रातों में वह आर्लिस की बगल में अपनी मोटर में बैठा रहता। आर्लिस, जिसे इस संघर्ष में उसने अपना शस्त्र बना रखा था और आर्लिस मौन-निष्ठुर बनी बैठी उसे दुःख पहुँचाती रहती।

वह मैथ्यू की बेटी को उसी प्रकार प्यार करता था, जैसे एक पुरुष एक नारी को करता है। वह उसे अपने अधिकार में बनाये रखना चाहता था—किंतु मैथ्यू के लिए जो उसका प्यार था, वह धरती में गहराई तक गयी हुई किसी भावना के समान था—जैसे स्वयं मैथ्यू धरती में गहराई तक समाया हुआ था। अगर जन्म लेने के पहले चुनाव करने की छूट होती, तो क्रैफोर्ड ने मैथ्यू को ही चुना होता। किंतु वे बाप-बेटे नहीं थे। वे तो बिल्कुल खुले रूप में एक-दूसरे के दुश्मन घोषित हो चुके थे। उसे मैथ्यू से अधिक बड़ा, अधिक सशक्त बनना ही था—एक सशक्त व्यक्ति का योग्य दुश्मन।

अंत में, उसने जो अपना कदम उठाया, वह अच्छी तरह सोच-विचार कर उठाया गया कदम नहीं था। निराश होकर, क्षणिक प्रेरणा के आवेग में, बिना विचारे वह वैसा कर बैठा। आर्लिस अंधेरे से निकल कर आयी और उसके साथ मोटर में बैठ गयी। उसने उसके बैठते ही अपना हाथ उसकी बाँह पर रख दिया और वह जान गयी। स्तम्भित हो वह उससे दूर हट आयी और मुड़ कर उसने रात के अंधेरे में उसके चेहरे की ओर देखा। वह उसे बड़ा और त्रासदायक प्रतीत हुआ—जैसा वह पहले कभी नहीं लगा था।

"क्रैफोर्ड!" वह बोली—"क्या है......"

क्रैफोर्ड 'ड्राइविंग ह्वील' के नीचे की ओर झुका और उसने एंजीन स्टार्ट कर दिया। उसने उसकी ओर अपना चेहरा घुमाया नहीं। सख्त बंद मुट्ठी के समान उसका चेहरा कस कर तना हुआ था "हमलोग शादी करने जा रहे हैं—" वह बोला—"आज रात ही!"

मोटर अब तक चलने भी लगी थी। आर्लिस ने उसकी एक बाँह पर अपने दोनों हाथ रख दिये, जैसे इस ढंग से वह उसे ऐसा करने से रोक लेगी। "नहीं, क्रैफोर्ड!" वह बोली। उसकी आवाज में निराशा थी, क्रोध था, उत्तेजना थी—"नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते।"

क्रैफोर्ड ने जवाब नहीं दिया। वह मोटर की बत्तियाँ जलाना भूल गया था और अब उसने उन्हें जला दिया और इसके लिए उसे फिर 'स्टीयरिंग ह्वील' के नीचे की ओर झुकना पड़ा। उसने उसकी ओर देखा भी नहीं।

"मेरे वादे का क्या होगा?" आर्लिस बोली—"मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्रैफोर्ड! मैं नहीं कर सकती!"

उसने मोटर रोकी नहीं। "जहन्नुम में जाये तुम्हारा वादा!" वह बोला—"उसे तुमसे ऐसा वादा करने का कोई अधिकार नहीं है। हम लोग शादी करने जा रहे हैं।"

चट्टान की तरह सख्त दीख रहे उसके तिरछे चेहरे को आर्लिस ने देखा और वह समझ गयी कि क्रैफोर्ड सचमुच ही ऐसा करने जा रहा है। कहने से वह रुकेगा नहीं; किंतु उसे चेष्टा तो करनी ही थी।

"मैं ऐसा नहीं करूँगी—" वह बोली—"जब पादरी सवाल पूछेगा, मैं 'ना' कर दूँगी।"

"अच्छी बात है—" वह अविचलित भाव से बोला—"लेकिन तुम्हें वहाँ खड़ा होना है और तब अपना 'ना' कहना है।"

वह मोटर के एक किनारे में भयभीत हो सिकुड़ गयी। अभी भी, वे जिस सड़क से गुजर रहे थे, उसके दोनों ओर वृक्ष लगे थे और मोटर के सामने की बत्तियाँ अंधेरे को चीर रही थीं। "मैथ्यू—" उसने सोचा—"पापा...... मैंने उनसे वादा किया और मैं अपना वादा नहीं रख सकती......" उसकी पकड़ में दरवाजे का हैंडिल आ गया और उसने उसे घुमा दिया। मोटर का दरवाजा खुलने से दरार पैदा हो गयी और वह उससे आ-आकर छू जानेवाली ठंडी हवा को महसूस करने लगी।

"रोको—" वह बोली—"अन्यथा मैं कूदने जा रही हूँ।"

क्रैफोर्ड ने अपना सिर घुमाया। उसकी ओर देखता हुआ वह उसके इरादे को तौल रहा था। तब वह बोला—"हे भगवान्!" उसकी आवाज बिल्कुल स्पष्ट और जोरदार थी। उसने अपने पैर से कस कर ब्रेक दबा दिया और इस झटके से दोनों अपनी-अपनी सीट पर आगे की ओर झुक आये। अचानक ब्रेक लगाये जाने से गाड़ी सड़क के किनारे की ओर बढ़ चली और गाड़ी को नीचे खाई में गिरने से बचाने के लिए उसे 'स्टीयरिंग ह्वील' को काबू में करने में बड़ी मेहनत करनी पड़ी। मोटर जब अंततः बिल्कुल रुक गयी, वह चुप बैठा रहा। आर्लिस ने निर्णयात्मक ढंग से जोरों की आवाज के साथ, मोटर का वह दरवाजा बंद किया। तब क्रैफोर्ड ने अपना एक हाथ ऊपर उठाया और बड़े जोर से स्टीयरिंग ह्वील पर एक घूँसा मारा।

"सब तुम्हारी ही कृपा है। तुम्हीं जिम्मेदार हो इसके लिए!" उसने बेरुखी से कहा।

आर्लिस ने कोई जवाब नहीं दिया। अब वह भयभीत थी, उससे ही नहीं, बल्कि स्वयं उसके भीतर जो दृढ़ता आ गयी थी, उससे भी! क्रैफोर्ड ने फिर 'स्टीयरिंग ह्वील' पर अपने घूँसे से प्रहार किया और इस समघात से उसने पीड़ा महसूस की। वह महसूस कर रहा था कि यह पीड़ा बढ़ती जा रही थी, रुकनेवाली नहीं थी – दृढ़ नहीं; पर अनिवार्य-सी पीड़ा! क्रैफोर्ड आर्लिस को चाहता था। मैथ्यू से प्यार अथवा घृणा के कारण नहीं, घाटी अथवा टी. वी. ए. या अन्य किसी कारण से नहीं—सिवा इसके कि उसके मन में आर्लिस के प्रति, उसके शरीर के प्रति, उसके प्यार के प्रति बड़ा तीव्र प्यार था। वह उसकी ओर मुड़ा और उसने अपने हाथ उसके बदन पर रख दिये। उसने आर्लिस को इस पकड़ से दूर खिसकते हुए महसूस किया; किंतु अपने बड़े-बड़े हाथों से उसे कस कर पकड़े रहा। आज उसके हाथों में बला की ताकत आ गयी थी।

"अच्छी बात है—" वह बोला। उसकी आवाज विचित्र और भिन्न थी—बासना के आवेग से वह ठीक-ठीक बोल नहीं पा रहा था— "जैसी तुम्हारी इच्छा। तुम्हारी ही बात सही!"

आर्लिस बिना एक शब्द बोले उससे हताश भाव से लड़ने लगी—जैसे एक बिल्ली लड़ती है। उसने अपने पंजों से उसके चेहरे पर खरोंच बना दिये और क्रैफोर्ड ने अपना बचाव करने के लिए उसकी बाँह कस कर दबा दी। आर्लिस अपनी ओर के दरवाजे से टिकी हुई थी और सीट से आधी उस ओर खिसक गयी थी और क्रैफोर्ड उसके ऊपर झुका हुआ था। वह जोर-जोर से साँस ले रहा था और आर्लिस पागल के समान बचने का जो प्रयास कर रही थी, वह उसे और भी उत्तेजित कर दे रहा था। आर्लिस रोने लगी और जैसे-जैसे रोने का जोर बढ़ता गया, मलेरिया के मरीज के समान उसका बदन काँपने लगा।

वे मौन एक-दूसरे से लड़ते रहे। उनके बीच की बातचीत, उनके विचार, उनकी व्यर्थ की योजना और उम्मीद सब समाप्त हो चुकी थीं। वे प्यार के लिए, भूख की तृप्ति के लिए, शत्रुओं के समान लड़ रहे थे और आर्लिस जितना उससे लड़ रही थी, उतना ही स्वयं से भी लड़ रही थी। क्रैफोर्ड जिस वासनाजन्य प्यार से स्वयं को अब तक वंचित रखता आया था, उसके ही युक्त हो उठने से वह विचारहीन और विवेकहीन हो उठा था। वहाँ न मैथ्यू था, न डनबार घाटी थी, न इस आदिम निजी लड़ाई के अतिरिक्त अन्य कोई लड़ाई थी।

अंततः आर्लिस थक कर हाँफती हुई रुक गयी और क्रैफोर्ड ने उसकी बाँहों पर से अपना एक हाथ हटा लिया। स्वयं सिकुड़ जाने और क्रैफोर्ड को चोट पहुँचाने के लिए आर्लिस हिली-डुली भी नहीं। जान-बूझ कर क्रैफोर्ड ने उसके स्कर्ट (घाँघरा) का किनारा पकड़ कर ऊपर उठा दिया और वहाँ उसके शरीर का स्पर्श किया, जहाँ उसने पहले कभी उसे नहीं छूआ था। वह अपने शरीर को ऐंठते हुए कराही और तब वह फिर शांत लेटी रही। उसने कोई विरोध नहीं किया और उधर क्रैफोर्ड का हाथ उसके गुप्तांग पर फिरता रहा, जिसके बारे में उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण रखने की शपथ ली थी। क्रैफोर्ड उसके ऊपर लेट रहा। उसका हाथ उसके बदन का स्पर्श कर रहा था और वासना तथा प्यार के सशक्त आवेग से वह अपने शरीर में सख्त तनाव महसूस कर रहा था। उद्देश्यपूर्ण ढंग से वह थोड़ा हिला और उसके नीचे लेटी आर्लिस अचानक

एक ओर झुक गयी। वह फिर उससे संघर्ष कर रही थी और क्रैफोर्ड आश्चर्य-चकित रुक गया। उसने आर्लिस में एक आत्मसमर्पण अनुभव किया था; किंतु बात यह नहीं थी। वे फिर उसी ढंग से लड़ने लगे और जब उनकी लड़ाई खत्म हुई, वे एक दूसरे से लग कर लेटे हुए थे। दोनों ही बुरी तरह थक गये थे और हाँफ रहे थे। बोल कोई भी नहीं रहा था। क्रैफोर्ड का हाथ आर्लिस के शरीर पर निश्चेष्ट पड़ा था और उस स्पर्श ने स्वयं उसके भीतर उत्तेजना भर दी थी।

क्रैफोर्ड ने दूसरी बार प्रयास किया और थकी होने पर भी आर्लिस ने दृढ़ता-पूर्वक उठने की कोशिश करते हुए संघर्ष आरम्भ कर दिया। वे फिर लड़ते रहे और तब क्रैफोर्ड ने फिर कोशिश की। हर बार वह धीरे-धीरे अपने शरीर को उसके शरीर के ऊपर लाता जा रहा था और वह उसकी ओर से वही पुराना दृढ़ विरोध और समर्पण का अभाव अनुभव कर रहा था। आर्लिस मजबूत थी—बहुत मजबूत थी। प्रयास करना व्यर्थ था। वे दोनों मोटर की आधी सीट पर साथ-साथ पड़े रहे—अस्त-व्यस्त और जोर-जोर से साँस लेते हुए। किंतु जिस क्षण क्रैफोर्ड हिला, आर्लिस अपने भीतर अजानी गहराइयों में सुरक्षित विरोध को एकत्र कर लेगी, फिर विरोध करेगी और फिर विरोध करेगी। आर्लिस का चेहरा शुष्क, कठोर और सख्त था और अब वह बिल्कुल नहीं रो रही थी।

एक-ब-एक क्रैफोर्ड आर्लिस से दूर हो, उठ कर बैठ गया। "तुम सब एक-सरीखे हो—" वह कटुतापूर्वक बोला—"तुम सभी डनबार! तुम बिल्कुल मैथ्यू की तरह ही हो।"

आर्लिस उठ कर उसकी बगल में बैठ गयी। उसके हाथ स्वतः नारी-सुलभ भावना से उसके अस्त-व्यस्त कपड़ों और सिर के बालों को ठीक करने लगे। क्रैफोर्ड ने अंधेरे में ही उसकी ओर घूर कर देखा। आर्लिस का यह नारीत्व, उसका प्यार, जिसके बारे में उसने कभी शंका नहीं की थी और गहराइयों तक जमा हुआ सशक्त विरोध उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने किसी चाबुक की तेजी और फटके से 'स्टीयरिंग ह्वील' को घुमाया और उस संकीर्ण धूल-भरी सड़क पर मोटर मोड़ दी। मोटर चलाता हुआ वह वापस घाटी तक आ गया। आर्लिस ने स्वयं को फिर से सँवारने का काम समाप्त कर लिया और क्रैफोर्ड से एक सिगरेट माँगा, यद्यपि वह सिगरेट नहीं पीती थी। उसने क्रैफोर्ड के हाथ से सिगरेट लिया और दो या तीन कश खींचने के बाद उसे खिड़की से बाहर गिरा दिया।

"काश ! तुमने यह सब नहीं किया होता !" अंततः वह बोली।

"तुम लोगों के साथ यह क्या बात है ?"—क्रैफोर्ड ने रोषपूर्वक प्रश्न किया—"तुम किसी चीज के बारे में जो एक बार कह देती हो, उसे कभी नहीं बदलती और चूँकि तुमने कहा, इसलिए वह साथ है ही ! मैथ्यू भी इसी प्रकार का है। तुम्हें प्यार करना मैथ्यू को प्यार करने के समान ही है !"

आर्लिस ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके पास जवाब रह ही नहीं गया था। वह स्वयं को खोखला, जीर्ण और वृद्ध अनुभव कर रही थी। वह महसूस कर रही थी कि उसके साथ बलात्कार किया गया था और फिर भी उसके भीतर अपने कौमार्य के अक्षत होने की दृढ़ भावना काम कर रही थी। क्रैफोर्ड कभी नहीं जान पायेगा कि आर्लिस का वह संघर्ष ज्यादातर अपने ही विरुद्ध था—क्रैफोर्ड के स्पर्श से उसके खून में जो गहरी पाशविक उत्तेजना दौड़ जाती थी, वह ज्यादातर उसके विरुद्ध ही लड़ती रही थी। अपने बदन पर क्रैफोर्ड के हाथ का स्पर्श याद कर वह सिहर उठी। किंतु वह ऐसा नहीं कर सकती थी। नहीं, अब नहीं और कल भी नहीं, तब तक नहीं, जब तक......उसने इस सम्बंध में विचारना बंद कर दिया। वह अब एक प्रकार की कमजोरी अनुभव करने लगी थी, जो उस संघर्ष के मध्य में भी नहीं अनुभव कर पायी थी।

"तुमने अपना वादा तोड़ दिया।" वह बोली—भर्त्सना से उसका स्वर काँप रहा था—"अब मैं कैसे तुम पर भरोसा कर सकती हूँ, जब......"

"तुम भरोसा नहीं कर सकतीं—" क्रैफोर्ड ने उद्दंडता से कहा—"जब भी तुम मेरे पास आओगी, मुझ पर भरोसा नहीं कर पाओगी। उस पुराने वादे से मैं अपने-आप को अब आज़ाद घोषित करता हूँ।"

आर्लिस ने उसकी ओर गौर से देखा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ये शब्द क्रैफोर्ड के मुँह से ही निकले हैं। तब उसने अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया और खिड़की से बाहर अंधेरे में झुक कर देखने लगी। वह रो रही थी—बहुत चुपचाप—इतनी चुपचाप कि अपने रोने की आवाज वह स्वयं भी नहीं सुन रही थी, सिर्फ अपने हाथों पर वह अपने आँसू गिरते अनुभव कर रही थी।

"तो अब मैं यहाँ और नहीं आ सकती।" वह बोली।

उसने मोटर का दरवाजा खोला और सड़क पर निकल आयी। वह अभी भी स्वयं को अस्त-व्यस्त और पराजित सी अनुभव कर रही थी। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह फिर कभी स्वयं को ठीक नहीं कर पायेगी। क्रैफोर्ड

सीट पर इस ओर खिसक आया और उसने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाल लिया। "मैं इंतजार करता रहूँगा—" वह बोला—"हर रात मैं इंतजार करता रहूँगा।"

आर्लिस ने उसकी ओर देखा और उसके भीतर अभी भी शक्ति शेष थी—पुरानी, दृढ़, इनकार-शक्ति और वह इसके लिए मन ही-मन कृतज्ञ भी थी। "तुम्हें काफी लम्बे समय तक इंतजार करना होगा।" वह स्थिरतापूर्वक बोली।

क्रैफोर्ड ने उसे मोटर के सामने से घूम कर, घाटी के भीतर जानेवाली सड़क पर जाते देखा। वह घर की ओर जा रही थी—घर के आश्रय में। उसने जो कहा था, गम्भीरतापूर्वक कहा था—क्रैफोर्ड यह जानता था। वह ऐसा अनुभव कर रहा था, जैसे उसका सारा बल निचोड़ लिया गया हो, वासना का वेग थक कर असफल उदासी और मलिनता में समा चुका था और उत्तेजना से रक्त-प्रवाह थम जाने के कारण वह अपने शिश्न में दर्द अनुभव कर रहा था। तभी उसने एक आवाज सुनी और मुड़ कर देखा, तो आर्लिस वापस आ रही थी। अचानक आशा जागी और अपनी थकावट भूल वह फिर से ताजगी अनुभव करने लगा। उसे यकीन हो आया था कि आर्लिस ने अपना इनकार का दिमाग बदल दिया।

किंतु वह आकर सिर्फ मोटर के नजदीक खड़ी रही और बड़े मधुर स्वर में बोली—"क्रैफोर्ड! मैं तुम्हें सचमुच ही प्यार करती हूँ।"

क्रैफोर्ड ने जवाब नहीं दिया और क्षण-भर बाद, वह फिर चली गयी। और इस बार उसका जाना भले के लिए ही हुआ।

प्रकरण चौदह

हैटी, दूसरे लोगों के नाश्ता कर लेने के बाद खाने की मेज के निकट बैठी। आर्लिस तश्तरियाँ धोने में व्यस्त थी और हैटी चुपचाप उसे देख रही थी। वह बिल्कुल शांत बैठी रही। वह जान गयी थी कि कुछ गलत ज़रूर है। आर्लिस हमेशा अपना काम बड़े सुचारु ढंग से करती थी; किंतु इस वक्त वह बड़ी जल्दी जल्दी और अस्तव्यस्त ढंग से सब काम कर रही थी। बर्तनों को धो-पोंछ कर रखते समय वह उन्हें बिना अधिक ध्यान रखती चली जाती थी और वे आपस में टकरा कर खड़खड़ा उठते थे। हैटी की नजरें उसी की ओर

गड़ी हैं, यह वह जानती थी और जब यह उसे सह्य नहीं हो सका, वह झटके से घूम पड़ी।

"निकल जाओ यहाँ से—" वह बोली—"बाहर जाकर आँगन में खेलो।"

"अब खेलने की मेरी उम्र नहीं रही—" बिना तनिक हिले हैटी ने जवाब दिया।

आर्लिस काम करती रही और जब यह फिर उसे असह्य हो उठा, तो वह फिर मुड़ी। "तब जाओ कौनी के उस पुराने कमरे में और बैठ कर शृंगार-मेज के आइने में अपनी सूरत निहारो।"

हैटी शर्मा गयी। कौनी के कमरे में आधे-आधे घंटे तक वह चोरी से जाकर बैठती थी और आइने में अपना चेहरा देखते हुए आत्मविस्मृत हो जाती थी। उसे नहीं ज्ञान था कि आर्लिस ने उसे ऐसा करते देख लिया था।

"क्या हुआ है तुम्हें?" वह क्रुद्ध भाव से बोली। उसकी आवाज में भी उतनी ही सख्ती थी—"पिछली रात तुम क्रैफोर्ड गेट्स से मिलने क्यों नहीं गयी? इस साल वसंत के मौसम की पहली रात ऐसी थी, जब तुम उससे मिलने नहीं गयी।"

"तुम्हें सिर खपाने की जरूरत नहीं है, मिस प्रिस!" आर्लिस बोली और वह झटके के साथ घूम पड़ी। उसका स्कर्ट लहराया और तब वह तश्तरियों को लकड़ी की आलमारी में रखने लगी।

हैटी उसे ही देख रही थी। वह थोड़ा नरम हो गयी। "क्या बात है, आर्लिस?" वह बोली।

इस बार उसकी आवाज बदल गयी थी। आर्लिस मेज के निकट आ गयी। वह मेज के दूसरी ओर, हैटी के सामने बैठ गयी, जैसे वह सिर्फ इस आमंत्रण का इंतजार कर रही थी। उसने अपने दोनों हाथ मेज पर रख दिये और उनकी ओर देखने लगी। "मैं नहीं जानती—" वह बोली—"मैं स्वयं नहीं जानती, हैटी!"

"क्रैफोर्ड के साथ तुम्हारा झगड़ा हो गया?" हैटी ने पूछा, जैसे वह इसे समझती थी।

आर्लिस ने सिर हिला कर सहमति व्यक्त की। अब तक उसे यह बात स्वयं अपने दिल के भीतर ही छुपा कर रखनी पड़ी थी। पिछली रात, घाटी के प्रवेश-द्वार के निकट से उसके होने की आवाज़ सुनायी पड़ी थी। वह लगभग एक घंटे तक बड़े धैर्य के साथ हार्न बजाता रहा था। हार्न की हर आवाज

आर्लिस के भीतर एक जकड़न-सी पैदा कर देती थी और वह भीतर-ही-भीतर ऐंठ-सी उठती थी, जैसे हार्न की यह आवाज अपने साथ, क्रैफोर्ड के हाथ की उष्णता भी ले आती थी। किंतु वह उसके पास नहीं गयी थी। वह स्वयं पर काबू किये हुए थी और अंत में, क्रैफोर्ड के इस लगातार की हठ से उसके मन में क्रोध जाग उठा था।

"क्या उसने तुम्हें छोड़ दिया?" हैटी ने पूछा।

आर्लिस ने इनकार में अपना सिर हिलाया।

हैटी की आँखों में आश्चर्य का भाव झलक आया। "अगर तुमने उसे छोड़ दिया है, तो ऐसा प्रतीत होता है, तुम उसके पास वापस जा सकती हो, जब तुम इसके लिए तैयार हो जाओ—" उसने तीक्ष्णता से आर्लिस को ऊपर-से-नीचे तक देखा—"और मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम इसके लिए अभी ही तैयार हो!"

आर्लिस अपने हाथों को घूरती रही। बिना किसी निश्चय के वह उन्हें एक-दूसरे के ऊपर हिलाती रही और तब सहसा उनका हिलना उसने रोक दिया। "एक समय ऐसा भी आता है, जब तुम्हें या तो इससे हाथ खींच लेना पड़ता है, या फिर जैसे चलता है, उसका साथ देना होता है।" वह बोली—"काफी लम्बे समय तक हम लोगों ने हर चीज स्थिर और सुंदर ढंग से रखी; किंतु अब हम और वैसा नहीं कर सकते। अतः मैं सोचती हूँ कि हमें अब इससे हाथ खींच लेना ही होगा।" वह चुप लगा गयी। विवाह के लिए क्रैफोर्ड का बार-बार जोर देना और अचानक उसके मन में उद्दाम वासना का जागरण—वह इसी के सम्बंध में सोच रही थी। अब तक न जाने कितनी रातें उन्होंने साथ-साथ बितायी थीं और क्रैफोर्ड का व्यवहार हमेशा नम्र होता था। वह सावधानी बरतता आया था और समझदारी से काम लेता रहा था और अचानक उसके मन में यह आतुर लालसा जाग उठी थी। उसका प्यार बदल गया था, यह बात नहीं... आर्लिस को इसका पूर्ण विश्वास था कि क्रैफोर्ड के इस नये रूप के भीतर उसके प्यार की वह पुरानी, स्थिर और सहनशील भावना अब भी मौजूद थी। किंतु वह इस नये क्रैफोर्ड का—उन दोनों के बीच होनेवाले इस संघर्ष का सामना नहीं कर सकती थी।

"अतः हमें यह बंद करना ही होगा—" वह हैटी से बोली, जैसे अपनी ही उम्र के किसी विश्वस्त मित्र से कह रही हो—"इसे अब हमें बंद करना ही होगा।"

"तुम उससे फिर मिलनेवाली नहीं हो?" हैटी बोली।

मेज पर रखे अपने हाथों को आर्लिस ने एक-दूसरे से लपेट लिया। उन्हें तोड़ती-मरोड़ती वह बोली—"नहीं, अगर मैं स्वयं पर नियंत्रण रख सकी, तब।" वह मेज के निकट से उठ गयी और कोने तक जाकर उसने झाड़ू उठा लिया। "यहाँ मैं बैठ कर बातें कर रही हूँ, जबकि बहुत सारे काम अभी करने पड़े हैं—" वह तेजी से बोली—"आज जब मर्द सब खाने के लिए आयेंगे, तब तक मैं लगता है, अँगीठी भी नहीं सुलगा पाऊँगी।"

हैटी, उसे भीतरी बरामदे में जाकर अपने सुबह के कामों में फिर से जुटती देखती रही। उसने अपना सिर हिलाया, जैसे भविष्य में क्या होगा, इसका वह भलीभाँति अनुमान कर ले रही थी और तब जोर से बोली—"मैं ऐसा कर सकती हूँ, इस सम्बंध में सोचने से भी मुझे नफरत है। मैं तो बस, इस सम्बंध में सोचना तक नहीं चाहती।"

आर्लिस ने वापस रसोईघर में अपना सिर निकाल कर उसकी ओर देखा। "तुम भी ऐसा करोगी—" वह निष्ठुरतापूर्वक बोली—"बस, तुम प्रतीक्षा करो। तुम भी करोगी ऐसा।"

हैटी स्तम्भित हो, फिर शर्मा गयी। उसकी पतली गर्दन से होते हुए उसके चेहरे पर खून की लाली उभर आयी। "दरवाजों पर कान लगाकर सुना मत करो—" वह क्रुद्ध हो तीखे स्वर में बोली—"सारी जिंदगी तुम मुझे यह कहती रही हो।"

किंतु आर्लिस फिर जा चुकी थी और हैटी अकेली थी। वह उठी और अंगीठी के पास गयी। उसने एक प्याले में काफी उड़ेली और लेकर वापस मेज के निकट आ गयी। किंतु उसने काफी पी नहीं। बैठी एकटक उसकी ओर घूरती रही और पड़ी-पड़ी काफी पत्थर की तरह सर्द हो गयी।

आर्लिस अपना काम करती रही और अंततः वह सदा के समान ही सुव्यवस्थित ढंग से फुर्ती के साथ एक-एक कर उन्हें निबटाने लगी। जब मैथ्यू, राइस और मार्क खाने के लिए रसोईघर में पहुँचे, मेज पर उसने गर्म गर्म खाना सजा रखा था। वह उन लोगों के साथ खाने नहीं बैठी, बल्कि बाहरी बरामदे में बैठ कर सुस्ताने लगी। वह उस ओर देख रही थी, जिधर से घाटी के भीतर आने का रास्ता था। वह जानती थी कि आज रात भी क्रैफोर्ड अपनी मोटर में बैठा वहाँ उसका इंतजार करेगा और रुक-रुक कर वह नियम से ढिठाई के साथ हार्न बजा-बजा कर उसके दिमाग की शांति भंग कर देगा।

सिवा स्वयं को रोक रखने–स्वयं पर नियंत्रण करने–के वह और कुछ नहीं कर सकती थी; क्योंकि वह आम रास्ता था और वहाँ मौजूद रहने का क्रैफोर्ड को पूरा हक था। अपनी जिंदगी में पहली बार उसके मन में यह इच्छा उठी कि वहाँ से यह घाटी थोड़ी और दूर होती। उसने एक आवाज सुनी और सिर घुमाया। उसने मैथ्यू को देखा, जो अपनी उल्टी हथेली से अपना मुँह पोंछता हुआ बाहर बरामदे में आ रहा था। बिना आर्लिस की ओर देखे मैथ्यू नीचे सीढ़ियों पर बैठ गया और दियासलाई की एक तीली से अपने दाँत साफ करने लगा। वे अब अधिक बात नहीं करते थे। उनके बीच बातचीत करने के लिए सिर्फ एक ही बड़ी चीज थी। आर्लिस ने उसके सिर के पिछले हिस्से की ओर देखा। वह स्वयं के भीतर एक निराशा और एक आवश्यकता अनुभव कर रही थी।

"पापा!" वह बोली। उसकी आवाज में निराशा बिल्कुल स्पष्ट थी— "अब मुझे क्रैफोर्ड से शादी कर लेने दीजिये!"

वह स्वयं भी नहीं जानती कि वह मैथ्यू से यह कहने जा रही थी। मैथ्यू को भी आश्चर्य हुआ था। उसने उम्मीद नहीं की थी कि उन दोनों के बीच फिर यह पुरानी बात उखाड़ी जायेगी। उसकी पीठ सख्त हो उठी और उसने धीरे से सिर घुमा कर आर्लिस के चेहरे की ओर देखा। आर्लिस ने जो प्रतिज्ञा की थी, वह उसे याद थी और उसके सहारे वह स्वयं को सशक्त अनुभव कर रहा था।

"कर लो शादी—" वह बोला—"किंतु तुम्हारी यह शादी बिना मेरी अनुमति के ही होगी।"

अचानक उसे अपने पेट में खलबली-सी महसूस हुई और वह सोचने लगा कि अगर सबके साथ ही उसने भी खाना खा लिया होता, तो ऐसा नहीं होता। अगर उसने खा लिया होता, तो निश्चय ही, पेट की यह गड़बड़ी नहीं महसूस होती।

"वह अच्छा आदमी है—" आर्लिस ने तर्क उपस्थित किया—"वह न तो रातों में आवारागर्दी करता है, न ही अधिक शराब पीता है। आपको उसके विरुद्ध होने की कोई जरूरत ही नहीं है, पापा!" वह खामोश हो गयी। वह क्रैफोर्ड की कमी को मन-ही मन महसूस कर रही थी—"और मैं उसे प्यार करती हूँ, आप इस पर विचार करते नहीं प्रतीत होते।"

"क्रैफोर्ड मेरा दुश्मन है—" वह निष्ठुरता से बोला—"इस लम्बे-चौड़े

संसार में बस, एक वही मेरा दुश्मन है और तुम्हें उससे ही प्यार करना है!"

आर्लिस ने स्वयं को असहाय अनुभव किया। उसके मन में अब क्रोध भी आने लगा था। "वह आपका सर्वोत्तम मित्र है—" वह बड़ी रुखाई से स्पष्ट शब्दों में बोली—"उस टी. वी. ए. के मामले को निबटाने में वह आपकी सहायता करने की चेष्टा कर रहा है। वही एक ऐसा आदमी है, जो आपके सामने बेझिझक खड़ा हो जायेगा और आपसे सच्ची बात बता देगा। चूँकि उसमें ऐसा करने की कूवत है, इसीलिए तुम उससे घृणा करते हो!"

मैथ्यू विचलित हो उठा। वह एक प्रकार की घबड़ाहट के साथ उठ खड़ा हुआ। "लड़की!" वह बोला—"अपने पिता से ऐसी बातें मत करो..."

आर्लिस वहाँ से हिली नहीं। उसने नजरें उठा कर उसके क्रुद्ध चेहरे की ओर देखा। इसके पहले मैथ्यू उस पर इतना क्रुद्ध कभी नहीं हुआ था। उसने भय-सा अनुभव किया। फिर भी इस भय के नीचे एक प्रकार की निडरता भी थी। उसके पास कुछ ऐसा नहीं था, जिसे खोने का उसे दुःख हो। पिछली रात ही, जब उसने क्रैफोर्ड के आह्वान को ठुकरा दिया था, तभी अपना सब कुछ खो दिया था!

"पापा!" वह बोली—"जरा सोचिये तो, आप क्या कर रहे हैं। नाक्स आपसे दूर जा चुका है। जेसे जान जा चुका है और मैं..." वह चुप लगा गयी। आगे कुछ कहने में वह स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रही थी।

उसके शब्दों में क्रैफोर्ड की प्रतिध्वनि थी। मैथ्यू उसके सामने अपनी पूरी लम्बाई में तन कर खड़ा हो गया। "और तुम?" वह बोला—"तुम भी जा रही हो क्या?"

आर्लिस ने उसकी ओर से नजरें हटा लीं। उसके चेहरे पर जो भाव था, आर्लिस उसे सह नहीं पायी। उसकी जिंदगी में मैथ्यू का सदा बड़ा प्रभाव रहा था—उसकी माँ और उसकी माँ की स्मृति के प्रभाव से भी अधिक शक्तिशाली! वैसे उसने आर्लिस की अपेक्षा लड़कों की ओर अधिक ध्यान दिया था; क्योंकि लड़कों में से ही उसे किसी एक को अपना उत्तराधिकारी चुनना था। किंतु आर्लिस की ओर अधिक ध्यान देने की उसे जरूरत नहीं थी—सिर्फ उसकी चेतनता में मौजूद रहने की जरूरत थी—सशक्त, गम्भीर और अपने विनम्र रूप में, ऐसी विनम्रता जो उसके बाद क्रैफोर्ड के अलावा और किसी व्यक्ति में आर्लिस ने नहीं देखी थी।

"मैं नहीं जानती, पापा!" वह बोली। वह एक प्रकार की कमजोरी

महसूस कर रही थी और उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी—"मेरे लिए यह असह्य हो उठा है......लेकिन मैं स्वयं नहीं जानती......"

वे खामोश हो गये और उनके बीच किसी प्रशस्त नदी के समान यह मौन अबाध गति से बहता रहा। आर्लिस ने सुस्त निगाहों से बाहर आँगन की ओर देखा। वह बलूत के पेड़ के उस सशक्त फैलाव को देख रही थी, जिसने आँगन में अपना शीतल साया डाल रखा था। यह शीतलता बरामदे तक भी पहुँच रही थी। गर्मी के मौसम में इतना शीतल बरामदा आर्लिस ने और कहीं नहीं देखा था और वह हैरत से सोच रही थी कि अगर बलूत के इस बड़े पेड़ को काट दिया जायेगा, उड़ा दिया जायेगा अथवा किसी प्रकार भी नष्ट कर दिया जायेगा, तो यह जगह कैसी हो जायेगी। सूरज की गर्म और तीखी किरणें स्थिर रूप से बरामदे में पहुँचा करेंगी और नग्न ग्रीष्म की उष्णता यहाँ व्याप्त रहा करेगी।

"ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था—" वह उदास लहजे में बोली—"दिन-दिन-भर हम आपस में बिना कुछ बोले रह जाते हैं, दिन में तीन बार खाने की मेज पर साथ-साथ बैठते हैं; फिर भी खामोशी से ही ठंडा खाना खा लेते हैं; क्योंकि हम सब अपने-अपने विचारों में खोये रहते हैं—" उसका चेहरा विचारों के तनाव से विकृत हो उठा—"इस घाटी में पहले भी कभी ऐसा हुआ था, ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता, पापा! और इस तरह से रहना ठीक भी नहीं है।"

"जब से क्रैफोर्ड आया—" मैथ्यू बोला। उसकी आवाज में सहमति थी—"जिस पहले दिन उसने हमारी जमीन पर पैर रखा, तभी से हमारे बीच यह अलगाव आ गया। वह हमारा दुश्मन है, आर्लिस!"

आर्लिस ने पिछले दिनों के बारे में सोचा। पिछले ग्रीष्म में यह आरम्भ हुआ था। फसल का अंतिम दिन था वह, जब इन लोगों ने यहाँ इस आँगन में ही तरबूज काटे थे। मौसम के हेमंत से शरद् में परिवर्तित होने के समान ही यह परिवर्तन भी प्रत्यक्ष था। किंतु क्रैफोर्ड इसका कारण नहीं हो सकता था; क्योंकि वह क्रैफोर्ड को प्यार करती थी। उसके आगमन के साथ ही यह परिवर्तन भी आया, यह हो सकता है; पर वह स्वयं में यह परिवर्तन लेकर नहीं आया था।

"आप तो क्रैफोर्ड को शैतान ही बना दे रहे हैं—" वह सख्ती से बोली—"वह एक आदमी है, पापा! मेरा आदमी!"

मैथ्यू का चेहरा कठोर हो गया। "जब भी मैं खेत से घर वापस आता हूँ,

यह सोच कर आता हूँ कि तुम यहाँ से चली गयी होगी—" वह बोला—"हर सुबह, सोकर उठने के बाद मैं सोचता हूँ कि क्या तुम रसोईघर में हमारा नाश्ता तैयार कर रही होगी! उसकी वजह से—सिर्फ उसकी वजह से!"

"मैंने आपसे कहा था......" वह बोली। मैथ्यू के इस संदेह से उसका मुँह खुला रह गया था—"मैंने आपसे वादा किया था......"

"हाँ!" मैथ्यू बोला—"मुझे ताज्जुब है, कब तक तुम अपने इस वादे को निभाओगी। हर दिन मैं हैरत से इस पर गौर करता हूँ।"

आर्लिस ने दूर, घाटी के प्रवेश-द्वार की ओर देखा। आज रात क्रैफोर्ड वहाँ अपनी गाड़ी में बैठा रहेगा, वह उसका इंतजार करेगा—इतनी देर तक इंतजार करेगा कि वह आर्लिस की सहनशीलता की सीमा के परे होगा और हार्न बजा-बजा कर वह उसे बुलायेगा। हार्न की तीखी आवाज उसकी रग-रग में बैठ कर उसे अपनी ओर खींचेगी।

"मेरे पास अब जो है, तुम्हीं हो, आर्लिस!" मैथ्यू बोला—"तुम, राइस और हैटी। तुम और यह घाटी!"

आर्लिस ने मैथ्यू के चेहरे की ओर आँखें उठायीं। आज रात, जब हार्न फिर बजेगा, वह मैथ्यू के इन शब्दों को याद रखे रहेगी। इन शब्दों को कहते समय मैथ्यू की आँखों में जो प्रतिच्छाया उभर आयी थी, वह भी उसे याद रहेगी। और आज रात, कम-से-कम, वह क्रैफोर्ड की पुकार का जवाब नहीं देगी।

नाक्स ने अपने सामने की उस ढलान की ओर देखा और अपनी हथेलियों पर थूक कर उन्हें अपनी जाँघों में पोंछ लिया। तब वह उसी तरह उछल कर बुलडाजर (एक प्रकार का बड़ा ट्रैक्टर) की सीट पर बैठ गया, जैसे कोई काउबाय (चरवाहा) किसी उजले घोड़े पर चढ़ता है। वह कभी दस्ताने नहीं पहनता था; क्योंकि अपने नग्न हाथों से लीवरों को छूना उसे पसंद था।

"मैं इसे नीचे ले जाऊँगा—" अपने नीचे खड़े व्यक्तियों की ओर देख कर वह चिल्लाया—"देखो, मैं कैसे इसे नीचे ले जाता हूँ।"

उस बड़े आर-डी ८ नम्बर के बुलडोजर को उसने चलाया और ढलान पर वह आगे बढ़ा। बुलडोजर के फाल ऊपर की ओर उठे थे। बुलडोजर के चलने से उसने वह जबर्दस्त हिचकोला अनुभव किया और मुस्कराया; क्योंकि आज तनख्वाह मिलने का दिन था और वह अपनी नयी मोटर की दूसरी किश्त अदा कर देगा तथा अपनी प्रेयसी के साथ नाच में शामिल हो सकेगा। अपने वजन से नीचे की जमीन को तोड़ता हुआ बुलडोजर भार की अधिकता से ऊपर उठ

गया। उसके फाल अभी भी ऊपर उठे हुए थे और क्षण-भर के लिए, जब मशीन एक ओर को झुक कर टेढ़ी हो गयी, नाक्स ने अपने मन में भय अनुभव किया। अभी पिछले हफ्ते ही उसने एक बुलडोजर को उलटते देखा था और यद्यपि उसका चालक कूद कर स्वयं को बचा ले गया था; फिर भी वसंत की उस सुनहली धूप से चमकते दिन में क्षण-भर के लिए जो भय व्याप्त हो गया था, नाक्स उसे कभी नहीं भूल पायेगा। किन्तु उसे परेशान होने की कोई जरूरत नहीं थी। मशीन स्वयं स्थिर हो गयी और उसने धीरे-धीरे उसे मोड़ा। उसके फाल उसने नीचे गिरा दिये। अतिरिक्त वजन से मशीन चरमरायी और प्रसन्नता-पूर्वक वह उसे चलाता रहा। बुलडोजर के फालों को धरती की छाती में धँसते वह अनुभव कर रहा था और वह मशीन को सँभाले हुआ था। बुलडोजर के तेज फालों से धरती कटने लगी, दोनों ओर लाल-लाल मिट्टी जमा होने लगी और तब वह समतल जमीन पर पहुँच गया। मशीन पर उसने जो नियंत्रण रखा था, उसने उसे ढीला कर दिया और बुलडोजर बड़ी आसानी से आगे बढ़ चला। अंत तक पहुँच कर उसने बुलडोजर को सँभाला और उसे मोड़ कर उसी रास्ते पर वापस ले चला, जिधर से आया था।

वह फिर उस ढलान पर बुलडोजर को ले चला। उसे यह सोच-सोच कर हँसी आ रही थी कि टी. वी. ए. के एक पुराने व्यक्ति ने कल इस ढलान पर काम करने से इन्कार कर दिया था। उसने कहा था—"यह जमीन बहुत मुलायम है, बहुत ढालू है और इस पर बुलडोजर चलाना बहुत खतरनाक है।" नाक्स बुलडोजर चलाता हुआ ढलान के शीर्ष पर जा पहुँचा। उसने ट्रैक्टर के फाल गिरा दिये और नीचे खड़े लोगों के झुंड की ओर देखा। उसने उनकी ओर हाथ हिलाते हुए सोचा—वे क्या जानें, इसमें खतरा क्या है? वह जल्दी से वहाँ का काम खत्म करना चाहता था। वह उन्हें दिखा देना चाहता था कि किस प्रकार बुलडोजर चलानेवाला एक सच्चा व्यक्ति इस काम को कर सकता था। उसने बुलडोजर के फाल तेजी से गिरा दिये और बुलडोजर को चलाया। फाल जमीन में गहराई से धँसते हुए आगे बढ़ने लगे और मशीन चरमरायी।

वह उस ढलान पर काम कर ही रहा था कि बायाँ पहिया नम जमीन में धँस गया। बुलडोजर रुक गया और मशीन धीरे-धीरे घूमने लगी। नाक्स ने लीवरों को पकड़ कर स्वयं को इस संकट से उबारने का प्रयास किया। बुलडोजर एक ओर को तिरछा होता जा रहा था—तिरछा होता जा रहा था। नाक्स ने

पागलों के समान एक छोटी-से मशीन के बारे में सोचा। उसे ताज्जुब हो रहा था कि उसके सामने पैनेल पर खतरे की सूचना देनेवाली लाल बत्ती जलेगी क्या? नीचे खड़े आदमी चिल्ला रहे थे, मशीन दौड़ रही थी; किंतु वह उस शोरगुल के बीच दृढ़ और शांत बैठा था। बुलडोजर को यों ही उलटने के लिए छोड़ देने का उसका इरादा नहीं था। वह बस, ऐसा नहीं करना चाहता था।

किंतु बुलडोजर उलटता जा रहा था। उसने मशीन की यह गति भाँप ली और उठ कर खड़ा हो गया। वह जान गया था कि अब इतनी देर हो चुकी थी कि सिवा कूद कर जान बचाने के और कुछ नहीं किया जा सकता था। उसने उछाल ली और स्वयं को हवा में ऊपर की ओर जाते तथा मशीन को स्वयं से दूर होते अनुभव किया। वह जोरों से जमीन पर गिरा। मशीन जहाँ उल्टी थी, उससे परे, ऊपर की ओर वह गिरा था। क्षण-भर वह शून्य-सा पड़ा रहा; फिर मुँह खोले हाँफता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने बुलडोजर की ओर देखा। उस लम्बी ढलान पर लुढ़कते हुए बुलडोजर ने दूसरा पलटा खाया और उसके सामने नीचे खड़े लोग तितर-बितर हो गये। वह बच गया है, यह जान कर वह हँस पड़ा। तब वह तेजी से ढलान के नीचे की ओर चला, जहाँ बुलडोजर एक ओर को उलट कर रुक गया था। वहाँ पहुँच कर उसने एंजिन को बंद कर दिया।

"जाओ, दूसरा बुलडोजर यहाँ ले आओ—" वह बोला। उसने फिर सामने की उस ढलान की ओर आँखें उठायीं—"सूर्यास्त होने और तनख्वाह मिलने का वक्त होने के पहले ही मैं इस ढलान को बराबर कर देना चाहता हूँ। मैं यह काम करने ही वाला हूँ—सुना तुम लोगों ने?"

अपने सवालात पूछना आरम्भ करने के पहले जेसे जान इस नये काम पर सप्ताह-भर मौन प्रतीक्षा करता रहा। अब तक वह यह जान चुका था कि कम-से-कम इतना समय लोगों के साथ काम कर-कर के बिताये बगैर, वे उसके सवालों का जवाब नहीं देने वाले हैं। अगर वह पहले ही दिन उनसे सवाल पूछता, तो वे उसकी ओर उत्सुकता से देखते और वे न 'हाँ' कहते, न 'ना'। जिस अजनबी की तलाश थी उसे, उसके बारे में उनसे कुछ भी पता नहीं चलता। किंतु जब वे उसके साथ के अभ्यस्त हो जाते, वह सामान्य ढंग से अपना सवाल उनके सामने रख सकता था, जैसे वह अपने किसी मित्र की तलाश कर रहा था और तब जवाब भी उसे उसी मित्रतापूर्ण और स्वाभाविक ढंग से मिलता।

पहले उसने कौनी की तलाश की थी। लेकिन जब तक औरत से कोई सम्बंध नहीं हो, कौन व्यक्ति उसे याद रखता है? और, इस सम्बंध में सोचने पर, वह जान गया कि कौनी को पाने के लिए उसे उस आदमी की तलाश-भर करनी है; क्योंकि हर आदमी के पीछे भागने वाली औरतों में कौनी नहीं थी। केरम हास्किंस ने उसे ऐसा कुछ दिया था, जो जेसे जान उसे देने में असमर्थ अथवा अनिच्छुक था और यही कारण था कि कौनी उसके साथ चली गयी थी।

जेसे जान बदल गया था। कई बार वह अच्छी तरह खाता भी नहीं था; क्योंकि जब उसे किसी नयी जगह कौनी के मिलने की सम्भावना प्रतीत होती, वह तुरत अपनी नौकरी छोड़ देता और वह दूसरी बड़ी निर्माण-योजना में पहुँच जाता, जहाँ केरम हास्किंस के मिलने की उम्मीद होती। स्वभावतः ही उसे कई बार भूखा रहना पड़ता और अलावे, इस खोज के तनाव का प्रभाव उसकी आँखों तथा उनके दुबले व खिंचे-खिंचे चेहरे पर भी स्पष्ट लक्षित था। बहुधा वह काम करते-करते बीच में रुक जाता। अचानक ही उसे तब याद आ जाता कि डनबार-घाटी से वह कितनी दूर चला आया है। डनबार-घाटी के रहने वाले जो जो काम उस समय कर रहे होते, उनकी वह कल्पना करता और अपने काम से उनकी तुलना करता। दोनों के बीच का अंतर जब उसके सामने स्पष्ट होता, तो उसे आश्चर्य होता था। ऐसा लगता था, जैसे उसके दिमाग का कोई शिरा अपने स्थान से खिसक गयी थी और वह इससे इस अपरिचित वातावरण के बीच आ पड़ा था। घर से वह जितनी मील दूर आ गया था, उनमें से प्रत्येक मील को अलग-अलग पहचानने की शक्ति-भर उसमें रह गयी थी। किंतु यह स्थिति अधिक दिनों तक नहीं रह सकती और जब तक जरूरी है, वह इसे सह लेगा। एक बार उसे कौनी मिल-भर जाये। फिर वे साथ-साथ घर लौट जायेंगे और तब यह सारी दूरी, यह अजनबीपन उसके पीछे छूट जायगा—यह किसी अद्भुत स्वप्न की स्मृति के समान ही रह जायेगा।

जेसे जान ने यह कभी नहीं सोचा कि कौनी उसके साथ जाने से इनकार भी कर सकती थी; क्योंकि वह क्रुद्ध अथवा आहत होकर नहीं, बल्कि प्यार से प्रेरित होकर कौनी के पास जा रहा था। कौनी ने क्या किया था, इसकी उसे चिंता नहीं थी। वह तो जानना चाहता था कि वह क्यों चली गयी थी, जिससे वह अपने उस अभाव की पूर्ति कर सके, जिसने कौनी को उससे दूर चले जाने के लिए बाध्य कर दिया था। वह जानता था कि जब कौनी से उसकी मुलाकात होगी, तब क्या होगा। वह उस वक्त कहेगा—"चलो कौनी, अब हम घर

चलें—" और जेसे जान के चेहरे पर प्यार और कामना छलकती देख, जिसके सम्बंध में उसका विश्वास था कि जेसे जान में प्यार की भावना ही नहीं है, वह अपना सामान उठाकर उसके पीछे चल देगी। जेसे जान के चेहरे पर बस, उसे क्षमा कर देने की भावना-भर नहीं रहनी चाहिए; क्योंकि उसने ऐसा कुछ किया ही नहीं था, जिसे क्षमा करने का प्रश्न पैदा हो।

अतः उसने धैर्य के साथ हफ्ते-भर तक इंतजार किया और तब एक दिन जब वह कुछ व्यक्तियों के साथ बैठा सिगरेट पी रहा था, उसने सामान्य ढंग से पूछा—"सुनो, तुम लोगों में से कोई केरम हार्किंस नामक व्यक्ति को जानता है?"

उन सब लोगों ने अपने चेहरे घुमा-घुमा कर उसकी ओर देखा; किंतु जेसे जान के चेहरे पर सिर्फ मैत्रीपूर्ण जिज्ञासा की भावना थी—उसके चेहरे पर ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे वे भयभीत हों।

"तुम्हारा मित्र है वह?" उनमें से एक ने कहा।

"हाँ!" जेसे जान बोला—"किसी ने मुझसे कहा था कि वह इधर ही काम कर रहा है। मैंने सोचा, हो सकता है, उससे मुलाकात हो जाये।"

उन्होंने सोचते हुए इनकार में अपना सिर हिलाया। ना, वे इस नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानते थे। तब उनमें से एक व्यक्ति ने अपना सिर हिलाना बंद कर दिया और कहा—"एक मिनट ठहरो। कुछ महीने पहले कुल दो हफ्तों तक यहाँ काम करने के बाद जो व्यक्ति चला गया, उसका क्या नाम था भला? वह लम्बा-सा व्यक्ति..." उसने दो बार अपनी उँगलियाँ झटकायीं और तब रुक गया। "वही था वह—" वह बोला—"मुझे यकीन है, वही था—केरम हार्किंस!"

जेसे जान ने अपने सिगरेट की ओर देखा और बड़ी सावधानी से उसने उँगली झटक कर राख झाड़ी। "तुम्हारा कहना है कि वह यहाँ से पहले ही जा चुका है—" वह बोला। उसकी आवाज़ में खेद का पुट था—"वह व्यक्ति, सम्भवतः केरम ही था—अधिक समय तक किसी काम पर नहीं टिका रह सकता वह। उसने क्या बताया कि कहाँ जा रहा है?"

वहाँ बैठा वह व्यक्ति सोचता रहा। अपने सिगरेट की ओर देखते हुए ललाट पर सिकुड़नें डाल वह सोचता रहा। "आह! इससे कोई अंतर नहीं पड़ने वाला है। वह तो अब जा ही चुका है। लेकिन मेरा खयाल है कि उसने शायद कुछ ऐसा ही कहा था कि ओरगन में होने वाले उस बड़े निर्माण-कार्य में वह काम पाने की चेष्टा करेगा।"

जैसे जान ने लापरवाही से अपने कंधे उचकाये। "सम्भवतः वह कभी वहाँ गया ही नहीं।" वह बोला—"सम्भवतः वहाँ पहुँचने के पहले ही वह कहीं अन्यत्र चला गया।"

एक हफ्ता बाद, जब उसे अपने काम का पारिश्रमिक मिल गया, वह वहाँ से फिर अपनी राह पर चल पड़ा। हो सकता है, इस बार वह सही समय पर ही वहाँ पहुँच जाये। और जब उसे केरम हास्किंस मिल जायेगा, तब, वह जानता था, उसे कौनी भी मिल जायेगी। और वह इतना ही चाहता था—कौनी को पाना और तब अपने घर डनबार की घाटी वापस चले जाना।

राइस ने यह उम्मीद नहीं की थी कि अचानक जिस तरह मैथ्यू ने रूपयों के बारे में और उनसे वह जो-कुछ कर सकता था, कह कर समस्त सुख का द्वार उसके सामने खोल दिया था, विश्व-सुख का वह द्वार इस तरह उसके सामने खुल जायेगा। बहुत लम्बे अर्से से उसने अपने मन में प्राप्त प्यार सँजो रखा था। पके हुए आड़ू के समान ही उसका यह प्यार परिपक्व था और उचित वक्त आने पर वह इसे स्पष्ट स्वीकार करने को भी तैयार था और अब वह जान गया था कि अब तक वह क्यों हिचकिचाता आया था—वस्तुतः एक के अभाव में दूसरा पर्याप्त नहीं था। उसे दोनों को एकबारगी प्राप्त करना था। अब उसके दोनों हाथों में जैसे दो पके आड़ू थे और अपने भीतर कुरेदती हुई भूख उसे अनुभव होने लगी थी।

किंतु अभी भी उसे एक हफ्ते तक प्रतीक्षा करनी थी और यह हफ्ता भी जैसे कभी समाप्त होने वाला नहीं था। जब तक जो नहीं आ जाती थी, उसे उन दोनों हफ्तों में चुपचाप उसकी प्रतीक्षा ही करनी पड़ी थी। जो बरमिंघम में अपने भाई और भाभी के पास गयी थी। वह उसकी अनुपस्थिति से स्वयं को उदास और ठगा-ठगा अनुभव कर रहा था, जैसे जो ने यह सब-कुछ जान-बूझकर किया था। लगता था, यह समय कभी बीतेगा ही नहीं; लेकिन यह समय गुजर गया और जो अपने घर वापस आ गयी।

उसके वापस आने की पहली रात राइस रात का खाना खाने के लिए भी नहीं ठहरा। उसके बजाय वह सीधा अपने कमरे में गया और उसने अपनी पोशाक पहनी। वह इस तरह सज-सँवर रहा था, जैसे शादी में जा रहा हो और तब वह उस धूमिल अंधेरे में से बाहर निकल पड़ा। सूर्य के अस्ताचलगामी होने के कारण हवा में ठंडक थी और रात्रि की ठंडी हवा उसके चेहरे को छूती हुई

निकल गयी। उसके बदन में सनसनी-सी हुई और वह सिहर उठा। किंतु यह सिर्फ हवा की सिहरन नहीं थी। यह सिहरन तो उसके अंतस्तल की गहराइयों में समायी हुई थी—पूर्णत्व और पुरुषत्व की प्रतीक सिहरन थी यह! टी. वी. ए. द्वारा साफ की गयी उस बड़ी जमीन से होकर, जो शार्ट-कट (छोटा रास्ता) था और जिसके जरिये वह शीघ्र ही जो के मकान के पिछवाड़े पहुँच जाता, राइस जब गुजरा, तो उसके दिमाग में किसी तावीज की तरह ही जो का चेहरा सुरक्षित था।

वह बहुत पहले ही वहाँ पहुँच गया। वह जानता था कि वह बहुत पहले जा रहा है; लेकिन वह स्वयं को रोक नहीं पाया। रसोईघर की खिड़की से उसने देखा कि जो और उसके घरवाले अभी भी खाने के इर्द-गिर्द बैठे खाना खा रहे थे। अभी जब कि वे खाना खा रहे थे, वह भीतर घुस जाने की असभ्यता नहीं कर सकता था। वहाँ से वह वापस मुड़ा और एक पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। अंधेरे में आँखें उठाकर, उसने अपने सिर के ऊपर, वृक्ष के पत्तों की ओर देखा। प्रतीक्षा की इन घड़ियों में उसे गाना गाने की इच्छा हो रही थी। इस विलम्ब के लिए अथवा पिछले दो सप्ताहों का जो विलम्ब हुआ था, उसके लिए मन में तनिक दुःख नहीं था। इस बीच उसे इस सम्बंध में पूर्णरूपेण सोचने विचारने का मौका मिल गया था। उसे इस बात का आश्चर्य नहीं था कि किस बात ने मैथ्यू को प्रेरित किया था कि वह राइस के स्वप्न को मूर्तरूप देने का साधन उसके हाथ में रख दे। वह अब यह अनुभव कर रहा था कि यह तो आरम्भ से ही अनिवार्य था। यह अवसर इसके पहले किसी दूसरे समय में भी नहीं आ सकता था। अपने कल्पना-चक्षु से उसने चरागाह में हृष्ट-पुष्ट गायों को चरते हुए देखा, जिनके दूध से भरे भारी स्तन लटक रहे थे। सुबह-शाम उन्हें उस विद्युत्-संचालित गर्म और बड़े खलिहान में ले जाया जायेगा, जिसके ऊपर पूरी छत होगी। वहाँ वे अपने-अपने खूँटे से बँधी शांत, स्थिर और धैर्यपूर्वक खड़ी रहेंगी और विद्युत् के जरिये बड़ी कोमलता के साथ दूध दुह कर उनका भार हल्का कर दिया जायेगा। वह एक-एक कर उनके पास जायेगा और उनके स्तनों में विद्युत्-चालित यंत्र लगा देगा, जिससे बिना किसी पीड़ा के उनका दूध दुहा जा सकेगा। और तब उस दूध की सुरक्षा और उसके स्वास्थ्यप्रद बनाये रखने का उलझा-उलझा काम होगा, जिसे वह अभी तक नहीं समझता था—रासायनिक प्रक्रिया से दूध का गुजरना और फिर बोतल में उसका बंद होना। फिर दूसरे दिन तड़के ही एक

छोटी, पर आसानी से चलनेवाली ट्रक दूध की बोतलें लादे, शहर की सड़कों पर भर्-भर् करती हुई लोगों के बीच दूध बाँटती होगी।

उसने एक झटके के साथ कठोरतापूर्वक स्वयं को खयालों की दुनिया से खींच लिया। आरम्भ में सब-कुछ इस तरह नहीं होगा—उसने यथार्थवादी बनते हुए स्वयं से कहा—काफी दिनों तक भी ऐसी बात नहीं हो पायेगी। वह दिन आने में काफी देर लगेगी। अभी तो काफी दिनों तक सुबह-शाम खलिहान में हाथों से ही गैलन-के गैलन दूध दुहना होगा। पहले वह दूध को दस-दस गैलन के बर्तनों में भर कर बंद कर देगा और पानी से भरे टबों में उन बर्तनों को रातों-रात ठंडा होने के लिए रख देगा, जब तक कि सुबह में घाटी में दूध के बर्तनों से भरी ट्रक नहीं आ जायेगी। ट्रक पर सवार व्यक्ति नीचे उतरेगा। वह खाली बर्तनों को नीचे उतार कर रख देगा और उस चलती ट्रक में दूध से भरे बर्तनों को उठा-उठा कर भर देगा। शुरुआत इसी तरह होगी; किंतु सिर्फ शुरू में ही ऐसा होगा और सदा ही ऐसी बात नहीं होगी। चाकलेट जिससे तैयार किया जा सके, मैं वैसा दूध भी तैयार करूँगा—उसने सोचा। लड़के हमेशा चाकलेट का दूध पसंद करते हैं। शहर के सभी लड़के सादे दूध की अपेक्षा वह दूध ज्यादा चाव से पीयेंगे। स्वप्न की समाप्ति उसके शुरुआत से अधिक दूर नहीं होगी—और उसका आगमन भी उतना ही अनिवार्य था।

बेचैनी-सी अनुभव करता हुआ वह उठ खड़ा हुआ और तब तक चलता रहा, जबतक कि रसोईघर की खिड़की के निकट नहीं पहुँच गया। वे लोग अब खाना समाप्त कर चुके थे, रसोईघर खाली था और वह घूमकर मकान के सामने पहुँचा। एक कुत्ते ने भौंक कर उसकी उपस्थिति की सूचना दे दी और वह खड़ा इंतजार करता रहा, जब तक कि जो निकलकर बाहरी बरामदे में नहीं आ गयी। दरवाजे के बाहर वह साया में खड़ी उसकी ओर देख रही थी और राइस उसके चेहरे के भाव को नहीं देख पाया।

"कल की रात वह रात है—" वह बोली। राइस को उसकी आवाज़ में एक हल्की सी हँसी सुनायी दे गयी। उससे मिलने के लिए राइस ने जो उतावली दिखायी थी, वह उससे खुश थी। "तुम आज रात यहाँ नहीं आने वाले थे, याद है?"

"मुझे तुमसे मिलना ही था—" उसने महत्वपूर्ण लहजे में कहा।

जो आकर बरामदे में उसके निकट बैठ गयी। उसके पैर बरामदे के किनारे पर लटक रहे थे। "किस मुत्तालिक?"

राइस ने उसके घुटने पर एक हाथ रख दिया और कस कर पकड़ लिया। "मैं यहाँ तुमसे नहीं कह सकता—" वह बोला—"आओ, हम सड़क पर थोड़ी चहलकदमी करें।"

उसने जो की साँस रुकती-सी अनुभव की। "अच्छी बात है—" जो बोली "माँ से मुझे कह देने दो।"

वह फुर्ती से चली गयी और राइस इंतजार करता रहा। वह उसकी अनुपस्थिति, जो कि शीघ्र ही खत्म हो जाने वाली थी, के सम्बंध में सोचता हुआ खोया रहा। अपने पुरुषत्व को अनुभव करके उसने एक सिहरन-सी अनुभव की। वह यह जान गया था कि जो उसमें आये परिवर्तन से—उसकी तत्परता से—परिचित हो गयी थी। राइस अब पूर्ण रूप से उसे अपना बना लेने को तैयार था, यह भी वह जान गयी थी। पूर्णता के अभाव का भय अब राइस में नहीं था। जो की शर्तों की मान्यता देने में भी अब अनिच्छा की गुंजाइश नहीं थी। जो ने बहुत पहले उसके सम्बंध में जो सत्य कहा था और उसके बाद सदा कहती आयी थी, उससे राइस आज रात भयभीत नहीं था। जो समर्पण के लिए तैयार प्रतीक्षा कर रही थी; किंतु अब तक राइस ने स्वयं ही चुम्बन स्थगित कर रखा था, हाथों का स्पर्श वर्जित कर रखा था। किंतु अब ज्यादा दिनों तक नहीं—अब नहीं!

जो घर से बाहर आयी। सीढ़ियाँ उतरकर वह आँगन में आयी और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। राइस उसकी हथेली की प्रिय नमी महसूस कर रहा था। हाँ, वह जान गयी थी।

"मैं तैयार हूँ—" वह बोली—"कहाँ जा रहे हैं हम लोग?" बिना रुके एक साँस में वह दबी जबान में, लगभग फुसफुसा कर बोली। उसकी आवाज़ में समर्पण का पुट था।

"चलो, नदी के किनारे वाली सड़क पर घूमें—" राइस बोला।

मकान के सामने से गुजरनेवाली सड़क पर, जा नदी की ओर चली गयी थी, वे दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े, मौन चलते रहे। वे आम सड़क पर आकर मुड़ गये और डनबार-घाटी की ओर चलने लगे। यहाँ अभी भी दोनों ओर सघन वृक्षों की कतार थी। टी. वी. ए. वालों ने उन्हें अभी छूआ नहीं था; किंतु शीघ्र ही वे यहाँ भी पहुँचेंगे, इन पेड़ों को काट डालेंगे और इस सायेदार सड़क को दोपहरी के सूरज और रात्रिकालीन आकाश के लिए नंगी कर देंगे। राइस संतोष के साथ प्रतीक्षा करनेवाला था। वह, उन दोनों के बीच निर्मित

होनेवाली पूर्णता का कार्य अबाध गति से चलने देने के लिए तैयार था। वह अब चिंतित न था; क्योंकि वह जानता था कि उसके सपने सच्चे हो रहे हैं। वह अपने भीतर एक निश्चितता-सी अनुभव कर रहा था, जिससे वह अपने अठारह साल के जीवन में पहले कभी नहीं परिचित था। इसके पहले इस विश्वास में भी उसकी आस्था नहीं थी कि हर चीज अपने समय पर ही होती है।

जो ने क्षणभर के लिए अपना हाथ खींच लिया और अपनी दोनों हथेलियों से अपनी दोनों कनपटी कस कर दबा ली।

"बात क्या है?" राइस ने व्यग्रतापूर्वक पूछा।

"सिरदर्द—" वह बोली—"जब से मैं वापस आयी हूँ, दिन-भर बारूद का विस्फोट होता रहा है। जब टी. वी. ए. वाले अपना यह काम समाप्त कर लेंगे, मुझे बड़ी खुशी होगी।"

"यह तो सारी गर्मी चलनेवाला है—" वह बोला—"मुझे तो किसी ऐसे जगह की तलाश है, जहाँ बरसात में मेंढकों की टर्राहट से ज्यादा इसे महत्व न दे सकूँ।"

"काश, मैं भी ऐसा कर सकती—" जो बोली। उसने अपना हाथ राइस के हाथ में दे दिया। हाथ में हाथ डाले, उसे झुलाते हुए वे धीरे-धीरे चलते रहे। "कौन-सी बात ऐसी महत्वपूर्ण थी, जो कल रात तक नहीं रुक सकती थी?" जो ने पूछा।

"हम!" वह बड़ी आत्मीयता से बोला—"बस हम!"

जो ने इस पर हँसने की कोशिश की; पर वह हँस न सकी। किसी सिसकी के समान ही, यह उसके गले में फँसकर रह गयी। "तुम काफी लम्बे अर्से से इंतजार कर रहे थे—" वह बोली—"अचानक आज रात ही क्यों?"

राइस चलते-चलते सड़क पर रुक गया और उसने जो को घुमाकर अपने बाहुपाश में ले लिया। वह मुक्त भाव से अनायास ही, उसकी बाँहों के घेरे में चली आयी और राइस ने उसे चूम लिया। जो ने उसका नाम लिया और राइस ने फिर उसे चूम लिया। "जो-जो" कहते हुए उसने कई बार उसे चूमा। उसने अपना हाथ उसके जबड़े पर रख दिया था और उसकी चमड़ी की कोमलता और चिकनाहट का आनंद ले रहा था।

"क्योंकि अब मैं अपना मालिक स्वयं हूँ—" वह बोला—"मैं अपना पैसा आप कमा रहा हूँ। मैं अब पापा के लिए काम नहीं कर रहा हूँ।"

जो उससे दूर हट आयी; लेकिन उसके हाथ जो के शरीर पर, उसके नितम्ब की हड्डियों पर ही टिके रहे। अपनी पतली कमीज के भीतर से राइस उन हाथों की उष्णता अनुभव कर रहा था। "तुम इन दो हफ्तों में बदल गये हो—" वह बोली—"बात क्या है?"

राइस हँस पड़ा। "निश्चय ही—" वह बोला—"पहले मैं लड़का था। किंतु अब मैं पुरुष हूँ। पापा इसे मानते हैं कि मैं अब वयस्क हूँ और उन्होंने मेरा जो हिस्सा निकलता था, मुझे दे दिया है। मैंने जो काम किया है, उसका पैसा वे मेरे हाथ में दे रहे हैं और यह मेरा पैसा है—जैसे चाहूँ, खर्च कर सकता हूँ।" वह रुका और जो के चेहरे की ओर देखते हुए बोला—"मैंने तुमसे इसके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, जो; क्योंकि यह इतनी दूर की चीज थी कि इसके बारे में बातें करने से कोई लाभ नहीं था। किंतु काफी समय से मेरे दिमाग में एक विचार है कि मैं अपने जीवन में क्या करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे पास हॅल्स्टीन गायें हों और अगल-बगल के शहरों में मैं दूध बाँटा करूँ। मेरे दिमाग में यह विचार..."

"किंतु तुमने कभी इसके बारे में बात भी नहीं की—" जो ने स्वयं को आहत अनुभव करते हुए कहा—"तुमने कभी एक शब्द नहीं कहा—"

"क्योंकि मुझे इसकी तनिक भी उम्मीद नहीं थी—" वह रुखाई से बोला—"क्योंकि मैं एक बच्चा ही था और मेरी जेब में वही पैसे थे, जो मेरे पिता मुझे अपनी मर्जी से उचित समझ कर दे देते थे। मैं अपने रहने और खाने के लिए काम करता था और क्योंकि वे मेरे पिता हैं—किंतु अब बात ऐसी नहीं हैं। अब मैं स्वयं के लिए काम कर रहा हूँ और मेरे प्रति दिन के श्रम के बदले में मुझे पैसे मिलते हैं—पैसे, जिनसे मैं जो चाहे, कर सकता हूँ।"

"यह जगह उनकी है—" जो बोली—"बिना उनकी अनुमति के तुम उनकी चरागाह में गायें नहीं रख सकते।"

"किंतु उन्होंने कहा। उन्होंने मुझसे कहा!" राइस ने एक गहरी साँस ली और जो की बाहें कस कर पकड़ लीं। "पिछले हेमंत से लेकर मैंने जितना पैसा अर्जित किया है, वे मुझे दे देने वाले हैं। और तब मैं अगले शनिवार को जाकर अपनी पहली गाय खरीदने वाला हूँ—" उसने उत्साह और आनन्द के साथ उसकी ओर देखा—"हो सकता है कि एक ही गाय मिले; क्योंकि मैं सबसे बढ़िया गाय खरीदने वाला हूँ। गाय रजिस्टर्ड होल्स्टीन ही होगी और सम्भव है, इसके लिए मुझे काफी पैसे खर्च करने पड़ें—इतने पैसे, जितने

में दो या तीन साधारण गायें आ सकती हैं। किंतु काम आरम्भ करने का यही तरीका है और यही उसे आगे बढ़ाने का तरीका है।"

जो ने अपने हाथों से उसके चेहरे का स्पर्श किया—"तुम्हें खुश देखकर मैं प्रसन्न हूँ, राइस! मैंने इसके पहले तुम्हें कभी खुश नहीं देखा है।"

राइस उसकी ओर देखकर मुस्कराया और उसे उसने अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया। "हम लोग कुछ खास घूम नहीं रहे हैं—" उसने उसे खिझाते हुए कहा। स्वयं को वह आश्वस्त अनुभव कर रहा था—"चलो, कुछ देर तक घूमें हम।"

वे चलते गये। एक दूसरे की बाँह पकड़े वे साथ-साथ कदम मिलाकर चल रहे थे और ऐसा करना आसान भी था, यद्यपि राइस जो की तुलना में कहीं अधिक लम्बा था। उन्होंने फिर से इस सम्बन्ध में बातें कीं। राइस ने एक बार फिर सारी बातें दुहरायीं और जो ने उसी तरह उनके जवाब दिये और जब उनकी बातचीत समाप्त हो गयी, तो वे एक-दूसरे के बहुत निकट आ गये। उनके बीच की दूरी समाप्त हो गयी थी। उनकी बातचीत फिर बन्द हो गयी और वे मौन चलते रहे। पहले जो ही मौन हो गयी और नीची नजरें कर जमीन की ओर गौर से देखती हुई चलती रही। वृक्षों के साये से होकर वे गुजरते चले जा रहे थे। बीच-बीच में चाँद उन पेड़ों की ओट से झाँक-कर उन्हें देख लेता था और तब वे उस रूपहली आभा से नहा उठते थे। राइस स्वयं के भीतर एक मादक जकड़न-सी अनुभव कर रहा था और बिना एक शब्द बोले वह जो के साथ सड़क से नीचे उतर पड़ा। जो उसके अधीन चुपचाप चलती रही। वृक्षों के घने झुरमुट में पहुँचकर, जहाँ अंधेरा था और सड़क दिखायी नहीं दे रही थी, वे रुक गये। वे शांत खड़े रात की आवाज सुनते रहे। राइस ने जो को अपने आलिंगन में ले रखा था और उसने उसकी सिहरन महसूस कर ली।

"डर लग रहा है?" उसने बड़ी कोमलता से पूछा और जो के चेहरे की ओर देखा। किंतु अंधेरे के कारण कुछ दिखायी नहीं पड़ा। तब उसने जो के चेहरे को अपने हाथ से छूआ और जो के उष्ण मुलायम होंठों का स्पर्श उसे सिहरा गया।

"हाँ!" वह बोली। वह हँसी; लेकिन उसकी हँसी में कम्पन था—"अगर कोई उल्लू अभी चीखा, तो मैं सिर पर पैर रखकर भागनेवाली हूँ।"

"जो...!" वह बोला। उसके इस पुकारने से उसकी यह चुप्पी भारी हो गयी थी—"जो..."

"मुझे तुम पर गर्व है, राइस—" जो बोली—"मुझे तुम पर गर्व..."

"हुश !" वह बोला—"इस सम्बन्ध में हम काफी बातें कर चुके हैं। अब चुप भी रहो !"

"मैं नहीं कर सकती, राइस—" अचानक ही जो बोली।

राइस स्तम्भित रह गया। "किंतु..." वह बोला—"किंतु तुमने मुझसे कहा..."

जो उसकी बाँहों में सिमटी पड़ी थी और उसका चेहरा उसकी कमीज की आस्तीन में छुपा हुआ था। "मैं जानती हूँ—" वह बोली—"मैं बहुत बड़ी-बड़ी बातें करती थी। मैंने तुमसे अपनी शर्तें कहीं और सारी बातें...किंतु मैं नहीं कर सकती !"

इस इनकार से राइस मन-ही-मन रो उठा और उसकी बाँहों का घेरा कस गया। "तुम्हें करना ही होगा—" वह बोला। वह फिर हाँफने लगा था—सारे समय तुम मुझे विश्वास दिलाती रही..."

"मुझे थोड़ा समय दो—" जो बोली। वह काँप रही थी और जब हँसी, तो लगा, रो देगी। "भगवान जानता है, तुमने बहुत कुछ ले लिया। मुझे थोड़ा अभ्यस्त होने दो..." वह चुप लगा गयी और राइस ने उसके दाँतों को एक-दूसरे से टकराने की आवाज़ सुनी—"मैंने ऐसा कभी नहीं किया है, राइस। मुझे इसके लिए पहले..."

राइस क्रुद्ध भाव से, विक्षुब्ध हो, उसके शरीर पर अपने हाथ फिराता रहा। उसकी उतावली उँगलियों के नीचे जो शांत, किसी प्रतिमा के समान, खड़ी रही और राइस जान गया कि इतना ही पर्याप्त नहीं था। जो के दिमाग में अनासक्ति अपनी जड़ें गहराई से जमाये हुए थीं। राइस ने फिर उसे अपनी बाँहों में ले लिया और उसे अपने साथ जमीन पर घसीट लिया।

"तुम्हें करना ही होगा—" वह फिर बोला। क्रोध से वह उन्मत्त हो रहा था। उसने जो के शरीर पर कपड़े वैसे ही रहने दिये और स्वयं भी कपड़े पहने ही, उसे धरती पर लिटा, उसके ऊपर लेट गया। जो ने प्रतिवाद नहीं किया; सिर्फ उसके शरीर के नीचे निश्चेष्ट लेटी रही। उसकी बाँहें निर्जीव-सी लटक रही थीं। राइस तब उससे दूर हट गया। उसे क्रोध आ रहा था और वह महसूस कर रहा था कि उसे धोखा दिया गया है।

"तुमने वादा किया था—" वह कटुता से बोला—"हमेशा तुम वादा करती रही।"

जो उठकर बैठ गयी और उसकी असावधानी से उसकी कुहनी राइस के चेहरे से छू गयी। राइस समझ गया कि वह अपने बल से सूखे पत्तों को हटा रही थी। उसने अपने बालों को सँवारना बंद कर दिया और बड़ी कोमलता से अपना हाथ राइस के चेहरे पर रखा। उसकी हथेली बर्फ के समान ही सर्द थी।

"मैं करूँगी—" वह बोली—"मैं वादा करती हूँ, मैं करूँगी।"

"किंतु तुम..."

जो बोलती रही। उसे अपने कहने के साथ ही समर्पण करना था—समर्पण का समय बताना था राइस को। "कल—" वह बोली—"मैं वादा करती हूँ तुम से—कल!" उसकी आवाज़ टूट गयी, शब्द काँप-से गये—"मैं आज रात नहीं कर सकती राइस! किंतु कल!" वह रुकी। उसने एक गहरी साँस ली और फिर बड़ी तेजी से बोलने लगी—"मैं घर पर रहूँगी और बाकी सब कोई दिन-भर बाहर रहेंगे। तब आओ। घर पर आओ। और तब..."

वह उससे अलग बैठ गया। "कैसे मानूँ मैं?" वह बोला—"तुमने पहले भी वादा किया और जब हमारे बीच यह समय आया है, तुम इनकार कर रही हो।"

"तब मुझे करना ही पड़ेगा—" वह बोली। उसने अंधेरे में चारों ओर देखा—"मैं इस अंधेरे और इन पेड़ों के बीच यहाँ भय अनुभव कर रही हूँ। कल मुझे डर नहीं लगेगा।"

वह हँसा। "मेरी राह देखना—" वह बोला—"मैं उन खेतों को फाँदता हुआ आऊँगा। तुम मेरी राह देखती रहना।"

और अब वे फिर एक-दूसरे को नहीं छू सकते थे—कल के उस क्षण के पहले तक नहीं! वे साथ-साथ जो के घर की ओर चले और सारे रास्ते दोनों के बीच थोड़ा-सा फासला था। उन्होंने एक-दूसरे के हाथ भी नहीं पकड़े। राइस ने जो के घर के दरवाजे पर मात्र एक मित्र के समान उसका चुम्बन लिया और खुशी खुशी वापस घर की ओर चल पड़ा। सारी रात वह बड़े आराम से सोता रहा। उसे सपने भी नहीं आये।

किसी आवाज़ से उसकी नींद खुल गयी। वह जल्दी ही जाग गया। वह उस आवाज़ के बारे में ताज्जुब कर रहा था और आज के दिन के बारे में सोच रहा था। आज उसके जीवन का जो स्वर्णिम क्षण आनेवाला था, उसकी कल्पना से वह एक मीठी सिहरन अनुभव कर रहा था। तब वह बिस्तरे पर उठकर बैठ

गया और उसी क्षण उसने उस आवाज़ को पहचान लिया। वह बारूद के विस्फोट की आवाज़ थी और दिन निकल गया था—उसके सुख-सौभाग्य का दिन! वह बिस्तरे से कूद पड़ा और एक लबादे-सी पुरानी पोषाक पहन कर, भीतरी बरामदे से दौड़ता हुआ निकल गया। वह सोते में नहाने जा रहा था, जहाँ तैरने की जगह बनी थी। वहाँ पहुँचकर उसने अचानक छलाँग लगा दी। पानी ठंडा और सिहरा देने वाला था। वह काँप-सा गया। साबुन और तौलिया लाना वह भूल गया था और उसने अपनी हथेलियों से, बिना साबुन के ही, रगड़-रगड़ अपना शरीर साफ किया। उसने पानी में ही अपने शरीर पर एक नजर डाली। वह जान रहा था कि आज वह स्वयं को तुष्ट कर लेगा और उसके मन में जीवन का आनंद लहरा रहा था। वह पानी से बाहर निकला, अपनी उस पुरानी पोषाक से अपना बदन पोंछ कर सुखाया और उसे फिर से पहन कर वापस अपने कमरे में आ गया। वहाँ उसने पाजामा पहना और खुले गले की कमीज। फिर वह रसोईघर में पहुँचा। नाश्ता मेज पर रखा था और वह अपनी जगह पर बैठ गया। आर्लिस देगची से उसके नाश्ते का सामान लेकर उसकी तश्तरी में रखने आ रही थी।

मैथ्यू ने उस पर वक्र दृष्टि डाली। "हल चलाते समय तुम्हारे ये सुंदर कपड़े गंदे हो जा सकते हैं—" वह बोला।

राइस ने उसकी ओर मुस्कराते हुए देखा—"आज काम करने का मेरा इरादा नहीं है, महाशय!"

मैथ्यू हँसा—"कल मैंने तुम्हें अपना भागीदार बना दिया और आज तुम मुझे छोड़ दे रहे हो!"

राइस की भौंहें सिकुड़ आयीं। "मैं काम नहीं कर सकता, पापा!" वह बोला—"मुझे कुछ...मुझे कुछ काम करना है। किंतु मैं कल आपके साथ खेत में रहूँगा और उसके बाद हर रोज! बस आज ही की बात है..."

मैथ्यू ने उसे हाथ के इशारे से रोक दिया। "मेरा अंदाज है कि तुम्हारे बिना भी मैं काम चला सकता हूँ—" वह बोला—"तुम अपने काम पर जाओ।" वह मुस्कराया—"और उसका पूरा उपयोग करो। जिस तरह से तुम सजे धजे हो, लगता है तुम्हारी प्रेयसी वापस आ गयी है।"

राइस हँसा। "मेरे खयाल से, आपको इससे कुछ लेना-देना नहीं है, महाशय!" वह बोला और अपनी इस पुरुषोचित धृष्टता से मन-ही-मन प्रसन्नता अनुभव कर रहा था।

मैथ्यू ने अपनी तश्तरी पीछे सरका दी। "देखो, मैं स्वयं भी काम-काज वाला आदमी हूँ।" वह बोला। मेज के निकट से वह उठ खड़ा हुआ और तब वापस मुड़ा—"तुम्हारी जो रकम मेरे पास बाकी है, वह अब मेरे पास है। कल तक मैं इसे अपने पास रखूँ, तो तुम्हें इतराज तो नहीं? अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो आज के दिन कम-से-कम पैसों के मामले में स्वयं पर भरोसा नहीं करता।"

"मुझे उसे अपने पास रखने में प्रसन्नता होगी।" राइस बोला। मैथ्यू की आवाज में जो गहरा मजाक था, उसे काटती हुई उसकी उतावली स्पष्ट हो उठी।

मैथ्यू ने अपना लम्बा पर्स निकाला और उसे खोला। उसने उँगलियाँ भीतर डालकर बिलों (एक प्रकार के नोट) की गड्डियाँ निकालीं और उनमें से कुछ बिल गिनकर आहिस्ते से मेज पर रख दिये। मैथ्यू ने उन्हें फिर उठाया, एक साथ मिलाया और अंत में उसे राइस के हवाले कर दिया। राइस खुली नजरों से यह सब देखता रहा।

"ये रहे तुम्हारे पैसे—" मैथ्यू बोला—"हम सब बराबर हैं अब। कुछ और अधिक पाने के लिए तुम्हें कुछ समय तक और काम करना होगा।"

"हाँ, महाशय!" राइस ने नोटों की ओर एकटक देखते हुए कहा—"सारी जिंदगी में मेरे पास इकट्ठी इतनी रकम कभी नहीं आयी।"

"सारी रकम एक गाय पर नहीं खर्च कर देना—" रसोईघर के दरवाजे से बाहर निकलते हुए मैथ्यू ने कहा।

"लेकिन मेरा इरादा वही है—" राइस ने हँसते हुए कहा—"सही माने में एक बढ़िया गाय—एक रजिस्टर्ड होल्स्टीन!"

उसने जल्दी-जल्दी अपना नाश्ता किया और घर के बाहर चला गया। वह जानता था कि उसे कुछ देर इंतजार करना चाहिए; किंतु वह इंतजार नहीं कर सका। अपने जीवन भर में उसने कभी स्वयं को इतना युवा अनुभव नहीं किया था। किसी चौदह वर्ष के लड़के के समान, लगभग दौड़ता हुआ, वह जल्दी-जल्दी चलने लगा। उन नीची झाड़ियों को तेजी से पार कर वह वहाँ पहुँच गया, जहाँ टी. वी. ए. वालों द्वारा साफ की गयी जमीन होती थी। वह सिर नीचा किये चलने लगा। जो से मिलने की उमंग में वह खोया सशक्त पैरों से चल रहा था और उसके मन में एक वयस्क और एक बच्चे की मिली-जुली भावना हिलोरें मार रही थी।

उस साफ की गयी जमीन के दूसरे किनारे पर, दूर, खड़े लोगों के झुंड को

उसने तब तक नहीं देखा, जब तक उनके चिल्लाने की आवाज उसके कानों में नहीं पड़ी। उन्हें देखकर वह रुक गया और छुटकर एक कटे पेड़ के ठूँठ पर खड़ा हो गया। वहाँ से हाथ हिलाकर उसने उन व्यक्तियों के अभिवादन का मानो जवाब दिया। तब उसने उन लोगों की तीव्र भयमिश्रित चिल्लाहट सुनी और लाल झंडियों को भी देखा। उसके निकट ही कहीं, अचानक ही एक ठूँठ जमीन से उखड़ कर हवा में उछला और फिर दूसरा ठूँठ। इस बार यह ठूँठ पहले की अपेक्षा निकट था और राइस के ऊपर मिट्टी की जैसे वर्षा हो गयी। उसने भौंचक निगाहों से नीचे की ओर देखा और डायनामाइट की बत्तियों से पतला-सा धुआँ निकलता उसे दिखायी दे गया।

उसे पहचानने भर का समय ही राइस को मिला था कि ताजी सुबह की उसकी वह सुहानी दुनिया भहरा कर उस पर गिर पड़ी!

प्रकरण पंद्रह

दिन साफ था और तेज धूप निकली हुई थी। खलिहान में सारे-के-सारे खच्चर घेरे से बँधकर खड़े थे। एक कतार में खड़ा उनका यह झुंड इतना घना था कि लगता था, जैसे वे वहाँ बेचे जाने के लिए खड़े किये गये हों। मकान के बाहरी आँगन में बहुत-सी मोटरें खड़ी थीं। घाटी के प्रवेश द्वार से जो सड़क मकान तक आती थी, उस पर भी मोटरों की कतारें थीं। सब की सब मोटरें पुरानी थीं, उनके फेंडरों पर कीचड़ लगी थी और उनकी छत जीर्ण शीर्ण थी। सिर्फ नाक्स की नयी मोटर इन सबसे भिन्न थी, जो दूसरों के बीच मानों आश्चर्य स्तम्भित खड़ी थी। मकान के पिछवाड़े में बच्चों का झुंड जमा था। वे अपनी रविवारीय पोषाक पहने थे; लेकिन मन-ही-मन बेचैनी अनुभव कर रहे थे; क्योंकि वे जानते थे कि खेलने की मनाही है। कभी-कभी उनके बीच हँसी की रेखा फूट पड़ती अथवा आपस में हाथापाई हो जाती, जो किसी वयस्क व्यक्ति के उधर आ निकलते ही बंद हो जाती। वह वयस्क व्यक्ति उनकी ओर रोष और दुःखभरी नजरों से देखता। लड़कों के इस झुंड के पीछे एक लड़का जमीन पर बैठा था। उसने अपने दोनों पैर आगे की ओर फैलाकर कुछ जगह घेर ली थी, जहाँ वह अपनी दो गोलियों से चोरी-चोरी खेल सके। उसे चारों ओर से घेरकर कुछ लड़के ईर्ष्यालु नजरों से उसका

खेल देख रहे थे। सिर्फ घर के पालतू पशु, आँगन में घूमती मुर्गियाँ, चरागाह में चरती गायें और बछड़े और काम से मुक्त खच्चर ही, इस लादे गये मौत के वातावरण में अपनी स्वाभाविक मुद्रा में थे।

रसोईघर में मिज ऐंसन बहुत व्यस्त थी। वह काफी लोगों का खाना तैयार कर रही थी। सुबह में सबसे पहले, जब कि सिर्फ घर के ही लोग थे और नाश्ता भी नहीं हुआ था, वह वहाँ पहुँच गयी थी। वह पिछले दरवाजे से होकर आयी थी और बिना एक शब्द बोले उसने आर्लिस के हाथ से पतीली ले ली थी और झुककर दूसरे हाथ से अंगीठी की आग कुरेदने लगी थी। तब उसने अंडे और सूअर का माँस ढूँढ़ निकाला था और नाश्ता बनाने लगी थी। लेकिन उसके बार-बार के अनुरोध के बावजूद किसीने ठीक से नहीं खाया था और नाश्ता वैसे-का-वैसा ही रह गया था। तब उसने तश्तरियां धोयीं और बाहर आँगन में मुर्गियां मारने निकल आयी। वह जानती थी कि दिन का खाना खाने का समय होते-होते काफी व्यक्ति आ पहुँचेंगे। मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने का उसका यही तरीका था।

आर्लिस अपने कमरे में बिस्तरे पर पड़ी थी। कल वह तब तक रोती रही थी, जब तक कि उसकी आँखों के आँसू खत्म नहीं हो गये थे। रोते-रोते उसकी आँखें सूख गयी थीं और लाल-लाल दीख रही थीं। पिछली रात वह बिलकुल नहीं सोयी थी और अब वह महसूस कर रही थी कि हर चीज के बावजूद वह रात सो सकती थी; लेकिन मन को यह भावना कचोटती रही थी कि ऐसा करना मृतक के शोक सम्मान के प्रति विश्वासघात होगा और इसी से वह सो नहीं पायी थी। अंततः वह उठकर बिस्तरे के किनारे पर बैठ गयी। वह हैटी के सम्बंध में सोच रही थी। नाश्ते के वक्त जब मिज ऐंसन ने मेज पर हैटी के सामने अंडे रखे थे, तो वह वहाँ से चुपचाप उठ गयी थी और दौड़ती हुई पिछले दरवाजे से बाहर आँगन में भाग गयी थी। आर्लिस ने उसके बाद से उसे फिर नहीं देखा था। वह क्षणभर बिस्तरे पर बैठी अपने नंगे पैरों को देखती रही और तब उसने अपने जूते पहन लिये। वह अपने कमरे से बाहर निकली और किसी बूढ़ी औरत के समान चलती हुई रसोईघर में आयी।

"तुमने मिस हैटी को देखा है क्या?" उसने मिज ऐंसन से पूछा।

उसके अंदर आते कदमों की आहट सुनकर मिज ऐंसन तेजी से घूम पड़ी थी। शोक प्रकट करने के लिए जो औरतें अपने पति और बच्चों के साथ आयी थीं, उनमें से बहुतों ने उसके काम में हाथ बँटाने का आग्रह दिखलाया था;

किंतु उसने उन सबको वहाँ से विदा कर दिया था। वह नहीं चाहती थी कि रसोईघर में वे बातूनी औरतें भीड़ जमा कर उसके काम में खलल डालें। यह उसका क्षेत्र था और वह इसे अपने ही अधिकार में रखना चाहती थी। जब उसने देखा कि भीतर आनेवाली आर्लिस है, तो उसके चेहरे पर थोड़ी कोमलता आ गयी।

"ना, मैंने तो नहीं देखा—" वह बोली—"यहीं कहीं अगल-बगल में ही होगी वह, आर्लिस!" उसने उसके चेहरे की ओर देखा—"तुम्हें चाहिए कि तुम यहाँ बैठकर एक प्याली बढ़िया काफी पी लो। तुम्हें इसकी जरूरत है।"

इस विचार मात्र से अपने भूखे पेट को सिकुड़ते महसूस किया आर्लिस ने। लेकिन उसने सिर हिलाकर इनकार करते हुए कहा—"मुझे हैटी को खोज निकालना है।"

वह पिछले बरामदे में निकल आयी और खलिहान की ओर उसने नजरें दौड़ायीं। वह जानती थी कि पिछवाड़े के आँगन में जमा बच्चों के बीच हैटी नहीं होगी। बच्चे उसके वहाँ आते ही बिलकुल मौन हो गये और वे उसे आँगन से होकर खलिहान की ओर जाते देखते रहे। उनकी आँखों में एक अजीब भाव था। खलिहान में एक खच्चर ने एक मक्खी के काट खाने से पीड़ा के कारण अपनी पूँछ फटकारी और पाँव पटका। दूर चरागाह में एक बछड़ा रँभाया और यद्यपि आर्लिस प्रतिदिन बछड़ों का रँभाना सुनती थी, उसे ऐसा लगा कि बछड़े की आवाज में दुःख और शोक की छाया थी, जो हवा में दूर तक तैरती चली गयी थी। उसने कुटीर का दरवाजा खोलकर भीतर देखा; पर वह खाली थी। उसने दरवाजा बंद कर दिया और दरवाजे में स्वतः ताला लग गया; क्योंकि मौली अपनी नाक भिड़ाकर बंद दरवाजा खोल लेती थी और भीतर रखी मकई खाने लग जाती थी। उसकी इस गैरवाजिब हरकत को रोकने के लिए उन्हें दरवाजे में अच्छा-सा ताला लगाना पड़ा था। खलिहान में रखे पुआल के ढेर से सीढ़ी लगी रही थी और आर्लिस ने सीढ़ी से ऊपर चढ़कर हैटी की तलाश की। वह धीमी आवाज में हैटी का नाम लेकर पुकार भी रही थी; लेकिन पुआल का वह ढेर भी खाली था। वह फिर नीचे उतर आयी और खलिहान में अधीरतापूर्वक खड़ी रही। अब उसे मन-ही-मन हैटी के लिए भय लगने लगा था।

तब उसने अपने भीतर एक प्रसन्नता-सी उभरती अनुभव की और उसने उसे रोक लिया। वह इस विचार से भयभीत हो उठी थी कि आज के दिन

भी उसके मन में ऐसी चपलता जागी। वह जान गयी थी कि हैटी कहाँ छिपी बैठी होगी। वह तेजी से खलिहान के पिछले हिस्से की ओर निकल गयी और घूम कर झाड़ियों के पास पहुँची। वह झाड़ियों के उस ओर पहुँच गयी, जिधर का हिस्सा मकान से दूर पड़ता था, जिससे वहाँ एकत्र लड़के उसकी कार्रवाइयों के प्रति बहुत जिज्ञासु न हो उठें। वहाँ वह रुकी और घनी, कड़ी तथा गोलाकार फैली हुई झाड़ियों को हटाकर रास्ता बनाती हुई भीतर घुसी। कुछ दूर के बाद, भीतर घुसने के लिए उसे झुककर अपने हाथों और घुटनों के बल किसी पशु के समान चलना पड़ा और वह धीरे धीरे खिसकती हुई झाड़ी के दुर्गम केंद्र-स्थान की ओर बढ़ी। वह हैटी को वहाँ देख रही थी; लेकिन उसने उसे पुकारा नहीं।

प्रस्तर की तरह निश्चल बैठी हैटी आर्लिस को रेंग-रेंग कर अपनी ओर आते देखती रही। उसका चेहरा गंदा था और उस पर आँसुओं की लकीरें बन आयी थीं। झुरमुट के उस सुरक्षित स्थल तक पहुँचने में उसने अपनी धुली पोशाक भी गंदी कर ली थी। नाश्ते के समय से लेकर ही सारी सुबह वह यहीं थी। यहीं बैठी-बैठी वह मोटरों और लोगों के आने की आवाज़ सुनती रही थी। आने वाले व्यक्ति आँगन में खड़े हो किस प्रकार सहानुभूति प्रकट करने की औपचारिकता बरत रहे थे, यह भी उसने सुना था। वह जानती थी कि बहुत-से लोग आये हुए थे—इतने अधिक लोग कि वह उनके सामने कभी जा नहीं सकती थी; क्योंकि वे उसे घूर-घूर कर देखेंगे और यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि वह वास्तव में, कितनी दुखी थी। आये हुए लोग जब तक वापस नहीं चले जायें, उसका इरादा यहाँ से बाहर निकलने का नहीं था।

उसके निकट तक पहुँचकर आर्लिस रुक गयी और वहीं जमीन पर बैठ गयी। वह जगह थोड़ी खुली हुई थी; लेकिन अगल-बगल की झाड़ियाँ उनके कंधों से सटी, दबी पड़ी थीं। हैटी जब पहले सड़कें बनाकर खेला करती थी, तब उसकी सड़कों का केंद्रस्थल यही था और भूरी नसावर की बोतलों की उसकी गाड़ी उस साफ की गयी जमीन के एक किनारे तरतीबी से सजाकर रखी हुई थी।

"अब यहाँ बैठी क्या कर रही हो?" आर्लिस ने मीठी झिड़की के स्वर में कहा—"मैं तुम्हारी तलाश में सारी जगह छान आयी हूँ।"

हैटी मूक बैठी रही। बिना पलक झपकाये वह आर्लिस के चेहरे की ओर देखती रह गयी। जवाब में उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। दूसरे लोग, आर्लिस और नाक्स—यहाँ तक कि मैथ्यू भी—अपने दुःख पर उसकी

अपेक्षा बड़ी खूबी से काबू पाये हुए प्रतीत हो रहे थे। वे साधारण दिनों के समान ही आज भी आने वाले व्यक्तियों के बीच चलते-फिरते थे, बातें करते थे और अपना-अपना काम कर रहे थे; किंतु उसके पास अपने दुःख को ढँकने का वह कवच नहीं था। वह दुनिया को अपना मुख नहीं दिखा सकती थी। वह अपने उस देवस्थान में छुपकर रह-भर सकती थी, जब तक कि आनेवाले लोग इस व्यक्तिगत दुःख को देखने-सुनने और तौलने-मापने के बाद वापस नहीं चले जाते।

"जरा अपनी ओर तो देखो—" आर्लिस ने कहा—"तुम्हें अपना चेहरा देखना चाहिए था। और आज सुबह जो साफ-धुली पोशाक मैंने तुम्हें पहनायी थी, उसकी क्या हालत बना रखी है!"

"मैं परवाह नहीं करती!" हैटी बोली—"मैं परवाह नहीं करती!" और उसने आर्लिस की ओर से अपना चेहरा घुमा लिया।

आर्लिस खिसक कर उसकी बगल में आ गयी और उसने उसे अपनी बाँह के घेरे में ले लिया। वह अब पहले से अच्छा महसूस कर रही थी, स्वयं को सशक्त और दुःखद दिन को झेल सकने के योग्य अनुभव कर रही थी; क्योंकि वह जान गयी थी कि उसे हैटी की देख-भाल करनी थी और उसे इसके लिए अपने दिल को मजबूत बनाना होगा।

किंतु हैटी अपनी बड़ी बहन की इस शक्ति के सम्मुख समर्पण नहीं कर सकी। "सब-के-सब बड़े मजबूत हैं दिल के—" उसने उग्र भाव से सोचा—वे हमेशा की तरह ही अपने सब काम कर सकते हैं और दुःख को अंतर में छुपाये, दुनिया के सामने अपने चेहरों पर शांति और स्थिरता का आवरण डाले रख सकते हैं। किंतु वह अपने और उनके बीच का अंतर भी जानती थी। उन्होंने उसके समान पूरी दुर्घटना नहीं देखी थी। वे सिर्फ मौत की बाबत जानते थे, मौत कैसे हुई, यह नहीं; क्योंकि कल उसने नाश्ते की मेज पर से ही कौतूहलवश राइस का पीछा किया था। जिस उपयुक्त और सरलता से प्रसन्नमन वह चला जा रहा था, उसे देख हैटी को ताज्जुब हुआ था। उसने राइस को कभी इतना प्रसन्न नहीं देखा था और वह जानता चाहती थी कि वह कहाँ जा रहा था और क्या करने का इरादा था उसका।

वह राइस के बिलकुल पीछे-पीछे थी और उसने किसी बछेड़े के समान कूँदते-फाँदते राइस को पहाड़ी से होकर जाते देखा था। किंतु राइस के चलने में किसी तीर के समान सीधा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की तीव्रता

भी थी और उसका साथ बनाये रखने के लिए हैटी को दौड़ना पड़ा था। सम्भवतः पिछले साल की गरमी के मौसम के उस दिन के समान ही यह भी था, जब उसने हैटी को अंगूर की बेल के निकट भौंचक छोड़ दिया था और स्वयं उसकी दृष्टि से कुछ देर के लिए ओझल होकर फिर घाटी की ओर दौड़ता हुआ वापस आता दिखायी दिया था। इस बार किसी भी तरह वह उसका साथ नहीं छोड़ने वाली थी।

वह पहाड़ी के शीर्ष पर ठीक समय पर ही पहुँची और उसने राइस को टी. वी. ए. द्वारा साफ की गयी जमीन से होकर लगभग दौड़ते हुए देखा। उसने दूर खड़े लोगों को राइस की ओर हाथ हिलाते और राइस को प्रसन्नता-पूर्वक उछलकर एक पेड़ की टूँठ पर खड़े हो वापस व्यक्तियों की ओर हाथ हिलाते भी देखा। वह तो उसके इस प्रातः-उन्माद पर हँसने भी लगी थी। और तब—तब उसने डायनामाइट (बारूद) का पहला विस्फोट देखा था। राइस उस वक्त अपने पैरों के नीचे देख रहा था, उसकी पीठ बिलकुल तन गयी थी और सीधे खड़े होकर उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया था। तब विस्फोट ने उसे कँपा दिया और वह भय-विस्फारित नेत्रों से देखती रही। उसकी आँखों के सामने ही राइस का शरीर किसी कपड़े की गुड़िया के समान हवा में ऊपर की ओर उछला। कुछ देर तक वह इस पर विश्वास ही नहीं कर सकी—वहाँ से हिलने-डुलने में भी वह स्वयं को असमर्थ पा रही थी। उसने राइस को नीचे जमीन पर जोरों से गिरते भी देखा। साफ की गयी जमीन के दूसरे किनारे से उसने लोगों के झुंड के झुंड को अपनी ओर दौड़कर आते देखा, यद्यपि ढलान की ओर अभी और बारूदों का विस्फोट जारी था और वह राइस के पास जाना चाहती थी। किंतु वह जा न सकी। झाड़ी की उस सुरक्षा से वह स्वयं को बलपूर्वक उस खुली जगह में नहीं ला सकी, जहाँ मौत मँडरा रही थी। वह जानती थी कि उसे राइस के पास जाना चाहिए, उसका सिर उठा कर अपनी गोद में रखना चाहिए और उसकी पीड़ा कम करने की चेष्टा करनी चाहिए।

किंतु वह भय-विजड़ित हो गयी। चिल्लाने के लिए उसने मुँह खोला; पर वह चिल्ला न सकी। सिर्फ उसके मुँह से एक-हल्की-सी कराह निकली, जो मनुष्य से अधिक किसी जानवर की तरह थी। भय से उसके दिमाग में अंधेरा छा गया था और वह वहाँ से घूम कर नीचे घाटी की ओर बेतहाशा भागने लगी। वह बड़ी तेजी से दौड़ रही थी, उसकी साँस फूलती जा रही थी और दौड़ते-दौड़ते

पसली में दर्द होने लगा था और अंततः जब वह खेत में मैथ्यू के पास पहुँची, उसकी साँस जैसे खत्म हो गयी थी। वह बुरी तरह हाँफ रही थी।

मैथ्यू ने जिस क्षण उसे आते देखा, वह जान गया कि कोई दुर्घटना घटी है। उन्माद-जनित इस निराशा के साथ वह पहले कभी ऐसे भागती हुई नहीं आयी थी और मैथ्यू ने बीच में हल चलाना बंद कर दिया और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ उसकी ओर लपका। अंधों के समान दौड़ती चले जाने से उसे रोकने के लिए उसने उसकी बाँह पकड़ ली।

"क्या बात है ?" वह बोला—"हैटी, क्या..."

"राइस !" वह बोली। उसने सोचा था कि उसके फेंफड़ों से साँस बिलकुल निकल चुकी थी; पर अभी भी कुछ साँस बाकी थी—काफी बाकी थी—"राइस !"

"कहाँ ?" मैथ्यू ने उसे झकझोरते हुए पूछा और उसकी पकड़ सरल हो गयी।

जिस रास्ते हैटी आयी थी, उसने वापस उसी ओर उँगली से संकेत किया। वह अपनी साँस घुटती महसूस कर रही थी। उसकी आँखों के सामने राइस की चिल्लाहट और किसी कपड़े की गुड़िया के समान हवा में उड़ता उसका शरीर नाच रहा था।

"वहाँ !" वह बोली—"बारूद। वह..."

मैथ्यू उसे छोड़कर भागा। ठीक से धरती पर पाँव पड़ने के पहले ही वह दौड़ने लगा था। तब वह रुका और झटके से घूम कर खेत में हल के पास आया। जल्दी से लगाम खोलकर खच्चर को हल से अलग किया, 'गेयर' को एक ओर फेंक दिया और खच्चर के गले में नंगी पट्टी झूलती रह गयी। फिर वह उस पर सवार हो गया और लगाम की लम्बी रस्सी से उसने खच्चर को जोरों से मारा। घबड़ा कर भौंचक खच्चर बेतहाशा भागा। दौड़ते हुए अपने खुरों से अपने पीछे वह धूल के बड़े-बड़े गुब्बार छोड़ता जा रहा था।

हैटी, बेवकूफ के समान खड़ी, मैथ्यू को उसे छोड़कर जाते देखती रही। वह उस खेत में बिलकुल अकेली खड़ी रह गयी थी और उसके दिमाग में अंधेरा-सा छा रहा था। मकई के खेत के बीच में वह लेट गयी और कुछ ही देर पहले उसने जो नाश्ता किया था, उसे उसने वमन कर दिया। ऐसा लगता था, जैसे सदियों पूर्व उसने नाश्ता किया था। लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि उसेउल्टी जो हुई, वह मौत के उस दृश्य को देखने से हुई थी अथवा इस तरह दौड़ कर आने के कारण !

दूसरे लोगों में से किसी के साथ यह बात नहीं थी। उसके मन पर राइस के मरने और उसके मर जाने—दोनों का बोझ था और यह अकेले वही ढो रही थी। बाकी दूसरे लोग सिर्फ राइस की मौत का ही बोझ ढो रहे थे और शोक और शव के अंतिम-संस्कार की प्रथा में उनकी और हैटी की मनःस्थिति में यही अंतर था।

इस निश्चय पर पहुँचने के बाद वह अब कुछ राहत-सी अनुभव कर रही थी और उसके कंधों पर पड़ी आर्लिस की बाँह से निश्चय ही, उसे आराम मिल रहा था। वह अपनी बहन के शरीर पर झुक गयी और बोली—"मैं वहाँ बाहर नहीं जा सकती, आर्लिस! बस, मैं नहीं जा सकती!"

"क्या तुम उसे दफनाये जाने नहीं देखना चाहती हो?" आर्लिस ने कोमल स्वर में कहा—"तुम्हें आना होगा और उसे देखना होगा..."

हैटी ने उग्र रूप से इनकार में सिर हिलाया। "नहीं!" वह बोली—"नहीं!"

आर्लिस उससे अलग हट कर बैठ गयी और उसके चेहरे की ओर देखने लगी। "अच्छी बात है—" वह शांतिपूर्वक बोली—"तुम्हें ऐसा नहीं करना होगा!" उसने खड़ा होने की कोशिश की; किंतु नीचे की ओर झुकी शाखाओं ने उसे रोक दिया। वह झुकी रही। "अब मुझे वापस जाना होगा—" वह बोली और इस बार सीधा आँगन की ओर चल पड़ी। शाखाएँ उसके बालों से उलझ-उलझ कर उसे अस्तव्यस्त कर दे रही थीं। चलते-चलते वह रुकी और मुड़कर उसने हैटी की ओर देखा। "किंतु पापा को तुम्हारी जरूरत पड़ने वाली है—" वह बोली—"उन्हें हम सबकी जरूरत पड़नेवाली है।"

इन शब्दों को सुनकर हैटी की मुखमुद्रा कठोर हो गयी और वह तब तक मौन प्रतीक्षा करती रही, जब तक आर्लिस वहाँ से चली नहीं गयी। किंतु आर्लिस के कहे गये वे शब्द उसके साथ ही, उस के दिमाग में बने रहे और आर्लिस के पीछे भी वह उनसे छुटकारा नहीं पा सकी। तो अभी तक वह इससे मुक्त नहीं हो पायी थी। वह इसे अपने मन से सम्पूर्ण रूप से बाहर नहीं निकाल सकी और वह इसे सहन भी नहीं कर पा रही थी; क्योंकि अकेले उसके मन का ही दुःख नहीं था यह। नाक्स, आर्लिस और सबसे अधिक मैथ्यू का दुःख था यह, जो उसे मकई की कतार के मध्य में अकेली अस्वस्थ और भयभीत पड़ी छोड़कर भाग गया था। बेतहाशा दौड़ने अथवा भय के कारण उसे वमन हो गया था। उस साफ, खुले और तेज धूप निकले दिन का अपना हिस्सा उसे भी ढोना था। वह दिन उसके मन पर एक बोझ था, उन

सबके मन पर बोझ था! अंततः बिलकुल उद्यत भाव से, वह उठ खड़ी हुई। "अच्छी बात है—" उसने सोचा—"अच्छी बात है!"

वह झुरमुट से बाहर निकल आयी। वह सोच रही थी कि उसे अपना चेहरा धोना पड़ेगा और अपनी पोशाक बदलनी होगी। वह सीधी आँगन से होकर गुजरी और वहाँ जमा लड़के मौन साधकर उसे घूरते रहे। एक लड़का जमीन पर बैठा था; उसके पैर आगे को फैले थे और वह गोली खेल रहा था। हैटी ने गोली के आपस में टकराने की आवाज़ सुनी। वह चलते-चलते रुक गयी और उस लड़के की ओर तब तक देखती रही, जब तक कि लड़के ने उसकी ओर लज्जित भाव से देखकर अपना खेल रोक नहीं दिया। हैटी के दिमाग में बड़ी स्थिरता से वे शब्द मौजूद थे, जिन्हें वह अधिकृत स्वर में कहनेवाली थी—"तुम अपनी गोलियाँ अभी, इसी वक्त अपनी जेब में रख लो!" लेकिन उसके कहने की जरूरत नहीं पड़ी। लड़के का धूल धूसरित हाथ बिना देखे उन गोलियों तक पहुँचा और उसने उन्हें जेब में रख लिया। वह हैटी की ओर देखते हुए यह कर रहा था। संतुष्ट होकर, हैटी घर में मुँह धोने और कपड़े बदलने चली गयी।

नाक्स अपनी नयी गाड़ी में ड्राइविंग सीट (मोटर-चालक की जगह) पर बैठा था और उसके हाथ ड्राइविंग व्हील पर पड़े थे। अपने बचपन में जब वह मोटर-चालक बना करता था, उसी तरह उसके हाथ उस चिकनी ह्वील पर चारों ओर फिसल रहे थे। एक व्यक्ति आदरपूर्वक उसकी ओर आया और उसने मोटर की खिड़की से भीतर की ओर झाँका।

"तुम्हारे डैडी ने मुझे तुमसे पूछने के लिए कहा है—", वह बोला—"क्या तुम कोई ऐसा तरीका बता सकते हो, जिससे जेसे जान को इसकी सूचना दी जा सके? तुम जानते हो, वह कहाँ है?"

नाक्स ने धीरे से अपना सिर घुमाकर उसकी ओर देखा। जब से वह यहाँ पहुँचा था, तीसरी बार उससे यह सवाल पूछा जा रहा था। हर बार उसके पास एक नया आदमी पहुँचता और बड़ी सावधानी से नपे-तुले शब्दों में यही सवाल करता। और वह जानता था कि मैथ्यू की ओर से यह सवाल नहीं आया था; क्योंकि यहाँ आने के तुरत बाद ही, उसने मैथ्यू से इस सम्बन्ध में बातें कर ली थी—शांत और लगभग बिलकुल व्यावसायिक लहजों में उन्होंने इस पर विचार-विमर्श किया था।

"नहीं!" वह बोला—"मैं नहीं जानता, वह कहाँ है। मैं यह भी नहीं जानता कि हम कैसे उसके पास इसकी सूचना भेज सकते हैं।"

वह व्यक्ति उसे अकेला छोड़कर चला गया। नाक्स जानता था कि लोग उसके बारे में चिंतित थे—उसके परिवार के लोग, मैथ्यू और आर्लिस नहीं, बल्कि उसके रिश्तेदार, उसके चाचा और उसकी चाची और उसके पड़ोसी! क्योंकि वह थोड़ी देर के लिए ही मैथ्यू से बातें करने घर के भीतर गया था। वह भीतरी बरामदे में खड़ा रहा था, जहाँ मैथ्यू स्वयं बाहर निकल कर उससे बातें करने आया था और तब वह अपनी मोटर में वापस आ गया था। रात के अंधेरे से लेकर सुबह होने तक, सवेरे से लेकर अब तक, वह मौन अकेला स्टीयरिंग ह्वील पर हाथ रखे बैठा था। उसने अपनी कुहनी पर दूसरी छाया पड़ती महसूस की और उसने अपना सिर नहीं घुमाया। इस बार उसके चाचा की आवाज़ उसे सुनायी दी—जान चाचा की, जो कि विधवा से शादी कर, उसके और उसके बच्चों के साथ, दूर, अपने खलिहान में रहता था।

"नाक्स!" जान चाचा ने कहा—"क्या तुम उसे देखना नहीं चाहते, नाक्स? मैं तुम्हारे साथ भीतर चला चलूँगा।"

"नहीं!" नाक्स ने कहा। यह अकेला शब्द ही बिलकुल शांत और विस्फोटक था।

वे इसे नहीं समझ पा रहे थे। वे इसे कभी नहीं समझ सकेंगे। वे अपनी जिंदगी भर इसे कहेंगे, इस सम्बंध में बातें करेंगे कि किस प्रकार नाक्स डनबार ने अपने भाई के मृत शरीर को, दफनाये जाने के पहले एक नजर देखने से भी इनकार कर दिया था। वे कभी नहीं समझेंगे; किंतु उसे इसकी चिंता नहीं थी। मृत्यु की विभीषिका में सोये राइस को वह नहीं देखने वाला था। कितने भी व्यक्ति उसके पास क्यों न आयें, अपनी सहायता, अपना सहारा देना क्यों न चाहें, कोई बात नहीं—वह इनकार कर देगा। उसका चाचा जान निराश होकर वहाँ से चला गया और नाक्स अपनी नयी मोटर में बैठा रहा, जिसकी कीमत उसे शीघ्र ही चुकानी थी। आश्रय के लिए यह सर्वोत्तम जगह थी; क्योंकि पूरी घाटी में यही उसके सबसे अधिक निकट की वस्तु थी। यह उसकी अपनी चीज थी और यहाँ वह सुरक्षित था। वह मोटर में तब तक बैठा रहेगा, जब तक कब्रगाह तक जाने का समय नहीं आ जाता और तब अंततः वह फिर इस ड्राइविंग-सीट पर आकर बैठ जायेगा और यहाँ से चला जायेगा। एक यही रास्ता था, जिससे वह इस मनहूस दिन को सह सकता था।

मोटर की दूसरी ओर का दरवाजा खुला और हैटी उसकी बगल की सीट पर आ बैठी। वह इतने दबे पाँवों आयी थी कि उसके आने का आभास भी नाक्स को

नहीं हुआ था। उसने नीली रंग की पोशाक पहन रखी थी, जिस पर तुरत ही इस्तरी की गयी थी और स्टार्च की हल्की-सी चमक अभी भी दिखायी दे रही थी। वह उसकी बगल की सीट पर गम्भीर भाव से बैठी रही। उसके हाथ उसकी गोद में थे और वह खिड़की के शीशे से बाहर देख रही थी।

कुछ देर के बाद बोली—"तुमने उसे देखा, नाक्स?"

नाक्स ने सिर हिलाकर इनकार जताया। उसने अपनी कमीज की जेब से एक सिगरेट निकली और उसे बड़े ढंग से जलाया। फिर दियासलाई की तीली मोटर की खिड़की से बाहर फेंक दी।

हैटी सिहर उठी—"मैंने भी नहीं देखा है। वे लोग मुझे बराबर कहते आ रहे हैं कि मुझे उसे जाकर जरूर देख लेना चाहिए।"

"मैं नहीं जानता, लोग इसे इतना आवश्यक क्यों मानते हैं?" नाक्स कटुतापूर्वक बोला—"कौन अपने मृत भाई को देखना चाहता है।"

हैटी ने उसकी बाँह पर, कोहनी के ऊपर, अपना एक हाथ रख दिया, जैसे वह ठंडी हवा से अपना बचाव कर रही थी। "मैं देखना चाहती हूँ—" वह गम्भीरतापूर्वक बोली—"लेकिन मैं ऐसा कर नहीं सकती।" उसने नाक्स की ओर देखने के लिए अपना सिर घुमाया—"मैंने उसे देखा था नाक्स! मैंने उसे मरते देखा था!"

नाक्स स्तम्भित रह गया, जैसे यह किसी अपराध की—गुनाह की—स्वीकारोक्ति थी। उसने मोटर में बैठे-बैठे ही घूम कर देखा, उसकी ओर देखता रहा और तब उसकी कठोरता कुछ कम हो गयी।

"मैंने उसका पीछा किया था; क्योंकि मैं जानता चाहती थी कि वह इतना खुश क्यों था—" हैटी बोली—"वह उछलता-कूदता उस पहाड़ी पर चढ़ा और टी. वी. ए. वालों द्वारा साफ की गयी जमीन से होकर दौड़ पड़ा। टी. वी. ए. के आदमियों की ओर हाथ हिलाता हुआ वह कूद कर एक ठूँठ पर चढ़ गया। और तब......" वह काँप गयी और उसने अपने हाथों में अपना मुँह छिपा लिया—"मैंने इसे देखा, नाक्स! मैंने एक-एक चीज देखी!"

नाक्स ने अपना बड़ा-चौड़ा हाथ उसके कंधे पर रख दिया। "इस सम्बंध में बातें मत करो।" वह बोला—"बातें करने से कोई लाभ नहीं है।"

"मैं इस सम्बंध में कल्पना करने से स्वयं को नहीं रोक सकती—" वह उदास स्वर में बोली—"मेरे दिमाग में रह-रह कर सारा दृश्य घूमता है—

किस तरह वह हवा में ऊपर की ओर उछला और जमीन पर गिरते समय उसने किन नज़रों से देखा और कैसे वह जमीन पर पड़ा था, मानो वह कभी जीवित था ही नहीं—कभी उसने प्रसन्नता देखी ही नहीं थी!"

"तो जब लोग चाहते हैं कि तुम उसे जाकर फिर देखो—" नाक्स बोला। उसने सिर घुमाया और आँगन में जमा भीड़ की ओर देखा। वह उनसे नफरत कर रहा था।

हैटी के गले में कुछ जैसे अटक गया था। उसने सप्रयत्न उसे निगलने की चेष्टा की। "मैं सोचती हूँ, अगर मैं देख लेती, तो अच्छा होता—" वह बोली—अगर उसके मृत चेहरे पर अशांति के चिन्ह के बजाय मुझे शांति छायी दिखायी पड़ गयी, तो शायद मैं वह भयावह कल्पना करना बंद कर दे सकूँ। लेकिन हर बार जब मैं वहाँ के लिए चलती हूँ, मैं..."

नाक्स ने मोटर का अपनी ओर का दरवाजा खोला। "आओ—" वह बोला—"मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा। आओ!"

हैटी खिसक कर ड्राइवर की सीट पर आ गयी और जब उसने नाक्स का हाथ पकड़ा, नाक्स उसके शरीर की कम्पन महसूस कर रहा था। लोग उन दोनों की ओर देख रहे थे। उन्होंने अचानक अपनी बातचीत बंद कर दी थी और बिलकुल शांत खड़े थे। लेकिन यह कोई खास बात नहीं थी। नाक्स दृढ़तापूर्वक बरामदे तक पहुँचा और फिर भीतरी बरामदे में चला आया। हैटी उसके साथ आ रही थी। रहनेवाले कमरे के दरवाजे के पीछे हैटी ठमक गयी और नाक्स रुक गया। वह उसकी प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि हैटी के हाथ की कँपकँपाहट बंद नहीं हो गयी और तब वे साथ-साथ अंदर गये। अपनी अचेतनावस्था में ही वे दबे पाँव बड़ी सावधानी से ताबूत तक पहुँचे, जैसे वे उस सोये हुए व्यक्ति की नींद कहीं न तोड़ दें और अगल-बगल खड़े हो वे राइस के मृत चेहरे की ओर देखने लगे।

ताबूत बिलकुल सादे भूरे रंग का था और उस पुराने मकान के लिए बहुत नया नज़र आ रहा था। ताबूत में उसकी ठुड्डी तक ढका था और सिर्फ उसका चेहरा ही दिखायी दे रहा था। उसने बिना टाई के एक सफेद कमीज पहन रखी थी, सूट पर पहना जानेवाला कोट पहन लिया था और उसके जबड़े के नीचे एक सफेद कपड़ा बँधा था। चेहरा पीला, सर्द और भूरापन लिये था तथा उस पर मौत की छाप थी। किंतु उसे देखने से नहीं लगता था कि उसकी मृत्यु किसी दुर्घटना में अशांतिपूर्ण ढंग से हुई थी—सिवा इसके कि उसके

ललाट पर नीलारुण रंग के एक घाव का निशान था। किंतु उस बंद ताबूत ने उसके शरीर के बाकी हिस्से को ढक रखा था, उसका भी एक कारण था।

मृत्यु की उस मौजूदगी में हैटी और नाक्स शांतिपूर्वक खड़े अपने भाई की ओर देखते रहे। राइस में अब यौवन का कोई चिह्न शेष नहीं था, बल्कि एक मुर्दनी छायी हुई थी, मानो यह बिलकुल असंभव था कि कल वह जीवित था, युवा था और प्रसन्न था। उन दोनों ने उसकी ओर देखा। पहले उन्होंने उसे पहचान की नजर से देखा और तब उनके भीतर से पहचान की वह भावना चली गयी और वे शान्त निर्विकार नजरों से उसे देखते रहे। मृत्यु की उस यथार्थता को जैसे निश्चित रूप से वे विदाई दे रहे थे। नाक्स के पास, जब वह काम पर था और जब राइस की मौत की खबर उसके पास पहुँची थी, तब से लगातार वह अपने मन से संघर्ष करता आ रहा था। उसका मन इसे स्वीकार करने को तैयार ही नहीं होता था; लेकिन अब अस्वीकार की गुंजाइश नहीं थी। यथार्थ अब सम्मुख था और अटल-अचल था। उसे अब इसकी सत्यता स्वीकार करनी ही थी—यह विश्वास कर ही लेना था कि सच ही, राइस की मौत हो गयी थी। हैटी के मन में कुछ इस प्रकार की भावना काम कर रही थी। वह धीरे-धीरे अपने मन से कल और कल के उस दृश्य की याद मिटा देना चाहती थी और वह जानती थी कि यही एक रास्ता था, जिसके जरिये वह राइस की स्मृति उत्सव-त्यौहारों और हँसी-खुशी के मौकों को लेकर याद रख सकेगी—जीवन से अचानक उसकी उस अशांतिपूर्ण तात्कालिक मृत्यु—प्रसन्नता से अचानक शून्य—की याद वह तभी भुला पायेगी।

उसने आँखें उठाकर नाक्स की ओर देखा। "अच्छी बात है।" वह बोली—"क्या तुम देख चुके ?"

"हाँ।" नाक्स बोला—"तुम अब बाहर जाओ। मैं कुछ देर पापा के साथ बैठूँगा।"

हैटी बाहर चली गयी। नाक्स कमरे की उस ओर बढ़ा और मैथ्यू की बगल की एक कुर्सी पर बैठ गया। उसकी पीठ दीवार की ओर थी। उन दोनों के बीच कहने लायक कुछ भी नहीं था; लेकिन नाक्स जानता था कि उसकी मौजूदगी से मैथ्यू को संतोष मिलेगा।

जब वह आया, मैथ्यू ने उसकी ओर देखकर सिर हिलाते हुए सहमति व्यक्त की। वह खुश था कि आखिर नाक्स ने घर के भीतर आना स्वीकार कर लिया था। लोगों ने आकर उससे कहा था कि किस प्रकार नाक्स ने अपने मृत

भाई को एक नजर देखने से भी इनकार कर दिया था। उन्होंने उसके लिए गहरी चिंता और बेचैनी व्यक्त की थी। किंतु मैथ्यू नाक्स की मनःस्थिति समझ गया था। वह जानता था कि इस आघात को सहने में नाक्स को कुछ समय लगेगा। अतः नाक्स के लिए चिंतित होने का कोई कारण ही नहीं था। अपने बूढ़े पिता की उस ओर अंगीठी की धीमी जलती आग के सामने, वह बैठा था। नाक्स, अपने बूढ़े पिता और दस फुट के भीतर ही ताबूत में लेटे, सुख की नींद सोये अपने बेटे की मौजूदगी के बावजूद वह कमरे में जैसे अकेला था। जब वे राइस को शहर से वापस लाये थे, तभी वह यहाँ आ गया था और उस वक्त से यहीं बैठा था। लम्बी रात-भर वह शव के पास बैठने वाले कुछ और लोगों के साथ बैठा अपने मृत बेटे की ओर देखता रहा था, उसका बूढ़ा पिता अपने बिस्तरे पर खर्राटे ले रहा था और बाकी लोग भी आराम करने के लिए वहाँ से चले गये थे। उसकी आँखें सूखी-सूखी थीं, भावनाएँ मर चुकी थीं; क्योंकि उसके उस मृत बेटे के लिए उसकी आँखों में पर्याप्त आँसू नहीं थे। वह बिना कोई ध्यान दिये नये लोगों के आने पर उनके पैरों की आहट सुनता रहा, जो राइस को देखने आते, फिर उत्सुकतावश राइस के मृत चेहरे पर से आँखे घुमाकर उसकी ओर देखते और तब वापस मुड़ जाते। अगर वे उसके पास आकर सहानुभूतिपूर्वक हाथ मिलाते और सांत्वना के कुछ सोचे सोचाये शब्द कहते, तब वह भी उन्हीं के समान सावधानीपूर्वक थोड़े-से शब्दों में जवाब दे देता और तब इसकी प्रतीक्षा करने लगता था कि वे चले जायें और उसे फिर अकेला छोड़ दें।

आरामकुर्सी पर बैठे अपने बूढ़े पिता की ओर वह कभी-कभी देख लेता था। उसके बूढे पिता को कमरे में मृत्यु की मौजूदगी की खबर थी; क्योंकि एक बार से अधिक उसने ताबूत में लेटे शरीर की ओर देखने का श्रम किया था। किंतु मैथ्यू को इस का विश्वास नहीं था कि किसकी मौत हुई है, यह उसका बूढा बाप जानता था। वह अपने बूढ़े पिता को परेशानी में नहीं डालना चाहता था और उसने इस बात की कोशिश की थी कि उस दिन के लिए वह उसे अपने शयनागार में ले जाये। किंतु उसके बूढ़े पिता ने जाने से इनकार कर दिया था। अपनी आरामकुर्सी और अपनी अंगीठी से वह दृढ़तापूर्वक चिपक गया था और अंततः इस कदर नाराज हो गया था कि मैथ्यू ने अपना इरादा ही छोड़ दिया था।

जान कमरे में आया। "मैथ्यू!" उसने धीरे से कहा—"मैंने अभी टी:

वी. ए. के प्रधान कार्यालय में जेसे जान के बारे में दरियाफ्त किया था। उनका कहना है कि जहाँ तक उन्हें ज्ञात है, जेसे जान इस टी. वी. ए. प्रणाली में कहीं काम नहीं कर रहा है।"

मैथ्यू ने इस पर गौर किया। धीरे-धीरे अपना सिर घुमाते हुए उसने इसके बारे में सोचा। "धन्यवाद, जान!" वह बोला–"मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ।"

जान मृदुतापूर्वक ठमकते हुए बोला—"क्या तुम अभी प्रतीक्षा करते रहना चाहते हो? मेरा मतलब है, कल तक। अथवा तुम..."

मैथ्यू ने फिर इस सम्बंध में सोचा। वह किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहा था। जेसे जान की अनुपस्थिति की बात उसे राइस की मृत्यु से भी ज्यादा ज्यादती की बात लग रही थी। यह बात उचित नहीं प्रतीत हो रही थी कि वे उसे अपने सगे भाई के अंतिम संस्कार में आने के लिए समय पर सूचना नहीं दे पा रहे थे।

"नहीं—" उसने बेलाग कहा—"नहीं, अब हम ज्यादा इंतजार नहीं करेंगे।" यही एक मात्र सम्भावित निर्णय था और वह खुश था कि अंततः यह निर्णय हो गया। मकान में मृतक को अधिक देर तक रखे रहने से कोई लाभ नहीं होनेवाला था। वह नहीं चाहता था कि लाश इसी तरह कल तक पड़ी रहे और आनेवाले लोगों की भीड़ बढ़ती जाये। वह चाहता था कि आये हुए लोग जल्दी से घाटी से चले जायें और जिस तरह घाटी को रहना चाहिए, वह उन लोगों से मुक्त और साफ बनी रहे और अंतिम संस्कार की उम्मीद में इस अंतहीन प्रतीक्षा के बजाय उसके हाथ फिर खेत में हलों पर हों! पुराने जमाने में लोग तीन दिनों तक मृतक को नहीं दफनाते थे—किसी आवश्यकतावश नहीं, बल्कि इच्छा से और उसे अपने बचपन के दिनों की वह अनंत प्रतीक्षा स्मरण थी। अंततः जब लोगों के मन में मृतक के लिए शोक शेष नहीं रह जाता था, बल्कि उनके मन में यह उतावली आ जाती थी कि कैसे अंतिम संस्कार जल्दी समाप्त हो और वे अपनी-अपनी सामान्य-स्वाभाविक जिंदगी के ढर्रे पर वापस जायें, तब शव दफनाया जाता था। उनकी अपनी पत्नी मृत्यु के दिन ही दफना दी गयी थी और अब उसने इतनी प्रतीक्षा सिर्फ जेसे जान के लिए की थी।

"नहीं!" वह निर्णय की दृढ़तापूर्ण वाणी में बोला—"हम लोग आज तीसरे पहर ही इसे दफनायेंगे।" उसने अपना सिर उठाया और जान की

ओर देखा। "तुम धर्मोपदेशक से बात कर लो—" वह बोला—"तुम और मार्क मिलकर सब जरूरी इंतजाम निपटा लो!"

"निश्चय ही—" जान ने जल्दी से कहा—"तुम इसके बारे में तनिक चिंता न करो। मार्क और मैं, दोनों मिलकर हर चीज की व्यवस्था कर लेंगे।"

जान कमरा छोड़कर जाने लगा और फिर रुक गया। मार्क दरवाजे से भीतर आ रहा था और जान यह सुनने के लिए रुका रहा कि मार्क को क्या कहना है।

"मैथ्यू!" मार्क ने कहा—"एक आदमी तुमसे मिलना चाहता है। वह टी. वी. ए. की ओर से आया है।"

मैथ्यू के शरीर में हलचल हुई। "क्रैफोर्ड?" उसने पूछा।

"नहीं!" मार्क ने कहा—"उसने मुझसे कहा कि वह उस बारूद-विभाग में काम करनेवाले कर्मचारियों का फोरमैन है। वह तुमसे बातें करना चाहता है।"

"अच्छी बात है!" मैथ्यू बोला—"उससे कह दो, मैं यहाँ हूँ।" उसने अपना सिर हिलाया—"क्रैफोर्ड को भी आना चाहिए था। मैं जानता हूँ, आर्लिस चाहती होगी कि वह आ जाये।"

जान दरवाजे पर ठिठक गया—"तुम चाहते हो कि मैं बुलाने के लिए आदमी भेजूँ?"

मैथ्यू ने फिर सिर हिलाया इनकार में—"नहीं! अगर वह नहीं आना चाहता है, तो......"

टी. वी. ए. की ओर से आया वह आदमी लम्बा-तगड़ा और चौड़े कंधों वाला था। उसने साफ खाकी पोशाक पहन रखी थी। उसके जूतों पर जल्दी-जल्दी में पालिश की गयी थी, सो कई स्थानों पर की पालिश अभी भी मटमैली थी और उसके जूतों के अगले हिस्से आँगन की धूल की हल्की परत के नीचे काफी चमक रहे थे।

वह मैथ्यू के सामने खड़ा हो गया। उसने अपनी बिल्लेदार टोपी पहले एक हाथ में ली और तब दूसरे हाथ में। "मि. डनबार!" वह बोला—"इस दुर्घटना को रोकने के लिए मैं संसार की कोई भी चीज दे सकता था—कोई भी चीज!"

मैथ्यू ने उसकी ओर आँखे उठायीं। "मैं जानता हूँ—" वह बोला—"मैं जानता हूँ, तुम ऐसा करते।"

उस आदमी ने असहाय भाव से अपने हाथ हिलाये। "उस कार्य को सुरक्षित ढंग से करने के लिए, हम जो कुछ कर सकते हैं, सब करते हैं—"

वह बोला—"मैं दस वर्षों से बारूद-विस्फोट का काम करता आ रहा हूँ और मेरी जिंदगी में इसके पहले किसी आदमी की मौत नहीं हुई। हम लाल झंडियाँ लगा देते हैं। और जहाँ बारूद बिछायी होती है, उसके इर्द-गिर्द अपने आदमी खड़े कर देते हैं। बारूद में पलीता लगाने के पहले हम खतरे की सीटी भी बजाते हैं। लेकिन...ऐसा लगा, जैसे वह शून्य से आ टपका। उधर होकर दौड़ता हुआ और फिर ठूँठ पर कूद कर चढ़ने के बाद हम लोगों की ओर देखकर हाथ हिलाता हुआ......अगर वह उस ठूँठ पर नहीं चढ़ा होता, तो सम्भवतः उसकी मृत्यु भी नहीं हुई होती।" वह रुक गया। आगे कुछ कहने में वह स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहा था और मैथ्यू को उसकी आँखों में आँसू देखकर आश्चर्य हुआ। वह आदमी रो रहा था, जबकि स्वयं उसने एक कतरा भी आँसू नहीं बहाया था।

मैथ्यू उठ खड़ा हुआ। "यह तुम्हारा दोष नहीं है–" वह बोला—"यह मत सोचना कि मैं तुम्हें दोष दे रहा हूँ। यह भी मत सोचना कि मैं टी. वी. ए. को दोषी ठहरा रहा हूँ। बस, यह दुर्घटना हो गयी, जिस तरह उसकी मौत होनी थी, हो गयी। कल सुबह जहाँ वह जा रहा था, वहाँ जाने से मैं भी उसे नहीं रोक सकता था। वह सुबह में बिस्तरे से उठा और दिन में मृत्यु उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। और कोई भी व्यक्ति इस सम्बंध में कुछ नहीं कर सकता था।"

"मैं बस, आपसे कहना चाहता था—" उस व्यक्ति ने दयनीय भाव से कहा—"मैं वहाँ खड़ा रहा और उसे देखता रहा कि..." वह रुक गया। उसने घबराहट में अपना सिर हिलाया; क्योंकि वह अपने व्यवसाय में निपुण था, उसे अपने व्यवसाय पर गर्व था और पहले कभी उसके हाथों किसी आदमी की मौत नहीं हुई थी।

वह तेजी से घूमा और वहाँ से चला गया। वह ताबूत में लिटाये शव की ओर देख नहीं पा रहा था। मैथ्यू पीछे से उसे एकटक देखता रहा। तनिक-सा क्रोध अभी बड़ी सहायता पहुँचायेगा। किंतु उसके मन में क्रोध था ही नहीं—बिलकुल ही क्रोध नहीं था। राइस ने छलाँग मार कर अपनी जीवन की मंजिल पूरी कर ली थी और उसकी मौत के लिए किसी पर लांछन नहीं लगाया जा सकता था। मैथ्यू अचानक रसोईघर में चला आया। अंगीठी के निकट से घूम कर मिज ऐंसन ने उसकी ओर देखा।

"मुझे एक कप काफी की जरूरत है, मिज ऐंसन!" वह बोला। उसकी आवाज थकी हुई थी।

सुबह में तीन बार वह उसके लिए काफी लेकर आयी थी और तीनों बार उसने इनकार कर दिया था। उसने काफी का बरतन उठा लिया और मेज के नजदीक चली गयी।

"तुम यहाँ बैठ जाओ—" वह बोली।

वह धप से बैठ गया और काफी पीने लगा। काफी गर्म थी और अच्छी लग रही थी। उसने प्याले को वापस तश्तरी में रख दिया। "मैं इस सम्बंध में कुछ सोच ही नहीं पा रहा हूँ, मिज ऐंसन!" वह बोला—"इसका कोई कारण ही नहीं है। अगर वह बिस्तरे पर बीमार बनकर लेटा होता...मेरे बूढ़े पिता के समान बूढ़ा हो गया होता..." उसने सिर उठाकर मिज ऐंसन की ओर देखा—"पिछले पाँच वर्षों से मैं अपने बूढ़े बाप की मृत्यु के लिए स्वयं को तैयार किये हूँ। उसे अपने से बिछुड़ते देखना मुझे बिलकुल नापसंद है; किंतु यह उसकी तरह..."

मिज ऐंसन ने अपना स्थूल हाथ उसके कंधे पर रख दिया। "इसके समझने का कोई रास्ता नहीं है—" वह दृढ़तापूर्वक बोली—"दो चीजें ऐसी हैं, मैथ्यू, जो तुम नहीं समझ सकते और वे हैं, जीवन और मरण। तुम उनके बारे में सोच भी नहीं सकते, वर्ना तुम स्वयं को पागल बना लोगे।"

इस बार वसंत के मौसम में, मैथ्यू पहली बार खेत में अकेला हल चला रहा था; क्योंकि राइस अपने निजी काम पर गया था। उसने हैटी को खेतों से होकर बेतहाशा अपनी ओर भागते देखा था और सुबह के उस वक्त एक निर्दय हाथ ने जैसे उसका दिल जकड़ लिया था और वह हैटी से मिलने के लिए स्वयं दौड़ पड़ा था। वह उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया था और उसे झकझोर-झकझोर कर उसने उसके भयभीत उन्माद से सत्य की जानकारी ली थी। और जब उछलकर खच्चर पर सवार हो उसने उसे बेतहाशा पहाड़ के शीर्ष की ओर दौड़ाया था...!

जिस क्षण उसने लोगों के झुंड को देखा, वह जान गया कि राइस कि मृत्यु हो चुकी है। खच्चर अभी पूरी तेजी से दौड़ ही रहा था कि वह उतर पड़ा। खच्चर ने अपना सिर ऊपर की ओर झटका और भड़क कर भाग खड़ा हुआ। कुछ ही मिनटों पहले सिर्फ, वह खेत में हल खींच रहा था और फिर अचानक की दौड़ तथा चाबुक की मार से वह भयभीत हो उठा था। मैथ्यू राइस की ओर दौड़ा और उसकी बगल में धूल में बैठ गया। बुरी तरह क्षत-विक्षत होकर पड़े अपने बेटे के स्पंदनहीन शरीर को अविश्वास से निहारता

रहा और तब उसने वहाँ खड़े लोगों के खाली और पीले पड़ गये चेहरों की ओर आँखें उठाकर देखा था।

"कैसे हुआ यह?" वह बोला।

एक आदमी ने खाँस कर मुँह घुमा लिया और दूसरे व्यक्ति ने जवाब देने की कोशिश की। तब तीसरे ने कहा—"बारूद का विस्फोट जब जारी था, वह दौड़कर यहाँ आ गया। विस्फोट की चपेट में वह आ गया। वह सीधा..."

मैथ्यू ने घुटनों के बल बैठकर उस रक्तरंजित चेहरे की ओर देखा। राइस का जबड़ा लटक आया था और ऊपरी मसूड़े के सामने के तीन दाँत बाहर निकल आये दिखायी दे रहे थे। जमीन पर खून छितराया हुआ था, जो अब तक जमीन में मिल गया था और वहाँ उसकी नमी बाकी रह गयी थी। राइस का शरीर मांसविहीन नजर आ रहा था, जैसे किसी ने कोई बोरा फेंक दिया हो वहाँ। मैथ्यू ने उसका स्पर्श किया, उसे पलटा। वह उसकी बाँहों को मोड़कर ठीक ढंग से एक दूसरे पर रख देना चाहता था। वह महसूस कर रहा था कि उसके शरीर को उसी ढंग से कर देना जरूरी था, जिस ढंग में, मरने के बाद सामान्यतः लोगों के शरीर रहते हैं। किन्तु राइस की एक ही बाँह बच गयी थी। दूसरी बाँह कोहनी तक ही रह गयी थी—एक ठूँठ-सा रह गया था और उसकी चमड़ियों से निकली उजली हड्डियों में रुधिर लगा हुआ था।

"नीचे खलिहान में जाओ—" वह बोला—"अस्तबलों में से किसी एक का एक दरवाजा निकल कर ले आओ यहाँ!"

वह यह नहीं जानता था कि वह उन्हें आदेश दे रहा था और तुरत ही उन आदेशों का पालन भी हो गया। वे लोग बड़ी जल्दी जीर्ण-शीर्ण दरावजे के एक पल्ले को लेकर वापस आ गये। उसके कब्जे अभी भी एक ओर झूल रहे थे और उन लोगों के साथ ही आर्लिस और मार्क आये। दुःख और उन्माद से आर्लिस के बाल बिखरे थे और चेहरे पर पागलपन का भाव था।

"उसे घर वापस ले जाओ—" मैथ्यू ने तीव्रस्वर में मार्क से कहा—"उसे नहीं देखने दो......"

वह खड़ा हो गया और आर्लिस के भय-विस्फारित नेत्रों से उसने राइस के मृत शरीर को अपने शरीर से ओट दे दिया। वह मार्क को जैसे आँख मूँद कर आर्लिस को घर ले जाते देखते रहा। .वह फिर घूम पड़ा और उसने देखा कि लोग अब तक राइस के मृत शरीर को उठाकर दरवाजे के उस पल्ले पर रख

भी रहे थे। वह उनकी सहायता करने गया; किंतु उसे देर हो चुकी थी। लोगों ने इसे हलके हाथों से अलग कर दिया। वह सहायता करना चाहता था और उसी ने राइस की टूटी बाँह उठाकर दरवाजे के पल्ले पर रख दी। वह बिल्कुल मौन गूँगे के समान वहाँ घूम रहा था और वह उन लोगों को अपने बेटे के मृत शरीर को ढोकर ले जाते देखता रहा। दुर्घटना-स्थल पर क्षणभर खड़े होकर उसने अपने चारों ओर देखा। जहाँ वह टूँठ थी पहले, वहाँ उस लाल जमीन में एक बड़ा छिद्र बन गया था और जब वह देख रहा था, सतह के बालू की एक हल्की-सी रेखा दस सेकेंडों तक उस छिद्र में जाकर विलीन होती रही। जहाँ राइस का शरीर पड़ा था, वहाँ की जमीन खून की नमी से उभर-सी आयी थी और वहाँ की जमीन तेजी से खून सोख रही थी। तब उसने देखा कि राइस का एक जूता वहाँ पड़ा था। किसी प्रकार वह जूता विस्फोट में उसके पाँव से निकल आया था। मैथ्यू ने उसे उठा लिया। फीते टूट गये थे; लेकिन सफाई और सावधान से लगायी गयी गांठ अभी भी बँधी थी। उसने जूते को अपनी एक बाँह के नीचे दबा लिया और घाटी की ओर चल पड़ा।

मैथ्यू ने अपना सिर हिलाया। "मैं इसे नहीं समझ पा रहा हूँ—" वह मिज ऐंसन से बोला—"मैं कभी नहीं समझूँगा कि यह क्यों हुआ? ऐसा लगता है, जैसे उसे मनुष्य होने का और जिस तरह एक मनुष्य खुश हो सकता है, उस परह खुशी मनाने का अधिकार नहीं था।"

"यों उद्विग्न मत होओ—" मिज ऐंसन ने कहा—"अपनी काफी पीओ। तुम्हें अपनी हिम्मत-अपनी सारी शक्ति, बनाये रखने की जरूरत है।"

"हाँ!" मैथ्यू ने थके और सुस्त स्वर में कहा। उसने प्याला उठाया और काफी पी—"मुझे अपनी सारी शक्ति की जरूरत पड़ेगी और सिर्फ आज के लिए ही नहीं।"

तब उसके दिमाग में यह विचार कौंध गया कि वह टी. वी. ए. के सम्बंध में क्या करने जा रहा था। सीधी और साधारण-सी बात थी, सारे समय उसके सामने ही थी यह और इसे ढूँढ़ निकालने में इस क्षण तक का समय लग गया था। वह यह करेगा और वे उसका स्पर्श नहीं कर सकेंगे। डनब्रार-घाटी बच जायेगी। उसके दिमाग में यह योजना बिलकुल स्पष्ट थी और इतने समय तक वह जो जी-तोड़ सोच-विचार करता आया था, उसके इस अंतिम निष्कर्ष पर प्रसन्नता अनुभव करने में वह स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहा था। वह मेज के निकट बैठा काफी पीता रहा और बाहर आंगन में जमा लोगों की भीड़ के

सम्बन्ध में सोचता रहा। उनके बातचीत की भनभनाहट उसे सुनायी दे रही थी और उसे भीड़ की वह आवाज़ कुछ अजीब सी लगी, जब तक उसे यह स्मरण नहीं हो आया कि उस बातचीत में हँसी का सर्वथा अभाव था। निश्चय ही—शव-संस्कार के समय कोई नही हँसता और अगर हँसता भी, तो तुरत ही अपराध और अधर्म की भावना उसके मन में आ जाती और अपनी हँसी दबा लेता। "लोग तभी आयेंगे, जब किसी का जन्म होगा, किसी की मौत होगी अथवा कोई बीमार होगा—" मैथ्यू ने सोचा—"वे दूसरे मौकों पर सहायता करने क्यों नहीं आते, जब उनकी सहायता काम आ सकती है? वे एक-एक कर के अपनी जमीन बेचने और वहाँ से अन्यत्र चले जाने के बजाय, मेरे साथ मिलकर टी. वी. ए. का मुकाबला क्यों नहीं करते?" लेकिन यह विचार उचित नहीं था और उसने इसे अपने दिमाग से बाहर निकाल दिया। वे लोग अच्छे थे, जो भी भलाई का काम होता था, वे करते थे और अपने ऊपर बुराई को हावी नहीं होने देते थे। आर्लिस रसोईघर में आयी और मैथ्यू के पास ही बैठ गयी।

"क्रैफोर्ड आया क्या?" मैथ्यू ने उसकी ओर देखते हुए पूछा।

आर्लिस ने जवाब नहीं दिया, सिर्फ इनकार में सिर हिला दिया। सुबह से ही उसकी एक झलक के लिए वह भूखी थी। उसे क्रैफोर्ड की उपस्थिति और सांत्वना की जरूरत थी और जब भी कोई मोटर घाटी के भीतर आती, वह उतावली हो, उधर देखने लगती। किंतु वह नहीं आया था और उसकी अनुपस्थिति से आर्लिस को पीड़ा अनुभव हो रही थी।

हैटी कमरे में हिचकिचाती हुई आयी और जब उसने देख लिया कि अपने परिवार के लोग ही बैठे हैं, तब वह भी आकर बैठ गयी। रहने वाले कमरे से नाक्स मैथ्यू की तलाश करता आया और तब मार्क और वे सब मेज के इर्द-गिर्द बैठ गये। मिज ऐंसन उनके लिए प्यालों में काफी ले आयी। अंगीठी और मेज के बीच वह बड़े दबे पाँवों से आ जा रही थी, जिससे उन्हें उसकी उपस्थिति अनुभव न हो। मैथ्यू ने मेज के चारों ओर बैठे लोगों की ओर देखा। अपने परिवार को अपने इतने निकट पा वह तनिक आराम महसूस कर रहा था।

"काश, जेसे जान यहाँ होता—" वह बोला—"और कौनी!"

उसके ये शब्द सन्नाटे में खो गये और मैथ्यू ने उनकी ओर देखा। वे सब बड़े हो गये थे, उनका अपना अलग-अलग व्यक्तित्व था—मिस हैटी का

भी—और उसके साथ ही इस शोक और शव-संस्कार के समय वे इकट्ठे थे—एक परिवार के थे, एक दूसरे के साथ थे। यह अच्छी बात थी कि अंततः वे सब एक साथ हो गये थे और प्रत्येक अपने-अपने हिस्से का दुःख ढोता आया था।

"हम लोग आज तीसरे पहर उसे दफ़न करेंगे—" वह बोला—"धर्मोपदेशक यहीं, रहनेवाले कमरे में, उसकी आत्मा की शांति के लिए दो शब्द कहेगा और तब हमें उसे पहाड़ी पर वहाँ ले जायेंगे, जहाँ और लोग विश्राम कर रहे हैं और हम उसे वहीं दफ़ना देंगे। अगले सप्ताह मैं कभी उसके लिए पत्थर की एक सिल्ली ढूँढ निकालूँगा और उसकी क़ब्र पर लगा दूँगा।"

आलिस ने अपना सिर झुका लिया। "मैं इसे याद करने से स्वयं को नहीं रोक पाती हूँ कि, सुबह में जब वह यहाँ से रवाना हुआ था, तो उसने कैसी नज़रों से देखा था—" वह टूटी आवाज में बोली—"अगर मैं ९० वर्षों तक ज़िंदा रही, तो भी मैं इसे भूल नहीं पाऊँगी, जिस तरह वह दरवाजे से बाहर निकला..."

चुप हो रहो अब!" मैथ्यू बोला—"हुश! अभी शव संस्कार बाकी ही है। हुश!"

वृत्त पूरा हो गया और वे सब घेरा बनाकर बैठे रहे। वे उस समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब शव-संस्कार की प्रक्रिया आरम्भ होगी। बाहर जमा लोगों की, जो उनके ग़म में हिस्सा बँटाने आये थे, वे आवाज़ सुन रहे थे और रहनेवाले कमरे में अंतिम संस्कार की होनेवाली तैयारियों की आहट भी उन्हें सुनायी दे रही थी। उनमें से कोई भी नहीं हिला, जब तक कि चाचा जान ने दरवाजे से सिर भीतर कर कहा—"वे अब तैयार हैं, मैथ्यू!"

मैथ्यू उठ खड़ा हुआ। "वह लड़की कहाँ है?" वह बोला—"राइस की प्रेयसी! उसे हम लोगों के साथ होना चाहिए था।"

जान ने इनकार में अपना सिर हिलाया—"उसके पिता ने मुझसे कहा कि वह नहीं आ सकती। उन लोगों को डाक्टर बुलाना पड़ा था और उस लड़की को शांत करने के लिए उसे नशीली दवा देनी पड़ी। वह किसी भी तरह नहीं..."

मैथ्यू ने सहमतिसूचक सिर हिलाया। कल वह उस लड़की के पास जायेगा, उसके बिस्तरे के नजदीक बैठेगा और उसका हाथ पकड़कर उसे सांत्वना देगा, जो उसके पास ही नहीं था। कल उसे यह करना ही होगा।

उसने दूसरे लोगों की ओर देखा। वह उनमें से प्रत्येक को क्षणभर के लिए अपने हाथों से स्पर्श करना चाहता था, मानो इस स्पर्श से उनके लिए अंतिम संस्कार का दुःख कम हो जायेगा और उनके हिस्से का दुःख भी बँटकर उसके पास आ जायेगा।

"समय आ गया, बच्चो!" वह बोला।

वे उठ खड़े हुए और वह उन्हें रहनेवाले कमरे में ले गया, जहाँ अचानक नीरवता छा गयी थी। कमरे के मध्य में सिर्फ कुर्सियाँ रखी थीं, जो परिवार के उपस्थित लोगों के लिए पर्याप्त थीं। कुर्सियों के चारों ओर जो खाली जगह छूट गयी थी, उसे घेर कर दीवार से सटकर और लोग खड़े थे। कमरा गर्म था और लोगों की वजह से भरा-भरा लगता था। छोटे-छोटे बच्चे भीतरी बरामदे में ही रह गये थे और खुले दरवाजे से भीतर की ओर झाँक रहे थे। लोगों के पैर बदलने और कपड़ों की सरसराहट की आवाज लगातार सुनायी दे रही थी। किसी घबड़ाये हुए व्यक्ति के खाँसने की आवाज़ भी सुनाई दे जाती थी। कुर्सियों की दोहरी कतार में मैथ्यू के बूढ़े पिता को भी उसकी आरामकुर्सी-सहित खिसका दिया गया था और मैथ्यू उसकी बगल में बैठ गया। बाकी लोगों ने भी लोगों की घूरती आखों के नीचे चुपचाप मैथ्यू का अनुकरण किया। अभी तक खुले ताबूत के पीछे धर्मोपदेशक खड़ा था। वह इंतजार करता रहा, जब तक कि परिवार के लोग बैठे नहीं गये, प्रतीक्षा का कोलाहल नीरव नहीं हो गया। उसकी प्रभावपूर्ण आँखों के नीचे कमरे में शांति, गर्मी और गम्भीरता छायी थी। उसने अपनी बाँहें उठायीं और कहा—"नम्बर चार-सौ-चौंतीस", मानो उसके हर हाथ में एक प्रार्थना पुस्तक थी और तब वह गाने लगा।

गाने की आवाज जोरदार और साथ ही साथ नीरव थी। "क्या हम नदी में एकत्र होंगे?" लोगों की आवाज पहले खरैरी थी और परिचित पंक्तियों पर तेज हो जाती थी। जब गाना समाप्त हो गया, धर्मोपदेशक ने अपना सिर झुकाया और कहा—"अब हम प्रार्थना करें।"

फिर वहाँ शांति छा गयी और उस अवधि में मैथ्यू शून्य-मस्तिष्क बैठा अपने जूते की ओर निहारता रहा। भीड़ में कहीं किसी औरत की ठंडी साँस लेने की आवाज़ आयी और दूसरी औरत के सिसकने की; लेकिन उससे शांति में व्याघात नहीं पहुँचा। धर्मोपदेशक ने अपना सिर उठाया और बाकी लोगों ने भी अपने झुके-झुके सिर उठा लिये। वे धर्मोपदेशक की ओर देख रहे थे।

धर्मोपदेशक ने अपने हाथों में अपनी बाइबिल उठा ली। नीचे से एक हाथ फैलाकर उसने उसे पकड़े रखा और दूसरा हाथ खुले पृष्ठों में उलझ गया। "आज हम अपनी प्रार्थना जाब चौदह, अध्याय सात से पढ़ेंगे—'अगर कोई पेड़ काट दिया जाये, तो भी एक उम्मीद रहती है कि वह फिर पनपेगा और इसकी कोमल शाखाएँ फिर फूटेंगी। यद्यपि जड़ पुरानी हो धरती में धुल-मिल जाती है और पेड़ इसीसे सूख जाता है; फिर भी जल से सींचने से यह पनपेगा और इसकी शाखाएँ फूटेंगी।" आगे कुछ कहने के पहले धर्मोपदेशक क्षणभर को रुका—"यद्यपि इस युवा आदमी का शरीर हमारे सामने मौत की गोद में पड़ा है, निश्चय ही, इसकी आत्मा स्वर्ग में स्वर्ण और रजत की पत्तियाँ अंकुरित कर रही है।"

उसने वहाँ एकत्र भीड़ की ओर अपने दोनों हाथ हिलाये—"मेरे बच्चो, वृद्धावस्था में मृत्यु की गोद में आराम पाना आसान है। लेकिन जब कोई युवा मरता है...जब कोई युवा मरता है, ओ भगवान्! हमारे हृदय उस मौत पर खून के आँसू बहाते हैं और परमात्मा के प्रति कटुतापूर्ण विरोध प्रदर्शित करते हैं; क्योंकि वृद्ध के लिए मृत्यु भाग्य है और युवक के लिए दुर्घटना।"

मैथ्यू अपने चारों ओर की आवाजें सुनता रहा। धर्मोपदेशक के शब्द जीवन, मृत्यु और अनंतता के पुराने सुख का ताना-बाना नये तरीकों से बुन रहे थे और उसने आर्लिस को अपना सिर झुका लेते देखा। आर्लिस के चेहरे पर आँसू थे और सिसकियों के कारण उसका शरीर काँप उठता था। हैटी भी उसका हाथ पकड़े रो रही थी और मैथ्यू के बूढ़े पिता के चेहरे पर मौन आँसू ढुलक रहे थे। लोग भीगे शब्दों में फुसफुसा कर अपना दुःख प्रकट करने का प्रयास कर रहे थे। किंतु मैथ्यू की आँखों में आँसू नहीं थे। वह अभी तक रोया नहीं था। उसे अपनी आँखें सूखी, कठोर और गर्म लग रही थीं। वह अपनी कुर्सी पर सीधा तनकर बैठा था और जिस काट-छाँट का उसने सूट पहन रखा था, उसके लिए उसके चौड़े और श्रम-साध्य कंधे अनभ्यस्त थे। धर्मोपदेशक कहता गया, कहता गया और तब उसने कहना समाप्त किया और गाना फिर आरम्भ हुआ—"इस विदाई के बाद, हम लोग मधुर-मिलन-वेला में उस सुंदर तट पर मिलेंगे..." और फिर एक भद्दा-सा विलय व्याप्त हो गया, जब तक मैथ्यू उठ खड़ा नहीं हुआ। वह जान गया था कि समय आ गया है।

मैथ्यू उठ कर खड़ा हो गया और परिवार के सभी लोग उसके पीछे खड़े हो गये। वह आगे-आगे चलता हुआ, उन्हें अपने साथ ले चला। वह ताबूत

के सामने गया और उसने मिट्टी की उस मूरत को देखा, जो उसका बेटा था और इस अंतिम बार देखने में भी उसने कुछ अनुभव नहीं किया। उसने बिलकुल ही कुछ अनुभव नहीं किया। वह वापस अपनी कुर्सी पर आ गया और आर्लिस ने यह विधि अकेले पूरी की। दीवार से सटकर खड़ी औरतों ने रोकर उसके दुःख में हिस्सा बँटाया और कमरे में उनके सम्मिलित रुदन की आवाज़ गूँज उठी। नाबस और हैटी, एक-दूसरे का हाथ पकड़े साथ-साथ वहाँ तक गये, तब चाचा मार्क, चाचा जान और उनके सगे तथा सौतेले बच्चों की बारी आयी और फिर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय चचेरे-ममेरे भाइयों का नम्बर आया। कमरे में लंबी-सी कतार बन गयी और रह-रह कर रोने की आवाज़ सुनायी दे जाती थी। जूतों के घिसटने की आवाज़ और खाँसने तथा नाक झिड़कने की आवाज़ भी सुनायी दे जाती थी। वहाँ एकत्र सभी लोग एक कतार में धीरे-धीरे उस ताबूत के सामने से होकर गुज़र गये।

तब यह विधि समाप्त हो गयी और जवान आदमी आगे आये। वे उस ताबूत को उठाकर गाड़ी में रखने वाले थे। मैथ्यू ने मिज ऐंसन से अपने बूढ़े पिता के पास ठहरने को कहा; क्योंकि कब्रिस्तान तक के लम्बे रास्ते के लिए वह बहुत कमजोर था और फिर वह लोगों के पीछे-पीछे बाहर चला आया। मैथ्यू बाहर बरामदे में आकर खड़ा हो गया और युवकों को ताबूत को गाड़ी में चढ़ाते देखता रहा। सूरज की रोशनी और ताजी हवा उसे बड़ी भली और सुखद लग रही थी। काले खच्चरों का एक जोड़ा, जिसे मैथ्यू नहीं पहचानता था, आँगन में खड़ी उस गाड़ी को खींच ले चला। चलने से उनके खुरों से धूल उड़ने लगी और उसी धूल में पीछे-पीछे भीड़ भी चल पड़ी। चरागाह से होते हुए वे ऊपर कब्रगाह की ओर जा रहे थे। परिवार के सभी लोग साथ साथ चलते रहे।

जो व्यक्ति आगे-आगे गये थे, उन्होंने चरागाह के ऊपरी घेरे के दो खम्भों को निकालकर उन जीर्ण तारों से होकर कब्रिस्तान तक का रास्ता तैयार कर लिया था। मैथ्यू ने सोचा, अब निश्चय ही, इस ग्रीष्म काल तक उसे नये और मजबूत तार यहाँ बांध देने चाहिए—जब वह गाइस की कब्र पर रखने के लिए स्मारक-प्रस्तर लायेगा, तब इसे भी ठीक कर लेगा।

अब तक काफी देर लग गयी थी; लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी था। मैथ्यू इस सारी प्रक्रिया में इस प्रकार भाग लेता रहा, जैसे खेत में हल चला रहा हो। वह उस युवा धर्मोपदेशक के शब्दों को सुनता रहा। वह नयी

खुदी कब्र के सामने खड़ा था; किंतु उसने उसकी गहराइयों की ओर नहीं देखा। देवदार का एक बक्स कब्र में डाला जा चुका था और जिसने भी—सम्भवतः जान ने—ताबूत खरीदा था, उसे कब्र में नीचे उतारने के लिए किराये पर चौड़े तस्मों का इंतज़ाम किया था। ताबूत उठाये हुए युवा व्यक्ति पीछे खड़े थे और बोझ के नीचे वे झुके हुए थे। थोड़े-से फूलों के गुच्छे भी वहाँ पड़े थे। तब ताबूत उस बक्स में नीचे उतारा गया और एक युवक नीचे जाकर लकड़ी का ढक्कन बंद कर स्क्रू कसने लगा। वह तेजी से काम कर रहा था और उसके चलने से उसके पैरों की धप-धप आवाज़ सुनायी देती थी।

धर्मोपदेशक ने अपने हाथ ऊपर उठाये और प्रार्थना गायी। कोमल और सुखद आवाज में उसने राइस के लिए, शोक-संतप्त परिवार के लिए और पीड़ित मानव-जाति के लिए प्रार्थना गायी। उसने अपने हाथ नीचे कर लिये और आहिस्ते से दुःखपूर्ण शब्दों में कुछ कहा। तब मैथ्यू ने कब्र में लाल चिकनी मिट्टी का पहला भार डालने के लिए अपने हाथों में फावड़ा लिया। उसने मिट्टी कब्र में डाल दी और घूम पड़ा। उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि सूरज अब आकाश में नीचे उतर आया था और दिन का तीसरा पहर लगभग बीत चला था। बाकी लोगों ने भी मिट्टी डालने का अपना कर्तव्य पूरा किया और तब घूम पड़े। कब्र भरने का असली काम कुछ लोगों के लिए ही बाकी रह गया, जो गम्भीरतापूर्वक मिट्टी खोद-खोद कर कब्र में डालने लगे। ऐसा लग रहा था, जैसे उनमें होड़ लगी थी कि कौन अधिक मिट्टी डाल सकता था। एक आदमी मैथ्यू के पास पहुँचा और उसने बिलकुल धीमी और लगभग न सुनी जानेवाली आवाज में उससे पूछा कि क्या कब्र को मेहराबदार ढाँचे का रूप दे दिया जाये।

"किसी भी ढंग से करो, कोई महत्व नहीं है इसका—" मैथ्यू बोला।

वह वहाँ से हट आया; लेकिन वह व्यक्ति उसके पीछे लगा रहा।

"अगर मेहराबदार ढाँचा नहीं बनाया गया, तो कब्र ठीक से न रह पायेगी—" वह बोला—"कुछ लोग नहीं चाहते हैं कि कब्रों को मेहराबदार ढाँचे का रूप दिया..."

"जाओ, बनाओ उसे तब—" मैथ्यू ने कहा और वह व्यक्ति उसे अकेला छोड़कर वहाँ से चला गया।

मैथ्यू धर्मोपदेशक के निकट गया और उसने उसे धन्यवाद दिया। उसने आर्लिस की ओर देखा, जो अकेली खड़ी थी और पथरायी आँखों से

उन व्यक्तियों की ओर देख रही थी, जो अच्छा सूट पहने कब्र में मिट्टी भर रहे थे और श्रम से उनके शरीर से पसीना बह रहा था। क्रैफोर्ड को यहाँ होना चाहिए था—मैथ्यू ने सोचा—क्रैफोर्ड को आना चाहिए था। भीड़ छँटने लगी। परिवार के लोग फिर एक साथ हो गये और पहाड़ी से होते हुए घर की ओर चलने लगे—मैथ्यू और मार्क, नाक्स और हैटी, आर्लिस, जान और उसके बिलकुल ही पीछे उसके बच्चे। जैसे जान को यहाँ होना चाहिए था; किन्तु उसे इसकी सूचना देने का कोई रास्ता नहीं था। और कौनी को भी! मैथ्यू उन लोगों के साथ पहाड़ी से नीचे की ओर चलता रहा। घाटी से लोगों के दल और मोटरें बाहर निकलनी शुरू हो गयी थीं। बहुत दूर पर उसे किसी की वक्र और सरल हँसी और सामान्य बातचीत सुनायी पड़ी और उनकी आवाज़ सुनकर मैथ्यू को खुशी हुई। अपने बेटे की मृत्यु का यह शोक अब सिर्फ आज-भर की बात नहीं था। कल—फिर कल और आनेवाले सभी दिनों भर की ही बात नहीं थी यह। जब भी वह खेत में अकेला जायेगा, यह दुःख उसके साथ रहेगा।

वह नाक्स की ओर मुड़ा—"तुम रुकोगे—" वह बोला।

नाक्स के उसकी ओर देखा। वह चौंक गया था; लेकिन जब वह बोला, उसकी आवाज़ में दृढ़ता और सावधानी थी—"आज रात मैं ठहरूँगा। लेकिन कल मुझे अपने काम पर वापस जाना है।"

मैथ्यू का मतलब सिर्फ रात से ही न था। किंतु नाक्स की आवाज़ की दृढ़ता को लक्ष्य कर उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। रात का काम—पशुओं को चारा देना, दूध दूहना, बछड़ों, सूअरों और मुर्गियों की रखवाली की व्यवस्था करना—आदि, उसे अभी ही करने में प्रसन्नता होगी—वे सारे काम जो अपने अपरिवर्तनीय आवश्यकता और लय में किये जाते थे। उसकी सिर्फ यही इच्छा हो रही थी कि काश, जैसे जान भी घर आ सका होता।

दृश्य सात

रिपोर्ट

चिकमा-बाँध
१६ जुलाई, १९३७

चार्ल्स सी. कानवे
प्रमुख निर्माण-इंजीनियर
टेनेसी वैली अथारिटी

ऊपर दी गयी तारीख तक, चिकमा-बाँध के निर्माण का कार्य संतोषजनक है और इस निर्माण-योजना के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के दायरे के भीतर ही है। अस्थायी जल-द्वारों से होकर जल-स्रोत के बहाव को रोकने की पूर्ण तैयारी, २४ मई, १९३७ को पूरी हो गयी। जल रोकनेवाले पहले किवाड़ लगा दिये गये हैं। अनुमान लगाया जाता है कि स्थायी ऊपरी घेरे के लिए चट्टान की तह जमाने का काम दिसम्बर, १९३७ में पूरा हो जायेगा और इस तरह जल रोकनेवाले किवाड़ यातायात के लिए खुल जायेंगे।

उत्तरी तटबंध पर काम कुछ अंशों में पूरा हो गया है। सिर्फ़ थोड़ा-सा छिटपुट काम बाकी रह गया है।

स्थिति २. निर्माण, अधिक पानी बहने के १५ उपमार्ग तैयार हो चुके हैं। #१

क्रेन, अधिक पानी बहने के मार्ग के लिए लगायी जा रही है।

स्थिति ३. निर्माण, जल निकास के ३ उपमार्गों, प्रशिक्षण दीवार और विद्युत्-घर का निर्माण कार्य जारी है। जल निकास के मार्गों और प्रशिक्षण-दीवार के लिए कंक्रीट डाली जाने लगी है। विद्युत् घर के ढाँचे के बाहरी खोलों और भार वहन करने वाली नलियों के लिए भी कंक्रीट डाली जा रही हैं। विद्युत्-घर के लिए चट्टान-खुदाई का काम जुलाई में ही समाप्त हो गया था और उसकी नींव डालने का कार्य चल रहा है। अनुमान लगाया जाता है कि अगले वर्ष, जनवरी अथवा फरवरी में, पानी बंद करने अथवा खोलने वाले

दरवाजे हटा लिये जायेंगे। # २. पानी जमा करने वाले स्थान और जल निकास के मार्गों के लिए क्रेन अब सुलभ है, लेकिन अभी एकत्र नहीं किया जा सका है।

विद्युत्-घर की मशीन बैठाने के लिए स्थिति ३ के निर्माण-कार्य के पूरा होने की प्रतीक्षा की जा रही है।

दक्षिणी तटबंध-कार्य में, जैसा आप पहले की रिपोर्टों और व्यक्तिगत निरीक्षण से जानते हैं, कई गम्भीर दिक्कतों से निपटना पड़ रहा है और अभी तक उन पर विजय नहीं पायी जा सकी है। नींव अभी भी तैयार की जा रही है, प्लास्तर-कार्य अभी भी चल रहा है। पृथक दीवार की पूरी लम्बाई के साथ-साथ खाइयाँ खोदी गयी हैं। स्वभावतः ही अवशेष गोल पत्थरों, दरारों और पथरीली तहों को अनावरित होना पड़ा है। पम्प का प्रयोग जरूरी हो गया है। जितना सम्भव है, उतनी तेजी से दक्षिणी तटबन्ध का कार्य चल रहा है और सहायक निर्माण-इंजीनियर जार्ज के. पेरी स्वयं इसकी देखभाल कर रहे हैं। मौजूदा समय में यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि कब यहाँ का काम सफलतापूर्वक समाप्त हो जायेगा। स्विचयार्ड का काम प्रगति पर है।

जमीन-प्राप्ति, परिवार-स्थानांतरण और पुनस्स्थापन का कार्य पूर्व निर्धारित योजनानुसार ही चल रहा है। जलाशय के लिए साफ की जानेवाली जमीन के काम में कुछ देर हो गयी; क्योंकि फसल के मौसम में कुछ काल के लिए श्रमिकों का अभाव हो जाता है; पर अब खेत में अतिरिक्त काम में जुटे हैं।

(१) इस वर्ष के दिसम्बर माह तक दक्षिणी तटबन्ध के निर्माण कार्य की सफल समाप्ति (२) जलाशय के लिए साफ की जानेवाली जमीन के कार्य की नियत अवधि के भीतर समाप्ति और (३) परिवारों को उनकी जमीन से हटाने में किसी अप्रत्याशित बाधा या रुकावट का अभाव—इन चीजों पर निर्भर करते हुए, ऐसा विश्वास किया जाता है कि जलाशय को भरने के लिए चिकसा-बाँध का कार्य अप्रैल, १९३८ तक स्थगित कर दिया जा सकता है। जनवरी में ही इस स्थिति की प्राप्ति की आशा कर ली गयी थी, जिससे शरद और वसन्त की वर्षा का पूर्ण लाभ उठाया जा सके, किंतु इस स्थिति में, इस तारीख तक सिद्धि की उम्मीद नहीं प्रतीत होती है।

मुझे विश्वस्त सूत्र से सूचना मिली है कि कांग्रेस से सम्बंधित एक दल, सितम्बर के प्रथम सप्ताह में इस क्षेत्र में, निर्माण-कार्यों का निरीक्षण करने आयेगा। सम्भवतः दल के सदस्य अपना फोटोग्राफर साथ लायेंगे; फिर भी,

नाक्सविले कार्यालय से अपने कुछ आदमियों को यहाँ बुला लेना दूरदर्शिता होगी। ये आदमी, अगर जरूरत पड़ी, तो उनकी इच्छा को कार्यरूप दे सकेंगे।

रॉस न्यूलि
निरीक्षणकारी निर्माण-निरीक्षक
अर्ल बी. रैग्सडेल
योजना-इंजीनियर
लेजसी आर. एकरमैन
निर्माण-इंजीनियर

प्रकरण सोलह

जिंदगी चलती रही। बहुत-सारा काम करने को पड़ा था और अब मैथ्यू को सब अकेले करना था। मार्क था और यद्यपि वह कोशिश भी करता था; पर उससे कोई लाभ नहीं था। वह स्वयं को श्रमसाध्य काम में लगा नहीं पाता था। सूरज की रोशनी उसे बड़ी तीखी और गर्म लगती। कुछ ही घंटों तक खेत जोतने या फावड़ा चलाने के बाद वह स्वयं को कमजोर और बीमार महसूस करने लगता, उसका पेट खराब हो जाता और उसे किसी सायेदार स्थान में बैठ जाना पड़ता। अंततः मैथ्यू ने उसे खेत में आने से बिलकुल रोक दिया। उसने मार्क से कह दिया कि घर पर और खलिहान में ही इतने ज्यादा काम हैं कि उन्हें स्वयं अब करने का समय वह नहीं निकाल पायेगा। अतः मार्क घर पर ही रहने लगा। वह रात में मवेशियों को खाना खिलाता, दूध दूहता और मुर्गियों की देखभाल करने में हैटी की सहायता करता। दिन के समय खलिहान से लगे छप्पर के नीचे, साये में, वह औजारों की मरम्मत करता रहता।

कुछ समय तक मैथ्यू ने किसी से अपनी योजना के बारे में कुछ नहीं कहा। वह जानता था कि अभी उस योजना को शुरू करने का समय नहीं था उसके पास; क्योंकि खेत में फसल तैयार खड़ी थी और उधर ध्यान देना सबसे जरूरी था। किन्तु शीघ्र ही फसल काट ली जायेगी—रात में कई बार वह चलता हुआ घाटी के प्रवेश-द्वार पर पहुँच जाता और प्रवेश के उस सकरे

मार्ग को देखता रहता कि किस प्रकार दोनों ओर पहाड़ियाँ बिलकुल सटकर नीचे उतरती चली आयी थीं। उसे विश्वास था कि यह काम किया जा सकेगा और प्रयास तथा सफलता की निश्चितता से उसे आराम मिलता था। वह अब कुछ कर रहा था, घटनाओं के घटने के इंतजार में व्यर्थ बैठा प्रतीक्षा नहीं कर रहा था, जैसा उसने काफी समय तक किया था।

राइस की अनुपस्थिति स्थायी थी। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वह कुछ ही काल के लिए कहीं गया हुआ था और मैथ्यू उसे देखने के लिए खेत में काम करते करते रास्ते की ओर आँखें उठा देने से स्वयं को रोक नहीं पाता था। हर बार उसे ऐसा लगता कि सदा की भाँति दुबला-पतला और बच्चों के समान मासूम चेहरे वाला राइस, जो यद्यपि अब १८ वर्ष से अधिक उम्र का हो गया था, खेतों से होकर अपने खेत में काम करने के लिए आता दिखायी देगा। लेकिन हर बार यह भावना उठती और अपरिहार्य रूप से मर जाती। व्यर्थ के शोक-प्रदर्शन में मैथ्यू विश्वास नहीं करता था और जब लोग घाटी से चले गये थे, तो मैथ्यू को खुशी ही हुई थी कि अब कोई भी अपने सामान्य लहजे में बातें कर सकता है, हँस तक सकता है और अपने काम, मौसम तथा भोजन का आनंद ले सकता है। शोक मनाना उसकी प्रकृति के लिए एक विवशता थी—जैसे वह एक खच्चर हो और उसे अच्छी घास से वंचित कर दिया गया हो। किंतु राइस उसके लड़कों में सबसे छोटा था—राइस, जिस पर उसने अपनी अंतिम आशा अवलम्बित की थी और उसके प्रस्ताव के बावजूद, दुर्भाग्य के प्रति विद्रोही बना रहनेवाला मैथ्यू, स्वयं पर आये इस दुर्भाग्य पर गम्भीरता से विचार करता था। उसे ऐसा अनुभव होता कि बीते हुए समय पर वापस विचार करने का अब कोई अवसर नहीं आयेगा, फिर कुछ भिन्न करने का मौका नहीं आयेगा, जो सारी स्थिति को ठीक कर दे। जब उसकी चित्तवृत्ति ऐसी होती थी, तो उसकी भौहें सोच में काली पड़ जाती थीं और उसकी उपस्थिति में परिवार के लोग हल्के कदमों उपस्थित होते।

उन्होंने राइस की जेब से पैसे निकालकर उसे दे दिये थे। उसने बिलों की वह गड्डी ले ली थी और यह देख लिया था कि वह पहले के समान ही थी—राइस को गिनकर जब उसने उन बिलों को दिया था, उस क्षण से लेकर तब तक उनमें कोई परिवर्तन नहीं आया था। किंतु वह उन बिलों को फिर अपनी जेब में डालकर नहीं चल सकता था। इसके बजाय उसने उन्हें एक रबर से बाँध दिया और रहनेवाले कमरे में मेंटल पर एक गुड़िया के पीछे

रख दिया, जिसे एक बार गाँव के मेले से बाक्स खरीद कर ले आया था।

मैथ्यू अपने काम के लिए स्वयं को आभारी मानता था, यद्यपि इस समय तक खेत जोतने का काम उसे समाप्त कर देना चाहिए था। लेकिन उसे अकेले ही काम करना पड़ता था और फसल के बीच अभी भी घास मौजूद थी। वर्ष का यह समय उसे सदा पसंद था, जब कि फसलें और वहाँ उग आनेवाली घास, शरत्-काल को अवरुद्ध कर देने का प्रयास करती थीं। सूरज और बारिश, हवा और मौसम, ऋतु और उत्पत्ति के प्रभाव से वे बेतरतीबी से उग आतीं। इन्हीं सप्ताहों में फसल या तो तैयार कर ली जाती थी या नष्ट हो जाती थी। मैथ्यू खेत में हल जोतने और फावड़ा चलाने के काम में जुटा रहा। वह कतारों के बीच अनंत बार इधर-से-उधर हल चलाता, जिससे घास नष्ट हो जाये और मकई, कपास तथा छोआ के लिए उपजायी जानेवाली चरी को सूरज की रोशनी और नमी ठीक-ठीक मिल सके। कुछ समय तक के लिए, उसने जान के एक लड़के को अपने साथ काम पर रख लिया था; लेकिन कुछ दिनों के बाद उसने उसे मुक्ति दे दी। जिस प्रकार उसके अपने लड़के काम कर लेते थे, वैसा जान का लड़का नहीं करता था और उसे हर काम के लिए कहना पड़ता था। अतः जितना वह काम करता नहीं था, उससे अधिक समय मैथ्यू को उसे आदेश-निर्देश देने में लगाना पड़ जाता था।

प्रति दिन वह जेसे जान की उम्मीद किया करता था। प्रति दिन वह जेसे जान द्वारा दिये गये वचन को याद करता और उसके आने की बाट जोहता। वह जानता था कि एक बार कौनी उसे मिल गयी, तब वह घर चला आयेगा। उसे उम्मीद नहीं थी कि उसके साथ कौनी भी आयेगी; क्योंकि वह जानता था कि कौनी उसके साथ आने से इनकार कर देगी। जेसे जान जिस लम्बी तलाश में निकल पड़ा था, उसके पहले ही वह उसके मन में इस सत्य का विश्वास दिला देना चाहता था; किंतु उसने अपना मुँह बंद रखा था; क्योंकि वह जानता था कि जेसे जान उसकी बात नहीं सुनेगा। अगर उसे मैथ्यू की बातों पर विश्वास भी हो जाता, तब भी वह उसकी नहीं सुनता। यह एक ऐसी चीज थी, जिसे जेसे जान को स्वयं करना था—स्वयं ही अनुभव प्राप्त करना था, सीखना था।

किंतु मैथ्यू ने प्रतीक्षा की। और प्रतीक्षा करते समय वह जेसे जान के बारे में सोचता रहा। उसने अपने दिमाग में इसकी भी रूपरेखा बना ली कि अब जेसे जान उत्तरदायित्व सँचालन के लिए विश्वास के कितना योग्य होगा।

पहले, जैसे जान अपनी पत्नी के बोझ के नीचे दबा रहता था, अस्वीकृति की कठोरता का सामना उसे कभी नहीं करना पड़ा था और जब वह वापस आयेगा, वह बदला हुआ होगा। मैथ्यू उसके कंधों पर उत्तरदायित्व और निर्णय का भार डाल देगा और मैथ्यू को स्वयं में इसका विश्वास था कि जैसे जान उनके नीचे ही विकसित होगा और स्वयं को घाटी के योग्य प्रमाणित कर देगा।

उसे ऐसा होना ही था; क्योंकि मैथ्यू को नाक्स से कोई आशा नहीं रह गयी थी। उस पर तनिक विश्वास नहीं रह गया था। शव-संस्कार के दिन नाक्स ने छूटने ही जो जवाब दिया था, वह उसे याद था, जब कि मैथ्यू स्वयं उससे सिर्फ रात-भर ठहरने के सम्बंध में ही कहना चाहता था। अगली सुबह, बहुत तड़के, जब कि दिन का प्रथम धूमिल उजाला फूट ही रहा था, नाक्स ने घाटी छोड़ दी थी और घाटी से बाहर निकल अपनी स्वयं की जिंदगी में वापस लौटने की उसे सचमुच ही बड़ी प्रसन्नता हुई थी। निश्चय ही, उसकी इस राहत का कुछ भाग मृत्यु और शोक-संस्कार के समाप्त हो जाने के कारण उत्पन्न हुआ था; लेकिन उसकी खुशी का बाकी भाग—महत्वपूर्ण भाग—इससे उत्पन्न हुआ था कि वह अपनी अलग की दुनिया में फिर वापस चला गया था। नाक्स ने टी. वी. ए. के काम के लिए घाटी छोड़कर बड़े सीधे-सादे ढंग से, घाटी से पूर्ण रूपेण अपना सम्बंध विच्छेद कर लिया था—जैसे मार्क ने घाटी से अपनी अनुपस्थिति के वर्षों में किया था।

पुनर्व्यवस्था, नयी आशा और नयी योजना के इस अरसे में, स्थायी रूप से अजनबियों के अपने पास आते रहने से मैथ्यू तंग आ चुका था। पहले एक युवक आया था, जो अपने साथ बड़ा लम्बा और जटिल सरकारी फार्म लेता आया था और उस फार्म की खानापूरी के लिए वह दुर्घटना का पूर्ण विवरण जानना चाहता था। पहले मैथ्यू ने उससे बात करने से इनकार कर दिया था; लेकिन तब यह सोचकर कि जब तक उसका यह काम समाप्त नहीं हो जाता, युवक बराबर वापस आता रहेगा और जब तक कि फार्म की पूरी खानापूरी आँकड़ों, तारीखों और अन्य विवरणों से संतोषजनक रूप में नहीं हो जाती, उसे मुक्ति नहीं मिल सकती, मैथ्यू ने उसके प्रश्नों का जवाब देकर उसे संतुष्ट कर दिया था और उस युवक को वहाँ से विदा लेते देख, उसने स्वयं भी संतोष की साँस ली थी। किंतु कुछ ही दिनों बाद, एक वकील आया—ला-कालेज से हाल का ही निकला हुआ एक युवक। उसने बड़ी सावधानीपूर्वक मैथ्यू के

सामने यह स्पष्ट कर दिया कि अदालत में पेश करने के लिए मैथ्यू का मामला बहुत कमजोर था, राइस की मृत्यु पूर्णतः उसकी अपनी ही असावधानी से हुई थी; किंतु जितने लोगों का इस दुर्घटना से सम्बंध था, उनके बीच, निश्चय ही, सबके संतोष के अनुसार, समझौता हो सकता था। मैथ्यू के मन में अचानक यह भावना प्रबल हो उठी कि वह पूछे, क्या राइस भी उस समझौते से संतुष्ट हो जायेगा; किंतु उसने स्वयं पर नियन्त्रण रखा। ऐसी बात कहना औचित्यपूर्ण नहीं होगा।

वह इस सम्बंध में बात तक नहीं करना चाहता था। किंतु वह युवा वकील आया, उसने मैथ्यू से बातें कीं और फिर आया। मैथ्यू में क्रोध या प्रतिशोध की भावना का अभाव देखकर वह अभी भी असंतुष्ट था। उसकी व्यग्रता बढ़ती गयी और उसके मन में यह विश्वास घर करता गया कि मैथ्यू निश्चय ही, मन-ही मन अपने स्वयं के आधारों पर, स्वयं ही विपक्षी दल पर आक्रमण करने की चुपचाप योजना बना रहा होगा। अंततः मैथ्यू ने उससे बेलाग कह दिया कि अपने बेटे की मृत्यु के लिए वह टी. वी. ए. से कुछ नहीं चाहता था। जहाँ तक उसका सम्बंध था, उसने बारूद लगानेवाले फोरमैन के कथन को स्वीकार कर लिया था। उस युवा वकील को विश्वास नहीं हुआ; लेकिन वह इस सम्बंध के आवश्यक कागजात लेकर मैथ्यू के पास आया कि मैथ्यू हस्ताक्षर कर दे, वह कोई मुआवजा नहीं चाहता। मैथ्यू ने जब उन पर दस्तखत किये, तो वह अविश्वास से उसे देखता रहा और तब आश्चर्य से सिर हिलाता हुआ, हमेशा के लिए चला गया। उसके बाद लोगों ने उसे अकेला छोड़ दिया।

घाटी की जिंदगी से क्रैफोर्ड पूर्णतया विलग हो गया था। मैथ्यू को ऐसा लगने लगा था कि क्रैफोर्ड नाम के व्यक्ति का कभी कोई अस्तित्व ही नहीं था; फिर भी उसके मस्तिष्क के कोने में साये के रूप में वह सदा मौजूद था और आर्लिस के दिमाग में भी! वह शव संस्कार में नहीं आया था और एक हफ्ते से अधिक का समय गुजर चुका था, जब आर्लिस को फिर उसके हार्न की आवाज़ सुनायी दी। जिस रात हार्न की आवाज़ सुनायी दी, आर्लिस निश्चय खड़ी रह गयी और हार्न की आवाज़ सुनती रही, जैसे गुजरे हुए दिन, सप्ताह आये ही नहीं थे और शव-संस्कार कभी हुआ ही नहीं था। तब स्तम्भित हो, वह तेजी से उसकी ओर चल पड़ी, जिससे हार्न की इस अपवित्र आवाज़ को वह रोक सके।

क्रैफोर्ड ने उसे धूमिल अंधकार से होकर देखा और उसके लिए उसने मोटर का दरवाजा खोल दिया। वह जानता था कि देर या सबेर आर्लिस उसके बुलाने पर आयेगी अवश्य। उसे इसका पूर्ण विश्वास था और वह धैर्यपूर्वक इसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह जानता था कि आर्लिस स्वयं को और उसे हमेशा के लिए यों एक-दूसरे से विलग नहीं रख सकती थी।

"क्या चाहते तुम?" आर्लिस ने पूछा।

क्रैफोर्ड मुस्कराया। "मैं यही चाहता था कि तुम यहाँ आ जाओ—" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

आर्लिस तब समझ गयी कि क्रैफोर्ड को वह दुःखद समाचार नहीं ज्ञात था। "राइस की मृत्यु हो चुकी है—" वह बोली। बोलने में उसे काफी प्रयास करना पड़ रहा था—"एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गयी। पिछले सप्ताह ही हमने उसे दफनाया है।"

इस जानकारी के आघात से क्रैफोर्ड विचलित हो उठा। "मैं नहीं जानता था—" वह बोला—"मुझे नाक्सविले भेज दिया गया था और..." व्यर्थ की यह सफाई उसने बंद कर दी और मोटर से उतर कर आर्लिस के निकट खड़ा हो गया। "तुमने यहाँ मेरी आवश्यकता अनुभव की थी—" वह बोला—"और मैं..."

क्रैफोर्ड के स्पर्श के पूर्व ही, आर्लिस भहरा गयी और क्रैफोर्ड ने अपनी बाँहें फैलाकर उसे थाम लिया। फिर उसे आलिंगन में ले लिया। वह रो रही थी और अपने शरीर का सारा भार उसने क्रैफोर्ड के ऊपर डाल दिया था, मानो शव-संस्कार के समय वह बिलकुल ही नहीं रोयी थी। जी-भर रोकर अपना दिल हल्का करने के लिए उसने क्रैफोर्ड की जरूरत महसूस की थी। क्रैफोर्ड उसे अपने बाहुपाश में लिए काफी देर तक खड़ा रहा। तब वे गाड़ी में आ गये और एक-दूसरे की बगल में बैठ गये। आर्लिस ने क्रैफोर्ड को सारी कहानी सुनाकर अपने मन का बोझ हल्का कर लिया। उन दोनों के बीच जो लड़ाई हो गयी थी, उसके पूर्व का समय ही मानो लौट आया था—मृदु और प्रेमल और खोयी हुई स्निग्धता की मादक सुगंध!

बिना बोले, वे जान गये कि उनके बीच की खाई भर चुकी है, क्रैफोर्ड के मन में जो क्षणिक वासना जगी थी और उसे कुमार्ग पर ले गयी थी, वह अब हमेशा के लिए खत्म हो चुकी थी और वे दोनों उन्हीं पहले के आधारों पर, जिनसे वे परिचित थे, पूर्ववत् मित्र थे।

वे प्रसन्नमन साथ-साथ बैठे रहे; लेकिन मन-ही-मन क्रैफोर्ड अपने भीतर पनपती निराशा अनुभव कर रहा था। जिस दिन उसने मैथ्यू को चुनौती दी थी, उस दिन वह मैथ्यू के ऊपर विजय पाने के जितना दूर था, उतनी ही दूरी आज भी बनी थी। मैथ्यू के ऊपर कानून के बलप्रयोग और दबाव के अलावा अन्य किसी प्रकार के बलप्रयोग और दबाव का असर नहीं होने वाला था। और क्रैफोर्ड उसके विरुद्ध कानून को अमल में लाने वाला नहीं था। जब उसने आर्लिस से विदा ली, वह इस सम्बंध में सोचता हुआ धीरे-धीरे, अपने घर की ओर गाड़ी चलाता रहा। जब वह बिस्तरे पर लेटा, तो वह सो नहीं सका। उस अंधेरे में उसकी आँखे पूर्णरूपेण खुली रहीं और वह लेटा रहा। अगली सुबह जब वह उठा तो वह स्वयं को बूढ़ा अनुभव कर रहा था और उसके चलते समय तेज चरमराहट की आवाज़ होती थी। वह अपने कार्यालय गया और अपनी छोटी-सी डेस्क के सामने बैठ गया, जो अन्य कई डेस्कों के साथ उस बड़े कमरे के एक कोने में पीछे की ओर ठूंसी हुई थी। पिछली रात की निराशा के समान ही उसके भीतर एक गहरी शून्यता व्याप्त होती जा रही थी। वह दरवाजे की ओर देखता रहा। वह अपने अधिकारी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। डेस्क पर पड़े किसी भी काम को करने का उसने प्रयास तक नहीं किया। अधिकारी भीतर घुसा और अपने कमरे में चला गया। क्रैफोर्ड अपनी जगह से उठकर उसके दरवाजे तक पहुँचा। उसने दरवाजा खटखटाया। भीतर से आवाज आयी अंदर आ जाने के लिए और क्रैफोर्ड ने उसका पालन किया। वह डेस्क के सामने खड़ा रहा और उस ओर बैठे व्यक्ति की ओर देखता रहा, जो अपनी डाक उलट-पुलट रहा था। वह लम्बे पाँवों वाला दुबला-पतला व्यक्ति था, कमर उसकी पतली थी और उसका शरीर कमाया हुआ था, यद्यपि वह अब अधिक श्रम का कार्य बहुत कम करता था।

"क्यों?" अधिकारी ने कहा—"क्या है?"

क्रैफोर्ड उसकी ओर देखता रहा। "मैं नौकरी छोड़ना चाहता हूँ—" वह बोला।

मि. हैंसेन ने चिट्ठियों को उलटना-पुलटना बन्द कर दिया और आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। क्रैफोर्ड के चेहरे पर उसने जो-कुछ देखा, उससे अपना सुबह का काम उसे परे एक ओर खिसका देना पड़ा और वह अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया। "क्यों?" उसने रुखाई से पूछा। क्रैफोर्ड ने इनकार में अपना सिर हिलाया। "बस, मैं अपना त्यागपत्र देना चाहता

हूँ—" वह बोला। उसकी आवाज समतल, भावनाहीन और बहुत संतुलित थी। उसे डर लग रहा था कि उसके हाथ काँप रहे थे और वह उन्हें अपनी जेबों में छुपा लेना चाहता था, जिससे उसका अधिकारी नहीं देख सके। किंतु वह हिला-डुला नहीं।

मि. हैंसेन ने अपने सिर से एक कुर्सी की ओर संकेत किया। क्रैफोर्ड नहीं हिला। "बैठ जाओ" मि. हैंसेन ने कहा और क्रैफोर्ड समझ गया कि इतनी आसानी से उसे अपनी इच्छा पूरी करने की अनुमति नहीं दी जायेगी। वह कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथ सावधानी से एक दूसरे पर मोड़कर, उन्हें अपनी गोद में रख लिया।

अधिकारी ने गौर से उसकी ओर देखा। "इस विभाग के तुम सर्वोत्तम कार्यकर्ताओं में एक हो—" वह बोला—"जिन व्यक्तियों से हमें निपटना पड़ता है, तुम उन लोगों के बारे में जानते हो क्रैफोर्ड, और अधिकांश व्यक्तियों से तुम्हारी जानकारी अच्छी है। तुम काफी अच्छा काम कर रहे हो—और मैंने सोचा था, तुम अपने काम से प्रसन्न हो।"

"धन्यवाद, महोदय!" क्रैफोर्ड बोला—"मैं इसकी प्रशंसा करता हूँ। लेकिन मैं......"

अधिकारी चारों ओर घूम जाने वाली अपनी कुर्सी पर वापस पीछे की ओर उठँग गया और उसने अपने हाथ अपने सिर के पीछे रख लिये। उसने क्रैफोर्ड की ओर से आंखें हटा लीं और पीछे की गंदी खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा।

"सच तो यह है कि—" उसने विचारपूर्ण मुद्रा में कहा—"मैं सोचा रहा था कि अगर मौका लगे, तो तुम्हारे अगले काम में, तुम्हें अपने विभाग का प्रधान बना दिये जाने की सिफारिश कर दूँ। इस वास्तविक कार्य-क्षेत्र से तुम्हें अलग करना वस्तुतः लज्जाजनक है, लेकिन......" वह मुस्कराया—"तुम अपने सर्वोत्तम व्यक्ति को हमेशा कार्य-क्षेत्र में ही नहीं रखे रह सकते और मरे हुए दिमाग वाले व्यक्तियों को ही तरक्की देते नहीं जा सकते। वह भी बस, इसलिए कि वे अधिक खटपट नहीं दर्शायें। यद्यपि ऐसा कई बार हो चुका है।" वह वापस मुड़ा और क्रैफोर्ड की ओर उसने खोजती निगाहों से देखा। "अगर तुमने मुझसे पूछा होता कि मेरा साथ अंत तक कौन निभायेगा, तो मैंने तुम्हारा नाम लिया होता—" वह बोला—"मेरी समझ में नहीं आती यह बात।"

क्रैफोर्ड अपने हाथों की ओर ही देखता रहा। "आप पूरी कहानी नहीं जानते हैं—" वह धीरे से बोला—"मैं सारे समय मुसीबतें इकट्ठी करता रहा हूँ और अब शीघ्र ही वे हमारे ऊपर भहरा कर टूट पड़नेवाली हैं। अतः मैं सोचता हूँ कि अच्छा हो, अगर मैं इससे बाहर निकल जाऊँ और किसी दूसरे को प्रयास का मौका दूँ, तो सम्भव है, अधिक विलम्ब होने के पहले ही उसे परिस्थिति सँभाल लेने का मौका मिल जाये।"

"डनबार?" अधिकारी ने कहा।

"वह नहीं बेचेगा—" क्रैफोर्ड बोला—"मैंने उससे बातें की हैं, और बातें की हैं और वह अपनी बात पर अड़ा है। अब मैंने उसे अपना इतना विरोधी बना लिया है कि वह मुझसे बात भी नहीं करेगा, मुझे मौका भी नहीं देगा कि......" उसने एक गहरी साँस ली—"आपसे सच कहूँ, मि. हँसेन, मेरा खयाल है, मैं भी बहुत फँस गया हूँ। मैं उसकी लड़की के साथ बाहर जाने लगा—और मुझे उससे प्यार हो गया।"

मि. हँसेन मुस्कराये—"यह कर्तव्य की मांग के परे है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि......"

क्रैफोर्ड भी मुस्कराया—एक विकृत मुस्कान! "हाँ! लेकिन मैथ्यू को यह पसंद नहीं है—" वह बोला—"उसने मुझे मिलने की मनाही कर दी। पर वह किसी तरह काफी लम्बे समय तक मिलती रही।" उसने आँखें उठाकर अपने अधिकारी के चेहरे की ओर देखा—"सच तो यह है कि अभी भी मिलती है वह!"

अधिकारी ने उदासी से सिर हिलाया। "इस दफतर में पहले भी समस्याएँ मेरे सामने आ चुकी हैं—" वह बोला—"किंतु यह समस्या सबको...और अब तुम नौकरी छोड़ने जा रहे हो!"

"हाँ, महाशय!" क्रैफोर्ड ने स्थिरतापूर्वक कहा—"सम्भव है, दूसरा कोई..."

मि. हँसेन पुनः अपनी कुर्सी पर घूम पड़े। "यह डनबार किस तरह का आदमी है?" वे बोले।

क्रैफोर्ड के ललाट पर सिकुड़नें आ गयीं। "वह अच्छा आदमी है—" वह धीरे से बोला। उसने शब्दों को चुनने का प्रयास किया—"सात गाँवों में भी आपको उसकी तरह अच्छा आदमी नहीं मिलेगा। उसके मन में न किसी के प्रति ईर्ष्या है, न बुराई और न घृणा की भावना। उसके मन में अपने

परिवार और अपनी जगह के लिए जबर्दस्त मोह है—ऐसा आदमी मैंने और कोई नहीं देखा। मुसीबत की जड़ यही है। वह अपने तरीकों में दृढ़ है—और वह घाटी उसके लिए छोटी जमीन-भर नहीं है—यह एक ऐसी जगह है, डनबार की घाटी, जो पीढ़ियों से डनबारों के अधिकार में रही है। इसके सिवा वह और कुछ नहीं देख पाता है—सोच पाता है!"

"कहते चलो!"

निराश भाव से क्रैफोर्ड ने अपने विचारों को सीधा-सुलझा रूप देने के लिए मन ही-मन संघर्ष किया। इस प्रकार की चीजें आप यों नहीं कह सकते। "वह विलक्षण है—" काफी लम्बे मौन के बाद अंततः उसने स्वीकार किया—वहाँ अगल-बगल में जो लोग रहते हैं, वे उसे और उसके परिवार को विचित्र और भिन्न निगाहों से देखते हैं। वे अधिक मिलते-जुलते नहीं, स्वयं तक ही अपना दायरा सीमित रखते हैं और उस परिवार के लड़के हमेशा से थोड़े सनकी रहे हैं—विशेषतः सबसे बड़ा लड़का। मेरे विचार से घाटी में पीछे की ओर वे व्हिस्की बनाते हैं—यद्यपि बेचने के लिए नहीं..."

मि. हैंसेन ने हँसकर बीच में ही बाधा डाल दी। "क्या तुमने उस बुड्ढे के विषय में पिछले हफ्ते सुना था, जिसने इस बात पर जोर दिया था कि बाकी सब चीजों के साथ उसकी भट्टी की भी कीमत आँकी जाये?" वह बोला—"वह मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति को सीधा वहाँ तक ले गया और स्वयं खड़ा रहा, जब तक कि मूल्यांकन करने वाले ने भट्टी को भी शामिल नहीं कर लिया। उसके बिना वह जगह बेचने को तैयार नहीं था। मूल्यांकन करनेवाले के मन में यह भय व्याप्त था कि बाद में, उस भट्टी का पता चल जायेगा और वह बुड्ढा सारा दोष उसके सिर पर मढ़ देगा। वह दूसरे दिन वहाँ गया और उसने उस बुड्ढे से उसे वहाँ से हटा देने के लिए कहा, जिससे उस पर कभी शक नहीं किया जा सके।"

इस हल्की-फुल्की कथा ने क्रैफोर्ड के मन का भार हल्का कर दिया और वह भी हँस पड़ा। तब, मैथ्यू के बारे में सोचते हुए वह फिर गम्भीर हो गया।

"उसका लड़का एक-दो सप्ताह पहले मारा गया—" वह बोला—"बारूद-विस्फोट में उसकी मृत्यु हुई—जहाँ बारूद से ठूँठ उड़ाये जा रहे थे, वह उनके बीच जाकर खड़ा हो गया था। उसकी बहन ने मुझसे कहा।"

मि. हैंसेन ने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाते हुए सहमति व्यक्त की। "मैंने उसके बारे में सुना था—" वे बोले—"उससे भी कोई सहायता नहीं मिलने वाली है।"

"मेथ्यू सुलझे विचारों का व्यक्ति है—" क्रैफोर्ड ने विश्वास के साथ कहा—"अगर उसके हाथ में अधिकार भी होता, तो भी, सिर्फ इसके लिए कि जहाँ से उसका लड़का दौड़ता जा रहा था, टी. वी. ए. वहीं काम कर रहा था, वह एक दुर्घटना के लिए हमारे प्रति कटु नहीं हो जाता। यही मैथ्यू की विशेषता है—" उसने पुनः इनकार में अपना सिर हिलाया—"वह एक विलक्षण प्रकृति का व्यक्ति है, मि. हैंसेन! आपके कहने-भर का उस पर कुछ असर नहीं होने वाला है। बहुत सी बातों में वह अडिग है—उस सम्बंध में विचार करना भी उसे मान्य नहीं, जब कि अन्य मामलों में वह समझदार भी है और लोचयुक्त भी!" उसके होंठ घबड़ाहट में सिकुड़ आये—"और मेरी समझ से, वह मुझे मानता है। यही वजह है कि वह मुझसे अब ज्यादा बातें नहीं करेगा; क्योंकि कभी-कभी मैं उसके बहुत निकट पहुँच जाता हूँ।"

"और तुम?" मि. हैंसेन ने चतुरतापूर्वक कहा—"तुम भी उसे पसंद करते हो!"

"वह अच्छा आदमी है—" क्रैफोर्ड ने बेचैनी से कहा—"मेरी जानकारी में सबसे अच्छा..."

"तुम क्या करने की सोच रहे हो?" अधिकारी ने पूछा—"मेरा मतलब है, टी. वी. ए. छोड़ने के बाद!"

क्रैफोर्ड ने पुनः अपनी निगाहें नीची कर लीं और अपने हाथों की ओर देखने लगा। "मैं नहीं जानता—" वह बोला—"मैंने इस सम्बंध में सोचा नहीं था।"

मि. हैंसेन उठ खड़े हुए—"मैंने भी यही सोचा था। तुम इसके सिवा और कुछ नहीं सोच सकते कि नौकरी छोड़ दो और कोई दूसरा आकर तुम्हारा काम सँभाल ले। तब तुम इधर-उधर कहीं जाओगे और अपने लिए कोई छोटा-मोटा काम ढूंढ़ लोगे और बाकी जिंदगी पछताते रहोगे।"

"मैंने आर्लिस को भी साथ ले जाने को सोचा है—" क्रैफोर्ड बोला—"अगर वह जायेगी तब।"

मि. हैंसेन अपने दोनों हाथ अपनी जेबों में डाल लिये और सिक्कों तथा चाबियों से खेलने लगे। "अखिर यह ऐसा दुरूह नहीं है, जैसा तुम इसे बना दे रहे हो।" उन्होंने नम्रतापूर्ण शब्दों में कहा—"हम लोग जरूरत पड़ने पर हमेशा ही उस सम्पत्ति को जब्त कर ले सकते हैं, बलपूर्वक ले सकते हैं।

वह बाँध का बनना और जलाशय के लिए पानी के बहाव को नहीं रोक सकता। हम उसे ऐसा नहीं करने दे सकते हैं।"

"वह उसे मार डालेगा—" क्रैफोर्ड ने कठोरता से कहा—"हो सकता है, वह कुछ दिनों तक उसके बाद भी जीवित रहे; लेकिन यह उसे मार डालेगा। और वह इससे अच्छे का हकदार है। वह......"

मि. हैंसेन उसकी ओर झुक आये। "तो फिर जिसके वह योग्य है, वही उसे दो—" वे जल्दी से बोले—"उसे समझाते रहो। उससे बात करो। उसे विश्वास दिलाओ। यही तुम चाहते हो—है न? सिर्फ उसकी जमीन लेना ही नहीं, बल्कि हमारे इस काम का औचित्य भी उसे दिखा देना!"

क्रैफोर्ड ने इस सम्बंध में सोचा। क्या वह वस्तुतः यही चाहता था? अथवा सिर्फ आर्लिस को ही पाना चाहता है वह? लेकिन तत्काल ही, इस पर सोचने से वह जान गया कि वह इससे अधिक चाहता है। मात्र जब्ती ही मैथ्यू के लिए उचित नहीं था। उसके लिए इससे अधिक आवश्यक था। उसके विचारों में परिवर्तन की आवश्यकता थी—इस तरह से कि वह टी. वी. ए. की अच्छाई स्वीकार कर ले और व्यर्थ ही लड़ाई करने के बजाय वह—प्रत्येक डनबार—इस परिवर्तन को खुशी-खुशी सह सके।

"हाँ!" वह बोला—"उसके हाथ में कोई ऐसी नयी वस्तु देना, जो उसकी घाटी के समान ही महान हो! सिर्फ रकम ही नहीं, एक समझ—एक यथार्थ और वास्तविक विश्वास, जो उसके उस विश्वास का स्थान हो सके, जो हम उससे छीने ले रहे हैं।"

"अच्छी बात है!" अधिकारी ने कहा—"अच्छी बात है।" वह रुक गया और जोरो से साँस लेता हुआ क्रैफोर्ड के ऊपर झुक आया—"मेरी बात सुनो। तुम्हीं एकमात्र व्यक्ति हो, जो इसे कर सकता है। तुम अपने इस भार को दूसरे के कन्धों पर नहीं डाल सकते, क्रैफोर्ड! इस संगठन का कोई दूसरा व्यक्ति यह काम नहीं कर सकता। अतः अगर तुम नौकरी छोड़......"

"यह उचित नहीं है—" क्रैफोर्ड बोला—"मैंने उसे अपना कट्टर विरोधी बना लिया है। किसी और को नये सिरे से प्रयास शुरू करने दीजिये..."

उत्तेजित भाव से मि. हैंसेन अपनी डेस्क के चारों ओर चहलकदमी करने लगे। "मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं क्या करूँगा—" वे बोले। शब्द बड़ी तेजी से उनके मुँह से निकल रहे थे—"जहाँ तक सम्भव है, मैं तुम्हें प्रत्येक क्षण इस काम के लिए दूँगा। लेकिन समय की एक सीमा है, जिसके परे हम नहीं जा

सकते, जब, तुम्हारे असफल होने पर हमें कानून कार्रवाई करनी पड़ेगी; क्योंकि अगले वसंत में वे इस बाँध-निर्माण का कार्य बन्द कर देने वाले हैं। पर हर सम्भव दिन मैं तुम्हें इस काम के लिए दूँगा।" वे रुके और जोर-जोर से साँस लेते हुए बोले—"अगर तुम चेष्टा नहीं करोगे—अपना भरसक प्रयत्न नहीं करोगे—मैं कल ही उसके विरुद्ध जमीन पर जबर्दस्ती अधिकार करने की सरकारी कार्रवाई आरम्भ कर दूँगा।"

क्रैफोर्ड अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। "नहीं!" वह बोला—"नहीं! आप ऐसा नहीं कर सकते। आप......"

अपने अधिकारी को अपनी ओर देखकर मुस्कराता पा, वह चुप हो गया। कुछ लज्जित भाव से वह स्वयं भी मुस्कराया। "अच्छी बात है।" वह बोला—"आपकी ही जीत हुई। मुझे प्रयास करना ही है।"

"जो भी तुम सोच सकते हो, सोचो, प्रयास करो—" अधिकारी ने कहा—"उसके लिए दूसरी जगह ढूँढ़ निकालो। उसे विश्वास दिलाओ कि यह जगह उसकी अपनी जगह से अच्छी है। उसे पस्त कर दो और पुनः उसका निर्माण करो।"

क्रैफोर्ड काँपती मुस्कान मुस्कराया—"मैं उसके बारे में बहुत सोचता हूँ—" वह बोला—"उसकी लड़की के बारे में भी!"

अधिकारी ने अपना हाथ हिलाया। "अच्छी बात है। अपने कामों का बोझ जितना हल्का कर सकते हो, कर लो और पूरा ध्यान डनबार पर केंद्रित करो। सिवा उसके, हमारा काम काफी अच्छा चल रहा है। अब से डनबार की समस्या को हल करना तुम्हारा प्रधान कार्य है।"

"और सुनो!" जब वह बाहर निकल कर दरवाजा बंद करने लगा, उसके अधिकारी ने आवाज़ दी—"तुम उस लड़की से अपने समय में प्रणय करते रहो। उसके लिए तुम टी. वी. ए. पर दोषारोपण नहीं कर सकते!"

क्रैफोर्ड अपनी डेस्क के निकट लौट आया और अपनी कुर्सी पर दो घंटों तक बिना हिले-डुले बैठा रहा। उसने अपनी डेस्क पर पड़े कागजों को छूआ भी नहीं, बल्कि चुप बैठा सिगरेट पीता रहा और उस बड़े पेपर-वेट वाले ऐश ट्रे में राख और सिगरेट के टुकड़ों का ढेर धीरे-धीरे बढ़ता गया। एक या दो बार उसने अपने अधिकारी को उस बड़े कमरे से होकर गुजरते देखा। गुजरते समय अधिकारी ने सिर घुमाकर उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर देखा; किंतु वह बोला कुछ भी नहीं। अंततः क्रैफोर्ड सीढ़ियों से नीचे उतरा

और अपनी मोटर में बैठकर घाटी की ओर चल पड़ा। सूरज आकाश में काफी ऊपर चढ़ आया था, धूप तीखी थी और गाड़ी में होने के बावजूद क्रैफ़ोर्ड के पसीना निकल रहा था। उसने घाटी के प्रवेशद्वार के निकट गाड़ी एक ओर खड़ी कर दी और उस धूल भरी सड़क से होकर पैदल मकान की ओर चलने लगा। उसे उम्मीद थी कि खाने पर ही मैथ्यू से उसकी भेंट हो जायेगी।

"कैसे हो, क्रैफ़ोर्ड!" मैथ्यू बोला।

क्रैफ़ोर्ड चौंक कर घूमा और उसने मैथ्यू को निकट की पहाड़ी की ढलान पर एक वृक्ष के नीचे बैठे देखा। वह एक सिगरेट पी रहा था और उसकी अँगुलियों से होकर उसका भूरे रंग का धुआँ साधा उस गर्म-नीरव दोपहरी में ऊपर की ओर उठता जा रहा था।

क्रैफ़ोर्ड सड़क पर से उतर पड़ा और उस धूमिल-मलिन घास से होता हुआ, मैथ्यू के निकट उस साये की ओर बढ़ा। क्रैफ़ोर्ड जब तक वहाँ पहुँचा, मैथ्यू उठकर खड़ा हो गया था।

"मैंने राइस के बारे में सुना—" क्रैफ़ोर्ड बोला—"लेकिन मुझे इतनी देर से खबर मिली कि शव-संस्कार में आना..."

"हाँ!" मैथ्यू बोला—"मैंने अनुमान लगा लिया था कि तुम्हें यह समाचार नहीं मिला..."

क्रैफ़ोर्ड ने बड़े गौर से उसकी ओर देखा। "मुझे उम्मीद है, इसके लिए तुम हमें दोष नहीं दे रहे हो, मैथ्यू—" वह बोला—"मेरा मतलब टी. वी. ए. से है।"

मैथ्यू ने अपने हाथों की स्थिति बदल ली! "यह आसान होगा—होगा न?" वह आहिस्ते से बोला—"संसार की हर वस्तु यह सर्वाधिक सहज बना देगा। बिना किसी प्रयास के, बिना किसी आधार के, तुम घृणा कर सकते हो, अगर तुम कर सको। तुम्हें कोई जितना प्यार करे, उससे तुम कहीं अधिक घृणा कर सकते हो।"

"इसे सहन करना बड़ा कठिन है—" क्रैफ़ोर्ड असमर्थतापूर्वक बोला—"भयानक रूप से कठिन। मैं..."

"मुझे इसे सहना ही है—" मैथ्यू बोला—"ठीक उसी तरह, जिस तरह अब मुझे अकेले ही फसल उगानी है। जो जरूरी है, मनुष्य उसे हमेशा ही कर सकता है, क्रैफ़ोर्ड!"

क्रैफ़ोर्ड जमीन पर बैठ गया और उसने एक छोटे पेड़ से अपनी पीठ टिका

दी। मैथ्यू भी उसके साथ बैठ गया और क्रैफोर्ड ने अपने पास के पैकेट से एक सिगरेट उसकी ओर बढ़ाया। मैथ्यू ने एक सिगरेट ले लिया और दोनों ने सिगरेट जला लिये। सिगरेट का धुआँ उनके फेफड़ों में भर गया—कड़ा कड़ा सूखा-सा धुआँ। उन्हें सिगरेट का स्वाद वैसा ही लग रहा था, जैसा किसी सूखे दिन, पसीने से लथपथ हो जाने के बाद पीने पर लगता है।

"इससे तो इनकार नहीं किया जा सकता कि फसल तैयार करने में तुम्हें किसी-न-किसी आदमी की आवश्यकता है—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम्हारे पास यहाँ काफी बड़ी जगह है।"

"जेसे जान जल्दी ही वापस आ जायेगा—" मैथ्यू ने कहा—"सच तो यह है कि फसल इकट्ठी करने के पहले ही मैं उसके आने की राह देख रहा हूँ। वह अच्छा काम करनेवाला भी है। तुम उस पर निर्भर रह सकते हो।"

मैथ्यू ने जब यह कहा, उसे इसकी सचाई में विश्वास भी था। अगर जेसे जान कौनी को नहीं पा सका, तब भी—और विशेषतः अगर उसने कौनी को पा लिया और उसने उसके साथ आने से इनकार कर दिया—शीघ्र ही एक दिन वह मलिनमुख चलता हुआ घाटी में वापस आयेगा। वह फिर घर पर होगा और उसके साथ खेतों में काम करता रहेगा। प्रतिदिन वह भीतरी बरामदे में उसके कदमों की आहट सुनने के लिए कान लगाये रहता। मैथ्यू के कथन में जो गहराई थी, उसका अनुभव करते हुए क्रैफोर्ड ने उसकी ओर उत्सुकता से देखा। वह मन-ही-मन मना रहा था कि मैथ्यू का कथन सच निकले। मैथ्यू को अब जेसे जान की इतनी सख्त जरूरत थी—जितनी जरूरत उसने पहले कभी किसी के लिए नहीं महसूस की थी।

"मैथ्यू!" वह बोला—"अगले साल वसंत में यह बाँध बंद हो जायेगा।" मैथ्यू ने तेजी से सिर घुमाया और क्रैफोर्ड ने अपना हाथ उठाकर उसे मौन रहने का संकेत किया—"मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारे लिए जगह तलाश करने जा रहा हूँ, जो यहाँ से अच्छी होगी। और मैं चाहता हूँ कि तुम वादा करो, मेरे साथ चलकर उसे देख लोगे। अगर तुम उसे पसंद नहीं करोगे, मैं दूसरी जगह ढूँढ निकालूँगा। और दूसरी! और दूसरी! निश्चय ही, कोई न कोई जगह ऐसी होगी, जो यहाँ से अच्छी होगी, और तुम्हें इतनी पसंद आयेगी कि तुम टी. वी. ए. के विरुद्ध इस व्यर्थ की लड़ाई से चिपटे रहना छोड़ दोगे।"

"उसके साथ एक ही बात गलत है—" वह बोला—"कोई भी दूसरी

जगह, जो तुम खोजोगे, उस पर दूसरे लोगों का नाम होगा। सिर्फ यही जमीन डनबार की है—हमेशा से डनबार की रही है। और इसकी यह विशेषता इसे दूसरी सभी जमीन से भिन्न ठहरा देती है—" वह अचानक हँसा—"अतः तुम जगह तलाश करने की परेशानी उठाओ, बेटे! जब तुम कहोगे, मैं तुम्हारे साथ उसे देखने चलूँगा और मैं उसे देखूँगा। मैं इस सम्बंध में तुम्हारा समाधान कर दूँगा। किंतु मैं तुम्हें अभी और यहीं कह दूँगा, तुम कभी मुझे अपनी जगह से अन्यत्र नहीं ले जा सकोगे।"

उसके ये शब्द उसकी उन्मुक्तता के द्योतक थे। वह क्रैफोर्ड से अब तनिक भयभीत नहीं था—जिस तरह वह टी. वी. ए. और आर्लिस के कारण उससे भय अनुभव करता आया था। वह जानता था कि क्रैफोर्ड ने, जिस तरह वह उससे उसकी जमीन लेने की कोशिश कर रहा था, आर्लिस को भी उससे दूर करने की चेष्टा की थी। उसने वे रातें भी देखी थीं, जब आर्लिस ने क्रैफोर्ड की पुकार का जवाब नहीं दिया था। वह उन रातों में मन-ही-मन गहरे भय का अनुभव करता हुआ आर्लिस के मन में चल रहे संघर्ष को बड़े ध्यान से देखता रहा था। किंतु आर्लिस ने उसका साथ नहीं छोड़ा था; और अब वह कभी उसे छोड़कर नहीं जायेगी। उसकी जो योजना थी, उसके रहते उसे क्रैफोर्ड या टी. वी. ए., या दोनों से डरने की जरूरत नहीं थी। मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर देखा उसकी आँखों में एक मुक्त सरलता थी और वह उसे बड़े प्यार तथा स्नेह से देख रहा था, जैसे क्रैफोर्ड उसका बेटा हो और किसी बचपन की शरारत में फँसा हो!

क्रैफोर्ड स्तम्भित रह गया था। वह जान गया था कि अचानक ही किसी परिवर्तन ने स्थान ग्रहण किया गया था और वह भौंचक हो गया था। मैथ्यू उस दबाव से, जो महीनों तक श्रम करके क्रैफोर्ड ने उसके ऊपर डाला था, एक मिनट में मुक्त हो गया था। विजय के इतने निकट आ और मैथ्यू से स्थिति पर विचार की स्मृति पाकर भी, वह किसी प्रकार सब चीज खो चुका था।

मैथ्यू झुका और उसने क्रैफोर्ड के घुटने पर थप्पड़ मारी। "हाँ, महाशय! वह बोला—"तुम जो भी कहोगे, मैं करूँगा।" वह क्रैफोर्ड की ओर देखकर मुस्कराया। पहली मुलाकात में, जब वे खेतों से तरबूजे ढोकर घर ले गये थे, मैथ्यू के मन में अनायास ही जो मित्रवत् भावना जगी थी, वही पुरानी मैत्री भावना वह फिर अनुभव कर रहा। "सच तो यह है कि मैं इसकी कोई वजह नहीं देख पाता कि तुम घाटी के बाहर मोटर में बैठकर आर्लिस से प्रणय

निवेदन करो। घर आओ और सम्माननीय व्यक्तियों के समान ऊपर बरामदे में बैठा करो।"

क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की ओर ध्यानपूर्वक देखा। "मुझे यह देखकर खुशी है कि तुमने सही निर्णय कर लिया है।" वह बोला—"हम साथ-साथ नयी जगह ढूँढ निकालेंगे और तब मैं तुम्हारे दस्तखत के लिए कागजात ले आऊँगा। तुम अपनी यह फसल पूरी कर ले सकोगे और अगले जाड़े में तुम इतमीनान से अपनी नयी जगह को रहने के लिए ठीक-ठीक कर ले सकते हो..."

"नयी जगह में जाने के लिए!" मैथ्यू बोला। वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपने एक हाथ से घाटी के प्रवेशद्वार की ओर संकेत किया। "तुम वह सँकरी-सी जमीन देख रहे हो न, जहाँ पहाड़ियाँ इतनी निकट चली आयी हैं? फसल संचय करने के समय तक मैं खच्चरों को लेकर वहाँ जाऊँगा और उनकी सहायता से वहाँ भी मिट्टी खोद डालूँगा। घाटी के उत्तर में मैं मिट्टी का एक ऊँचा और मजबूत बाँध अपने लिए बनाऊँगा। यहाँ से जाने की बात ही कौन कर रहा है?"

आश्चर्यचकित क्रैफोर्ड उठ खड़ा हुआ। वह उस ओर देख रहा था, जिधर मैथ्यू संकेत कर रहा था। उसके बदन से पसीना छूट रहा था, गर्मी के कारण नहीं और उसने अपने ललाट पर हाथ रखकर पसीना पोंछ डाला, जो उसकी आँखों में जलन पैदा कर रही थीं।

"तुम सचमुच ऐसा नहीं करनेवाले हो—" वह बोला—"तुम मुझसे मजाक कर रहे हो। तुम ऐसा नहीं कर सकते कि......"

मैथ्यू उसकी ओर घूम पड़ा। "मैं तुमसे बता दूँ कि मैं सच कह रहा हूँ—" वह बोला—"अब तुम भयभीत हो, क्रैफोर्ड! अब तक सारे समय मैं भय से काँपता रहा था—तुम्हारे कारण और टी. वी. ए. के कारण। लेकिन अब मेरे पास कुछ करने का साधन है, जो मैं अपने इन्हीं दोनों हाथों से कर सकता हूँ। मैं उस बाँध को काफी ऊँचा और मजबूत बनाऊँगा और जब टी. वी. ए. का पानी ऊपर उठना शुरू होगा, मैं अपने बाँध के पीछे आराम से छिपा बैठा रहूँगा और तुम सब पर हँसूँगा।"

क्रैफोर्ड जवाब नहीं दे सका। अब उसे मैथ्यू की बातों का विश्वास हो गया था। वह घाटी के प्रवेशद्वार की ओर एकटक देखता रहा। जगह काफी संकीर्ण थी, इसमें शक नहीं। समय मिलने पर घाटी के उस स्थान पर इतनी मिट्टी डाली जा सकती थी, जो किसी बोतल में कार्क डालने के समान, घाटी का

रास्ता बंद करने के लिए पर्याप्त हो। किंतु मिट्टी के बाँध पर आखिर कब तक निर्भर रहा जा सकता है? मैथ्यू उस सम्बन्ध में कभी नहीं सोचेगा। और वह उसे बनायेगा।

मैथ्यू ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया। "आज रात खाने पर आओ, बेटे!" वह स्नेह से बोला—"आर्लिस के हाथों का बना सुस्वादु भोजन तुम्हें काफी दिनों से नहीं मिला है। और तब तुम उसके साथ सामने वाले बरामदे में सारी रात बैठे रह सकते हो, मुझे आपत्ति नहीं। जब भी तुम हम लोगों से मिलना चाहो, घाटी में तुम्हारा स्वागत है—जब भी चाहो!"

क्रैफोर्ड वहाँ से चल पड़ा। वह रुका और उसने चारों ओर नजर दौड़ायी। "तुम अपना मिट्टी का बाँध बना सकते हो, ठीक—" वह बोला—"लेकिन तुम इस सोते के बारे में क्या करनेवाले हो? अगर तुम इस पर बाँध बना देते हो, तो तुम स्वयं ही बाढ़ बुला लोगे। और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो तुम्हारा बाँध तुम्हारे किसी काम नहीं आनेवाला है।"

मैथ्यू को आश्चर्य-अवाक् छोड़ वह तेजी से चल पड़ा। उसने मैथ्यू का संतुलन बिगाड़ दिया था और अपनी कार्यक्षमता और विजय के भरोसे मैथ्यू ने अचानक ही जिस निश्चितता और हर्ष के धरातल का निर्माण कर लिया था, क्रैफोर्ड ने उसे उससे नीचे गिरा दिया था। पर चाहे वे कितने भी एक-दूसरे के निकट क्यों न हों, वे अभी भी एक-दूसरे के शत्रु थे और मैथ्यू पर डाले गये दबाव को पुनर्जीवित करने के अवसर का उसे उपयोग करना ही था।

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड के कथन की सचाई अनुभव की। इसकी सचाई को स्वीकार किये बिना कोई रास्ता नहीं था। उसने इस सम्बंध में सोचा था और सोते की समस्या को उसने नज़रअंदाज कर दिया था—उसकी उपेक्षा कर दी थी, मानो सोता वहाँ था ही नहीं। उसने स्वयं के लिए ही एक फंदा तैयार कर लिया था और अपनी मूर्खता से, अपने अंधेपन से, अपनी सफलता के खुले आश्वासन के कारण उसने स्वयं को क्रैफोर्ड के आक्रमण के लिए खुला छोड़ दिया था।

"मैं फिर भी ऐसा करूँगा—" वह उसके पीछे से चिल्लाया—"मैं बाँध को काम लायक बना कर रहूँगा। अभी तो तुम्हारी नौकरी छुड़वाकर रहूँगा मैं।" क्रैफोर्ड सड़क पर पहुँच चुका था और बिना पीछे देखे, अपनी मोटर की ओर बढ़ रहा था। "रात के खाने पर आर्लिस तुम्हारी प्रतीक्षा करेगी—" मैथ्यू ने उसे पुकार कर कहा। उसने जो निर्भीकता और खुले में आने का साहस प्राप्त

किया था, उसे हताश भाव से वह पुनः पाने का प्रयास कर रहा था—"तुम सुन रहे हो न ? आर्लिस..."

प्रकरण सत्रह

मैथ्यू ने फसल खड़ी कर ली और तब भी जेसे जान वापस नहीं आया था। लेकिन उसने अपनी आशाएँ ग्रीष्म पर ही केंद्रित नहीं कर रखी थीं। वह उस वक्त के विषय में ज्यादा सोचता था, जब फसल इकट्ठी की जानेवाली थी। वह समय अच्छा होता था और अच्छी घटनाएँ उस वक्त घटती थीं। खलिहान उस समय धीरे-धीरे सूखी मकई से भर जाता था, जिसके छिलके उतारे होते थे। उनका निजी ह्विस्की का पीपा भी उसके भार के नीचे छुप जाता था। कपास पक कर फूट पड़ते थे और इस बात की प्रतीक्षा करते थे कि कपास चुननेवाले आयें और अपने दोनों हाथों से झुककर उन्हें तोड़कर ले जायें। नदी-किनारे की झाड़ियों में उस समय कून (अमरीकी कुत्ता) और पॉजम (एक अमरीकी पशु) भी मोटे हो जाते थे। यही समय था, जब जेसे जान घर वापस आवेगा।

काम और उसे निपटाने की जल्दी के बीच, मैथ्यू सोते की समस्या के सम्बंध में सोचा करता। जिधर उसने नजर डालने से भी इनकार कर दिया था, क्रैफोर्ड ने तत्काल ही उसकी योजना का वह कमजोर स्थल लक्ष्य कर लिया था और मैथ्यू उससे विचलित हो उठा था। लेकिन अभी भी उसे विश्वास था कि मिट्टी का बाँध ही घाटी को बचाने का एकमात्र रास्ता था। वह उसे बनाना चाहता था; क्योंकि यह उसकी स्वयं की चीज थी, जिसे वह कठिन श्रम से स्वयं तैयार कर सकता था और बाहर के पानी के तीव्र बहाव के विरुद्ध अपनी रक्षा कर सकता था। किंतु सोता बाहर नदी की ओर बहता था और यह उसकी सुरक्षाओं की एक दरार थी—इसकी यथार्थता से उसी तरह इनकार नहीं किया जा सकता था, जिस प्रकार चीनी और काफी तथा दूकान के बने कपड़ों की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता। अपने दिमाग में बार-बार वह सोते के इस स्थान से लेकर सुदूर पहाड़ों में उसके उद्गम-स्थान तक की कल्पना कर चुका था। हल चलाते हुए उसकी लयबद्ध गति के साथ वह इसके बारे में बार-बार सोचता—यहाँ तक कि उसके दिमाग में इसकी एक प्रतिच्छाया सी बन गयी और यह प्रतिच्छाया इतनी यथार्थ और स्पष्ट थी,

जितना क्रैफोर्ड द्वारा एक बार उसे दिखाया गया हवाई जहाज से तैयार किया हुआ वह नक्शा था।

अंततः उसका काम समाप्त हो गया। वह फसल खड़ी करने के काम से संतुष्ट और प्रसन्न नहीं था, जैसा सामान्यतः वह रहा करता था; क्योंकि वस्तुतः जितना उसने काम समाप्त नहीं किया, उतना छोड़ दिया। अब वह हमेशा अकेला था—सिवा इसके कि कभी-कभी हैटी उसके लिए ताजा पानी लेकर आ जाती थी। अतः अंतिम कुछ कतारों में काम करने और उसके पहले के काम में वस्तुतः कोई अंतर नहीं था। और, इसके अलावा, इसकी फसल में घास बहुत उग आयी थी, जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था और खेत में उग रही घास को वैसे ही छोड़ देना उसकी आत्मा को प्रिय नहीं था; किंतु जहाँ तक वह कर सकता था, उसने किया था और अब अधिक कुछ करने को नहीं था।

उसने बहुत-सी चीजों के चरम से कम में ही उनकी सत्यता स्वीकार कर ली थी। रात में वह बिस्तरे पर अर्द्ध-निद्रित लेटा रहता, थकान से चूर ऊँघता रहता और बाहरी बरामदे से सुनायी देने वाली कोमल-मर्मर आवाजें सुना करता, जहाँ आर्लिस और क्रैफोर्ड बैठे रहते थे। प्रत्येक रात्रि इसी तरह होता रहा, उनकी धीमी-मधुर आवाज और हँसी और बीच-बीच में व्याप्त सन्नाटा, जो उनकी बातचीत से अधिक परेशानी उत्पन्न करने वाला था। लेकिन वह इसे सह लेता था। अब मना करना, अपनी कमजोरी को स्वीकार करना होगा। और उसे आर्लिस पर भरोसा था; अगर वह उसे छोड़ देने वाली थी, तो बहुत पहले ही छोड़कर चली गयी होती।

वह नहीं जानता था कि उसके इस तरह मौन सह लेने से आर्लिस के ऊपर उसके बलिदान का बोझ और भारी हो गया था। गर्मी की इस हर लम्बी रात में आर्लिस, क्रैफोर्ड की उपस्थिति में, अपनी प्रतिज्ञा को कमजोर पड़ती अनुभव कर रही थी, यद्यपि क्रैफोर्ड हमेशा बड़ा नम्र और सहनशील था। ऐसा प्रतीत होता था, उसने आर्लिस के साथ जो समझौता किया था, उससे अधिक उसने स्वयं से समझौता कर लिया था। लेकिन मैथ्यू ने जो इतनी छूट दे रखी थी, उनके बीच यह खतरनाक निकटता पनपने दी थी, उससे आर्लिस की भूख और भी तीव्र हो उठती थी और हर रात्रि क्रैफोर्ड के जाने के समय जब वह उसके साथ मोटर तक उसे छोड़ने जाती, तो उसे अपने भीतर एक तरल-मादक दुर्बलता अनुभव होती और बोलते समय उसकी आवाज़ काँप उठती। अगर क्रैफोर्ड ने उस वक्त उसके साथ कुछ करने का प्रयास किया

होता......वह मन-ही-मन एक तरह से मनाती थी कि मैथ्यू ने अपने स्पष्ट इनकार से जो बल उसे दे रखा था, वह उससे इस तरह अलग नहीं कर लिया होता।

घाटी में आनेवाला क्रैफोर्ड ही अकेला अवांछित व्यक्ति था। नावस राइस की मृत्यु के बाद से फिर नहीं आया था और मार्क आराम से पड़ा सोता, खाता और गोदाम की छाया में बैठ औजारों के बीच सारा दिन गुजार देता। उसने बड़ी आसानी से यह जीवन अपना लिया था। एक या दो बार वह ह्विस्की के उस छोटे पीपे का ढक्कन हटाता और चुपचाप पेट-भर शराब पीकर धुत हो जाता और फिर अपना होशो-हवास खो अचेत-सा पड़ रहता। जहाँ कहीं भी होता, वह नशे में धुत गिर पड़ता और जब नशा टूटता, तो उसके चेहरे पर शर्म की छाप होती, बाल अस्त-व्यस्त रहते और हाथ इस बुरी तरह काँपते रहते कि और काली काफी का प्याला भी अपने होंठों तक उठाकर नहीं ले जा पाता। आलिस को उसका हाथ पकड़ कर उसे स्थिर रखे रहना पड़ता था। इस तरह से सुध-बुध खोकर शराब पीना मैथ्यू को पसंद नहीं था; किंतु उसने मार्क को अपने रास्ते पर चलते रहने दिया। उसने शराब के पीपे को मार्क की पहुँच से बाहर खिसकाने का भी प्रयास नहीं किया। जब उसके मन में शराब पीने की इच्छा बलवती हो, तो किसी जंगली बिल्ले के समान चोरी-चोरी बाहर ताक-झाँक करने के बजाय यह कहीं अच्छा था—कम-से-कम मकई से तैयार की गयी यह शराब तेज, स्वच्छ और अच्छा थी, जो किसी भी आदमी पर जल्दी नशा ला देती थी, उसे अस्वस्थ बना देती थी और फिर बाद में, उसे ज्यों-का-त्यों बना देती थी और उसकी सभी अक्षमताओं को बहा ले जाती थी।

फसल खड़ी करने के समय, दो बार मैथ्यू ने बीच में ही अपना हल चलाना छोड़ दिया था और सोते के किनारे-किनारे ऊपर की ओर दूर तक चला गया था। किंतु इस संकट का अन्वेषण करने के लिए उसके पास अधिक समय नहीं था। बहुत सारे काम पड़े थे और हर बार वह बीच से ही लौट आया था। जिस दिन उसका काम समाप्त हो गया, वह बहुत तड़के ही निकल पड़ा। सोते के उस घुमावदार और पेचीले रास्ते में वह अपनी समस्या का समाधान ढूँढ़ निकालने के लिए कटिबद्ध हो चुका था। उसने उस सम्बंध में बार-बार सोचा था; लेकिन शायद सोते का कोई ऐसा छोटा झुकाव या मोड़ हो, जो उसे याद नहीं आ रहा हो!

और उसने इसे ढूँढ़ निकाला। ढलान पर काफी दूर ऊपर की ओर जहाँ सोता बहुत सँकरा हो गया था, उसने एक जगह ढूँढ़ निकाली, जो प्रायः उसकी जमीन की पहुँच के बाहर थी और उसके उद्देश्य के लिए उपयुक्त थी। यद्यपि यह स्थान भी उसी की जमीन में पड़ता था; फिर भी उसे याद नहीं आ रहा था कि वह पहले भी कभी यहाँ आया हो और इसी कारण वह अपने दिमाग में इस स्थान को लक्ष्य नहीं कर पाया था।

सोते का एक किनारा ऊँचा था और यहाँ पानी का बहाव बहुत तेज था। किंतु दूसरा किनारा नीचा था और वहाँ बाढ़ के पानी के लिए एक रास्ता भी बना था। शुरू शुरू में यह रास्ता बड़ा छिछला था; पर आगे चलकर इसने एक गहरे जलमार्ग का रूप ले लिया था—एक गहरी नाली, जहाँ लगातार बारिश के दिनों में अतिरिक्त पानी ऊपर तक जमा हो जाता था। वहाँ की जमीन पर नदी की ओर देवदार वृक्षों की लम्बी कतार-सी चली गयी थी और कभी-कभी आनेवाले पानी के तेज बहाव ने उन वृक्षों की जड़ की मिट्टी चबा डाली थी और उनका एक ओर का हिस्सा साफ दिखने लगा था। यह जलमार्ग देवदार के काँटों से भरा हुआ था। पिछली बार जब पानी इस ओर होकर बहा था, तभी ये काँटे वहाँ बिछ गये थे।

मैथ्यू ने उस जल-मार्ग की अच्छी तरह खोज-बीन की। वह मन-ही-मन डर रहा था कि यह जलमार्ग घाटी में जाकर निकला होगा; किंतु ऐसा नहीं हुआ। घाटी की सीमा पर खड़ी पहाड़ी धीरे-धीरे काफी ऊँची होती चली गयी थी और लगभग नदी के सारे रास्ते तक फैलती गयी थी। बीच की वह जमीन काफी ऊँची, सँकरी और उर्वरा थी, जिस पर कभी खेती नहीं की गयी थी। वह बलूत और देवदार के छोटे छोटे वृक्षों से ढकी थी। नदी के लिए नये मार्ग का निर्माण करता हुआ सोता इधर से गुजरेगा और वह इससे मुक्ति पा जायेगा।

वह सोते की ओर वापस लौटा। वह धरती की बनावट की मन-ही-मन तारीफ कर रहा था, जिससे पानी को अपने मनचाहे रास्ते से नदी तक पहुँचने की सुविधा थी। उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि पानी ने अपने बहाव के लिए इसे छोड़कर घाटी की ओर क्यों रुख किया था, जो वस्तुतः बड़ा कष्टदायक मार्ग था। वह नहीं जानता था कि डेविड डनबार ने, इस घाटी को ढूँढ़ निकालने के बाद, बिलकुल इसी स्थल पर सोते का रास्ता मोड़ दिया था और जिस जल मार्ग को मैथ्यू ने ढूँढ़ निकाला था, सोते का पुराना और प्राकृतिक रास्ता था। जलमार्ग घाटी से होकर निकालने की सूझ डेविड डनबार की थी।

डेविड डनबार ने दिन-भर कठोर श्रम करके यह काम पूरा किया था। उसने फावड़ा लेकर जमीन काट, सोते का एक किनारा ऊँचा कर दिया था, जिससे सोता बहते-बहते दूसरी ओर मुड़ गया था। किंतु अब यह सोते का बहाव तेज था--बहुत तेज और इसकी दिशा मोड़ने के लिए, मैथ्यू को एक सुदृढ़ बाँध बनाना पड़ेगा। किंतु उसे इसे कार्यशील भी बनाये रखना था। बिना रुके वह अपने खलिहान तक चला आया। वहाँ उसने गाड़ी में खच्चरों को जोता और उस पर कुल्हाड़ा तथा फावड़ा रख लिया। औजार जहाँ रखे थे, वहाँ से कुछ औजार भी उसने ले लिये। तब वह बड़े श्रम से स्क्रेपर (एक प्रकार का औजार) घसीट कर गाड़ी की ओर से जाने लगा। मार्क घूमकर खलिहान के किनारे आ खड़ा हुआ और रुक-रुक कर उस ओर गौर से देखने लगा।

"क्या करने जा रहे हो तुम अब?" वह बोला।

मैथ्यू हाँफता हुआ, रुक गया। "इसे इस गाड़ी में रखने में मेरी सहायता करो।" वह बोला। दोनों ने मिलकर हाँफते हुए उस भारी-चौड़े औजार को गाड़ी में रख दिया। तब मैथ्यू रुका और मार्क की ओर देखने लगा, जो वहाँ जमा उन औजारों को भौंचक-सा देख रहा था।

"तुम्हारे मन में क्या है, मैथ्यू?" उसने फिर पूछा।

"मैं अपने लिए एक बाँध बनाने जा रहा हूँ–" मैथ्यू बोला—"तुम मेरी सहायता करना चाहते हो?"

मार्क ने सहमति जताते हुए अपना सिर हिलाना शुरू किया। "निश्चय ही मैं तुम्हारा हाथ बँटाऊँगा—" वह बोला—"तुम जानते हो, मैं तुम्हारा हाथ बँटाने के लिए कुछ भी कर सकता..."

मैथ्यू थोड़ा हिचकिचाया। मार्क के वश का यह काम नहीं था। मैथ्यू का हाथ बँटाने के लिए उसे काफी श्रम करना पड़ जायेगा। वह पसीने से लथपथ हो जायेगा, काँपने लगेगा और उसे तकलीफ हो जायेगी। लेकिन अगर थोड़ी-सी मदद भी......उसने सोचना बंद कर दिया और कहा—"तब दूसरा फावड़ा ओर कुल्हाड़ा ले लो और आओ मेरे साथ!"

वे गाड़ी में सवार हो गये और मैथ्यू ने खच्चरों को चाबुक मारी। उसने उनकी लगाम कसकर पकड़ ली थी और उसकी उतावली में खच्चर छलाँगें मारते चले जा रहे थे। खच्चर अधीरता से कूदते चले जा रहे थे। उन्होंने उम्मीद की थी कि सदा की भाँति उन्हें आज भी खेत में ही जाना पड़ेगा।

घाटी की तलहटी से, बाँध बनायी जानेवाली जगह तक मैथ्यू को रास्ता बना कर चलना था और उसने खच्चरों की चाल धीमी कर दी। बड़े-बड़े वृक्षों के बीच से उन्हें मोड़ता हुआ वह ले चला। एक-दो बार बीच में रुककर उसने रास्ते में पड़ने वाले उन छोटे पेड़ों को काट डाला, जो गाड़ी के पहियों के नीचे नहीं झुकाये जा सकते थे। जब वे लोग नियत स्थान पर पहुँचे, तो मैथ्यू पसीने से नहा उठा था।

मार्क नीचे उतर गया और चुपचाप खड़ा मैथ्यू को खच्चरों को खोलते देखता रहा। मैथ्यू ने उन्हें गाड़ी के पहियों से बाँध दिया। फिर उसने गाड़ी में से एक कुल्हाड़ी उठायी और सोते के किनारे तक पहुँचा।

"मैं यहाँ बाँध बनाने जा रहा हूँ—" जो स्थान उसने चुना था, उसकी ओर संकेत करते हुए उसने मार्क से कहा। "हम अच्छे और मजबूत पेड़ों को काट डालेंगे और उन्हें यहाँ सोते में रख देंगे, जिससे जब हम मिट्टी डालना शुरू करें, तो मिट्टी उन पर टिकी रह सके, उन्हें पकड़े रह सके। यह बाँध काफी मजबूत और भारी होगा।"

"तब तुम्हें खेतों को सींचने के लिए सोते से पानी नहीं मिलेगा—" मार्क बोला—"बस, तुम्हारे हिस्से में सोते के स्थान पर एक सूखी सतह होगी......"

"दुरुस्त !" मैथ्यू ने कुछ याद से कहा—"एक सूखी सतह! मैं बस, वही चाहता हूँ।"

वह एक पेड़ के पास पहुँचा, जिसका तना उसकी कमर के समान मोटा था और उसे काटने में जुट गया। वह बड़ा उग्र बन काम कर रहा था और अपनी सामान्य गति से कहीं अधिक तेजी से कुल्हाड़ी चला रहा था। बहुत जल्दी वृक्ष सोते की ओर नीचे गिर पड़ा।

"छाँट डालो इसे—" मैथ्यू ने थोड़े-से शब्दों में कहा इसे और दूसरा वृक्ष काटने के लिए बढ़ गया। मार्क ने उस पेड़ की शाखाएँ करनी आरम्भ की। वह बड़े बेढंगे ढंग से कुल्हाड़ी चला रहा था, जैसे पहले की अपनी सारी निपुणता भूल गया हो और उसका काम समाप्त होने के पहले ही मैथ्यू ने दूसरा पेड़ काट गिराया। मैथ्यू ने शाखें छाँटनी आरम्भ की और तब दोनों मिलकर उस पेड़ के तनों को सोते तक खींचकर ले गये। पानी के सशक्त बहाव से जूझते हुए मैथ्यू ने उन भारी तनों को सोते में डाल दिया। तना तेजी से नीचे डूबने लगा और उसका लंगर डालने के लिए मैथ्यू को काफी

श्रम करना पड़ा। उसकी साँस फूल आयी। वह वहाँ उस तने को पकड़े खड़ा रहा और मैथ्यू की ओर उसने जलती आँखों से देखा।

"पेड़ की उन सीधी शाखाओं में से कुछ को छाँटकर नुकीली बनाकर लाओ—" वह हाँफता हुआ चिल्लाया—"जल्दी करो!"

मार्क को उन आधार-स्तम्भों को लेकर आने में ऐसा लगा, जैसे काफी समय बीत गया। मैथ्यू ने उन्हें सीधा सोते की सतह में गाड़ दिया और कुल्हाड़ी की मूठ से उन्हें तब तक ठोकता रहा, जब तक वे मजबूती से गड़ नहीं गये। अब वे सोते की वेगवान धारा का सामना करते खड़े थे और लकड़ी के उस कुंदे को उन्होंने थाम लिया था। तब मैथ्यू पानी से बाहर निकल आया और उसने कुछ और मोटी शाखाएँ एक कतार से वहाँ इधर-से-उधर तक मजबूती से गाड़ दीं। पानी का बहाव रुक कर घूमा और सोते की सतह में खड़े उन दोनों कुंदों के नजदीक चक्कर काटने लगा। इस रुकावट का वे शोर मचाते हुए प्रतिकार कर रहे थे। आनेवाले दिनों में मैथ्यू उनके इसी शोरोगुल से घृणा करने वाला था। जब तक यह काम समाप्त हुआ, सूरज डूब चुका था। दोपहर का खाना खाने के वक्त भी वे काम में जुटे रहे थे। मैथ्यू की उतावली में उन्हें इसके सम्बंध में सोचने तक का अवकाश नहीं मिला था। अनिच्छापूर्वक वहाँ से रवाना होने के पहले, मैथ्यू अपने श्रम के उन प्रमाणों को खड़ा देखता रहा।

फसल जमा करने का वक्त आने तक का समय मैथ्यू को उस बाँध बनाने में लगाना पड़ा। वह अकेला ही बाँध बना रहा था। सूरज निकलने के साथ वह प्रतिदिन अपने काम में जुटा रहता और जब तक बिलकुल अंधेरा नहीं हो जाता, वह काम करना बंद नहीं करता। इस सारे समय के कुछ हिस्से तक मार्क उसके साथ होता था; लेकिन काम बड़ा कठिन था, बहुत जल्दी का था और मार्क के लिए स्थायी रूप से उसे करना बड़ा मुश्किल था। मैथ्यू इस मामले में मार्क के प्रति सख्त था। प्रति सुबह उसने मार्क से यह पूछने का नियम बना लिया था कि वह उसकी मदद को आ रहा है या नहीं। मार्क के लिए स्पष्ट शब्दों में 'हाँ' या 'ना' कहने के सिवा कोई सूरत नहीं बच जाती थी। एक आदमी के वश से कहीं अधिक काम था और जितना सम्भव था, उसे मार्क से काम लेना था। जब मार्क उसके साथ चलता, तो उसे खुशी होती—ऐसे वक्तों पर भी, जब वह जानता था कि मार्क ने सिर्फ इसलिए हामी भरी थी कि वह मैथ्यू के सीधे और कड़े प्रश्न के उत्तर में यह कहने में लज्जा अनुभव करता था—" नहीं, आज तो सम्भवतः मैं साथ नहीं दे पाऊँगा "

दिन-पर-दिन मैथ्यू सोते में एक कतार से गाड़ी गयी लकड़ियों के निकट बड़े-बड़े कुंदों और झाड़-झंखाड़ों का ढेर लगाता गया। जब उसने उन्हें तनाव अधिक हो उठने से नदी की धारा की ओर नीचे झुकते देखा, तो उसने अपने काम की शक्ति दुगुनी कर दी। कमर तक पानी में खड़ा होकर लकड़ियों को नदी की सतह पर दृढ़ता से जमाता। कुंदे और झाड़-झंखाड़ डालने का काम जब समाप्त हो गया, उससे माटी डालना शुरू किया। सूरज की गर्म-तीखी रोशनी में घंटों खड़ा वह जमीन खुरचनेवाले यंत्र के जरिये कड़ी-सख्त मिट्टी खोदता। पसीने से लथपथ, काले पड़ गये शरीरवाले खच्चर यंत्र को खींचने और श्रम के कारण जोर से हिनहिनाते। वह अपने खच्चरों के दोनों जोड़ों को बदल-बदल कर उनसे काम ले रहा था। मैथ्यू का जमीन खोदने का यह काम किसी औरत के बर्तन में उठाकर कूड़ा फेंकने के समान ही था—सिवा इसके कि यंत्र को खींचने के लिए दो खच्चरों की जरूरत पड़ती थी और जब वह मिट्टी छोड़ता हुआ चलता, तो मैथ्यू को उसके हत्थों को नियंत्रण में रखना पड़ता था। जब भी कभी यंत्र के नीचे जमीन में गड़ी किसी पेड़ की जड़ आ जाती, तो उसे जोरों का धक्का अनुभव होता, उसकी बाँहें भुनभुना उठतीं, चाबुक के समान उसका शरीर बल खा जाता, सिर को झटका लगता और साथ ही उसके दाँत आपस में टकरा जाते।

एक मामले में वह भाग्यशाली था। इतनी घोर बारिश कभी नहीं हुई कि जो उसके प्रति दिन की मेहनत मिट्टी में मिला देती। आकाश साफ और गर्म बना रहा। कभी-कभी वह गरज उठता और बारिश शुरू हो जाती थी। किंतु वह बहुत थोड़ी और अपर्याप्त इतनी छुटपुट होती कि मैथ्यू के विरुद्ध सोते को सशक्त बना देने का प्रश्न ही नहीं उठता। अगस्त का महीना बीत रहा था और मैथ्यू प्रतिदिन घंटों, तेज गर्मी में एकाग्रचित्त हो मेहनत करता। पानी का बहाव और मार्क की दुर्बलता के विरुद्ध वह संघर्ष करता रहा और सोते के पानी की सतह उसके बाँध के नीचे हो गयी। पानी धीरे-धीरे कम होता गया और धूप में सूखने के लिए कीचड़ बच रही। किनारे पर खड़े सरई के पौधे, जो एक कतार में घाटी के भीतर तक चले गये थे, अपनी सदा की ताजी और चमकीली हरितिमा खोने लगे—उनका रंग धूमिल हरा हो गया। और, बाँध के पीछे पानी जमा होता रहा। इंच प्रति इंच पानी अपनी इस रुकावट के विरुद्ध संघर्ष करता, सोते में काफी पीछे तक एकत्र होता रहा; किंतु मैथ्यू बाँध को ऊँचा—और ऊँचा बनाता गया—सतह ऊपर उठती गयी।

वह काम करता, जब तक अंततः पानी की एक पतली-सी धारा एक ओर होकर बह निकली। जहाँ से मैथ्यू ने जमीन खोदी थी, वहाँ होकर पानी की वह धारा निकली और सूखी जमीन में तुरत ही सूख गयी। मैथ्यू ने बाँध में डालने के लिए मिट्टी का जो बोझ यंत्र पर उठा रखा था, उसे वैसे ही रहने दिया और नदी की इस नयी धारा को देखने लगा। पहले जो पतली सी छोटी धार निकली थी, उससे जैसे प्रोत्साहित होकर, पानी की दूसरी धार निकली और तब काफी पानी अपने इस नये रास्ते के अन्वेषण में निकल पड़ा।

मैथ्यू यंत्र से दूर हट आया और अपने द्वारा बना उस छोटे-से सोते के किनारे झुक कर देखने लगा। साँस रोके वह उन जलकणों को देखता रहा, जो एक-के-बाद-एक आते चले जा रहे थे। वह चाहता था कि अपने हाथों की मदद से पानी को जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने में सहायता करे; लेकिन उसे लगा, यह उचित नहीं होगा और वह वहाँ से हिला नहीं। वह देखता रहा, किस तरह धरती, पानी के इंच-प्रति-इंच बहाव के साथ गीली होती जा रही थी। वह सब पानी को सोख ले रही थी, जिसके बाद में, पानी अपनी पूरी गहराई से नदी की सतह तक पहुँचने के रास्ते की खोज कर सके।

धीरे-धीरे, पानी बढ़ता गया, घंटे गुजरते गये और मैथ्यू, काम भूल कर, झुका, उसे देखता रहा। पहले पानी धीरे-धीरे बहता रहा, फिर उसकी गति तेज हुई और रास्ते में पड़ने वाले देवदार के छोटे छोटे झाड़-झंखाड़ों से उलझ कर रुक गयी। फिर उन अवरोधों पर विजय पाकर पानी उस नये इलाके से होकर बढ़ निकला। सोते से निकली पानी की यह धार अब चौड़ी होती जा रही थी और मैथ्यू के पीछे से एक नयी धार फूट निकली। मैथ्यू जमीन पर पालथी मार कर बैठ गया और पानी की इस नयी धार की खबर होने के पहले ही, वह उसकी ब्रीचेज को भिगोती निकल गयी। तब पानी का पहला बहाव तेजी से उस जलमार्ग में गिरा और आगे बढ़ने लगा। वहाँ की जमीन को गीली, कीचड़युक्त बनाते हुए वह चक्कर काटता बढ़ रहा था। मैथ्यू अब अधिक स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सका। वह दौड़कर फावड़ा उठा लाया और पानी की उस धार के साथ की जमीन आवली से खोदने लगा। फावड़े से वह कीचड़-युक्त उस नम जमीन को जल्दी-जल्दी काट कर एक किनारे फेंकने लगा और पानी उसके फावड़े को छूता आगे बढ़ निकला। उसने उस सख्त जमीन में, जहाँ पानी धीरे-धीरे रेंगता हुआ बढ़ रहा था, एक खाई बना डाली और तब हाँफते हुए खड़ा हो गया। पानी की धार इस खाई से होकर उस

ढालुवे स्थान की ओर तेजी से बढ़ी, जहाँ से नीचे गिर-गिरकर पानी जमा हो रहा था।

मैथ्यू ने फावड़ा जमीन पर डाल दिया और पानी के पहले बहाव के साथ उस जलमार्ग में दौड़ पड़ा। पानी तेजी से नदी की ओर अग्रसर होता जा रहा था। मैथ्यू देखता रहा और पानी की सशक्त धार अपने साथ देवदार के झाड़-झंखाड़ों और पत्रों को बहा ले चली। दौड़ती, मुड़ती और जलमार्ग के सबसे निचली सतह के साथ यह धार बढ़ती जा रही थी। वह कुछ दूर तक उसके साथ-साथ चला और तब वापस मुड़ पड़ा। उसने जो नया सोता बनाया था, उससे वापस ऊपर की ओर चलता हुआ वह अपने काम करने की जगह तक आ रहा था। वह जानता था कि उसे अभी बहुत सारे काम करने थे। बाँध को और ऊँचा बनाना था। और पानी के इस बहाव की गति को तेज करनी थी, जब तक कि पुराना जलमार्ग, बाँध के तनाव और दबाब को कम करते हुए, सोते के सारी पानी को स्वयं में आश्रय न दे दे। किंतु वह जीत गया था। वह जानता था कि इस स्थिति में उसकी जीत हुई थी। और उसने बाँध बनाने के बारे में काफी जानकारी हासिल कर ली थी और उसका यह ज्ञान उसे यह बताने को पर्याप्त था कि अभी सबसे बड़ा काम ज्यों-का-त्यों, अछूता, उसके सामने पड़ा है। घाटी के दरवाजे पर बाँध बनाने के प्रयास में उसका यह प्रयास बड़ा छोटा था और अब, इतना कर चुकने के बाद ही, उसने अनुभव किया कि उसने जो काम स्वयं शुरू किया था, उसका विस्तार कितना बड़ा था। वह अकेले इसे कर सकेगा, यह संभव नहीं। उसे मदद लेनी ही होगी—काफी मदद लेनी होगी और इस बारे में सोचते हुए उसे उन व्यक्तियों का स्मरण हो आया, जो राइस के शव-संस्कार में आये थे। और नावस! और जेसे जान, जो शीघ्र ही घर वापस आ जायेगा। क्योंकि पहले की तुलना में वह अब अधिक अपने विचारों पर दृढ़ था। शुरू से आखिर तक वह विजयी होकर ही रहेगा।

वह घर चला आया और उसने खच्चरों को अस्तबल में रख दिया, जहाँ मार्क उन्हें खिलाने वाला था। तब वह सोते पर गया। पानी का बहाव अब बिलकुल ही रुक गया था। सोते के निचले हिस्से में कीचड़ दिखायी दे रहा था; क्योंकि वहाँ अब गँदला पानी ही बच रहा था और जहाँ पहले लबालब पानी भरा रहता था, वहाँ से होकर उस ओर गये जानवर के पैरों के ताजे निशान दिखायी दे रहे थे। जहाँ-जहाँ जमीन गहरी थी, वहाँ पानी जमा हो गया था और मछलियाँ वहाँ जमा हो गयी थीं। पानी गँदला था, अतः उस

सीमित गहराई में वे सब-की-सब ऊपर उभर आयी थीं, जिससे उन्हें प्राण-वायु प्राप्त हो सके। कुछ छोटी मछलियाँ अब तक मर भी चुकी थीं और पीठ के बल पानी पर उनका मृतशरीर तैर रहा था। उनकी अगल-बगल का पानी बड़ा भयावह और अजीब-सा लग रहा था। मछलियों के इस तरह मरने से मैथ्यू ने मन में एक उदासी अनुभव की। लेकिन यह जरूरी था। अगर वह अपनी घाटी को बचाने का इच्छुक था, तो दूसरा कोई रास्ता नहीं बचा था—कोई भी नहीं! कुछ मछलियाँ आक्सीजन-विहीन इस छिछले जल से नदी के सुरक्षित वातावरण में सम्भवतः पहुँच जायें; किंतु अधिकांश मछलियाँ ऐसा नहीं कर पायेंगी। वह सोते के किनारे-किनारे नीचे की ओर चलता गया, जहाँ नदी का बचा हुआ जमा पानी दिखायी देने लगा था। वह वहाँ यह देखने लगा कि उसका बड़ा बाँध यहाँ पर बनेगा।

बाँध इतना बुरा भी नहीं होगा। यहाँ पानी जरूर था; पर वह नदी का बचा हुआ पानी था, जिसमें गति नहीं थी और सोते के पानी के दबाव के अभाव में इसे भरना आसान होगा। सिर्फ काम करने की जरूरत होगी—काफी काम और शीघ्र ही उसे फसल संचय करने के लिए यह काम बंद करना होगा। लेकिन उसके पहले का समय वह अपने लिए सहायता जुटाने में लगा सकता था—उसे आदमियों की जरूरत पड़ेगी, खच्चरों की जरूरत पड़ेगी और जमीन खोदने वाले यंत्रों की जरूरत पड़ेगी, जिससे घाटी के दरवाजे पर जल्दी से मिट्टी इकट्ठी की जा सके और पहाड़ी के बराबर तक, घाटी के दरवाजे को पूरा घेरते हुए बाँध बनाया जा सके। वह यह बाँध सोते की सतह पर बनाकर उसे भी पूर्णतया बंद कर देना चाहता था। वह इस क्षेत्र में अपने बाँध के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश करता हुआ घूमता रहा। मकई के पके खेत के समान ही वह अपने कल्पना-चक्षु से इसे सम्पूर्ण देख रहा था। अंततः जब शाम का धूमिल अंधेरा उतर आया, वह सड़क से होकर घर की ओर बढ़ा। उसे भूख लग आयी थी। वह थक गया था; लेकिन दिन जिस तरह सफलतापूर्वक बीता था, उसकी उसे खुशी भी थी। किसी मोटर की अगली बत्तियों का तीव्र प्रकाश घाटी में फैल गया और वह रुक गया। उसने देखा, वह क्रैफोर्ड की मोटर थी। मैथ्यू मुस्कराया। क्रैफोर्ड आज अन्य रातों की अपेक्षा जल्दी आ गया था। वह बत्तियों के उस पीले प्रकाश के दायरे में चला आया और उसने अपना हाथ उठा दिया। क्रैफोर्ड ने मोटर रोक दी और बगल की खिड़की से उसने सिर बाहर निकाल लिया।

"मि. मैथ्यू!" वह बोला।

"कैसे हो?" मैथ्यू बोला और हँस पड़ा—"क्रैफोर्ड साहब प्रणय-निवेदन करने आये हैं। ओ-हो!"

क्रैफोर्ड उसके साथ ही हँस पड़ा। "आप तो जानते ही हैं, यह कैसा होता है मि. मैथ्यू!" वह बोला—"एक रात भी आप बेकार नहीं जाने दे सकते। अभी भी उस बाँध के बारे में चिंतित हैं, जिसके बनाने की आपने चर्चा की थी?"

"नहीं!" मैथ्यू प्रसन्नतापूर्वक बोला—"यहाँ आओ! मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ।"

क्रैफोर्ड गाड़ी से उतर आया और उसकी बगल में साये के समान खड़ा हो गया। वे दोनों सोते के किनारे तक, उस पुराने स्थान से गुजरते हुए पहुँचे, जहाँ तैरने का स्थान बना था। मैथ्यू खड़ा क्रैफौर्ड की ओर देखता रहा और क्रैफोर्ड सोते की ओर देख रहा था। क्षणभर तक गौर से क्रैफोर्ड देखता रहा। पानी की सतह नीचे उतर आयी उसे दिखायी दे रही थी और तब वह मैथ्यू की ओर मुड़ा।

"हुआ क्या?" वह बोला—"तुम..."

"मैंने इस सोते की ऐसी व्यवस्था कर दी, जिससे मैं इस पर बाँध बना सकूँ—" मैथ्यू ने विजेता के स्वर में कहा—"दूर उधर मैंने सोते के पानी को बहने के लिए एक नया मार्ग दे दिया, जिससे अब यह घाटी से होकर बिलकुल बहने ही वाला नहीं है।"

जहाँ तैरने का तख्ता लगा था, वहाँ उस ठूँठ पर क्रैफोर्ड धम से बैठ गया। अंधेरे में उसने मैथ्यू की ओर देखा। जब उसने मैथ्यू को सोते की समस्या से अवगत कराया था, उस क्षण मैथ्यू के चेहरे पर पराजय की जो नंगी तस्वीर उसने देखी थी, वही उसके चेहरे पर भी अभी लक्षित थी। वह नहीं चाहता था कि उस वक्त उसका चेहरा कोई देखे और उसे प्रसन्नता थी कि मैथ्यू उसका चेहरा आसानी से नहीं देख सकता था।

"तुम्हें रोकने का कोई रास्ता नहीं है—" वह बोला—"संसार में कोई भी रास्ता नहीं।"

"नहीं!" मैथ्यू ने सहमति जताते हुए कहा।

कुछ दिनों के लिए, जब उनके बीच संधि हो गयी थी, वे पुनः एक-दूसरे के निकट आ गये थे। किंतु वह पुराना पृथकत्व पुनः उनके बीच आ गया था

—अपने उद्देश्य, अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वे अपने-अपने भीतर तनाव अनुभव कर रहे थे।

"मैं इस इलाके का चक्कर लगाता फिर रहा हूँ—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम्हारे लिए एक जगह की तलाश कर रहा हूँ, जिसे तुम खरीद सको। मैंने मन-ही मन उन सभी जगहों के बारे में सोच कर उन्हें छोड़ दिया, जिन्हें पाकर कोई भी व्यक्ति गर्व अनुभव करेगा; क्योंकि तुम्हारे सोचने का ढंग मैं जानता हूँ। किंतु अंततः तुम्हारे उपयुक्त मैंने एक जगह ढूँढ़ निकाली। उसे देखने के लिए मैं कल तुम्हें वहाँ ले जाने वाला था।"

"मैं जाऊँगा—" मैथ्यू ने कहा—"मैंने वचन दिया है। लेकिन कल नहीं। मुझे........." वह रुक गया। तब वह फिर बोला—"मुझे उसके बारे में बताओ।"

क्रैफोर्ड ने एक सिगरेट जला लिया, जिससे उसके हाथ किसी काम में लगे रहें। "अच्छी जगह है वह—" वह बोला—"अच्छी काली उपजाऊ जमीन, पर्याप्त पानी और डनबार की घाटी से बड़ी भी। वहाँ के मकान में विद्युत् आ भी चुकी है—वह टी. वी. ए. की विद्युत्-लाइन में है—और सबसे नजदीक का पड़ोस आधा मील दूर है। कपास उगाने के लिए जमीन काफी अच्छी है और एक सुंदर चरागाह है, जहाँ अबाध रूप से बहते झरने से पानी पहुँचता रहता है।"

"सब बना-बनाया और तैयार किया हुआ—" मैथ्यू बोला—"जिस पर दूसरे व्यक्ति के नाम का वजन होगा। कहाँ है यह?"

"वह 'आउटला की पुरानी जगह' के नाम से जानी जाती है—" क्रैफोर्ड ने कहा। किंतु वह जानता था कि इससे कुछ लाभ नहीं होने का। मैथ्यू मन-ही-मन उस जगह को नापसंद कर चुका था।

"निश्चय ही," मैथ्यू बोला—"मैं उसे जानता हूँ। 'आउटला की पुरानी जगह'।" उसने इसके सम्बंध में सोचा जैसे वह किसी नक्शे पर उसका सही-सही स्थान ढूँढ़ निकालने में लगा हो। "शहर के बहुत करीब भी है। राइस के डेरी फार्म के लिए बढ़िया जगह होती—काफी बढ़िया जगह। किंतु मैं..." वह रुक गया—"आउटला उसे बेच क्यों रहा है?"

"वह शहर में जाना चाहता है—" क्रैफोर्ड ने कहा।

मैथ्यू ने इनकार में अपना सिर हिलाया। "जब से मुझे याद है, आउटला-परिवार उसी जमीन पर रहता आया है—" वह बोला—"उसके पिता ने द्वितीय महायुद्ध के बहुत पहले इसे स्नोडग्रास से खरीदा था।" वहाँ एकत्र हो

रहे अंधेरे में उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा—"तुम चाहते हो, मैं तुम्हारे साथ चलकर उसे देखूँ? कब!"

"नहीं!" क्रैफोर्ड ने कहा। यह एक शब्द उसकी पराजय-स्वीकारोक्ति का द्योतक था। वह उठ खड़ा हुआ—"लेकिन मैं सारे समय—जब तुम अपने मिट्टी के बाँध-निर्माण में लगे दुनिया और नदी के विरुद्ध मोर्चा लेने की तैयारी करते रहोगे—प्रयास में जुटा रहूँगा—" वह रुक गया। उसने उसकी ओर देखकर उसके दिमाग की थाह लेने की चेष्टा की। "तुम इसे कभी समय पर नहीं बना पाओगे—" वह बोला—"अगले साल वसंत तक चिकसा बाँध का काम समाप्त हो जायेगा। तुम सिर्फ इस जाड़े-भर, अब से लेकर उस वक्त तक अकेले एक बाँध नहीं बना सकते। तुम जब काम करते रहोगे, तब जमीन पर बर्फ बिछी होगी, दिन धीरे-धीरे छोटे होते जायेंगे..." उसने इनकार में अपना सिर हिलाया—"एक व्यक्ति और खच्चरों का जोड़ा। तुम असम्भव कार्य में स्वयं को लगा रहे हो, मैथ्यू।"

"मैं अकेला नहीं हूँ—" मैथ्यू ने कठोरता से कहा—"मेरे लड़के हैं, सगे-सम्बंधी हैं। वे सब आयेंगे। मैं कल नाक्स के पास जा रहा हूँ। और जैसे जान भी जल्दी हो लौट आयेगा। फिर मेरा भाई जान और उसका परिवार है। ऐसे डनबार हैं, जिनके बारे में तुमने कभी सुना भी नहीं, क्रैफोर्ड! जब मैं उन्हें बुलाऊँगा, वे आयेंगे।"

नाक्स का नम्बर पहला था। दूसरी सुबह, तड़के ही मैथ्यू ने अपनी टी-माडेल गाड़ी निकाली और घाटी से बाहर आ नदी के किनारे वाली सड़क पर उधर गाड़ी चलाने लगा, जो बाँध जहाँ बन रहा था, वहाँ चली गयी थी। अब वह नाक्स से सहायता माँग सकता था; क्योंकि जिस दिन से नाक्स यहाँ से गया मैथ्यू ने कभी उससे कोई माँग नहीं की थी। वह उससे वापस आने के लिए, रहने के लिए कहना चाहता था—पहले जिस तरह वह उसका बेटा था वैसा ही फिर बन जाने को कहना चाहता था। किंतु सिर्फ अब, व्यक्ति और टी. वी. ए. से मुक्ति की इस गम्भीर समस्या के समय, वह ऐसा कर सकता था।

पुरानी टी-माडेल गाड़ी उस गर्मी में चलती रही और बगल के सीधे ऊपर उठे शीशों के नीचे से उसके चेहरे पर लगने वाले हवा के थपेड़े बड़े सुखद लग रहे थे। अच्छी-पक्की बड़ी और चिकनी सड़क पर आ जाने के बाद भी, जो बाँध के निकट से गुजरती चली गयी थी, उसकी मोटर खड़खड़ाती ही रही। जहाँ से उसे मुड़ना था, वह जगह उसने आसानी से ढूँढ़ निकाली—

एक कँकरीली सड़क, जिस पर से भारी ट्रकों के गुजरने के निशान थे और वहाँ एक बड़ी-सी संकेत पट्टी लगी थी—'चिकसा-बाँध!' तब उसने मोटर की गति पहले से कहीं अधिक कम कर दी। उसके इर्द-गिर्द यातायात बढ़ता जा रहा था—मोटरें और ट्रकें, जिनमें अधिकांश सस्ते किस्म की ट्रकें थीं और सड़क से धूल उड़ाती हुई गुजर जाती थीं। वह भारी यातायात में मोटर चलाने का अभ्यस्त नहीं था और उन नयी-नयी मोटरों के बीच वह अपनी उस मोटर में अटपटा-सा अनुभव कर रहा था। अस्थायी रूप से बनी इमारतें धीरे-धीरे घनी होने लगी थीं और मैथ्यू उनके बीच से गाड़ी चलाता रहा। वह अपने चारों ओर देखता चला था, जैसे वह यह उम्मीद कर रहा था कि नाक्स कहीं-न-कहीं से उसे छुपकर देख रहा होगा। अंततः उसने एक संकेत-पट्टा देखा, जिस पर लिखा था—'टाइम आफिस!' घुटनों तक ऊँचे सफेदी किये गये स्तम्भों के जरिये यह क्षेत्र दूसरे स्थानों से पृथक् कर दिया गया था और मैथ्यू ने अपनी गाड़ी रोककर वहीं लगा दी।

वह गाड़ी से बाहर निकल आया और उसने चारों ओर नजर दौड़ायी। दूर वहाँ, नये भूरे-श्वेत रंग की कंक्रीट की दीवार देख रहा था, जहाँ नदी के ऊपर बाँध बनाया जा रहा था। दूसरे किनारे पर काम में लगे मनुष्य चींटियों की तरह लग रहे थे और जहाँ बाँध की नींव के लिए उन्होंने जमीन गहरी खोद डाली थी, वहाँ की जमीन कच्ची लग रही थी। उसके पीछे, नदी तट पर, मिट्टी के ढालुवे किनारे के नीचे डॉक की चहल-पहल थी, जहाँ बाँध-निर्माण की समाधियाँ लायी जाती थीं और बालू तथा कंकड़ के बोरों का ढेर उस लम्बे यंत्र के चारों ओर लगा था, जो शानदार ढंग से ऊपर उठा हुआ था। मैथ्यू उसी ओर देखता रहा, और उस यंत्र ने छोटे-छोटे कंकड़ों का एक ढेर खड़-खड़ की आवाज़ के साथ नीचे गिरा दिया। उसके और नदी-तट के बीच बालू कंकड़ आदि को मिलाने का यंत्र बैठाया गया था। उस यंत्र के शीर्ष पर एक गोल मीनार थी और वस्तुओं को ढोकर ले आने वाली एक लम्बी और धीमी चाल वाली मशीन उस मीनार में उन वस्तुओं को डाल रही थी। कंकड़ पत्थर मिलाकर एक कर देने वाला यंत्र अभी काम कर रहा था और उसके नीचे कंकड़ पत्थर जोरों की आवाज़ के साथ पिस रहे थे और उससे उसके चारों ओर गर्द छायी थी। इस जल्दीबाजी और शोरोगुल से मैथ्यू का सिर दुखने लगा था। वह फुर्ती से 'टाइम आफिस' के भीतर चला गया और उस ऊँची-सी काउंटर के सामने खड़ा हो गया।

"मैं अपने लड़के नाक्स की तलाश कर रहा हूँ—" वह काउंटर के उस ओर बैठी लड़की से बोला—"नाक्स डनबार! तुम बता सकती हो, वह मुझे कहाँ मिल जायेगा?"

लड़की ने बिना किसी दिलचस्पी के आँखें ऊपर उठायीं। "जब तक यह 'शिफ्ट' (पारी) खत्म नहीं हो जाता, आपको इंतजार करना होगा—" वह बोली—"उधर जाइये, जिधर लोगों के रहने के मकान बने हैं और पता लगा लीजिये कि वह कहाँ रहता है। आप वहाँ बैठकर उसकी प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

मैथ्यू धीरतापूर्वक खड़ा रहा। "मैं उससे अभी मिलना चाहता हूँ—" वह बोला—"क्या तुम मुझे कह सकती हो, वह कहाँ है?"

तब उस लड़की ने उसकी ओर देखा—"क्या बहुत सख्त जरूरत है?"

"हाँ!" मैथ्यू बिना किसी हिचकिचाहट के बोला—"अगर तुम मुझे सिर्फ इतना बता देती..."

"काम करने वाले क्षेत्र में आप नहीं जा सकते—" लड़की बड़े विनीत शब्दों में बोली—"यह नियम के विरुद्ध है!" दफ्तर के एक ओर पीछे की तरफ, एक डेस्क के सामने एक व्यक्ति बैठा था। लड़की उस व्यक्ति से बातें करने चली गयी। उस आदमी के चेहरे पर सिकुड़नें पड़ गयीं। वह उठ खड़ा हुआ और काउंटर के निकट चला आया।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं, वह किस तरह का काम करता है?" वह बोला।

"मेरा खयाल है, वहाँ जो लोग काम कर रहे हैं, वह उन्हीं में होगा—" मैथ्यू बोला—"अगर आप सिर्फ मुझे वहाँ जाने की अनुमति दे दें..."

उसने उस व्यक्ति और उस लड़की को एक दूसरे की ओर देखते देखा। वे दोनों ही अपनी मुस्कान रोकने का प्रयास कर रहे थे। किंतु मैथ्यू घबड़ाया नहीं। उसकी कोई जरूरत ही नहीं थी। वह अपने चौड़े-गठीले शरीर पर अपनी जीर्ण पोशाक और पैरों में भारी तथा मजबूत जूते पहने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। वह उस लड़की की ओर देख रहा था, जिसने ग्रीष्मकालीन पोशाक पहन रखी थी और उस व्यक्ति ने खाकी पैंट और साफ स्पोर्ट शर्ट (खेलने-कूद के समय पहनी जानेवाली कमीज) पहन रखी थी। मैथ्यू तब तक इंतजार करता रहा, जब तक उन दोनों व्यक्तियों ने यह मन-ही-मन तय नहीं कर लिया कि उन्हें क्या करना है। लड़की ने फाइल की एक दराज खोली और उसमें

रखे कार्डों को उलटने-पुलटने लगी। उसने एक कार्ड खींच लिया, उस पर नजर डाली और उसे उस व्यक्ति को दे दिया।

"वह बुलडोजर-चालक है।" वह बोली।

मैथ्यू उसी तरह उसे देखता रहा। "तुम वाल्टर ह्वाइटहेड की रिश्तेदार हो—" उसने कहा—"तुम उसकी मँझली लड़की हो..." उसने क्षणभर मन-ही-मन विचार किया। "क्लारा!" वह बोला—"क्लारा ह्वाइटहेड!"

वह लड़की निस्तब्ध हो, उसे निहार रही थी और मैथ्यू प्रसन्नता से मुस्कराया। "क्यों, मुझे तो अभी तक वे दिन याद हैं, जब तुम एक छोटी-सी बच्ची थी और कपास के खेत में अपने पिता के पीछे दौड़ती फिरती थी।"

लड़की के कपोल लज्जा से आरक्त हो उठे और मैथ्यू ने उसकी ओर से नजरें हटाकर उस व्यक्ति और वापस उसकी ओर देखा। "इसे लज्जित करने का मेरा इरादा नहीं था—" वह धीमे से बोला—"मैं बस......" उसने स्वयं को दृढ़ता से रोक लिया—"अगर आप मेरे लड़के को...

"मैं उसे अभी बुलावा भेजता हूँ—" उस आदमी ने जल्दी से कहा—"जब तक आप इंतजार कर रहे हैं, आप पर्यवेक्षण-मीनार पर क्यों नहीं जाते और जो काम चल रहा है, उस पर एक नजर क्यों नहीं डाल लेते हैं? मैं उसे वहीं भेज दूँगा।"

"मुझे ऐसा करने में गर्व होगा—" मैथ्यू बोला—"इस तरह का बड़ा बाँध बनते इसके पहले कभी नहीं देखा मैंने।"

वह बाहर चला गया। यद्यपि जाने के पहले मैथ्यू ने लड़की की ओर देखकर सहमतिसूचक भाव में अपना सिर हिलाया मुस्कराया; लेकिन लड़की उससे कुछ नहीं बोली। वह लोहे की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पर्यवेक्षण-मीनार पर पहुँचा, जो शीशे से घिरी थी। उसने बाँध पर दूर, लोगों के इधर-उधर आते-जाते झुंड को और नदी के उस ओर रखी मशीनों को देखा।

तो यह था चिकसा! यही वह जगह थी, जहाँ नाक्स रहना चाहता था—इस जल्दीबाजी, शोरगुल और उलझन के बीच! कंक्रीट-पत्थर मिलाने वाला यंत्र काम कर रहा था और मैथ्यू ने उस यंत्र को कंक्रीट का एक बोझ उस दूसरे यंत्र में रखते देखा, जो दूर तक बाँध के ऊपर चला गया था। उसके चलने की खड़खड़ मैथ्यू को यहाँ भी सुनायी दे रही थी। ठीक नीचे दो व्यक्ति खड़े थे—उनके हाथों में एक नीला-सा चौड़ा कागज अधखुला था और वे उस पर पेंसिल से कुछ अंकित करते हुए आपस में बहस कर रहे थे।

अपने-अपने तर्कों पर जोर डालते समय, उनके खाली हाथ जोश में हिल उठते थे। एक ट्रक सड़क पर नीचे जोर से शोर करती, धूल उड़ाती चल पड़ी। कंक्रीट-पत्थर मिलाने वाले उस यंत्र के ऊपरी भाग में कंकड़ों का एक बोझ फिर आया और बड़े जोरों से खड़-खड़ करते हुए उसके भीतर विलीन हो गया।

मैथ्यू ने अपना सिर हिलाया। अगले साल वसंत तक वे कभी यह काम समाप्त नहीं कर पायेंगे। काम में अभी बहुत अधूरापन और अपरिपक्वता थी और लगता था, किसी को यह ज्ञात नहीं था कि वह क्या कर रहा है। "किसी सिरकटी मुर्गी की तरह ही वे भाग रहे थे—" मैथ्यू ने सोचा। किंतु तब भी—यह प्रभावोत्पादक था। बाँध यद्यपि नीचा था, फिर भी वृहत् और सशक्त नजर आ रहा था। किनारे पर जल-नियंत्रण की सुंदर और समुचित व्यवस्था का निर्माण किया गया था—दीवार किनारे के साथ-साथ चली गयी थी। मैथ्यू देख ही रहा था कि नीचे से एक छोटी-सी नाव नदी की सतह पर आयी। पानी को अवरुद्ध करनेवाली उस खाली जगह में पानी भरने लगा। पानी इंच-प्रति-इंच नाव को ऊपर उठाता आ रहा था, जैसे नाव सीढ़ियाँ तय कर रही थी—यहाँ तक कि वह जगह पानी से भर गयी और उसकी तथा नदी की सतह बाँध के ऊपर बराबर हो गयी। ऊपरी दरवाजा खुला और नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ चली। दोनों ओर लोग खड़े थे, जो रस्सियों की सहायता से हर बात की पूरी-पूरी चौकसी रख रहे थे। नाव नदी की ओर आगे बढ़ने लगी। इस सारी क्रिया में आधे घंटे से भी कम समय लगा था। जिस व्यक्ति ने इसका संचालन किया था, वह जल-अवरोधक के ढाँचे पर खड़ा था। अपने नितम्बों पर हाथ टेके वह उस नौका को देख रहा था। तब वह मुड़ा और एक सिगरेट जलाते हुए वापस भीतर चला गया।

लोहे की उस सीढ़ी पर मैथ्यू ने किसी के आने की आहट सुनी और दरवाजे से होकर नाक्स भीतर आया। उसका चेहरा लाल था और उसने अपनी कमीज की बाँह से ललाट पोंछी—पसीने से कमीज की बाँह भीग गयी।

"पापा!" वह बोला—"क्या बात है?"

मैथ्यू उसकी ओर देखता खड़ा रहा—"क्यों, कोई भी बात तो नहीं है, बेटे—" वह बोला—"मुझे उनसे इसलिए अत्यंत आवश्यक कहना पड़ा, जिससे वे तुम्हें जल्दी ढूँढ निकालें।"

नाक्स ने राहत अनुभव की और उसने आराम की साँस छोड़ी। "मैं तो

डर से मर गया था—" वह बोला—"जब से लोग मुझे शइस की मृत्यु..."

"मुझे दुःख है—" मैथ्यू बोला—"मैंने यह सोचा ही नहीं था। नाक्स, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ घर चले चलो।"

नाक्स बिलकुल स्थिर खड़ा रहा। तब वह खिड़की तक पहुँचा और उसने बाहर बाँध की ओर देखा। "मैं कभी ऊपर यहाँ नहीं आया—" वह बोला—"यद्यपि काम करते हुए मुझे काफी दिन गुजर गये। खैर, यह दर्शकों के लिए ही बनाया भी गया था।" मुड़कर उसने मैथ्यू की ओर देखा—"पापा, आप जानते हैं, मैं घर नहीं जाना चाहता। यहाँ मेरी नौकरी है।"

नाक्स की कमीज गंदी और पसीने से भीगी थी और सूरज की उस तेज रोशनी में उसका चेहरा बहुत लाल हो गया था। सुरक्षा-शिरस्त्राण पहनने से, जो अभी उसके हाथ में था, उसके ललाट पर एक सफेद-सी रेखा बन गयी थी। शिरस्त्राण के वजन से उसके सिर के बाल पीछे की ओर चिपक गये थे।

"मुझे तुम्हारी जरूरत है, नाक्स—" मैथ्यू ने कहा। वह जो कह रहा था, वे अपनी तात्कालिक सत्यता में बिलकुल खरे थे, अतः मैथ्यू को कहने में तनिक झिझक या असुविधा नहीं हो रही थी—"जितनी भी मदद मिल सकती है, मुझे सबकी जरूरत है।"

"बात क्या है?" नाक्स बोला।

मैथ्यू ने उसकी ओर गौर से देखा। "मैं अपना खुद का बाँध बना रहा हूँ, बेटे!" वह सावधानीपूर्वक बोला—"मैं घाटी के मुहाने के सामने मिट्टी का बाँध खड़ा कर रहा हूँ, जिससे घाटी में पानी नहीं आ सके। समय पर उसे तैयार करने के लिए, मुझे जितनी भी मदद मिल सकती है, मुझे चाहिए।"

नाक्स ने उसकी ओर देखा नहीं। उसने शिरस्त्राण को अपने पैर से टकरा कर धूल की गुब्बार उड़ायी। "आप पागल हो गये हैं, पापा!" उसने बेहिचक कहा—"ऐसी बात सोचना भी पागलपन है।"

मैथ्यू की आवाज़ ऊँची हो गयी। "पागल हूँ या नहीं—" वह बोला—"मैं इसे करने जा रहा हूँ।"

नाक्स तब घूमा और उसने उसकी ओर देखा। मैथ्यू के कहने के लहजे से उसे क्रोध हो आया था; किंतु उसने उसे प्रकट नहीं होने दिया। "देखिये पापा!" नीचे चल रहे काम की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—"जरा इसकी ओर देखिये। आप क्या सोचते हैं, आप इससे बाजी पार ले जा सकते हैं?"

"मुझे इससे बाजी पार ले जाने की जरूरत नहीं है—" मैथ्यू बोला। अब वह शांत हो चुका था। "पहले मैंने ऐसा ही सोचा था; किंतु यह आवश्यक नहीं है। मुझे सिर्फ अपने-आपको इससे सुरक्षित-भर कर लेना है। अगर उनके पानी से मेरी घाटी में बाढ़ नहीं आयेगी, तो वे मुझे उसे बेचने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।"

"घाटी में आने और बाहर जाने के लिए आपने क्या सोचा है?" नाक्स ने जानना चाहा।

"मैं एक सड़क बनाऊँगा, जो कब्रगाह के निकट से गुजरेगी—" मैथ्यू बोला—"मैं उसके बारे में पहले ही सोच चुका हूँ।"

"और सोता...?"

"मैंने उसके बारे में भी सोचा है। तुम क्या सोच रहे हो? फसल इकट्ठी करने का समय आ जाये, उसके पहले, मैं अभी ही काम शुरू कर देना चाहता हूँ।"

नाक्स अपनी जगह से हिला नहीं। "मैं यहाँ से नहीं जा रहा हूँ, पापा!"

मैथ्यू नाक्स के पास आया और बिलकुल निकट उसके सामने खड़ा हो गया। वह उसके चेहरे की ओर देखते हुए बोला—"क्या तुम मेरे बेटे हो?"

नाक्स उससे आँखें नहीं मिला सका। वह शीशे के निकट आकर बाहर की ओर देखने लगा, जिससे उसे मैथ्यू की ओर नहीं देखना पड़े! "आप वहाँ देख रहे हैं?" वह बोला—"वह मेरा है, पापा! मेरा काम। मैं एक बाँध-निर्माता हूँ। मैं अपने हिस्से का काम बुलडोजर चलाकर करता हूँ; किंतु यह सब मेरा अपना है, जैसे मैंने स्वयं कंक्रीट डाली है और जल-निकास के मार्गों के निर्माण में प्रत्येक लौह-तख्त को स्वयं हथौड़े से पीटा है। मैंने इसे अपना काम बना लिया है, जैसे कि घाटी आपकी है। यही कारण है कि मैं वापस नहीं जा सकता।"

"मैं तुम्हें बाँध बनाने का मौका दूँगा—अपना बाँध! डनबार-घाटी का बाँध!"

नाक्स ने असहाय भाव से इनकार में सिर हिलाया। दोनों एक चीज नहीं थी। दोनों एक चीज बिलकुल ही नहीं थी!

मैथ्यू तर्क पेश करने लगा। "बहुत जल्दी ही तुम्हारा काम यहाँ समाप्त हो जायेगा—" वह बोला—"तब तुम क्या करने जा रहे हो? तुम्हें अगले साल

घाटी में वापस आना पड़ेगा। तब तुम्हारे बुलडोजर के लिए कुछ भी करने को शेष नहीं रहेगा।"

"लगभग एक महीने में ही मैं पिकविक या चिकमाउगा भेजा जाने वाला हूँ—" नाक्स ने बिना सिर घुमाये ही कहा—"उसके बाद और भी जगहें होंगी।" उसने सिर घुमाकर पुनः मैथ्यू की ओर देखा—"मेरे लिए हमेशा ही काम रहेगा, पापा! इस देश में कहीं-न-कहीं हमेशा बड़े बाँध बनते रहेंगे। यह अभी यहाँ है; लेकिन जब वे टी. वी. ए. को काम पूरा करते देख लेंगे, तब वे दूसरी नदियों पर भी इसी प्रकार बाँध बनायेंगे। यह एक बड़ी चीज है, पापा। यह हमेशा जारी रहने वाली है—हमेशा। बहुत जल्दी ही वे मिसौरी नदी तथा पश्चिमी किनारे की सभी नदियों तथा ओहियो और केंटकी—सभी स्थानों पर बाँध का निर्माण करने वाले हैं। इस देश की सभी नदियाँ इसकी प्रतीक्षा कर रही हैं कि उन्हें नियंत्रित कर, उनका उपयोग किया जाये। काफी बाँध हैं, पापा—काफी समय, श्रम और रुपये "

मैथ्यू खिड़की के निकट चला आया और बाहर निर्माण-क्षेत्र की ओर अबूझी नजरों से एकटक देखने लगा। उसके सिर का दर्द अब बुरी तरह बढ़ गया था, बिलकुल आँखों के पीछे दर्द था और उसकी कनपटियों में गर्म खून उबल रहा था।

"तुम वह सब-कुछ करोगे—" वह बोला—"लेकिन डनबार-घाटी के मुहाने पर मिट्टी का एक छोटा-सा बाँध नहीं बनाओगे। अगर उस मिट्टी के बाँध का अर्थ स्वयं को सुरक्षित रखना हो, तब भी नहीं..."

"हाँ!" नाक्स बोला। घूमकर उसने मैथ्यू की ओर देखा—"यह मेरी जिंदगी है, पापा! मैं कठिन काम करता हूँ और कभी-कभी खतरा भी रहता है काम में। एक बार तो बुलडोजर ही उलटा लिया था मैंने अपने ऊपर। मैं अपना वेतन लेता हूँ और कभी-कभी मदहोश हो जाता हूँ और मैं अपनी प्रेयसियों को अपने साथ बाहर ले जाता हूँ—सानंद समय गुजारने के लिए। मैं अपना समय काफी अच्छे ढंग से बिताता हूँ और तब मैं काम पर वापस चला जाता हूँ। यह मेरी जिंदगी है, पापा!"

"तब तुम सही माने में मेरे बेटे नहीं हो!"

शीशे के उस छोटे-से गर्म कमरे में ये शब्द जोरों से गूँज उठे। मैथ्यू स्वयं स्तम्भित रह गया था। वह नहीं जानता था कि उसके ये शब्द यों विस्फोट कर जाने वाले हैं। उसने नाक्स पर प्रहार करने के लिए अपना हाथ उठाया, मुट्ठियाँ

बँधी थीं; किंतु उसने समय पर ही स्वयं को रोक लिया। नाक्स का चेहरा अचानक सफेद पड़ गया था और उसने दोनों हाथ उठाकर अपने सामने कर लिये थे। उसकी हथेलियाँ खुली हुई थीं और वह स्वयं को मैथ्यू से दूर रखना चाहता था।

"पापा!" वह बोला—"आप ठीक तो हैं?"

मैथ्यू के चेहरे पर खून उभर आया था। वह भीतर इसकी सूजन अनुभव कर रहा था। उसने अपना चेहरा पोंछा और बायीं कनपटी के नीचे जोरों का दर्द उसे महसूस हुआ। सिर अलग भन्ना रहा था। नाक्स ने उसकी बाँह पर अपने हाथ रख दिये; पर मैथ्यू ने उन्हें दूर झटक दिया।

"अकेला छोड़ दो मुझे—" उसने रुँधी आवाज में कहा।

मैथ्यू के क्रोध के इस विस्फोट के बाद शब्द आसानी से उसके मुँह से नहीं निकल सके और उनके बीच एक अशांत मौन व्याप गया। नाक्स बुरी तरह वहाँ से चला जाना चाहता था। वह अपने काम पर, बुलडोजर की जीर्ण, सुखद और मित्रवत् सीट पर लौट जाना चाहता था, जहाँ उसके हाथ लीवरों के जरिये बुलडोजर को नियंत्रित करते रहेंगे, मानो स्वयं उसके ही हाथ मशीन के कल-पुर्जों तक पहुँच रहे हों। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता था—अभी नहीं।

"मैं तुमसे कहने नहीं आया था—" मैथ्यू बोला। कहना बड़ा कठिन था; पर उसे कहना ही था। बड़े प्रयास से उसने एक-एक शब्द कहा—"मैं तुमसे कुछ माँगने आया हूँ, नाक्स! मैं तुम्हें सिर्फ घर पर चाहता हूँ—यह बात भी नहीं—मुझे वहाँ तुम्हारी जरूरत है।" वह अपने इस कथन पर, अपने बेटे के विरोध में जो-कुछ कह रहा था, लज्जित था—"राइस जा चुका है, नाक्स! जिस तरह मैं तुम्हें बुला सकता हूँ, उस तरह उसे घर वापस नहीं बुला सकता।"

"मैं मजबूर हूँ, पापा!" नाक्स ने कहा। मैथ्यू की आवाज़ में जो अनुनय थी, उससे वह भी संकोच अनुभव कर रहा था। उसने अपना सिर उठाया—"इन्हीं दिनों में जेसे जान किसी दिन घर आ जायेगा।"

"मुझे तुम दोनों की जरूरत है—" मैथ्यू बोला। उसने नाक्स के शरीर पर अपने हाथ रख दिये—"मैं बूढ़ा आदमी हूँ, नाक्स! अब मेरे साथ घर में मेरा एक भी बेटा नहीं है। बूढ़े आदमी को अपने बेटों की जरूरत होती है।"

नाक्स की इच्छा हुई कि वह आत्मसमर्पण कर दे—सिर्फ इन शब्दों को रोकने के लिए—दोनों के बीच की इस अत्यधिक नम्र-भावना को रोकने के लिए! ये ऐसे शब्द थे, ऐसी भावनाएँ थी, जिनका प्रयोग किसी प्रतियोगिता

को जीतने लिए होना चाहिए था और उनका उपयोग करने के लिए उसने अपने पिता के प्रति मन में क्रोध अनुभव किया।

"मुझे यह मत कहिये—" वह बोला—"मत कहिये, पापा!" उसने अपने हाथ हिलाये—"चिकामाउगा के लिए मैंने हस्ताक्षर भी कर दिये हैं—" वह बोला—"मैं कुछ समय के लिए पहले पिकविक जा रहा हूँ, जबतक कि चिकामाउगा में हमारी जरूरत नहीं होती। और तब, वे एक बड़े बाँध की बात कर रहे हैं—सबसे बड़ा बाँध, जो उत्तरी कैरोलिना में छोटी टेनेसी के ऊपर बनने वाला है।"

"तब तुम मेरी मदद नहीं करने जा रहे हो?" वह धीमे से बोला।

"पापा! आप उस बाँध को बनाने की आशा नहीं कर सकते।" नाक्स बोला। वह उसके सीधे सवाल को बचाते हुए विरोध दर्शा रहा था—"आप...मैं नहीं जानता...आप सचमुच ही, पूरी गम्भीरतापूर्वक इसे नहीं करना चाहते होंगे—यह तय है। आप अकेले काम करते-करते मर जायेंगे और हासिल होगा कुछ नहीं!"

"यह तुम्हारे कहने के लिए नहीं है—" मैथ्यू ने अपना बड़प्पन अब वापस पा लिया था। यद्यपि उसके सिर में अभी भी लगातार जोरों का दर्द हो रहा था, वह सिर पीछे की ओर किये खड़ा था। अंतिम बात कहने के लिए उसे स्वयं से जबर्दस्ती करनी पड़ी—"तो तुम नहीं आओगे और इसमें मेरी मदद नहीं करोगे?"

नाक्स ने अपने हाथ हिलाये। उसने अपना मुँह खोला; किंतु कोई शब्द बच नहीं रह गये थे उसके पास। उनके बीच सिर्फ एक निर्जीवता-खोखलापन था और दोनों ने उस खाली स्थान के दो ओर से एक-दूसरे की ओर गौर से देखा। इस 'खाली' 'खाली' जगह पर उन दोनों में से कोई सेतु नहीं बना सकता था।

"नहीं!" वह बोला।

"मैं अब जा रहा हूँ।" मैथ्यू बोला। उसके होंठ कड़े पड़ गये थे और बड़ी मुश्किलों से उसने ये शब्द कहे थे। ऐसा लगता था, जैसे उसे आंशिक पक्षघात ने घेर रखा था। वह घूम पड़ा और सीढ़ियों के नजदीक चला आया। उसने नीचे उतरने के लिए पहला कदम रखा और उसके भारी जूते के नीचे लोहे की सीढ़ी आवाज़ कर उठी।

"उस नयी नौकरी पर दूर जाने के पहले मैं आप सब लोगों से मिलने आऊँगा।" नाक्स ने कहा।

"परेशानी उठाने की जरूरत नहीं!" मैथ्यू बोला और सीढ़ियाँ उतरता हुआ, वह आँखों से ओझल हो गया। उसके पैर लोहे की सीढ़ियों पर आवाज़ कर रहे थे और उसका प्रत्येक कदम उसके रुष्ट होने की सूचना दे रहा था। उसका दिमाग गर्म हो उठा था। स्वयं पर काबू पाने के लिए उसे घाटी के शांत, हरे-भरे और ठंडे वातावरण की जरूरत थी। आज का क्रुद्ध अपरिचित बनने के बजाय, पुनः मैथ्यू डनब्रार बनने के लिए उसे दूसरी जरूरत थी। वह मीनार के नीचे पहुँचकर रुका और अपने पीछे-पीछे आते नाक्स की ओर उसने आँखें उठाकर देखा।

"मैं तुम्हारा चेहरा फिर नहीं देखना चाहता, नाक्स!" उसने भारी रूखी आवाज़ में कहा—"फिर कभी मेरी घाटी में नहीं आना!"

दृश्य आठ

विद्युत्-प्रवाह

सात व्यक्ति एक साथ आये। विद्युत्-प्रवाह वहाँ था, इसमें शक नहीं, बशर्ते आप उचित स्थान पर रहते हों। किंतु वे उचित स्थानों पर नहीं रहते थे—और दूसरे बहुत-से लोग भी नहीं रहते थे। अब आप मि. सोलोन विल्सन को ही लीजिये—विद्युत् की लाइन जहाँ से गुजरी थी, वहाँ से उसका मकान मील-भर से भी कम की दूरी पर था। किंतु विद्युत्-कम्पनी ने उससे, उसके घर तक बिजली का तार लाने के लिए बारह सौ डालर के छोटे से चंदे की माँग की! तब वह विद्युत्-लाइन, उस विद्युत् कम्पनी की हो जायेगी। अलावे, मि. सोलोन विल्सन के पास बारह सौ डालर थे भी नहीं। लेकिन कम्पनी ने कहा कि मि. विल्सन से बिना उपर्युक्त रकम पाये, बिजली के तार वहाँ तक ले जाने में उसे कोई लाभ नहीं होगा और अगर उसने वह रकम दे भी दी, तो उसके पड़ोसी उसी लाइन से अपने यहाँ बिजली नहीं ले सकते थे। मि. सोलोन विल्सन को यह बात कोई अधिक आशाजनक नहीं लगी, अतः उसने दूसरे कुछ व्यक्तियों से इस सम्बंध में चर्चा की, जिनके नाम थे, गाय हैरिस, सी. डब्ल्यू. रायस्टर और डी कैम्प जेलिको! उन्हें भी कम्पनी से अधिक संतोष नहीं मिल पाया था।

हो सकता है पंद्रह वर्ष पहले—शायद दस वर्ष पहले भी—ये व्यक्ति इस तरह घूम-घूम कर लोगों से बातें नहीं करते रहते; क्योंकि उन्हें उस वक्त यही ज्ञात नहीं रहता कि कहाँ जाने पर उन्हें इस सम्बंध में आगे बढ़ने के लिए ठोस तथ्यों की उपलब्धि होगी। लेकिन जब से एफ. डी. आर. ने लोगों को, उनकी तकलीफों में सरकारी सहायता देना आरम्भ किया, लोगों की आदत पड़ गयी है कि किसी भी मामले में वे सलाह के लिए—जिसकी, वे समझते हैं, उन्हें जरूरत है—उस इलाके के सरकारी एजेंट की तलाश करने लग जाते हैं। यह बात नहीं थी कि वह सचमुच ही बड़ा योग्य व्यक्ति था। वह कालेज में पढ़ा

था; लेकिन वह मेपल्स के वाइट मैकडोनाल्ड का बेटा था और वह जानता था कि कहाँ किसके लिए नजर दौड़ानी चाहिए।

वाइट मैकडोनाल्ड के लड़के ने उन्हें आर. ई. ए.—ग्राम्य विद्युतीयकरण शासन (सरल इलेक्ट्रिफिकेशन एडमिनिस्ट्रेशन) के बारे में बताया। उसने उन्हें यह भी बताया कि वे किस तरह आपस में एक सहकारी संस्था का निर्माण कर संघीय सरकार से उसी प्रकार रकम बतौर कर्ज ले सकते थे, जिस तरह कोई व्यवसायी बैंक से उधार लेता है। वे उस रकम पर सूद देंगे और उन्हें कर्ज चुकता करना होगा। एक ही बात थी कि क्या आर. ई. ए. उनकी सहायता करेगा? और आर. ई. ए. से सहायता पाने के लिए उन्हें क्या करना था? उन्होंने यह अनुमान नहीं लगा रहा था कि आर. ई. ए. उनके लिए, उनके घरों तक बिजली के तार बाँध देगा, विद्युत्-प्रवाह संचारित कर देगा और तब मकान में आकर उनके लिए बिजली के बल्ब जला देगा।

मि. सोलोन विल्सन के पास बारह सौ डालर नहीं थे; पर उनके पास दस डालर थे। उसने अपने लम्बे चमड़े के पर्स से उसे निकाल कर मेज पर रख दिया और उनसे कहा कि सारी जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें वाशिंग्टन, डी. सी. एक आदमी भेजना चाहिए। सात व्यक्तियों से कुल मिलाकर ७५ डालर एकत्र हुए। उन सात व्यक्तियों में एक बहुत-सी जमीन का मालिक था और उसने ५ डालर अतिरिक्त दिये, जिससे अगर जरूरत पड़े, तो उनका आदमी उनसे कांग्रेस-सदस्य को ह्विस्की खरीद कर दे सके। उन ७५ डालरों के साथ उन्होंने एक युवा वकील को, जो हाल ही ला-स्कूल से निकला था और जो वाशिंग्टन जाकर अधिकारियों से बातें करने के लिए लालायित था, भेज दिया। वे सब उसे ग्रेहाउंड बस पर विदा देने आये और मिज (श्रीमती) विल्सन ने उसके लिए मुर्गी पका कर भी साथ ले जाने को दे दिया था।

वहाँ उत्तर में, अपना काम करने और घर वापस आने में उस युवा वकील को पूरा हफ्ता भर लग गया। वह वापस आया और बोला—"आर. ई. ए. से कर्ज मिल सकता है, इसमें शक नहीं। अपने बीच एक संस्था की स्थापना कर लें, जिसमें सबके बराबर शेयर (हिस्से) हों—प्रत्येक सदस्य को विद्युत् की सुविधा उपलब्ध हो और सबसे आवश्यक यह था कि संस्था इस बात की जिम्मेदारी ले कि हर प्रार्थी को वह अच्छी सुविधा देगी—जहाँ-जहाँ विद्युत् लाइन होगी, वहाँ के हर प्रार्थी को, और इसके लिए उचित मूल्य-भर लेगी। और अगर आप ऐसा कर लेते हैं, तो आपकी संस्था के वकील की हैसियत से

काम करना मैं खुशी से स्वीकार कर लूँगा।" तब उसने अपनी जेब से एक मुड़ा-तुड़ा ५ डालर का बिल निकाला और रख दिया। इस यात्रा में वह यही बचाकर लाया था—उसे किसी कांग्रेस सदस्य के लिए कुछ खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ी थी। और वे पाँच डालर पहली रकम थी, जो उस सहकारी संस्था की अपनी थी।

उन सात व्यक्तियों ने उसी वक्त, वहीं, संस्था का निर्माण कर डाला और मि. सोलोन विल्सन ने # १ की सदस्यता हासिल कर ली। वह संस्था का सेक्रेटरी-कोषाध्यक्ष भी निर्वाचित किया गया। अब उन्हें ऐसे पर्याप्त लोगों को ढूँढ़ निकालना था, जो अपने घरों में विद्युत लेने को तैयार हों। फसल का समय था और प्रत्येक व्यक्ति के पास काफी काम था। लेकिन मि. सोलोन विल्सन रात में निकलता। दिन-भर काम करने के बाद, वह थके हुए खच्चर पर सवार हो, सड़क पर निकलता और लैम्प की पीली, धुँधली रोशनी के नीचे पड़ोसियों से उस विद्युत्-लाइन की चर्चा करता, जिसे वहाँ तक लाने का उनका इरादा था। दूसरे सदस्य भी यही कर रहे थे—वह इस काम में अकेला ही नहीं था और अंततः उन लोगों ने हर व्यक्ति से बात कर ली। बहुत-से लोग उनका साथ देने को तैयार हो गये, जिससे उन्हें आर. ई. ए. से कर्ज मिल जाये, यद्यपि कुछ लोग पीछे ही रहे। वे यह देखना चाहते थे कि यह प्रयास सफल भी होता है या नहीं और तब वे किसी भी तरह का दाव लगा सकते थे।

और तब—सबसे मजेदार चीज घटी। विद्युत्-कम्पनी का आदमी मि. सोलोन विल्सन से मिलने आया। उसने कहा कि विद्युत् कम्पनी बिना किसी रकम के, मुफ्त में, उसके मकान तक बिजली की लाइन लाने को तैयार थी। ऐसा ज्ञात हुआ कि कम्पनी को आखिर मि. विल्सन के बारह सौ डालरों की आवश्यकता नहीं थी। मि. सोलोन विल्सन ने कम्पनी के आदमियों से कहा—"नहीं, कृपा के लिए धन्यवाद! हम लोगों ने अपनी विद्युत् लाइन बनाने का निश्चय कर लिया है।" दो दिनों बाद, एक सुबह उसने सड़क पर कुछ व्यक्तियों को देखा, जो उसके घर तक बिजली लाने के लिए, चाहे वह चाहता हो या नहीं, खम्भे गाड़ रहे थे। वह वहाँ तक गया और उसने उन व्यक्तियों से इस सम्बंध में कुछ देर बातें कीं; किंतु वे लोग तो सिर्फ काम करने वाले लोग थे, उनके स्वामी ने उनसे मि. विल्सन के मकान तक बिजली की लाइन ले जाने को कहा था और वे वही करने वाले थे। अतः मि. विल्सन अपनी बंदूक ले आया और उसने उन्हें फिर वैसा करने से मना किया और तब वे लोग, आगे इस स्थिति

में क्या करना है, इसके सम्बंध में आदेश लेने के लिए शहर वापस चले गये।

उन लोगों को बहुत जल्दी कर्जे की रकम मिल गयी। उन लोगों ने संस्था की ओर से एक मैनेजर भी रख लिया; क्योंकि वे सब खेतिहर थे और स्वयं उस सहकारी संस्था का काम देखने के लिए उन्हें बहुत ही अधिक सिर खपाना होता। तब उनके पास वे लोग आये, जो नगर-पिता थे। उन लोगों ने कहा कि यद्यपि उन्हें विद्युत्-कम्पनी से बिजली उपलब्ध थी; फिर भी वे टी. वी. ए. की बिजली चाहते थे। टी. वी. ए. की विद्युत्-धारा नियमित थी—ऐसा उन्हें दूसरे शहरों के मेयरों ने कहा था, जो टी. वी. ए. की बिजली का उपयोग कर रहे थे—और उसकी लागत भी विद्युत्-कम्पनी की लागत से कम थी—एक किलोवाट बिजली में कम से-कम दो सेंट के लगभग कम! और यह बात उन्हें भी गयी। अतः उन्होंने सोचा कि अपनी म्यूनिसिपल व्यवस्था आरम्भ करने के बजाय, यह हर प्रकार से कहीं अच्छा होगा कि वे कृषकों की सहकारी संस्था में शामिल हो जायें और सब मिलकर उसे चलायें। तब वे उस विद्युत्-कम्पनी को खरीद ले सकते थे और शहर तथा देहात में साथ-साथ बिजली वितरित कर सकते थे।

यह ठीक ही था। विद्युत्-कम्पनी के अधिकारी उसे बेचने को तैयार थे और उन लोगों ने उसकी एक कीमत भी निर्धारित कर दी। तब, जब सब कागज तैयार कर लिये गये, सिर्फ दस्तखत होने बाकी थे, विद्युत् कम्पनी वाले पीछे हट गये। उन्होंने 'लाइट आव द वर्ल्ड' साप्ताहिक में विज्ञापन देना शुरू किया कि किस तरह सिर्फ इस वर्ष पूर्व वे उस शहर में आये थे, लोगों की भलाई की कामना लेकर कि लोगों के घरों और व्यवसायिक क्षेत्रों में वे बिजली की व्यवस्था करेंगे और अब उनसे कहा जा रहा था कि वे अपनी कम्पनी बेच दें। वे इस बात का ढिंढोरा पीटने लगे कि किस तरह टी. वी. ए. कोई टैक्स नहीं देती थी, किस तरह अमरीकी सरकार लोगों को आर्थिक सहायता दे रही थी और किस तरह लोगों का यह नैतिक पतन था। उनकी इन सब बातों को सुनने के अलावा, सहकारी संस्था यों भी साल-दो साल में टूट जाने ही वाली थी; क्योंकि उसके चालक थोड़े-से साधारण खेतिहर थे और तब किसी को बिजली भी नहीं मिलती। विद्युत्-कम्पनी की इन सारी बातों में, सिर्फ कोरी बहस थी और कुछ बिलकुल सफेद झूठ था और हो सकता है, थोड़ी-सी बात सच भी हो; लेकिन सब बातें यों एक दूसरे से उलझी हुई थीं कि लोग यह नहीं कह सकते थे कि सच क्या है। ग्राम्य टैक्स-कलेक्टर (कर जमा करने वाला) खैर, करों के

बारे में जानता था और उसने अखबार में इस सम्बंध में एक पत्र लिखा, जो बिलकुल पहले पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ कि किस तरह टी. वी. ए. टैक्स नहीं देती थी; पर वह दूसरे रूप में जो रकम देती थी, यह कहीं अधिक होती थी और उसका महत्व भी कम नहीं था—यों आप चाहे इसे कुछ भी कह लीजिये।

विद्युत्-कम्पनी के विज्ञापन दिनों-दिन बड़े होते गये। समाचारपत्र में उनकी ओर से ऐसे-ऐसे लोगों के पत्र प्रकाशित किये जाते थे, जिनका आपने कभी नाम भी नहीं सुना होगा, यद्यपि उनके पते-ठिकाने दिये रहते थे। जो लोग विद्युत्-कम्पनी में काम करते थे, उन्होंने अखबारों में लिखा कि कितने अच्छे ढंग से वे लोग काम करते थे और इसी तरह की अन्य बातें। उन्होंने एक वास्तविक प्रचारक भी भेजा, जो घूम-घूम कर विद्युत्-कम्पनी की तारीफ करता और इस सम्बन्ध के साहित्य वितरित करता। सचमुच ही, सारी चीज अस्तव्यस्त हो गयी। शहर के बड़े लोगों में से कुछ विद्युत् कम्पनी की ओर हो गये और कहने लगे कि किस तरह उन्हें टी. वी. ए. की बिजली पर विश्वास नहीं था, कि विद्युत्-कम्पनी एक व्यक्तिगत संस्था थी और अपने सभी ग्राहकों के प्रति कैसे उसका अधिकार था। उन लोगों ने कहा—"अगर सरकार कहे कि आप लोग अपनी लौह-लक्कड़ की दूकानें बेच दें, तो आपको यह कैसा लगेगा?" मि. सोलोन विल्सन और दूसरे, जिन लोगों ने सहकारी संस्था पहले बनायी थी और यह सब आरम्भ किया था, ये नहीं जानते थे कि उन्हें अब क्या करना चाहिए। मि. विल्सन केवल इतना ही चाहता था कि विद्युत्-कम्पनी को उसके घर तक बिजली की लाइन लाने के लिए बिना बारह सौ डालर दिये, उसके घर में बिजली आ जाये। उससे श्रीमती विल्सन के लिए कपड़ा धोने की मशीन खरीदने को पैसे भी बचा रखे थे। और वे सब एक प्रचारक को लेकर उलझ गये थे, जो विद्युत् कंपनी का प्रचार करता फिर रहा था, उनकी नैतिकता के बारे में कहता फिर रहा था, समाचारपत्र में दोनों पक्षों के समर्थन में लोग लिख रहे थे और विद्युत्-कम्पनी की ओर से बड़े-बड़े लोग अपनी बड़ी-बड़ी मोटरों में बैठकर उसके घर आने और उससे बहस करते कि वह विद्युत्-कम्पनी का साथ दे।

किंतु उन लोगों ने नगर-पिताओं से सम्बंध जोड़ लिया था और वापस जाने का प्रश्न ही नहीं था। अगर विद्युत्-कम्पनी के मालिक उसे नहीं बेचेंगे, तो उन्हें अपनी विद्युत्-लाइन बनानी पड़ेगी और बस। अतः उनके पास जो

भी ग्राहक थे, उन्हें ही लेकर उन्होंने अपनी लाइन बनानी शुरू कर दी और विद्युत् की पहली लाइन मि. सोलोन विल्सन के घर से होकर गुजरी। उसने अपनी पत्नी को कपड़ा धोने की यह मशीन खरीद दी। और कुछ समय तक, शहर में, विद्युत्-कम्पनी की लाइन और नगर-पिताओं की विद्युत्-लाइन बहुत-सी सड़कों पर साथ-साथ चलती रही। सहकारी संस्था की विद्युत्-लाइनें अंत में बनी थीं और गाँवों तक गयीं थीं; लेकिन विद्युत् कम्पनी ने उन लाइनों के समानांतर में अपनी लाइनें बनायीं, जहाँ उन्होंने किसी भी व्यक्ति की याददाश्त में पहले नहीं बनायी थी; क्योंकि वे ऐसा करने में समर्थ नहीं थे। इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने कुछ लोगों से उनकी लाइन लेने का अनुरोध भी किया। वे घर-घर गये, लोगों से बातें कीं, तर्क पेश किये। लोगों के दस्तखत के लिए वे अवश्यक कागजात भी लिये रहते और उन्होंने अपना प्रस्ताव अधिक आकर्षक बनाने के लिए अपनी दर में कुछ कटौती भी कर दी। कुछ समय के लिए सचमुच ही बड़ी अस्तव्यस्तता उत्पन्न हो गयी और एक या दो बार बिजली की लाइनें टूटी भी पायी गयीं।

चार सालों तक विद्युत्-कम्पनी मि. सोलोन विल्सन, दूसरे छः व्यक्तियों और उनकी सहकारी संस्था से लड़ती रही। उन लोगों ने इस पर बारह सौ डालर से कहीं अधिक खर्च भी किये। यद्यपि अंत में, उन लोगों ने, जो-कुछ पास बचा था, बेचने की रजामंदी दिखायी। जो भी उनके पास बच गया था, वह अधिक नहीं था; क्योंकि कुछ ही समय के बाद उन्हें नये ग्राहक नहीं मिलने लगे; क्योंकि सहकारी संस्था बिना किसी तनाव के अपनी कीमत जितनी कम कर सकती थी, उतनी वे नहीं कर सके और उनके पुराने ग्राहक भी उनके हाथ से निकलने लगे। यहाँ तक कि शहर और देहात मिलाकर कुछ सड़कों पर सम्भवतः एक-दो व्यक्ति ही ऐसे रह गये थे, जिन्हें विद्युत्-कम्पनी बिजली देती थी और उनकी बनायी गयी कुछ लाइनों से तो बिलकुल ही बिजली नहीं प्रवाहित होती थी।

किंतु तब सहकारी संस्था को विद्युत्-कम्पनी खरीदने की कोई जरूरत नहीं रह गयी; उनका अपना ढाँचा ही बिलकुल तैयार हो चुका था। यों विद्युत्-कम्पनी की उस लड़ाई के बिना जितनी लागत उसमें लगती, उससे कहीं अधिक खर्च हुआ था। तब विद्युत्-कम्पनी ने बस लड़ाई से हाथ खींच लिया और जो भी वे ले जा सकते थे, लेकर उन्हें अकेला छोड़ चले गये। उन्होंने अपना मकान बेच दिया।

सो मि. सोलोन विल्सन के मकान और खलिहान में अपनी बिजली आ ही गयी और इसके लिए उसे कभी बारह सौ डालर खर्च भी नहीं करना पड़ा। उसे सिर्फ दस डालर उस युवा वकील को वाशिंग्टन भेजने के लिए देने पड़े थे और ५ डालर देने पड़े थे अपनी # १ की सदस्यता के लिए। साथ ही, उसे बार-बार लोगों से जाकर मिलना पड़ा था, उनसे काफी बातें करनी पड़ी थीं, समझाना पड़ा था। एक अंधेरी सड़क पर झगड़े की गर्मी में वह गोली खाते-खाते भी बचा था। लेकिन उसे विद्युत् मिल गयी थी—और बाहरी बरामदे में कपड़ा धोने की जो मशीन श्रीमती विल्सन ने रख छोड़ी थी, वह काफी खूबसूरत थी। उसे बस इतना ही करना पड़ता था कि कपड़ों को मशीन में डाल देना होता था और बाद में, बाहर सूखने के लिए, उन्हें तार पर फैला देना होता था।

प्रकरण अट्ठारह

सितम्बर में जाकर जेसे जान ने उसे ढूंढ़ लिया। वह एक ऐसे शहर की धूल-भरी सड़क से गुजर रहा था, जो बड़ा गंदा था और वहाँ के मकान बक्स की तरह बेढंगे बने थे। कल कुछ देर के लिए बारिश का एक तेज झोंका आया था और सड़क पर कीचड़ हो गयी थी; लेकिन अब वह फिर सूख गयी थी। आते-जाते लोगों के पाँवों तथा मोटरों और ट्रकों के पहियों से कीचड़ दबकर सख्त हो गयी थी और उसके ऊपर एक पीली-सी मोटी परत छा गयी थी। यह शहर भी उन दर्जनों अधबने शहरों की तरह था, जहाँ जेसे जान ने कौनी की निष्फल तलाश की थी और वह इस शहर को भी छोड़कर जाने वाला था; क्योंकि उसे मालूम हुआ था कि केरम हाकिन्स यहाँ रहता था और अब यहाँ से जा चुका था।

सिर नीचा किये, अपनी खोज की निष्फलता के सम्बंध में सोचते हुए वह सड़क के किनारे-किनारे बढ़ रहा था। यह देश बहुत बड़ा था, बहुत-से निर्माणकार्य चल रहे थे और कोई भी आदमी कैसे यह निर्णय कर सकता था कि हास्किन्स इसके बाद कहाँ जायेगा? वह एक काफे के सामने से गुजरा जो काठ-कबाड़ की बनी मड़ई में था। सिर्फ सामने एक बिलकुल नया तख्ता लटक रहा था जिस पर लिखा था—"पुरुषों के लिए भोजनालय"। वह कुछ खाने के बारे में

सोचता हुआ काफे के दरवाजे पर रुका और तब फिर आगे चल पड़ा। अभी उसे भूख नहीं लगी थी। यद्यपि उसकी जेब में पैसे थे; फिर भी कल के पहले शायद उसे भूख नहीं लगेगी।

सड़क पर कुल छः कदम चलकर ही वह रुक गया। वह क्षणभर स्थिर खड़ा रहा और तब वापस मुड़ा। दरवाजे के काँच से उसने काफे के भीतर की ओर देखा। वही थी, इसमें शक नहीं। अपनी आँखों के कोर से उसने उसे रसोई-घर से काफे में आती हुई, देखा था। वह बीयर की बोतलों से भरी एक ट्रे लेकर जल्दी से गुजर गयी थी और जैसे जान ने सिर्फ उसके घाघरे और अपने चिर-परिचित शरीर की एक झलक-भर देखी थी।

उसकी ओर देखते हुए जैसे जान का दिल धड़कने लगा। उसने दरवाजे पर अपनी हथेली रख दी और उसे भीतर की ओर ढकेलने लगा। तब वह हिचकिचाया और उसने दरवाजे को फिर बंद हो जाने दिया। अभी भी वह बाहर ही खड़ा था। उसने दरवाजे पर से अपना काँपता हुआ हाथ हटा लिया और खोया-सा चलकर उस मकान की मोड़ पर पहुँचा, जहाँ बिलकुल खाली जमीन पड़ी थी। उसने अपने गंदे और फटे कपड़ों की ओर देखा। उसने अपनी पुरानी फेल्ट हैट सिर पर से उतार ली और उससे अपने शरीर की गर्द झाड़ने लगा। उसने अपनी पैंट, अपनी कमीज से गर्द झाड़ी, झुक कर पैंट और कमीज की मोड़ों से गर्द झाड़ी और कमीज की एक बाँह से दूसरी बाँह की धूल साफ कर ली। उसने अपनी पैंट के निचले हिस्से से पीछे की ओर रगड़ कर अपने जूतों के चौड़े पंजे साफ किये और असंतुष्ट भाव से उन्हें देखता रहा। उसे इसी प्रकार काफे के भीतर जाना पड़ेगा—और कोई रास्ता नहीं था। और देर करने का अन्य कोई कारण नहीं था।

उसने अपने सिर पर फिर से फैल्ट हैट पहन लिया और तब उसे उतार कर, अपनी उँगलियों की मदद से उसने अपने उलझे बाल, सीधे करने की व्यर्थ चेष्टा की। उसने अपने जीर्ण-शीर्ण हो गये फेल्ट हैट की ओर अरुचि से देखा और उसे अपने पैंट की जेब में मोड़ कर ठूँस लिया। उसने कंधों के निकट अपनी कमीज की सिकड़नें सीधी कीं और काफे के सामने फिर जा पहुँचा। तनिक भी रुक कर सोचे बिना उसने दरवाजा खोला और भीतर चला गया। वह वहाँ नहीं थी और जैसे जान रुक गया। वह सोच रहा था कि शायद कौनी ने उसे काँच से होकर देख लिया था और पिछले रास्ते से वहाँ से भाग गयी थी।

वह वहाँ रखे मेजों के बीच से होकर गुजरा और उस लम्बे कमरे के पिछले भाग के निकट जाकर बैठ गया। दीवारें उखड़ी थीं, रंग पुराना होकर कहीं-कहीं से उचट गया था और रसोईघर को नयी कच्ची लकड़ी से बंद कर दिया गया था। मेजें पुरानी थीं और उन पर तरह-तरह के निशान बने थे। उन पर न मेजपोश थे, न नैपकिन (छोटा तौलिया)। हर मेज पर चटनी की एक बोतल रखी थी, नमक और काली मिर्च की बोतलें थीं और एक बर्तन में चीनी रखी थी। उसने मेज पर अपने सामने दोनों हाथ रख दिये और रसोईघर की ओर देखता हुआ इंतजार करता रहा। काफे लगभग खाली था; क्योंकि अभी खाना खाने का समय नहीं हुआ था और सिर्फ एक या दो व्यक्ति बैठे हुए थे। वे खाना नहीं खा रहे थे, बल्कि काफी अथवा बीअर पी रहे थे और शांत, भनभनाती आवाज़ में बातें कर रहे थे।

वह रसोईघर से बाहर निकली और बिना उसे देखे, उसकी ओर तेजी से आने लगी। वह मेजों के बीच से होकर, कुर्सियों की टक्कर से बचने के लिए मुड़ती हुई चली आ रही थी और जेसे जान उसके चलते समय, उसके नितम्बों का रह-रहकर तेजी से बल खाना देखता रहा। वह पहले से कहीं अधिक स्थूल हो गयी थी और पहले से अधिक उसने 'मेकअप' भी कर रखा था। उसके थके और सफेद पड़ गये चेहरे पर लाल-लाल लिपस्टिक पुता-पुता लगता था और आँखों के बीच नयी और सीधी नीचे की ओर जाती हुई सिकुड़नें पड़ गयी थीं।

"क्या लेंगे आप?" वह बोली। तब उसने उसे देखा और उसने अपना हाथ अपने गले पर रख लिया कि कहीं चीख न निकल जाये। उसका चेहरा अब पहले से अधिक सफेद हो गया था, उसके पीलेपन में लिपस्टिक का वह लाल रंग और भी अजीब-सा लग रहा था। कौनी उसके बारे में सोचती नहीं थी, काफी समय से उसने उसके बारे में नहीं सोचा था और जितना वह उससे भयभीत नहीं थी, उतना आश्चर्य-स्तम्भित थी।

जैसे जान प्रसन्न था। वह कौनी की ओर देखकर मुस्कराया और प्रसन्न तथा स्नेहपूर्ण वाणी में बोला—"हेलो कौनी! तुम्हें देखकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" वह बोली।

"तुम्हारी तलाश!" वह बोला—"और भला मैं क्या करूँगा?"

कौनी अनिश्चित भाव से खड़ी रही। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या

करना चाहिए। उसके दिमाग में सोची-बे-सोची कोई भी बात ऐसी नहीं आ रही थी, जो इस दृश्य के इन आवश्यक क्षणों में उसकी मदद करे। उसने अपने हाथ के आर्डर-पैड की ओर देखा और बेवकूफों की तरह कहा—"क्या तुम कुछ खाना पसंद करोगे?" जैसे वह भी एक साधारण ग्राहक हो और तब वह समझ गयी कि उसका ऐसा पूछना गलत था। उसने घबड़ायी नजरों से रसोईघर की ओर देखा। वह डर रही थी कि उसका मालिक कहीं यह सब न देख ले। वह किसी भी क्षण सामने की मेज पर उस हिसाब किताब की बही के लिए आ सकता था और अगर उसने कौनी को इस तरह किसी ग्राहक से गप्पें मारते देख लिया......"

"नहीं!" जेसे जान ने कहा और उसकी ओर भर्त्सनापूर्ण निगाहों से देखा—"मैं क्या चाहता हूँ, तुम जानती हो, कौनी! तुम जानती तो हो कि मैं किसलिए आया हूँ।"

कौनी जोर-जोर से साँस लेने लगी। वह अब डर अनुभव करने लगी थी। वह उसकी ओर झुक आयी और फुसफुसा कर बोली—"यहाँ कुछ ऐसा-वैसा मत कर बैठना, जेसे जान! अगर तुम ऐसा करोगे, तो मेरी नौकरी चली जायेगी। वे तुरत मुझे निकाल बाहर करेंगे और...मुझे इस नौकरी की जरूरत है। मुझे बुरी तरह जरूरत है इसकी!"

जेसे जान उसकी ओर देखता रहा। वह उसे अपने हाथ से स्पर्श करना चाहता था। वह चाहता था कि उन दोनों के बीच की वह पुरानी घनिष्ठता तत्काल उन दोनों के बीच आ जाये, जिससे ये सारी बातें करने की जरूरत न रह जाये। उसे ऐसा लग रहा था कि उन दोनों के हाथों का एक स्पर्श-मात्र उन दोनों के बीच जो महीनों का अलगाव था, उसे मिटा देगा—फिर से उन्हें पति-पत्नी बना देगा और अब बातें करते हुए, वे अजनबियों के समान बातें कर रहे थे।

"मैं कुछ भी नहीं करने जा रहा हूँ, प्रिये!" वह स्निग्धता से बोला—"मैं बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ घर चली चलो।"

कौनी उसकी ओर देखती रही, फिर सीधी खड़ी हो गयी। रसोईघर का दरवाजा खुला और उसका मोटा मालिक बाहर निकला। वह उस काउंटर के पीछे जा रहा था, जहाँ खड़े होकर वह ग्राहकों से पैसे लिया करता था। चलते-चलते उसने सिर घुमाकर उन दोनों की ओर देखा और कौनी अपनी पीठ पर उसकी आँखें गड़ी पा, भय से सिहर गयी।

"तुम चाहते हो मैं घर चलूँ......"

जेसे जान उसकी ओर स्निग्धता से देखता रहा। कभी कभी वह सोचा करता था कि अगर कौनी से उसकी मुलाकात हो गयी, तो उस वक्त उसे ऐसा महसूस होगा। वह नाराज होगा, ईर्ष्यालु हो उठेगा अथवा स्वयं को आहत अनुभव करेगा। किंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वह कौनी थी—उसकी पत्नी, वह लड़की जिससे उसने प्रणय-निवेदन किया था और शादी कर ली थी। जब वह अविवाहित था, तो कौनी ही अकेली एक ऐसी लड़की थी, जिसने उसे पसन्द किया था। नाक्स के जीवन में बहुत सारी लड़कियाँ थीं; ऐसा लगता था, अपने लिए लड़कियाँ ढूँढ़ निकालने में उसे कोई दिक्कत ही नहीं होती थी। किंतु जैसे जान को सिर्फ एक लड़की मिली थी और वह पर्याप्त था—नाक्स की जितनी लड़कियाँ थीं, उन सबसे पर्याप्त! जेसे जान ने कभी कौनी के अलावा किसी दूसरी औरत के साथ रात नहीं गुजारी थी और उस पहली रात में कौनी को उसकी मदद करनी पड़ी थी। कौनी जो अचानक उसे छोड़कर कुछ काल के लिए चली आयी थी, उससे वे सारी बातें अधिक महत्व रखती थीं। जेसे जान बस, खुश था कि उसकी वह लम्बी खोज समाप्त हो चुकी थी और वह मुक्त है। उसके मन में यह भूख भी अब तक जाग चुकी थी कि वे पुनः अपने उस पुराने कमरे में वापस चले चलें, जहाँ उन दोनों का एक ही बिस्तरा बिछा था और 'सीअर्स रोएबुक' की वह शृंगार मेज रखी थी, जो जेसे जान ने कपास के अपने हिस्से की रकम से उसे खरीद दी थी। वह चाहता था कि हर चीज बिलकुल पहले की तरह हो जाये—सिवा इसके कि इस बार कौनी तुष्ट और प्रसन्न होगी, जैसा कि वह स्वयं शुरू से था।

"और किसलिए फिर मैं तुम्हारी तलाश में अपना समय गँवाता फिरूँगा!" वह बोला—"मैंने सारे देश में तुम्हारा पीछा किया।" वह फिर मुस्कराया—"सारे रास्ते में तुमसे बस एक कदम पीछे रहता आया हूँ।"

उस भारी-भरकम शरीर के बावजूद रेस्तराँ के मालिक की आवाज बड़ी गहरी थी। "उस आदमी का आर्डर ले लो—" काउंटर के निकट से ही वह कौनी से बोला—"वहाँ खड़ी होकर दिन भर गप्पें मत मारती रहो।" उनके बोलने के दक्षिणी लहजे के बीच उसकी तीखी आवाज गूँज उठी।

कौनी उछल पड़ी और घबड़ाहट में उसने अपने हाथ हिलाये। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। वह बस, असहाय भाव से वहाँ खड़ी, उसकी भारी आवाज फिर से सुनने का इंतजार करती रही।

जेसे जान ने वहाँ की खाली मेजों की ओर देखा। "मैं किसी भी चीज का

आर्डर नहीं दे रहा हूँ—" वह नम्रता से बोला—" मैं बस इससे मिनट-भर बात करने के लिए भीतर आ गया। हम लोग......"

"तब अपनी फुर्सत के समय में बातें किया करो—" मालिक ने जेसे जान की उपेक्षा करते हुए कौनी से कहा। वह उठ खड़ा हुआ और काउंटर के पास चल कर उनके पास पहुँचा। चलते समय वह अपने भारी-भरकम नितम्बों से कुर्सियों को, मेजों को और भीतर ढकेलता हुआ, उनके बीच से एक सीधा रास्ता बनाता चल रहा था। "मैं तुम्हें ग्राहकों से दोस्ती करने के लिए तनख्वाह नहीं देता हूँ।"

कौनी घबड़ायी हुई उसकी ओर मुड़ी। "मुझे इसका दुःख है, मि. न्यूकाम्ब" वह बोली—" यह बस अभी भीतर आया है। और हम...हम एक-दूसरे को पहले से जानते हैं।"

मि. न्यूकाम्ब ने उसकी ओर तिरछी आँखों से देखा। "दस बजे तुम्हारी ड्यूटी खत्म हो जायेगी—" वह बोला—" तब से लेकर कल सुबह के ग्यारह बजे तक का समय तुम्हारे पास मित्रों से मिलने के लिए है।" उसने चारों ओर खोजती निगाहों से देखा—" देखो, वहाँ जो आदमी बैठा है, उसे बीयर का दूसरा गिलास चाहिए।"

जेसे जान उसकी बात सुनता रहा। वह कुछ कहना नहीं चाहता था, पर वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। "मैं सिर्फ इससे एक मिनट तक बात करना चाहता हूँ, मिस्टर!" वह बोला।

मि. न्यूकाम्ब एक झटके के साथ हाथी के समान ही बड़े कष्ट से उसकी ओर घूमा। "मैं तुम्हारी मेज पर एक अधेले की भी खाने-पीने की चीज तो देख ही नहीं रहा हूँ—" वह बोला।

जेसे जान ने कौनी की बाँह पकड़ ली। पहली बार वह इस तरह उसे नहीं छूना चाहता था; लेकिन अब उसे व्यर्थ समय नहीं बरबाद करना था। "आओ, कौनी!" वह बोला—" यहाँ काम करने के बारे में तुम्हें अब कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है।"

कौनी ने झटके से अपनी बाँह छुड़ा ली। उसने मनुहारभरी नजरों से मि. न्यूकाम्ब की ओर देखा। "मि. न्यूकाम्ब!" वह बोली—" मेरे पास अभी कोई काम नहीं था...मुझे इसके लिए दुःख है। ऐसी घटना मैं फिर नहीं घटने दूँगी।"

जेसे जान ने फिर उसकी बाँह पकड़ ली। इस बार उसकी पकड़ दृढ़ थी।

"आओ—" वह बोला—"दस बजे तक रुके रहने से कोई लाभ नहीं है। चलो, चलें हम यहाँ से।"

मि. न्यूकाम्ब पुनः उधर से उदासीन होकर अपने कउंटर की ओर बढ़ गया। "चली जाओ"—वह बोला—" "मुझे इसके लिए किसी नोटिस की जरूरत नहीं है। रात होने तक मुझे दूसरी लड़की मिल जायेगी। तुम बस चली जाओ यहाँ से।"

कौनी ने उसके पीछे पीछे जाने की कोशिश की और तब उसने जेसे जान की पकड़ से अपने को छुड़ाने का प्रयास बन्द कर दिया। वह रोना चाह रही थी। नौकरी पाने के लिए उसे काफी समय लगाना पड़ा था। नौकरी अच्छी थी और अब तक मि. न्यूकाम्ब का व्यवहार बड़ा सुन्दर और दोस्ताना था—जब तक कि जेसे जान नहीं आया था!

"मेरे पैसे—" वह असहाय भाव से बोली—"आपके पास मेरे..."

न्यूकाम्ब घूमा तक भी नहीं। "मैं अधूरे हफ्तों के लिए पैसे नहीं दिया करता—" वह बोला—"तुम अपने प्रेमी के साथ चलती नजर आओ।"

जेसे जान कौनी को लेकर दरवाजे की ओर बढ़ा। काउंटर पर पहुँचकर वह रुका। वह परिस्थिति स्पष्ट करने की आवश्यकता अनुभव कर रहा था।

"यह मेरी पत्नी है, मिस्टर—" वह न्यूकाम्ब से बोला—"अतः आप समझते हैं, मैं..."

"पत्नी या कोई और औरत—इसे मेरे रेस्तराँ से बाहर ले जाओ—" न्यूकाम्ब ने बिना नजरें ऊपर उठाये हुए कहा—"चलो जाओ अब।"

वे उस चमकती धूप में बाहर निकल आये। धूप बड़ी तेज थी; पर अधिक गर्म नहीं। सितम्बर के महीने में इस वक्त, इधर उत्तर में, धूप की यह तीव्रता एक स्फूर्ति लाती थी; गर्मी की गुंजाइश ही नहीं थी। उनके पीछे न्यूकाम्ब अपने पेट के बल झुककर खिड़की में "परिचारिका चाहिए" की तख्ती लटका रहा था।

"कोई बात नहीं—" जेसे जान ने कौनी से कहा—"हम लोग अब घर ही जायेंगे यहाँ से।"

कौनी बीच सड़क पर खड़ी होकर रोने लगी। "लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती—" वह बोली—"मैं तुम्हारे साथ घर नहीं जाना चाहती।"

जेसे जान ने उसकी बाँह पर की अपनी पकड़ निर्दयतापूर्वक कड़ी कर ली और वह कसमसा उठी। "मैं इस सारे समय, जब पापा को घर पर मेरी

जरूरत थी, तुम्हारी तलाश में भटकता रहा हूँ—भटकता रहा हूँ। ऐसी बात कहना भी नहीं।"

कौनी ने अपने चेहरे पर हाथ रख दिया और आँसू पोंछ डाले। "मैं नहीं जा सकती—" वह बोली—"मैं कहती हूँ तुमसे, मैं नहीं जा सकती।"

जेसे जान उसकी बाँह पकड़े खड़ा रहा और झुककर उसने उसके चेहरे की ओर देखा। "मेरे पास उतना किराया है—" वह आतुरता से नम्र शब्दों में बोला—"निश्चित रूप से, परसों घर पर होंगे। फसल इकट्ठी करने का समय आ गया है अब, कौनी, और तुम जानती हो कि हेमंत में घाटी कैसी लगती है देखने में—चारों ओर पहाड़ियों पर के पेड़ सर्वत्र छायी निस्तब्धता और खेत में कठिन श्रम में जुटे हुए हम लोग! फसल इकट्ठी करने के समय के बाद हमारे पास उसका पैसा होगा, कौनी, और जो चीजें हम खरीदना चाहेंगे, खरीद सकते हैं—जिस तरह उस बार मैंने तुम्हें वह शृंगार-मेज ले दी थी। घर के कामों में मदद करने के लिए ऑलिस को भी तुम्हारी जरूरत होगी। क्यों?" उसने अपने हाथों को फैलाकर कहा—"जितने सारे काम वहाँ करने को पड़े हैं, उन्हें करते हुए वह अकेले उस बड़े घर को नहीं सँभाल सकती।"

कौनी ने अब रोना बंद कर दिया था। वह उसकी ओर देखती हुई, उसकी बातें सुन रही थी और वह घाटी के बारे में सोच रही थी। जिस ढंग से जेसे जान उससे बातें कर रहा था, वह घाटी को जैसे प्रत्यक्ष देख रही थी—जैसे खेतों से होकर मैथ्यू, जेसे जान के साथ दिन का खाना खाने के लिए चला आ रहा हो, भीतरी बरामदे में उनके पैरों की आहट और पिछले बरामदे में हाथ-मुँह धोते समय उनकी बातचीत की आवाज़ सुनायी पड़ रही हो! उसने यह भी सोचा कि किस तरह दिन में तीन बार सब लोग रसोईघर में उस बड़ी गोलमेज के चारों ओर इकट्ठा होते थे और किस तरह उन सबका जीवन एक साथ गुँथा हुआ नियमित रूप से चल रहा था।

उसने इनकार में अपना सिर हिलाया। "मैं तुम्हारे साथ वापस नहीं जाऊँगी—" वह बोली और घूम पड़ी—"मैं अभी ही मि. न्यूकाब से बातें कर लूँ, तो अच्छा रहेगा। हो सकता है, वह मुझे मेरी नौकरी वापस दे दे, यद्यपि मैंने उसे बहुत नाराज कर दिया है। मैं उतने ही पैसे में ज्यादा दिनों तक काम कर सकती हूँ......"

"लेकिन तुम्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है, कौनी! कोई जरूरत नहीं है।"

कौनी ने अपनी आवाज़ ऊँची कर दी—"मैं घाटी में वापस नहीं जा रही हूँ। तुम सुन रहे हो न? मैं नहीं जा रही हूँ।"

तब जेसे जान को उसकी बात का विश्वास हो गया। उसने अपने दोनों हाथ, अपनी बगल में नीचे लटका लिये और उसकी ओर देखता रहा। "वह आदमी—" वह धीरे से बोला। उसकी आवाज़ रूखी और सर्द थी—"केरम हार्किंस!"

"तुम्हें मुझे मार डालना चाहिए था—" कौनी रुखाई से बोली—"तुम्हें मेरे पास आकर फिर घर चलने के लिए अनुरोध करने के बजाय पागलों के समान क्रोध में बफरते हुए आना चाहिए था।"

जेसे जान ने इनकार में सिर हिलाया। "मैं वैसा नहीं बन सकता, कौनी! मैं जानता हूँ, तुम मुझे छोड़कर भाग गयी थी; लेकिन सारा दोष मेरा था।"

"जेसे जान!" वह धीरे से बोली—"ऐसा करके मैं तुम्हारे साथ कोई भलाई नहीं करूँगी। मैं......

जेसे जान की आवाज़ में फिर आतुरता आ गयी—"उसका फैसला मुझे ही करने दो। मैं इसका खयाल रखूँगा कि तुम वहाँ खुश रहो। मैं......" उसका चेहरा फिर बदल गया—"लेकिन तुम उसके साथ रहना चाहती हो। तुम उसे ज्यादा पसंद करती हो।"

कौनी ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। "वह जा चुका है—" वह बोली —"उसने मुझे छोड़ भी दिया है। बस, सामान समेटा और चला गया।"

"तब देख ही तो रही हो—" वह बोला—"तुम्हें घाटी से दूर रोक रखने के लिए कुछ भी नहीं है। कोई भी अड़चन नहीं।"

"है।" वह रुखाई से बोली—"मैं माँ बनने वाली हूँ।"

जेसे जान ने उसकी ओर देखा। उसे इस बात की जानकारी थी कि इस तरह उस धूलभरी सड़क के बीच में उन्हें खड़ा देखकर, उधर से गुजरनेवाले लोग मुड़-मुड़कर उत्सुकतावश उन्हें देख रहे थे। जेसे जान अब देख पा रहा था कि कौनी का शरीर किस तरह बढ़ रहा था, जैसे घोड़ी के पेट में बच्चा रहने पर पहले के कुछ महीनों में उनके शरीर का विस्तार होता है। किसी मर्द की आँख के लिए यह चीज बहुत स्पष्ट नहीं थी; किंतु यह देखी जा सकती थी। कौनी सच कह रही थी।

उसने उसकी बाँह पकड़ ली और वे धीरे-धीरे चलने लगे। जेसे जान नीचे जमीन की ओर देखता चल रहा था। अपने उन गंदे कपड़ों के भीतर उसने

पसीना छूटता अनुभव किया, यद्यपि सूरज की तेज रोशनी बिलकुल ही गर्म नहीं थी। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी; किसी तरह उसके मन में यह विश्वास जग गया था कि कौनी केरम हार्सिकस से प्राप्त अनुभव के बाद, जिस दिन घर छोड़कर चली गयी थी, उसी दिन की तरह होगी—अपरिवर्तित—जैसा कि अपनी इन यात्राओं में वह स्वयं अपरिवर्तित बना रहा था। लेकिन ऐसा नहीं हो सका था; चीजें बदल गयी थीं और लोग एक साथ सोये नहीं कि बच्चों को जन्म दे दिया और ऐसे बच्चे ही आगे चलकर अपने समय में उपेक्षित पुरुष और नारी बनते थे। उसने अपने मन में यह सोचकर तीव्र ईर्ष्या अनुभव की कि केरम का बीज कौनी के पेट में पनप रहा था—ऐसी ईर्ष्या उसके मन में पहले कभी नहीं हुई थी—यह जानते हुए भी कि जितने महीने वह उसके पास से अलग थी, एक अपरिचित व्यक्ति के सहवास में रही थी। उसकी बगल में मौन चलते हुए वह मन-ही-मन अपने-आप से संघर्ष करता रहा। उसकी पकड़ में कौनी की जो बाँह थी, वह उसे सर्द और स्थिर-स्पंदनहीन लग रही थी। चलते हुए वे शहर के पुराने भाग की ओर चले आये। यह भाग निर्माण-कार्य आरम्भ होने के पहले का बचा हुआ था। वे ठोस कंक्रीट की सड़क पर चलते रहे। वे बस-स्टेशन के आगे से गुजर गये और जेसे जान वापस मुड़ा। कौनी को साथ ले, आगे-आगे चलता हुआ, वह भीतर घुस गया। वे एक बेंच पर बैठ गये, जैसे कहीं जाने के लिए बस की प्रतीक्षा हो उन्हें और तब तक वह अपने मन को कुरेदने वाली पीड़ा और क्रोध पर विजय पा चुका था।

"तब क्यों........." वह बोला।

"मैंने उससे इसके बारे में कहा—" वह कटुतापूर्वक बोली—"और उसी रात वह चला गया। उसने अपना सामान बाँधा और यह कहता हुआ चला गया कि अगर मैं बच्चे की माँ बनना चाहती हूँ, तो उसके बिना ही बन सकती हूं।

"अब सब ठीक हो गया है, कौनी—" वह बोला—"यह बच्चा मेरा भी तो होगा; क्योंकि यह तुम्हारा है। हम उसका उसी ढंग से पालन-पोषण करेंगे, जैसे मैं ही उसका पिता हूँ। सिवा हमारे, इस अंतर को कभी कोई नहीं जान पायेगा—बच्चा भी नहीं।"

कौनी की आँखें फिर डबडबा आयीं। आँसुओं से धुँधली हो गयीं आँखों से उसने जेसे जान की ओर देखा। वह उसकी इस महानता और स्वयं के भीतर

पूर्ण संतोष का प्रवाह अनुभव कर रही थी। उसने यह नहीं अनुभव किया था कि भीतर-ही-भीतर वह इतनी तंगदस्त थी—अनिवार्य विपत्ति के लिए उसके भीतर इतना तनाव था, जब कि प्रसव-काल में वह कोई काम नहीं कर पायेगी और इंतजार के दिन होंगे, जब वह खाली बैठी बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा करेगी और उसे यह भी ज्ञात नहीं होगा कि उसके पास खर्च के लिए पैसा कहाँ से उपलब्ध हो सकेगा।

वह उसकी ओर देखती रही। उसकी आँखें गीली हो आयी थीं। "तुम उसके बच्चे को स्वीकार कर लोगे?" वह बोली—"और फिर मुझे भी, इसके बाद भी......"

जेसे जान ने उसके हाथों पर अपना हाथ रख दिया। "इसीलिए तो मैं आया हूँ—" वह बोला—"तुम मेरी पत्नी हो कौनी। मैं चाहता हूँ, तुम मेरी पत्नी बनी रहो।"

उसने उन हाथों पर अपना सिर झुका लिया, जिससे जेसे जान उसका चेहरा नहीं देख सके। इस एकाकीपन को, इस खोखलेपन को, इस जारज संतान को उसने स्वयं अपने जीवन में बुलाया था और अब इसका परिणाम उसके लिए असह्य हो उठा था।

"जेसे जान!" वह असहाय भाव से बोली—"जेसे जान!"

जेसे जान ने उसकी आवाज़ की आर्द्रता अनुभव की और वह जान गया कि जीत उसीकी हुई है। बाकी बातों का कोई महत्व नहीं था। वह फिर कभी इनके बारे में सोचेगा भी नहीं। वह इस विचार को अपने दिमाग से निकाल बाहर करेगा। वह जानता था कि जब बच्चे का जन्म होगा, तो वह उसका ही बच्चा होगा, यद्यपि वह उसके वीर्य से नहीं पैदा हुआ होगा क्योंकि वह उसका पालन-पोषण करेगा और सिर्फ बनाने से, उसका पालनपोषण करना कहीं बड़ी चीज थी। वह उस बच्चे को अपनी प्रतिच्छाया में ढाल सकता था।

उसने टिकट-काउंटर की ओर देखा। "मैं पता लगा लूँगा कि अगली बस कब छूटती है—" वह बोला—"और हम लोग उस बस में होंगे। क्यों—" वह विचार-मात्र से अपने भीतर आश्चर्य-आनंद अनुभव करते हुए बोला—"तुम्हारे जानने के पहले ही, हम फिर घाटी में अपने घर में होंगे—जैसे कि हमने कभी घाटी छोड़ी ही नहीं थी।" वह मुस्कराया—"वे लोग हमें आते देखकर खुश भी होंगे। पापा अपने लड़कों का दूर रहना पसंद नहीं करते हैं।"

पसीना छूटता अनुभव किया, यद्यपि सूरज की तेज रोशनी बिलकुल ही गर्म नहीं थी। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी; किसी तरह उसके मन में यह विश्वास जग गया था कि कौनी केरम हार्सिंस से प्राप्त अनुभव के बाद, जिस दिन घर छोड़कर चली गयी थी, उसी दिन की तरह होगी—अपरिवर्तित—जैसा कि अपनी इन यात्राओं में वह स्वयं अपरिवर्तित बना रहा था। लेकिन ऐसा नहीं हो सका था; चीजें बदल गयी थीं और लोग एक साथ सोये नहीं कि बच्चों को जन्म दे दिया और ऐसे बच्चे ही आगे चलकर अपने समय में उपेक्षित पुरुष और नारी बनते थे। उसने अपने मन में यह सोचकर तीव्र ईर्ष्या अनुभव की कि केरम का बीज कौनी के पेट में पनप रहा था—ऐसी ईर्ष्या उसके मन में पहले कभी नहीं हुई थी—यह जानते हुए भी कि जितने महीने वह उसके पास से अलग थी, एक अपरिचित व्यक्ति के सहवास में रही थी। उसकी बगल में मौन चलते हुए वह मन-ही-मन अपने-आप से संघर्ष करता रहा। उसकी पकड़ में कौनी की जो बाँह थी, वह उसे सर्द और स्थिर-स्पंदनहीन लग रही थी। चलते हुए वे शहर के पुराने भाग की ओर चले आये। यह भाग निर्माण-कार्य आरम्भ होने के पहले का बचा हुआ था। वे ठोस कंक्रीट की सड़क पर चलते रहे। वे बस-स्टेशन के आगे से गुजर गये और जेसे जान वापस मुड़ा। कौनी को साथ ले, आगे-आगे चलता हुआ, वह भीतर घुस गया। वे एक बेंच पर बैठ गये, जैसे कहीं जाने के लिए बस की प्रतीक्षा हो उन्हें और तब तक वह अपने मन को कुरेदने वाली पीड़ा और क्रोध पर विजय पा चुका था।

"तब क्यों........." वह बोला।

"मैंने उससे इसके बारे में कहा—" वह कटुतापूर्वक बोली—"और उसी रात वह चला गया। उसने अपना सामान बाँधा और यह कहता हुआ चला गया कि अगर मैं बच्चे की माँ बनना चाहती हूँ, तो उसके बिना ही बन सकती हूँ।"

"अब सब ठीक हो गया है, कौनी—" वह बोला—"यह बच्चा मेरा भी तो होगा; क्योंकि यह तुम्हारा है। हम उसका उसी ढंग से पालन-पोषण करेंगे, जैसे मैं ही उसका पिता हूँ। सिवा हमारे, इस अंतर को कभी कोई नहीं जान पायेगा—बच्चा भी नहीं।"

कौनी की आँखें फिर डबडबा आयीं। आँसुओं से धुँधली हो गयीं आँखों से उसने जेसे जान की ओर देखा। वह उसकी इस महानता और स्वयं के भीतर

पूर्ण संतोष का प्रवाह अनुभव कर रही थी। उसने यह नहीं अनुभव किया था कि भीतर-ही-भीतर वह इतनी तंगदस्त थी—अनिवार्य विपत्ति के लिए उसके भीतर इतना तनाव था, जब कि प्रसव-काल में वह कोई काम नहीं कर पायेगी और इंतजार के दिन होंगे, जब वह खाली बैठी बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा करेगी और उसे यह भी ज्ञात नहीं होगा कि उसके पास खर्च के लिए पैसा कहाँ से उपलब्ध हो सकेगा।

वह उसकी ओर देखती रही। उसकी आँखें गीली हो आयी थीं। "तुम उसके बच्चे को स्वीकार कर लोगे?" वह बोली—"और फिर मुझे भी, इसके बाद भी......"

जेसे जान ने उसके हाथों पर अपना हाथ रख दिया। "इसीलिए तो मैं आया हूँ—" वह बोला—"तुम मेरी पत्नी हो कौनी। मैं चाहता हूँ, तुम मेरी पत्नी बनी रहो।"

उसने उन हाथों पर अपना सिर झुका लिया, जिससे जेसे जान उसका चेहरा नहीं देख सके। इस एकाकीपन को, इस खोखलेपन को, इस जारज संतान को उसने स्वयं अपने जीवन में बुलाया था और अब इसका परिणाम उसके लिए असह्य हो उठा था।

"जेसे जान!" वह असहाय भाव से बोली—"जेसे जान!"

जेसे जान ने उसकी आवाज़ की आर्द्रता अनुभव की और वह जान गया कि जीत उसीकी हुई है। बाकी बातों का कोई महत्व नहीं था। वह फिर कभी इनके बारे में सोचेगा भी नहीं। वह इस विचार को अपने दिमाग से निकाल बाहर करेगा। वह जानता था कि जब बच्चे का जन्म होगा, तो वह उसका ही बच्चा होगा, यद्यपि वह उसके वीर्य से नहीं पैदा हुआ होगा क्योंकि वह उसका पालन-पोषण करेगा और सिर्फ बनाने से, उसका पालनपोषण करना कहीं बड़ी चीज थी। वह उस बच्चे को अपनी प्रतिच्छाया में ढाल सकता था।

उसने टिकट-काउंटर की ओर देखा। "मैं पता लगा लूँगा कि अगली बस कब छूटती है—" वह बोला—"और हम लोग उस बस में होंगे। क्यों—" वह विचार-मात्र से अपने भीतर आश्चर्य-आनंद अनुभव करते हुए बोला—"तुम्हारे जानने के पहले ही, हम फिर घाटी में अपने घर में होंगे—जैसे कि हमने कभी घाटी छोड़ी ही नहीं थी।" वह मुस्कराया—"वे लोग हमें आते देखकर खुश भी होंगे। पापा अपने लड़कों का दूर रहना पसंद नहीं करते हैं।"

कौनी उसके आनंद-उछाह को समझ रही थी; किंतु वह भी इस आनंद-उछाह का अनुभव नहीं कर सकी। उसने घाटी के बारे में, आर्लिस के बारे में और हैटी की प्रश्न-भरी आँखों के बारे में सोचा। और उसके अपने माँ-बाप भी तो थे—और इलाके के वे सारे लोग, जो जानते थे कि वह एक अजनबी व्यक्ति के साथ वहाँ से भाग गयी थी। इस विचार-मात्र से उसे अपना दिल डूबता हुआ प्रतीत हुआ, पेट में ऐंठन महसूस हुई। उसके कंधे फिर सिकुड़ गये और वह उस सख्त बेंच पर जेसे जान से मुड़कर दूर खिसक आयी।

"मैं वहाँ नहीं जा सकती—" वह बोली—"क्या तुम देखते नहीं कि मैं नहीं जा सकती?"

जेसे जान ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया। "क्या?" वह बोला। उसकी आवाज़ में सचमुच ही आश्चर्य झलक रहा थ। उसने सोचा था कि निर्णय सबके भले के लिए और सबके पक्ष में हुआ था। "अब क्या बात है?"

कौनी ने अपना सिर उठाया। "क्या तुम चाहते हो कि जो लोग सारी बातें जानते हैं, उन्हीं के बीच मैं घुट-घुट कर जीवन बिताऊँ?" वह सुबकती हुई बोली—"तुम क्या समझते हो, मैं उनकी नजरें सह पाऊँगी? जब कि मैं यह जानती हूँ कि वे उस वक्त सोचते रहेंगे कि मैं किस तरह दूसरे आदमी के साथ भाग गयी थी, इसके साथ रही थी और एक बच्चे के साथ वापस आयी, जो जेसे जान का नहीं हो सकता; क्योंकि जेसे जान से जब मेरी मुलाकात हुई, उसके बाद इतनी जल्दी मेरे पेट में इतने दिनों का बच्चा नहीं हो सकता! और वे यह सब सोचेंगे। जब भी वे मुझ पर अपनी निगाहें डालेंगे—जब तक कि मैं मर नहीं जाती—वे यह सोचेंगे—ठीक आलू के भरे बोरे पर कोई नाम लिखने के समान!"

"लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़नेवाला—" जेसे जान ने विरोध दर्शाया—"सोचने दो उन्हें। बात तो सिर्फ मेरी और तुम्हारी है......और तुम जानती हो कि मैं यह नहीं सोचूँगा। तुम जानती हो कि मेरे मन में यह विचार नहीं उठेगा।"

पहली बार कौनी ने स्वेच्छा से उसका स्पर्श किया। उसके हाथ जेसे जान की बाँहों पर जकड़ गये और उसने उसके कंधे में अपना मुँह गाड़ लिया। "मैं इसका सामना नहीं कर सकती—" वह सिसकती हुई बोली—"मैं इसका बिलकुल ही सामना नहीं कर सकती।"

जेसे जान उसे अपने से लगाये रहा। वह मन-ही-मन बड़ी कठिनाई से, बड़े श्रम से, किसी समझौते पर पहुँचने का रास्ता तैयार कर रहा था। कौनी ने अपना सिर उठाया और फिर उससे दूर बैठ गयी। वह फिर तन कर, अलग-अलग बैठी थी।

"तुम घर वापस चले जाओ—" वह बोली—"वे तुम्हारे विरुद्ध में कोई चर्चा नहीं करेंगे। बस उन्हें इसका दुःख-भर होगा कि तुमने मुझ जैसी औरत से शादी की।"

जेसे जान ने इसके बारे में सोचा। उसने कौनी के बिना घर जाने की बात सोची भी नहीं थी और अब उसे इस विचार का सामना करना पड़ रहा था। कौनी नहीं जा सकती थी, वह अब जान गया था। कौनी का कहना ठीक था; लोग उसके बारे में बातें करेंगे और वह जान जायेगी। औरतें इसी तरह की होती हैं। घर वापस जाने पर, वे लोग उसे कभी अकेली नहीं रहने देंगी—कभी इसे भूलने का मौका नहीं देंगी। वे बच्चे को जिंदगी-भर संदेह की निगाहों से देखेंगी, यद्यपि जेसे जान स्पष्ट शब्दों में उसे अपनी संतान बतायेगा। वे अपनी उँगलियों पर हिसाब लगायेंगी, एक-दूसरे की ओर बनावटी हँसी हँसेंगी और सिर हिलायेंगी।

उसने इस सम्बंध में सोचना छोड़ दिया और दूसरे रास्ते के बारे में सोचना शुरू किया। यह सबसे कठिन काम था। वह हमेशा वापस जाने का इच्छुक था। आरम्भ से ही यह उसकी सीधी-सादी योजना थी—कौनी को ढूँढ़ निकालना और घाटी में वापस अपने घर पर आ जाना, जहाँ के वे थे और फिर घर पर हँसी-खुशी दिन बिताना। अचानक वहाँ लगा लाउडस्पीकर सजीव हो उठा और उसने उससे आती हुई एक रूखी, सुस्त आवाज़ में जगहों के नाम और बसें कहाँ-कहाँ जायेंगी, इसकी घोषणा सुनी। उसके आस-पास के लोग अपना सामान, बक्से और कोट उठाकर उन चौड़े दरवाज़ों से होकर निकलने लगे। वे वहाँ जा रहे थे, जहाँ उनका सामान बस पर चढ़ाया जाने वाला था। उसने इस यात्रा में स्वयं भी भाग लेने को सोचा था और उसके मन में आश्चर्य-भरी खुशी की लहर दौड़ गयी थी कि कुछ ही घंटों में—एक या दो दिनों में, वे पुनः घाटी में पहुँच जा सकते थे।

वह कौनी की ओर मुड़ा। "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा—" वह बोला—"हम यहीं अपना घर बसायेंगे।"

कौनी यह अंतिम निर्णय स्वीकार नहीं कर सकी। जेसे जान जब सोच रहा

था, तो वह उसके चेहरे की ओर देखती रही थी और वह उसके अंतर्द्वंद्व से परिचित थी।

"नहीं!" वह बोली—"तुम वहाँ बाकी डनबारों के बीच वापस जाना चाहते हो। और तुम वहीं के हो भी!"

वह उसकी ओर देखकर स्निग्धता से मुस्कराया। उसने उसे अपनी बाँहों के घेरे में लिया और अपने निकट खींचा। वह उसका कड़ा प्रतिरोध अनुभव कर रहा था और तब उसका प्रतिरोध विलीन हो गया। उसने अपना एक हाथ उसकी गर्दन पर रख दिया। वह इस स्पर्श से उसकी उपस्थिति की उष्णता का अनुभव कर रही थी।

"जहाँ तुम हो, वहीं मेरे रहने की जरूरत है—" वह बोली—"जहाँ तुम रह सको और प्रसन्न रहो। बस सारी बात इतनी ही है।"

वे एक-दूसरे के आलिंगन में बँधे रहे और जैसे जान ने उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा और वे फिर पति-पत्नी बन गये थे। एक या दो दिनों में वह उसके उभरते हुए पेट पर प्यार से हाथ फिरा सकेगा और बिना तनिक-सी पीड़ा अनुभव किये सोचेगा—"हमारा बच्चा, हमारा बेटा!"

"मैं नौकरी कर लूँगा—" वह बोला—"निर्माण-कार्य का मुझे अच्छा अनुभव है अब और नौकरियाँ पाने के ढंग भी मैं जानता हूँ। और तब हम एक ट्रेलर (चलते-फिरते घर वाली गाड़ी) खरीद लेंगे, जैसा कि बहुत-से लोग करते हैं। तब आसानी से घूम-घूम कर नौकरी कर सकेंगे। हम एक ऐसे मकान में अपना घर बनायेंगे, जिसमें चलने के लिए पहिये लगे होंगे—" उसने उसे कसकर अपने से चिपटा लिया—"और हम लोग खुश रहेंगे, कौनी! हम लोग खुश रहेंगे।"

मैथ्यू मन-ही-मन क्रोध से उफनता चिकसा-बाँध से घाटी में वापस आ गया। उसके मन में रह-रहकर बड़े कटु शब्द चक्कर काट रहे थे और वह सोच रहा था, काश, यह सब नाक्स को सुनाकर वह अपने असंतोष की सारी कटुता को वहीं खाली कर आया होता। उसने इनकार की उम्मीद नहीं की थी। उसने इनमें से कभी किसी से कोई चीज नहीं माँगी थी और उसे हमेशा से इसका विश्वास था कि बस उसके माँगने-भर की देर है और वे पूर्णरूपेण उसकी माँग पूरी कर देंगे।

वे अब उसके रक्त और माँस के नहीं थे। यह बिलकुल स्पष्ट और सीधा सत्य था। जिस दिन नाक्स ने घाटी छोड़ी थी, उसी दिन वह तत्क्षण ही, एक

अजनबी हो गया था और उससे मदद माँगने के बजाय आप उस बड़ी सड़क पर खड़े हो उधर से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति से मदद माँग सकते थे। उसने औजारों के गोदाम में अपनी गाड़ी खड़ी कर दी और खाना खाने के लिए घर के भीतर पहुँच गया। उसके चेहरे पर मुर्दनी-सी छायी थी। वह चुपचाप यों खाना खाता रहा, जैसा वह बड़ा अरुचिकर कार्य हो। रह-रह कर वह आँखें उठाकर, साथ साथ खाना खाने वाले व्यक्तियों की ओर देख लेता था। वह उनके चेहरे खोज-भरी निगाहों से देखता था; क्योंकि नाक्स में जो अजानापन उसने अभी पाया था, वह देखना चाहता था कि हैटी, आर्लिस और मार्क में भी तो वह नहीं है। खाना समाप्त करने के बाद उसने फिर मोटर निकली और घाटी से बाहर निकल आया। दिन के उस तीसरे पहर चालीस मील की दूरी तय कर वह जान के घर पहुँचा। उसका दिमाग जैसे अभी फटा जा रहा था। उसने अपने आने का उद्देश्य बिना किसी हिचक के बेलाग कह दिया और जवाब में उसने 'ना' सुनने की उम्मीद कर रखी थी।

पर जान ने उसे कहा कि जितने भी लड़कों को वह यहाँ के काम से मुक्त कर पायेगा, मैथ्यू उन सबको अपने काम लगा सकता है। उसे उन्हें एक अधेला भी नहीं देना होगा। वे कल ही मैथ्यू के यहाँ चले जायेंगे और जब तक फसल इकट्ठी करने का समय नहीं आ जाता, तब तक निश्चित रूप से वहीं रहेंगे। उस वक्त अवश्य ही उन्हें उन सबकी जरूरत होगी; लेकिन तब तक जाड़े के मौसम के लिए थोड़ा जलावन इकट्ठा करने के सिवा उनके पास और काम नहीं था।

मैथ्यू के मन का रोष थोड़ा कम हुआ और मैथ्यू वापस घर आ गया। अगली सुबह ही, जान के चार बेटे उसकी सहायता के लिए आ पहुँचे। जहाँ वह मिट्टी का बाँध बनाना चाहता था, वहाँ की जमीन उन लोगों ने साफ करनी शुरू की। लकड़ी के कुंदे और झाड-झंखाड़ वे सोते की सतह में फेंक रहे थे। वे उसे वहाँ भरने का प्रयास कर रहे थे, जहाँ पर बाँध बनने वाला था। आर्लिस ने उनके लिए काफी और बढ़िया खाना बनाया था और जी-भर खा-खाकर काम में जुटे थे। मैथ्यू भी अपनी मोटर में जमीन साफ करने के लिए वहाँ पहुँच गया। फसल इकट्ठी करने के वक्त जब वे लौट जायेंगे, तब तक उनकी मदद से इतना काम तो कर ही ले सकता था।

बहुत जल्दी ही, एक रविवार की शाम को जान आ गया और क्षमा-याचना के स्वर में बोला—"मैथ्यू, मेरा खयाल है कि मुझे अपने लड़कों को अभी ही

घर ले जाना होगा। हमें काफी बड़ी फसल इकट्ठी करनी है।"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। समय कितनी जल्दी बीत गया था और उसे इसका आश्चर्य था। पर जान की यह जायज माँग उसे बुरी लगी। हेमंत आ गया था, इसमें शक नहीं और उसके खेतों में भी फसल पकने लगी थी—मकई के बाल तैयार हो चुके थे।

"ठीक कहते हो तुम—" उसने एक आह भरते हुए कहा—"मैं तुम्हें अपनी फसल खेत में ही खड़ी छोड़ देने के लिए कैसे कह सकता हूँ। मुझे भी फिर अपनी फसल इकट्ठी करनी है।" उसने जान पर एक गहरी नजर डाली—"यों तुम्हारा काम समाप्त हो जाते ही वे वापस आ जायेंगे न!"

वे जो काम कर रहे थे, जान ने उस पर अपनी संदिग्ध दृष्टि डाली और कहा—"इनमें से कुछ को स्कूल भी जाना होगा।"

"जिसको भी भेज सकते हो, भेज देना—" मैथ्यू बोला—"और स्वयं भी आना, जान, अगर तुम आ सको। अगर हमने सावधानी नहीं बरती, तो अगले साल वसंत के मौसम में ही जलाशय का पानी घाटी में घुस आयेगा।"

जान उनके द्वारा दिये जा रहे काम की ओर देखता रहा—"तुम क्या सोचते हो, समय पर तुम इसे समाप्त कर लोगे?"

मैथ्यू उसकी ओर एक झटके से घूम पड़ा। "अगर तुम मेरी मदद करोगे—" यह बोला—"एक आदमी इसे नहीं कर सकता।"

"मैं उन्हें भेज दूँगा—" जान जल्दी से बोला—"और जब भी हो सका, मैं स्वयं आऊँगा।"

मैथ्यू जो सुनना चाहता था, उसे सुनकर वहाँ से हट गया। अब सामाजिक शिष्टाचार बरतने और खड़े होकर इधर-उधर की गप्पें मारने का समय नहीं था। मैथ्यू को एक काम पूरा करना था और टी. वी. ए. के उस बड़े बाँध की तुलना में उसके लिए यह काम कहीं बड़ा था। फसल की तरफ ध्यान देने की जरूरत पर उसे रोष आ रहा था। वह एक प्रकार से मन-ही-मन यह कामना कर रहा था कि अगर इस साल अपनी जमीन को बंजर ही छोड़ दिया होता, तो अच्छा था। तब इस महत्वपूर्ण कार्य से अलग हुए बिना, वह इसी में जुटा रहता। लेकिन उसने जो श्रम किया था, पसीना बहाया था, राइस ने जो श्रम किया था, पसीना बहाया था, इसके चलते वह फसल को यों ही खेत में बरबाद होने के लिए नहीं छोड़ दे सकता था। उसने खच्चरों को खोला, उन्हें चरागाह में छोड़ दिया और अपने खेतों की ओर चल पड़ा। उसे फसल

इकट्ठी करने का काम अभी से ही शुरू कर देना होगा—एक हफ्ता यों ही गुजर चुका था और समय रहते ही उन्हें इकट्ठी कर लेना सचमुच ही, उसका भाग्य साथ दे, तभी सम्भव था। उसे इस काम के लिए कुछ बाहरी आदमियों को बहाल करने की कोशिश करनी होगी, जल्दी से इसे खत्म करना होगा—अगर कपास चुनने की दर प्रति सैकड़े ७५ सेंट रही, तो भी!

इन दिनों में पहली बार उसने जेसे जान के बारे में सोचा। उसने अब अपने सभी बेटों को अपने दिमाग से बाहर निकाल रखा था। लेकिन यही वह समय था, जब उसने जेसे जान के घर पर होने आशा की थी। जेसे जान को अब तक कौनी को ढूँढ़ने का खयाल छोड़ देना चाहिए था—या उसने कौनी को पा लिया हो और कौनी की स्वीकृति के स्थान पर उसे ताड़ना मिली हो। पर वह अब और अधिक उसके भरोसे नहीं रहेगा या वह उनमें से किसी पर भी निर्भर नहीं रहेगा। वह खलिहान में पहुँचा और कपास के बोरे बाहर निकाले। उलट-पुलट कर वह उन बोरों की जाँच करने लगा। आर्लिस को इस वर्ष उसके लिए कुछ नये बोरे बना देने होंगे। इन बोरों के निचले भाग में, जो जमीन पर घसीटा जाता था, चिप्पियों पर चिप्पियाँ लग चुकी थीं और अब उन पर अधिक पैबंद नहीं लगाया जा सकता था। मैथ्यू ने महसूस किया कि इस तैयारी के साथ उसके ऊपर फसल इकट्ठी करने की जरूरत हावी होती जा रही थी और मिट्टी के उस बाँध का काम फिलहाल स्थगित हो जाना अब उसे उतना बुरा नहीं लग रहा था। आखिर, यह उसका काम था। इसी काम के लिए उसका जन्म हुआ था—पालन-पोषण हुआ था।

उसने आर्लिस को कहा कि वह नये बोरों के लिए सामान लाने शहर जा रहा था। हैटी भी उसके साथ जाना चाहती थी; लेकिन उसके पास शहर में हैटी के साथ व्यर्थ ही बरबाद करने के लिए समय का अभाव था, अतः उसने तुरंत ही इनकार कर दिया और उसे मोटर की बगल में अवाक् खड़ी छोड़कर ही उसने मोटर हाँक दी।

शहर में, उसने अपनी चीजें जल्दी से खरीद लीं। किसीसे बातें करने के लिए वह कहीं भी रुका नहीं। अगर किसी ने उससे बात भी की, तो उसने बस समर्थन में अपना सिर थोड़ा हिला दिया और अपने काम में जुटा रहा। उसने बोरे के लिए कपड़े खरीद लिये और दूकान पर कह दिया कि उसे कल ही कुछ कपास चुनने वाले व्यक्ति चाहिए। उसने बोरे के उस भारी कपड़े को मोटर की पिछली सीट पर रख दिया और फिर घर की ओर चल पड़ा। वह चाहता था

कि आर्लिस आज रात में कम-से-कम दो नये बोरे बना दे, जिससे हैटी और वह कल खेतों में काम कर सकें। हैटी को पहले कभी नहीं कपास चुनना पड़ा था! लेकिन इस बार उसे यह करना होगा और इतना ही नहीं, बल्कि मकई तोड़ने में भी उसे मदद करनी होगी। वह उन सब को खेतों में लगा देगा, जितने भी आदमी किराये पर मिलेंगे, सबको और फसल इकट्ठी करने का काम जल्दी से खत्म कर डालेगा, जिससे मौसम जब तक अच्छा है, वह अपने बाँध का थोड़ा काम कर ले सके!

लेकिन रास्ते में ही उसे डाकघर की याद आ गयी। उसने अपनी गाड़ी डाकघर के सामने रोककर एक ओर खड़ी कर दी और अपना लेटर-बाक्स देखने के लिये पहुँचा। काफी दिनों से वह शहर नहीं आया था, यह बात उसे याद थी। हेमंत और शरत् काल के बीजक अब तक सम्भवतः प्रकाशित हो गये होंगे। उसका लेटर बाक्स बीजकों, खाद-कम्पनियों, बीज-कम्पनियों आदि के विज्ञापनों से ठसाठस भरा पड़ा था। मैथ्यू को उन्हें दोनों हाथों से निकाल-निकाल कर अलग करना पड़ा—यहाँ तक कि उसकी वह छपी डाक समाप्त होने को आ गयी। अंततः उसने अपनी पूरी डाक निकाल ली और उन्हें दोनों हाथों में लिये उस काउंटर पर पहुँचा, जहाँ लोग खत वगैरह लिखा करते थे। उसने पूरी डाक वहाँ रख दी और जल्दी-जल्दी खोलकर उन्हें देखने लगा। अचानक उसके हाथ एक पत्र को देखते ही रुक गये। उसने उस लिखावट को तुरत ही पहचान लिया, यद्यपि इसके पहले उसने जिंदगी में कभी जेसे जान का कोई पत्र नहीं पाया था। लिफाफा खोलते समय उसकी अंगुलियाँ अचानक सख्त और खुरदरी लगने लगीं और लिफाफा खोलकर उसने उसके भीतर का अकेला कागज निकाल लिया।

"प्रिय पापा,

"मैं कुछ समय से आपको पत्र लिखना चाह रहा था; पर लिख नहीं पा रहा था। आशा है, आप अच्छे हैं। हम यहाँ सानंद हैं और मुझे एक अच्छी नौकरी मिल गयी है।

"मेरी कौनी से भेंट हो गयी और हर चीज ठीक हो गयी है। हम लोगों के बीच जो समस्या थी, हमने उसका निपटारा कर लिया है और वह मेरे पास वापस आ गयी है। मैं बहुत खुश हूँ कि हमने अपना यह पुराना झगड़ा निपटा लिया है, वह काफी अच्छी है।

"आपस में विचार करने के बाद हमने निश्चय किया है कि अगर हम वहाँ

वापस नहीं आयें, तो यह सर्वोत्तम रहेगा—खास कर जब कि नियमित वेतन पर मैं यहाँ बड़े अच्छे काम में नियुक्त हूँ। कल हमने एक ट्रेलर के लिए पहली किश्त के पैसे दिये हैं। हम उसी में रहेंगे; क्योंकि जो काम मैं कर रहा हूँ, उसमें हमें जगह-जगह घूमना पड़ेगा

"मैं आपको सिर्फ यह जताना चाहता था कि मेरे तथा कौनी के बीच हर बात ठीक हो चुकी है और हमने अपना पुराना झगड़ा सलटा लिया है। उसे इस बात की प्रसन्नता है कि मैंने उसकी तलाश की। हा-हा-!

"आशा है, आप सब अच्छे हैं। मेरा अनुमान है, जिस वक्त आपको यह पत्र मिलेगा, उस वक्त आप कपास बीनने में लगे होंगे। आलिस और हैटी को मेरी ओर से प्यार कर लीजियेगा और राइस तथा नाक्स को 'हैलो' कह दीजियेगा। अब, कागज समाप्त होने को आया; अतः मैं पत्र समाप्त करूँगा।

आपका बेटा
जेसे जान"

मैथ्यू ने जल्दी-जल्दी एक बार पत्र पढ़ा और तब उसने फिर पढ़ा उसे। धीरे-धीरे रुकते हुए उसने प्रत्येक पंक्ति बड़े ध्यान से पढ़ी। दूसरी बार पढ़ना समाप्त कर वह पत्र को एकटक देखता रहा और उस कागज पर एक बूँद पानी गिरते देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने एक हाथ से अपनी आँखें पोंछ लीं और चोरी-चोरी चारों ओर निगाहें दौड़ायीं कि किसीने उसे देख तो नहीं लिया। अंधों के समान उसने सारी डाक अपने दोनों हाथों में बटोर ली और डाकघर से बाहर सूरज की तेज रोशनी में निकल आया। सड़क से होकर वह अपनी मोटर की ओर बढ़ा। किसी व्यक्ति ने प्रसन्नतापूर्वक उससे कुछ कहा; पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने उस आदमी की बात सुनी ही नहीं थी। वह मोटर में चालक की सीट पर बैठ गया और बगलवाली सीट पर अपनी डाक रख दी। तब उसने वह पत्र उठा लिया और फिर उसे पढ़ा, मानो, हो सकता है, उस पत्र का मजबून बदल गया हो।

तब वह जान गया कि सब कुछ उसके जीवन से जा चुका है...नाक्स, जेसे जान और राइस और नाक्स तथा जेसे जान भी उसके मरे हुए बेटे के समान ही थे। वे फिर कभी घाटी में वापस उसके पास नहीं आयेंगे। उसने इसे पूर्णरूपेण समझ लिया और उसी क्षण उसने यह भी अनुभव किया कि पहले उसने कभी ऐसा नहीं समझा था। उनकी अनुपस्थिति में प्रतिदिन सुबह से

लेकर रात तक और रात से लेकर सुबह तक वह अपने मन में यही विश्वास लिये रहा कि उसके बेटे उसके ही रहेंगे।

उसने फिर आह भरी और आँखों पर अपना हाथ रख कर देखा कि वे अभी भी तो गीली नहीं थीं। मर्द रोया नहीं करते। उसने छिड़क कर अपनी नाक साफ की। वह मन-ही-मन स्वयं को औरत अनुभव कर रहा था और तब उसकी कमजोरी ठीक ही थी। अपने बेटों की जुदाई में किसी भी मर्द की आँखों में आँसू आ जाना जायज था। उसे तो चाहिए कि वह जमीन पर जा बैठे और अपने हाथ-पैर पटकते हुए और जोर-जोर से सिसकियाँ लेकर हृदय-विदारक रुदन कर अपनी आत्मा की पीड़ा हल्की कर ले! क्योंकि वे जा चुके थे। स्वयं उसके ही कथन से नाक्स के घाटी में आने रोक पर थी। राइस मर चुका था और जैसे जान ने अपनी इच्छा से उससे दूर—बहुत दूर जाकर रहने का निश्चय कर लिया था। लड़कियों में भी कोई शक्ति नहीं थी। उनकी प्रकृति ही, उन्हें समय पर, जब वे अपनी पसंद का साथी पा जायेंगी, उससे दूर ले जायेगी। अतः वह उन पर आशा नहीं लगा सकता था।

राइस जब दफनाया गया था, तब वह नहीं रोया था। शोक के आवेग से उसकी आँखें सूख गयी थीं, गर्म होकर जलने लगी थीं; लेकिन वह रोया नहीं था। किंतु उसके हाथ का यह पत्र धुँधला और धब्बेदार बन गया था, सूखी स्याही फिर से गीली होकर उसके हाथों से लिप-पुत गयी थी। क्योंकि वह अपने तीनों बेटों के लिए, स्वयं के लिए, घाटी के लिए और उस महान सुरक्षा-कार्य के लिए रो रहा था, जिसे वह अकेले नहीं कर सकता था—सिर्फ अपने लिए नहीं कर सकता था। अकेले, उतना कठिन श्रम निरर्थक भी था।

वह घर की ओर गाड़ी चलाने के बजाय घंटे भर से भी अधिक उसमें स्थिर बैठा रहा। एक बार उसने उस पत्र को अपने हाथों से मरोड़ डाला और नाली में फेंक दिया। तब वह गाड़ी से बाहर उतर पड़ा और उसे फिर उठा लिया। काँपते हाथों से उसने उसे सीधा किया और फिर से पढ़ा। अंततः उसने स्टीयरिंग व्हील पर झुककर गाड़ी फिर स्टार्ट की और गाड़ी में बैठ गया। वह धीरे-धीरे मोटर चलाता रहा; पर मोटर चलाने की ओर उसका ध्यान नहीं था। गाड़ी सड़क पर यों डगमगाती हुई चलने लगी, जैसे वह शराब पीकर बुत हो! उसने बिना ठीक से देखे काफी चौड़ाई में घुमाकर गाड़ी घाटी के भीतर की ओर मोड़ ली और घर के पास आकर रुक गया। उसने उस बड़े बलूत के पेड़ के नीचे क्रैफोर्ड की गाड़ी खड़ी देखी और वह अपनी गाड़ी से

उतरा नहीं। उसी में बैठा उसे देखता रहा। उस मोटर के चारों ओर बलूत के पेड़ की गहरी और घनी छाया पड़ रही थी और धूल में उसके टायरों के निशान बड़े गहरे उभर आये थे।

क्रैफोर्ड मकान से बाहर निकला और मुस्कराता हुआ उसकी ओर बढ़ा। मैथ्यू उसकी ओर देखता रहा और फिर उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। अभी वह उससे बात नहीं करना चाहता था, उससे मिलना नहीं चाहता था। क्रैफोर्ड ने उसकी मोटर के फुटबोर्ड पर पैर रख दिया और भीतर की ओर झाँककर देखा।

"आर्लिस ने मुझसे कहा कि तुम कपास के बोरे के लिए कपड़े खरीदने शहर गये हो—" वह बोला—"वह मेरे लिए भी एक बना दे सकती है।"

मैथ्यू ने सिर घुमाया। उसका चेहरा पथराया हुआ था और क्रैफोर्ड ने फिर अपने चुहलभरे शब्द प्रसन्नता-से दुहराये। उसने कुछ भी नहीं समझा था।

"क्या मतलब है तुम्हारा?" मैथ्यू बोला।

क्रैफोर्ड ने अपने हाथ ऊपर उठाये। "मेरे पास दो सप्ताह की छुट्टी है—" वह बोला—"अतः मैंने सोचा कि चलकर फसल इकट्ठी करने में तुम्हारी मदद ही करूँ। तुम्हें कुछ मदद की जरूरत भी है—है न?"

मैथ्यू ने अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। "अपने खेतों में मैं किसी अजनबी को नहीं चाहता—" वह भुनभुनाया और क्रैफोर्ड को उसकी बात सुनने के लिए थोड़ा और आगे झुकना पड़ा।

क्रैफोर्ड हँसा। "मैं कोई अजनबी नहीं हूँ, मि. मैथ्यू! मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। याद है न?"

मैथ्यू ने फिर अपना सिर घुमाया। उसे अपनी गर्दन की रगें सख्त और तनी हुई महसूस हो रही थीं। उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा, उससे परे मकान और बलूत के पेड़ को देखा। उसने पूरी घाटी का आँखों-ही आँखों से निरीक्षण किया और तब उसने पुनः क्रैफोर्ड की ओर देखा। "निश्चय ही"—वह बोला—"मैं तुम्हारा उपयोग कर सकता हूँ।" बगल में पड़े बीजक के ऊपर रखे उस पत्र की ओर बिना देखे उसने उस पर हाथ रख दिया। "लेकिन मैं तुम्हें आगाह कर देता हूँ। मैं तुमसे कड़ी मेहनत करवाऊँगा, क्रैफोर्ड! टी. वी. ए. की जो चर्बी तुम्हारे ऊपर चढ़ी है, वह सब खत्म हो जायेगी। अतः अच्छा यह होगा कि आज रात जाकर आराम से सोओ। कल तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी।"

प्रकरण उन्नीस

दो सप्ताहों तक क्रैफोर्ड ने मैथ्यू के साथ मिलकर कठिन श्रम किया। मैथ्यू सोचते-सोचते स्वयं भी बौखला उठता, क्रैफोर्ड को भी बौखला देता; लेकिन फिर भी समय शांति के साथ ही बीता। क्रैफोर्ड अच्छा काम करने वाला था और मैथ्यू के बराबर ही काम करता रहा। हर डग में, हर कतार में वह मैथ्यू के साथ-साथ रहता और वे आपस में बड़े प्रेम तथा शांतिपूर्ण ढंग से बातें करते। उनके हँसने में भी मैत्री झलकती थी और वे काफी देर तक मौन रह कर भी काम में जुटे रहते। क्रैफोर्ड लम्बा पाजामा और कमीज पहनता, जिस पर पसीने के दाग बन गये थे और वह रात में नावस के कमरे में सोता। रात में वह आर्लिस से जल्दी विदा ले लेता और सोने चला जाता। मैथ्यू जब उसे विदा लेते सुनता, तो वह मन-ही-मन उग्र भाव से मुस्कराता।

यह समय मैथ्यू और क्रैफोर्ड तथा मैथ्यू और उसके उस विशाल कार्य के बीच एक दरार की तरह ही था। मैथ्यू यह कभी नहीं भूला कि क्रैफोर्ड उसका शत्रु था। उन्होंने बाँध के बारे में कोई बात नहीं की, आर्लिस तथा क्रैफोर्ड और उनकी आपस में शादी करने की इच्छा के बारे में कोई बात नहीं की। मैथ्यू यह लगभग भूल ही गया था कि शांति कैसी होती है। वह जीवन-भर शांति के बीच ही रहा था, अपने जीवन से खुश और संतुष्ट और फिर भी एक वर्ष के छोटे-से अर्से में उसकी उपस्थिति उसके भीतर नियमित रूप से अजानेपन का रूप ले चुकी थी। "हमेशा ऐसा ही हुआ करता है—" वह स्वयं से कहता और वह इस पर विश्वास नहीं कर पाता था। वह बीते हुए समय में नहीं पहुँच सकता था और अपनी स्मृति में वह उसकी सजीवता भी अनुभव नहीं कर पाता था। मतभेद ने उसके भीतर से शांति और संतोष को बिलकुल मिटा दिया था और उसमें एकाकीपन की भावना घर कर गयी थी।

यद्यपि, कुछ समय के बाद, उन्होंने टी. वी. ए. के बारे में बात की। पहले के समान कलह और मतभेद के रूप में जोर-जोर से बातें करते हुए नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण ढंग से, विचारों की गहनता में डूब कर, जैसे वे अध्यात्म के किसी पहलू पर विचार-विमर्श कर रहे हों।

क्रैफोर्ड—मैं अपने जीवन-भर किसी ऐसी चीज की तलाश करता रहा, जिसमें मैं विश्वास कर सकूँ, जिसमें मेरी आस्था हो सके। मैंने तलाश की, तलाश की और तब टी. वी. ए. सामने आया, जो किसी भी व्यक्ति के

विश्वास और प्रयास को स्वयं में उसके जीवन-पर्यंत तक समाहित कर लेने के पर्याप्त था। मेरे पिता, लकड़ी चीरने के उस कारखाने और सी. सी. सी. कैम्प में जो कुछ भी था, टी. वी. ए. में था और उन सबसे पूर्णतया अलग, इसकी बिलकुल ही अलग अपनी भावना, अपनी व्याख्या थी। टी. वी. ए. में विश्वास करना, किसी व्यक्ति में विश्वास करने के समान है; क्योंकि यह विकसित होता है, बदलता है और प्रत्येक दिन की महत्तर उपयोगिता और प्रभावोत्पादकता के प्रति स्वयं को शिक्षित करता है।

मैथ्यू—टी. वी. ए. लोगों की जरूरतों और विधायकों के कानूनों द्वारा निर्मित है और राजनैतिक इसे उसी तरह मार भी दे सकते हैं, जिस तरह उन्होंने इसका जन्म दिया। विश्वास करने की चीज तो जमीन है; जमीन हमेशा बनी रहती है, जमीन को विनष्ट करने का कोई मार्ग नहीं है। जब जमीन के एक टुकड़े पर तुम्हारी नश्वर छाप लग जाती है, तो जब तक तुम्हारी मृत्यु नहीं हो जाती, वह मौजूद रहने वाली है।

क्रैफोर्ड—टी. वी. ए. एक कारपोरेशन है और कानून के कथनानुसार पवित्रता के जरिये ही कारपोरेशन एक व्यक्ति बन सकता है। लेकिन जो व्यक्ति इसका संचालन करते हैं, इनमें से एक ने एक मुहावरे में कह दिया—"टी. वी. ए. एक ऐसा कारपोरेशन है, जिसकी आत्मा है।" यह इस धरती पर नयी चीज है। टी. वी. ए. के पास विवेक है और एक उद्देश्य है। किसी धर्मोपदेशक के समान ही यह है। इसने परमात्मा की वह पुकार सुन ली और जवाब में इसने कहा—"ओ भगवान, मैं हूँ यहाँ।" और अपने कर्तव्य की भिज्ञता प्राप्त कर, उसने उसे पूरा करना आरम्भ कर दिया है।

मैथ्यू—इसके आत्मा भी है, यह मैं नहीं जानता था। किंतु यह स्वयं की पुकार में निश्चय ही लोगों को झपट लेता है।

क्रैफोर्ड—जब तुम इसके निकट खड़े होओ, तब तुम इसकी शक्ति और इसका औचित्य अनुभव करते हो और तुम इसका विरोध नहीं कर सकते।

मैथ्यू—औचित्य के बारे में जो भी तुम कह सकते हो, वह किसी व्यक्ति के कार्यों की विशालता नहीं है—बल्कि उसका आसपास के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है—यह है। और जहाँ तक म कह सकता हूँ, टी. वी. ए. का मेरे ऊपर बुरा ही प्रभाव पड़ा है।

क्रैफोर्ड—बिजली की लाइनों, खाद्य बनाने के सभी यंत्रों और बाढ़, जो अगले सौ सालों तक नहीं आयेगी, लोग मलेरिया से नहीं पीड़ित रहेंगे—को भी

तो ध्यान में रखो । फिर काम का बोझा हल्का हो जाने से औरत की जिंदगी भी कितने सालों के लिए बढ़ जायेगी। जब तुम इन सब को, स्वयं और इनब्रार-घाटी के विरुद्ध तौलते हो, तो तुम्हारा यह प्रयास कपास के इस खेत को तौलने और तब पूरे नेपल्स के सभी कपास के खेतों के बराबर बताने की तरह है।

मैथ्यू—यह मेरा है, क्रैफोर्ड! मेरे पास जो है, बस, यही है। कपास के इस एक खेत का जितना मेरे लिए महत्व है, उतना पूरे इलाके का नहीं! तुम मेरी नजरों में उसका वह महत्व ला भी नहीं सकते।

क्रैफोर्ड—तुम गलत हो, मैथ्यू! काश, मैं तुम्हें दिखला सकता, तुम कितने गलत हो!

मैथ्यू—तुम कोशिश तो कर रहे हो!

मैथ्यू—तुम्हें याद है, मैंने टी. वी. ए. के कानून द्वारा निर्मित होने के बारे में क्या कहा था अभी। बस, कांग्रेस में थोड़ा-सा परिवर्तन-भर होने दो और तब तुम देखोगे कि टी. वी. ए. की कैसी मौत होती है—पैसे वाले प्रभावशाली व्यक्तियों के बीच बँटकर यह उनकी निजी चीज बनकर रह जायेगी। और तब उन लोगों का क्या होगा, जिन लोगों को तुमने इसमें विश्वास करने, इस पर भरोसा रखने के लिये बाध्य किया है।

क्रैफोर्ड—वे इसे मार डालने की चेष्टा करेंगे, मान लेता हूँ। टी. वी. ए. के कट्टर शत्रु मौजूद हैं, मैथ्यू! किसी दिन ह्वाइट हाउस में अपने व्यक्ति को स्थान दिलाकर वे इसके विनाश के लिए कुछ बाकी नहीं रखेंगे और वे उस अवसर को उचित समझेंगे। लेकिन वे इसे करने में समर्थ नहीं हो पायेंगे, मैथ्यू! लोगों की टी. वी. ए. में आस्था बढ़ती जायेगी, बढ़ती जायेगी और टी. वी. ए. के अभ्यस्त हो जायेंगे और जब टी. वी. ए. के विनाश की कार्रवाई आरम्भ होगी, वे उसकी ओर अधिक ध्यान नहीं देंगे। लेकिन इसके पूरा होने के पहले वे जाग उठेंगे और एक साथ विरोध में उठ खड़े होंगे। वे उन राजनीतिज्ञों से कहेंगे—"बस, वहीं रुक जाओ। टी. वी. ए. अब तुम्हारी सम्पत्ति नहीं रही। यह अब हमारी है।" और टी. वी. ए. के विनाश के प्रयास का वहीं खात्मा हो जायेगा। वे इसे निर्बल बना दे सकते हैं। वे इसे इसकी पूर्ण सम्भाव्यता का उपयोग करने से रोक दे सकते हैं। वे अभी ही इसे बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। किंतु जनता के विरुद्ध वे पराजित हो जायेंगे और इसे स्वीकार कर लेंगे—ठीक उसी तरह, अंत में, उन्हें 'शुद्ध

भोजन और औषध-कानून' को मानना पड़ा था। वे उस वक्त इसे भी मान्यता दे देंगे कि सिर्फ अपने परिवार का पोषण करने-भर के लिए कोई व्यक्ति प्रति दिन १६ घंटा काम करे, यह जरूरी नहीं है। जब तक टी. वी. ए. के बाँध जीवित हैं, टी. वी. ए. स्वयं भी जीवित रहेगा—जिस कंक्रीट से बाँध बना है, उसी कंक्रीट की तरह टी. वी. ए. की क्षमता भी अद्भुत है। और यह विचार सदा जीवित रहेगा—सिर्फ यहाँ नहीं, वरन् सारी जमीन पर, सारी धरती पर। यह अब एक विचार है, जिस तरह एक पुस्तक है और किसी पुस्तक की कभी हत्या नहीं की जा सकती।

मैथ्यू—तुम्हें तो धर्मोपदेशक होना चाहिए था, बेटे। मैंने पहले भी इसे कहा है और मैं इसे फिर कहूँगा—तुमने अपनी सही पुकार को सुना नहीं!

क्रैफोर्ड—मैं उपदेशक ही हूँ, मैथ्यू! और किसी दिन मैं तुम्हें वेदी तक ले जानेवाला हूँ।

मैथ्यू—मैं दूसरे भगवान में विश्वास करता हूँ, बेटे। मेरा भगवान तुम्हारे भगवान से भिन्न है।

क्रैफोर्ड—छोड़ो भी इसे, मैथ्यू। स्वीकार कर लो, तुम पराजित हो चुके हो। त्याग दो उसे।

मैथ्यू—मैं ऐसा नहीं कर सकता, बेटे! मैं ऐसा नहीं कर सकता।

क्रैफोर्ड एक बार मैथ्यू को एक दूसरी जगह दिखाने ले गया और इस शांतिपूर्ण अंतर के मध्य भी, अपना वचन याद कर, मैथ्यू उसके साथ गया। लेकिन उसने उस जगह को दूर-दूर की निगाहों से देखा। वह इस जमीन पर स्वयं के होने की, जहाँ दूसरे लोग रहते थे, और मकान में रहने की, जिसे दूसरे ने बनवाया था, कल्पना ही नहीं कर पा रहा था। बिना कुछ होते, उसने इन्कार में सिर हिलाया और क्रैफोर्ड हतोत्साह हो गया, क्योंकि वह घाटी बहुत सुंदर थी—किसी भी मनुष्य के लिए उर्वर और सम्पन्न—वहाँ बने मकान भी मैथ्यू के मकानों से अच्छे थे। किंतु मैथ्यू का हृदय इसे स्वीकार करने से बहुत दूर था और क्रैफोर्ड का विश्वास पुनः एक नयी गहराई में डूब गया।

किस प्रकार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विश्वास को इच्छानुसार रूप दे सकता है? अपनी थकान में क्रैफोर्ड इसके बारे में सोचता—आर्लिस के साथ जब होता, तब भी और रात में बिस्तरे पर लेटा, आँखें खोले, वह इसका उत्तर ढूँढ़ने की चेष्टा करता रहता। और वह नहीं जानता था कि वह इसके हल के निकट नहीं है। उसने बिना किसी बंधन के मैथ्यू के साथ काम करने का

प्रस्ताव रखा था और उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था—मैथ्यू ने इस प्रकार उसका कोई प्रस्ताव पहले कभी नहीं स्वीकार किया। और वह जानता था कि मैथ्यू की इस स्वीकारोक्ति में परिस्थितियों का हाथ था—उसके दो सप्ताह की छुट्टियों से परिस्थितियाँ कुछ अनुकूल बन गयी थीं। जब वह चला जायेगा, तब मैथ्यू पुनः अपने कार्य और विश्वास के पुराने ढर्रे पर लौट जायेगा और तब फिर उसे समय नही मिलेगा, जो वह मैथ्यू को अपने विचारों में ढालने और बदलने की उम्मीद करे। अगर वह यहाँ असफल रहा, तो उसे मैथ्यू के पीछे कानून के कुत्तों को छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि समय दिन-पर-दिन कम होता जा रहा था।

वह उस कार्रवाई से ऐसे ही दूर भागता था, जैसे वह हत्या से दूर भागता। यह हत्या ही होगी और तो भी शस्त्र उसके हाथ में तैयार रखा था। यह जानते हुए भी कि वह जीत नहीं सकता, मैथ्यू उस शक्ति का विरोध करेगा और इस तरह की उसकी सम्पूर्ण पराजय उसे एक अपाहिज बूढ़े व्यक्ति में बदल देगी। इस पराजय से वह अपने भाई मार्क के समान ही बेकार हो जायेगा। जब भी क्रैफोर्ड मार्क को देखता, वह तेजी से अपनी आँखें हटा लेता; क्योंकि मार्क पराजित और पस्त मैथ्यू की प्रतिकृति था। चलते समय छोटे और स्फूतिपूर्ण कदमों से नहीं चल पाता था, जैसे मैथ्यू चलता था, बल्कि धूल में अपने पैर घसीटता था, जैसे उसके टखनों की ग्रंथियाँ दुर्बल, शक्तिहीन और लचीली हों! चलते समय वह सिर झुका कर चलता था। वह जमीन निहारता चलता था, जिससे शायद छोटी-छोटी चीजें ही उसके बेखबर पड़नेवाले कदमों को रास्ते पर बनाये रख सकें। उसके हाथ बड़े थे, गंदे थे और काँपते-से थे। किसी बोल्ट में नट डालने और उसे कसने के लिए भी उसे अपनी पूरी एकाग्रता व्यय करने की जरूरत महसूस होती थी। अपने बीते हुए दिनों की स्मृति में वह डूबा रहता था। उसके मस्तिष्क के भूरे तंतुओं के बीच उसके अतीत के दिन टूट-टूट कर एकत्र होते चले गये थे और वह मात्र स्वाभाविक प्रवृत्ति के बल पर जीवित था। क्रैफोर्ड के मस्तिष्क में पराजित मैथ्यू की यही तस्वीर थी। डनबार कभी अपनी हार शानदार ढंग से नहीं स्वीकार कर सकते—अपनी क्षति को वे पुनः प्रयास कर स्वयं में खपा लेने की चेष्टा की उम्मीद पर स्वीकार नहीं कर पाते; क्योंकि वे आरम्भ में ही अपने पूर्ण दर्प और उद्वेग के साथ बड़ी कठिन लड़ाई लड़े थे—उनके पीछे बीते हुए वर्षों की मान्यता और डनबारों की स्मृति रहती थी। मैथ्यू में एक ऐसी पूर्ण स्थिरता थी, जो तोड़ दी जाने के बाद, जीवित नहीं रह सकती थी।

यह उनके बीच अंतिम संधि होगी—दो हफ्तों का यह छोटा-सा समय, जब वे खेत में साथ-साथ काम करते थे और अंततः क्रैफोर्ड घर पर वापस होने का खीझपूर्ण संतोष अनुभव करता था। घर के इस सुख से वह इसके पहले सदा वंचित रहा था। दिन के खाने के समय आर्लिस पिछले बरामदे में खड़ी रहती और उन्हें खाने के लिए पुकारती। जब वे खलिहान से आते, तो वह उनकी ओर देखकर मुस्कराती। उसके बनाये हुए सुस्वादु-पोषक भोजन में अपना हिस्सा लेने के लिए जब वह जालीदार दरवाजा खोलकर रसोईघर में घुसता, तो अजाने ही, आर्लिस का स्वस्थ, सुघड़ और कामोद्दीपक शरीर, उसकी ओर जैसे झुक-सा आता। यह विवाहित होने के समान ही तरसानेवाला था—सिवा इसके कि वे रात में अलग-अलग बिस्तरों पर सोते।

आर्लिस के पास घर का काम ही इतना अधिक था कि खेत के काम में उसके हाथ बँटाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। लेकिन हैटी बहुधा उनके साथ कपास चुनने जाती थी। क्रैफोर्ड और मैथ्यू तेज कदमों से कपास चुनते हुए कतारों में आगे की ओर बढ़ जाते और हैटी सामान्यतः उनका साथ देने में असमर्थ रहती। वह बहुत पीछे छूट जाती और अपने बोरे में धीरे-धीरे कपास चुनती रहती। हैटी के प्रति मैथ्यू की उतावली देखकर क्रैफोर्ड को हँसी आती। मैथ्यू इस बात पर दृढ़ था कि हैटी से अधिक-से-अधिक काम लिया जाये, जिससे वह काम समाप्त कर अपने बाँध बनाने के काम पर जा सके। किंतु वह उसके प्रति कठोर नहीं हो पाता था। लगभग हर दूसरे दिन वह हैटी को खेत में आने के लिए मना कर, आराम करने को कहता। कपास चुनने के अलावा, थोड़ा-सा ही काम बच जाता था; क्योंकि मैथ्यू ने ज्यादा कपास नहीं बोयी थी। मकई तथा अन्य फसलों में काफी समय लग गया था। मैथ्यू उन्हें एक साथ ही जमा करता गया और अंततः वे उसे एक ट्रक में भरकर बाजार ले गये।

फसल एकत्र करने के बीच, क्रैफोर्ड चुपचाप मैथ्यू को अगले साल की फसल की तैयारी करते और योजना बनाते देखता रहा। वह उसे इसकी निरर्थकता बताने और इसका विरोध करने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था। उन्होंने मकई के डंठलों को सावधानी से काटा, जिससे अगले साल वसंत में खेतों में आसानी से हल चलाया जा सके और क्रैफोर्ड जानता था कि जब कपास पूरी तरह चुन लिया जायेगा, तो मकई के डंठलों के समान ही वह कपास के डंठलों को भी, चरी के स्थान पर काम में लाने के बजाय जला डालेगा। इतनी अधिक सावधानी, इतना अधिक विचार, इतनी अधिक योजना और अगले वर्ष खेतों

में मछलियाँ तैरती होंगी। इन सबके बावजूद मैथ्यू ऐसा कर सकता था और सिर्फ दो सप्ताह बचे थे, जिसमें मैथ्यू के जीवन की इस ढलान को बदला जा सकता था।

रात में मैथ्यू रहनेवाले कमरे में अपने बूढ़े पिता को देखने जाता और सामने वाले बरामदे में बैठा क्रैफोर्ड उसकी आवाज़ की भनभनाहट सुनता रहता। कभी-कभी यह आवाज़ घंटे-भर तक उसे सुनायी देती रहती। जब मैथ्यू कमरे से बाहर निकलता, तो ऐसा लगता अपने बूढ़े पिता से उसे महान सुख और विश्वास की प्राप्ति हो चुकी हो। ऐसा लगता था, जैसे वह उसके जीवन के अंतिम दिनों को भी अपनी सहायता के लिए निचोड़ ले रहा था। क्रैफोर्ड को जो सुनायी पड़ता था, वह उसे यह बताने को पर्याप्त था कि मैथ्यू उस बधिर मौन के बीच बार-बार सारी बातें अपने बूढ़े पिता से कहता था—अपनी योजनाएँ, अपनी आशाएँ, अपने विचार और अपने भय—सब वह दुहराता था, जैसे उसका बूढ़ा पिता उन्हें सुनकर उसे सलाह दे सकता था। लेकिन उसके बूढ़े पिता की स्थिति अब ऐसी हो गयी थी, जहाँ बातचीत एक प्रकार से पूर्णतया बंद भी। दिन-पर-दिन उसका जीवन सिर्फ खाने, साँस लेने और मुक्ति की आवश्यकताओं तक सीमित होता जा रहा था—जैसे वह प्रतिदिन सावधानी से अपनी शक्ति तौलता था और प्रति दिन एक और अनावश्यक प्रयास की कटौती कर देता था।

क्रैफोर्ड अनुभव कर रहा था कि मैथ्यू भी यही कर रहा था। घाटी की यही जीवन-आयु अधिक दिनों तक बनाये रखने के लिए वह अनावश्यकताओं की कटौती कर रहा था—अपने अनुग्रहों की, परिवार की, मित्रता की, नम्रता की और उदारता की। और क्रैफोर्ड जानता था कि अनिवार्य रूप से वह स्वयं को सभी मानवीय सम्बंधों और तर्कों से अलग कर पूर्ण अविचलितता में परिवर्तित कर लेगा और जब वह भी पर्याप्त नहीं होगा, तो उसकी आत्मा मर जायेगी। उसके बूढ़े पिता की आयु के समान यह भी निश्चित था। मैथ्यू के लिए जितनी भी स्थायी अच्छाइयाँ थीं—अपने लड़कों और लड़कियों के प्रति प्यार, सम्मान और आदर—सब शौक और आराम की चीजें हो गयी थीं, जिन्हें वह अब अधिक निभा नहीं पा रहा था। किसी बुरे शरत् काल के बाद आने वाले ग्रीष्मकाल के समान, वह काफी कम पीने लगा था और आइसक्रीम और बर्फ की चाय बनाने के लिए वह कभी अपनी टी-मोडल मोटर के बम्पर पर शहर से बर्फ नहीं लाया। क्रैफोर्ड जानता था कि यह गलत था, सम्पूर्णतः गलत;

लेकिन कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विश्वास को, जो उसका जीवन था, कैसे बदल सकता था, कैसे साँचे में ढाल सकता था? अतः क्रैफोर्ड रात में बिस्तरे पर लेटा हुआ जागता रहता और सोचा करता। अपने प्रयास की निष्फलता पर उसे दर्द होने लगता—मैथ्यू के लिए और स्वयं के लिए भी! क्योंकि उसका अपना भी एक अलग पक्ष था—एक ऐसा पक्ष, जिसके सम्बंध में वह कभी स्वयं को सोचने भी नहीं देता था, यद्यपि वह आलिस के प्रति उसके प्यार के समान उसके मस्तिष्क में हमेशा सजीव और निजी रूप में मौजूद रहता। अगर उसके दिमाग में टी. वी. ए. के बारे में जो धारणा थी, वह सही थी और टी. वी. ए. में सारी अच्छाइयाँ—वह औचित्य मौजूद था, तो उसे मैथ्यू की इस पूर्ण स्थिरता को—अविचलितता को, स्वीकृति और विश्वास में बदलना ही चाहिए था—यही नहीं, मैथ्यू के मन में टी. वी. ए. का पक्ष लेने की प्रवृत्ति का भी उदय होना चाहिए था।

यही वह जीत है, क्रैफोर्ड ने सोचा—मैथ्यू से आने वाले कल के आश्वासन को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करा लेना, नयी जमीन को स्वीकार करा लेना और उसके दिमाग में नये विचार को जन्म देना। और इसका दूसरा पहलू—अगर वह डनबार घाटी में बीते हुए कल को लेकर ही चिपका रहता है, तो यह मेरी पराजय है...और उसकी भी!

दृश्य नौ

श्रेय

वह अपने नये और कड़े-धुले कपड़े पहने हुए एक मोटा-ताजा व्यक्ति था और जब वह चलता था, तो उसके कपड़े आपस में रगड़ खाकर खरखराहट की आवाज़ करते थे। उसके पीछे की जेब में औजार भरे पड़े थे—एक हथौड़ा, एक स्क्रू ड्राइवर, एक भारी रिंच और एक भारी-सी संडसी, जिसके हत्थों में काला फीता लगा हुआ था। उसके हाथ में बंदूक की तरह की कोई चीज थी। वह दूकान में गया, वहाँ काम करने वाले लोगों से हाल-चाल पूछा और अपना मुँह पोंछने के लिए उसने नीले रंग का एक रेशमी रूमाल निकाला। रूमाल पहले ही गंदा हो चुका था और उससे मुँह साफ करने में उसे कोई मदद नहीं मिली। उन आदमियों ने उससे बात की और उसने हल्की तेजी से, समझने की मुद्रा में सिर हिलाया, जैसे उसके पास अधिक समय नहीं था और पूछा कि क्या टाइप के अक्षर आ चुके हैं। उन्होंने हाँ कहा और एक व्यक्ति ने अपने अंगूठे से उस ओर संकेत कर दिया, जिधर वे रखे थे। वह वहाँ गया और तार से बँधे उन टाइप के अक्षरों को उसने उठा लिया। कुल मिलाकर उनचास थे और वे उसके हाथों में काफी भारी-भारी लग रहे थे।

"देखो—" वह बोला—"तुम सब बस अब अपना काम छोड़ दे सकते हो। अपनी-अपनी तनख्वाह लो और घर जाओ।"

वे हँस पड़े और वह खुश होकर मुस्कराया। तब उसने पूछा कि क्या किसी ने उसके सहायक फ्रैंक को देखा था। जब उन्होंने बताया कि उन्होंने नहीं देखा था, तो उसने उदासी से अपना सिर हिलाया और होंठों ही होंठों में कुछ बुदबुदाया। उसने उन वजनी अक्षरों का एक भाग लिया और बाहर आकर कंक्रीट की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगा। अपने असंतुलित वजन को लेकर वह कठिनाई से चढ़ रहा था और उसकी एक बाँह झूल रही थी। वह बीच में रुका और अपने एक घुटने पर टाइपों का वह बंडल रखकर उसने क्षणभर आराम

किया और पुनः अपना चेहरा पोंछा। तब वह भारी कदमों से धीरे-धीरे फिर चढ़ने लगा। उसके भारी पैरों के प्रत्येक कदम के साथ उसके वस्त्रों की सरसराहट सुनायी दे जाती थी। वह अधबने दरवाजे से भीतर घुसा और उस चौड़ी विस्तृत सतह पर आगे बढ़ा। सतह अभी भी ईंट, सुर्खी आदि से गंदा पड़ा था। वह रुका और आँखें उठाकर उसने खिड़की के खाली ढाँचों की ओर देखा। शीर्ष की ओर से दो-तिहाई इस ओर तक की गयी उस चिकनी कंक्रीट की ओर भी उसने देखा।

उसने टाइप के उन अक्षरों को नीचे रख दिया और बाकी अक्षरों को लाने वापस नीचे आया। वह फिर बाहर निकला और व्यर्थ ही "फ्रैंक" पुकारते हुए चारों ओर नजर दौड़ायी। किंतु फ्रैंक ने कोई जवाब नहीं दिया। आते हुए इस बार वह अपने साथ एक लम्बी सीढ़ी भी लाया और उसे दीवार से लगाकर खड़ी कर दिया, जहाँ खिड़कियों की निचली सतह के ऊपर की कंक्रीट के साथ-साथ बर्मी से किये गये छेद आरम्भ हुए थे। उसने पहला अक्षर उठाया और सीढ़ी से अकेला ही ऊपर चढ़ा। इमारत के प्रतिध्वनित सूनेपन के विस्तृत विस्तार में वह एकाकी था। अक्षर भारी और धातु का बना था और उसका ब्रैकेट पीछे की ओर उभरा हुआ था। बर्मी से किये उन छेदों में ब्रैकेट इस तरह फिट किये कि वह अक्षर दीवार पर बिलकुल अपनी ठीक जगह पर आ गया। तब उसने बंदूक की तरह वाली वह चीज निकाली और उसकी मदद से उसने बर्मी के उन छेदों को उजले और चिकने प्लास्तर से अच्छी तरह भर दिया। रुक कर उसने अपने इस कार्य को देखा और संतोष उसके चेहरे पर खिल उठा। वह श्रमपूर्वक सीढ़ी से होते हुए नीचे उतर आया, सीढ़ी उठाकर वहाँ लगायी, जहाँ उन उनचास अक्षरों में का दूसरा अक्षर लगाया जाने वाला था और फिर सीढ़ी पर चढ़ा।

फ्रैंक वहाँ नहीं था और फ्रैंक की सहायता के बिना, काम की गति धीमी थी। लेकिन वह पूरी तन्मयता से धीरे-धीरे अपना काम करता रहा—जैसे कोई बच्चा वर्णमाला से खेल रहा हो—सीढ़ी पर चढ़ना, अक्षर फिट करना, सीढ़ी से नीचे उतरना और सीढ़ी को दूसरी जगह खिसका कर फिर चढ़ना। वह उस लम्बे-चौड़े कमरे की दीवार पर सम्पूर्ण एकाग्रता से काम करता रहा। काम करता हुआ वह आगे बढ़ता जाता था और अपने पीछे शब्द बनाता जा रहा था।

जब उसने काम समाप्त किया, तो सीढ़ी पर ऊपर-नीचे करते-करते उसके

पैरों में दर्द होने लगा था। वह जोरों से हाँफ रहा था। जेब से रेशमी रूमाल निकाल कर उसने अपने ललाट का पसीना पोंछा और अपने सिर को तिरछा कर अपने काम को देखने लगा। वह संतुष्ट था। कंक्रीट की दीवार पर जड़े वे अक्षर सीधे और यथार्थ दीख रहे थे और उनके जरिये विद्युत्-घर के उस ढाँचे को सम्पूर्णता प्राप्त हो गयी थी, जो पहले नहीं थी।

बस, चिकसा-बाँध पर ये ही अक्षर जड़े होंगे। एफ. डी. आर. से लेकर सुपरवाइजिंग इंजीनियर तक जिन लोगों ने इस निर्माण में हाथ बँटाया था, उनके श्रेय को यहाँ अंकित नहीं किया जायेगा। अधिकारतः इन अंकित शब्दों में, सिर्फ 'लिए' के स्थान पर 'द्वारा और लिए' दोनों का उल्लेख होना चाहिए था...लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं थी और अलावे, इससे उसका काम सिर्फ और बढ़ जाता। जिस तरह यह था, उसी तरह बिलकुल ठीक था। इन्हीं दिनों में एक दिन बड़े-बड़े लोगों का जत्था यहाँ आयेगा और बाँध का उद्घाटन-समारोह मनाया जायेगा। वे व्याख्यान देंगे और एक-दूसरे को बधाई देंगे। लेकिन उन सब से कोई अंतर नहीं पड़ेगा। आरम्भ में तो वे शब्द ही थे, जिन्हें उसने बड़े श्रम के साथ एक-के-बाद-एक करके दीवार पर जड़ा था और वे शब्द यहाँ हमेशा के लिए अंकित थे। संसार-भर के व्याख्यान उसे नहीं बदल सकते थे।

उसने अपना नीले रंग का रेशमी रूमाल निकाला और फिर अपने ललाट का पसीना पोंछ लिया। तब उसने वह गंदा रूमाल अपनी जेब में रख लिया और वहाँ से चल पड़ा। भारी कदमों से, औजारों से भरी अपनी जेब की खड़खड़ाहट के बीच वह अपने दूसरे काम की ओर चल दिया। उसके पीछे, उसके द्वारा जड़े वे शब्द स्थायी रूप से चमक रहे थे। कंक्रीट निर्मित उस विद्युत्-घर के अपरिवर्तनीय चढ़ाव के समान ही वे शब्द भी अपरिवर्तनीय थे और सदा वहाँ बने रहनेवाले वे शब्द बड़े सीधे थे—

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जनता के लिए निर्मित—१९३८

प्रकरण बीस

घाटी में वसंत बड़ी तेजी से आया। यहाँ तक कि मैथ्यू के बूढ़े पिता में से शरत्काल की जड़ता दूर हो गयी, वह मृत्यु के किनारे से वापस आ गया

और उसके जीवन की अवधि एक साल और बढ़ गयी। शरत् एक रात्रि के समान था और धीरे-धीरे उसकी आयु क्षीण होकर कुछ घंटों में सीमित हो गयी थी और तब सवेरा होने के समय जिस प्रकार अंधकार यह अनुभव करता है कि वह चिरस्थायी है, उसी प्रकार शरत् भी रह-रह कर उभर उठता था।

जाड़े के मौसम में उसने बाहर के शौचालय में जाना छोड़ दिया था। उसके बिस्तरे के किनारे ही इसके लिए एक बर्तन रखा रहता था और वह उसी का उपयोग करता था। लेकिन अब वह फिर बाहर जाने लगा। शायद यह उसकी शारीरिक शक्ति के कारण था, या शायद उसके पुराने खून में वसंत के नवजीवन का प्रभाव था; लेकिन वह अचानक ही, घाटी के लोगों के प्रति, निर्माण-कार्य के प्रति और शोरोगुल के प्रति सजग हो उठा।

किंतु मैथ्यू पर वसंत अपना दबाब डाल रहा था, अतः उसने पहले के समान उल्लास के साथ, जिससे वह कभी परिचित रहा था, जवाब नहीं दिया, बल्कि सिर्फ एक छिपी अधीरता से बोला—"हम एक बाँध बना रहे हैं, पापा!" और तब उसी प्रकार तेजी से चला गया। बहुत जल्दी ही, मैथ्यू के बूढ़े पिता के पैर थकने लगे और वह मकान के भीतर आराम करने और अपनी कुर्सी पर ऊँघने के लिए चला गया।

क्रैफोर्ड उस दिन अनिच्छापूर्वक घाटी में आया। शरत्काल व्यतीत होने के साथ-साथ उसके भीतर एक अबोध अनिछा धीरे-धीरे गहरी होती चली गयी थी और उसे मोटर को सही दिशा में चलाते रहने के लिए अपने हाथों के साथ जबर्दस्ती करनी पड़ती थी। सिर्फ आर्लिस का खयाल और उसकी आशा ही उसे घाटी में ले आती रही थी; अन्यथा बहुत पहले ही उसने अपना यह प्रयास छोड़ दिया होता। उसने उस मिट्टी के बाँध के बाहर मोटर रोक दी। यह बाँध उस पुरानी सड़क पर होकर बना था, जो घाटी के भीतर गयी थी और उसने क्रैफोर्ड का प्रवेश जैसे रोक रखा था। क्रैफोर्ड मोटर से उतर पड़ा और वहाँ जमा की गयी मिट्टी के ऊपर चलने लगा।

उसकी दाहिनी ओर आदमियों और खच्चरों का एक झुंड पहाड़ी टीले से मिट्टी खोदने में जुटा हुआ था। उधर सोते की ओर एक फिसलन-भरी सड़क बनी थी, जहाँ से होकर माटी को ढो-ढोकर ले जाया गया था। जब वह देख रहा था, उसकी बगल से एक दल गुजरा। जान के लड़कों में से एक, लगाम पकड़े, खच्चरों को आवाजें दे-देकर बढ़ावा देते हुए सोते के किनारे की ओर ले जा रहा था, जहाँ पहुँचकर उसने खच्चरों पर लदी मिट्टी नीचे गिरा दी और

वापस आने के लिए मुड़ा। वह फिर क्रैफोर्ड की बगल से गुजरा। खच्चर इस बार बड़े आराम से चल रहे थे और वह लड़का स्क्रपर (मिट्टी खोदने वाला यंत्र) पर सवार था। उनकी वापसी यात्रा में दूसरा दल बगल से गुजर गया। क्रैफोर्ड इस निरर्थक प्रयास को गौर से देखता रहा। उसके भीतर अनिच्छा की भावना धीरे-धीरे उभरती जा रही थी और उसकी इच्छा होने लगी कि बिना मैथ्यू अथवा आर्लिस से मिले, अपनी मोटर में बैठकर घाटी से दूर चला जाये। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका और मिट्टी के उस ऊँचे ढेर से नीचे उतर गया। वह उन आदमियों के बीच मैथ्यू की तलाश कर रहा था।

मैथ्यू एक फावड़ा चला रहा था और एक स्लाइड (एक प्रकार की गाड़ी) पर रखे बक्से में मिट्टी खोद-खोदकर भरता जा रहा था। उसकी चौड़ी और झुकी हुई पीठ की माँसपेशियाँ श्रम के कारण रह-रहकर तनती और उभरती थीं। सारे जाड़े भर क्रैफोर्ड ने उसे इसी तरह, शांत उन्माद में, काम करते हुए देखा था; लेकिन इस दृश्य से उसे चोट पहुँची। वह थोड़ा नजदीक बढ़ गया और काम रोककर मैथ्यू ने उसकी ओर नजरें उठायीं।

"सहायता करने आये हो?" सदा के समान ही व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग करते हुए वह वक्रतापूर्वक मुस्कराया।

क्रैफोर्ड ने इनकार में सिर हिलाया। "मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

मैथ्यू ने चारों ओर देखा और तब उसने अपनी नजर वापस क्रैफोर्ड की ओर कर ली। "मेरे पास बात करने के लिए समय नहीं है—" वह बोला—"घर में जाओ। आर्लिस सम्भवतः तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।"

मैथ्यू ने क्रैफोर्ड की ओर से मुँह फेर लिया। उसके पास क्रैफोर्ड के लिए समय नहीं था—उसमें, आर्लिस में अथवा अन्य किसी भी चीज में उसकी दिलचस्पी नहीं थी। उसकी रुचि सिर्फ इसी ओर थी कि बाँध बनाने के लिए वह दिन-भर में कितनी मिट्टी खोद सकता था और अपने काम में कितने आदमियों की सहायता प्राप्त कर सकता है।

फसल जब इकट्ठी कर ली गयी थी, तो वह लोगों से मदद माँगने के लिए उनके पास गया था। बिना किसी झिझक और लाज के उसने उनसे सहायता माँगी थी। उसने उनके लिए जब कभी कुछ किया था, उस सब की याद दिलायी—बीमारी और मौत के समय जब आकर उसने उनकी फसलों को सँभाला था—किस प्रकार किसी संकट-काल में वह उनमें से कुछ व्यक्तियों को अपने साथ घाटी में हफ्ता, महीना अथवा साल-भर तक रखने के लिए ले आया था—सबका

उसने उल्लेख किया। उसने निर्दयतापूर्वक अपना अनुरोध बार-बार दुहराया था और जब इससे कोई लाभ नहीं हुआ था, तब उसने उन लोगों को बाध्य किया था——स्वयं अपनी अनिच्छा और उनकी अनिच्छा के विरुद्ध! उसने उनके दिमाग में यह विचार भरकर विचलित कर दिया कि डनबार-घाटी में पानी भर जायेगा, डनबार-परिवार बेघर हो जायेगा और उन लोगों के बीच से हमेशा-हमेशा के लिए बिछुड़ जायेगा। और लोगों ने उसकी बात सुन ली। पहले मैथ्यू के मन में यह भय समाया था कि जैसे उसके बेटों के मन से सारी माया-ममता निकल चुकी थी, वैसे ही, उन लोगों के मन में भी मोह नहीं बचा था; लेकिन उन लोगों ने उसकी बात सुनी और मैथ्यू के समान ही उनके मन की भावनाएँ भी इस क्षति को सोचकर सुलग उठीं; क्योंकि उन सबके लिए डनबार-घाटी एक विशिष्ट घर था, यद्यपि उनमें से कुछ व्यक्ति सिर्फ एक या दो बार वहाँ गये-भर थे।

हर दिन संघर्ष का दिन था। प्रति दिन मैथ्यू यह देखने के लिए अपनी नजरें दौड़ाता कि कितने आदमी उसका हाथ बँटाने आये हैं। कोई-कोई दिन बीस-बीस आदमी रहते, तो किसी दिन एक या दो ही और उस दिन वह क्रुद्ध और रुष्ट हो उठता, अधिकतर चुप्पी साधे रहता और जब कोई सिगरेट सुलगाने अथवा पानी पीने के लिए काम के बीच क्षणभर का विराम देता, तो वह उसे झिड़क देता। शनिवार और रविवार को वह उन व्यक्तियों की उम्मीद नहीं करता था। वह उस दिन अकेले ही काम करने की सोचे रहता था। पर इन दोनों दिनों के अलावा अगर एक या दो दिन ऐसे गुजर जाते, जब आने वाले व्यक्तियों की संख्या बहुत कम होती, तो वह लोगों के घर-घर जाता—उन्हें फिर से उनका वादा, धरती के प्रति उनकी वफादारी, याद दिलाता।

और फिर भी, बाँध बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहा। किसी मरीज के समान रात में मैथ्यू की नींद खुल जाती और वह बाँध के बारे में सोचने लगता कि अभी तो कितनी अधिक मिट्टी वहाँ डाली जानेवाली है और तब कहीं वह घाटी में जल-प्रवेश रोक पायेगा। उसके मन में यह इच्छा बलवती होने लगती कि उस अंधेरे में ही वह उठकर वहाँ जाये और घाटी की सुरक्षा के लिए बनने वाली इस 'प्राचीर' पर थोड़ी मिट्टी और डाल आये। और फिर वह अशांत हो उठता। इस अत्यधिक श्रम के बाद भी, उसे सोते की चिंता अधिक थी। वह उसे लेकर चिंतित और भौंचक था। किसी भुक्कड़ के समान वह अपने अंतहीन उदर में मिट्टी निगलता जा रहा था। नदी के उस अवरुद्ध और

शांत पानी में जो अब उसके सोते पर बनाये बाँध तक ही आता था, मिट्टी यों घुलती चली जाती थी कि बार-बार स्लाइड में भर-भर कर मिट्टी डालने पर भी उसका कहीं पता नहीं चलता था। सोते का जल उन्हें उदरस्थ कर पचा डालता था। अगर सोते को भरने की समस्या नहीं होती, तो आसानी से काम दुगुनी तेजी से होता।

मैथ्यू ने स्लाइड को भर दिया और वह सोते की ओर बढ़ चली। जान का वह छोटा लड़का खच्चर को चाबुक फटकारते बढ़ाये लिये जा रहा था। मैथ्यू दूसरे काम के लिए घूमा और उसने देखा कि क्रैफोर्ड अभी भी धैर्यपूर्वक खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था।

"मैंने तुमसे कहा न कि मेरे पास बात करने के लिए समय नहीं है—" वह उसकी बगल से गुजरता हुआ बोला—"जाओ और जाकर आर्लिस से बातें करो।"

"मैं तुमसे मिलने आया हूँ—" उसके पीछे-पीछे आते हुए क्रैफोर्ड ने कहा।

मैथ्यू चलता रहा। वह अपने पीछे क्रैफोर्ड के पैरों की आहट सुन रहा था और अंततः वह उत्तेजित होकर घूम पड़ा—"अच्छी बात है। कह डालो। कह डालो और मेरे रास्ते से दूर हट जाओ।"

"मिनट-भर के लिए बैठकर तुम आराम क्यों नहीं कर लेते?" क्रैफोर्ड ने मृदु स्वर में कहा—"तुम्हें इसकी जरूरत है, मैथ्यू!"

मैथ्यू ने उसे जलती आँखों से देखा। उसकी आँखें लाल और बहुत सूखी-सूखी थीं और उसके दाढ़ीवाले चेहरे पर पसीना और धूल लगी थी। "जब यह बाँध पूरा हो जायेगा, मैं आराम कर सकता हूँ—" वह बोला—"तब मैं चाहूँ, तो जिंदगी-भर आराम कर सकता हूँ।"

वे अब बाकी सब लोगों से दूर थे। क्रैफोर्ड ने यह देखने के लिए पीछे की ओर नजर डाली कि वे लोग कम-से-कम इतने दूर तो हैं कि उनकी आवाज़ दूसरे व्यक्तियों द्वारा नहीं सुनी जा सके। तब उसने वापस मैथ्यू की ओर देखा।

"मैथ्यू!" वह बोला—"तुम्हें इसे रोकना ही है।"

पूरे जाड़े-भर उसने ये शब्द नहीं कहे थे। हेमंत में उनके साथ-साथ बिताये गये दो सप्ताहों की समाप्ति के बाद से, जब क्रैफोर्ड को अपने काम पर वापस जाना पड़ा था, वे आपस में बातें करने में समर्थ नहीं हो सके थे। मैथ्यू

सम्पूर्णतया अपने प्रयास में लीन और दत्तचित्त था और उन लोगों के बीच की सन्निकटता तथा हँसी-मजाक, जो कभी पहले उनके बीच बहुत थोड़े अर्से के लिए आ गया था, अब समाप्त हो चुका था। अतः अब क्रैफोर्ड की यह बेलाग बात मैथ्यू को आश्चर्यचकित कर गयी और उसने एक झटके से अपना सिर ऊपर उठाया, जैसे क्रैफोर्ड ने उसके चेहरे पर घूँसा मारा हो।

"तुम जानते हो......" उसने कहना शुरू किया।

क्रैफोर्ड ने बात काट दी—"यह काम नहीं करेगा, मैथ्यू! यह काम नहीं करेगा।" वह रुका और उसने एक गहरी साँस ली—"मैंने उन लोगों से कह दिया है कि वे तुम्हारी जमीन की जब्ती की कार्रवाई करें। मैंने अब कानून के हाथ में तुम्हारा मामला सौंप दिया है।"

मैथ्यू ने अपने फेफड़ों में पहुँचती और बाहर निकलती हवा में खरखराहट महसूस की। उसके चेहरे पर खून उभर आया और उसकी कानपटी की नसें सिर-दर्द के आरम्भ के समान, तनने लगीं। वह क्रैफोर्ड की ओर एक कदम बढ़ आया।

"तुमने कानून के हाथ में मेरा मामला सौंप दिया—" वह बोला—"तुमने ऐसा किया!"

क्रैफोर्ड ने अपने हाथ हिलाये—"मैंने तुम्हें बताने की कोशिश की। लेकिन तुम नहीं सुनोगे। मैंने तुमसे बार-बार कहा कि कुछ भी तुम क्यों न करो, उससे कुछ नहीं होने-जाने का। वे अब इस जमीन पर दखल कर लेंगे, तुम्हें इसकी उचित कीमत देंगे और इसे तुमसे ले लेंगे।"

मैथ्यू ठहर गया। उसकी आँखों में एक धूर्त चमक आ गयी। "जिस जमीन पर उनके जलाशय का पानी नहीं आयेगा, उस जमीन को वे कैसे जब्त कर सकते हैं?" वह बोला—"उनका कानून उस जमीन के सम्बंध में है, जिस पर बाढ़ आयेगी। घाटी में बाढ़ नहीं आयेगी—मैं उस बाँध को जब बना लूँगा, तब बाढ़ नहीं आयेगी। उन्हें अपने मामले का कोई आधार ही नहीं मिलेगा।'

क्रैफोर्ड ने असहाय-सी उत्तेजना अनुभव की। "उनके नक्शे और उनकी जाँच-पड़ताल बताती है कि यह जमीन जरूरी है।" वह बोला। उसने अपनी आवाज़ को संयत और तर्कसंगत रखा—"वे इसी के सहारे बढ़ते हैं। यही कानून है।"

"उन्हें सिर्फ अपने नक्शे और अपनी खोज-बीन में तब्दीली लानी होगी—" मैथ्यू ने अविचलित भाव से कहा—"उन्होंने यह अनुमान नहीं

लगाया था कि मैं यहाँ बाँध बनाऊँगा, बस और उन्हें अपना सोचा बदलना होगा।" उसने उद्यत और जलती नजर से क्रैफोर्ड की ओर देखा—"अतः बुलाओ अपने कानून को। देखो, वह क्या कर सकता है।"

"वे लोग आ रहे हैं—" क्रैफोर्ड ने भारी स्वर में कहा—"तुम्हारे पास जाब्ते के आवश्यक कागजात लाये जायेंगे—किसी भी समय अब। अतः अच्छा हो कि तुम यह काम रोक दो और इन आदमियों को वापस अपने घर जाकर अपने अन्य उपयोगी काम करने दो।"

"नहीं!" मैथ्यू थोड़े से में बोला। उसकी आवाज़ भारी और इस अंतिम शब्द के साथ निर्णयात्मक थी।

"मैथ्यू!" वह बोला—"वे सब अब जा चुके हैं। नदी के ऊपर और नीचे की ओर की घाटियों, नदी की तलहटी और उन सभी बड़े सोतों के ऊपर की घाटियों के लोग जा चुके हैं। शेल्टन, प्रेसाइज और अपजान—के सब, जिनकी घाटियों के नाम उनके नाम पर थे, अब जा चुके हैं, उनके मकान गिरा दिये गये हैं और पानी के लिए वहाँ की जमीन साफ कर दी गयी है। धरती बदल रही है, मैथ्यू! तुम बिलकुल अकेले हो अब। इससे मोर्चा लेने की कोशिश में तुम सिर्फ स्वयं को मार डालोगे।"

मैथ्यू विजेता के समान उधर मुड़ा, जिधर लोग काम कर रहे थे। "वहाँ देखो—" वह बोला—"क्या ऐसा दीखता है कि मैं अकेला हूँ? वे डनबार हैं। आज उनमें से अधिकांश नहीं आये हैं। कल सुबह मुझे तड़के ही जाना पड़ेगा और कुछ आलसियों को उठा कर लाना होगा। लेकिन क्या इससे ऐसा लगता है कि मैं अकेला हूँ?"

"हाँ!" क्रैफोर्ड नये स्वर में बोला—"तुम अकेले हो, मैथ्यू! जब कानून तुम्हारे पास आयेगा, ये सब पिघल जायेंगे—तितर-बितर हो जायेंगे।"

मैथ्यू ने चुटके से वापस क्रैफोर्ड की ओर देखा। "वह आ रहा है?" वह बोला—"वह अब आ रहा है?"

क्रैफोर्ड ने मौन, सिर हिलाकर 'हाँ' का संकेत किया। मैथ्यू उसकी ओर ऐसे देख रहा था, जैसे वह भूल गया था कि क्रैफोर्ड वहाँ है—जैसे वे आपस में बात ही नहीं कर रहे थे। उसका मुँह हिला और वह स्वयं से कुछ बुदबुदाया। उसने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखा और दाढ़ी के सख्त बालों को रगड़ने लगा।

"यहाँ आओ, क्रैफोर्ड!" मैथ्यू बोला। उसकी आवाज नर्म और शांत थी—

सिर्फ उन्माद की एक क्षीण आभा-सी थी उसमें—"मेरा खयाल, तुम्हें दिखाने का समय आ गया है।"

वह मुड़ पड़ा और क्रैफोर्ड को घर की ओर ले चला। उसके पीछे-पीछे चलता हुआ क्रैफोर्ड बरामदे से होकर भीतरी बरामदे में पहुँच गया। उसे अपने पीछे आने का संकेत करते हुए मैथ्यू ने अपने शयनागार का दरवाज़ा खोला। क्रैफोर्ड हैरतपूर्वक सोचता हुआ, उसके पीछे घुसा। मैथ्यू अपने बिस्तरे के पैताने पहुँचा, जहाँ वह हर रात बेचैनी की नींद सोता था और शरीर के लिए आवश्यक नींद से भी असंतुष्ट रहा करता था। उसने अपने बिस्तर के ऊँचे खम्भे पर हाथ रख दिया। उसके होठों पर एक सख्त मुस्कान थी, आँखें थकी-थकी थीं और उसके चेहरे की झुर्रियाँ गहरी हो गयी थीं, जैसे इस क्षण, अचानक उसके समस्त जीवन का बोझ उस पर आ पड़ा हो। और वह अचानक बहुत बूढ़ा हो गया हो। तब उसने वहाँ से अपना हाथ हटाया और अपने बिस्तरे को बलपूर्वक दूसरी दीवार की ओर आधी दूर तक हटा दिया।

क्रैफोर्ड का मुँह खुला रह गया। वह अबूझ, अविश्वसनीय नज़रों से नीचे फर्श की उन तख्तियों की ओर देखता रहा, जो बिस्तरे से छिपी हुई थीं और अब उसकी घूरती निगाहों के सामने अनावरित थीं। वहाँ बंदूकें रखी थीं—पिस्तौल, बंदूकें, राइफलें—यहाँ तक कि २२ कैलिबर की भी एक राइफल—सब फर्श पर रखी थीं और कारतूसों के बक्से दीवार से सहेज कर रखे थे। बंदूकें नग्न पड़ी थीं अथवा चमड़े की थैलियों में ढकी रक्खी थीं, पिस्तौल जीर्ण चमड़े की पेटियों में रखें थे। उनमें से एक पुराने किस्म की ४५ कैलिबर की थी, जिसके दस्ते उजले थे और उन पर एक नग्न औरत की लुभावनी आकृति बनी थी।

एक प्रयास के साथ क्रैफोर्ड ने नज़रें उठाकर मैथ्यू की ओर देखा। "तुम्हारा मतलब यह नहीं हो सकता—" उसने एक साँस ली।

मैथ्यू ने एक बार फिर सहमति व्यक्त करते हुए सिर हिलाया। "मेरा मतलब यही है—" वह बोला—"बाहर वहाँ जो व्यक्ति काम कर रहे हैं—वे कानून के आने से गल जाने वाले नहीं हैं। मैंने उनसे कह दिया है कि उन्हें क्या उम्मीद रखनी चाहिए।"

वह खड़ा उन बंदूकों को देखता रहा, जिसके ऊपर वह हर रात सोता था। वह ताज्जुब कर रहा था कि अगर उन लोगों को उसके बिस्तर के नीचे पड़ी इन बंदूकों की बात ज्ञात हो जाती, तो क्या वे उसकी बेचैन रातों को, जब वह सो नहीं पाता था, बाँट लेते! उनकी उपस्थिति उसके लिए सुखदायक नहीं थी, वह

तो एक विकट आवश्यकता थी। जितने घर इनबारों के थे, उनमें से किसी के यहाँ भी एक बंदूक या कारतूस नहीं थी, वे सब यहीं थीं और— इस सम्भावना की प्रतीक्षा कर रही थीं, जो आज क्रैफोर्ड अपने साथ लेता आया था। पूरे जाड़े-भर ये सब चीजें यहीं थीं और मैथ्यू ने इस रहस्य को स्वयं तक सीमित रखा था। बाँध बनाने में जो लोग उसकी सहायता कर रहे थे, उन्हें इस विषय में कुछ ज्ञात नहीं था। यहाँ तक कि आर्लिस भी नहीं जानती थी।

क्रैफोर्ड ने, मैथ्यू से दूर दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। उसके चेहरे पर अचानक ही उसके मन का भय प्रत्यक्ष हो उठा था और स्वेद-कण छलछला आये थे। "मैंने नहीं सोचा था कि यह स्थिति आ जायेगी।"

मैथ्यू स्थिर दृष्टि से उसे देखता रहा। "जब तुम किसी आदमी को धक्का देना शुरू करते हो—" वह बोला— "तुम्हें उस स्थिति के आने का अंदाज लगा लेना चाहिए था।" अचानक वह क्रुद्ध हो उठा— "तुमने सोचा था, तुम यहाँ अपने नियमों को लेकर चले आओगे और मेरे पास इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं रहेगा कि तुमसे तर्क कुतर्क करूँ, वकील करूँ और जब कि वकील और मैं दोनों ही यह अच्छी तरह जानते हों कि तुम्हारी अदालत में हमारी सुनवाई की कोई उम्मीद नहीं। लेकिन ऐसा नहीं होगा, क्रैफोर्ड! हम लोग अंत तक लड़ने जा रहे हैं और लड़ाई उन्हीं तरीकों से होगी, जिन्हें मैं चुनूँगा।"

क्रैफोर्ड की धारणा थी कि उसने मैथ्यू को भलीभाँति समझ लिया है। वह जानता था कि ऐसे व्यक्तियों में विद्रोह की भावना बहुत हल्की और ऊपर तक ही रहती है। उसने अपने पिता के लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने वाले आदमियों को देखा था, जो बात-बात पर मरने-मारने को आमादा हो जाते थे, चाकू निकाल लेते थे या देवदार के उन तख्तों को ही लेकर मार पीट करने को तैयार हो जाते थे। वह जानता था कि अपनी जवानी के दिनों में इसी घाटी को सौंपने की बात को लेकर मैथ्यू अपने सगे भाई से लड़ा था—दोनों जानवरों के समान, हाँफते हुए, आँगन में लड़े थे। किंतु उसने बंदूकों की उम्मीद नहीं की थी, इस दृढ़ता की आशा नहीं की थी। अब के मैथ्यू में, जिसे उसने अपने बाप से भी बढ़कर प्यार किया था, उसने अशांति और उपद्रव का तनिक-सा आभास भी नहीं पाया था और अब इस रहस्योद्घाटन का जो प्रभाव पड़ा था, वह उसे स्वयं के भीतर ही छिपा कर नहीं रख सका।

"तुम वे कागजात ला सकते हो—" मैथ्यू कह रहा था। उसके चेहरे पर कठोरता और एक प्रकार की दृढ़ता का भाव था तथा उसकी आवाज नर्म थी—

इतनी नर्म कि उसमें आक्षेप का आभास लक्षित होता था—"अगर तुम चाहो, तो एक-दो नहीं, टनों वैसे कागज ला सकते हो। लेकिन वे कागज की मदद से इस जमीन को नहीं ले सकते। इसके लिए उन्हें आदमियों की जरूरत पड़ेगी—आदमियों की और बंदूकों की। यही स्थिति आनेवाली है और मैं तैयार हूँ—" उसने अपने एक हाथ से फर्श की ओर संकेत किया—"सारी बातचीत, कागजात, कानून का उल्लेख, तर्क और औचित्य—सारी बातें अब समाप्त हो चुकी हैं। मैं अपना बाँध बनाने का दृढ़ इरादा कर चुका हूँ और इस घाटी को सभी आनेवालों से सुरक्षित रखने वाला हूँ—जिस तरह से डेविड डनबार ने स्वयं किया होता—टी. वी. ए. के. विरुद्ध, कानून के विरुद्ध और तुम्हारे विरुद्ध, क्रैफोर्ड !"

क्रैफोर्ड फिर से उन बंदूकों को नहीं देखना चाहता था। किंतु उसकी आँखें बरबस ही उधर चली गयीं। उसने देखा और उनकी भयंकरता उसके दिमाग में अंकित हो गयी। तब वह लड़खड़ाते कदमों से उस कमरे से बाहर भीतरी दालान में ताजी हवा लेने के लिए आ गया। अंधों के समान, वह मन-ही-मन एक पीड़ा अनुभव करते हुए, चोट खाये व्यक्ति की तरह चल रहा था। वह जानता था कि अपने सामने मैथ्यू की उपस्थिति वह और नहीं सहन कर सकेगा।

वह भीतरी बरामदे में ठहर गया और स्वयं को सहारा देने के लिए उसने दीवार से कंधा टिका दिया। वह भीतर ही-भीतर काँप रहा था। मैथ्यू अपने शयनागार से बाहर निकला और बिना उससे कुछ बोले या उसकी ओर देखे, बगल से गुजर गया।

वह वापस अपने काम पर उन आदमियों तक जा रहा था। क्रैफोर्ड उसकी चौड़ी पीठ निहारता रहा और तब उसने आँखें घुमा लीं। उसकी हालत किसी शराबी के समान थी और वह स्वयं को पराजित अनुभव कर रहा था। जो कुछ उसने शयनागार में अकस्मात् देखा था, उसकी कल्पनामात्र से उसका पेट हौंड़ रहा था।

उस अनिश्चित मनःस्थिति में वह सीधा खड़ा हो गया और रसोईघर की ओर बढ़ा। वह आर्लिस से मिलना चाहता था; पर रसोईघर सिवा हैटी के, खाली था और इससे उसे आघात-सा लगा। अब उसे आर्लिस से मिलना ही था।

"आर्लिस कहाँ है ?" उसने पूछा।

हैटी ने उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर देखा और तब उसने सिर हिलाते हुए रहनेवाले कमरे की ओर संकेत किया—"वहाँ।"

क्रैफोर्ड रसोईघर से होकर बढ़ा और उसने उस रहनेवाले कमरे का दरवाजा खोल दिया। आर्लिस अपने घुटनों पर झुककर बैठी थी और उसके सामने टब में उसका बूढ़ा दादा खड़ा था। वह उसे नहला रही थी और टब से उठती भाप उसके चेहरे पर लटक आये बाल को नम बना दे रही थी। भाप लगने से बाल ऊपर उठ जाते और मुड़ जाते थे।

"आर्लिस!" क्रैफोर्ड बोला और कमरे में भीतर की ओर बढ़ने लगा।

वह मुस्करायी—"मैं मिनट भर में खाली हो जाऊँगी।" वह घबड़ा गयी थी कि क्रैफोर्ड ने उसे इस तरह अपने बूढ़े दादा को नंगा नहलाते देख लिया था। लेकिन जब मैथ्यू अपने बाँध को लेकर इतना व्यस्त था, उसे अब यह करना ही पड़ता था। मैथ्यू अब इस प्रकार की किसी चीज के लिए समय नहीं निकाल पाता था। "रसोईघर में जाकर बैठो और काफी पीओ। मैं अभी वहाँ आती हूँ।"

क्रैफोर्ड रसोईघर में वापस आ गया। वह मेज के निकट बैठ गया और उसने अपने हाथ उस नंगी मेज पर रखकर उन पर आँखें गड़ा दीं; लेकिन वह उन्हें नहीं देख रहा था। उसकी आँखों के सामने अभी भी वे बंदूकें नाच रही थीं—प्रयास के बावजूद वह उन्हें अपने सामने से हटा नहीं पा रहा था। हैटी ने उसके सामने मेज पर एक प्याला रख दिया और उसमें काफी डाल दी।

"यह लो—" वह बोला—"पी लो इसे। जो भी चीज तुम्हारे मन को कुरेद रही हो, इससे तुम्हें लाभ होगा।"

क्रैफोर्ड ने आँखें उठाकर बड़ी सूक्ष्मतापूर्वक उसकी ओर देखा।

"मुझे निश्चित रूप से विश्वास है इसका कि तुम्हारे और आर्लिस के समान मेरे सामने इतने उतार-चढ़ाव नहीं आये हैं—" वह बोली—"मैं नहीं सोचती कि मैं इसे सहन कर पाती।"

क्रैफोर्ड उसकी उपस्थिति स्वीकार करने के लिए बाध्य हो गया। उसने उसकी ओर देखा। वह अब औरत थी—दुबली-पतली और उसके उरोज उठ आये थे, नितम्ब गोल हो गये थे। पहले के समान अब वह ऊपर से नीचे तक—सिर्फ एक जांघिये के ऊपर—एक ही सूनी पोशाक नहीं पहनती थी। अब वह ऊपर-से नीचे तक किसी औरत के समान ही सुसज्जित थी।

"तुम्हारा प्रणयी कौन है?"

हैटी ने अपना सिर झटक दिया। "कोई नहीं है—" वह थोड़े-से में बोली —"मैं चाहती भी नहीं हूँ। मैं यह सब करना कभी नहीं चाहूँगी कि..."

"इस सप्ताह नहीं—" वह बोला—"किंतु अगले सप्ताह। उससे अगले सप्ताह!"

वह शर्मा गयी और उसने अपनी निर्भीक आँखें नीची कर लीं। "मैं इस बारे में सोचती हूँ—" उसने स्वीकार किया—"मैं सारे समय इसके बारे में सोचती हूँ। ऐसा कैसे होता कि आप इस तरह किसी व्यक्ति के बारे में सोचने लग जाते हैं?"

"मैं नहीं जानता—" क्रैफोर्ड गम्भीरतापूर्वक बोला—"बस ऐसा होता है।"

हैटी क्रुद्ध हो गयी। "नहीं!" वह बोली—"मैं नहीं! क्यों हर कोई किसी के बारे में सदा चिंतित रहना चाहता है, उसे लेकर परेशानी उठाना चाहता है—उसके सम्बन्ध में सोचना चाहता है? तब यह महत्व नहीं रखता कि वह कौन है—बस कोई भी हो सकता है।" उसने उसकी ओर देखा और चुनौती सी देती हुई बोली—"मैं देख रही हूँ कि तुम और आर्लिस इससे बहुत खुश नहीं हो।"

क्रैफोर्ड का मन पुनः भारी हो उठा। "कभी-कभी ऐसा होता है—" वह बोला—"यह दाव तो तुम्हें लगाना ही पड़ता है।"

वह खड़ी हो गयी। "मैं?" वह बोली—"मैं किसी भी कीमत पर इस प्रकार की चीज अपने जीवन में नहीं आने दे सकती।" वह रोष में कमरे से बाहर निकल गयी।

क्रैफोर्ड मेज के निकट बैठा आर्लिस की प्रतीक्षा करता रहा। इस बातचीत से उसके मन की उथल पुथल दब गयी थी और अब वह पहले से अच्छा अनुभव कर रहा था। उसे इस बात की खुशी थी कि आर्लिस के आने के पहले उसे विश्राम का यह क्षण मिल गया था। अगर वह उससे तत्काल बातें कर लेने में समर्थ हो जाता, तो कहा नहीं जा सकता कि वह क्या-क्या कह देता—जब कि अपनी पराजय और दुर्बलता की भावना उसमें अभी भी सशक्त थी।

लेकिन अब पीछे नहीं हटा जा सकता था। जब्ती की कार्रवाई के मामले में उसने मैथ्यू से झूठ कहा था। अब तक वह स्वयं में, अंतिम रूप से अपनी समर्थता प्रकट करने का साहस नहीं एकत्र कर सका था, जो यह मामला कानून के सशक्त और निष्पक्ष हाथों में चला जाता। उसे यह बहुत पहले ही कर देना चाहिए था—पिछले हेमंत में ही, जब मैथ्यू के मन में अपनी बातों के प्रति

विश्वास दिलाये बिना, उसने उसका साथ छोड़ा था—जाड़े-भर में किसी भी समय, जब वह मैथ्यू से पुनः बाँध और टी. वी. ए. के बारे में बात नहीं कर पाया था—जब मैथ्यू के निषेध के नीचे वह, आर्लिस के साथ बरामदे में बैठकर प्रणय-वार्ता और चुम्बन की अपनी पुरानी निरर्थक जिंदगी दुहरा रहा था।

लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाया था। और, अंततः मैथ्यू से यह कहकर कि वह ऐसा कर चुका है, उसने स्वयं को ऐसा करने की स्थिति में ला रखा था। अंतिम धमकी के बावजूद वह इस बात की अब तक उम्मीद करता चला आया था कि मैथ्यू अंततः अपने शस्त्र डाल देगा और उसे वह कदम उठाने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। और तब बंदूकें आ गयी थीं।

क्रैफोर्ड ने क्रोध में भी कभी बंदूक नहीं पकड़ी थी। उसने उसका स्पर्श और भारीपन के बारे में कल्पना करने का प्रयास किया। उसने यह कल्पना करने की कोशिश की कि बंदूक उठाकर चलाने के लिए किस दृढ़ता और रोष की आवश्यकता पड़ेगी—किस प्रकार बंदूक का धक्का उसके हाथ को लगेगा, कैसे गोली चलने की आवाज सुनायी पड़ेगी और जिसे गोली लगेगी, उस व्यक्ति की चीख कैसी होगी! लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। विचार-मात्र से उसका दिल बैठने लगा, कँपकँपी-सी अनुभव होने लगी और दिमाग परेशान होने लगा। तब उसने उस स्थिति में मैथ्यू की कल्पना की—और यह बड़ा आसान था, बड़ा स्पष्ट था—बिलकुल प्रत्यक्ष! बंदूक की दूसरी ओर खड़े व्यक्ति कानून के आदमी होंगे, उनकी कमीजों पर सरकारी बिल्ले होंगे और उन्हें सरकार की ओर से अधिकार प्राप्त होगा—उनके साथ कानून की स्वीकृति होगी। लेकिन वह अपनी कल्पना में इसे देख सकता था—बिलकुल स्पष्ट देख सकता था।

आर्लिस जब कमरे में आयी, वह इस भयानक चिंतन में डूबा हुआ था। उसकी ओर देखते हुए आर्लिस रुक गयी और तेजी से उसकी बगल में आ खड़ी हुई। उसने उसके झुके हुए सिर पर हाथ रख दिया और तेज-चिंतित आवाज़ में बोली—

"क्या बात है, क्रैफोर्ड?"

क्रैफोर्ड ने मेज पर से इस तरह अपना सिर उठाया, जैसे वह बड़ा भारी हो। फिर उसने आर्लिस के शरीर से अपना सिर टिका दिया। वह अपने गाल के नीचे उसके पेट की उठान का स्पर्श अनुभव कर रहा था और उसके शरीर की उष्णता वस्त्रों से होकर उसके भीतर पहुँच रही थी।

"उसने वहाँ बंदूकें रख छोड़ी हैं—" वह बोला। उसकी आवाज़ रुँधी थी—"वह उन बंदूकों का उपयोग करने के लिए इच्छुक और तैयार है।"

उसके सिर पर रखे आर्लिस के हाथ की पकड़ सख्त हो गयी और आर्लिस ने उसका सिर अपने शरीर से और सटा लिया। "मैं जानती हूँ—" वह बोली।

क्रैफोर्ड उससे दूर हट गया। "तुम जानती थी?" वह बोला—"तब क्यों......"

एक क्षीण मुस्कान उसके चेहरे पर दौड़ गयी। "उन्हें नहीं मालूम कि मैं जानती हूँ। लेकिन आखिर, मैं इस घर की देखभाल करती हूँ। तुम उस औरत से कोई भी चीज नहीं छुपा सकते, जो घर चलाती है।"

"तब तुमने मुझसे कहा क्यों नहीं?" क्रैफोर्ड ने जानना चाहा। वह उसकी ओर देख रहा था और उसे ताज्जुब हो रहा था कि कहीं आर्लिस की भी सहमति तो नहीं थी, कहीं वह......

आर्लिस ने उसकी ओर नहीं देखा। उसने उसके कंधे की ओर अपना हाथ बढ़ाया और फिर वापस खींच लिया। "मैं यह उम्मीद करती रही थी कि यह स्थिति नहीं आने पायेगी।" वह बड़ी कमजोर और निराश आवाज़ में बोली—"मैं डर रही थी कि अगर तुम्हें यह ज्ञान हो गया, तो तुम उसे यह कदम उठाने के लिए मजबूर कर दोगे। मैं उम्मीद करती रही......"

आगे कुछ कहे बिना वह खामोश हो गयी। वे मौन इस बात पर विचार कर रहे थे।

"बंदूकें—" वह मलिन स्वर में बोला—"तुम्हें मुझसे कहना चाहिए था।"

आर्लिस उसकी बगल वाली कुर्सी पर बैठ गयी। वह बोली—"जो भी मैं कर सकती थी, मैंने किया।"

क्रैफोर्ड उसकी ओर झुक आया। "वह उनका उपयोग करेगा—" वह बोला।

आर्लिस ने सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की।

"उसने बंदूक अपने हाथ में उठायी नहीं कि वह जेल चला जायेगा—" वह बोला—"वे उसे मार डालेंगे या जेल में डाल देंगे।" वह खामोश हो गया। वह अपनी कल्पना में, मैथ्यू को सींकचों के भीतर, एक कैदी के रूप में, देख रहा था। किंतु मैथ्यू, जो जिंदगी-भर स्वतंत्र और अपनी मर्जी का मालिक रहा था, इसे नहीं सह पायेगा। "क्या वह यह नहीं जानता है?"

"वह जानता है—" आर्लिस बोली। उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा—

"तुम उसे रोक नहीं सकते, क्रैफोर्ड! उसे रोकने का कोई रास्ता नहीं है।"

क्रैफोर्ड ने इसके बारे में सोचा। अब यह अपरिहार्य था। उसका अपना रास्ता था। अपनी प्रणाली थी और मैथ्यू का अपना था। और ये दोनों रास्ते जहाँ एक-दूसरे को काटते थे, वहाँ था उपद्रव, अशांति—दोनों की अनिच्छा और एक के भय के बावजूद! क्रैफोर्ड के जिम्मे उसकी प्रणाली का जो भाग सौंपा गया था, उसे वह पूरा करना था और मैथ्यू की सौंपी गयी प्रणाली पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। और मैथ्यू की भी यही स्थिति थी।

क्रैफोर्ड ने अपनी उत्तेजना कम होती महसूस की। उसका दिमाग इससे दृढ़ हो गया और मैथ्यू तथा बंदूकों के प्रति उसकी जो भावना थी, वह सख्त हो गयी।

"हम कुछ नहीं कर सकते हैं—" वह बोला।

"हम कुछ नहीं कर सकते हैं।"

"वह अपने रास्ते जा रहा है—" क्रैफोर्ड बोला।

"वह अपने रास्ते जा रहा है।"

अपरिहार्यता का यह सम्मिलित उच्चारण बंद हो गया। क्रैफोर्ड ने अपने चारों ओर नजरें दौड़ायीं—रसोईघर में, आर्लिस की ओर और खिड़की के बाहर पिछवाड़े में! दूर उसने, उन आदमियों में से एक को चिल्ला कर खच्चर को हाँकते सुना। उसने वापस आर्लिस की ओर देखा।

"अब हम उसे नहीं बचा सकते हैं—" वह सख्त और कड़ी आवाज में बोला—"उसके दिमाग में यह चीज किसी असाध्य बीमारी की तरह घर कर गयी है— कैंसर के समान ही! हम सिर्फ स्वयं को बचा सकते हैं।"

आर्लिस ने उसकी ओर अपना सिर घुमाया और देखने लगी। उसका चेहरा क्रैफोर्ड के बर्फ के समान सफेद पड़े चेहरे के समान, भावविहीन और सख्त था। क्रैफोर्ड ने उसकी बाँह पर अपना हाथ रख दिया।

"अब यह समय है—" वह बोला—"यह समय है हमारे जाने का।"

वह उसके स्पर्श से हिली नहीं। "हम?" वह बोली, जैसे उसका मतलब समझ नहीं पा रही थी।

क्रैफोर्ड उसकी ओर झुक आया। "हम—" वह क्रुद्ध होकर बोला—"हम लोग अब उसे छोड़ रहे हैं। तुम और मैं। हम लोग कम-से-कम अपने को तो बचा ले सकते हैं।"

आर्लिस ने अपनी बाँह हटा ली। उसने क्रैफोर्ड के शब्दों की पुकार को

अनुभव किया; लेकिन वह जवाब नहीं दे सकी। "तुम जाओ—" वह बोली —"मुझे ठहरना है।"

क्रैफोर्ड उठकर खड़ा हो गया। वह आर्लिस के ऊपर झुक गया और उसके कंधे पकड़कर उसने उसे झकझोर दिया। "क्या तुम सोचती हो, उसे तुम्हारी फिक्र है?" वह क्रुद्ध स्वर में चिल्लाकर बोला—"तुम क्या सोचती हो कि तुम उसके लिए खाना पकाने, सफाई करने और वहाँ बाँध पर काम करने वाले उसके गुलामों को खिलाने वाली के अलावा और कुछ हो? क्या तुम यह नहीं देखती हो।"

"मैं उसकी बेटी हूँ—" वह बोली—"मैं आर्लिस डनबार हूँ।"

"तुम उसकी बेटी थी—" क्रैफोर्ड झिड़क कर बोला—"उसके बेटे थे और बेटियाँ थीं। लेकिन अब उसके पास कोई नहीं है। बेटे जा चुके हैं। वे जा चुके हैं और तुम जा चुकी हो—उसके दिमाग से, उसके दिल से, उसके विश्वास से! अब सिर्फ मैथ्यू है, घाटी है और वह बाँध, जिसे वह बना रहा है। क्या तुम यह नहीं देख पा रही हो?"

आर्लिस ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और क्रैफोर्ड ने उसके कंधों पर से हाथ हटा लिये। "अभी उसने कहा नहीं है—" वह स्थिरतापूर्वक बोली—"अभी तक उसने मुझे तुम्हें नहीं सौंपा है।"

क्रैफोर्ड उसकी ओर से घूम पड़ा। वह अब उसकी ओर अधिक नहीं देख सकता था। उसके चेहरे पर बहुत अधिक डनबार होने की भावना मौजूद थी—अजेय, अपरिवर्तनीय और दृढ़ डनबार की छाप, जिसे प्यार या कथन या क्रोध न छू सकते थे, न सिहरा सकते थे।

"वह नहीं कहेगा—" वह बोला—"वह तुमसे यह कहने की सोचेगा भी नहीं; क्योंकि तुम्हारा अस्तित्व ही नहीं है। बाहर काम कर रहे उन व्यक्तियों की तरह तुम एक गुलाम हो।" वह झटके से घूम पड़ा—"तुम कभी उसे प्रिय रही भी नहीं। हैटी उसे प्रिय थी। और कबसे तुमने उसे उससे बातें करते अथवा उसकी ओर देखकर सस्नेह मुस्कराते हुए और अपने पिता का कर्त्तव्य करते हुए, जो और किसी का नहीं, सिर्फ उसका ही पिता बना रहता था, नहीं देखा है?"

"काफी समय हुआ—" वह बोली—"एक लम्बे अर्से से।"

क्रैफोर्ड वापस आ गया। वह आर्लिस के सामने बैठ गया और झुककर चेहरे की ओर देखने लगा। उसने अपने हाथ अभी अपने घुटनों पर रख छोड़े थे और इस बार उसकी आवाज़ नम्र थी।

"वह बदल गया है, आलिंस!" वह उससे बोला—"वह वह मैथ्यू नहीं है, जो वह था। अब इसके बारे में सोचो और देखो कि वह कैसा बदल गया है। जिस मैथ्यू को मैं पिछले साल जानता था, जिस पापा ने तुम्हें पाला-पोसा है, यह उससे परे दूसरा मैथ्यू है। यह मैथ्यू एक अजनबी है—एक ऐसा मैथ्यू, जिसे हम कभी नहीं जान सकेंगे।"

"हो सकता है, मैं अब उसकी बेटी नहीं होऊँ—" वह धीमे से बोली—"हो सकता है, वह मेरा पिता न हो। हो सकता है, वह हमारे बीच एक अजनबी हो। लेकिन उसे अभी भी मेरी जरूरत है।" उसने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और क्रैफोर्ड के प्रिय चेहरे को क्षणभर देखकर फिर दूसरी ओर देखने लगी—"जब मैं पंद्रह वर्ष की थी, तब मैंने अपने कंधों पर एक भार ले लिया था, क्रैफोर्ड! और अभी भी मैं इसे उतार नहीं सकती हूँ। उसे अभी भी मेरी जरूरत है और जब तक उसे मेरी जरूरत है, मुझे रहना ही पड़ेगा।"

क्रैफोर्ड फिर खड़ा हो गया। वह उससे दूर हटता हुआ खिड़की के पास चला आया और बाहर बंजर पिछवाड़े की ओर देखने लगा। मकान के नीचे से एक मुर्गी बाहर निकल आयी। उसके पीछे उसके रोयोंदार बच्चों की एक छोटी-सी कतार थी। मुर्गी रुक गयी और धूल में खरोंचती हुई कुड़कुड़ायी। उसके बच्चों ने भूख की तीव्रता में कतार तोड़ दी और अपनी माँ के पास छितरा गये। उनकी माँ जमीन खोदकर जो खाद्य पदार्थ निकाल रही थी, उसके लिए वे चिल्ला रहे थे। "क्यों, यह मार्च है—" क्रैफोर्ड ने आश्चर्य से सोचा—"पुनः वसंत आ गया।"

वह आलिंस की ओर देखने के लिए मुड़ा। तो यह दूसरी समाप्ति थी। सब समाप्त हो रहा था—वसंत के इस प्रथम आगमन में, जब हर चीज की शुरुआत होनी चाहिए थी। यहाँ, रसोईघर में, उनके प्यार के अंतिम ताने-बाने भी घृणास्पद रूप में टूट चुके थे। जब उसने पहली बार आलिंस को देखा था—प्यार के वे सारे दिन और सारी रातें, स्पर्श और चुम्बन—यहाँ तक कि अंधेरे में वासना के आवेग में उनके बीच संघर्ष और इन सब का अंत यह था। उसके मन में इस अंत की गहरी उदासी व्याप्त हो गयी। आलिंस नहीं बदलेगी। अपने उस असभ्य डनबार-रक्त के साथ वह कभी नहीं बदलेगी और इसीसे जहाँ तक सम्भव था, उनका प्रणय-व्यापार चला था।

मेज के निकट जाकर उसने अपनी टोपी उठा ली। "मैं जा रहा हूँ अब—" वह बोला।

उसे अपने सिर पर टोपी पहनते और दरवाजे की ओर बढ़ते आर्लिस देखती रही। क्रैफोर्ड ने दरवाजे की मूठ पर हाथ रखा ही था कि आर्लिस की आवाज़ ने उसे रोक दिया। जितना आवश्यक था, उससे कहीं अधिक जोर से उस मूठ को घुमाने के लिए उसकी माँसपेशियाँ तनी जा रही थीं।

"क्या हम आशा नहीं रख सकते?" आर्लिस बोली—"क्या हम अब आशा भी नहीं रख सकते?"

क्रैफोर्ड ने अपना सिर घुमाया। वह सोच रहा था—"हम इसे यहीं रोक देंगे। लेकिन इस भावना को कुचलने में लम्बा समय लगने वाला है—काफी लम्बा समय।"

"नहीं। मैं ऐसा नहीं सोचता—" वह बोला।

आर्लिस इन्तजार करती रही; लेकिन क्रैफोर्ड दरवाजे की मूठ घुमाने के लिए नहीं बढ़ा। वह भी इंतजार कर रहा था। दोनों एक-दूसरे की प्रतीक्षा कर रहे थे और तब भी अधिक कुछ कहने को नहीं था। अंततः क्रैफोर्ड फिर आर्लिस की ओर घूमा।

"क्यों?"

आर्लिस ने अपने हाथ हिलाये और उसकी ओर से नजरें हटा लीं—"तुम वापस नहीं आओगे?"

"हाँ!" वह रुखाई से बोला—"मुझे वापस आना पड़ेगा। मैं मैथ्यू के पास जब्ती की नोटिस लेकर आऊँगा।"

"ओह!" वह बोली। उसकी आवाज़ नीरस और उदासीन थी।

क्रैफोर्ड उसकी ओर देखता रहा। "इस प्यार का मोह त्यागना उसे कठिन प्रतीत हो रहा है—" उसने सोचा—"यद्यपि वह इसे पूर्णरूपेण स्वीकार नहीं कर सकती है; फिर भी इसे जाने नहीं देना चाहती है। अतः मुझे किसी-न-किसी प्रकार स्वयं के भीतर शक्ति पानी होगी।" उसने दरवाजे को इस जोर से खींचा, जैसे वह ठोस कंक्रीट का हो और नहीं खिसकने वाला हो और जब दरवाजा खुल गया, तो उसे आश्चर्य हुआ। वह बाहर निकल आया और जब उसे बन्द करने के लिए मुड़ा, तो उसने आर्लिस को अपना सिर मेज पर झुकाते देखा। और उसने पहली बार आर्लिस की हृदय-विदारक सिसकी की आवाज़ सुनी!

प्रकरण इक्कीस

उस बड़े कमरे से गुजरते हुए—क्रैफोर्ड अपनी डेस्क के निकट नहीं रुका। वह सीधा मि. हैंसेन के दफ्तर की ओर बढ़ा। उसने दरवाजे पर दस्तक दी और साथ ही, उसे खोल भी दिया। स्वयं पर वह सप्रयत्न काबू रखे था। काम करते हुए मि. हैंसेन ने अपना सिर ऊपर उठाया। क्रैफोर्ड पर नजर पड़ने के पहले चेहरे पर झुँझलाहट थी। क्रैफोर्ड कमरे के भीतर घुसा और सीधा डेस्क के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"जो-कुछ मैं कर सकता था, मैंने कर लिया है—" वह बोला—"अपनी जाब्ते की कार्रवाई शुरू कीजिये।"

उसके सफेद पड़ गये चेहरे को, जिस पर क्रूरता-सी उभर आयी थी, और जिस प्रकार कठोरता से वह तनकर खड़ा था, हैंसेन गौर से देखता रहा। बिना एक शब्द बोले, उसने सिर से एक कुर्सी की ओर संकेत किया और एक हाथ फोन की ओर बढ़ाया। क्रैफोर्ड बैठ गया। वह हैंसेन को नम्बर घुमाते और चक्के का घूमना देखता रहा, जो एक रगड़ की आवाज़ के साथ घूम रहा था। उसने अपने खाली हाथों की ओर देखा। वह सोच रहा था—"मैं असफल रहा।" स्पष्ट सत्य के समान ही, उसके दिमाग में यह सीधा, सख्त, रूखा और अविस्तृत विचार था—अपने स्थान पर स्थिर और अपरिवर्तनीय!

"सैम!" हैंसेन ने फोन में कहा—"हैंसेन! देखो, तुम्हारे लिए मेरे पास एक मामला है। मैथ्यू डनबार। ड-न-बा-र। बिलकुल ठीक—" उसकी आँखें क्रैफोर्ड के चेहरे की ओर घूमीं और फिर हट गयीं—"जब्ती का मामला है।"

वह फोन के दूसरे सिरे से आती आवाज़ सुनता रहा। उसने एक बार समर्थन में अपना सिर हिलाया, सुनता रहा और फिर सिर हिलाया।

"बिलकुल ठीक। मेरे आदमी का नाम क्रैफोर्ड गेट्स है। वह बड़ी प्रसन्नता-पूर्वक तुम्हारा साथ देगा।" उसने फिर क्रैफोर्ड की ओर देखा—"वह उन लोगों को काफी अच्छी तरह जानता है।"

क्रैफोर्ड अपनी जगह पर बेचैनी से कसमसाया।

"जमीन पर अधिकार करने सम्बंधी कागजात तैयार करने में कितनी देर लगेगी?" वह सुनता रहा। "यह अच्छा है। तुम जानते ही हो कि देर हो रही है। वह बाँध......" वह रुककर सुनता रहा—"सुंदर, सुंदर, सैम! मुलाकात होगी तुमसे।"

उसने फोन रख दिया। उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा और फिर नजरें उधर से हटा लीं। उसने अपनी डेस्क से एक पेपरवेट उठा लिया और उसे अपने हाथ में घुमाने लगा। "मुझे अपनी पहले जाब्ते की कार्रवाई याद है—" वह विचारपूर्ण स्वर में बोला—"उसने मुझे बिलकुल पस्त कर दिया था, जैसे वह सब मैं स्वयं ही कर रहा था।" वह खामोश हो गया। वह कुछ सोच रहा था और उसने वह पेपरवेट डेस्क पर पुनः सावधानी से रख दिया। "ये चीजें होती ही रहती हैं, क्रैफोर्ड! ये आवश्यक भी हैं। तुम्हारा मामला जरा विकृत है; क्योंकि यहाँ पैसों की बात नहीं हैं, जैसा इन मामलों में साधारणतया होता है। लेकिन इसे भी उसी ढंग से निपटाना पड़ेगा।"

क्रैफोर्ड बिना कुछ अनुभव किये, उसकी आवाज़ सुनता रहा। हो सकता है, ये चीजें करनी ही पड़ती हैं। लेकिन वह असफल रहा था और वही इस आवश्यकता का आरम्भ था।

"अब क्या होनेवाला है?" वह बोला।

हैंसेन ने अपने हाथ हिलाये। "हमारा वैधानिक विभाग उस भूमि पर अपने अधिकार का घोषणापत्र दाखिल करेगा। उसके जरिये टी. वी. ए. के द्वारा वह सम्पत्ति अमरीकी सरकार की हो जाती है। हम उचित मूल्य जमा कर देंगे और दूसरी पार्टी को नोटिस दे देंगे। अगर वह इस मूल्य के विरोध में कुछ कहना चाहता है, तो वह भूमि-अधिकार-कमीशन के समक्ष अपने वकील और साक्ष्य को लेकर उपस्थित होगा और हम अपना वकील और अपने साक्ष्य प्रस्तुत करेंगे। कमीशन उस जमीन की कीमत तय कर देगा..." वह वक्रता से मुस्कराया..."कमीशन साधारणतया हमारी ओर से तय की गयी कीमत को कुछ और बढ़ा देती है......और अगर यह भी उसे पसंद नहीं है, तो वह फेडरल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में अपील कर सकता है।"

क्रैफोर्ड की इच्छा हुई कि हँस पड़े। किंतु वह हँस नहीं पाया। "जिस ढंग से आप कह रहे हैं, यह बड़ा सरल दीखता है—" वह बोला—"लेकिन सुनिये—उस व्यक्ति ने वहाँ बंदूकें रख छोड़ी हैं।"

हैंसेन बिलकुल शांत बैठा रहा। "तुम्हें इसका निश्चय है?"

क्रैफोर्ड ने सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की—"आपके अधिकार के घोषणा-पत्रों, भूमि अधिकार-कमीशनों और दूसरी कानूनी कार्रवाइयों की ओर वह तनिक ध्यान नहीं देने जा रहा है। वह अपनी जमीन पर है और उसका वहीं बने रहने का इरादा भी है। उसने मुझे स्वयं ही बंदूकें दिखलायीं।"

"हे भगवान!" हैंसेन ने एक गहरी साँस ली—"वैसे मामलों में से नहीं है यह!" उसने टेलिफोन की ओर हाथ बढ़ाया, फिर हटा लिया। उसने क्रैफोर्ड की ओर से अपनी स्प्रिंगदार कुर्सी घुमा ली। उसका चेहरा क्रैफोर्ड की नज़रों से छिपा था और वह खिड़की से बाहर देख रहा था। तब वह फिर वापस इस ओर मुड़ा। उसने बलपूर्वक स्वयं को शांत कर लिया था और उसकी आवाज़ में निर्णय की झलक थी।

"किसी भी तरह, हमें इन कार्रवाइयों से गुजरना ही होगा—" वह बोला—"अगर वह कमीशन की सुनवाई में नहीं आता है, तो जहाँ तक कानूनी कार्रवाई और घाटी के मूल्य का प्रश्न है, हम वहीं सारी चीजों का फैसला कर लेंगे। तब हम फेडरल कोर्ट से बेदखली की नोटिस ले सकते हैं और अमरीकी मार्शल के दफ्तर की सहायता हमें उपलब्ध होगी।" वह रुककर कुछ सोचने लगा। "मैं चाहता हूँ, तुम उसके साथ बने रहो, क्रैफोर्ड! जब वकील कागजात लेकर उसके पास जाये, तुम भी साथ जाओ। अब तुम्हें उसे अपनी जमीन बेचने के बारे में राजी करने की जरूरत नहीं है। लेकिन तुम्हें इसका खयाल रखना है कि वह उन बंदूकों का उपयोग न करे।"

क्रैफोर्ड अपनी असफलता से परिचित हो चुका था। और फिर भी, इसके नीचे वह पूर्ण मुक्ति का आराम भी अनुभव कर रहा था। और अब पुनः इसका पूरा भार उस पर आ पड़ा था। आखिर, उसकी समाप्ति नहीं हुई थी। और आर्लिस?

उसने लाचारी में अपने हाथ फैला दिये। "मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ—" वह बोला—"मैं......"

"प्रयास तो तुम्हें करना ही है—" हैंसेन ने कहा—"हमने पहले कभी खून-खराबी नहीं की थी और अगर मैं रोक सका, तो यह अब भी नहीं आरम्भ होने जा रहा है।" वह आगे की ओर झुक आया—"भगवान के लिए, क्रैफोर्ड! मैं नहीं जानता कैसे—लेकिन उसे सँभालो। यह छोटी-सी घटना हमें बरबाद कर दे सकती है, सारा कार्यक्रम विनष्ट कर दे सकती है, अगर हमारी जीत होती है तब भी।" उसने उदासी से, इन्कार में अपना सिर हिलाया—"तुम टी. वी. ए. के दुश्मनों को जानते हो। तुम जानते हो, वे किस हद तक बढ़ जा सकते हैं—सभी समाचारपत्रों में तस्वीरें होंगी—'निष्ठुर टी. वी. ए. के विरुद्ध एक बहादुर किसान अपनी विश्वसनीय पुरानी बंदूक के साथ!'" उसकी आवाज़ धीमी हो गयी—"मैंने बंदूकों के बारे में सोचा भी

नहीं था। मेरे दिमाग में कभी यह बात आयी भी नहीं......"

"न मेरे दिमाग में—" क्रैफोर्ड ने कहा—"जब उसने बिस्तरा एक ओर हटाया और मुझे दिखाया......" वह खामोश फिर सोच में डूब गया। टी. वी. ए. को जो क्षति पहुँचायी जा सकती थी, उसके बारे में नहीं, बल्कि मैथ्यू के बारे में, उसकी दृढ़ता और कठोरता के बारे में—जिस मैथ्यू को अब तक वह जानता आया था, उससे बिलकुल ही बदल गये मैथ्यू के बारे में!

वह खड़ा हो गया। "आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं—" वह बोला —"जो मैं कर सकता हूँ, करूँगा।"

हैंसेन ने उसकी ओर सख्ती से देखा। उसकी आँखों में दया नहीं थी, उदारता नहीं थी। "वैधानिक रूप से यह अब हमारा काम नहीं है—" वह धीमे से बोला—"मैंने जो वह फोन किया, उसके बाद से नहीं। मैं तुम्हें आदेश नहीं दे सकता। तुम यह नहीं भी कर सकते हो।"

क्रैफोर्ड मुस्कराया। यह कोई बहुत सफल मुस्कान नहीं थी। "यह शुरू से आखिर तक मेरा मामला रहा है—" वह बोला—"मैंने उसकी जमीन का जाकर मूल्यांकन तक किया, याद है; क्योंकि अलबर्ट उस सप्ताह बीमार था। और तब मेरे जिम्मे इसे खरीदने का काम आया। अब मैं कैसे छोड़ दे सकता हूँ?"

हैंसेन ने राहत अनुभव की। उसने आतुरतापूर्वक अपना हाथ टेलिफोन की ओर बढ़ाया। "मैं सैम से यह कह दूँगा—" वह बोला। क्रैफोर्ड अपनी कुर्सी से उठकर दरवाजे की ओर बढ़ा और हैंसेन ने अपना हाथ रोक लिया। "क्रैफोर्ड! अगर वह बेदखली के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट तक भी लड़ता है, तो हमें इसकी चिंता नहीं है। लेकिन तुम्हें उसके हाथ से बंदूक ले लेनी है।"

क्रैफोर्ड ने मौन, सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की। वह दरवाजे से निकल कर अपनी डेस्क तक चला आया। वह सोच रहा था कि किस प्रकार वह मैथ्यू का फिर सामना कर पायेगा, उन बंदूकों के सम्मुख कैसे वह उससे बात करेगा, तर्क करेगा और उसे मनाने की कोशिश करेगा—जब कि बंदूकों की अप्रिय जानकारी हमेशा उसे कुरेदती रहेगी। और सबसे अधिक, वह आर्लिस की ओर फिर देख पाना कैसे सहन कर सकेगा!

पौ फटने के पहले तक आर्लिस नहीं सोयी थी। वह बिस्तरे पर लेटी रही थी—किसी हल्की नींद सोने वाले और चिंता करने वाले के समान वह बेचैन भी नहीं थी। वह सीधी और तनकर लेटी थी—और सोच भी नहीं रही थी कुछ। उसका मस्तिष्क शून्य और प्रभावहीन-सा हो गया था। उसके लिए

वह गुजरती रात कोई अर्थ नहीं रखती थी, आधी रात के बाद मुर्गे की बाँग से भी उसे कोई मतलब नहीं था और न ही दूर कहीं किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ उसके कानों तक आ रही थी। वह ऐसा अनुभव कर रही थी, जैसा मृत्यु के समय होना चाहिए—एक पूर्ण समाप्ति, एक पूर्ण अवरोध। वह यह भी नहीं जान सकी कि अंततः, जब सुबह की धुँधली सफेदी कमरे की खिड़की को नहलाने लगी थी, तो उसे नींद आ गयी थी।

वह जल्दी से जाग गयी, जैसा वह हमेशा करती थी। लेकिन जगने के साथ तुरत ही, उसने ऐसी जबर्दस्त थकान अनुभव की कि बिस्तरे से उठने के लिए वह हिल तक नहीं सकी। खिड़की की ओर देखने के लिए उसने अपना सिर घुमाया और कितनी देर हो गयी थी, यह देखकर वह स्तम्भित रह गयी। सूरज आकाश में काफी ऊपर आ गया था। कम-से-कम दस बजे थे और वह इसके पहले भी कभी इतनी देर तक सोयी थी—यह आर्लिस को याद नहीं आ रहा था।

कराहती हुई, उसने स्वयं को, उठकर बैठ जाने के लिए बाध्य किया। उसे अपना शरीर गंदा और किरकिरा लग रहा था, यद्यपि उसने पिछली रात स्नान किया था। वह अपनी रात्रिकालीन पोशाक में अपने बिस्तरे पर बैठी रही। उसके बाल उसके चेहरे पर लटक आये थे और उसे उसकी चिंता नहीं थी। इस अत्यधिक विलम्ब की ओर भी उसका ध्यान नहीं था और न उसे इसी की फिक्र हो रही थी कि उसने मैथ्यू, अपने दादा, हैटी और जान तथा उसके लड़कों के लिए, जो वहीं रह रहे थे, नाश्ता नहीं तैयार किया था। उसकी चिंता का विषय एक ही था—उसके जीवन से क्रैफोर्ड की विदाई! वह जा चुका था—मृत्यु के समान ही पूर्णरूपेण जा चुका था और इसीसे उसके सामने उसके रीते और अंतहीन दिन पड़े थे। और फिर भी—वह उसका अनुकरण नहीं कर सकी थी!

उसने अपना सिर उठाया। अपने कर्तव्य पर अड़ी रह, उसने उससे इनकार कर दिया था और यहाँ वह उसके कर्तव्य से दूर रह, पड़ी सो रही थी। बाध्य होकर वह उठ खड़ी हुई और शृंगार-आइने के पास जाकर उसने अपना चेहरा देखा। जो-कुछ उसने देखा, वह उसे पसंद नहीं आया और वह उस ओर से घूम पड़ी। उसने फुर्ती से एक हल्की सूती पोशाक पहन ली और कमरे के बाहर, भीतरी बरामदे में निकल आयी।

उसने रसोईघर का दरवाजा खोला और खड़ी रह गयी। पिछली रात,

थकान-सी अनुभव करने के कारण, उसने जूठी तश्तरियाँ सुबह धोने के लिए छोड़ दी थीं—इस काम की वह शायद ही कभी अवहेलना करती थी; क्योंकि एक नये दिन की ठिठुरानेवाली सुबह के धूसर प्रकाश में उन्हें साफ करना बड़ा ही कठिन कार्य था। लेकिन मेज साफ थी, तश्तरियाँ धोने का बर्तन, तश्तरियों के साथ, करीने से सजा कर रखा था और अंगीठी जल रही थी।

उसने चारों ओर देखा। रसोईघर बिलकुल साफ-सुथरा था, जैसे उसने उसे अपने हाथों से ही साफ किया था। मेज पर से रात के खाने की तश्तरियाँ और सुबह के नाश्ते के जूठे बरतन हटा लिये गये थे, अंगीठी में आग जल रही थी और पिछले भाग पर एक बरतन में शलजम उबल रहा था। तश्तरियाँ रखने की रैक के ऊपर हैटी झुकी हुई थी और वह बड़ी निपुणता से साबुन लगाकर अपने हाथ साफ कर रही थी। आर्लिस उसे देखती रही और हैटी ने अपने बहुत बड़े एप्रोन (लबादे की तरह की एक पोशाक, जो पूरी पोशाक के ऊपर पहनी जाती है।) में हाथ पोंछ लिये। वह अंगीठी तक पहुँची और उसका ढक्कन उठाकर एक काँटे से आग को कुरेदती हुई देखने लगी। तब झुककर उसने अंगीठी में और लकड़ियाँ डालीं। अचानक किसी की उपस्थिति का भान होते ही, वह सीधी खड़ी हो गयी और मुड़कर आर्लिस को देखा।

"अच्छा!" वह बोली—"तो अंततः तुमने उठने का निश्चय कर लिया।"

आर्लिस बस खड़ी, उसकी ओर एकटक देखती रही।

हैटी ने मेज की ओर संकेत किया—"बैठ जाओ। बस एक मिनट में मैं तुम्हें नाश्ता देती हूँ।" उसकी आवाज में चपलता थी और वह किसी मित्र के समान ही बात कर रही थी।

आर्लिस मौन मेज के निकट आकर बैठ गयी। हैटी ने लोहे की भारी पतीली खूँटी पर से उतारी और उसे अंगीठी के अगले हिस्से पर रख दिया। उसने एक तेज चाकू से सूअर के माँस के टुकड़े काटे और उसे पतीली में डाल दिया। उसने काफी के बरतन को छूकर देखा और एक प्याले में काफी ढाल ली। फिर वह प्याला आर्लिस के पास ले आयी।

"यह लो—" वह बोली—"जब तक तुम्हारा नाश्ता तैयार हो रहा है, इसे पी लो। जो भी चीज तुम्हें कुरेद रही हो, इससे लाभ होगा।"

आर्लिस ने काफी का प्याला छुआ तक नहीं। "तुमने नाश्ता पकाया?" वह अविश्वास के स्वर में बोली।

"निश्चय ही—" हैटी ने कहा—"तुम्हें देखकर ऐसा लगा कि तुम दिन-भर सोने का इरादा करती हो। मैंने हर व्यक्ति के लिए नाश्ता तैयार कर दिया और बाद में रसोईघर साफ कर दिया।" उसने अपनी नाक सिकोड़ी—"पिछली रात तुमने निश्चय ही काफी गंदगी यहाँ छोड़ रखी थी, आर्लिस डनबार!"

आर्लिस ने धीरे से प्याला उठा लिया और काफी पीने लगी। काफी अच्छी बनी थी—गर्म और कड़ी!

"उतना ही नहीं—" हैटी ने गर्व के साथ कहा—"मैंने घर भी साफ कर दिया और खाना भी पक रहा है।"

वह फुर्ती से उठी और पतीली में पड़े सूअर के माँस को पलटने के लिए चली गयी। आर्लिस बैठी उसे देखती रही और उसने माँस पलट दिया, उसे बाहर निकाला और एक भूरे रंग के कागज पर रख दिया। तब उसने दो अंडे तोड़ कर पतीली में डाल दिये और स्पैटुला (संडसी की तरह का ही एक बरतन) उठा लिया। फिर उसने आर्लिस की ओर देखा।

"मैंने तुम्हारे लिए कुछ गर्म बिस्कुट भी रख छोड़े हैं—" वह बोली—"उसके साथ कुछ और चाहिए?"

आर्लिस ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। वह इंतजार करती रही और उसे बड़ा अजीब-अजीब-सा लग रहा था। वह अपनी काफी लिये बैठी रही और तब तक हैटी ने नाश्ता तैयार कर उसके सामने रख दिया। कोई और इस तरह उसे लाकर नाश्ता या खाना दे, आर्लिस कई वर्षों से अब इसकी अभ्यस्त नहीं रह गयी थी। जब वह पंद्रह साल की थी, तभी से। वह इस घर की स्वामिनी थी और इस तरह खाना परोसना उसका काम रहा था, जब कि बाकी लोग बैठकर प्रतीक्षा करते रहते थे। अगर एक वर्ष पहले वह कहीं इस तरह देर तक सोयी रह गयी होती तो घर में न आग जली होती, न किसी को नाश्ता मिला होता।

उसने अंडों को चखकर देखा। वे बिलकुल ठीक बने थे—न ज्यादा नर्म और न ज्यादा कड़े—जैसा कि वह स्वयं खाना पकाते समय बहुत कम ही अपने लिए बना पाती थी; क्योंकि बढ़िया चीजें वह स्वतः दूसरों को दे दिया करती थी।

"तुमने यह सब पकाना कहाँ से सीखा आखिर?" वह संदिग्ध स्वर में बोली।

हैटी फिर उसके सामने बैठ गयी। वह मुस्करा रही थी। "तुमसे"—वह बोली—"और कहाँ से?"

आर्लिस ने उसे जलती आँखों से देखा—"जब भी तुम यहाँ आती थी, मैं तुम्हें रसोईघर से बाहर कर दिया करती थी। फिर तुम कैसे पकाना सीख गयी? आज पहले तुम एक अड़चन के सिवा कुछ तो नहीं थी!"

हैटी हँस पड़ी। वह बोली—"मेरा खयाल है, हम डनबार औरतें जन्मजात गृहणियाँ होती हैं।"

आर्लिस ने अपना काँटा नीचे रख दिया। वह हैटी की ओर देखती रही। अब वह शरारती और तंग करने वाली छोटी बच्ची नहीं रह गयी थी। "वह लगभग पंद्रह साल की है—" आर्लिस ने सोचा—"ठीक उसी उम्र की मैं थी, जब माँ........."

वह रुक गयी। उसने सोचना स्थगित कर दिया और उसने एक जोरों का आघात अनुभव किया। "मैं सिर्फ अपने कर्तव्य के चलते रुक गयी थी—" उसने सोचा—"बस, यही मेरे पास बच गया था; क्योंकि पापा तो एक अजनबी बनकर रह गये हैं।"

अचानक वह उठ खड़ी हुई। "दादा!" वह बोली। उसकी आवाज़ में भय था—"वे भूखे होंगे।"

हैटी शांतिपूर्वक बैठी रही। "मैंने उन्हें खिला दिया—" वह बोली—"कपड़े पहना दिये और उनकी कुर्सी पर उन्हें बिठा दिया।"

आर्लिस फिर रुक गयी। वह हैटी की ओर देख रही थी। "तुमने नाश्ता क्यों तैयार किया?" वह सतर्कतापूर्वक बोली।

हैटी बेचैनी से हिली। "मैं बनाना चाहती थी—" वह बोली। वह आर्लिस को गौर से देख रही थी—"तुम्हें नाराज करने का मेरा इरादा नहीं था......"

"मैं नाराज नहीं हूँ—" आर्लिस ने जल्दी से कहा—"मुझे खुशी है कि तुमने यह सब किया। मुझे ताज्जुब हो रहा है और बस!"

हैटी ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"औरत को खाना पकाना और घर साफ रखना कभी-न-कभी सीखना पड़ता है। तुमने मुझे कभी मौका नहीं दिया, अतः जो पहला मौका मुझे मिला, मैंने उसका उपयोग कर लिया।" वह घबड़ायी-सी हँसी—"मैं जरा अपना हाथ-भर परखने की चेष्टा करना चाहती थी और बस!"

आर्लिस, कुछ सोच सकने की इच्छा से, फिर खाने लगी। उसने तश्तरी

साफ कर दी तथा और काफी के लिए प्याला बढ़ा दिया। "जब हर दिन तुम यही काम करो, तो बात दूसरी होती है—" वह कठोरता से बोली—"तब इसमें उतना आनंद नहीं रह जाता।"

"ओह! मैं नहीं जानती—" हैटी ने उल्लासपूर्वक कहा—"जब तुम पंद्रह साल की थी, तुमने यह सब किया था। मेरा खयाल है, अगर मुझे करना पड़े, तो मैं भी कर सकती हूँ।"

आर्लिस अब और अधिक उस विचार को स्वयं से दूर नहीं रख सकी। वह प्रतिरोध करती रही; लेकिन वह दुर्बलता अनुभव कर रही थी—घातक दुर्बलता! उसने हैटी की ओर गौर से देखा—वह उस छोटी हैटी की तलाश कर रही थी, जिसे उसने पाला-पोसा था। किंतु हैटी अब बच्चा नहीं रह गयी थी। वह लम्बी, भोली और गम्भीर थी—कभी-कभी कुछ क्षणों के लिए उसके मस्तिष्क में बाल-चापल्य सजग हो उठता था और यह चपलता उसके कार्यों में भी झलक उठती थी। किंतु वह बच्ची नहीं थी।

"हैटी!" वह टूटती आवाज़ में, रुक रुक कर बोली—"तुम क्या...क्या तुम पापा की देखभाल कर ले सकती हो?"

"निश्चय ही—" हैटी ने दर्प-भरे स्वर में कहा—"मैं......" तब उसने आर्लिस की गम्भीरता लक्ष्य कर ली और उसका लहजा तत्काल बदल गया—"तुम्हारा मतलब..."

"अगर मैं क्रैफोर्ड के साथ चली गयी, तब?" आर्लिस ने बड़े प्रयास से अपनी आवाज़ की स्थिरता कायम रखी।

हैटी ने बड़े गौर से और उत्सुकतापूर्वक उसके चेहरे की ओर देखा। "तुम उस आदमी को प्यार करती हो—करती हो न?" वह बोली। वह काफी का बर्तन लिये तैयार खड़ी थी। उसने काफी डाल दी और बर्तन अंगीठी तक वापस ले गयी। तब वह घूम पड़ी। "बहन!" वह गम्भीरतापूर्वक बोली—"अगर तुम्हें उसके साथ जाना ही है, तो जाओ। इस घर की, मेरी अथवा पापा की चिंता न करो। तुम्हें जो-कुछ करना है, बस करो।"

हैटी ने बहुत छुटपन में ही अपनी माँ को खो दिया था। उस छोटी उम्र से—बहुत ही छोटी उम्र से—उसने आर्लिस को 'बहन' कहकर नहीं पुकारा था। आर्लिस ने अपने भीतर एक कमजोरी महसूस की, अकस्मात् प्राप्त मुक्ति की भावना अनुभव की और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसके जीवन के ये ही आँसू सिर्फ खुशी के आँसू थे।

हैटी रसोईघर में चारों ओर नजरें दौड़ा रही थी। स्वामित्व का दर्प उसमें उभर रहा था। "क्यों—" वह ताज्जुब के साथ अपने-आपसे बोली—"यह मेरा रसोईघर होगा। मेरा घर।" उसने इस तरह ये शब्द कहे, जैसे वह स्वयं ही इनकी सत्यता में विश्वास नहीं कर पा रही थी।

मैथ्यू स्वयं भी परिवर्तन अनुभव कर रहा था। जो दृढ़ता उसमें आ गयी थी, उससे वह पहले कभी नहीं परिचित था। उसने अपना रास्ता स्थिर कर रखा था और उसके अनिश्चित संसार में इस एक चीज का निश्चित होना अच्छा था। अपने अंतर की गहराइयों में वह यह जान रहा था कि अपना पुराना घर छोड़ने और नयी घाटी तलाश कर उसे इच्छानुकूल अपने नाम के साथ बनाने में, डेविड डनबार ने भी ऐसा ही अनुभव किया रहा होगा। मैथ्यू अब उचित अनुचित के बारे में नहीं सोचता था—जैसे डेविड डनबार ने किया होता। वह सिर्फ अपनी कार्य-सिद्धि के बारे में सोचता था—उस दिन की बात सोचता था, जब उसके और टी. वी. ए. के जलाशय के बीच यह बाँध दीवार बन कर खड़ी हो जायेगी।

कार्यक्षम और सक्रिय मनुष्य बनना सरल था। उसे आश्चर्य था कि इस कार्य को आरम्भ करने के पहले वह व्यर्थ ही क्यों इधर-उधर दिमाग भटकाता रहा था। कल उसने क्रैफोर्ड को बिना भय और बेचैनी के देखा था; उसके बंदूकें देख लेने के बाद, उसे आर्लिस के साथ छोड़ने के अभीष्ट के प्रति वह संदिग्ध नहीं हुआ था। क्रैफोर्ड उसे अपने प्रयासों द्वारा विचलित नहीं कर सका था—वह उनके सम्बंध का एक छोटा और साधारण वार्षिक अभिलेख-भर था और अब क्रैफोर्ड से भयभीत होने की जरूरत नहीं रह गयी थी।

किंतु अभी कुछ सम्भावनाएँ बाकी रह गयी थीं, जिस पर उसे विचार करना था। और इसीसे सुबह के मध्य में, उसने अपना फावड़ा रख दिया और घर चला आया। अपने शयनागार में, उसने अपना बिस्तरा एक ओर हटा दिया, जिससे वह बंदूकों तक पहुँच सके। पालथी मारकर वह बैठ गया और हर बंदूक की बड़ी बारीकी से जाँच करने लगा। सब बंदूकों को बड़ी हिफाजत से रखा गया था और वे ठीक थीं; क्योंकि सभी डनबार अपने शस्त्रास्त्रों को सँभालकर रखते थे। जब वह बंदूकों की जाँच कर चुका, तो उनके सामने, वैसा ही बैठा, विचार करता रहा। तब उसने एक पिस्तौल ले ली—३८ कैलिबर की और चमड़े की पेटी की बेल्ट, पोशाक के भीतर, अपनी कमर में बाँध ली, जिससे पिस्तौल दिखायी न दे। नितम्ब पर झूलती पिस्तौल उसे बड़ी भारी और

अटपटी-सी लग रही थी और उसने बिना किसी परिणाम के दो बार बेल्ट खिसकायी। इस अटपटेपन के साथ ही, उसे इसे पास रखकर काम करना होगा—यह नहीं कहा जा सकता था कि कानून के आदमी कब आ धमकेंगे और उसे अपने एकमात्र जवाब के साथ तैयार रहना था।

उसने कारतूसों का बक्स खोला और पिस्तौल भर ली। फिर उसने अपनी कमर में लगी बेल्ट के छिद्रों में गोलियाँ भर लीं। तब उसने अपनी चारों जेब में भिन्न भिन्न प्रकार की गोलियाँ और कारतूस भर लिये और बाकी बंदूकों को बटोरकर अपनी बाँहों पर उठा लिया। वह उन्हें लिये-लिये खड़ा हो गया और अपने पैर से उसने शयनागार का दरवाजा खोला।

आर्लिस भीतरी बरामदे में थी। वह नीचे घाटी के मुहाने की ओर देख रही थी। उसकी आवाज़ सुन कर वह झटके से घूमी और उसने उसे तथा उन बंदूकों को देखा, जिन्हें वह जलावन के बोझे के समान उठाये हुए था।

"क्या तुम अब स्वस्थ अनुभव कर रही हो?" मैथ्यू ने पूछा।

"हाँ!" आर्लिस बोली—बस एक शब्द और ऐसा लगा, जैसे वह बहुत दूर से बोल रही हो। वह उन बंदूकों को यों टकटकी बाँधे देखती रही, जैसे वह उसके हाथों में उनकी वास्तविकता पर विश्वास नहीं कर पा रही थी।

"तुम इतनी देर तक सोती रही......" वह बोला—"मैं डर रहा था, तुम बीमार न हो!"

"मैं ठीक हूँ—" वह बोली और वहाँ से चलने लगी। तब वह रुक गयी। उन्होंने जिस प्रकार उत्साहहीन ढंग से बात की थी, उस अनहोनी से उसने एक पीड़ा-सी महसूस की। इधर मैथ्यू अपने हाथों में बंदूकें उठाये खड़ा रहा। "क्रैफोर्ड ने मुझसे कहा कि आप इन्हें काम में लाने का इरादा रखते हैं।"

"मुझे ऐसा करना ही होगा—" उसने धैर्य के साथ दृढ़तापूर्वक कहा—"बस, यही एक रास्ता है।"

आर्लिस उसकी ओर देखती रही। वह जानती थी कि मैथ्यू में इसकी क्षमता थी। उसकी आँखें मैथ्यू के चेहरे पर गड़ गयीं, जैसे वह उसके चेहरे की हर रेखा फिर से याद करने की कोशिश कर रही थी—जैसे अगर वह ऐसा नहीं करेगी, तो दूसरी बार देखने से उसे नहीं पहचान सकेगी।

"क्या हैटी ने नाश्ता ठीक बनाया था?" वह बोली।

"सुन्दर—" मैथ्यू बोला—"सुन्दर!"

वे दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े रहे और आर्लिस उसकी ओर देखती रही। मैथ्यू अपने हाथों में बंदूकें लिये खड़ा था और उसके दुबले चेहरे पर एक प्रकार की शून्यता तथा दृढ़ता उभर आयी थी और आर्लिस उसे गौर से देख रही थी। मैथ्यू के होंठ सख्ती से भिंचे थे। जानबूझकर ही उसने उन पर यह नियंत्रण कर रखा था और उसकी आँखों में उसके कार्य की अग्नि प्रज्वलित थी। उन लोगों के बीच जो बात हुई थी, वह साधारण थी—जिंदगी में जैसे प्रति दिन उनके बीच जिस प्रकार की बातें हुआ करती थीं, वैसी ही। किंतु उन शब्दों में अब उष्णता नहीं थी, वे निर्जीव और विलग-विलग-से थे—अजाने-अपरिचित शब्दों-से। तब मैथ्यू आर्लिस को भीतरी बरामदे में अकेली खड़ी छोड़कर मुड़ा और अपने काम की ओर बढ़ चला। बाँध निर्माण के महीनों में हर रोज लोगों के आने-जाने से जो रास्ता-सा बन गया था, उसी रास्ते से होकर वह बाँध की ओर बढ़ा।

लोगों ने जब बंदूकें देखीं, तब उन्होंने अपना काम बंद कर दिया। जैसे-जैसे जिस व्यक्ति की नजर पड़ी, उसने काम बंद कर दिया और वे सब एक जगह खड़े हो गये। एक तनाव-सा अनुभव करते हुए उसके वहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वहाँ आकर मैथ्यू रुका और एक-एक करके सावधानीपूर्वक उसने सारी बंदूकें नीचे रख दीं। वह सीधा खड़ा हो गया और उसकी आँखें उन लोगों पर दौड़ गयीं—मर्द और लड़के, लगभग बीस थे आज वे।

"मैं चाहता हूँ, तुम लड़के लोग अब अपने घर जाओ—" वह शांत स्वर में बोला—"तुम लोग जो मेरी सहायता करते रहे हो, मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। लेकिन अब यह जगह तुम लोगों के लिए नहीं है।"

लड़कों ने अपने औजार रख दिये और एक ओर खड़े हो गये। अपनी जवानी में वे स्वयं को पृथक्-पृथक् अनुभव कर रहे थे। जान का बड़ा लड़का आगे बढ़ा और तब वापस मुड़ कर उन लोगों के दल की ओर बढ़ा, जिनके चेहरे पर उद्यतता अंकित थी।

"आओ, राल्फ!" मैथ्यू ने अविचलित स्वर में कहा।

राल्फ रुक गया। उसके दोनों हाथ उसकी बगल में तने थे और तब बिना एक शब्द बोले मुड़ा और दूसरे दल में चला गया। लेकिन वे शांत खड़े, प्रतीक्षा करते, रहे!

मैथ्यू ने मर्दों की ओर देखा। "अगर तुम लोगों में कोई जाना चाहता है, तो यही समय है जाने का—" वह बोला—"मैं उसे रोकूँगा नहीं।"

लोग हिले नहीं। तब एक आदमी आगे बढ़ आया। "यहाँ आने और काम करने में मुझे खुशी थी—" वह बोला—"लेकिन बंदूकें..." उसने इनकार में अपना सिर हिलाया।

"घर जाओ—" मैथ्यू ने कहा—"मैं तुम्हारे सहयोग की प्रशंसा करता हूँ।"

भीरु-सा, वह आदमी अपने औजार लेने चला गया। मैथ्यू प्रतीक्षा करता रहा; लेकिन और कोई नहीं हिला। तब वह ऊँचे स्वर में बोला।

"अब वह समय आ गया है—" वह बोला—"मैं तुम्हारे हाथों में बंदूकें रखने जा रहा हूँ। जब तुम बंदूक पकड़ो, मैं चाहता हूँ, तुम अबसे इसे सदा अपनी बगल में रखे रहो, जब तक इस चीज का फैसला नहीं हो जाता। मैं तुम लोगों से उम्मीद करता हूँ कि तुम लोग इस घाटी में रहोगे और मिट्टी के इस बाँध की रक्षा करोगे, जिसे हमने दिन-रात कठिन श्रम कर के बनाया है। जब तक हम चौकसी कर रहे हैं, हम दिन-रात काम भी कर सकते हैं।"

"मुझे फसल उगानी है—" दूसरे आदमी ने कहा।

"जिन्हें फसल उगानी हो, वे एक ओर खड़े हो जायें—" मैथ्यू बोला—"मैं स्वयं अपनी फसल उगाना भी पसंद करूँगा। लेकिन मैं काफी देर से यह काम शुरू करनेवाला हूँ।"

तीन और व्यक्ति अपने चेहरों पर राहत की झलक लिये, झुंड से अलग हो गये। यों ही छोड़कर चल देने से यह तरीका अपना मुँह छिपाने के लिए कहीं अच्छा था।

"मैं तुम लोगों को तुम्हारे काम के लिए धन्यवाद देता हूँ—" मैथ्यू बोला —"मुझे अब तुम लोगों की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

उसके पास नौ आदमी बच गये थे। नौ! उसने उनके चेहरों की ओर देखा, उनके शरीर को परखा और जिस प्रकार के व्यक्तियों की उसे जरूरत थी, उनके अनुसार मन-ही-मन उनको तौलता रहा। जिन आदमियों ने साथ छोड़ दिया था, वे लड़कों के समान खड़े होकर यह सब देख नहीं रहे थे, बल्कि एक-एक करके अपने-अपने औजार लेने बढ़ रहे थे।

"अच्छी बात है—" अंत में मैथ्यू ने संतुष्ट होकर कहा—"उठाओ बंदूक।" उसने अपने सामने जमीन पर पड़ी बंदूकों की ओर संकेत किया।

वह एक ओर खड़ा हो गया और लोग अपने-अपने शस्त्र चुनने लगे। तब मैथ्यू ने उन्हें उनकी बंदूकों के हिसाब से कुछ कारतूस और गोलियाँ दे दीं।

उनके चेहरों के भाव, उनके कार्य, मैथ्यू के लिए संतोषप्रद थे। उनके चेहरे सख्त, उग्र और दृढ़ थे और उनके नथुने खतरे की गंध से फूल रहे थे। वे नौ अच्छे आदमी थे—ऐसे आदमी, जिन पर मैथ्यू निर्भर रह सकता था। वे इनबार थे। वह उनकी वफादारी से विचलित हो उठा। उसने बहुत-से आदमियों की उम्मीद नहीं की थी। जब बंदूकें और कारतूसें थमायी जाती हों, तो टिके रहनेवाले बहुत-से लोग नहीं होते।

जब उन लोगों ने अपना काम खत्म कर लिया, मैथ्यू उनके सामने फिर खड़ा हो गया। "मैं बहुत अधिक माँग रहा हूँ—" वह बोला—"मैं अपने जीवन के अंतिम क्षण तक तुम लोगों का ऋणी रहूँगा। जो भी मेरे पास है, उसके लिए तुम्हें कभी पूछने की जरूरत नहीं है—बस, आओ और उसे ले लो। कोई भी चीज!"

वे संकोच अनुभव करने लगे। मैथ्यू की ओर से नजरें हटाकर उन्होंने अपने पाँव पटके। वे एक-दूसरे की ओर भी नहीं देख रहे थे। उनमें से एक आदमी हँसा। "धत्!" वह बोला—"मैंने इतने कड़े श्रम से मिट्टी ला-लाकर यह बाँध इसलिए नहीं बनाया है कि वे लोग आयें और बिना हमसे लड़े इसे तोड़ डालें।"

इससे मदद मिली। उनके बीच का तनाव समाप्त हो गया और वे खुलकर हँस पड़े; उनकी इस तरह की हँसी इस किस्म के मजाक के लिए बहुत थी।

राल्फ मैथ्यू के निकट चला आया। "मैंने भी काम किया है—" वह रोष-भरे स्वर में बोला—"उस बाँध पर पहली मिट्टी मैंने डाली। और अब आप मुझे घर भेज देना चाहते हैं, जैसे मैं बच्चा हूँ। मैथ्यू चाचा, मैं..."

मैथ्यू उसकी ओर घूमा। तब वह नीचे झुका और उसने एक बंदूक उठा कर उसे दे दी। "सड़क पर कुछ दूर जाकर खड़े हो जाओ—" वह बोला—"अगर तुम किसी को आते हुए देखो, तो हवा में बंदूक दाग दो। वहाँ प्रहरी बन कर खड़े रहो, जिससे कोई अचानक पहुँचकर हमें भौंचक न कर दे।" वह उन आदमियों में से एक की ओर मुड़ा। "मैं तुम्हें घाटी के पिछले हिस्से की देखभाल का काम सौंप रहा हूँ—वह बोला—"वे पीछे के रास्ते से भी हम तक आ सकते हैं।" वह मुस्कराया—"इस तरह जब तुम पहरे पर रहोगे, तो हम बाकी लोगों के समान तुम्हें काम नहीं करना पड़ेगा।"

लोग फिर हँस पड़े। वे अपने बीच भारीपन नहीं महसूस कर रहे थे। अब यह किसी शिकार-दल के समान था। मैथ्यू ने अपना फावड़ा उठा लिया।

"अपनी बंदूकें पास ही रखो—" उसने चेतावनी दी—"नहीं कहा जा सकता है, वे कब आयेंगे। हमें दिन-रात अपनी आँखें खुली रखनी हैं।" उसके ललाट पर सिकुड़नें उभर आयीं—"मैं उम्मीद करता हूँ, बंदूक चलाने की नौबत नहीं आयेगी; क्योंकि वे अपने दिलों में यह जानते हैं कि यह जमीन मेरी है। अतः सतर्क रहो। अगर बंदूक चलानी ही पड़ी, तो पहले मुझे चलाने देना।"

एक व्यक्ति भौंहें सिकोड़ कर आगे बढ़ आया। "अगर तुम सब लोगों को खिलाने और यहीं सुलाने का इरादा करते हो—" वह बोला—"घर में आर्लिस को सहायता की जरूरत होगी। मेरी पत्नी प्रसन्नतापूर्वक......"

मैथ्यू मुस्कराया—"इस बारे में चिंता मत करो। आर्लिस को काफी सहायता मिलेगी......हैटी खाना पकाने में उसी के समान निपुण है।"

आर्लिस घर में घूम-घूम कर, हैटी ने जो काम किया था, उसे देखती रही —वह उस में कोई दोष नहीं ढूँढ़ पा रही थी। किंतु अभी भी यह विश्वास नहीं कर पा रही थी। अब तक उसने अपना दिमाग बंद कर रखा था। क्रैफोर्ड के प्रलोभन के बारे में भी सोचने को वह तैयार नहीं थी। लेकिन सुबह में, हैटी ने जिस दक्षता से सारी व्यवस्था संभाल ली थी, उससे उसके दिमाग के बंद दरवाजों में एक छोटी-सी दरार पैदा हो गयी थी। पहली बार उसने वहाँ से अपने जाने की सम्भावनाओं को झाँककर देखा और जो-कुछ उसने देखा उसकी चमक नहीं सह सकी।

वह अनिश्चित-सी घूम रही थी; क्योंकि उसके करने के लिए कोई काम नहीं था। हैटी अभी भी रसोईघर में दृढ़तापूर्वक डटी, खाना बना रही थी। आर्लिस ने काम अपने हाथ में लेने का प्रयास किया था; लेकिन उसने यह कह कर इनकार कर दिया था कि कितना अच्छा मौका तो उसे आज मिला था। उसने आर्लिस से कहा था कि वह दिन-भर आराम करती रहे। अतः आर्लिस किसी मेहमान के समान सिर्फ इधर-उधर घूम-भर सकती थी। उसके मन का संचित प्रतिरोध तितिर-बितिर हो गया था और वह नये विचार की प्रखरता अनुभव कर रही थी। आशा का बंद द्वार उसके सामने सम्भावना की छोटी-सी दरार से अकस्मात् यों खुल गया था, वह चकाचौंध हो गयी थी, जैसे अचानक ही धूप निकल आनेवाले दिन में वह सीधा सूर्य की ओर देख रही हो। यह सब आरम्भ करने के लिए एक इतनी छोटी-सी चीज की जरूरत पड़ी थी कि उसे ताज्जुब हो रहा था। किस प्रकार वह अब तक यह द्वार कस कर बंद रखने में समर्थ हो सकी थी।

अंततः वह अपना बिस्तरा ठीक करने के विचार से अपने कमरे में गयी। लेकिन हैटी उससे पहले ही वहाँ आकर जा चुकी थी। उसने बिस्तरा ठीक कर दिया था, फर्श पर झाड़ू लगा दी थी, उसके कपड़े सहेज कर रख दिये थे और शृंगार-मेज ठीक कर दिया था। सूक्ष्म दृष्टि से आर्लिस ने कमरे में चारों ओर देखा। वह लगभग हताश-सी किसी गलती को ढूँढ़ निकालने की चेष्टा कर रही थी। लेकिन उसे कोई गलती मिली नहीं।

आर्लिस समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे वह। वह स्वयं को निरर्थक अनुभव करती बिस्तरे पर बैठ गयी और खिड़की से देखने लगी। अपनी बाँहों में बंदूक लिये मैथ्यू के बारे में उसने सोचा और मन में भय की सिहरन-सी दौड़ गयी—उसके लिए, क्रैफोर्ड के लिए और सभी आदमियों के लिए। "लेकिन औरतें कभी भी मर्दों को लड़ने से नहीं रोक पायी हैं—" उसने सोचा। "औरत के लिए ऐसा करने का कोई रास्ता नहीं है—वह सिर्फ पृष्ठभूमि में खड़ी रह सकती है, रो सकती है और मन में रोष-आकुलता ले, मर्दों के घर वापस आने अथवा न आ पाने का इंतजार कर सकती है।" अचानक आर्लिस की इच्छा हुई कि औरतें ही अगर संसार चलातीं, तो ठीक था। तब बात ही दूसरी होती। अब अगर इस घाटी का ही संचालन उसके हाथ में होता—तो क्रैफोर्ड का स्वागत किया गया होता, वह जिस उद्देश्य से आता, उसे पूरा किया जाता; क्योंकि आर्लिस में जो नारीत्व था, उस के लिए—बाँध का कोई महत्व नहीं था, बिजली का कोई महत्व नहीं था और न जमीन पर अधिकार बनाये रखने का कोई महत्व था। प्यार, बच्चे और विवाह—इनकी तरह औरतों के लिए और कोई चीज विचारणीय नहीं होती। वे अधिक गहरी, अधिक आदिकालिक भावनाओं में उलझी हुई होती हैं, जिनमें शारीरिक संघर्ष से भी बड़े संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

अचानक वह अपने बिस्तरे के नीचे घुटनों पर बैठ गयी और बिस्तरे के नीचे हाथ बढ़ाकर, बड़ी मेहनत से देवदार की एक लम्बी-सी पेटी आगे खींच ली। उसने उसके ढक्कन की ओर देखा। इतने लम्बे अर्से से उसे यों ही छोड़ देने से, ऊपर में धूल की परतें जम गयी थीं। क्रैफोर्ड के घाटी में आने के बाद से उसने इसे कभी खोलकर नहीं देखा था, जैसे ऐसा करते हुए उसे भय लगता था। उसने एक कपड़ा लेकर, सावधानी से उसकी गर्द पोंछ डाली। तब उसने उसे बड़े आदर के साथ खोला, जैसे उसमें किसी संत की अस्थियाँ रखी हों।

"अपनी बंदूकें पास ही रखो—" उसने चेतावनी दी—"नहीं कहा जा सकता है, वे कब आयेंगे। हमें दिन-रात अपनी आँखें खुली रखनी हैं।" उसके ललाट पर सिकुड़नें उभर आयीं—"मैं उम्मीद करता हूँ, बंदूक चलाने की नौबत नहीं आयेगी; क्योंकि वे अपने दिलों में यह जानते हैं कि यह जमीन मेरी है। अतः सतर्क रहो। अगर बंदूक चलानी ही पड़ी, तो पहले मुझे चलाने देना।"

एक व्यक्ति भौंहें सिकोड़ कर आगे बढ़ आया। "अगर तुम सब लोगों को खिलाने और यहीं सुलाने का इरादा करते हो—" वह बोला—"घर में आर्लिस को सहायता की जरूरत होगी। मेरी पत्नी प्रसन्नतापूर्वक......"

मैथ्यू मुस्कराया—"इस बारे में चिंता मत करो। आर्लिस को काफी सहायता मिलेगी......हैटी खाना पकाने में उसी के समान निपुण है।"

आर्लिस घर में घूम-घूम कर, हैटी ने जो काम किया था, उसे देखती रही—वह उस में कोई दोष नहीं ढूँढ़ पा रही थी। किंतु अभी भी यह विश्वास नहीं कर पा रही थी। अब तक उसने अपना दिमाग बंद कर रखा था। क्रैफोर्ड के प्रलोभन के बारे में भी सोचने को वह तैयार नहीं थी। लेकिन सुबह में, हैटी ने जिस दक्षता से सारी व्यवस्था संभाल ली थी, उससे उसके दिमाग के बंद दरवाजों में एक छोटी-सी दरार पैदा हो गयी थी। पहली बार उसने वहाँ से अपने जाने की सम्भावनाओं को झाँककर देखा और जो-कुछ उसने देखा उसकी चमक नहीं सह सकी।

वह अनिश्चित-सी घूम रही थी; क्योंकि उसके करने के लिए कोई काम नहीं था। हैटी अभी भी रसोईघर में दृढ़तापूर्वक डटी, खाना बना रही थी। आर्लिस ने काम अपने हाथ में लेने का प्रयास किया था; लेकिन उसने यह कह कर इनकार कर दिया था कि कितना अच्छा मौका तो उसे आज मिला था। उसने आर्लिस से कहा था कि वह दिन-भर आराम करती रहे। अतः आर्लिस किसी मेहमान के समान सिर्फ इधर-उधर घूम-भर सकती थी। उसके मन का संचित प्रतिरोध तितिर-बितिर हो गया था और वह नये विचार की प्रखरता अनुभव कर रही थी। आशा का बंद द्वार उसके सामने सम्भावना की छोटी-सी दरार से अकस्मात् यों खुल गया था, वह चकाचौंध हो गयी थी, जैसे अचानक ही धूप निकल आनेवाले दिन में वह सीधा सूर्य की ओर देख रही हो। यह सब आरम्भ करने के लिए एक इतनी छोटी-सी चीज की जरूरत पड़ी थी कि उसे ताज्जुब हो रहा था। किस प्रकार वह अब तक यह द्वार कस कर बंद रखने में समर्थ हो सकी थी।

अंततः वह अपना बिस्तरा ठीक करने के विचार से अपने कमरे में गयी। लेकिन हैटी उससे पहले ही वहाँ आकर जा चुकी थी। उसने बिस्तरा ठीक कर दिया था, फर्श पर झाड़ू लगा दी थी, उसके कपड़े सहेज कर रख दिये थे और शृंगार-मेज ठीक कर दिया था। सूक्ष्म दृष्टि से आर्लिस ने कमरे में चारों ओर देखा। वह लगभग हताश-सी किसी गलती को ढूँढ़ निकालने की चेष्टा कर रही थी। लेकिन उसे कोई गलती मिली नहीं।

आर्लिस समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे वह। वह स्वयं को निरर्थक अनुभव करती बिस्तरे पर बैठ गयी और खिड़की से देखने लगी। अपनी बाँहों में बंदूक लिये मैथ्यू के बारे में उसने सोचा और मन में भय की सिहरन-सी दौड़ गयी—उसके लिए, क्रैफोर्ड के लिए और सभी आदमियों के लिए। "लेकिन औरतें कभी भी मर्दों को लड़ने से नहीं रोक पायी हैं—" उसने सोचा। "औरत के लिए ऐसा करने का कोई रास्ता नहीं है—वह सिर्फ पृष्ठभूमि में खड़ी रह सकती है, रो सकती है और मन में रोष-आकुलता ले, मर्दों के घर वापस आने अथवा न आ पाने का इंतजार कर सकती है।" अचानक आर्लिस की इच्छा हुई कि औरतें ही अगर संसार चलातीं, तो ठीक था। तब बात ही दूसरी होती। अब अगर इस घाटी का ही संचालन उसके हाथ में होता—तो क्रैफोर्ड का स्वागत किया गया होता, वह जिस उद्देश्य से आता, उसे पूरा किया जाता; क्योंकि आर्लिस में जो नारीत्व था, उस के लिए--बाँध का कोई महत्व नहीं था, बिजली का कोई महत्व नहीं था और न जमीन पर अधिकार बनाये रखने का कोई महत्व था। प्यार, बच्चे और विवाह--इनकी तरह औरतों के लिए और कोई चीज विचारणीय नहीं होती। वे अधिक गहरी, अधिक आदिकालिक भावनाओं में उलझी हुई होती हैं, जिनमें शारीरिक संघर्ष से भी बड़े संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

अचानक वह अपने बिस्तरे के नीचे घुटनों पर बैठ गयी और बिस्तरे के नीचे हाथ बढ़ाकर, बड़ी मेहनत से देवदार की एक लम्बी-सी पेटी आगे खींच ली। उसने उसके ढक्कन की ओर देखा। इतने लम्बे अर्से से उसे यों ही छोड़ देने से, ऊपर में धूल की परतें जम गयी थीं। क्रैफोर्ड के घाटी में आने के बाद से उसने इसे कभी खोलकर नहीं देखा था, जैसे ऐसा करते हुए उसे भय लगता था। उसने एक कपड़ा लेकर, सावधानी से उसकी गर्द पोंछ डाली। तब उसने उसे बड़े आदर के साथ खोला, जैसे उसमें किसी संत की अस्थियाँ रखी हों।

मैथ्यू ने देवदार की यह पेटी उसे क्रिसमस में उस वक्त उपहार में दी थी, जब वह दस वर्ष की थी। उसे आज भी याद था कि जब उसने बड़ी-सी पैकिंग के भूरे कागज को फाड़ा था, तब वह इसे देखकर कितना निराश हुई थी। उसके दस वर्ष के दिमाग ने उतने बड़े 'क्रिसमस-बाक्स' में तरह-तरह की अजीबा चीजों की कल्पना कर रखी थी; लेकिन यह पेटी कितनी निरर्थक और क्रिसमस के अनुपयुक्त लगी थी उसे। दस वर्ष के उसके छोटे-से भरे संसार में इस पेटी का कोई सम्भावित उपयोग नहीं था।

किंतु उसकी माँ ने पहले ही साल से उस पेटी को भरना शुरू कर दिया था। पहले तो उसने वधू के लिए एक लिहाफ उसमें रखी थी, जिसे उस जाड़े-भर हर रात लैम्प की पीली रोशनी में बैठकर वह उसके लिए बनाती रही थी। उसके स्थूल हाथ तेजी से सूई चलाते रहते और वह उस पर झुकी उसे बनाती रहती। और तेरह वर्ष की होते-न-होते आर्लिस ने भी उसमें वे चीजें रखनी शुरू कर दीं, जिन्हें वह स्वयं खरीदती थी, स्वयं बनाती थी। अतः अब यह पेटी भरी हुई थी।

उसने धीरे-धीरे बड़ी सावधानीपूर्वक और आदर के साथ ढक्कन उठाया और भीतर झाँक कर देखा। देवदार की हल्की-सी गंध उसके नथुनों में समा गयी। जब भी वह यह पेटी खोलती थी, यह गंध उसके नथुनों में समा जाती थी। वह इससे परिचित हो गयी थी और यह अब उसके दिमाग में विवाह और प्रेम की भावना के साथ इस तरह घुलमिल गयी थी कि कोई अलभ्य सुगंधि हो। उसके मन-प्राण में एक मीठी-सी सिहरन छा जाती थी। उसने पेटी में से वह फिल्मी नाइटगाउन (रात्रि कालीन पोशाक) निकाली और उसकी ओर देखा। उसके द्वारा खरीदी और पेटी में जमा की गयी चीजों में यही अंतिम थी। वह उसे बड़ी कोमलता से उठाये थी, जैसे वह फट न जाये कहीं। वह उठ खड़ी हुई और उसे अपने उरोजों के नजदीक रखकर, अपने शरीर पर लहरा जाने दिया। फिर वह स्वयं को निहारने लगी।

अनिच्छापूर्वक उसने वह रात्रिकालीन पोशाक अलग रख दी और वह साया उठा लिया, जो उसने खरीदा था। उसने अपने हर साये पर नीले धागे से अपना नाम काढ़ रखा था। कल छः साये थे और उसने उन्हें बिस्तरे पर एक ओर, एक-के-ऊपर-एक करके रख दिया। फिर उसने 'स्लिप' (एक पोशाक) और कंचुकियाँ निकालीं और उन पर एक उड़ती-सी नजर डालकर रख दिया; क्योंकि उसने उन पर अपने हाथ से कोई काम नहीं किया था।

वह अब तक आधी पेटी खाली कर चुकी थी। उसे दो मेजपोश मिले, जिन पर उसने फलों की टोकरी का कसीदा काढ़ा था। उसने कसीदाकारी की सिलवटों को मुलामियत से सीधा किया और उसे याद हो आया कि कितने श्रम से उसने उन्हें बनाया था। घंटों सपनों में लीन किस तरह वह काम करती रही थी और किस तरह अंत में, उसने उन्हें तह लगाकर बड़े संतोष के साथ एक ओर रख दिया था कि आने वाले दिनों में एक दिन वे उसकी अपनी मेज की शोभा बढ़ायेंगे।

उजले फीतों का एक बड़ा ही मुलायम मेजपोश था, जिसे बनाने में निश्चय ही, काफी खर्च किया गया था। उजली चादरें थीं, जिन पर एक कोने में नीले धागे से उसका नाम कढ़ा था और बड़ी सावधानी से कशीदाकारी किये गये तकिये के खोल थे। पेटी की गहराई में उसे बिछावन पर बिछाये जाने की एक 'मार्था वाशिंग्टन' चादर मिली, जिस पर उसकी माँ के हाथों की नक्काशी काढ़ी गयी थी। उसे याद हो आया कि उस जाड़े में उसने भी नक्काशी काढ़ना सीखना चाहा था; लेकिन उसकी माँ ने उसे उस चादर पर काम नहीं करने दिया। वह उसके बजाय उसे अभ्यास करने के लिए ऐसे काम देती थी, जो ज्यादा उलझे हुए नहीं होते थे।

और पेटी की बिलकुल पेंदी में उसका प्रथम उपहार था—भविष्य के लिए पहला संचय—वधू के लिए बनायी गयी वह लिहाफ! उसने उसे बाहर निकाल लिया और उसे दूसरी चीजों के ऊपर बिस्तरे पर फैला दिया। लिहाफ यद्यपि दस वर्ष पुराना था, लेकिन काम में नहीं लाये जाने के कारण उसके रंग अभी भी चमकीले और ताजे थे और वह लिहाफ उसकी सुहाग शय्या पर बिछाये जाने का इंतजार कर रहा था। यह उसकी माँ ने स्वयं अपने स्थूल हाथों से श्रम कर, दस वर्ष पूर्व, भविष्य की एक रात के लिए, तैयार किया था। इसकी पूरी रूपरेखा, इसकी सारी योजना एक ऐसी औरत द्वारा तैयार की गयी थी, जो अब मृत थी—जो यह जानती थी कि विवाह का दिन और लिहाफ के उपयोग का समय आयेगा—एक ऐसी औरत, जो नारी जाति की वास्तविकता से परिचित थी और जिसने इस खूबी से लिहाफ तैयार किया था कि वह विवाह के बाद भी काफी दिनों तक काम दे सके। उसकी ओर देखते-देखते आर्लिस को अपने गले में कुछ अटकता-सा महसूस हुआ और बड़ी कठिनाई से उसे निगल सकी वह। वर्षों पूर्व मरी अपनी माँ के बारे में वह बहुधा नहीं सोचा करती थी; लेकिन परिवर्तन और तैयारी के इस दिन वह उसकी सन्निकटता अनुभव कर रही थी।

वह खुली पेटी की बगल में पालथी मार कर बैठ गयी और उसे देखने लगी। ना, अगर वह गयी, तो उसे यह यहीं छोड़ जाना होगा। वह ये सारी चीजें और क्रैफोर्ड, दोनों को साथ-साथ पाने की उम्मीद नहीं कर सकती थी। उसके जीवन का ढर्रा इसकी अनुमति नहीं देता था। अगर वह भागी, तो वह जो कपड़े पहने हुई है, उन्हीं कपड़ों में जाना होगा। सिर्फ उसके हृदय का प्यार उसके साथ होगा। और वहाँ आशीर्वचन के लिए पादरी नहीं होगा, परिवार के लोगों से मिलने वाले उपहार नहीं होंगे और उत्तेजित औरतों का झुंड नहीं होगा।

यंत्रचालित-सी उसने सब चीजों की तहें लगाकर उन्हें एक ओर रखना शुरू कर दिया। यह चीज कोई महत्व नहीं रखती थी। जो-कुछ उसके लिए महत्वपूर्ण था, वह क्रैफोर्ड था। उम्मीद-पेटी में वर्षों की संचित इन सारी चीजों को अस्वीकार करने के इस क्षण में, वह अब यह जान गयी थी। वह जान गयी थी कि प्यार अकेला ही पनपता है—उसे वर्षों, परिवार और तैयारी के सहारे की आवश्यकता नहीं होती। इसका निर्माण, किसी मानव के समान ही, अपने ही औचित्य में होता है। उसका दिमाग अब इतना सुलझा हुआ था कि उसे ताज्जुब हो रहा था, वह क्यों इतने समय तक हिचकिचाती रही थी। उसका अपना अलग व्यक्तित्व था, जैसे मैथ्यू का अपना अलग व्यक्तित्व था—भिन्न और सशक्त और आर्लिस उससे दूर जा सकती थी—उसकी देख-भाल का उत्तरदायित्व हैटी के हाथों में छोड़ जा सकती थी। अंततः वह अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति पा सकती थी। हैटी अभी सिर्फ चौदह साल की थी। शीघ्र ही वह पंद्रह साल की हो जायेगी। लेकिन यह पर्याप्त था। उसमें भी वही प्रौढ़ता थी, जो उस उम्र में स्वयं आर्लिस में थी—जब उसकी माँ की मृत्यु से देखभाल और घर सँभालने की यह जिम्मेदारी बलात् उसके ऊपर आ पड़ी थी। वह भौंचक रह गयी थी, हिचकिचाती थी, स्वयं अपने सम्बंध में संदिग्ध थी; क्योंकि यह सब अप्रत्याशित था। किंतु हैटी तो यह उत्तरदायित्व सँभालने के लिए आतुर भी थी। यह उसके लिए कठिन साबित होगा, जैसा आर्लिस समझ रही थी, उससे भी कठिन। लेकिन यह बहुत ही कठिन नहीं होगा।

खुश-सी होकर, उसने हर चीज पेटी में वापस रख दी और उसे बिस्तरे के नीचे ढकेलने लगी। तब वह रुक गयी। वह कुछ चीजें तो साथ ले ही जा सकती थी। बस, कुछ ही चीजें, रात्रिकालीन पोशाक और...वह स्वयं ही शर्मा

गयी और वह जल्दी से उठकर वहाँ गयी, जहाँ वह अपने सब समान रखा करती थी। दो क्रिसमस पहले नाक्स ने उसे एक छोटा-सा सूटकेस ला दिया था, जिसमें हफ्ते-भर की यात्रा का सामान आसानी से रखा जा सकता था। आलिस उसी की तलाश कर रही थी। उसने उसका भी कभी उपयोग नहीं किया था; क्योंकि वह कभी कहीं नहीं गयी थी।

ले जायी जाने वाली चीजों के बारे में उसे काफी सावधानी से चुनाव करना होगा। उसने सामान रखने के लिए सूटकेस खोल दिया और उसमें रात्रिकालीन पोशाक, स्लिप और साये रख दिये। उसने कपड़े रखने की अपनी आलमारी से अपनी पोशाकें निकालीं—और हमेशा पहने जाने वाले वे कपड़े भी, जिनकी उसे जरूरत पड़ने ही वाली थी। वह पुनः प्रसन्न हो उठी थी। उसे इसका विश्वास था कि आनेवाले दिनों में एक दिन वह अपनी उम्मीद-पेटी की बाकी चीजों को भी प्राप्त कर लेगी—लिहाफ, बिछावन की चादरें और मेजपोश! लेकिन अंतिम क्षण में, उस ऊपर तक भर गये सूटकेस को बंद करने के पहले, उसने पुनः उम्मीद-पेटी में हाथ डाला और उजले फीते का वह मेजपोश खोज निकाला। उसने उसे भी सूटकेस में ठूँस दिया और अपने इस अंतिम सामान के कारण, उसे सूकेटस बंद करने के लिए, ढक्कन पर अपने घुटनों का बोझ डालना पड़ा।

तब अपने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाती, वह खड़ी हो गयी। उसने वह उम्मीद पेटी बिस्तरे के नीचे ढकेल दी और अपना छोटा-सा वह सूटकेस उसके पीछे छिपा दिया, जिससे हैटी अथवा मैथ्यू अगर कमरे का दरवाजा खोलें भी, तो उन्हें वह दिखायी न दे।

तब, एक-ब-एक, वह बिस्तरे पर बैठ गयी। यह कैसे वह जानती थी कि अभी भी वह क्रैफोर्ड के साथ जा सकती है? कैसे वह जानती थी कि वह सुअवसर अब भी वर्तमान है? कल जिस कठोरता के साथ क्रैफोर्ड गया था, जिस प्रकार उसने जाते समय रसोईघर का दरवाजा खोला था और बाहर निकल गया था, वह उसकी आँखों के आगे बिलकुल मूर्तिमान हो उठा। वास्तविकता की इस आकस्मिक जानकारी से, पूर्णरूपेण पस्त हो, उसने अपना सिर दोनों हाथों से दबा लिया और वियोग की पीड़ा से संतप्त, बिस्तरे पर लुढक गयी। यह ऐसा ही था, जैसे क्रैफोर्ड ने उसे किसी बलिवेदी पर अकेला छोड़ दिया हो!

सैम के पीछे-पीछे क्रैफोर्ड अपनी मोटर में चला आ रहा था, जब उसने बंदूक के एक जोरदार धड़ाके की आवाज़ सुनी। सैम कुछ-सौ गजों तक और गाड़ी चलाता रहा और तब उसने सड़क के किनारे गाड़ी रोक दी। बाहर की ओर झुक कर उसने क्रैफोर्ड को संकेत किया और क्रैफोर्ड ने उसकी मोटर के पीछे अपनी मोटर रोक दी। फिर वह उतर कर उसके पास पहुँचा।

"वे जानते हैं कि अब हम आ रहे हैं—" सैम ने वक्रता से कहा।

क्रैफोर्ड ने सोचते हुए सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की। मैथ्यू और उसके साथियों के पास अब बंदूकें थीं। उनके पास पहले से ही बदूकें थीं। उसने वापस वकील की ओर देखा। सैम एक लम्बा-चौड़ा व्यक्ति था और उसके कंधे भारी थे तथा सिर बड़ा था। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था और क्रैफोर्ड ने सोचा कि अगर सैम ने टी. वी. ए. के लिए काम करने के बजाय, स्वतंत्र रूप से वकालत का पेशा अपनाया होता, तो जूरी के सदस्य सम्भवतः उसे पसंद कर लिया करते।

सैम ने बैठे-बैठ ही अपनी जगह बदली। "खैर!" वह प्रसन्नतापूर्वक बोला—"हम उससे बातें करने जा रहे हैं और सिर्फ इसी के लिए वह हमें बंदूक नहीं मार दे सकता—" वह क्षण भर को रुक गया—"मुझे उम्मीद है, वह भी यह जानता है।"

"अच्छा हो, मुझे पहले जाने दो—" क्रैफोर्ड बोला—"वह मुझे जानता है।"

सैम हँसा—"क्या इससे कुछ मदद मिलेगी?"

क्रैफोर्ड को भी बाध्य होकर हँसना पड़ा। "मैं नहीं जानता—" उसने स्वीकार किया—"मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता।"

वह वापस अपनी मोटर तक गया और चालक की सीट पर बैठ गया। उसने अपनी मोटर सैम के 'स्टूडीबेकर' की बगल से आगे निकाल ली। वे घाटी की ओर जाने वाली सड़क पर बढ़ चले। मुहाने पर पहुँच कर क्रैफोर्ड ने मोटर भीतर मोड़ दी और सीधा बाँध के बाहरी हिस्से तक मोटर ले गया। जिस क्षण उसने घाटी में मोटर मोड़ी थी, वह मैथ्यू को बाँध के ऊपर खड़ा अपनी ओर देखते देख रहा था। मैथ्यू अकेला खड़ा था और उसके हाथ में पिस्तौल थी।

क्रैफोर्ड ने मोटर रोक दी और उतर पड़ा। उसने मुड़कर सैम के लिए नजरें दौड़ायीं। सैम ठीक उसके पीछे ही अपनी मोटर खड़ी कर रहा था। वह

मोटर से उसकी ओर बढ़ा। उसने अपने एक हाथ में एक फाइल ले रखी थी, जिसमें कागजात रखे थे।

"कैसे हैं, मि. डनबार?" क्रैफोर्ड ने मैथ्यू से शिष्टाचार निभाया।

मैथ्यू खड़ा उनकी ओर देखता रहा। "कैसे हो क्रैफोर्ड? मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?"

क्रैफोर्ड उसके हाथ की पिस्तौल की ओर देखने से स्वयं को नहीं रोक सका। उसने वापस मैथ्यू के चेहरे पर नजर डाली। "यह सैम मैकक्लेंडन है—" वह बोला—"टी. वी. ए. का वकील!"

मैथ्यू उनकी ओर गौर से देखता रहा। वह हिचकिचा रहा था। किंतु ये लोग निर्दोष थे—सिर्फ दो आदमी और उनमें भी एक क्रैफोर्ड था! अंततः उसने अपनी पोशाक के भीतर चमड़े की पेटी में अपनी पिस्तौल रख दी और कहा—"ऊपर आओ। तुम दोनों ही!"

क्रैफोर्ड जिस मैथ्यू को अब तक जानता था और जिसने अपने हाथ में बंदूक नहीं ली थी, वह अभी उसीके समान दीख रहा था—कम भयावना! क्रैफोर्ड बाँध के ऊपर चढ़ने लगा। उसके जूते उस मिट्टी में धँस रहे थे। सैम उसके साथ ही था। जब वह बाँध के बिलकुल ऊपर पहुँच गया, तब उसने बाँध के भीतरी हिस्से के नीचे, जमीन पर खड़े उन व्यक्तियों को देखा, जो हाथों में बंदूक लिये ऊपर उनकी ओर देख रहे थे।

सैम ने उन व्यक्तियों और बंदूकों की उपेक्षा कर दी। कुशलतापूर्वक, स्वाभाविक मुद्रा में, उसने फाइल खोली और एक लिफाफा बाहर निकाला। "मि. डनबार!" वह तीव्र स्वर में बोला—"यह रहा, भूमि-अधिकार का घोषणा-पत्र। आपको इसमें सभी सूचनाएँ मिल जायेंगी—जो कीमत हम देना चाहते हैं, उसका भी इसमें उल्लेख है। इसके द्वारा आपको यह सूचना दी जा रही है कि कानूनन यह जमीन अमरीकी सरकार की सम्पत्ति हो गयी है।"

मैथ्यू अपनी ओर बढ़ाये गये उस लिफाफे से दूर हट गया और उसने अपनी पोशाक के भीतर हाथ डाल दिया। "मैं इसे लेने से इनकार करता हूँ—" वह बोला—"चले जाओ मेरी जमीन से।"

सैम ने क्रैफोर्ड की ओर अपना सिर घुमाया कि अब क्या किया जाये!

"मैथ्यू!" क्रैफोर्ड ने कहा—"यह सिर्फ औपचारिकता है। तुम्हें भूमि-अधिकार-कमीशन के सामने उपस्थित होने का अधिकार होगा। अगर तुम हमें अनुमति दोगे, तो हम इस जमीन के पुनर्मूल्यांकन के लिए अपने व्यक्ति

भेज देंगे। तुम अपना वकील ठीक कर सकते हो और उसे तुम्हारा मामला तैयार करने दे सकते हो। कमीशन तुम्हारे मामले की सुनवाई करेगा—वे लोग अच्छे और निष्पक्ष व्यक्ति हैं—और तब वे तुम्हारे मामले का निर्णय करेंगे। अगर तुम चाहो, तो तुम उसके बाद, फेडरल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में अपील कर सकते हो। इसे सुलझाने का यही वैधानिक तरीका है, मैथ्यू! यही एक रास्ता है सिर्फ!"

मैथ्यू उस उजले लिफाफे को यों देख रहा था, जैसे वह पानी का मोकेसिन (अमरीकी इंडियनों का एक विशेष प्रकार का जूता) हो! वह उसे स्वीकार कर लेने के परिणामों से भयभीत और चिंतित था। क्रैफोर्ड ने अभी जो चिकनी-चुपड़ी बातें कही थीं, उसने अपना ध्यान उन पर लगा दिया। उसने बड़ी सावधानी से मन-ही-मन उन्हें दो बार दुहराया।

"तुम इस बाँध को देखते हो?" तब वह बोला। उसने अपने एक हाथ से संकेत किया—"जब वह तैयार हो जायेगा, तब मेरी जमीन पर टी. वी. ए. का पानी नहीं आयेगा। अतः इस जमीन को लेने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।"

"इसमें कोई दम नहीं है—" सैम जल्दी से बोला। वह मैथ्यू के इस अभिप्रायहीन श्लेष पर हँस पड़ा और तब वह गम्भीर हो गया—"मुझे खेद है। मेरा मतलब है, हम ऐसे किसी आधार को मान्यता नहीं दे सकते। हमारे विशेषज्ञों का दावा है कि चिकसा-बाँध के उचित और पूर्ण विकास के लिए यह जमीन आवश्यक है। कमीशन के समक्ष अपनी बातें कहने का मौका आपको भी मिलेगा...हम कुछ अनुचित नहीं करना चाहते। वे निष्पक्ष व्यक्ति हैं, जमीनों के मूल्यांकन के विशेषज्ञ। वे..."

"क्या वे यह निर्णय कर सकते हैं कि टी. वी. ए. को मेरी जमीन लेने का कोई अधिकार नहीं है?" मैथ्यू ने तेजी से पूछा।

सैम ने इनकार में सिर हिलाते हुए बोलने का प्रयास किया। मैथ्यू ने उसे रोक दिया।

"वे सिर्फ इतना ही कर सकते हैं कि यह तय कर देंगे कि मुझे इस जमीन के लिए क्या मिलना चाहिए। ठीक है यह?"

"हाँ!" सैम ने कहा—"आप..."

"अगर मैं तुम्हारे भूमि-अधिकार-कमीशन के समक्ष उपस्थित होता हूँ, तो इसका अर्थ होता है कि जब तक मुझे उचित मूल्य मिलता है, मैं अपनी जमीन छोड़ने को तैयार हूँ। ठीक है यह?" मैथ्यू ने जोर देकर कहा।

"हाँ!" सैम बोला। उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा, पर क्रैफोर्ड हिला भी नहीं।

मैथ्यू ने अपने हाथ हिलाये—"तुम मुझे मौका ही देते हो—" वह कोमल स्वर में बोला— "इस तरीके के प्रति अपनी सहमति देने का अर्थ है, मैं अपनी जमीन छोड़ रहा हूँ।" उसने इनकार में अपना सिर हिलाया— "मेरे विचार से तुम अब चले जाओ, तो अच्छा है।"

"अगर आप नहीं उपस्थित होते हैं, तो कार्यवाही संक्षिप्त होगी—" सैम ने कहा—"वे बिना किसी प्रश्न के हमारे द्वारा दिये गये मूल्य को अधिकृत करार देंगे। मैंने आपसे पहले ही कह दिया है—इस क्षण भी जमीन सरकार के नाम दर्ज है। सुनवाई के तुरत बाद ही, जिला-अदालत बेदखली का आज्ञापत्र जारी कर देगा और आप इस अहाते से हटा दिये जायेंगे।"

"सब पहले से ही बिलकुल तैयार कर रखा है—है न?" मैथ्यू बोला। उसने अपनी पोशाक के भीतर से पिस्तौल निकाला और उससे संकेत किया "चले जाओ अब मेरी जमीन से!" उसकी आवाज बदल कर नीरस, सख्त भावनाविहीन और दृढ़ हो गयी थी।

सैम हिचकिचाया। क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की ओर देखा, तब वापस सैम की ओर। "चले जाओ, सैम!" उसने अनुनय के स्वर में कहा—"वापस मोटर में जाओ!"

सैम ने लिफाफा आगे बढ़ाया। "मुझे यह लिफाफा देना ही होगा—" वह बोला—"और तब मेरा काम समाप्त हो जाता है।"

मैथ्यू ने उसकी उपेक्षा कर दी। सैम ने क्षण भर तक लिफाफा अपने हाथ में रखा और तब उसे मैथ्यू के पैरों के पास जमीन पर गिरा दिया। फिर वह मुड़कर बाँध से नीचे उतरने लगा।

"उठा लो इसे—" मैथ्यू ने कहा।

सैम रुक गया। क्रैफोर्ड जड़वत् खड़ा रहा और सैम ने घूमकर मैथ्यू की ओर देखा।

"तुम हमारा अहाता गंदा कर रहे हो।" मैथ्यू बोला। उसकी आवाज़ में क्रोध था—"मैंने कहा, उठा लो इसे।"

"वह नहीं उठायेगा—" क्रैफोर्ड ने तेजी से सोचा— "उसे मैथ्यू के पुरुषत्व की अवहेलना करनी ही पड़ेगी..." वह झुका और लिफाफा उठाकर उसने उसे अपनी जेब में रख लिया।

"जाओ अब—" मैथ्यू ने सैम से कहा— "बैठो अपनी मोटर में और जब तक मेरी आँखों से ओझल न हो जाओ, रुकना मत।"

क्रैफोर्ड कोई मदद नहीं कर सका। उसने सैम की ओर देखकर बड़े ही सूक्ष्म ढंग से सिर हिलाकर अपनी सहमति व्यक्त की और संकेत से ही उसे जाने को कह दिया कि अब वह सँभाल लेगा। सैम अपनी मोटर तक पहुँचा और चालक की सीट पर बैठ गया। उसने अपनी मोटर सड़क पर आगे-पीछे कर बाहर निकाली और घाटी से निकल कर नदी के किनारे वाली सड़क पर उसे शहर की ओर छोड़ दिया। वे मौन देखते रहे। तब क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की ओर देखा। मैथ्यू उसे पहले से ही देख रहा था। उसने पिस्तौल रख ली थी और खाली हाथों खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था।

"तुम जीत नहीं सकते—" क्रैफोर्ड ने शांत स्वर में कहा।

"तुम्हारे तरीके से नहीं—" मैथ्यू भी उतने ही शांत स्वर में बोला—" मेरे तरीके से, सम्भव है, मैं जीत जाऊँ।"

क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की ओर से आँखें हटा लीं। उसने उन लोगों की ओर देखा, जो खड़े होकर उनकी बातें सुन रहे थे, उनसे परे घाटी की ओर और उस बड़े बलूत-वृक्ष के नीचे बने घर की ओर देखा। वह बरामदे में खड़ी आर्लिस को देख सकता था, जो उन्हीं लोगों की ओर देख रही थी। उसने अपने भीतर बेचैनी-सी महसूस की और तुरत ही उधर से दृष्टि हटाकर पुनः मैथ्यू की ओर देखा। दूर खड़ी आर्लिस की तुलना में उसे मैथ्यू अधिक सरल भी प्रतीत हुआ।

"मैं कुछ कहना चाहता हूँ......" वह बोला।

"यह कुछ कहने के परे है—" मैथ्यू ने कहा—"बेहतर होगा, तुम भी जाओ और जाकर अपने वकील दोस्त का साथ पकड़ लो। मुझे काम करना है।"

"मैथ्यू—" क्रैफोर्ड तने स्वर में बोला—"इस मामले की समाप्ति के पहले ही, तुम किसी-न-किसी को गोली मार देने वाले हो। तब तुम जेल चले जाओगे। फिर जमीन के बारे में बातें भी नहीं कर सकोगे—तुम्हें स्वतंत्रता भी नहीं रहेगी।"

"यह दाँव तो मुझे लगाना ही पड़ेगा—" मैथ्यू बोला—"यह खतरा मोल लिये बिना निस्तार नहीं।"

वे खड़े एक-दूसरे की ओर देखते रहे। उनकी पहली मुलाकात को बीते बहुत दिन हो चुके थे और इस लम्बे अर्से में वे एक-दूसरे के निकट भी रहे

थे और दूर भी। उनका सम्बंध दिन-पर-दिन बदलता गया था—कभी एक-सा नहीं रहा था—एक भावावेश के साथ हमेशा बदलता रहा था। किंतु अब निष्ठुरतापूर्वक दोनों दो मत का प्रतिपादन कर रहे थे।

"क्या कोई ऐसी चीज है, जो मैं कर सकता हूँ—" वह बोला-
रोकने के लिए। कोई भी चीज हो, मैं पर्वाह नहीं करता।"

मैथ्यू ने जवाब नहीं दिया।

हताश भाव से क्रैफोर्ड ने अपने हाथ हिलाये। "अगर मैं आर्लिस से अब न मिलने का वादा करूँ, तो?" वह बोला।

मैथ्यू ने आश्चर्य के भाव से उसकी ओर देखा- -"यह तुम्हारे लिए उतना महत्व रखता है?"

क्रैफोर्ड ने उन आदमियों की ओर देखा। अब खतरे की गंध जा चुकी थी और वे तितर-बितर हो कर अपने काम पर वापस जा रहे थे। उसे खुशी थी कि वह और मैथ्यू अकेले छोड़ दिये गये थे।

"हाँ!" वह बोला—"क्योंकि यह मेरी असफलता है। जो-कुछ भी मुझमें है, मैंने इस पर लगा दिया है और अगर तुम नीचे जाते हो, तो मैं भी तुम्हारे साथ ही नीचे जा रहा हूँ।"

"तुम्हें वैसा करने की कोई जरूरत नहीं थी।"

"मैं जानता हूँ—" क्रैफोर्ड बोला। लगता था, वह रो पड़ेगा—"मैं जानता हूँ। तुम क्या सोचते हो, मैं ऐसा चाहता था?" वह चुप हो गया। वह हाँफ रहा था और स्वयं के भीतर गहरी उथल-पुथल अनुभव कर रहा था। और इतने पर भी इसे कहने का समुचित तरीका नहीं था। कोई भी इन चीजों को निर्लिप्त ढंग से नहीं कह सकता था।

"तुममें इतना कुछ है कि तुमने उनका कभी उपयोग नहीं किया है—" वह बोला—"हो सकता है कि तुम्हें आरम्भ में ही इतना सब-कुछ दे दिया गया हो। तुमने अपने पुरखों का श्रम-फल ले लिया है और इसे अपने जीवन में बचाकर रख छोड़ा है। तुमने इसे बिना किसी परिवर्तन के लिया है—इसमें नये जीवन का संचार भी नहीं किया है और नयेपन, एक नयी शक्ति के अभाव में तुमने यह अनुभव नहीं किया है कि वह तुम्हारे बेटों के जीवन में नहीं जा सकता था। तुमने अपनी पैतृक सम्पत्ति का अपने जीवन-काल में ही पूर्ण उपयोग कर लिया है। तुम्हारे लड़के तुम्हें छोड़कर क्यों चले गये, कभी यह भी सोचा है तुमने? क्योंकि उनका भविष्य यहाँ दिवालिया हो चुका है;

क्योंकि तुमने उनके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा है।" वह रुक गया। उसने मैथ्यू को कड़ी आँखों से देखा और तब फिर कहने लगा—"तुमने दूसरे स्वप्न के लिए, दूसरे विचार के लिए जगह भी नहीं छोड़ी—एक डेरी फार्म, एक..." उसने मैथ्यू के चेहरे के परिवर्तन को देखा और वह चुप हो गया। वह जान गया था कि उसे चुप होना ही पड़ेगा।

मैथ्यू उसके निकट चला आया। उसने उसकी बाँह पर अपना हाथ रख दिया और उसकी सख्त पकड़ के नीचे क्रैफोर्ड लगभग रो पड़ा।

"वही मैं कर रहा हूँ—" मैथ्यू बोला—"मैं इसे उनके लिए बचा रहा हूँ। मैं इसे उसी एक रास्ते से बचा रहा हूँ, जिस रास्ते से बचा सकता हूँ। यही कारण है कि मैं अपने हाथ में पिस्तौल लिये यहाँ खड़ा हूँ। इसे बचा रहा हूँ।"

"किंतु तुम इसे बचा नहीं रहे हो—" क्रैफोर्ड ने कहा—"तुम अपने स्वयं के विश्वास की हठ में इसे गँवा रहे हो। तुम इसे सिर्फ गँवा रहे हो; क्योंकि तुम गलत ढंग से इसे करने की चेष्टा कर रहे हो।"

मैथ्यू ने क्रुद्ध होकर तेजी से फिर पिस्तौल निकाल ली। और क्रैफोर्ड भयभीत हो उठा। उसने मैथ्यू के मर्मस्थल पर चोट की थी और वह भयभीत था। उसने पिस्तौल छीनने का प्रयास करना चाहा; किंतु वह जानता था कि वह इसमें सफल नहीं हो पायेगा। मैथ्यू बुरी तरह काँप रहा था जैसे ठंड लग गयी हो और उसके हाथ की पिस्तौल भी काँप रही थी। क्रोध से उसकी आवाज में घरघराहट आ गयी थी और गला रुँध गया था।

"निकल जाओ!" वह बोला—"निकल जाओ!"

क्रैफोर्ड उसकी ओर से मुड़ पड़ा। वह बाँध से नीचे की ओर उतरने लगा। हर क्षण पीछे से गोली लगने की आशंका में उसकी पीठ सिकुड़ जाती थी। वह पीछे घूमकर देखने का साहस नहीं कर सका। वह अपनी मोटर में बैठ गया, उसे पीछे की ओर चलाया और फिर घुमा लिया। तब रुक कर उसने ऊपर बाँध की ओर देखा। "और तुम्हारा एकमात्र उत्तर तुम्हारे हाथ में है—" वह बोला और मैथ्यू को बाँध पर खड़ा छोड़, मोटर चलाता हुआ वहाँ से चला गया। गुस्से से काँपते हाथ में पिस्तौल थामे मैथ्यू स्वयं भी बुरी तरह काँप रहा था।

एक बार घाटी के बाहर आ जाने पर, क्रैफोर्ड ने मोटर की चाल धीमी कर दी। वह स्वयं के भीतर कँपकँपी अनुभव कर रहा था। वह वहाँ खतरे के

कितना निकट पहुँच गया था। किंतु उसने कह दिया था—उसने उन शब्दों को कहा था, जो शायद ही, एक मनुष्य दूसरे से कह सके और उसने उन्हें दिल में चोट पहुँचाते देखा था। किंतु वह उसके सम्पूर्ण प्रभाव की कल्पना नहीं कर सकता था। तात्कालिक प्रभाव विनाशकारी और निष्ठुर था और इसकी काफी अच्छी उम्मीद थी कि समय के साथ यह घनीभूत हो उठे। बहुत कम ही व्यक्ति ऐसे हैं, जो दूसरों की आँखों के सामने अपने सम्बंध का नग्न सत्य बर्दाश्त कर सकते हैं।

वह बिना सड़क की ओर देखे ही गाड़ी चलाता जा रहा था। तब, ऊपर नजर उठाते ही, उसने कस कर ब्रेक दबा दिये और मोटर सड़क के किनारे बढ़कर खड़ी हो गयी। आर्लिस बिलकुल मोटर के सामने खड़ी थी। उसके हाथ में एक छोटा-सा नीला सूटकेस था और उसने बड़ी खूबसूरत पोशाक पहन रखी थी। क्रैफोर्ड ने उसे इस पोशाक में पहले कभी नहीं देखा था।

वह मोटर का दरवाजा खोलकर उतर पड़ा। "आर्लिस!" वह बोला।

"क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ?" वह बोली।

क्रैफोर्ड ने उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखा। उसके चेहरे पर, स्वयं उससे अज्ञात, एक भाव उभर उठा और आर्लिस ने अपने हाथ का सूटकेस छोड़ दिया। वह उसकी ओर दौड़ पड़ी। क्रैफोर्ड ने उसे कस कर पकड़ लिया। आर्लिस पागलों के समान उसके चेहरे पर अपने हाथ फिराने लगी।

"हाँ!" वह बोली—"हाँ, हाँ!"

प्रकरण बाइस

वे मोटर में बैठे शहर जाने वाली सड़क पर चले जा रहे थे। घाटी उनके पीछे छूट गयी थी और वे साथ-साथ थे। क्रैफोर्ड स्टीयरिंग ह्वील पर एक ही हाथ रखे मोटर चला रहा था। दूसरे हाथ से उसने आर्लिस का हाथ कसकर पकड़ रखा था। उन दोनों के हाथ इस प्रकार कसकर जुड़े हुए थे, जैसे किसी एक प्रस्तर-प्रतिमा ने दूसरी का हाथ पकड़ रखा हो!

आर्लिस सिहर उठी। "मैं नहीं जानती थी कि तुम मुझे अपने साथ चलने दोगे या नहीं—" वह बोली—"इस अंतिम क्षण तक मैं यह नहीं जानती थी।"

क्रैफोर्ड ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा। यद्यपि वह गाड़ी हाँक रहा था, फिर भी उसने उसकी ओर देखते रहने में समय लगाया। वह बड़े गौर से उसके चेहरे को देखता रहा—उसकी उठी हुई तिरछी नाक, उसके होंठों की बनावट और उसकी सुदृढ़ गोल ठुड्डी।

"तुमने अपना विचार कैसे बदल दिया?" उसने पूछा।

आर्लिस ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ उसके हाथ की पकड़ और मजबूत हो गयी।

"क्या उन बंदूकों के कारण?" क्रैफोर्ड ने कहा—"अब वह सिर्फ बंदूकों की ही चिंता में पड़ा हुआ है।"

आर्लिस फिर सिहर गयी। "मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहती—" वह फुसफुसायी—"मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहती।"

वे उस सड़क पर पहुँच गये थे, जो पुल पर से होकर शहर की ओर चली गयी थी। क्रैफोर्ड ने सड़क के एक किनारे मोटर खड़ी कर दी। "हम नहीं सोचेंगे—" वह बोला—"अब वह खत्म हो चुका है—पीछे छूट चुका है। हम लोग शादी कर लेंगे और हम लोग साथ रहेंगे—हम एक नया जीवन आरम्भ करेंगे। तुम यही करना चाहती हो न?"

"हाँ!" आर्लिस बोली—"हाँ!" और उसने सदा इसीकी कल्पना कर रखी थी। उसमें एक अदम्य आशा और नवीन उत्साह पैदा हो गया था, मानो उसने एक उजली पोशाक पहन रखी थी और उसकी बगल में उसका पिता खड़ा उसे दूसरे के हाथों में सौंप दे रहा था। उसने क्रैफोर्ड का हाथ उठाकर अपने होंठों पर रखा और उसे वहीं दबाये रखा। स्टीयरिंग व्हील के नीचे बैठा क्रैफोर्ड कसमसाया और उसने अपनी दूसरी चौड़ी हथेली उसके गाल पर रख दी। अपने दोनों हाथों के बीच उसने उसका सिर थाम लिया।

"हम 'राइजिंग फान, जार्जिया' चले चलेंगे—" वह बोला—"वहाँ जल्दी हमारी शादी हो सकती है। हमें प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।"

"अच्छी बात है—" वह बोली—"जैसा तुम कहो।"

वह फिर ड्राइवर की सीट पर ठीक से बैठ गया और मोटर को सड़क पर ले आया। मोटर उसने शहर से दूर जाने वाले रास्ते पर मोड़ दी। उसने मोटर का ऊपरी हिस्सा तब खोल दिया और वे लक्ष्य की ओर बढ़ने लगे। लगभग तत्काल ही वे चढ़ाई चढ़ रहे थे और वसंत के इस आरम्भ में उनकी आँखों के सामने 'सैंड माउंटेन' अपनी ताजी हरीतिमा में उभरता चला जा रहा

था। आर्लिस को यहाँ की हवा हल्की और मुक्त प्रतीत हो रही थी। वह घर से कभी इतनी दूर नहीं आयी थी।

और यह अच्छा था। यह उसकी शादी का दिन था—जिसकी उसने काम करते समय हमेशा उम्मीद बाँध रखी थी, जिसका उसने स्वप्न देखा था और यद्यपि यह बाहरी रूप और त्यौहार के माने में भिन्न था, फिर भी वह अपने मन में बिल्कुल वैसा ही अनुभव कर रही थी। वह अपने भीतर मधुर हर्ष-भरी कँपकँपी अनुभव कर रही थी, आगे घटनेवाली घटनाओं की मधुर प्रतीक्षा सँजो रही थी और प्रथम हिमपात के समय की अपार उत्तेजना-सी वह उत्तेजना उसके भीतर हिलोरें ले रही थी। वह अकेली थी और फिर भी वह अकेली नहीं थी। क्रैफोर्ड उसकी बगल में बैठा था। वह सड़क की ओर देख रहा था और बगल से उसका चेहरा आर्लिस की आँखों के सामने था। वह सशक्त था, मर्द था और शीघ्र ही उसका पति होने वाला था। उसने अगल-बगल की अद्भुत दृश्यावली से अपना हाथ हटा लिया और पूरी एकाग्रता से क्रैफोर्ड को निहारने लगी और कुछ देर के बाद उसे उसकी जाँघ पर अपना हाथ रख देना पड़ा—उसे स्पर्श करना पड़ा।

"मेरा क्रैफोर्ड—" वह बोली।

क्रैफोर्ड मुस्कराया और उसने स्टीयरिंग व्हील पर से एक हाथ हटा कर अपने पैर पर पड़े उसके हाथ पर रख दिया। यह सब कुछ इतना अचानक उसके जीवन में आया था कि वह अभी तक इसे ठीक से अनुभव भी नहीं कर पा रहा था। जब तक पादरी के सामने विवाह की स्वीकारोक्ति कहने के लिए वे दोनों खड़े नहीं हो जायेंगे, वह इसे सच मानने ही वाला नहीं था। जब उसने आर्लिस को सड़क के बीच में खड़ी देखा था, तभी जैसे पूरा दिन बदल गया था। वह मैथ्यू की समस्या में खोया हुआ था। वह सब उसके दिमाग से हवा के किसी सशक्त झोंके द्वारा हटा लिया गया था। अब उसे मैथ्यू की परवाह नहीं थी, उसे घाटी की फिक्र नहीं थी। उसे सिर्फ आर्लिस की परवाह थी और इस बात की कि वे शादी करने जा रहे थे। शादी होने तक, उनके एक हो जाने तक हर दूसरी चीज रुकी रह सकती थी।

"हम किराये पर एक मकान ले लेंगे—" वह बोला और हँस पड़ा—"मकान के बिना चाहे वह किराये का ही क्यों न हो, तुम रह ही नहीं पाओगी।"

"किसी बोर्डिंग हाउस में रहने का मेरा इरादा नहीं है—" वह उत्साह से बोली।

"वहाँ तुम रहो, यह मेरा भी इरादा नहीं है—" वह बोला—"मुझे गर्म-गर्म दिन में तीन वक्त खाना चाहिए, प्रिये और बैठने के लिए अपनी स्वयं की बैठक। फर्नीचर के लिए मैं कर्ज लेने को भी तैयार हूँ।" उसने आर्लिस के हाथ को कस कर दबा दिया—"मैं चाहता हूँ, अपने मकान में हम अकेले रहें—अकेले! बस हम दोनों!"

अचानक उनकी हँसी गायब हो गयी और उनके बीच प्यार की गम्भीरता व्याप्त हो गयी।

"हम अकेले ही रहेंगे—" आर्लिस बोली।

क्रैफोर्ड अपने भीतर उभरते आनंद का अनुभव कर रहा था। आर्लिस उसकी हो जायेगी और इसकी कोई जल्दी नहीं थी, कोई उतावली नहीं थी। कुछ बातों से होकर गुजरना और फिर यह कार्य सम्पन्न हो जायेगा। तब वह उसकी इच्छा का विरोध नहीं करेगी। वह गाने लगा—"प्यार ओ प्यार, ओ बेपरवाह प्यार, देखो तुम प्यार ने मेरा क्या हाल कर डाला है।" साथ-ही-साथ वह हँस भी रहा था और उसके साथ आर्लिस भी गा रही थी। उसने उसे पहले कभी गाते नहीं सुना था। उसकी आवाज़ ऊँची और मीठी थी और उसकी आवाज़ के साथ आवाज़ मिलाकर गाने की उसने असफल कोशिश की। जो-जो गीत वे जानते थे, उन्होंने सब साथ-साथ गाये और इस बीच वे पहाड़ से नीचे उतर आये थे। सड़क पर वे उत्तर में फोर्ट पायने की ओर मुड़ गये और उनकी मोटर जार्जिया की ओर बढ़ चली।

रास्ते के दोनों ओर फैली एक छोटी-सी बस्ती में वे आ पहुँचे। यह जगह ऐसी ही थी, जैसे सड़क ही चौड़ी हो गयी हो। क्रैफोर्ड ने मोटर की गति धीमी कर दी।

"भूख लगी है?" वह बोला।

"भूख के मारे जान निकली जा रही है—" आर्लिस ने कहा और अपने इस कथन पर उसे स्वयं ही आश्चर्य-सा हुआ। जब तक क्रैफोर्ड ने पूछा नहीं था, आर्लिस ने यह अनुभव भी नहीं किया था कि वह इतनी भूखी है।

सड़क-किनारे के एक गंदे-से केफ के सामने क्रैफोर्ड ने मोटर रोक दी। वे भीतर चले गये और जाकर काउंटर के निकट बैठ गये। उन्होंने मुर्गी के माँस के बारीक टुकड़े खाये और जौ का बना दूध पिया। पेट भर जाने के बाद उनमें फिर उत्साह-उत्तेजना की लहर दौड़ गयी। अतः वे हँस पड़े और हँस-हँस कर बातें करते रहे। यहाँ तक कि होटल की भद्दी-सी परिचारिका ईर्ष्या-भरी नजरों

से उनकी ओर देखने लगी। दोनों ने तीन-तीन मुर्गियों के बारीक टुकड़े खा डाले। आर्लिस ने अंतिम मुर्गी का कुछ हिस्सा अपनी तश्तरी में छोड़ दिया और क्रैफोर्ड बिल का भुगतान करने चला गया।

उसी परिचारिका ने पैसे लिये। "आप लोग 'राइजिंग फान' जा रहे है?" उसने पूछा।

"हाँ!" क्रैफोर्ड बोला।

परिचारिका ने ऊपर से नीचे तक आर्लिस को देखा। उसकी आँखें उसके टखनों पर देर तक टिकी रहीं, फिर उसके शरीर पर और तब उसकी पोशाक पर। "यहाँ से होकर काफी लोग जाते हैं वहाँ।" वह बोली—"सब खुशी-खुशी जाते हैं।" उसकी आवाज़ में अपशकुनी आ गयी—"उनमें से कुछ इतने खुश-खुश वापस नहीं आते।"

इससे उन्हें परेशानी नहीं हुई। जब इसके बाद अपनी मोटर में बैठे वे पुनः अपनी राह पर बढ़ रहे थे, तब इसके बारे में हँस पड़े। तब थकान से और सुखद संतोष से आर्लिस उसके कंधे से टिक गयी और ऊँघने लगी। दिन का हल्का-सा प्रकाश फैलने लगा था और उस बीच, गाड़ी के अनभ्यस्त हिचकोलों में, वह अद्भुत सपने देखने लगी।

'राइजिंग फान, जार्जिया' में तीन बजे दिन में उनकी शादी हो गयी। उनकी शादी एक लम्बे और दुबले-पतले पादरी ने करायी, जिसकी लम्बी बाँहें उसके काले कोट की आस्तीन से काफी आगे निकली हुई थीं। उसकी पत्नी और छः बच्चे रहनेवाले कमरे के किनारे खड़े हो उन्हें देखते रहे और आर्लिस तथा क्रैफोर्ड एक-दूसरे का हाथ पकड़े पादरी के सामने खड़े थे। आर्लिस ने अपनी सबसे बढ़िया पोशाक पहन रखी थी, जो क्रैफोर्ड ने पहले नहीं देखी थी और क्रैफोर्ड ने अपनी वह खाकी पोशाक पहन रखी थी, जिसे पहन कर वह दिन में काम पर गया था। मैथ्यू को देखने के लिए दिन में मिट्टी के जिस बाँध पर वह चढ़ा था, उससे उसके एक पाँव में धूल लग गयी थी और उसे उसकी अच्छी तरह खबर थी।

किंतु इसका कोई महत्व नहीं था। कोई भी बात महत्व नहीं रखती थी—छः गंदे-गंदे बच्चे, पादरी की थकी-थकी लगनेवाली पत्नी, सादा, जीर्ण और छोटा-सा वह कमरा और क्रैफोर्ड की खाकी पोशाक! आर्लिस में हर्ष की एक चमक-सी थी और उसने खुशी-खुशी प्रतिज्ञाएँ दुहरा दीं। जब उसने सिर घुमाकर क्रैफोर्ड की ओर देखा, तो वह उसे स्पष्ट नहीं देख सकी। उसकी

आँखों के सामने एक सुनहरा-सा धुँधलका छा गया था। क्रैफोर्ड अब उसका पति था। अपने कौमार्य में उसने जिस तरह के व्यक्ति का स्वप्न सँजो रखा था, क्रैफोर्ड का साया उसे वैसा ही धुँधला और सुनहरा दीख रहा था।

रास्ते के सभी प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध व्यक्तित्वों और शहर के शांति-न्यायाधीशों को छोड़कर उन्होंने इस पादरी को चुना था और अपने इस चुनाव में वे बड़े भाग्यशाली थे। उसने सिर्फ ५ डालर लिये और क्रैफोर्ड को इस बात की खबर थी कि इस क्षेत्र में अपने प्रतियोगियों के कारण, उस पादरी की फीस कम थी। अतः उसने जितना उचित था, उतनी रकम पादरी को दी। पादरी ने विवाह के समय वर-वधू द्वारा की जानेवाली प्रतिज्ञा स्पष्ट शब्दों में सावधानीपूर्वक और दिल की गहराई से पढ़ी और जब वह यह समाप्त कर चुका, तब इधर-उधर की बातें करने लगा। वह उन्हें बड़ी व्यग्रता से सलाह देने लगा, जैसे उसे विश्वास नहीं था कि विवाह-संस्कार विधिवत् पूरे उतरे थे। उसकी पत्नी उनके लिए काफी और घर की बनी केक ले आयी; लेकिन जितनी जल्दी वे कर सकते थे, उतनी जल्दी उन्होंने वहाँ से विदा ले ली। विवाहित होने की इस नयी उत्तेजना के साथ उनके मन में एकांत की भावना पनप रही थी।

जब वे वापस अपनी मोटर तक आये, तो आर्लिस का हाथ क्रैफोर्ड की बाँह के नीचे था। अचानक क्रैफोर्ड के मन में एक अगम्यता और शंका की भावना घर कर गयी। लकड़ी चीरने के कारखाने से, जहाँ से उसने अपनी जिंदगी की शुरुआत की थी, यह उसके जीवन का बड़ा लम्बा मोड़ था और उसे ताज्जुब हो रहा था कि कैसे उसके जीवन में यह क्षण, यह स्थान और यह घड़ी आ गयी थी और उसने अपनी बगल में चल रही इस अद्भुत औरत से ब्याह कर लिया था। संयोग और परिस्थिति की लपेटों का, जो उसके जीवन में मैथ्यू डनबार की बेटी के साथ, डनबार-घाटी से भाग जाने का चरम अवसर ले आयी थी, वह पता नहीं पा सका और उसके मन में अपनी असमर्थता का भय व्याप गया, जैसे वह इसे नहीं समझ पा रहा था—यह सही और वास्तविक नहीं हो सकता था।

उसने आर्लिस के बैठने के लिए मोटर का दरवाजा खोला और उसके चढ़ जाने के बाद उसे बंद कर दिया। स्वयं वह घूमकर दूसरी ओर आ गया। ड्राइवर के स्थान पर बैठकर वह मोटर स्टार्ट करने के लिए आगे झुका। तब वह अचानक तन कर बैठ गया।

"मैंने वधू को तो चूमा ही नहीं—" वह बोला।

"नहीं!" आर्लिस ने घबराये स्वर में कहा—"तुमने नहीं चूमा।"

"सच्ची बात बताऊँ तुम्हें—" क्रैफोर्ड ने कहा—"पादरी के सम्मुख तुम्हें चूमने से मैं डर रहा था। मुझे ऐसा लगा, वह इसे पसंद नहीं करेगा।"

वे हँस पड़े और क्रैफोर्ड ने आर्लिस की ओर अपना हाथ बढ़ाया। चुम्बन ने उसके मन की सारी दुश्चिंताएँ समाप्त कर दीं। उसने आर्लिस के होंठों की व्यग्रता से तलाश की और आर्लिस ने उसके होंठों से अपने होंठ मिलाकर आत्मसमर्पण कर दिया। उसकी आँखों के आगे का सुनहरा धुँधलका इतना हो उठा कि वह आश्चर्य और प्रसन्नता से चौंधिया गयी थी।

"अब—" आर्लिस को अपने बाहुपाश से मुक्त करने के बाद वह बोला—"हमें घर चलना चाहिए।"

वापसी की यात्रा अधिक शांत, लम्बी और थका-ऊबा देनेवाली थी। 'वैली हेड' में काफी पीने के लिए वे रुके और वही परिचारिका उनके लिए काफी ले आयी। किंतु इस बार वह बिलकुल बोली ही नहीं; और अगर वह कुछ बोलती भी, तो शायद वे लोग नहीं सुन पाये होते।

'सैंड माउंटेन' के ऊपर जब वे फिर पहुँचे, तो शाम का धुँधलका छा चुका था और शहर में पहुँचते-पहुँचते काफी अंधेरा छा गया था। क्रैफोर्ड ने मन-ही-मन सब सोच रखा था। वे होटल में ठहरेंगे—निश्चय ही वे उसके बोर्डिंगहाउस में नहीं जा सकते थे—जब तक उसे मकान किराये पर लेने और उसमें फर्नीचर सजा देने का मौका नहीं मिल जाता। इसमें सिर्फ एक या दो दिन लगेंगे... और होटल में ठहरना, उनकी सुहागरात होगा, यद्यपि दिन में काम पर जाते समय उसे आर्लिस को अकेला ही छोड़ देना पड़ेगा।

रेनी होटल के उस छोटे-से हाल से जब आर्लिस का अकेला सूटकेस, होटल-कर्मचारी उठाकर ले चला, आर्लिस को मन-ही-मन कुछ अजीब-सा लगने लगा। दीवार से लगी कुर्सियों पर चारों ओर वयोवृद्ध पुरुष बैठे हुए थे, जिन्हें उसने शहर में इधर-उधर देखा था और थोड़ा-बहुत पहचानती थी। वह क्रैफोर्ड के साथ जब डेस्क की ओर होटल में जगह पाने की खानापूरी करने के लिए बढ़ी, तो वे उसी की ओर देख रहे थे।

रजिस्टर में पति-पत्नी लिखते समय क्रैफोर्ड भी बड़ा अजीब और अटपटा अनुभव कर रहा था। उसने बड़ी सावधानीपूर्वक रजिस्टर में लिखा। डेस्क-क्लर्क ने उसकी ओर उत्सुकतापूर्वक देखा, फिर आर्लिस की ओर देखा और तब वापस

रजिस्टर की ओर! उसने एक चाबी निकाल ली और अपने हाथ में उछालता रहा।

"आप टी. वी. ए. में काम करते हैं—है न?" वह बोला।

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं भूमि-कार्यालय में काम करता हूँ।"

उस व्यक्ति ने क्रैफोर्ड की खाकी पोशाक को गौर से देखा। "मैं सोच रहा था कि मैंने आपको शहर में कहीं देखा है—" वह बोला। उसने वापस आर्लिस की ओर देखा और तब उसने चाबी फिर उछाली। "कृपया आपको एतराज न हो, तो खजांची की खिड़की के निकट आइये, मि. गेट्स," वह बोला—"हमलोग बाकी बातों की भी खानापूरी कर लें, तो ठीक।"

क्रैफोर्ड ने आर्लिस की ओर देखकर मुँह बनाया और बगल की जालीदार खिड़की की ओर बढ़ गया। आर्लिस अकेली खड़ी इंतजार करती रही; क्योंकि एक बुड्ढा नीग्रो उसका सूटकेस सीढ़ियों तक ले गया था। उसने डेस्क-क्लर्क और क्रैफोर्ड की दबी-दबी आवाज़ें सुनीं तथा कड़े कागज की खरखराहट सुनी। तब वे लौट आये और डेस्क-क्लर्क उनकी ओर देखकर मुस्करा रहा था। उसने वह चाबी यथास्थान रख दी और दूसरी निकाल ली।

"आप दोनों के लिए मेरे पास बहुत ही बढ़िया कमरा है—" वह बोला—"होटल का सर्वोत्तम कमरा।"

तब वे वहाँ से जाने के लिए स्वतंत्र थे। जब वे सीढ़ियों से होकर ऊपर जाने लगे, उन बैठे हुए वृद्ध पुरुषों में से एक अपनी कुर्सी पर से उठा और डेस्क तक आया। डेस्क-क्लर्क क्रैफोर्ड और आर्लिस को देख रहा था। उसने उधर से नजरें हटा लीं।

"वह उस बूढ़े मैथ्यू डनबार की बेटी आर्लिस थी—" उनकी ओर देखते हुए उस वृद्ध ने कहा।

"यही है वह?" डेस्क-क्लर्क ने कहा—"मेरा खयाल है कि शादी करने के लिए घाटी से भाग आयी है। उस टी. वी. ए. के आदमी से आज ही शादी की है।"

उस वृद्ध ने असहाय भाव से अपना सिर हिलाया। "टी. वी. ए. के लोग यहाँ आते हैं और हमारी लड़कियों से शादी कर लेते हैं—" वह बोला—"जब तक कोई व्यक्ति अपने हाथ में सरकारी फार्म लेकर और खाकी पैंट पहन कर नहीं चलता, लड़कियों को उसमें कुछ दिखायी ही नहीं देता।" वह बकरे के समान खाँसता हुआ दबी हँसी हँसा। "बूढ़ा मैथ्यू आग-बबूला हो उठेगा—" वह बोला—"इस पर शर्त बदना चाहते हो?"

कमरे में, आर्लिस इंतजार करती रही, जब तक होटल का पोर्टर सूटकेस रख कर और अपना टिप पाकर चला नहीं गया। तब उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। वे बड़ा अटपटा अनुभव कर रहे थे और कमरे में बिछा दो आदमियों के सोने लायक बिस्तरा बहुत बड़ा और अवरोध उत्पन्न करने वाला प्रतीत हो रहा था।

"हाल में बैठे हुए वे आदमी—" आर्लिस बोली और सारा शरीर हौले से सिहर उठा।

क्रैफोर्ड हँस पड़ा। किंतु उसकी यह हँसी मृदु और समझदारी की हँसी थी। "इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है। हम विवाहित हैं, आर्लिस! विवाहित!"

"हाँ!" वह बोली, जैसे वह इसे भूल गयी थी।

क्रैफोर्ड कमरे में चक्कर काट रहा था। उसने खिड़की से बाहर देखा, दूसरी खिड़की के निकट गया और बाहर की ओर देखा। क्लर्क ने उन्हें कोने का कमरा दिया था, जो काफी बड़ा था और जिसकी छत ऊँची थी। "भूख लगी है?" वह बोला—"क्या हम नीचे चलें और खानेवाले कमरे में बैठ कर खा आयें?"

"नहीं!" बिना यह समझे कि उसके कहने का क्या-क्या अर्थ लग सकता है, वह बोली—"वे सारी मुर्गियाँ......" वह रुक गयी—"हाँ, मेरा विश्वास है, मैं......"

क्रैफोर्ड घूम पड़ा। आर्लिस ने उसकी आँखों के भाव को पढ़ लिया और उसी क्षण सारी बातें तिरोहित हो चुकी थीं—मोटर का सफर, वहाँ जाना, वापस आना और होटल के हाल में बैठे हुए लोग—सभी उसके दिमाग से निकल गये और अब वह तैयार थी। वह उसकी पत्नी थी। उसने क्रैफोर्ड के अपने पास आने का इंतजार नहीं किया। वह आगे बढ़कर उससे आधे रास्ते में ही मिली। यद्यपि क्रैफोर्ड ने उसके हाथ अपने हाथ में ले लिये; फिर भी उसने अपनी बाँहें फैलाकर क्रैफोर्ड को अपने बाहुपाश में ले लिया और उनके होंठ एक होकर अपनी प्यास बुझाने लगे, जैसे वे ठंडे और साफ पानी के झरने से पानी पी रहे हों!

टी. वी. ए. के आने के पहले और जब तक अपने बीच की यह दूरी नहीं बढ़ी थी, आर्लिस के घर से आधा घंटा बाहर रहने पर ही, मैथ्यू को उसकी अनुपस्थिति का पता चल जाता। लेकिन अब, दूसरी सुबह के पहले तक उसे यह पता भी नहीं चला कि आर्लिस घर में नहीं थी। उस रात खाना खाने के

वक्त सब उस बड़ी गोलमेज के इर्द-गिर्द बैठे थे—वे नौ व्यक्ति, मार्क, मैथ्यू और जान का बड़ा लड़का। हैटी ने सब को खाना परोसा था। मैथ्यू ने सोच लिया कि आर्लिस अपने कमरे में थी। शायद उसकी तबीयत ठीक नहीं थी और अभी भी वह सब काम हैटी पर छोड़े हुए थी। अलावे, वह इतना थका हुआ था कि कल की तैयारी के लिए खाना और बिस्तरे पर आराम से सोने के सिवा कुछ और सोच ही नहीं सकता था। बस, उसके पास इतना ही बच गया था—खाना, सोना, काम करना और सोचते रहना। और बंदूकें! उसकी कमरे में अभी ·३८ कैलिबर की पिस्तौल बँधी थी और जब वह बिस्तरे पर सोने गया, तो उसने अपने सिर के ऊपर ऐसी जगह पर टाँग दिया, जहाँ से वह हाथ बढ़ाकर उसे ले सके। उसने कुछ आदमियों को चुन लिया था, जो रात में घाटी की चौकसी करने वाले थे और दूसरे लोग तब तक सोते रहनेवाले थे। तीन बजे सुबह वह अपनी बारी आने पर उठा और नदी-किनारे की सड़क पर जाकर खड़ा हो गया। उसने अपनी बंदूक हाथ में ले रखी थी कि अगर किसी संकट का आभास भी मिले, तो चेतावनी के तौर पर वह बंदूक दाग दे।

वह इंतजार करता रहा और सुबह की रोशनी फूट निकली। नजदीक और दूर के मुर्गे बाँग देने लगे। दिन का पहला प्रकाश चारों ओर फैल गया। उस सुहावने मौसम में पक्षी चहचहाने लगे और तब वह घर वापस आ गया। हैटी रसोईघर में कल की तरह ही, आज भी नाश्ता तैयार कर रही थी। अंगीठी के इधर-उधर आती-जाती वह बड़ी कुशलता और व्यस्तता से सब काम कर रही थी।

"आर्लिस की तबीयत अभी भी ठीक नहीं है?" वह मेज के निकट बैठने के लिए बढ़ते हुए बोला। अभी तक रसोईघर में उन आदमियों में से कोई नहीं आया था; फिर भी घर में उनके जाग जाने की आहट वह सुन रहा था।

"नहीं!" हैटी बोली। वह अंगीठी की ओर से उसकी ओर मुड़ी नहीं, बल्कि उसी तरह उसकी ओर पीठ किये रही। वह बहुत व्यस्त थी।

"तब कहाँ है वह?" मैथ्यू ने जानना चाहा— "क्या अब वह घर का सारा काम तुम्हारे ऊपर छोड़ देने का इरादा रखती है? यह तो आर्लिस के स्वभाव के विरुद्ध है।"

"मेरा खयाल है, यही उसका इरादा है—" हैटी ने शांतिपूर्वक कहा—हमने कल इस सम्बंध में बातें की थीं।"

मैथ्यू उठ खड़ा हुआ—"मैं उससे बात करने जा रहा हूँ।"

हैटी तब उसकी ओर घूम पड़ी। "मेरे खयाल से आप यह इतनी आसानी से नहीं कर सकते—" वह बोली—"वह अपने कमरे में नहीं है।"

मैथ्यू अभी भी नहीं समझा। आर्लिस हमेशा घर में रहती थी। सूर्य के समान ही उस पर निर्भर किया जा सकता था—"कहाँ है वह?"

हैटी ने फिर अंगीठी की ओर मुँह कर लिया, जिससे वह कहने का साहस एकत्र कर सके। "क्यों, मेरे खयाल से, वह यहाँ से जा चुकी है और उसने शादी कर ली है—" वह बोली—"कम-से-कम यही उसका इरादा था।"

मैथ्यू जड़ की भाँति खड़ा रह गया। वह हैटी की पीठ की ओर एकटक देखता रहा। लग रहा था, वह वहाँ से हिल नहीं पायेगा। किंतु वह वहाँ से हिला। वह उसके पास गया और निष्ठुरतापूर्वक उसके कंधों को उसने पकड़ लिया।

"अब मुझसे अपना यह मजाक मत करना—"वह बोला— "मैं जानना चाहता हूँ, आर्लिस कहाँ है?"

हैटी घूम पड़ी, उसने उसकी ओर देखा और जान-बूझकर उसके हाथों की पकड़ से छूट कर दूर चली आयी। वह लम्बी, दुबली-पतली और स्वयं-संयत थी।

"मैं आपसे मजाक नहीं कर रही हूँ, पापा।" वह बोली—"कल वह यहाँ से क्रैफोर्ड से शादी करने के लिए चली गयी।" उसके चेहरे पर संतोष की छाप थी—"मेरा खयाल है, अब तक यह काम पूरा भी हो चुका होगा।"

मैथ्यू ने पुनः उसके ऊपर अपने हाथ रख दिये। "तुमने आकर मुझे क्यों नहीं कहा? तुम जानती हो..."

इस बार वह उससे दूर नहीं हटी। उसने सर्द निगाहों से उसकी ओर देखा। "मैंने सोचा, उसे इसके लिए जितना अधिक समय मैं दे सकूँगी, दूँगी—" वह बोली—"मेरे विचार से उसे इसकी जरूरत थी।"

मैथ्यू को उसकी बातों पर विश्वास हो गया। आग्नेय नेत्रों से उसे देखते हुए, वह दोनों हाथों से उसे ढकेलते हुए मेज की ओर ले चला। वह एक कुर्सी पर बैठ गया और एक ही झटके से उसने हैटी को अपनी गोद में औंधी गिरा दिया। फिर उसने अपना हाथ ऊँचा उठाया और उसके नितम्बों पर प्रहार करने लगा। हैटी जब छः वर्ष की हो गयी थी, तब से ही उसने कभी उसे जोरों से थप्पड़ नहीं मारा था—उसे हमेशा ही सजा से मुक्ति मिलती आयी थी। लेकिन अब उसने उसे धुन डाला। अपनी सख्त, खुली हथेली से

वह उसे जोरों से मारता हुआ अपना क्रोध और अपनी निराशा निकाल रहा था। पहले हैटी ने दाँत पर दाँत बैठा लिये। वह इस बात पर दृढ़ थी कि वह रोयेगी नहीं। किंतु वह अधिक देर तक इसे नहीं सह सकी; पहले वह उसकी सख्त हथेली की मार के नीचे कसमसाने लगी और तब उसने अपनी आँखों में आँसू आते महसूस किया। बच्चों के समान ही उसकी आँखों से आँसू बह निकले—यह उसकी मनोपीड़ा, अपमान और पागलपन के आँसू थे।

अंततः वह रुका। उसका क्रोध अभी शांत नहीं हुआ था; पर वह रुक गया और उसने हैटी को छोड़ दिया। हैटी उठकर खड़ी हो गयी। आज सुबह हैटी को स्वयं पर गर्व था—वह स्वयं को वयस्क और स्वतंत्र अनुभव कर रही थी। किंतु अब वह मेज के निकट की एक कुर्सी में धँस गयी, झुककर अपना मुँह छिपा लिया और फूट-फूट कर रो पड़ी। मैथ्यू हाँफता हुआ, उसके निकट खड़ा रहा।

"तुम सब लोग सोचती हो, तुम अब बड़ी हो गयी हो—" वह बोला—"तुम सब सोचती हो, तुम सब अब मेरी संतान रही ही नहीं—तुम भी—आलिस भी!"

वह उसकी ओर अधिक देर तक नहीं देख सका। वह रसोईघर के दरवाजे से होकर अपने शयनागार की ओर बढ़ा। हैटी ने अपना सिर उठाया।

"क्या आपको अपना नाश्ता नहीं चाहिए?" वह करुण स्वर में बोली।

"मेरे पास नाश्ता करने का समय नहीं है—" वह उग्र स्वर में बोला। वह अपने शयनागार में गया और अपनी पिस्तौल ले ली। उसने अपनी पोशाक के भीतर उसे छिपाकर बाँध लिया। छोटे, क्रुद्ध और दृढ़ कदमों से चलता हुआ वह भीतरी बरामदे में वापस आया और बाहर खलिहान में चला आया। उसे मोटर स्टार्ट करने में काफी श्रम करना पड़ा। उसने मोटर स्टार्ट करने की कोशिश की और उसकी चिंता में ही उसकी इस कोशिश से मोटर के 'कारब्यूरेटर' में आवश्यकता से अधिक पानी हो गया। उसे अपने काँपते हाथों से 'कारब्यूरेटर' को खोलकर अलग करना पड़ा और अतिरिक्त पानी बाहर निकालना पड़ा। अपने क्रोध को बलात् दबा कर उसने फिर कोशिश की और अंत में, जब उसने कोसते हुए मोटर को ठोकर मारी, तो मोटर जोरों से आवाज़ करती हुई स्टार्ट हो गयी और आगे को उछली। आगे बढ़ने की इस क्रिया में, मोटर ने उसे गोदाम की दीवार से बिलकुल सटा ही दिया।

वह क्रोध से उफनता चालक की सीट पर बैठ गया और मोटर चलाता हुआ

घर के पास से गुजर गया। वह सारे रास्ते गैस-लीवर को खींचता रहा, जिससे वह पुरानी मोटर उस धूल-भरी सड़क के ऊबड़-खाबड़ स्थलों को जोरों के झटके के साथ पीछे छोड़ती गयी। तब उसे मोटर रोकनी पड़ी। वह नीचे उतरा और बाँध के ऊपर उसने लकड़ी के तख्ते रख दिये, जिससे उनसे होकर वह मोटर उस ओर ले जा सके। इस अप्रत्याशित काम से वह बड़ा क्रुद्ध हो गया था और उसने झटके के साथ रोषपूर्वक जल्दी-जल्दी तख्ते रखे। अंततः वह नदी के किनारे वाली सड़क पर मोटर ले आया और शहर की ओर बढ़ने लगा। वह शीघ्र ही बंदूक लेकर खड़े प्रहरी को पीछे छोड़ता हुआ आगे निकल गया और प्रहरी उस जाती हुई मोटर को देखता ही रह गया।

टी. वी. ए. के जलाशय के लिए उसकी जमीन से लेकर चिकसा-बाँध तक की जमीन अब बिलकुल साफ कर दी गयी थी और वह उस क्षेत्र में काफी दूर आगे बढ़ गया था, जब उसने अपनी मोटर की गति धीमी की। तब उसने गाड़ी रोक दी और स्वयं गहरी-गहरी साँस लेने लगा। इस तरीके से जाना उचित नहीं था। उसे एक कार्य पूरा करना था और क्रोध के आवेग में वह स्वयं पर भरोसा नहीं करेगा। अतः उसे क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। उसने सप्रयत्न जान-बूझकर अपने आपको शांत किया। उसने रोष की भावना को स्वयं से तब तक दूर रखा, जब तक उसे यह महसूस नहीं होने लगा कि यह स्थिरता उसका एक अंग बन गयी है—और इस सारे समय वह दोनों हाथों से स्टीयरिंग व्हील पकड़े यों बैठा रहा, जैसे वह सड़क पर किसी दौड़ में भाग ले रहा हो। वह मोटर की धीमी पड़ती भनभनाहट बड़ी सूक्ष्मता से सुनता रहा—आवाज प्रवाहमय और प्रिय लग रही थी, जैसी इसे होना चाहिए था—मोटर स्टार्ट करने के समय यह जैसी अड़ियल और जिद्दी थी, वैसी अब नहीं रही थी।

"तो आर्लिस यह कर गुजरी थी। उसने उसे छोड़ दिया था। वह क्रैफोर्ड के साथ थी। पिछली रात उसके साथ ही गुजारी थी। उसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी थी। उसने अपने कौमार्य की प्रतिज्ञा की थी और यह प्रतिज्ञा तोड़ दी थी—और वह सोच रही थी कि अब सब ठीक हो गया था। वह सोच रही थी कि वह विवाहित है।" यह भावना उसके मन की गहराई में घर करती चली गयी और उसे ऐंठन-सी महसूस होने लगी। उसे इससे संघर्ष करना पड़ा—अपने इस स्वाभाविक क्रोध को दूर रखना पड़ा, जिससे वह अपनी बेटी को ढूँढ निकालने का कार्य पूरा कर सके। किंतु बात बेटी से भी बढ़कर थी। सवाल क्रैफोर्ड का भी था, जिसे उसने अपने बेटे के समान प्यार किया था,

अपने बेटों से बढ़कर माना था और इसीसे क्रैफोर्ड ने उसे दगा दिया था, जैसा कि आर्लिस ने किया था। क्रैफोर्ड ने कल बड़ी शांति से बात की थी। उसका चेहरा मैथ्यू के संकट और दृढ़ता की समस्या से गम्भीर बना था। लेकिन सारे समय वह यह जान रहा था कि आर्लिस प्रतीक्षा कर रही थी—उसके साथ घाटी से दूर चले जाने को तैयार थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी और उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा भंग की थी; जब कि वह बेवकूफों के समान उन पर विश्वास किये था—जब कि उसे आर्लिस के शब्दों पर विश्वास था, जो आर्लिस ने स्वयं सीधे उसके पास आकर कहे थे। आर्लिस ने उन्हें कहा था और उसके कथन में वास्तविकता थी—सच्चाई थी और तब उसने उन्हें तोड़ दिया था—अपना वचन भंग कर दिया था। वे सोच रहे थे कि वे विवाहित हैं, मैथ्यू से और घाटी से मुक्त हो चुके हैं—उस घाटी से, जो अचानक ही घर, प्रिय घर के स्थान पर उनके लिए एक बोझ बन गया था और मैथ्यू की समझ में बिलकुल ही नहीं आ रहा था कि क्यों। लेकिन सिर्फ एक बिस्तरे पर सोने से ही शादी नहीं हो जाती। जहाँ तक मेरा सवाल है, उसने किसी पुआल पर ही अपना समर्पण किया है—किसी कुतिया के समान ही विलासी! क्योंकि उसने मुझसे प्रतिज्ञा की थी। यह शादी हुई ही नहीं!

वह स्टीयरिंग व्हील के टूटे हुए रिम (गोल बाहरी भाग) की ओर एकटक देखता रहा। अपने अजाने में ही उसने अपने घूँसे से इतना बलपूर्वक उस पर आघात किया था कि वह उसकी शक्ति को न सह सकने के कारण टूट गया था। "मुझे अपने क्रोध को सँभालना होगा—" उसने स्वयं से कहा—"मुझे इसकी ओर से सावधान रहना है।"

उसने फिर मोटर स्टार्ट की और बड़ी सड़क से होकर चलने लगा। वह सप्रयास मोटर धीरे-धीरे चलाने लगा। वह इसी सम्बंध में सोच रहा था। वे कहीं भी हो सकते थे। उनकी इच्छा और उनके विचार को जानने का, उसका पीछा करने का उसके पास कोई रास्ता नहीं था। हो सकता है यहाँ से पचास मील दूर किसी बिस्तरे में लुढ़के पड़े हों। उसने तय किया कि वह एक ही चीज सिर्फ कर सकता था कि शहर में जाये और वहाँ सूचना प्राप्त करने की चेष्टा करे। किसी को ज्ञात होगा ही। किसी ने तो उन्हें देखा होगा।

उसने उस बड़ी सड़क पर गाड़ी ऊपर की ओर मोड़ दी और पुल के ऊपर से होकर गुजर गया। वह यों मोटर चलाता रहा, जैसे खाद खरीदने जा रहा था या वसंत के मौसम में खेत जोतने के लिए हलों की नोक तेज कराने जा

रहा था। किंतु शहर उसकी आँखों को अपरिचित और विदेशी लग रहा था—वह एक ऐसे शहर के समान था, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसने लोहे-लक्कड़ की दूकान के पीछे अपनी मोटर खड़ी कर दी, जहाँ वह हमेशा उसे खड़ा करता था और क्षण भर भीतर ही बैठा रहा। "क्रोध की भावना भी इससे अच्छी है—" उसने सोचा—"इस तरह सोचने से दुर्बलता जगती है।" वह मोटर से बाहर उतर आया और घूमकर लोहे-लक्कड़ की उस दूकान के सामने फुटपाथ पर आकर अनिश्चित-सी मनोदशा में क्षण भर के लिए खड़ा हो गया। वह नहीं जानता था कि उसे कहाँ से शुरू करना चाहिए। उसने स्वयं पर एक नजर डाली—यह देखने के लिए कि पिस्तौल उसकी पोशाक के नीचे ठीक से छुपी हुई है या नहीं। लेकिन पिस्तौल नहीं देखी जा सकती थी—उसकी ढीली पोशाक ने उसे बड़ी खूबी से छिपा रखा था। बेल्ट उसकी कमर में, जब कि वह अब इसे पहनने का अभ्यस्त हो चुका था, आराम से बँधी थी और पिस्तौल के वजन और भार से उसे तनिक भी असुविधा नहीं हो रही थी।

लोहे-लक्कड़ की उस दूकान का मालिक ग्रास फावड़े और हेंगियों से भरी एक रैक को हटाते हुए फुटपाथ पर निकल आया। "मि. मैथ्यू—" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"कैसे हैं आप आज?"

मैथ्यू ने थोड़े-से में जवाब दे दिया और वहाँ से चलने लगा। ग्रास ने पीछे से उसे आवाज़ दी।

"सुना, कल आपकी बेटी की शादी हो गयी—" वह बोला—"सुना, पति काफी अच्छा पाया है उसने।"

मैथ्यू घूम पड़ा और वापस उसके पास आया। "सबसे अंत में मैंने ही इसे सुना—" वह बोला—"क्या आप मुझे बता सकते हैं, वह कहाँ है?"

स्तम्भित हो, ग्रास सीधा खड़ा हो गया। उसने मैथ्यू को बड़े गौर से देखा। वह उसके चेहरे पर क्रोध और अशांति के चिह्न ढूँढ रहा था। लेकिन मैथ्यू जानता था कि जिस तरह उसे पिस्तौल छिपानी पड़ी थी, उसी तरह उसे इन्हें भी अपने चेहरे से दूर रखना पड़ेगा।

"क्यों—" ग्रास ने कहा—"उस बूढ़े ह्वाइटहार्ट ने मुझसे कहा कि आर्लिस और उसके पति ने पिछली रात ही रेनी होटल में कमरा लिया है।"

"धन्यवाद!" मैथ्यू ने थोड़े-से में कहा और मि. ग्रास को अपने पीछे एकटक देखता छोड़ सड़क पर आगे की ओर बढ़ चला।

तो उन्हें स्वयं पर बहुत भरोसा था। वे निकट में ही टिके थे। सुहागरात मनाने के लिए दूर जाने का उन्हें समय नहीं मिला था। अपने विवाह के दस्तखत किये और मुहरबंद लाइसेंस से उन्होंने स्वयं को सुरक्षित अनुभव कर लिया था और सोचा था कि मैथ्यू उसे मान लेगा। संदिग्ध होटल-क्लर्क को प्रमाण के रूप में जिस तरह उन्होंने अपने विवाह का लाइसेंस दिखाया होगा, वैसे ही वे उसे भी दिखायेंगे और यह उम्मीद रखेंगे कि वह तत्काल ही उसे स्वीकार कर लेगा। वह तेजी से छोटे, कठोर और जोरों की आवाज़ करते हुए कदमों से सड़क पर बढ़ता गया। डाकघर के सामने से गुजर कर वह सीधा होटल की ओर चलता गया। उसे जानने वाले लोगों ने उससे बात की; लेकिन उसने जवाब नहीं दिया—अपने एकमात्र उद्देश्य के साथ अपने रास्ते पर चलता गया और वह अपने पैर से सटकर लटकती हुई पिस्तौल का वजन अनुभव कर रहा था। यह वजन अब सुखद लग रहा था और इसके बिना वह स्वयं को लुटा-लुटा अनुभव करता।

होटल दिखायी देते ही वह रुक गया। वे वहाँ भीतर थे। वे वहाँ पिछली रात सोये थे जब कि वह अपनी अनभिज्ञता में गहरी और शांत नींद सोया था। उसे ताज्जुब हो रहा था कि कैसे वह ऐसा कर सका था—क्यों उसे किसी तरह इसकी जानकारी नहीं हो गयी थी।

यह कोई शादी नहीं थी। वह चाहता था कि उसकी बेटी की शादी विश्वासपूर्ण ढंग से राजी-खुशी हो। वह चाहता था कि आर्लिस के लड़के हों, काफी लड़के हों। वह अपने नातियों के लिए भूखा था जिनके शोरोगुल और खेलकूद से घाटी मुखरित हो उठे। किंतु आर्लिस ने कितना गलत ढंग अख्तियार किया था—कितना गलत चुनाव किया था। सारे संसार में उसने क्रैफोर्ड गेट्स को चुना था और उसने उससे वादा किया था कि जब तक वह नहीं कहेगा, उसे मुक्त नहीं कर देगा, वह क्रैफोर्ड से शादी नहीं करेगी। और इसीसे यह शादी बिलकुल ही नहीं थी—यह तो अपनी इच्छा की अनुमति-मात्र थी—आर्लिस का अपने नियंत्रण, अपने जीवन के धागों को ढीला छोड़ देना था—एक मर्द को पाने की लालसा के लिए।

वह यहाँ थी। वे यहाँ थे। एक साथ। उसने होटल को जलती निगाहों से देखा, जैसे बाहर से देखकर ही वह उनके कमरे का पता लगा लेगा। लेकिन यह सम्भव नहीं था। होटल की इमारत का भावनाशून्य चेहरा उसके लिए दुर्बोध्य था। उसके दरवाजे से होकर भीतर प्रवेश किया और डेस्क

की ओर बढ़ गया, जिस पर होटल का रजिस्टर रखा था।

"मेरी बेटी यहाँ ठहरी है—" वह बोला—"किस कमरे में है वह?"

अपनी कुहनी की ओर रखी एक फाइल की ओर वह व्यक्ति मुड़ा—"नाम क्या है?"

मैथ्यू के मन को 'आर्लिस' के साथ 'गेट्स' कहना गवारा नहीं हुआ। "वह एक आदमी के साथ ठहरी है—" वह बोला—"क्रैफोर्ड गेट्स!"

क्लर्क ने मुड़कर उसकी ओर देखा। "वे शादीशुदा हैं—" वह बोला—"मैंने उनके विवाह का लाइसेंस स्वयं देखा था।"

"अच्छी बात है—" मैथ्यू बोला—"किस कमरे में हैं वे?"

"मि. डनबार—" डेस्क-क्लार्क ने कहा—"हम किसी प्रकार की झंझट नहीं चाहते हैं। जहाँ तक हमारा सम्बंध है, वे कानूनन शादी-शुदा हैं। बस, हमें सिर्फ इसी की चिंता करनी पड़ती है। हम इसकी परवाह नहीं करते, अगर..."

"एक व्यक्ति को अपनी बेटी से मिलने का अधिकार है—" मैथ्यू ने बीच में ही बात काट दी—"आपके होटल में भी!"

डेस्क-क्लर्क हिचकिचाया। वह बड़े गौर से मैथ्यू के चेहरे का निरीक्षण करता रहा। "मैंने सुना है कि सम्भव है, आप इसे पसन्द नहीं करें—" वह बोला—"कि आप..."

"हो सकता है, मैं उसके चुनाव पर उसे बधाई देना चाहता हूँ—" मैथ्यू बोला। वह अपनी कटुता को सफलतापूर्वक छिपा नहीं पाया। "लेकिन मैं आपको अपनी सारी बात बताना नहीं चाहता, महाशय! अगर आप मुझे सिर्फ कमरे का नम्बर बता देंगे..."

"तीन सौ—" डेस्क-क्लर्क ने कहा—"मैं होटल के बाय को उनसे यह कहने के लिए भेज दूँगा कि आप यहाँ हैं। आप हाल में प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

लेकिन मैथ्यू अब तक सीढ़ियों की ओर बढ़ चुका था। "परेशानी मत उठाइये—" वह बोला—"मैं ऊपर चला जाऊँगा।"

वह धीरे-धीरे, स्थिरता से सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। वह अपनी हँफनी को फेफड़ों में रोके हुए था, जो सीढ़िया चढ़ने के श्रम के कारण नहीं थी। वह अपने रक्त की उत्तेजित धड़कन को शांत करने का प्रयास कर रहा था। अचानक ही, उसके सिर में फिर दर्द हो गया था और उसकी कनपटी की नस स्पष्टतः ही तनती चली जा रही थी।

वह तीसरे तल्ले पर पहुँचा और यह देखने लगा कि कमरे किस ढंग से बने

हैं। तब वह अपनी दाहिनी ओर मुड़ा और प्रत्येक दरवाजे पर अंकित नम्बरों को देखता हुआ गलियारे के अंत तक चला गया। प्रत्येक कमरे के दरवाजे के पीछे छिपे, उसमें रहनेवालों की आवाजें वह सुन रहा था—पानी के छींटे मारने की आवाज़, खाँसने की आवाज़, हँसने की आवाज़। और आर्लिस यहाँ थी। क्रैफोर्ड के साथ।

तीन सौ। वह उसके सामने में रुक गया। उसने दरवाजे की ओर देखा, मानो वह दूसरी तरह का होगा—गुलाबी रंग का और होटल के सभी दरवाजों से वह अलग ही होगा। लेकिन वह एक ही तरह का था—पुराना हरा रंग, जिस पर तीन साल पहले ही फिर से रंग करने की जरूरत रही होगी और पीतल के निर्दोष नम्बर—एक तीन और दो शून्य— उसके चेहरे के ऊपर शरारत से टँगे थे।

उसने अपना हाथ उठाया। तब उसे स्वयं को स्थिर करना पड़ा, उसे रुकना पड़ा। वह चाह रहा था कि उसकी कनपटियों के नीचे उसका खून जो लगातार जोरों से टकरा रहा था, वह बंद हो जाता। अपनी जाँघ पर पिस्तौल का वजन अनुभव करते हुए उसने एक गहरी साँस ली। वह पिस्तौल को छूना चाहता था; किंतु वह ऐसा करने का साहस नहीं कर सका। वह अपना हाथ खिसकाने का भी साहस नहीं कर सका। वह खड़ा दरवाजे के भावशून्य चेहरे के पीछे से, जिस पर नम्बर अंकित था, किसी प्रकार की आवाज़ सुनने की प्रतीक्षा करता रहा, जैसी आवाज़ उसने दूसरे कमरों में सुनी थी। एक बार, उसे लगा कि उसने एक सरसराहट की आवाज़ सुनी; पर बस! उसने बस, उतना ही सुना। वहाँ ऐसी शांति थी, मानो वह बिलकुल खाली था।

उसने अपना हाथ उठाया और उसे उठते-गिरते, फिर उठते-गिरते और फिर उठते-गिरते देखता रहा। उसने किसी जादुई संख्या के समान दरवाजे पर तीन बार खटखटाया। उसने जानबूझ कर धीरे से, पूरी शक्ति के साथ, तीन बार खटखटाया। और दरवाजा उसके सामने खुल गया।

प्रकरण तेइस

उस सुबह जब आर्लिस जगी, तो उसके मन में जो दूसरा विचार आया, वह मैथ्यू का था। पहला विचार क्रैफोर्ड से सम्बंधित था, जो बिस्तरे पर

उसकी बगल में सोया हुआ था और मुड़कर उसने उसके चेहरे को अपनी उँगली से बड़े हौले से प्यार के साथ स्पर्श किया। इस स्पर्श से क्रैफोर्ड जाग गया और दूसरी ओर देखकर मुस्कराया। उसने अपना उनींदा हाथ उसके पेट पर रख दिया, जो आर्लिस की पतली रात्रिकालीन पोशाक के जरिये उसके हाथ से अलग था और यह अलगाव कोई अलगाव ही नहीं था। उनके बीच का तनाव दूर हो चुका था और वे नींद से बोझिल, संतुष्ट और विवाहित थे। आर्लिस उठकर बिस्तरे पर बैठ गयी और अपनी खूबसूरत रात्रिकालीन पोशाक की ओर देखने लगी, जो जाने कितने वर्षों से इस रात के लिए बचाकर रखी गयी थी।

और तब उसके मस्तिष्क में वह विचार आया। "क्रैफोर्ड—" वह बोली—"मुझे पापा से कहना ही पड़ेगा। आज ही।"

"निश्चय ही—" क्रैफोर्ड ने आलस्य से कहा—"नाश्ते के बाद हम लोग मोटर में बैठकर वहाँ चलेंगे। भूख लगी है?" मैथ्यू का विचार भी उसकी शांति में—उसकी निश्चिंतता में व्याघात नहीं डाल सका।

"हाँ!" आर्लिस बोली—"मुझे कस कर भूख लगी है।"

उसने चादर पीछे फेंक दी और बिस्तरे से उतर आयी। वह अपने खुले सूटकेस तक गयी और ताजी धुली पोशाक निकाल ली। बिना तनिक शर्म और घबड़ाहट अनुभव किये वह कपड़े पहनने लगी। क्रैफोर्ड सिगरेट पीता हुआ, लेटा उसे देखता रहा और तब वह भी उठ बैठा। उसके पास सिर्फ वह खाकी पोशाक थी, जो उसने कल पहनी थी, और वह उसे पहनने लगा।

"मुझे आज कुछ कपड़े लेने होंगे—" वह बोला और हँसा—"सारे समय अपनी शादी की पोशाक ही नहीं पहने रहना चाहता हूँ।"

अपने बालों में कंघी करती आर्लिस ने सिहरन महसूस की। "मुझे पापा से कहते हुए भय लगता है—" वह बोली—"वे......"

"सब ठीक हो जायेगा—" क्रैफोर्ड ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा—"देर या सवेर उसे इसका सामना करना ही है।" वह उसके पीछे चला गया और उसके कंधे पर हाथ रख दिये। अपना सिर झुकाकर उसके चेहरे की बगल में लाते हुए वह बोला—"वह हमेशा ही हम लोगों को अलग नहीं रख सकता था। मुझे अब ताज्जुब हो रहा है कि हमने उसे इतने दिनों तक उसे ऐसा करने क्यों दिया!"

"मुझे भी!" आर्लिस बोली। उसने अपना सिर पीछे की ओर झटका

और उसके शरीर की उष्णता में बिल्ली के समान छुपाती हुई बोली—"मेरा खयाल है, मैं बेवकूफ थी......"

दरवाजे पर खटखटाहट की आवाज .आयी। एक बार, दो बार, तीसरी बार। पहली आवाज़ पर ही वे भय से सर्द हो गये और बच्चों के समान उन्होंने एक-दूसरे का स्पर्श किया। खटखटाहट की तीनों आवाज़ उनके रक्त में अनिष्ट की तरह प्रवेश कर गयी।

"पापा!" अपनी जगह पर से उठती हुई आर्लिस बोली।

"ठहरो!" क्रैफोर्ड ने तेजी से कहा—"मुझे देखने दो।"

तीसरी बार खटखटाने के बाद मैथ्यू ने अपना हाथ ऊपर नहीं उठाया था। वह एक लम्बे क्षण तक इंतजार करता रहा और तब दरवाजा उसके सामने धीरे-धीरे खुलने लगा। वह कमरे के भीतर चला आया। क्रैफोर्ड दरवाजे का हाथा पकड़े खड़ा रहा। आर्लिस एक नीची बेंच पर आइने के सामने बैठी थी और उसने अपना कंघा अपने हाथ में ले लिया था। दोनों के चेहरे उसकी ओर घूम गये और वे उसे सतर्क-सावधान निगाहों से देखते रहे।

मैथ्यू ने उम्मीद की थी कि अपनी बेटी को जब उसने पिछली बार देखा था, तबसे उसमें एक विलक्षण परिवर्तन आ गया होगा। लेकिन आर्लिस बदली नहीं थी। वह उसी प्रकार स्वस्थ-शालीन थी। उसके आधे कंघी किये हुए बाल उसके चेहरे के इर्द-गिर्द बड़े आराम से और अभ्यस्त ढंग से छितराये पड़े थे।

"आओ, आर्लिस!" मैथ्यू बोला—"चलो, अब हम घर चलें।"

वह अब तक आर्लिस पर एक क्षणिक दृष्टि-भर डाल दरवाजे की ओर घूम भी चुका था। उसने क्रैफोर्ड की ओर बिलकुल ही नहीं देखा था। क्रैफोर्ड की ओर देखते हुए उसे डर लग रहा था कि उसे देखते ही पता नहीं, उसका दिमाग क्या कर बैठे!

"एक मिनट ठहरो—" क्रैफोर्ड बोला—"वह मेरी पत्नी है अब!"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा। "मेरे रास्ते में मत आओ—" वह बोला। उसने अपनी लाल-लाल आँखों से क्रैफोर्ड को घूरा नहीं, बल्कि सिर्फ उसकी ओर देखा। किंतु क्रैफोर्ड मौन था। मैथ्यू आर्लिस की ओर मुड़ा—"क्या तुम आ रही हो?"

आर्लिस वहाँ से हिली भी नहीं। एक लम्बे मिनट तक वह नहीं हिली और तब अंततः वह खड़ी होने लगी। "पापा!" वह बोली—"हम पति-पत्नी हैं......"

"यह तुम सोचती हो—" वह बोला। उसकी आवाज आर्लिस को कोड़े की तरह लगी—"मैं तुमसे बहस नहीं करने जा रहा हूँ। आओ।"

मैथ्यू प्रतीक्षा करता रहा। तब वह उसके सूटकेस तक पहुँचा और उसका ढक्कन जोरों से गिराता हुआ, उसमें उसने ताला लगा दिया। "आओ—" वह बोला—"तुमने रातभर रंगरेलियाँ मना लीं। अब यह घर जाने का समय है।"

क्रैफोर्ड ने बलपूर्वक स्वयं को अपनी जड़ता से मुक्त कर लिया। वह मैथ्यू की ओर बढ़ा। उसके मन में रोष उफनता जा रहा था। "मैं काफी सुन चुका अब—" वह बोला—"यहाँ से निकल जाओ, मैथ्यू! निकल जाओ, इसके पहले कि मैं......"

मैथ्यू उसकी ओर झटके से घूमा—"इसके पहले कि तुम क्या, नौजवान?"

क्रैफोर्ड के हाथ सामने की ओर बढ़े हुए थे। उसकी उँगलियाँ मुट्ठियों में बँध रही थीं और वे मैथ्यू की ओर बढ़ रही थीं। "मैं तुम्हें चोट पहुँचाना नहीं चाहता—" वह बोला—"लेकिन मैं तुम पर प्रहार करने जा रहा हूँ। अगर तुमने इसी क्षण हमारा कमरा नहीं छोड़ दिया..."

"मैं जा रहा हूँ—" मैथ्यू बोला। खून की उबाल से उसका चेहरा लाल हो गया था, सिर में जोरों से दर्द हो रहा था और कनपटी की नसें फटी जा रही थीं—"मैं अपनी लड़की को अपने साथ लिये जा रहा हूँ।"

"वह मेरी पत्नी है—" क्रैफोर्ड मूर्खों की तरह चिल्लाया।

वह आगे बढ़ने लगा और इसे देखकर मैथ्यू ने अपनी पोशाक के भीतर हाथ डाला और तेजी से नीले रंग की पिस्तौल बाहर निकाल ली।

"पीछे खड़े रहो!" वह बोला—"पीछे खड़े रहो!"

क्रैफोर्ड नहीं रुका होता। अगर आर्लिस की आवाज़ उन दोनों के बीच, उनके मतभेद के धागे के बीच तेजी से नहीं गूँजती, तो वह नहीं रुका होता।

"मैथ्यू!" वह चीखी—"क्रैफोर्ड!"

वे रुक गये। वे उसे भूल गये थे। अब दोनों ने उसकी ओर देखा और एक आश्चर्य की भावना के साथ उन्होंने उसकी उपस्थिति को और इस मामले से उसके सम्बंध को स्वीकार किया।

आर्लिस उनके बीच आ गयी। वह अब बिलकुल ही भयभीत नहीं थी। अपने लिए नहीं। लेकिन क्रैफोर्ड के लिए......

"तुम्हें इसे बंद करना ही है—" वह बोली—"तुम..." उसने मैथ्यू के

हाथ की पिस्तौल की ओर विराग से देखा, जो उसके भीतर जमता जा रहा था। "पापा!" वह बोली—"उस पिस्तौल को अलग रखो।"

"तुम मेरे साथ चल रही हो?" वह बिना हिलेडुले बोला।

"पापा!" वह अनुनय के स्वर में बोली—"मेरी बात तो सुनो। मैं..."

"तुम मेरे साथ चल रही हो?"

कोई जवाब नहीं आया। अचानक क्रैफोर्ड हिला और आर्लिस के आगे आ गया। अपनी ओर घातक रूप से उठे पिस्तौल की उसने उपेक्षा कर दी। "नहीं।" वह बोला—"वह नहीं जा रही है।"

मैथ्यू ने अपने हाथ की पिस्तौल की ओर देखा। उसका क्रोध गहरा हो गया था और जमकर ठोस बना गया था—यहाँ तक कि उसके मन में पहले के समान रोष की उत्तेजना नहीं रह गयी थी। उसका दिमाग बिलकुल साफ और सुलझे ढंग से काम कर रहा था, जैसे वह सशक्त उत्तरी पवन में खड़ा शक्ति ग्रहण कर रहा था।

"उसे स्वयं ही चुनाव करना है—" वह बोला—"वह मेरे साथ घर चल सकती है या मैं तुम्हें मार डालूँगा, क्रैफोर्ड!"

"किसी भी चीज के लिए अब यही एक जवाब तुम्हारे पास है—" आर्लिस बोली—"जबसे तुमने पहले-पहल एक पिस्तौल पकड़ी, तुम..."

"हाँ!" वह बोला—"यही मेरा जवाब है। तुम आ रही हो?"

"वह मेरे साथ रह रही है, जैसा कि उसे करना चाहिए—" क्रैफोर्ड बोला। उसने अपना हाथ आर्लिस के ऊपर रख दिया। हल्के से छूते हुए उसने उसे पकड़ रखा, सिर्फ अपने शरीर का स्पर्श अनुभव कराने-भर के लिए। "तुम मुझे नहीं मार सकते, मैथ्यू! तुम यह जानते हो।"

आर्लिस ने मैथ्यू की ओर देखा। उसने उसमें हत्या की भावना स्पष्ट देखी। मैथ्यू भी इसे जानता था। उसके मन में ट्रिगर दबाने की इच्छा बलवती हो उठी थी। वह खून करना चाह रहा था। पेट की भूख अथवा यौन-भूख के समान ही उसकी यह कामना भी थी।

"अपनी पिस्तौल नीची करो, पापा!" वह बोली—"मैं जाऊँगी।"

क्रैफोर्ड का रुदन स्पष्ट, विदारक और धीमा था। "नहीं, आर्लिस!" वह बोला—"नहीं!"

वह अब घूमकर उसकी ओर देख सकती थी; क्योंकि वह उसे स्पर्श नहीं कर रहा था। आर्लिस ने देखा कि क्रैफोर्ड को मैथ्यू की बातों का यकीन नहीं था—

उसके हाथ की पिस्तौल पर यकीन नहीं था। वह घातक रूप से तब तक विरोध करता रहेगा, जब तक मैथ्यू की उँगली ट्रिगर दबा नहीं देगी।

"मुझे जाना ही होगा—" वह बोली। उसकी आवाज़ में थकान थी, निराशा थी और इस समर्पण की उदासीनता थी। वह धीरे-धीरे अपने सूटकेस के पास पहुँची, उसे घुमाया और उसका हत्था पकड़ कर हाथ में उठा लिया। वह उस वजनी सूटकेस को उठाये वापस उनके पास आयी। "अपनी पिस्तौल अलग हटा लो, पापा—" वह बोली।

क्रैफोर्ड का चेहरा सफेद और सूना-सूना लग रहा था। वह आर्लिस को देख रह था और मैथ्यू जैसे अब वहाँ उपस्थित नहीं था। कमरे में अब उसकी उपस्थिति ज्ञात ही नहीं हो रही थी।

"अगर तुम अभी जाती हो—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम कभी वापस नहीं आओगी।"

"मैं आऊँगी—" आर्लिस मन-ही-मन रोकर बोली—"कोई भी चीज मुझे इससे नहीं रोक सकती।" वह उसके पास गयी और उसने उसके चेहरे को अपने हाथ से छूआ। अपनी उँगलियों के स्पर्श से वह उससे यह कह देने का प्रयास कर रही थी। किंतु क्रैफोर्ड का शरीर उसकी बात नहीं सुन रहा था।

वह मैथ्यू की ओर घूमी। "क्या मुझे ले जाने के बजाय, तुम उसे मार डालोगे?" वह बोली—"क्या तुम उसे मार डालने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हो?"

मैथ्यू तब हिला। उसने पिस्तौल अपने से अलग नहीं की; लेकिन वह क्रैफोर्ड को सतर्कता से देखते हुए खुले दरवाजे की ओर बढ़ा। निराशा में क्रैफोर्ड आगे की ओर उछला और मैथ्यू के हाथ ने पिस्तौल का घोड़ा उठा दिया।

"तब यह तुम्हारे लिए भी विवाह नहीं था—" क्रैफोर्ड ने आर्लिस से कहा। उसकी आवाज़ धीमी थी—"तुम्हारे प्रेमपूर्ण शब्द और यह विवाह हमेशा के लिए नहीं था। यह सब सिर्फ एक रात के लिए था, बस!"

आर्लिस जवाब नहीं दे सकी। क्रैफोर्ड से यह कहने का समय नहीं था उसके पास कि वह कितना गलत कह रहा था। उसे इसे बंद करना ही पड़ा। उसने मैथ्यू और क्रैफोर्ड के बीच में दरवाजे की रोक कर दी। फिर वह स्वयं तेजी से कमरे के बाहर चली गयी और दरवाजा उनके पीछे आकर, उन्हें दूर

करता हुआ बंद हो गया। यह क्षति गहरी और भयानक थी। आर्लिस जैसे आँख मूँद कर सीढ़ियों से चलकर होटल के हाल में पहुँची और बाहर इस नये दिन के सूरज की रोशनी में पहुँच गयी। मैथ्यू उसके पीछे-पीछे आ रहा था और दूर से उसके प्रत्येक कदम की धप-सी आवाज आर्लिस को सुनायी दे रही थी। सीढ़ियों पर मैथ्यू रुका। उसने पिस्तौल चमड़े की थैली में रख ली।

"तुम मेरी बेटी हो—" वह ऐसे बोला, जैसे उसे स्वयं ही इसका विश्वास नहीं था।

"हाँ!" वह कटुता से बोली—"मैं तुम्हारी बेटी हूँ।"

बाहर फुटपाथ पर आकर आर्लिस ने अपनी नजरें ऊपर कीं। सभी खिड़कियों में से उसने अपने कमरे की खिड़की तत्काल ढूँढ़ ली और वहाँ से टकरा कर उसकी नजरें लौट आयीं। उसने क्रैफोर्ड को देखने की उम्मीद नहीं की थी; लेकिन उसने उधर देखा और तब अपनी नजरें नीची कर जमीन पर गड़ा दीं। वह मैथ्यू की बगल में चल रही थी। फुटपाथ से होते हुए वे चुपचाप चलते रहे और लोहे-लक्कड़ की दूकान के सामने से होकर, उस ओर पहुँचे, जहाँ मैथ्यू ने अपनी मोटर खड़ी कर रखी थी। वे मोटर में बैठ गये। मैथ्यू ने मोटर स्टार्ट की और चालक की सीट पर बैठ गया। पीछे चलाते हुए वह मोटर सड़क पर निकाल लाया और घाटी जाने वाले रास्ते पर बढ़ चला। आर्लिस उसकी बगल में बैठी थी और उसने अपने नीले सूटकेस को यों पकड़ रखा था, जैसे वह क्रैफोर्ड का हाथ हो।

मोटर के घाटी की ओर बढ़ने के साथ-साथ मैथ्यू का हत्या की स्थिति तक पहुँचा हुआ रोष धीरे-धीरे शांत होने लगा। ज्वार के समान ही धीरे-धीरे यह उसके भीतर से बिल्कुल निकल गया और अपने अभिमान की सफलता का आनंद-भर शेष रह गया।

"आर्लिस!" वह अंततः बोला—"थोड़ी ही देर में हम लोग घर पर होंगे।"

आर्लिस ने कोई जवाब नहीं दिया।

"इसका बुरा मत मानो—" वह बोला—"तुम देखोगी—यह भले के लिए है।"

वह कुछ नहीं बोली।

अब वह ठंडा पड़ गया था—हत्या के उद्वेग से बहुत दूर और काफी तेज जलती हुई आग की राख के समान, उसमें क्रोध की आग ठंडी होती जा रही

थी। उसने जो कुछ किया था, अब वह उसे अनुभव कर रहा था। "क्यों?" उसने सोचा—"आज तक मैंने जीवन भर अपने भीतर ऐसी कोई चीज अनुभव नहीं की थी और अब यह मेरे भीतर मौजूद है। मैंने अपनी पाशविकता को मुक्त कर दिया है। अब मैं इसे जान गया हूँ।"

हमेशा से वह प्यार, तर्क और आग्रह में विश्वास करता आया था। अतीत में सिवा एक बार के, जब वह जवान था, घाटी नयी-नयी उसके अधिकार में आयी थी और उसके खून में उबाल था, उसने कभी किसी मनुष्य से लड़ने की जरूरत नहीं महसूस की थी। और उस एक घटना के बाद वह उसकी निशानी ढोता रहा था और अपने भीतर अपराध की भावना अनुभव करता आया था। अजाने ही उसने अपने उस विकृत कान को हाथ से छू लिया। और अब इसके बाद, इतनी जल्दी ही उसके मन पर एक नये अंधेरे का बोझ आ गया था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि कैसे वह इसके लिए स्वयं को बाध्य कर पाया था। किंतु यहाँ बाध्य करने का प्रश्न नहीं था; उसने अपने भीतर आतुरता भी अनुभव की थी और अंत में, अपनी जीत की अपेक्षा क्रैफोर्ड को मार डालने के लिए वह अधिक उतावला हो उठा था।

एक सिहरन-सी उसके शरीर में आरम्भ हो गयी। वह इसे रोक नहीं पाया—उम्र के दौरे के समान ही यह बेकाबू होता जा रहा था और मोटर सड़क पर इधर-उधर बहकने लगी। उसने ब्रेक दबा दिये और किसी दुर्घटना होने के पहले ही उसने गाड़ी खड़ी कर दी। वह स्टीयरिंग व्हील पर झुक गया। बुखार की कँपकँपी की तरह यह कँपकँपी बढ़ती ही जा रही थी। आर्लिस ने अपना सिर भी नहीं घुमाया। वह खोयी और सूनी-सूनी आँखों से सामने की ओर देखती रही। उसने इसकी परवाह नहीं की कि मैथ्यू को क्या हुआ। उसे किसी चीज की फिक्र नहीं थी। उसने इस ओर जितना ध्यान दिया, उस हिसाब से मैथ्यू जैसे वहाँ अकेला ही था।

कँपकँपी गुजर गयी। धीरे-धीरे मैथ्यू ने अपने शरीर को स्थिर कर लिया। सिर्फ उसका पेट जल रहा था और उसे वमन करने की इच्छा हो रही थी। "हे भगवान!" उसने सोचा—"क्या कर डाला है मैंने?" उसने मोटर स्टार्ट करने की कोशिश की; किंतु उसका शरीर उसके वश में नहीं था।

"आर्लिस!" वह बोला—"मोटर तुम्हें चलानी पड़ेगी। मैं......"

वह चुप हो गया। आर्लिस उसकी ओर नहीं आयी, उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने दाँत कसकर बैठा लिये और स्वयं पर काबू पाने का प्रयास

किया। उसने गैस-लीवर खिसकाया और पुल के ऊपर धीरे-धीरे गाड़ी चलाने लगा। उस ओर की धूल-भरी सड़क पर उसने पूरी एकाग्रता से, उस ढलान पर गाड़ी मोड़ी और तब उसने स्वयं को सुरक्षित अनुभव किया। वह अब घाटी के—घर के—नजदीक था और उसने अपना ध्यान अपने लक्ष्य तक पहुँचने में लगा दिया।

जब से उन्होंने होटल छोड़ा था, आर्लिस एक शब्द भी नहीं बोली थी। इस सड़क पर गाड़ी के मुड़ने तक और बाँध के ऊपर रखे चौड़े तख्तों से मोटर के गुजर कर, घाटी में फिर से आ जाने तक भी वह कुछ नहीं बोली। मैथ्यू ने घर की बगल में गाड़ी खड़ी कर दी। वह इस मौन को—उन लोगों के बीच जो यह दूरी थी—उसे अधिक नहीं सह सका। लोगों ने उसकी ओर देखा था—आर्लिस के सूने और सफेद पड़ गये चेहरे को देखा था—और वे खामोश रहे थे, मोटर की आवाज़ पर हैटी बरामदे में निकल आयी। उसके हाथ में तश्तरी पोंछने का तौलिया था और वह मौन खड़ी देखती रही।

मैथ्यू इसे सह नहीं पाया। "आर्लिस!" मोटर से उतरती हुई आर्लिस की बाँह पर अपना हाथ रख उसे रोकते हुए उसने कहा—"सब ठीक हो जायेगा। कुछ समय बाद तुम स्वयं महसूस करोगी कि मैंने ठीक किया है। कुछ काल बाद, तुम किसी और से मिलोगी और......"

घर की ओर बढ़ती आर्लिस रुकी नहीं। वह मैथ्यू के हाथ के भार के नीचे से यों निकल गयी, जैसे वह हाथ वहाँ था ही नहीं। अपनी बगल में अपना नीला सूटकेस लटकाये वह धीमे और थके कदमों से सहन में पहुँची और सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुँच गयी। हैटी और मैथ्यू उसे देखते रहे और हैटी ने स्वेच्छा से उसे आराम पहुँचाने का प्रयास करना चाहा। किंतु आर्लिस की आँखों में जो भाव था और उसके चेहरे पर जो मुर्दनी छायी थी, उससे वह जड़ हो वहीं रुक गयी। मैथ्यू भी बरामदे में चला आया और आर्लिस को भीतरी बरामदे से होकर अपने कमरे तक पहुँचते तथा दरवाजा खोलकर भीतर जाते देखता रहा।

"उसका खयाल रखो, हैटी—" मैथ्यू ने बड़े असहाय भाव से कहा—"देखना कि वह..."

हैटी उसकी ओर घूम पड़ी। वह खामोश थी; पर उसकी आँखें जैसे आग बरसा रही थीं और उसके रोष से मैथ्यू सिकुड़-सा गया। हैटी झटके से घूमी और अपना घाघरा फड़फड़ाती वापस रसोईघर में चली गयी। वह जानती थी कि आर्लिस को अकेली छोड़ देना उचित था।

मैथ्यू अनिश्चित-सा खड़ा रहा, तब घूमा और पैदल ही बाँध की ओर चल पड़ा। सब लोग अभी भी एक जगह खड़े हो यह दृश्य देख रहे थे। वे अपने-अपने काम पर नहीं गये थे और मैथ्यू यह देखकर रुक गया। उसने बाँध की ओर निगाह दौड़ायी। उसकी गैरहाजिरी में बहुत कम काम हुआ था। अब उसे देखकर लोग धीरे-धीरे फिर काम की ओर खिसकने लगे और मैथ्यू खड़ा देखता रहा। लोगों ने काम फिर शुरू कर दिया था और श्रम से वे पसीने से लथपथ हो रहे थे। खच्चरों के शरीर से भी फिर पसीना बह निकला था। मैथ्यू को इस बात का पूरा यकीन था कि जब वह यहाँ नहीं था, ये लोग आपस में हँसी-मजाक करते रहे थे। पर अब वे पुनः मौन कार्यरत थे।

अचानक वह घूम पड़ा और वापस घर की ओर चला। वह मोटर में बैठ गया और मोटर को गोदाम में ले आया। अपनी इस यात्रा से मोटर का एंजिन अभी भी गर्म था। मैथ्यू ने उसे वैसे ही छोड़ दिया और उतर कर खलिहान में बने कुटीर में पहुँचा। उसने कील में टँगा टिन का प्याला उतार लिया और उसे व्हिस्की से भर लिया। लेकिन वह उसे पी नहीं सका। वह नाक्स की व्हिस्की थी, उस पर नाक्स के स्वाद की छाप थी और मैथ्यू प्याला अपने होंठों तक नहीं ला सका। उसने व्हिस्की बाहर खलिहान के एक किनारे फेंक दी और प्याला फिर कील पर टाँग दिया। वह कुटीर के दरवाजे पर बैठ गया। वह बड़ी व्याकुलता अनुभव कर रहा था।

सब बेकार चला गया—उसने स्वयं से कहा। पहली बार वह अपने प्रयास की सम्पूर्ण असफलता को महसूस कर रहा था। इस क्षण तक उसने अपने सामने सम्भावना की कल्पना कर रखी थी कि जो काम वह करना चाहता था, वह कर सकता था, अगर वह उस पर अच्छी तरह विचार कर कदम उठाये, कड़ी मेहनत करे और भाग्य के छोटे-से अवसर का भी उपयोग करे। लेकिन अब वह इस पर और विश्वास नहीं कर पा रहा था।

आर्लिस को वह अपने पास नहीं रख पायेगा। वह उसे वापस घाटी में ले आया था; लेकिन वह जानता था कि वह वहाँ ठहरेगी नहीं। अब वह उसकी नहीं रह गयी थी। देर या सबेर वह उठेगी और, जिस प्रकार बिल्ली अपने घर के सुखद वातावरण में लौट जाती है, उसी तरह वह क्रैफोर्ड के पास लौट जायेगी। मैथ्यू के विरोध के बावजूद, बाधाओं से होकर भी वह क्रैफोर्ड का पक्ष लेगी।

और इसे जान कर, उसे ताज्जुब हो रहा था कि उसने आर्लिस को घर वापस

लाने की परेशानी ही क्यों मोल ली थी। नाक्स भी जा चुका था—बाँध और निर्माण-कार्य में वह हमेशा के लिए जम गया था और मैथ्यू ने उसे वापस लाने की कोशिश नहीं की थी। जेसे जान भी चला गया था और वह उसके पीछे भी नहीं गया था। और अभी तक उसने जेसे जान के पत्र का जवाब भी नहीं दिया था। (जेसे जान यह जानता भी नहीं था कि राइस मर चुका है।) फिर भी वह अपने दोनों कार्यों के अंतर को जानता था। वह वस्तुतः क्रैफोर्ड का सामना करना चाहता था—एक मर्द के समान उसका मुकाबिला करना चाहता था और उसे पूर्णरूपेण पराजित कर देना चाहता था। वह उसे मार डालना चाहता था।

वह और अधिक देर तक शांत नहीं बैठा रह सका। वह निरुद्देश्य उठ खड़ा हुआ—बहुत दिनों से वह इस प्रकार निरुद्देश्य नहीं बना था। कभी-कभी अपने बहुत-से कामों के बीच बहुधा उसने अपने को इस स्थिति में अनुभव किया था। उसकी समझ में ही तब नहीं आता था कि क्या किया जाये; क्योंकि उस वक्त उसके पास करने को कुछ भी नहीं होता था। लेकिन काफी समय से ऐसी कोई बात नहीं हुई थी। अब तो उसे बहुत सारे काम करने थे। वह जानता था कि बाँध पर अभी काम ठीक से नहीं चल रहा होगा—कानून के कर्मचारी शीघ्र ही उसकी सम्पत्ति पर कब्जा करने आते होंगे—लेकिन वह उनका सामना करने की हिम्मत स्वयं में नहीं पा रहा था।

वह खलिहान के पिछवाड़े निकल आया और आश्रय देनेवाली उन पहाड़ियों की ओर देखने लगा। वह चरागाह से होकर गुजरा और उन गहरे हरे रंग के देवदार-वृक्षों की ओर चढ़ाई चढ़ने लगा, जहाँ उसके परिवार के लोग चिर निद्रा में निमग्न थे। कब्रगाह को चारों ओर से घेरनेवाले उन जंग खाये तारों के टूटे खम्भों से होकर वह भीतर पहुँचा और रुककर उसने अपने पुरखों की कब्रों पर नजरें दौड़ायीं और उसके उत्तराधिकारियों की भी—वह उन पुरानी कब्रों के बीच से होकर बढ़ता रहा, जब तक वह मिट्टी के उस ऊँचे ढेर के निकट नहीं पहुँच गया, जिस पर कोई पत्थर नहीं लगा था और जहाँ राइस दफनाया गया था। वह उसकी ओर देखते हुए सोच रहा था कि अभी तक उसे न राइस की कब्र पर स्मृति-शिला रखने का समय मिला था, न उन देवदार के खम्भों को नये और मजबूत तार से बाँधने का!

वह अपने बेटे की कब्र की बगल में जमीन पर बैठ गया। उसने मिट्टी के उस टीले पर अपना हाथ रख दिया, जैसे वह राइस का कंधा छू रहा हो!

किंतु इस सर्द मिट्टी के स्पर्श में कोई आराम नहीं था, किसी निर्णय की प्रेरणा नहीं थी। "हो सकता है, तुम यहाँ मेरी वजह से हो—" उसने मन-ही-मन मिट्टी के उस टीले से कहा। वह इसे बड़ी गहराई से अनुभव कर रहा था और उसकी यह भावना कही नहीं जा सकती थी। वस्तुतः ये शब्द, शब्द नहीं थे, बल्कि उसकी भावना के परिचायक-मात्र थे। "हो सकता है, अगर मैंने दूसरे ढंग से काम किया होता..."

वह जमीन पर बैठा रहा और अपने हाथ से अपने बेटे की कब्र को छूता रहा। वह उन विचारों की मौत के बारे में सोच रहा था, जो उसके दिमाग में अभी तक जीवित थे।

क्रैफोर्ड यह जान गया था कि आलिस उसे इसलिए नहीं छोड़ कर चली गयी थी कि वह जाना चाहती थी। जाते वक्त उसके चेहरे पर जो मुर्दनी छायी थी, उस पर एक नजर डालते ही उसे सत्य का आभास हो गया था। और इसीलिए वह तत्काल ही उसके पीछे-पीछे नहीं गया। उसे फिर से हासिल करने का वह तरीका नहीं था। सिर्फ एक ही तरीका था और वह उसे बड़ी स्पष्टता से समझ गया था। इस स्पष्टता से वह पहले कभी नहीं सोच पाया था। और कई महीनों बाद, पहली बार उसका विश्वास फिर लौट आया। इस संघर्ष के बीच उसने अपना विश्वास कहीं खो दिया था और अगर खोया नहीं था, तो वह इसे निरर्थक और दूषित समझने लग गया था।

अतः अपने मधुर मिलन के प्रथम दिन, वह अकेला ही, अपने दफ्तर लौटा और अपनी डेस्क के निकट बैठ कर जरूरी कामों को निपटाने लगा। उसने मेज पर के अपने कागजात सँभाले और उन्हें तरतीबवार लगा दिया। उसने सारी बातें गुप्त और अपने भीतर ही छिपाकर रखीं—सैम मैकक्लेंडन यह जानने को बहुत उत्सुक था कि मैथ्यू से बात करने के बाद क्रैफोर्ड कहाँ चला गया था। लेकिन क्रैफोर्ड ने इस प्रश्न को टाल दिया और आगे की कार्रवाइयों पर वे विचार करने लगे। मि. हैंसेन भी उनकी बातों में शामिल हो गये। उनका कहना था कि अब यह जरूरी हो गया है कि वे इस काम में तनिक विलम्ब न करें। सैम ने बताया कि उसी दिन इस सम्बंध में विशेष रूप से विचार करने के लिए कमीशन की बैठक होनेवाली थी और वह डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मे जमीन खाली करने के सम्बंध में आवश्यक आदेशपत्र तत्काल ही प्राप्त कर सकता है। काम बड़ी तेजी से हो रहा था।

क्रैफोर्ड ये सारी बातें सुनता रहा। उसने अपनी भावनाओं को तनिक

प्रकट नहीं होने दिया था। सैम ने कहा कि मैथ्यू काफी कठोर व्यक्ति है और कुछ क्षण को तो ऐसा लगा था कि वह मुझ पर गोली चला देगा और निश्चय ही, एक वकील के कर्तव्यों में गोली खाना नहीं आता। क्रैफोर्ड हँस पड़ा। बाँध पर जब वे मैथ्यू से बातें करने गये थे, वह सारे समय उसी की बात सोचता रहा था।

"उसे अधिक दोष नहीं दिया जाता—" उसने नम्रतापूर्वक कहा—"अगर हम लोग उसकी जगह पर होते........"

उन दोनों व्यक्तियों ने उसकी ओर देखा और क्रैफोर्ड जान गया कि वे अब चिकसा और उसके महत्व की बात कहेंगे—जल-द्वारों को बंद करने और जल्दी की आवश्यकता बतायेंगे।

"हमने उसे हर मौका दिया—" मि. हैंसेन बोले—"जितना भी हम दे सकते थे, सब मौके हमने उसे दिये।"

"निश्चय ही—" क्रैफोर्ड ने कहा—"जो हम चाहते थे, वह करे, उसका मौका। लेकिन हमने उसे ऐसी कोई चीज नहीं दी, जो डनबार-घाटी के अभाव को पूरा करे।"

उन दोनों ने उसकी ओर विचित्र निगाहों से देखा और क्रैफोर्ड ने स्वयं के भीतर एक विद्रोह की भावना अंकित होते हुए अनुभव की।

"तुमने उसे दूसरे स्थान दिखाये, जिन्हें वह खरीद सकता था—" हैंसेन बोले—"पर उसने तो उन्हें देखना भी नहीं चाहा।"

"दूसरे व्यक्तियों द्वारा निर्मित स्थान—" क्रैफोर्ड ने कहा—"डनबारों द्वारा निर्मित नहीं?"

तब वह चुप लगा गया। इससे कोई लाभ नहीं होने का। और उन लोगों का कहना ठीक था। क्रैफोर्ड जानता था कि वे ठीक कह रहे थे—उसका स्वयं का भी वही विश्वास था, जो उनका था, और तब भी वे नहीं समझ रहे थे। उनके काम के सम्बन्ध में जो आदेश मिलते थे, वे उनका पालन-भर करते थे। टी. वी. ए. के सिद्धांतों में उनकी दृढ़ आस्था थी, जो उन्हें लोगों के साथ नम्रता, दृढ़ता और इमानदारी से बरतने की बात बताते थे। किंतु फिर भी, इन सारी चीजों के बावजूद, वे व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति-व्यक्ति को नहीं समझ पाते थे, जैसा वह स्वयं करता था। टी. वी. ए. एक सुनियोजित और समझदार संस्था थी—उसमें भावनाओं की गुंजाइश नहीं थी और उसकी तरह ये भी अपने में अवैयक्तिकता की भावना लाये हुए हैं।

अमरीकी मार्शल भी अपनी नौकरी के निर्देशनों का ही अनुसरण करेगा। वह बेदखली का आज्ञापत्र ले लेगा और मैथ्यू के पास पहुँच जायेगा। गोलियों के बीच भी वह कानून के एक अफसर के शांत, निर्विकार और अवैयक्तिक भाव से—अपनी इस अफसरी के नीचे, मन-ही-मन मैथ्यू से सहानुभूति रखने के बावजूद—अपना कर्तव्य पूरा करेगा।

क्रैफोर्ड ने आर्लिस के बारे में सोचा, जो अब वापस घाटी में थी और वह सिहर उठा। आर्लिस अपने बाप की बेटी थी, सबसे पहले वह डनबार थी और इस संघर्ष के तनाव में हो सकता था कि वह स्वयं भी बंदूक लेकर सामना करने को तैयार हो जाये।

विचार-विमर्श और उनकी यह बैठक जब समाप्त हो गयी, तो उसे बड़ी खुशी हुई। जब तक वह अपनी मेज तक पहुँचा, वह यह जान गया था कि उसे चेष्टा करनी होगी, उसे मैथ्यू से पुनः मिलना होगा। पिछली मुलाकात के बावजूद, दोनों के बीच रोष और मार-काट की भावना के बावजूद, उसे फिर से बीच का कोई रास्ता ढूँढ़ निकालने का प्रयास करना था। और एक ही बार नहीं, शायद बार-बार! आर्लिस के लिए नहीं—उसे अभी प्रतीक्षा करनी होगी। वह जानता था कि उनके एक होने की निश्चितता के साथ, वह प्रतीक्षा करती रहेगी और जब तक उनके लिए उचित समय नहीं आता, वे यह वियोग सहन कर सकते थे। लेकिन उसे मैथ्यू से अवश्य मिलना चाहिए और उसे खाली हाथ नहीं जाना चाहिए उसके सामने।

वह अपनी डेस्क के सामने बैठ गया और उसने एक सिगरेट सुलगाया। तब वह फिर उठ खड़ा हुआ। कुछ कर पाने की भावना से उसमें पुनः आत्म-विश्वास और साहस लौट आया था। दृढ़ मस्तिष्क वह फाइलों, रिपोर्टों और निर्देशों को आधे घंटे तक उलटता-पुलटता रहा और तब वह सीढ़ियों से नीचे उतरकर अपनी मोटर में बैठ गया। जब उसने शहर छोड़ा, उसने घाटी जाने वाली सड़क नहीं पकड़ी—इसके बजाय वह दूसरी ओर दूर चलता गया—बहुत दूर, जितनी दूर वह पहले कभी नहीं गया था।

रसोईघर और मकान के बाकी भाग में हैटी अपना काम करती रही। उसने आर्लिस के कमरे को वैसे ही छोड़ दिया था, जो चारों ओर के सजीव वातावरण से अछूता एक मौन यातना-केंद्र-सा था। लोग जब दिन में खाने के लिए आये, तो उसने उन्हें खिला दिया और वे पुनः चले गये। मैथ्यू नहीं आया था। हैटी ने उसके आने की उम्मीद भी नहीं की थी।

आर्लिस अपने बंद कमरे में बिस्तरे पर लेटी थी। वह न सोच रही थी, न कुछ अनुभव कर रही थी। वह एकाकीपन और पराधीनता का मूक लोंदा-मात्र थी। क्रैफोर्ड का वियोग उसके लिए ऐसा ही था, जैसे उसके शरीर का कोई महत्वपूर्ण अंग बड़ी निष्ठुरतापूर्वक काट दिया गया हो। दो बजे की तीखी गर्मी और फिर धीरे-धीरे रात्रि-आगमन की तैयारी में हवा की बढ़ती सिहरन—किसी की उसे कोई खबर नहीं थी और जब अंधेरा छा गया, वह अपने कमरे का लैंप जलाने के लिए उठी नहीं। रात्रि का खाना खाने के लिए लोग भीतरी बरामदे से आवाजें करते गुजरे; किंतु आर्लिस को उनकी आहट भी सुनायी नहीं पड़ी। (उस क्षण मैथ्यू कब्रगाह में नहीं था, बरन्, अपनी जमीन के सुदूर अंतिम छोर पर था, जहाँ उसने सोते के प्रवाह का रास्ता बदलने के लिए पहला छोटा बाँध बनाया था। वह खड़ा हो उसे देखता रहा कि किस तरह पानी उस नये रास्ते से आसानीपूर्वक बहता चला जा रहा था और जब पहले पहल उसने अपनी कुदाल से पानी के उधर से गुजरने का रास्ता बनाया था, तब से कैसे पानी ने इस बीच अपना मार्ग आप तैयार कर लिया था। सिर्फ बाँध को हटाने-भर से पानी का यह प्रवाह वापस घाटी की राह नहीं मुड़ेगा—इस नये जलमार्ग को पहले बंद करना पड़ेगा।) जब सब लोग खाकर फिर घर के बाहर चले गये, हैटी आर्लिस के कमरे के दरवाजे तक आयी और बड़ी नम्रतापूर्वक खटखटाकर पूछा कि क्या वह खाना खायेगी। किंतु आर्लिस ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने जवाब देने की कोशिश की; पर उसके कंठ में शब्द ही नहीं थे और प्रथम प्रयास के बाद उसने यह विचार ही त्याग दिया।

मैथ्यू ने भी नहीं खाया था। तश्तरियाँ धोने के लिए हैटी वापस रसोईघर में चली गयी। जाते-जाते उसने रुककर बाहर खलिहान की ओर देखा; लेकिन मैथ्यू वहाँ नहीं था। बाहरी बरामदे पर लोगों के जमाव के साथ, अपनी निस्तब्धता में मकान ऐसा लग रहा था, जैसे वहाँ मौत का साया हो। हैटी ने अपना काम समाप्त किया और अपने बूढ़े दादा को बिस्तरे पर सुलाने के लिए चली गयी। उसने शौच का बर्तन उठाया, शौचालय तक ले गयी और उसे साफ कर वापस कमरे में बिस्तरे के एक किनारे नीचे रख दिया। तब वह अकेली रसोईघर में बैठी रही। वह स्वयं भी यह नहीं जानती थी कि क्यों वह वहाँ बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। (नीचे बाँध पर थोड़े-से व्यक्ति थे। वे अपने हाथों में बंदूक लिए खड़े थे। मैथ्यू पहाड़ी की छाया से बाहर निकला और बिना कुछ बोले उनके बीच से चलने लगा। उन्होंने भी उससे बात नहीं की, सिर्फ उसे

उस लम्बे बाँध पर होकर जाते देखते रहे। बाँध पर आने-जाने के लिए जो तख्ते रखे थे, उनसे अंधेरे में ठोकर खाते वह झुरमुटों के बीच से, बाँध से दूसरी ओर, पुनः घाटी की सीमा में पहुँच गया।)

लगभग आधी रात हो गयी थी, जब आर्लिस अपनी जगह से हिली। तब उसके दिमाग में सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी थी। वह सिर्फ प्रतीक्षा ही कर सकती थी। लेकिन समय का हर क्षण उसकी प्रतीक्षा का क्षण होगा और जब यह समाप्त हो जायेगा, वह फिर क्रैफोर्ड के पास चली जायेगी। क्रैफोर्ड और मैथ्यू के बीच की भावना, अकेली उसकी भावना नहीं थी—बाँध, घाटी और टी. वी. ए. सम्बंधी भावना भी काम कर रही थी। वह तब तक प्रतीक्षा करेगी, जब तक ये सारी बातें रास्ते से हट नहीं जातीं—जब तक इनका निर्णय नहीं हो जाता और सिर्फ उसकी ही समस्या नहीं बन जाती। और तब वह क्रैफोर्ड के पास जायेगी। तभी सिर्फ मैथ्यू क्रैफोर्ड के विरुद्ध उसका उपयोग नहीं कर सकता था।

वह यह प्रतीक्षा सहन करेगी। उसके पास पिछली रात की सुखद स्मृति थी और वह प्रतीक्षा कर सकती थी; क्योंकि उसे स्वयं पर विश्वास था, क्रैफोर्ड पर विश्वास था और उसके भीतर उनके प्रेम की उष्णता और सजीवता विराजमान थी। वह बिस्तरे से उठ खड़ी हुई और रसोईघर में गयी, जहाँ हैटी अभी भी बैठी थी। उसके सामने मेज पर एक प्याला रखा था, जिसमें काफी रखी थी। हैटी ने उसकी ओर आँखें उठाकर देखा और मुस्करायी।

"मैं जानती थी, तुम ठीक हो जाओगी—" वह बोली—"मैं जानती थी, तुम्हें भूख लगेगी।"

आर्लिस फीकी हँसी हँसी और मेज के निकट बैठ गयी। "मैं सिर्फ क्रैफोर्ड की वजह से ही चली आयी––" वह बोली, जैसे हैटी को उसे अपनी सफाई देनी थी—"पापा......"

"मैं जानती हूँ–" हैटी ने कहा—"इस सम्बंध में बात मत करो। मैं जानती हूँ।"

मैथ्यू सारी रात बेचैनी से घूमता रहा। उसका दिमाग रह-रह-कर अतीत तथा वर्तमान की बातें सोचने लगता था। वह अपने अब तक की जिंदगी पर गौर कर रहा था। उसकी जिंदगी यहाँ एक ओर पारिवारिक कब्रगाह से बँधी थी, दूसरी ओर घाटी के मुहाने से और श्रीमती ऐंसन के सुखद और मित्रवत् रसोईघर से। इस छोटी-सी जमीन के टुकड़े पर यहाँ उसका

जीवन था और यह भू-भाग इतना छोटा था कि सब उसीका था, सिवा श्रीमती ऐंसन के मकान तक जाने के एक छोटे-से सीधे रास्ते के। उसने अतीत से लेकर, भविष्य की आशा पर अपने जीवन का निर्माण किया था। वह अपने जीवन की भूमि पर किसी अमर यहूदी के समान भटकता रहा—एक ऐसी रात में, जो कभी खत्म होगी, ऐसा लगता ही नहीं था।

वह थक चुका था। किंतु वह रुक नहीं सकता था। वह भारी कदमों से चलता रहा। वह अपने खेतों से होकर गुजर रहा था, जिसमें समय हो जाने पर भी उसने बीज नहीं बोये थे। उसने स्वयं से कहा कि उसके प्रयास में कहीं-न-कहीं कोई गलती जरूर हो गयी है, जिससे उसे बीज बोने का भी समय नहीं मिला। अपने अब तक के जीवन में वह रोपनी करना कभी नहीं भूला था। और स्वभावतः ही शरत्काल में फसल काटने का समय भी नहीं गँवाया था उसने।

किंतु अंततः वह उस विचार को अधिक नहीं टाल सका, जिससे बचने के लिए वह सारी रात स्वयं से अब तक संघर्ष करता रहा था—जिसे उसने अपनी चेतनता की सूची में शामिल करना स्वीकार नहीं किया था और जिसके लिए वह सिर्फ यही चाह रहा था कि यों निरुद्देश्य भटकते-भटकते वह इतना थक जाये कि बिस्तरे पर जाते ही कुछ सोचने का समय न मिले और वह नींद में बेखबर हो जाये। वह सोना चाहता था। कैंसर की पीड़ा के समान वह इसकी जरूरत भी अपने भीतर महसूस कर रहा था और तब भी वह इसे रोक नहीं पाया। जब तक वह अपने सीमाहीन विचार का घातक अंत खोज नहीं निकालता, वह अपनी आँखें बन्द नहीं कर सकता था।

सम्भवतः क्रैफोर्ड शुरू से ही सही रास्ते पर था। मैथ्यू एक खास ढाँचे के संसार में पला-पनपा था और वह उसे अच्छा लगा था। लेकिन दुनिया तो, बदलती रहती है। वह इन तब्दीलियों को जानता था। वसंत और रोपनी, हेमंत और फसल-कटाई, शरत् काल और ग्रीष्म की लयबद्ध गति के ऊपर उसने अपना जीवन आधारित कर रखा था। सम्भवतः उसके नीचे कोई गहरा परिवर्तन था।

अपनी युवावस्था की ऋतु से वह काफी समय तक चिपटा रहा है—मैथ्यू ने सोचा—और अपने बच्चों के समय में उसने कड़वाहट घोल दी है, उनके जीवन में विदेशीपन ला दिया है; क्योंकि उसकी इस हठ में उन्हें सिर्फ एक अजनबीपन ही महसूस हो सकता था। वह बड़ा ही दुराग्रही और हठी रहा है।

उसने सिर्फ अपने संसार में विश्वास किया था और उसने सोचा था कि विश्व में हो रहे परिवर्तन के विरुद्ध उसका दुराग्रह ही उसका एकमात्र शस्त्र था। अब वह अपने विश्वासों तथा कार्यों की उम्मीद और उद्देश्य की ओर नहीं देख रहा था, बल्कि वास्तविक, स्पष्ट और स्थूल परिणामों पर उसकी दृष्टि थी। "मैं गलत रास्ते पर था—" उसने सोचा—"गलत रास्ते पर। मुझे दूसरा मौका मिलना ही चाहिए।" उसने भले विश्वासों को लेकर अपना प्रयास आरम्भ किया था—ऐसे विश्वासों को लेकर, जिनकी सचाई में उसकी आस्था थी। और फिर भी जो उसके परिणाम सामने आये थे—भग्नहृदय आर्लिस, ज़िंदगी से बेजार अपने भाई, अपने मृत पुत्र और उसे छोड़कर चले गये पुत्रों तथा हैटी में उभरती हुई विद्रोह-भावना को सोचकर उसका मस्तिष्क पीड़ा से सिकुड़ गया। उसने अपने व्यक्तियों के हाथों में पकड़ायी बंदूकों के बारे में, उनकी नीली लौह नली और उपद्रवकारी गोलियों के बारे में सोचा। अचानक उसे अपनी बेल्ट भारी लगने लगी। उसने उसे बाँध रखा था; क्योंकि वह उसका अभ्यस्त हो गया था और उसे आराम मिलता था और इसीसे उसने उसे उतारा नहीं था। अब वह बेल्ट उसे चुभती हुई लग रही थी, उसका दबाव सख्त महसूस हो रहा था और लग रहा था, वह नीचे गिर पड़ेगा।

पागलों-सा उसने कमर में लगी बेल्ट को खोल लिया और उसे कुटीर के भीतर फेंक दिया। मकई के ढेर के बीच उसने उसके गिरने की आवाज़ सुनी। वह खलिहान से बाहर निकल आया। अचानक ही, उसके अजाने सवेरा हो गया था और आकाश में मोतियों की आभा-सा प्रकाश फैला था। वह दूर तक घाटी के विस्तार और झुकाव को बिलकुल साफ-साफ देख रहा था। वह घूमकर मकान के कोने पर आ गया और बड़े बलूत पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। उसके सिर पर छायी वृक्ष की शाखाओं में अचानक एक पिपस पक्षी (अमेरिका में पाया जाने वाला) उसे चौंकाते हुए गा उठा। वह बड़े उल्लास के साथ, वसंत के आगमन पर चहक रहा था, जिस वसंत का अपने खेत की जोताई और रोपनी के चिरपरिचित आनंद के बीच रसास्वादन करने का अवसर मैथ्यू को नहीं मिल पाया था।

अपने विचारों के अंधेरे में, उसे ऐसा अनुभव होने लगा था कि सम्भवतः वह स्वयं में समर्पण का साहस बटोर सके। लेकिन अब घाटी की सुंदरता का सुबह की रोशनी में बड़ी तीव्रता से अचानक भान होते ही, उसने अपनी वह भावना पुनः अपने में वापस आती पायी। घाटी को अपने अधिकार में बनाये

रखने की उसकी वह पुरानी इच्छा पुनः लौट आयी थी और रात के लम्बे अंधेरे में बड़े श्रम और कष्ट के साथ उसने जिन विचारों को सुनियोजित किया था, वे सब तितिर-बितिर हो गये। किसी व्यक्ति से सिर्फ एक रात में अपने जीवन-भर के विश्वासों का त्याग करने की आशा करना बहुत बड़ी चीज थी। उसकी यह भावना उसमें बड़ी दृढ़, सशक्त और सहनशील थी।

पीड़ा से उसका चेहरा विकृत हो गया। रहने वाले कमरे में तीन रजाइयों के नीचे सोये अपने बूढ़े पिता के समान वह स्वयं को बड़ा बूढा और निर्जीव-सा महसूस कर रहा था। "मरने दो मुझे—" उसने सोचा—"मरने दो मुझे और तब वे तब्दीलियाँ कर सकते हैं। जो इसे अपनी पसंद के अनुसार रूप देने के लिए बहुत व्यग्र हैं, उन्हें ही यह काम करने दो। मुझे यह करने के लिए बाध्य मत करो।" लेकिन वह जानता था, यह इतना आसान नहीं था। यह कभी उतना सहज नहीं था। यह उसके ही ऊपर था—वर्तमान उत्तर-दायित्व उसके ही कंधों पर था।

उसने पुनः अपने बूढ़े पिता के बारे में सोचा। जब से बाँध बनाने के लिए घाटी में लोग आये थे, उसके बूढ़े पिता के ऊपर छायी उम्र की निश्चेष्टता मानो टूटने लगी थी। जब कि एक वर्ष से अधिक अर्से से उसने अपने शरीर के सिवा किसी बाहरी घटना के बारे में कभी नहीं पूछा था, इस बार उसने एक दिन उन व्यक्तियों के बारे में और वे क्या कर रहे थे, इसके बारे में पूछा था। मैथ्यू में पुनः यह पुरानी इच्छा बलवती हो उठी कि वह फिर अपने बूढे पिता के पास जाये, उससे सारी बातें कहे और उसकी राय माँगे। सम्भवतः बसंत के इस आगमन के साथ उसके खून में स्फूर्ति आ गयी हो और वह... मैथ्यू बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। अचानक ही वह अपने बूढ़े पिता को जगाने के लिए उतावला हो उठा था। जिस वर्ष उसने अपने कंधों पर घाटी का भार सँभाला था, उस वक्त से लेकर उसे अपने बूढ़े पिता की जितनी जरूरत महसूस हुई थी, उससे कहीं अधिक जरूरत वह अब महसूस कर रहा था।

उसने अभी पहला कदम उठाकर रखना ही चाहा था कि गोली चलने की आवाज सुनायी दी। उसने अपना पैर रोक लिया, दूसरा पैर हवा में ही उठा रह गया और बंदूक की आवाज़ उसकी रग-रग में समा गयी। उसने अपना सिर घुमाया और घाटी के मुहाने की ओर देखा। और तब वह अपने बूढ़े पिता, बीती हुई रात—सब कुछ भूल गया। वह खलिहान की ओर दौड़ पड़ा,

झटके से उसने खलिहान का दरवाजा खोला और मकई के ढेर के बीच अपनी पिस्तौल ढूँढ़ने लगा। उसने पुनः उसे बाँध लिया। जल्दी के कारण उसकी उँगलियाँ काँप-सी रही थी और वह अपने खून में खतरे की धड़कन अनुभव कर रहा था। सारा विचार उसके दिमाग से निकल चुका था और वह सिर्फ यही सोच रहा था—"वे बहुत तड़के ही आ गये।"

वह जब घाटी की ओर दौड़ा, चेतावनी के लिए चलायी गयी बंदूक की आवाज़ से कुछ लोग जाग कर उधर ही भागे जा रहे थे। मैथ्यू की जल्दी देखकर उन लोगों ने भी जल्दी की; लेकिन बाँध पर सबसे पहले पहुँचने वाला मैथ्यू ही था। वह बाँध के सामने दौड़ कर ऊपर पहुँचा और खड़ा होकर घाटी के मुहाने की ओर देखने लगा। वह एक मोटर की आवाज़ सुन रहा था।

और तब मोटर घाटी में सड़क की मोड़ पर आ गयी। वह क्रैफोर्ड की मोटर थी—सिर्फ क्रैफोर्ड की मोटर! उसके भीतर की अचानक की यह भाग-दौड़ और उत्तेजना उसे खत्म-सी होती महसूस हुई। वह नीचे खड़े लोगों की ओर मुड़ा।

"सब ठीक है—" वह बोला—"वे लोग नहीं आये हैं—अभी नहीं।"

क्रैफोर्ड मोटर से उतर रहा था। मैथ्यू खड़ा उसे देखता रहा। "क्या तुम आर्लिस के पीछे आये हो?" उसने पूछा।

क्रैफोर्ड रुक गया। उसने मैथ्यू की ओर देखा और सुबह की इस रोशनी में उसका चेहरा सफेद और भयानक लग रहा था। ऐसा लगता था, जैसे वह भी सारी रात नहीं सोया था।

"नहीं!" वह बोला—"इस बार नहीं।" वह रुका और मैथ्यू की ओर देखने लगा। "वे आज सुबह आ रहे थे, मैथ्यू! अमरीकी माशल और उसके आदमी!"

"आ रहे थे क्या?" मैथ्यू बोला।

क्रैफोर्ड ने मैथ्यू के नितम्ब पर खुँसी पिस्तौल को देखा और फिर स्वयं की ओर देखा। उसने अपने ऊपर मैथ्यू को पिस्तौल तानते हुए एक बार देखा था और अपने क्रोध और अपनी चुनौती के बावजूद वह भीतर-ही-भीतर भयभीत था, जैसा कोई भी मनुष्य हो जायेगा। वह बाँध पर ऊपर चढ़ता हुआ मैथ्यू की ओर बढ़ने लगा। वह मैथ्यू की ओर देख रहा था और उसे यह दूरी काफी लम्बी लग रही थी। मैथ्यू गौर से उसे देखता रहा। क्रैफोर्ड ने यद्यपि मैथ्यू की इच्छा के विरुद्ध आर्लिस को दूर ले जाकर उससे शादी कर ली थी

फिर भी मैथ्यू के मन में क्रैफोर्ड के प्रति अब क्रोध नहीं था। वे अभी व्यक्तिगत क्रोध के परे, आर्लिस की भावना और उसके सम्बंध की किसी कार्रवाई की बात सोचने के परे थे।

क्रैफोर्ड उसकी बगल में पहुँचकर रुक गया। "मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ—" वह बोला—उसी संक्षिप्त ढंग और लहजे के साथ, जिससे वह पहले भी बहुधा मैथ्यू के साथ बोला था—यहाँ तक की पहली मुलाकात में भी वह इसी प्रकार बोला था।

"तुम्हारे विचार से क्या हम लोगों ने काफी बातें नहीं कर ली हैं?" मैथ्यू बोला—"तुम क्या नहीं सोचते कि बात करने का समय बहुत पहले ही बीत चुका है?"

क्रैफोर्ड ने हठीले भाव से इनकार में अपना सिर हिलाया। "अभी बहुत देर नहीं हुई है—पहली गोली जब चल जायेगी, तब बहुत देर हो जायेगी। लेकिन उसके पहले हमारे पास थोड़ा-सा समय है।"

"हो सकता है, तुम सिर्फ आर्लिस के बारे में बात करना चाहते होओ—" मैथ्यू ने जान-बूझ कर कहा—"सम्भव है, तुम उसे इन सबसे बचाना चाहते होओ।"

इन शब्दों ने क्रैफोर्ड को तनिक भी विचलित नहीं किया। वह इतना आसक्त और लवलीन था कि आर्लिस के नाम मात्र से उसे विचलित करना बड़ा कठिन था। "नहीं!" वह बोला—"उस बात को अभी प्रतीक्षा करनी होगी।"

"करो बात तब—" मैथ्यू बोला—"करो बात।"

क्रैफोर्ड ने तब स्वयं को सँभाल लिया। "मैं तुम्हें कोई जमीन दिखाना चाहता हूँ—" वह बोला—"क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

मैथ्यू ने इन शब्दों का विस्फोट-सा अनुभव किया। "हे भगवान!" वह स्तम्भित हो जोर से और कोसने के लहजे में बोला—"तुम मुझे जमीन दिखाना चाहते हो? अब? अब, जब कि अधिकारी यहाँ आ रहे हैं......" वह रुक गया। आगे वह बोल ही नहीं पाया।

"मैंने तुमसे कहा न—" क्रैफोर्ड बोला—"वे आज सुबह आ रहे थे। लेकिन मैंने मार्शल से बात की और उसे कल तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार कर लिया। वे कल सुबह दस बजे यहाँ होंगे। तब तक का समय हमारे पास है।"

"ऐसा क्यों किया तुमने ?" मैथ्यू बोला—"मैं नहीं चाहता कि तुम..."

"क्योंकि मुझे एक अंतिम प्रयास करना ही था—" क्रफोर्ड ने स्थिरतापूर्वक कहा—"गोलीबारी आरम्भ होने के पहले एक दिन और।" उसने अपना चेहरा घुमाया—"उन लोगों को रोक रखना आसान नहीं था। क्या अब तुम मेरे साथ चलोगे ?"

मैथ्यू अपनी पिस्तौल पर हाथ रखे उसे तीक्ष्ण निगाहों से देखता हुआ खड़ा रहा। अवश्य ही, यह कोई चाल है। उसने अपनी आँखें सिकोड़ कर क्रैफोर्ड को गौर से देखा। क्रैफोर्ड निर्दोष और ईमानदार प्रतीत हो रहा था—वह अपने इस पुराने प्रयास पर ही डटा था, जो पहले ही कितना निरर्थक साबित हो चुका था।

"मैं तुम्हारा इरादा समझ रहा हूँ—" मैथ्यू ने धीरे से कहा—"तुम मुझे घाटी से बाहर ले जाना चाहते हो, जिससे मैं बंदी बना लिया जाऊँ।"

क्रैफोर्ड ने इस किस्म के प्रतिरोध पर विचार नहीं किया था। अब इससे वह अवाक् रह गया। वह स्वयं को कुछ कहने और मैथ्यू को विश्वास दिलाने में असमर्थ अनुभव कर रहा था। वह शांत खड़ा, मन-ही-मन रोषपूर्वक सोचता रहा। अपने भीतर वह इस नयी असफलता की कँपकँपी आरम्भ होते हुए अनुभव कर रहा था। "तुमने वादा किया था—" वह बोला—"याद है, जब तुमने वादा किया था ? तुमने कहा था, तुम किसी भी वक्त चले चलोगे। तुमने यह नहीं कहा कि तुम इसे पसंद करोगे—यह भी नहीं कहा कि इस पर विचार करोगे, वरन् तुमने सिर्फ वचन दिया कि तुम चलोगे।"

"यह बहुत पहले की बात थी—" मैथ्यू बोला—"समय अब बदल गया है।"

"सुनो—" क्रैफोर्ड बोला—"यह अंतिम अवसर है। वे कल यहाँ होंगे। कम-से-कम आखिरी मौका तो मुझे दो।" रुककर वह मैथ्यू की ओर देखने लगा और फिर कड़े, उजड और रोष भरे शब्दों में बोला—"या क्या तुम गोलीबारी करना चाहते हो ? जिस तरह तुम मुझे मारना चाहते थे ?"

मैथ्यू इन शब्दों से विचलित हो उठा और साथ ही उसमें थोड़ी कोमलता और नम्रता की भी भावना आ गयी। उन दोनों के बीच जो कुछ भी था—अच्छी और बुरी भावना, बाँध, और उनकी मैत्री तथा शत्रुता—इन सबके बीच क्रैफोर्ड के प्रति वह इतने का कर्जदार तो था ही। कम-से-कम इस आखिरी मौके का। वह रात-भर का जागरण और बेचैनी, सुबह के वक्त बलूत

के पेड़ के नीचे खड़ा होना और रात-भर जो वह सोचता रहा था, उन सबको अनुभव कर रहा था।

"तुम्हें विश्वास है कि वे आज नहीं आ रहे हैं?" वह बोला।

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने स्थिति का लाभ उठा दबाव डालते हुए कहा—"मैं तुम्हें इसका वचन देता हूँ।"

मैथ्यू ने पीछे मुड़कर देखा। सब लोग अब वापस घर की ओर चले गये थे। उसे अभी उनसे कहने की जरूरत भी नहीं होगी। उसने अपने कमरे में अपने बूढ़े पिता के बारे में सोचा और अचानक ही उसने उसे पुनः बहुत वृद्ध और राय-मशविरा के सम्बंध में अयोग्य अनुभव किया। उसने वापस क्रैफोर्ड की ओर देखा।

"अच्छी बात है, बेटे!" वह नम्रतापूर्वक बोला—"मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा—अगर तुम सोचते हो, इससे कुछ लाभ होगा तो। तुम्हारे ही समान मैं भी लड़ाई नहीं पसंद करता।"

मछली फँसाने के समान ही इस नये अवसर की उछाल क्रैफोर्ड ने स्वयं में अनुभव की। "हमें चलना चाहिए—" वह मुड़ते हुए बोला—"हमें अभी चल देना चाहिए।"

प्रकरण चौबीस

"कहाँ जा रहे हैं हम?" मोटर में बैठते हुए मैथ्यू बोला।

क्रैफोर्ड ने मोटर स्टार्ट कर दी—"कहने के बजाय मुझे वह जगह ही दिखा लेने दो। आखिर तुम्हें इसे देखना तो होगा ही।"

मैथ्यू ने अपनी जगह बदल ली, जिससे वह क्रैफोर्ड के चेहरे पर नजर रख सके। "अभी भी मेरी पिस्तौल मेरे पास है—" उसने पिस्तौल के चमड़े की खोल पर हाथ रखते हुए कहा—"मुझे उम्मीद है, तुम कोई चाल नहीं चल रहे हो मेरे साथ।"

क्रैफोर्ड ने 'क्लच' की ओर ध्यान दिया। "यह कोई चाल नहीं है—" वह बोला—"यह हकीकत है। मैं तुम्हें बेवकूफ नहीं बना रहा हूँ, मैथ्यू! मैं तुमसे अपनी बात मनवाने का प्रयास कर रहा हूँ।"

मैथ्यू के होंठों पर वक्र मुस्कान दौड़ गयी—"कितने दिनों से तुम मुझसे

अपनी बात मनवाने का प्रयास कर रहे हो, क्रैफोर्ड ?"

"बहुत दिनों से—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम बहुत हठी हो, मैथ्यू!"

मैथ्यू ने फिर उसकी ओर देखा। क्रैफोर्ड स्टीयरिंग व्हील पर झुका, मोटर हाँकने में दत्तचित्त था। वे उस बड़ी सड़क से होकर दूसरी ओर पहुँचे और एक धूल-भरी सड़क पर नीचे उतर आये, जो नदी के किनारे-किनारे बाँध की दिशा में चली गयी थी। तब वह धूल-भरी सड़क नदी की ओर से मुड़ गयी और पहाड़ी की चढ़ाई चढ़ने लगी—चढ़ाई और चढ़ाई! क्रैफोर्ड ने अपनी स्थिति बदली और मोटर की ओर ध्यान लगाये रखा। उसने उसकी चाल धीमी कर दी। कुछ देर तक वे खामोश बैठे मोटर के चढ़ाई पर चढ़ने की आवाज़ सुनते रहे। क्रैफार्ड ने सोचा, उसे मोटर की चाल और धीमी करनी होगी; किंतु मोटर चढ़ाई चढ़ गयी। उसकी चाल धीमी हो गयी थी; पर फिर भी उसमें खिंचाव था। क्रैफोर्ड ने मोटर सड़क के किनारे मोड़ कर खड़ी कर दी।

"यह रहा—" वह बोला—"चिकसा-बाँध!"

"क्या यही दिखाने तुम मुझे ले आये थे?" वह बोला। उसकी आवाज़ में उभरते क्रोध का एक संकेत था।

क्रैफोर्ड हँस पड़ा—"नहीं! यह तो सिर्फ हमारे रास्ते में पड़ता है और बस! खूबसूरत है—है न?"

मैथ्यू ने पुनः बाँध की ओर देखा। "हाँ!" वह प्रसन्नतापूर्वक बोला।

क्रैफोर्ड ने बाँध को गौर से देखा। "यह रहा वह—" वह विचारपूर्ण मुद्रा में बोला—"भगवान ने यहाँ इस तराई को बनाया और तब से उसने इसके लिए कुछ नहीं किया। किसीने इसके लिए कुछ नहीं किया—जो लोग यहाँ रहते हैं, उन्होंने भी नहीं। तुम, मैथ्यू—" उसने सिर घुमाकर फिर वापस देखा—"घाटी के लिए तुमने क्या किया है? तुम वहाँ रहे हो, उसका उपयोग किया है, अपने अधिकार में बनाये रखा है। लेकिन जैसी वह पहले थी, उससे उसे अधिक सुन्दर बनाने के लिए तुमने क्या किया है?"

"मैंने इसे बचाये रखा है—" मैथ्यू कठोरता से बोला—"मैंने इसे अपने पास रख छोड़ा है।"

वे खामोश बैठे रहे, जब तक कि क्रैफोर्ड की बातों की अस्वीकारोक्ति की भावना उनके बीच से गुजर नहीं गयी; क्योंकि क्रैफोर्ड ने मैथ्यू की आवाज़ की चुनौती को मानने से इनकार कर दिया। यह उसका इरादा नहीं था—आज नहीं।

"यह अभी कच्चा लग रहा है—" अभी भी बाँध की ओर देखते हुए क्रैफोर्ड बोला—"लेकिन जब घास को इसके निर्माण के चिह्नों को स्वयं के भीतर छुपाने का समय मिल जायेगा, तो यह ऐसा लगेगा, जैसे यह हमेशा से ही यहाँ पर था। इस बाँध के बिना यहाँ नदी के होने की कल्पना ही तब असम्भव होगी। पानी का विस्तृत प्रवाह होगा, जलाशय होगा और नदी का पानी बढ़कर खेतों में, घाटियों में फैला रहेगा और बच्चे जब बड़े होंगे, वे यह कभी नहीं जान पायेंगे कि जैसा अभी सब कुछ दीखता है, उसका पहले कोई दूसरा ही रूप था।"

मैथ्यू ने जवाब नहीं दिया। क्रैफोर्ड गौर से उसे देखता रहा।

"एक चीज भगवान भूल गया—" वह धीरे-से बोला—"वह बाँध—आदमियों को इसे नदी में जोड़ना पड़ा, जिससे नदी जिस उद्देश्य के लिए यहाँ है, उसे पूरा कर सके। नदी के ऊपर, नीचे, सर्वत्र और इसकी सहायक नदियाँ—सब के पानी का बहाव नियंत्रित है—इसे लोगों की भलाई के लिए, बिजली उत्पादित करने के लिए बाध्य कर दिया गया है।"

वह मैथ्यू पर कोई दबाव नहीं डाल रहा था। उसकी आवाज़ शांत और विचारपूर्ण थी और क्रैफोर्ड यह सब स्वयं के लिए याद कर रहा था। कुछ समय के लिए, अपनी व्यक्तिगत परेशानी में वह इसे भूल गया था। मैथ्यू के साथ की लड़ाई में मैथ्यू और टी. वी. ए. नहीं, बल्कि क्रैफोर्ड और मैथ्यू प्रतिद्वंद्वी बन गये थे।

"हम लोग अब यहाँ से आगे चलें—" वह बोला—" तुम्हें वापस भी तो आना है अभी!"

मैथ्यू ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। उसने इस स्थल पर अच्छा-खासा वक्तव्य सुनने की आशा की थी और अजाने ही उसने स्वयं को इसके विरुद्ध संयत कर रखा था। "हाँ!" वह बोला—"हम इसे समाप्त ही कर डालें, तो ठीक!"

क्रैफोर्ड ने मोटर स्टार्ट की और आगे बढ़ा। वह खामोश रहा और इस निस्तब्धता और मोटर की लयबद्ध गति के कारण मैथ्यू ऊँघने लगा। वह पिछली रात सोया नहीं था और उसकी थकान बिलकुल स्पष्ट थी। वह स्वयं को निरुत्साह, पस्त और शराबी की तरह अनुभव कर रहा था। उसे इसकी चिंता नहीं रह गयी थी कि क्या हो रहा है, कहाँ वे जा रहे थे, क्रैफोर्ड को उससे क्या कहना था।

अंततः क्रैफोर्ड नदी की ओर से मुड़ा और पहाड़ियों की गहराइयों में घुसा। वह एक ऐसी सड़क पर मोटर चला रहा था, जो एक सोते के समानांतर चली गयी थी। उनके चारों ओर वृक्ष घने होते जा रहे थे। सोता पहाड़ी के एक संकीर्ण स्थल को काटता हुआ रास्ते के साथ-साथ गुजर रहा था और उसका सफेद पानी चमकता दिखायी दे रहा था। वे एक पुरानी जल-चक्की के बगल से गुजरे। उसका वह लम्बा ढांचा अब विनष्ट हो चला था; लेकिन उसके पत्थर अब भी मौजूद थे। सड़क बड़ी खराब हो गयी थी और गाड़ी झटके खाने लगी। मकान कहीं नहीं थे—सिर्फ चट्टानें, वृक्ष और तेजी से उद्दाम बहता सोता, जो सुदूर नदी की ओर बढ़ा जा रहा था। अब वे चिकसा-बाँध के नीचे थे—एक ऐसे इलाके में, जो डनबार-घाटी के, नदीवाले इलाके से अधिक ऊबड़-खाबड़ था।

मैथ्यू जाग उठा। क्रैफोर्ड के दिमाग में क्या था, इसके प्रति अब उसकी रुचि हो गयी। क्रैफोर्ड उसकी ओर देखकर मुस्कराया।

"हम यह रास्ता तय कर लेंगे—" वह बोला— "यह थोड़ा ऊबड़-खाबड़ है, लेकिन हम इसे पार कर लेंगे।"

कुछ मीलों तक और आगे जाकर क्रैफोर्ड वहाँ सड़क छोड़कर मुड़ पड़ा, जहाँ सटी-सटी पहाड़ियाँ अचानक सोते के चारों ओर अलग-अलग हो गयी थीं। यहाँ एक छोटी-सी घाटी थी और एक छोटी-सी जलधारा यहाँ से बहती थी। वृक्षों के बीच की जगह कभी साफ की गयी थी; पर अब झाड़-झंखाड़ उग आये थे। क्रैफोर्ड ने मोटर रोक दी और वे पानी की प्रिय मर्मर-कलकल ध्वनि सुन रहे थे।

"देखो—" क्रैफोर्ड बोला—"यह रही वह जगह। क्या खयाल है तुम्हारा?"

मैथ्यू आश्चर्यचकित रह गया था। उसने मोटर का दरवाजा खोला और उतरकर सोते के किनारे की ओर बढ़ा। उसने आँखें उठाकर अपने चारों ओर देखा।

"यह......?" वह बोला।

क्रैफोर्ड मोटर से उतर पड़ा था। वे उस छोटी-सी घाटी में अकेले खड़े रहे—क्रैफोर्ड और मैथ्यू—दोस्त-दोस्त, शत्रु-शत्रु और बाप-बेटा!

"मैथ्यू!" क्रैफोर्ड ने कहा—"इस घाटी पर कभी किसी मनुष्य के नाम की छाप नहीं रही है। जब से इंडियनों से यह जमीन ली गयी, यह सरकार की

सम्पत्ति रही है। यह तुम्हारी है, मैथ्यू—तुम्हारी, अगर तुम इसे चाहते हो!"

मैथ्यू रुका और झुककर उसने एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली। मिट्टी काली और ऊर्वर थी। उसने उसे अपनी उँगलियों से मसला और उसे याद हो आया कि इस बार वसंत के इस मौसम में उसे अपनी जमीन जोतने का अब तक मौका नहीं मिला था। और उसने कसम खायी थी कि बाँध बनाने के साथ-साथ इस वर्ष घाटी में वह अपनी फसल अवश्य उगायेगा। उसने पुनः चारों ओर नजर दौड़ायी।

यह घाटी डनबार-घाटी से कम-से-कम एक तिहाई छोटी थी। लेकिन यहाँ पानी की पर्याप्त सुविधा थी और दो सोतों के कारण सिंचाई की भी अधिक सुविधा थी। वृक्ष अधिक घने नहीं थे, अतः जमीन को साफ करना अपेक्षाकृत आसान था। सोते से कुछ आगे एक छोटा सा पहाड़ी टीला था, जो हरे-भरे, ऊँचे देवदार वृक्षों से आच्छादित था जहाँ मकान बनाया जा सकता था। मकान के सामने वाले बरामदे में खड़ा होकर कोई भी मनुष्य अपनी सारी जमीन को एक नजर में देख ले सकता था।

"क्रैफोर्ड!" मैथ्यू बोला—"तुम्हें अगर कोई टी. वी. ए. छोड़ देने के लिए कहे, तो तुम क्या कहोगे? उस वक्त तुम्हारी मनःस्थिति क्या होगी? ईमानदारीपूर्वक बताओ मुझे।"

क्रैफोर्ड के चेहरे पर अनिश्चितता की छाप दिखायी पड़ी। तब उसके चेहरे पर दृढ़ता की छाप आ गयी। "अगर वह मुझे उसके बदले में कोई अच्छी चीज देगा—" वह बोला। उसने मैथ्यू की ओर देखा, फिर अपनी नजरें हटा लीं और पुनः उसकी ओर वापस देखा—"मुझे इस घाटी को पहले ही ढूँढ़ निकालना चाहिए था, मैथ्यू! मुझे यह समझ लेना चाहिए था कि तुम्हारी जरूरत क्या है। लेकिन मैंने तुम्हारे विचार को बल पहुँचाने के बजाय, तुम्हारे दिमाग में सिर्फ अपने विचार भरने की बात सोची। मैं सिर्फ लेने आया, देने नहीं। लेकिन अब इसकी ओर देखो, मैथ्यू! यह सम्पन्न है और नयी भी और इसे तुम्हारे हाथों के श्रम की प्रतीक्षा है। जिस तरह तुम चाहो, उस तरह का रूप इसे दे सकते हो—" उसकी आवाज़ में उतावलापन था और वह मैथ्यू पर दबाव डालने की चेष्टा कर रहा था।

मैथ्यू इसका आकर्षण अनुभव कर रहा था। जैसा कि क्रैफोर्ड ने कहा था, यह बिलकुल ताजी-नयी जमीन थी और डनबार-घाटी के बाहर यह पहली जमीन उसने देखी थी, जो उसे लुभावनी लग रही थी।

"तो मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं अपनी पीढ़ियों से चली आयी जमीन—डनबार-घाटी—छोड़ दूँ और नये सिरे से फिर से आरम्भ करूँ। तुम चाहते हो कि मैं डनबार-घाटी का जीवन नष्ट कर दूँ, सिर्फ इस उम्मीद में कि मैं उसकी जगह पर किसी अच्छी और नयी चीज का निर्माण कर सकता हूँ।"

"डेविड डनबार ने ऐसा किया था—" क्रैफोर्ड चिल्लाया—"तुम भी कर सकते हो, मैथ्यू। हो सकता है, पुरानी डनबार-घाटी की आयु समाप्त हो चुकी हो। हो सकता है, वह जीर्ण-शीर्ण हो गयी हो—हो सकता है, वह विश्राम चाहती हो!"

मैथ्यू स्वयं के भीतर इनकार की भावना दृढ़ होती अनुभव कर रहा था। "तुम चाहते हो, मैं डनबार-घाटी को मार डालूँ—" उसने बड़े नीरस स्वर में कहा।

क्रैफोर्ड अब स्वयं को निराश और हताश अनुभव करने लग गया था। उसने अपनी बची-खुची उम्मीद इस यात्रा में लगा रखी थी। उसके दिमाग में यह बात लगातार चक्कर काट रही थी कि कल दस बजे किस प्रकार मार्शल अपने आदमियों के साथ घाटी में पहुँचेंगे और उसके तथा मैथ्यू के बंदूकधारी आदमियों के बीच मुकाबिला होगा। सहज प्रेरणावश क्रैफोर्ड ने इसे कहने से स्वयं को रोक रखा था। किसी भी आदमी से सत्य कहने के लिए, विशेषतः जिस आदमी को आप पसंद करते हों—शक्ति की आवश्यकता होती है। किंतु एक बार वह ऐसा कर चुका था—मैथ्यू को उसने उसके ही उद्देश्य के ताने-बाने बुनते समय विचलित कर दिया था। अब क्रैफोर्ड इसे रोके नहीं रख सका। यह अंतिम मौका था; फिर कभी दूसरा मौका नहीं मिलेगा; क्योंकि गोलाबारी का समय उनके बहुत ही निकट था।

"क्या तुम सोचते हो कि जमीन के बिना डनबार घाटी की मौत हो जायेगी?" वह बोला। जिस तरह जोर देकर उसने यह कहा था, उससे इन शब्दों में रोष की झलक मिलती थी, यद्यपि क्रैफोर्ड रुष्ट नहीं था। उसकी आवाज़ के भार से स्वयं को जैसे सुरक्षित रखने के लिए मैथ्यू एक झटके से घूम पड़ा—"अगर यह सच है, तो यह बहुत ही तुच्छ विचार है, मैथ्यू! लेकिन उसकी मौत नहीं होगी।"

मैथ्यू उससे दूर रहने लगा। वह यह सुनना नहीं चाहता था। एक बच्चे के समान वह अपने कानों पर हाथ रखकर इन शब्दों को बंद कर देना चाहता था। उसने अपनी इच्छाशक्ति के निष्फल प्रयास से ऐसा करने की व्यर्थ

कोशिश की। लेकिन वह क्रैफोर्ड से दूर हटता जा रहा था। वह उसकी बातें सुनने से इनकार कर रहा था।

क्रैफोर्ड ने उसका पीछा किया।

"डनबार-घाटी, जमीन में नहीं है, मैथ्यू! यह तुममें है—और जब तक तुम सचाई से इसे बनाये रखोगे, वह जीवित रहेगी। क्यों, तुम नये सिरे से आरम्भ कर सकते हो और पुराने की अच्छाई लेकर नये की अच्छाई के साथ पहले से कहीं अधिक महान् चीज का निर्माण कर सकते हो। यहाँ से बिजली की एक लाइन निकलेगी। जिस टी. वी. ए. को तुम अपना दुश्मन समझते हो, उसका उपयोग कर तुम एक कहीं अच्छी और सुंदर डनबार-घाटी का निर्माण कर सकते हो, जिसका तुमने कभी सिर्फ स्वप्न ही सँजोया हो!"

"चुप रहो!" मैथ्यू बोला—"चुप रहो, क्रैफोर्ड!"

"जमीन डनबार नहीं है। जमीन केवल जमीन है। डनबार तो तुम हो।"

"मैंने कहा, चुप रहो।"

क्रैफोर्ड घूमकर उसके सामने आ गया। उसने मैथ्यू के चेहरे के सामने अपना चेहरा कर दिया। वे हाँफते हुए खड़े रहे, जैसे उनका यह संघर्ष शारीरिक था। बाहर निकली हुई आँखों वाली उस मुखाकृति को मैथ्यू निहारता रहा। वह अपने गालों पर क्रैफोर्ड की साँस का स्पर्श अनुभव कर रहा था और वह इस अत्यधिक निकटता से दूर हट जाना चाहता था। लेकिन वह नहीं हिला।

"तुम डनबार हो, मैथ्यू!" क्रैफोर्ड ने कहा—"जमीन नहीं, नदी नहीं और नहीं वृक्ष, सोता, मकान और पहाड़ी की ढलानें और उनके आकार! उनमें से किसी का भी कोई अर्थ नहीं है। वह तुम हो।"

मैथ्यू का निश्चय डगमगा उठा। वह क्रैफोर्ड से एक कदम दूर हट आया लेकिन अनिश्चितता की यह भावना उसमें थी ही और इस दूरी से उसे कोई मदद नहीं मिली। क्रैफोर्ड ने उसका पीछा भी नहीं किया, बल्कि खड़ा हो देखता रहा। मैथ्यू ने पुनः अनिच्छापूर्वक घाटी के ऊपर अपनी नजर दौड़ायी और इस नयी जमीन की सुंदरता अप्रत्याशित रूप से उसके भीतर एक दुर्बलता बन गयी। इस नये जमीन के विचार-मात्र से, वह स्वयं के भीतर पुराने डेविड डनबार का प्रादुर्भाव कर रहा था। सिर्फ अपने पास सुरक्षित रखने और दूसरे को सौंप देने के बजाय, वह फिर से आरम्भ करेगा, निर्माण करेगा। प्रथम पूर्वज के बाद उसके पहले तक जितने भी डनबार हुए थे, उन सबकी

तुलना में वह इसके जरिये अपने प्रथम पूर्वज के अधिक निकट हो जायेगा।

"तुम जानते भी हो, तुम क्या कह रहे हो, क्रैफोर्ड—" वह व्यथित स्वर में बोला—"सारे समय तुम यह कहते रहे हो कि मैं गलत चीज में विश्वास करता आया हूँ। तुम कह रहे हो कि मैंने अपना जीवनतत्व व्यर्थ बरबाद किया है।"

क्रैफोर्ड ने नम्र स्वर में कहा—"नहीं, मैथ्यू! मैं वैसा कभी नहीं कहूँगा। मैं जो-कुछ कहता रहा हूँ, वह यह है कि तुम सही चीज में विश्वास करते रहे हो—लेकिन तुम सिर्फ गलत स्थान पर अपने विश्वास को लगाये हो।"

मैथ्यू आश्चर्य स्तम्भित रह गया था। डनबार-घाटी की निश्चितता कभी उसके मन में विचलित नहीं हुई थी। पहले भी उसने स्वयं में दुर्बलता अनुभव की थी और अनिश्चितता की भावना उसमें आयी थी। पहले भी वह अपने समय की चुनौती के विरुद्ध उठने में धीमा रहा था। टी. वी. ए. में क्रैफोर्ड के तीक्ष्ण विश्वास के तर्क को स्वीकार करने और उसकी अच्छाई स्वीकार करने के बावजूद, वह कभी उससे पदभ्रष्ट नहीं हुआ था। सभी तर्कों के बीच, उसके मन में क्षणभर के लिए भी डनबार-घाटी-सम्बंधी मुख्य तत्व के प्रति अनिश्चितता की भावना नहीं आयी थी। वह एक ठोस और यथार्थ सत्य था, जिस पर उसने अपने जीवन का कनवास टाँग रखा था। अब इस गहरी समझ और सत्यकथन से केंद्र-स्तम्भ उसे नाजुक और कमजोर प्रतीत हुआ—झुकता-सा लगा। इसके पहले वह कभी इतना नाजुक और कमजोर नहीं प्रतीत हुआ था।

"बताओ मुझे..." वह बोला।

क्रैफोर्ड फिर उसके निकट आ खड़ा हुआ। उसने अपने बायें हाथ की उँगलियों से बड़ी मृदुता, पर दृढ़ता से मैथ्यू की दाहिनी कनपटी का स्पर्श किया। "यहाँ, मैथ्यू—" वह बोला—"यह यहाँ है।"

मैथ्यू उसकी ओर से घूम पड़ा और क्रैफोर्ड ने उसे जाने दिया। मैथ्यू उस छोटे-से सोते के किनारे चलकर पहुँचा और जमीन पर बैठ गया। वह बहते हुए पानी को देख रहा था। बहुत दिनों के बाद वह बहता पानी देख रहा था; क्योंकि उसकी घाटी से होकर जो सोता बहता था, वह अब बिलकुल सूख चला था और उसके छोटे छोटे गड्ढों में गँदला पानी बच रहा था, जिसमें मछलियाँ नहीं थीं। ताजा और साफ बहते पानी के बजाय वे कीचड़ से भरे गड्ढे की तरह लगते थे—छोटी-छोटी पहाड़ियों के खोह के समान! किनारे पर बहुत

पहले कभी के छोटे-छोटे पत्थरों का ढेर था। उसने उसमें से एक मुट्ठी भर लिया और उन्हें सोते में फेंकने लगा।

जब उसका हाथ खाली हो गया, उसने हाथ की नमी दूर करने के लिए, उसे अपनी पतलून के पाँव में रगड़ लिया। वह उठ खड़ा हुआ। वह यहाँ बैठा नहीं रह सकता था। उसे बहुत-सारे काम करने थे। उस सम्बंध में उसके भीतर दृढ़ता जाग उठी। कर्तव्य सदा से रहते चले आये हैं और उन्हें ग्रहण करने तथा अंजाम देने पर ही उसके जीवन का निर्माण हुआ था। यह, कम-से-कम एक ऐसी चीज थी, जिसे वह नहीं गँवा सकता था। अगर उसने इसे खो दिया तो वह फिर मैथ्यू डनबार नहीं रह जायेगा।

वह चलकर वापस वहाँ पहुँचा, जहाँ क्रैफोर्ड मोटर के निकट प्रतीक्षा करता हुआ सिगरेट पी रहा था। क्रैफोर्ड ने उसे आते हुए देखा और उसने उसके चेहरे पर एक विशाल और महत्वपूर्ण परिवर्तन की खोज की। किंतु मैथ्यू के चेहरे पर अभी भी दृढ़ता और कठोरता की छाप थी—दृढ़ता, थकान और सुखद निद्रा के अभाव की कठोरता!

"बेहतर है, अगर हम वापस चलें—" मैथ्यू ने कहा।

उसकी आवाज धीमी और भावना-रहित थी और वह ऐसे बोला, जैसे किसी मृत व्यक्ति की उपस्थिति में बोल रहा हो। क्रैफोर्ड कहने के लिए कुछ भी नहीं सोच सका। उसने सिगरेट जमीन पर फेंक दी, सावधानीपूर्वक अपने जूते की नोक से उसे मसल दिया और घास पर उसके जूते के दबाव से जो धब्बा बन आया था, उसे देखता रहा। तब वह घूम कर मोटर के उस ओर चालक के स्थान पर बैठने के लिए पहुँच गया। वह रुका और मोटर के हुड के ऊपर से होते हुए उसने दूसरी बगल में खड़े मैथ्यू की ओर देखा।

"मैं टी. वी. ए. छोड़ दूँगा—" वह बोला—"मैं......"

मैथ्यू उसकी ओर देखकर मुस्कराया। मुस्कान बड़ी स्निग्ध थी और ऐसी मुस्कान मैथ्यू के होंठों पर काफी समय से क्रैफोर्ड ने नहीं देखी थी। इस मुस्कान के साथ ही, अचानक ही पहली मुलाकात के समान ही, अचानक उनमें एक-दूसरे के प्रति आसक्ति, समझ और मित्रता की वह पुरानी भावना जैसे लौट आयी।

"मैं ऐसा करने के लिए तुमसे कहूँगा नहीं, क्रैफोर्ड!" मैथ्यू बोला—"इसकी जरूरत नहीं।"

वे मोटर में बैठ गये और पीछे की ओर चलाते हुए क्रैफोर्ड ने गाड़ी मोड़ी

और वे उस छोटी-सी घाटी के बाहर निकल आये। ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर मोटर झटके देती बढ़ी, वे पुनः पहाड़ की उस ढलान की बगल से गुजरे, जहाँ सोते का निर्मल जल पहाड़ी खोह के भीतर से बहता चला जा रहा था, जहाँ किसी व्यक्ति ने अपने उपयोग के लिए जल-चक्की लगा रखी थी, उस जीर्ण जल-चक्की की बगल से भी वे वापस गुजरे; लेकिन सारे रास्ते जब तक वे पहाड़ के उस स्थल पर नहीं पहुँच गये, जहाँ से नीचे खड़ा चिकसा-बाँध दिखायी देता था, वे खामोश बैठे रहे—उन्होंने एक शब्द भी एक-दूसरे से नहीं कहा।

क्रैफोर्ड रुका; लेकिन उसने मोटर सड़क के किनारे नहीं खड़ी की; बल्कि एंजिन वैसे ही चलता छोड़ दिया, जिससे तुरंत ही वह आगे बढ़ सके। अब बाँध उसकी बगल में पड़ रहा था और मैथ्यू को उसके कंधे के ऊपर से देखना पड़ रहा था।

क्रैफोर्ड मौन बैठा रहा। उसमें शून्यता-सी व्याप्त हो गयी थी। उसमें अब असफलता की भावना भी नहीं थी—सिर्फ एक प्रकार की शून्यता थी। उसका भगवान अनुत्तीर्ण हो गया था अथवा उसने अपने भगवान को अनुत्तीर्ण कर दिया था—कोई भी बात महत्व नहीं रखती थी। वह पुराने गृहयुद्ध की उस तोप के समान ही निरर्थक थी, जो शहर में न्यायालय के मैदान में मूक रखी उनकी पराजय की कहानी कह रही थी। उसने अपने सिगरेटों का पैकेट निकाला और मैथ्यू की ओर एक सिगरेट बढ़ाया। मैथ्यू ने उसे ले लिया और क्रैफोर्ड ने दियासलाई की तीली से उसे सुलगा दिया।

उस जली तीली को उसने मोटर की खुली खिड़की से बाहर फेंक दिया। "वे फाटकों को जल्दी ही उठा देंगे"—वह बोला—"चिकसा तैयार हो चुका है।" उसकी आवाज़ गम्भीर थी और उसमें किसी प्रकार की धमकी, अथवा चुनौती नहीं थी।

मैथ्यू ने नीचे बाँध की ओर देखा। वह घर जाने के लिए उतावला था; क्योंकि अचानक उसके दिमाग में यह बात आ गयी थी कि उसे अपने बूढ़े पिता से अवश्य मिलना चाहिए। क्रैफोर्ड के शब्द उसके भीतर सोते के उस किनारे के चिकने और जीर्ण पथरीले कंकड़ों के समान, जिन्हें उसने अपने हाथ में लिया था, लुढ़क रहे थे। अगर उसका बूढ़ा पिता उसकी पहुँच के बहुत परे है, उसके मन को इस भावना के स्पर्श करने की सम्भावना नहीं है, फिर भी......उसे उससे बात करनी ही है। यह इस क्षण, मैथ्यू के लिए साँस लेने के समान ही, आवश्यक था।

किंतु उसने उतावली नहीं दिखायी। "हाँ" वह बोला और क्रैफोर्ड के कंधे के ऊपर से उसने उस ओर देखा। "मेरे बेटे ने इसे बनाने में मदद की है—" वह बोला—"वह बुलडोजर चलाता था। और अब चिकसा जब तयार हो गया है, वह कहीं और कोई और बाँध बना रहा है।"

"काफी अच्छा काम है यह—" क्रैफोर्ड बोला—"तुम खड़े होकर अपने बनाये बाँध को भी देख सकते हो। बाँध बनाना बड़ी निपुणता का काम है।"

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा और फिर नजर घुमा ली। "मेरा अनुमान है, तुम ठीक कहते हो।"

क्रैफोर्ड मुड़ा और उसने बाँध को मैथ्यू की नजरों की ओट में कर दिया। "सावधान रहना, मैथ्यू—" वह बोला—"कल। अपनी मौत मत बुला लेना।"

मैथ्यू उसकी ओर देख नहीं सका। वह स्वयं के भीतर एक स्नेह की लहर अनुभव कर रहा था। यह उसके विचारों का मनुष्य था—उसके अपने बेटों से भी बढ़कर।

"मानवता के लिए एक चीज भुला दी गयी—" वह भारी आवाज़ में बोला—"एक ऐसी जगह होनी चाहिए थी, जहाँ कभी-कभी मनुष्य रुक कर यह देख सके कि वह कहाँ है। तब, वह अगर चाहे, तो वह वापस जाने और जो ज्ञान तथा बुद्धि उसने प्राप्त की है, उसके जरिये फिर से नये सिरे से सब-कुछ आरम्भ करने में समर्थ हो सके। हो सकता है, उस नियम के अंतर्गत, हम इससे अच्छा कर सकते थे—" उसने क्रैफोर्ड की ओर देखा—"किंतु जब मनुष्य एक रास्ते पर अपने पाँव रख देता है, उसे अंत तक की यात्रा करनी ही है। वह सिर्फ इतनी ही उम्मीद कर सकता है कि वह सीख को इकट्ठा करे और अपने पीछे वाले व्यक्ति को उसे सौंप दे। यह एक छोटी चीज है—इतनी छोटी कि यात्रा के उपयुक्त भी नहीं प्रतीत होती। लेकिन कोई भी मनुष्य बस इतना ही करने की उम्मीद रख सकता है।" उसने क्रैफोर्ड की ओर से निगाहें हटा लीं— "मैं सतर्क रहूँगा—उतना सतर्क, जितना सतर्क वे मुझे रहने देंगे।"

"मैथ्यू!" क्रैफोर्ड बोला।

"मुझे घर ले चलो, बेटे!" मैथ्यू ने अचानक सिलसिला तोड़ते हुए कहा—"घर ले चलो मुझे।"

क्रैफोर्ड ने उसके चेहरे की ओर देखा। तब उसने मोटर स्टार्ट की और

बिना चिकसा की ओर फिर देखे वे बढ़ते गये। मैथ्यू क्रैफोर्ड की बगल में कठोरतापूर्वक बैठा रहा। मोटर की यांत्रिक जड़ता के साथ वह अपनी इच्छा बलवती होते अनुभव कर रहा था। क्रैफोर्ड ने जो उसे नयी घाटी दिखायी थी, उसकी स्मृति उसके दिमाग में धुँधली पड़ती जा रही थी और उसे जो काम करने थे, जो रास्ता अख्तियार करना था, उसकी जानकारी से उसमें पुनः निश्चितता की भावना आ गयी थी। घाटी के प्रति प्यार—अपने पिता, अपने बेटे, अपनी बेटियों और क्रैफोर्ड के प्रति प्यार—यह सब जिम्मेदारी और महत्व की चीज नहीं थी। बस कर्तव्य और उसकी माँग ही सर्वोपरि थी। रास्ता उसके सामने स्पष्ट था और उसका अंत वह नहीं देख पा रहा था। वह फिर अपनी यात्रा में डगमगायेगा नहीं।

क्रैफोर्ड ने मिट्टी के बाँध के सामने गाड़ी खड़ी कर दी और मैथ्यू जल्दी से उतर पड़ा। उसकी प्रवृत्ति पुनः घाटी की ओर अंतर्मुखी हो गयी थी। वह अपने बूढ़े पिता के बारे में सोचता हुआ क्रैफोर्ड से दूर जाने लगा। उसका बूढ़ा पिता अब तक अंगीठी की बगल में अपनी कुर्सी में लेटा होगा। उसने नाश्ता कर लिया होगा और उसे पचा रहा होगा। यही वह समय है।

काफी दिनों से उसने अपने बूढ़े पिता के पास आना बन्द कर दिया था। वह ठीक दरवाजे के भीतर क्षण भर को ठिठका और अंगीठी की ओर उसने नजर डाली। उसका बूढ़ा पिता अपनी कुर्सी में बुढ़ापे की तीव्र उनींदी थकान से सो रहा था। मैथ्यू उसके पास यों पहुँचा, जैसे वह मृत्यु की खोज के निकट पहुँच रहा हो।

"पापा!" वह बोला।

उसका बूढ़े पिता में हलचल नहीं हुई और मैथ्यू ने बड़ी कोमलता से उसके ऊपर अपना हाथ रख दिया—"पापा!"

उसके बूढ़े पिता ने हाथ का यह स्पर्श अनुभव किया। उसने अपनी आँखें खोलीं, जो उम्र और नींद से धुँधली हो गयी थीं और शीघ्र ही एक भय उसकी बूढ़ी रगों में दौड़ गया। वे उसे अब, दिन या रात, कभी नहीं जगाते थे और इस तरह जगाये जाने से उसमें जीवन की सिहरन व्याप्त हो गयी।

"क्या है?" उसने रुकते हुए फुसफुसा कर कहा—"है क्या?"

मैथ्यू एक कुर्सी पर बैठ गया। "आप कैसे हैं पापा?" उसने पूछा।

लेकिन उसका बूढ़ा पिता आग की उष्ण लपटों की लोरी से फिर ऊँघने लग गया था। उसके दुर्बल हाथ एक दूसरे के ऊपर उसकी गोद में रखे थे, उसका

सिर नीचे लटक आया था और उसका मुँह खुला था, जिससे होकर उसके पीले, पर अभी तक मजबूत दाँत दिखायी दे रहे थे। कोई लाभ नहीं था। मैथ्यू उठ खड़ा हुआ। वह वहाँ से जाने को तैयार हो चुका था, यद्यपि वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा था।

उसके बूढ़े पिता ने बड़ी कठिनाई से अपना सिर ऊपर उठाकर उसकी ओर अपनी धुँधली नीली आँखों से देखा। "अच्छा हूँ, बेटे!" वह बोला—"अच्छा हूँ।"

मैथ्यू ने स्वयं के भीतर निराशा अनुभव की, जिससे अब तक वह काफी परिचित हो चुका था। जिस तरह से वह अपने बेटे तथा बेटियों से बातें नहीं कर सकता था, उसी तरह वह उससे भी बातें नहीं कर सकता था। उसे ताज्जुब हो रहा था कि पीढ़ियों के बीच डाली गयी यह गहरी खाड़ी सिर्फ एक की दूसरे से रक्षा करने के लिए ही थी—यह सुरक्षा क्या उस सहायता, जानकारी और सलाह से अधिक मूल्यवान थी, जो इस खाड़ी के बिना भी दूसरे को अधिक विश्वास के साथ सौंपी जा सकती थी।

"पापा!" वह बोला—"मैं घाटी छोड़ देने जा रहा हूँ। मैं उन्हें इसे अपने अधिकार में कर लेने दे रहा हूँ।"

यह सच नहीं था, निर्णय अभी भी नहीं किया गया था। उसने इस सम्भावना पर थोड़े-से में एक नजर-भर डाली थी, नयी घाटी को देखने तथा क्रैफोर्ड की बातों की सच्चाई से विचलित हो उठा था; किंतु वह इस विचार को सह पाने की क्षमता स्वयं में नहीं पा सका था। अब उसने ये शब्द कहे थे; इसलिए नहीं कि ये सही थे, बल्कि इसलिए कि वह जानना चाहता था कि इस तरह बिना किसी आदेश के उसके मुँह से उनका उच्चारण कैसा प्रतीत होता है। खैर, किसी भी रूप में, इस बात को अब काफी समय बीत चुका था, जब उसके बूढ़े पिता ने खाने, सोने के अलावा अधिक जटिल बातों के बारे में गहराई से सोचा भी हो!

सम्भवतः उसके पुराने खून में वसंत के नवजीवन का प्रभाव था, लोगों की भागदौड़ और व्यस्तता तथा उस बाँध-निर्माण का प्रभाव था, जिसे उसने देखा था अथवा अपने इस अत्यधिक पवित्र विश्राम से जगा दिये जाने की भय-भावना के हल्के प्रवाह का प्रभाव था; लेकिन कारण चाहे कुछ भी रहा हो, मैथ्यू के बूढ़े पिता ने अपना सिर उठाया। उसके उठे सिर को सहारा देने के लिए उसकी गर्दन की रगें तन गयीं और उसने मैथ्यू की ओर देखा।

"घाटी को छोड़ रहे हो?" वह तीखे स्वर में बोला—"यह घाटी को छोड़ने का क्या मामला है?"

मैथ्यू स्तम्भित रह गया। वह अपनी जगह पर आगे की ओर झुक आया और उसने अपने बूढ़े पिता की आँखों में एक तीव्र बुद्धिमत्ता झाँकती देखी—किसी गिलहरी की आँखों के समान ही! वर्षों से यह चमक उन आँखों में दिखायी नहीं दी थी और इसे देखकर वह खुश था। उसे ऐसा लग रहा था कि इस दिन में अचानक ताज़गी आ गयी थी, उसका भार हल्का हो गया था; क्योंकि वह अब इसे कह सकता था। वह सारी बातें कह सकता था और उसका पिता उन्हें सुन सकता था! उसका पिता ध्यान से सुनेगा और तब अपने अब तक के जीवन के अनुभवों से वह उसका जवाब भी पा लेगा—सीधा, सही और कठोर जवाब, जिसे पाने में मैथ्यू असमर्थ रहा था।

वह आगे की ओर झुक आया। हाथ अपने घुटनों पर रख लिये और अपने बूढ़े पिता के चेहरे पर नजरें गड़ा दीं। वह बिलकुल शुरू से ही सारी बातें बताने लगा। कमरे की निस्तब्धता में उसकी आवाज़ धीमी और काँपती थी। अपना सिर ऊँचा और सीधा उठाये, उसका बूढ़ा पिता सुनता रहा और इस प्रयास से उसकी गर्दन की रगें तन आयी थीं।

काफी लम्बी दास्तान थी—शायद बहुत लम्बी। या शायद उसके बूढ़े पिता की कमजोरी में इसका भार बहुत अधिक था। कोई भी कारण रहा हो, मैथ्यू आगे की ओर झुककर बैठा, उसके बोलने की प्रतीक्षा करता रहा और इसके बजाय उसने उसकी आँखों की चमक गायब होते देखी, उसकी माँसपेशियों को शिथिल होते देखा और उसका सिर पुनः छाती की ओर आगे लटक आया। वह स्तम्भित-सा निहारता रह गया। वह समझ गया था कि उसका बूढ़ा पिता अचानक ही हल्की तंद्रा और जड़ता के वशीभूत हो गया था और अपनी कुर्सी में झुककर बैठा उसका दुर्बल, जीर्ण शरीर ऐसा शिथिल हो गया था, जैसे मैथ्यू ने कभी उससे एक शब्द भी नहीं कहा था।

मैथ्यू कुछ और अधिक कहने से डर रहा था। वह अपना मुँह खोलते हुए डर रहा था। लेकिन उसकी निराशा की भावना ने उसे अपने बूढ़े पिता को बलपूर्वक उसकी उम्र की कमजोरी से निर्दयता के साथ उठाने को बाध्य कर दिया। उसके बूढ़े पिता के जीर्ण मस्तिष्क की तहों के पीछे ही कहीं-न कहीं उसका उत्तर था और वह मैथ्यू को मालूम होना ही चाहिए। उसे मालूम होना ही चाहिए।

"पापा!" वह उतावली के साथ हताश-सा बोला—"पापा! मुझे बताओ, मैं क्या करूँ। पापा......"

उसके बूढ़े पिता का सिर फिर ऊपर उठने लगा। लेकिन उसने मैथ्यू की ओर नहीं देखा। उसने सिर ऊपर उठाया और मैथ्यू उसकी गर्दन की रगों को धीरे-धीरे तनते देखता रहा। वह देख रहा था कि उसका बूढ़ा पिता किस तरह जोर लगाकर कहने का प्रयास कर रहा था। अगर वह इसे सिर्फ कष्ट दे सके—सिर्फ एक बार—कमजोर-सी फुसफुसाहट में भी, तो मैथ्यू उसे सुन लेगा और उसका पालन करेगा।

दुर्बल, लटक आये जबड़ों के ऊपर, होंठ हिले। "घाटी—" उसके बूढ़े पिता ने कहा—"डनबार-घाटी......"

मैथ्यू स्वयं में तनाव की भावना अनुभव कर रहा था—कड़े तनाव की—उसकी बात सुनने की, समझने की और उसे पूरा करने का तनाव! उसके बूढ़े पिता के मुँह पर दृढ़ता की रेखा खिंच आयी। वह अनिश्चित-सा धीरे-धीरे कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ। वह आगे बढ़ने के प्रयास में लड़खड़ाया और मैथ्यू भी उठ पड़ा। उसने उसकी सहायता के लिए हाथ बढ़ाया; लेकिन उसके बूढ़े पिता ने दुर्बल रोष के साथ उसे दूर ही रहने का संकेत किया। वह उस चौड़े फर्श पर आगे बढ़ने लगा। बिस्तर उसे बहुत दूर लग रहा था—इतनी दूर कि वह अपने जीवन में वहाँ पहुँच भी नहीं पायेगा। पर वह सिर उठाये देखता हुआ चलता रहा और अंत में, वह बिस्तर तक पहुँच गया। वह बिस्तर के किनारे पर बैठ गया और अपने कपड़ों को बदन पर से उतारने लगा, जब तक कि वह सिर्फ लम्बा-सा जांघिया-भर पहने नहीं रह गया। तब वह लुढ़क कर बिस्तरे के बीच में पहुँच गया, जहाँ वह पहले लेटा था और जो अभी भी गर्म था। उसने हाथ बढ़ाकर लिहाफ खींच लिये और बड़े भद्दे ढंग से उन्हें अपने ऊपर टेढ़ा-मेढ़ा डाल लिया। तब वह रुक गया। वह जान गया था कि अब वह अधिक कुछ नहीं कर सकेगा—यही पर्याप्त था।

उसने अपने पीड़ित बेटे की ओर आँखें उठायीं। अपने सुलझे मस्तिष्क के भीतर सुदूर, जहाँ वह अपनी जुबान की और अधिक सहायता नहीं ले सकता था, वह सब जान गया था—सब-कुछ जान गया था और वह अपने बेटे की ओर सहानुभूतिपूर्ण नजरों से निहारता रहा। लेकिन वह एक बूढ़ा आदमी था, उसकी समझ स्वयं उसके ही परे थी और कुछ भी नहीं बच रहा था। सिर्फ एक ही चीज थी—उसकी स्वयं की चीज—मैथ्यू की नहीं—और यह मैथ्यू को अवश्य समझना चाहिए।

"मैथ्यू !" वह बोला। उसने अपनी आवाज़ की दुर्बलता अनुभव की और उसे ताज्जुब हुआ कि उसकी आवाज़ सुनी भी जा सकेगी—"मैथ्यू !"

मैथ्यू बिस्तरे के ऊपर, उसके करीब झुक आया। अभी भी उसके मन में वह उन्मत्त विश्वास वर्तमान था कि अपने बूढ़े पिता की अंतरतम की गहराइयों से उसे अपने प्रश्न का हल मिल जायेगा। "हाँ, पापा ?" वह बोला।

उसके पिता ने उसकी ओर गौर से देखा। "समय आ गया है—" वह क्षीण आवाज़ में बोला।

"क्या पापा ?" मैथ्यू बोला—"किसका समय आ गया है ?"

आकस्मिक यंत्रणा से उसके बूढ़े पिता ने तकिये पर अपना सिर लुढ़काया और तब वह रुक गया। वह अपने बिस्तर पर शांत और स्थिर पड़ा रहा। "मैं मर रहा हूँ।" वह बोला—"अब मेरे मरने का समय आ गया है।"

मैथ्यू उसके निकट खड़ा रहा। उसने उन शब्दों को सुन लिया। उसने उन्हें बार बार सुना, अपने दिमाग में प्रतिध्वनित होते सुना और यह ध्वनि नहीं कर सका कि ये वही शब्द नहीं थे, जिनकी उसने उसी तरह तलाश की थी, जैसे प्यासा आदमी पानी की तलाश करता है। ये ही वे शब्द होने चाहिए। पर ये वे शब्द नहीं थे।

कोमल हाथों से और एक ऐसी कोमलता से, जिससे मैथ्यू इधर बहुत दिनों से परिचित नहीं था, उसने लिहाफ सीधे करके अपने बूढ़े पिता के ऊपर ठीक से ओढा दिये और उसे अधिक आरामदेह स्थिति में लिटा दिया। "सो जाओ, पापा !" वह बोला—"अब वापस सो जाओ। आराम करो !"

उसके बूढ़े पिता ने सुना नहीं। अचानक ही अपनी थकी, निद्राविहीन रात्रि का अपने ऊपर पूरे वेग से असर अनुभव करते हुए मैथ्यू सीधा खड़ा हो गया। उसके सारे शरीर में थकान छा गयी, आँखों की पलकें भारी हो आयीं और वह मन-ही-मन बिस्तरे की सुखद चादर पर लिहाफ के नीचे की मादक उष्णता अनुभव भी कर रहा था—नींद की ओट में अपने इस अवांछित विश्व की ओर से मुँह छिपा लेने की उसकी इच्छा प्रबल हो उठी थी। लेकिन सोने का समय नहीं था। उसके लिए वह अस्थायी आश्रय भी नहीं मिल पायेगा।

किसी भी चीज के लिए अभी समय नहीं था—न बाँध के लिए, न और लोगों के लिए, न निर्माण-कार्य के लिए, न आर्लिस के लिए और न ही

अमरीकी मार्शल के लिए, जो कल उसके पास तक आ धमकेगा। वहाँ सिर्फ मृत्यु बच रही थी—मृत्यु, जिसने मकान के उस कमरे के बाहर की सब चीजों को रोक दिया था। संसार में यही एक महत्वपूर्ण चीज थी।

मैथ्यू बिस्तरे के पास एक कुर्सी ले आया और उस पर बैठ गया। अपने बूढ़े पिता के साथ-साथ वह प्रतीक्षा करने लगा।

प्रकरण पच्चीस

सारे दिन मैथ्यू बिस्तरे की बगल से हटा नहीं। वह चुपचाप कुर्सी पर बैठा रहा। कभी कभी अपनी खुरदरी, कड़ी उँगलियों से सिगरेट बना कर वह उसे पी लेता था। उसका वृद्ध पिता खामोश था, यद्यपि कुछ समय तक वह जगा था। पर उसकी आँखें ऊपर लगी थीं, जैसे कमरे में मैथ्यू की उपस्थिति की उसे खबर ही नहीं थी। तब वह फिर अपनी आँखें बंद कर लेता था। साँस लेने और छोड़ने के साथ-साथ उसकी हड्डियों का वह ढाँचा हिल उठता था। किसी मोटर के समान ही यह क्रिया जारी थी, जो, लगता था, कभी नहीं रुकेगी और बस।

एक बार, मैथ्यू वहाँ से उठा और रसोईघर में गया। हैटी वहाँ काम कर रही थी और आर्लिस मेज के निकट बैठी उसे काम करते देख रही थी। आर्लिस ने अब यह सब हैटी के ऊपर छोड़ दिया था। वह सिवाय प्रतीक्षा करने के अलावा और कुछ नहीं कर रही थी। वह यों प्रतीक्षा कर रही थी, जैसे यह भारी श्रम का काम हो। हैटी ने जब मैथ्यू को देखा, तो अपना काम रोक दिया।

"बैठ जाओ, पापा! एक कप काफी पी लो—" वह बोली।

"अभी मैं नहीं पी सकता—" मैथ्यू बोला। उसने पुनः आर्लिस की ओर देखा। लेकिन तब वह हैटी से बोला—"पापा मर रहे हैं, हैटी!"

उसने अपने चेहरे पर हाथ रख लिया। "मर रहे हैं?" बेवकूफों के समान, बिना कुछ समझे, वह बोली। तब वह समझ गयी। आर्लिस भी हिली और उसने मैथ्यू की ओर आँखें उठाकर देखा।

"बात क्या है उनके साथ?" वह बोली। घाटी में आने के बाद ये उसके मैथ्यू से कहे गये पहले अल्फाज थे—"वे ठीक तो थे......"

मैथ्यू ने अपना सिर घुमाया। "उन्होंने फैसला किया कि समय आ गया है—" वह बोला—"वे अंततः यह समझ गये कि शायद हमें घाटी छोड़ देनी पड़े। अतः मेरा खयाल है, उन्होंने सोचा कि, वे अभी मर जायें, तो ठीक!"

"आप ऐसा नहीं कर सकते कि—" हैटी व्यथित स्वर में बोली—"आप चुपचाप लेट रहें और इस संसार को त्याग दें।"

मैथ्यू ने पुनः उसकी ओर देखा। "हाँ!" वह शांतिपूर्वक बोला—"जब तुम काफी बूढ़ी हो गयी हो—जब तुम्हारा आत्मबल दृढ़ हो—तुम ऐसा कर सकती हो।"

और कोई शब्द समझाने के लिए थे ही नहीं। मैथू हिचकिचाया। वे दोनों अब उससे इतनी दूर जा चुकी थीं कि वह उन्हें अपनी पितृतुल्य वाणी से नहीं छू सकता था। किंतु उसे कोशिश करनी ही थी।

"इतना अफसोस मत करो—" वह बोला—"उन्हें वह सब-कुछ उपलब्ध था, जिसकी मनुष्य अपने जीवन में कामना कर सकता है। अधिक-से-अधिक वे कुछ वर्षों तक और जी सकते हैं—सम्भव है, उतने लम्बे अर्से तक नहीं भी जीवित रहें। अतः हमें उन्हें अपने समय और अपने ढंग से ही मरने देना है। उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें तत्पर रहना है और उसके साथ प्रतीक्षा करनी है। उन्हें अकेले नहीं मरने देना है।"

हैटी ने आर्लिस की ओर देखा, जैसे वह उम्मीद कर रही थी कि आर्लिस पुनः घर का काम सँभाल लेगी। लेकिन आर्लिस नहीं हिली। वह फिर प्रतीक्षा कर रही थी। क्रैफोर्ड की प्रतीक्षा कर रही थी। हैटी ने वापस मैथ्यू की ओर देखा।

"क्या चाहिए तुम्हें पापा?" वह बोली।

"कुछ भी नहीं।" वह मृदु स्वर में बोला—"कुछ नहीं, सिर्फ समय! हम सिर्फ प्रतीक्षा ही कर सकते हैं।" वह रुक गया। यह भावना अब उन सब में घर कर गयी थी। ताबूत, रुदन और अंतिम संस्कारों के समान ही घर-भर में मौत की यथार्थता छा गयी थी। मैथ्यू ने अपना सिर हिलाया। "मैं वहाँ भीतर रहूँगा—" वह बोला।

समय बीतता गया और वह काफी धीरे-धीरे बीत रहा था। दिन और रात के खाने के समय, हैटी अपने बूढ़े दादा के लिए खाना ले आयी और मैथ्यू ने उसे खिलाने की चेष्टा की। किंतु उसने खाने से इनकार कर दिया—बोलकर

या संकेत से नहीं, बल्कि जड़-निश्चल लेटे रहकर! वह उनकी आवाज़ नहीं सुन रहा था। उसके कान मृत्यु की आहट की ओर लगे थे और जीवित मनुष्यों की पुकार उसे सुनायी नहीं दे रही थी।

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही मैथ्यू ने खाना खाया और खा लेने के बाद उसने दूसरी सिगरेट पी। रसोईघर में हैटी सफाई कर रही थी और मैथ्यू को उसकी आवाज सुनायी पड़ रही थी। बाहरी बरामदे से कुछ आदमियों के बोलने की आवाज भी उसे सुनायी दे रही थी। बाँध की सतर्क चौकसी उसी प्रकार जारी थी, जैसे मैथ्यू वहाँ स्वयं उपस्थित था। लोग अपनी बारी आने पर अपना उत्तरदायित्व सँभाल ले रहे थे और दूसरा व्यक्ति राहत की साँस ले पाता था। सिर्फ एक ही परिवर्तन था उनमें कि जब वे पिछले बरामदे में पानी पीने के लिए भीतरी बरामदे से होकर गुजरे, तो वे मौन और शांत थे। उन्होंने मैथ्यू के बूढ़े पिता के मृत्यु-शय्या पर होने की बात सुन ली थी और वे दबे पाँवों चल रहे थे। वे बातें भी दबी-दबी आवाज़ में कर रहे थे।

रसोईघर का काम समाप्त कर, हैटी कमरे में दाखिल हुई। "कुछ देर मैं यहाँ बैठूँगी।" वह बोली।

मैथ्यू ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। "अपने बिस्तरे पर जाओ, बेटी! तुम्हें आराम की जरूरत होगी।"

हैटी ने उसकी ओर देखा—"क्या तुम नहीं चाहते कि मैं..."

मैथ्यू ने पुनः सिर हिलाकर इनकार कर दिया और हैटी वहाँ से चल पड़ी। पर मैथ्यू की आवाज़ ने उसे दरवाजे पर रोक दिया—"तुमने कहीं मार्क को देखा है?"

"नहीं!" हैटी ने अपना सिर हिलाया—"उसने रात का खाना नहीं खाया। मैंने आज सुबह से ही उसे नहीं देखा है।"

"उसे यहीं होना चाहिए—" मैथ्यू बोला और उसने अपना बदन उचकाया—"मेरा खयाल है, नाश्ते के लिया वह आयेगा। जाओ अब!"

हैटी चली गयी। मैथ्यू उठ खड़ा हुआ और बहुत देर से बैठे रहने के बाद उसने अपने हाथ-पैर हिलाकर उनकी जड़ता दूर की। फिर वह अपने बूढ़े पिता के ऊपर झुका। उसे ऐसा करने की जरूरत नहीं थी; वह जानता था कि उसका बूढ़ा बाप अभी जिंदा है। वह घड़ी की टिक्-टिक् के समान ही चलने वाली उसकी साँस सुन रहा था। वह फिर कुर्सी पर बैठ गया।

वह लगभग आधी रात तक अकेला बैठा रहा और तब उसके इस जागरण

में पुनः बाधा पड़ी। उसने दरवाजा खुलने की आवाज सुनी और आँखें उठाकर देखा तो आर्लिस थी। उसका चेहरा पीला, सफेद और सूना-सूना था।

"पापा!" वह फुसफुसायी–"अब जाकर थोड़ी देर सो लो। मैं यहाँ बैठूँगी।"

मैथ्यू ने उसके आने की उम्मीद नहीं की थी। सब काम हैटी पर छोड़कर, अपनी सारी शक्तियों को क्रैफोर्ड की प्रतीक्षा में केंद्रित कर वह बिलकुल आत्मलीन हो गयी थी, इसीसे।

"तुम्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं—" वह मृदु स्वर में बोला।

आर्लिस ने उसके सामने अपना सिर झुका लिया। "मैं चाहती हूँ—" वह बोली—"यह मेरा भी कर्त्तव्य है।"

मैथ्यू उसकी ओर कोमलता से देखता रहा। "जाओ और जाकर अपनी प्रतीक्षा करो।" वह बोला—"हम यहाँ देखभाल कर सकते हैं।"

आर्लिस अपने बूढ़े पितामह को देखने के लिए बिस्तरे के करीब चली आयी। लैम्प की पीली रोशनी में वह मृत ही प्रतीत हो रहा था—उसके नथुने लटके हुए थे, उसकी आँखें बिलकुल भीतर धँस गयी थीं। उसका मुँह खुल कर लटक आया था और उसके पीले दाँत दिखायी दे रहे थे। किंतु उसकी साँस की आवाज़ कमरे में बराबर सुनायी रही थी। वह मैथ्यू की ओर घूम पड़ी।

"मैंने हैटी के ऊपर सब-कुछ छोड़ दिया था और चली गयी थी—" वह बोली—"जब कि मुझे किसी ने ऐसा करने के लिए नहीं कहा था। मैं..." वह रुक गयी। जो वह अनुभव कर रही थी, उसे कह नहीं पा रही थी। उसे कहने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे और यह एक ऐसी छोटी-सी दुखांत घटना थी, जिसे अपने भीतर सहनशीलता और शक्ति की तरह अनुभव करने के बाद, वह मैथ्यू से नहीं कह सकती थी।

किंतु मैथ्यू जान गया था। प्रेम की ज्योति अभी भी स्थिरतापूर्वक उसके भीतर जल रही थी। शीघ्र ही एक दिन क्रैफोर्ड आयेगा और वह उसके साथ चली जायेगी। वह उसके काँपते-अटकते शब्दों का भार नहीं था। उसका मतलब सिर्फ यह था—स्वयं अपने दिमाग में भी मैथ्यू उसे नहीं कह पाया। लेकिन वह जानता था।

वह अपने बूढे पिता को छोड़कर जाना नहीं चाहता था। वह वहीं रहना चाहता था; क्योकि किसी भी क्षण उसका बूढ़ा पिता अपने शरीर की इस

कशमकश पर विजय पा ले सकता था। और जब वह मृत्यु के पाश में खिंच जायेगा, भयभीत हो उठेगा, तब मैथ्यू का वहाँ होना नितांत आवश्यक था। किंतु वह कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

"अच्छी बात है—" वह बोला—"बस थोड़ी देर के लिए। जितनी देर मैं बाहर थोड़ी ताजी हवा प्राप्त करता हूँ, उतनी ही देर।"

आर्लिस उसकी ओर कृतज्ञतापूर्वक देखती हुई, उसके स्थान पर, कुर्सी पर बैठ गयी। मैथ्यू उसकी ओर देखकर मुस्कराया और क्षणभर के लिए उसने सस्नेह उसके गाल का स्पर्श किया। आर्लिस हमेशा से स्वस्थ, सुंदर और रक्ताभ रही थी; लेकिन अब वह इतनी पीली पड़ गयी थी कि लैम्प की रोशनी में बिलकुल पीली-पीली लग रही थी।

"वह आयेगा—" मैथ्यू बोला "हम दोनों ही यह जानते हैं—जानते हैं न!"

उसने अपना हाथ हटा लिया और रात की ताजी ठंडी हवा का आनंद लेने बाहर निकल आया। उसके आदमियों में से कुछ वहाँ थे। उनके हाथ के सिगरेट के जलते सिरे अंधेरे में चमक उठते थे और मैथ्यू जब बरामदे के किनारे खड़ा होकर अंधेरे में उस बलूत-वृक्ष को देखने लगा, तो वे आदमी उसे चुपचाप देखते रहे।

"तुम्हारे पिता—" तब उनमें से एक ने कहा—"क्या वे..."

"वे अभी भी जीवितों के बीच हैं—" मैथ्यू बोला—"मैं नहीं जानता, कब तक..."

बातचीत की आवाज ने उनमें वार्तालाप की प्रेरणा जगा दी। "वे मर क्यों रहे हैं?" उनमें से एक आदमी ने पूछा—"परसों ही मैंने उन्हें देखा था और वे..."

"वे स्वेच्छा से मर रहे हैं—" मैथ्यू कठोरतापूर्वक बोला—"वे इसलिए मर रहे हैं कि वे मरना चाहते हैं।"

"जब तुम्हें मेरी जरूरत पड़े, मुझे बताना—" जान ने शांतिपूर्वक कहा, "तुम्हें कुछ आराम की भी जरूरत होगी, मैथ्यू!"

मैथ्यू ने मुड़कर अंधेरे में ही जान की ओर देखा। वह उसके बारे में बिलकुल ही भूल गया था। लेकिन जान उसका भाई था; वह भी उन प्राचीन डनबारों की एक संतान था। "मैं तो डनबारों में एक डनबार हूँ—" मैथ्यू ने सोचा और इस विचार से उसने राहत महसूस की—"मैं अकेला नहीं हूँ।"

"मैं तुम्हें बता दूँगा—" वह बोला।

एक दूसरे आदमी ने खाँस कर अपना गला साफ किया। "आज सुबह जब तुम गये थे, तो क्या तुमने कोई समझौता किया?" वह हिचकिचाते हुए बोला और उसकी आवाज़ में क्षमा-याचना का आभास था।

"नहीं!" मैथ्यू ने कहा—"वे कल सुबह दस बजे यहाँ होंगे।"

वे उससे कुछ और पूछना चाहते थे; लेकिन मैथ्यू की आवाज़ ने उन्हें रोक दिया। मैथ्यू ने आत्मरक्षा के लिए, दिनों के कठिन श्रम से बने उस बाँध की ओर देखा। उसे इतना कठिन श्रम करना पड़ा था कि उसने इस साल फसल भी नहीं उगायी थी। "जब लोग इसकी कहानी कहेंगे—" उसने सोचा—"निश्चय ही, वे इसे डनबार की भूल ही बतायेंगे।" और फिर भी यही उसकी एकमात्र आशा रही थी—आशा है। वह घूम पड़ा और उसके साथ ही बाकी व्यक्ति भी घूम कर उसे फिर से घर के भीतर जाते देखते रहे।

"जाओ अब..." वह आर्लिस से बोला—"मुझे सुबह में यहाँ तुम्हारी जरूरत पड़ेगी, जब कि मैं बाँध पर व्यस्त रहूँगा। अतः अब जाकर सो रहो।"

कुछ देर बाद जान भीतर आया और साथ बैठ गया। वे भाई-भाई अगल-बगल मौन बैठे प्रतीक्षा करते रहे और मैथ्यू ने पुनः मार्क के बारे में सोचा। उसने धीमी आवाज़ में जान से पूछा और जान ने वैसी ही धीमी आवाज़ में जवाब दिया कि वह नहीं जानता था—उसने मार्क को नहीं देखा था। तब घंटे-दो घंटे के बाद जान बाहर चला गया।

विनाश के कुछेक घंटों में, जब मृत्यु नजदीक होती है, उसी तरह मैथ्यू के बूढ़े पिता के शरीर में हरकत हुई। पहले वह खाँसा और उस कमरे में यह आवाज़ बड़ी अजीब-सी लगी। मैथ्यू कुर्सी से उठने लगा और उसके पिता ने अपना सिर बड़ी दुर्बलता से उसकी ओर घुमाया।

"मैथ्यू?" वह बोला।

"मैं यहाँ हूँ, पापा!" मैथ्यू बोला।

एक तनाव-सा अनुभव करते हुए मैथ्यू झुककर सुनने लगा। घर में चारों ओर बिलकुल नीरवता छायी थी। सब लोग सो रहे थे—कुछ बाहर बरामदे में चटाइयों पर और कुछ जैसे जान-कौनी तथा राइस-नाक्स के पुराने कमरों में। दोनों लड़कियाँ भी सो गयी थीं—सारी घाटी सो गयी थी और सर्वत्र गहरा सन्नाटा छाया था। उसके पिता का हाथ लिहाफों के बीच बेचैनी से सरका और मैथ्यू ने उस हाथ को अपने हाथों में ले लिया। उसके अपने गर्म

हाथों में वह हाथ उसे ठंडा और निर्जीव-सा लग रहा था।

"बहुत समय लग रहा है—" उसका पिता बुदबुदाया—"बहुत ज्यादा!"

"बात मत करो, पापा—" मैथ्यू ने अनुरोध किया—"तुम्हें बात करने की जरूरत नहीं है।"

उसका सिर तकिये पर लुढ़क गया और मैथ्यू ने सोचा—वह अब मृत्यु के निकट है। उसने दरवाजे की ओर देखा। वह सोच रहा था कि उसे दूसरों को बुलाना चाहिए या नहीं। लेकिन वह वहाँ से हिला नहीं। उसका पिता कुछ कहने की कोशिश कर रहा था और वह उसकी फुसफुसाहट सुनने के लिए उसके निकट झुक गया।

"बेड पैन!" उसका पिता कह रह था—"बेड पैन! (रुग्णावस्था में बिस्तरे के करीब ही शौच के लिए रखा जाने वाला बर्तन!)"

मैथ्यू वहाँ से जल्दी से चला। उसे लाने के लिए उसे रसोईघर में जाना पड़ा और खोजने की उतावली में वह फलों के बर्तनों से ठोकर भी खा गया। तब वह रहने के कमरे में वापस आया और उसने लिहाफों को वापस मोड़ दिया। उसने अपने पिता के अंडरवीयर के बटन खोल दिये और उसकी पीठ पर हाथ लगाकर उसने उसे उठने में सहायता दी, जिससे बेड पैन ठीक उसके नीचे आ जाये। उसका पिता बेड पैन के ऊपर झुककर बैठ गया और मैथ्यू ने फिर उसे लिहाफ ओढ़ा दिये, जिससे उसे सर्दी न लग जाये।

पौ जब फटी, तब भी वह जीवित था। मैथ्यू ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। उसने उसकी साँस के क्षीण होने—और क्षीण होने की आवाज़ सुनी थी और तब साँस ठीक चलने लगती और फिर क्षीण हो जाती। ऐसा लगता था, उसके बूढ़े पिता की इच्छा के बावजूद, प्राण शरीर का मोह त्यागने–उसे छोड़ने को तैयार नहीं थे। वह मैथ्यू से फिर नहीं बोला, बल्कि मौन स्वयं से संघर्ष करता रहा। कभी-कभी वह हिलता, मैथ्यू के हाथ पर उसके हाथ की पकड़ कुछ मिनटों के लिए कस जाती और तब यह पकड़ फिर ढीली हो जाती।

पौ फटने के समय ही मैथ्यू ने परिवर्तन लक्ष्य किया। इसका बूढ़ा पिता अब बिलकुल संघर्ष नहीं कर रहा था। वह बिलकुल निढाल-निर्जीव-सा पड़ा था और मैथ्यू के हाथ पर उसके हाथ की पकड़ नहीं रह गयी थी। मैथ्यू उसकी ओर देखते हुए उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर शांति छायी थी, आँखें मुँदी थीं। ऐसा लग रहा था, उसने मृत्यु को पाने के लिए एक नया रास्ता पा लिया था—इस बार सही रास्ता, जो उसे मृत्यु के पास एक प्रणयी के

रूप में ले जा रहा था और जिसके जरिये वह अपने शरीर को संघर्ष करते हुए मृत्यु के पास पहुँचाने के बजाय उसे निश्चेष्ट स्वीकार कर रहा था। लेकिन उसकी यह विजय धीमी थी। जब सूरज की पहली किरण का प्रकाश कमरे में आया, वह तब भी साँस ले रहा था।

सूरज के साथ-साथ जीवन ने फिर सिहरन पैदा की। लोग उठ गये थे और पिछले बरामदे में हाथ-मुँह धो रहे थे। वे रसोईघर में काफी पी रहे थे और दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे, प्यालियों और देगची की खड़खड़ाहट भी सुनायी दे रही थी। हैटी, आर्लिस और जान एक-एक करके कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने उस बूढ़े आदमी और मैथ्यू के थके चेहरे की ओर देखा और तब चले गये।

मैथ्यू को लगा कि जब तक रात फिर नहीं आती, उसका पिता नहीं मरेगा। वह कम-से-कम आज के दिन जीवित रहेगा। लेकिन वह निश्चित रूप से ऐसा नहीं कह सकता था, अतः वहाँ से हटकर आराम करने के लिए वह हिला नहीं। "काफी समय लग रहा है—" उसने धैर्य के साथ सोचा— "बहुत ज्यादा।" जल्दी ही अब दस बज जायेगा और उसे मौत और कर्तव्य के बीच, घाटी के बाहर होने वाले आक्रमण के लिए स्वयं को तैयार कर लेना चाहिए।

वह समय उसकी उम्मीद के पहले ही आ गया। नीचे सड़क पर, चेतावनी के रूप में बंदूक छूटने की आवाज़ सुनायी पड़ी और मैथ्यू ने सिर उठाकर उसे सुनने का प्रयास किया। दबे हुए सन्नाटे के बाद, मकान की ओर दौड़ते हुए पैरों की आहट सुनकर वह उठ खड़ा हुआ और तब उसे बरामदे में किसी के पैरों की धप-धप सुनायी दी। फिर किसी ने उसे पुकारा।

दरवाजे तक पहुँचकर उसने उसे खोल दिया।

"मैथ्यू चाचा—" राल्फ बोला—"नीचे एक आदमी वहाँ आपसे मिलना चाहता है। वही क्रैफोर्ड गेट्स!"

अभी भी बहुत सवेरा था। अभी दस नहीं बजा था। क्रैफोर्ड क्या चाहता था, वह क्या कहेगा, मैथ्यू जानता था। वह अपने दिमाग में उन शब्दों को सोच भी रहा था।

"कह दो उससे कि मैं बहुत व्यस्त हूँ—" वह बोला—"मैं अभी नहीं आ सकता।"

राल्फ चला गया और मैथ्यू घूमकर फिर कमरे में बिस्तरे के पास बैठने चला आया। लोगों ने खाना समाप्त कर लिया और भीतरी बरामदे से होकर

बाहर जाने लगे। मैथ्यू उनसे रहनेवाले कमरे के दरवाजे पर मिला और उसकी आवाज़ ने उनका आगे बढ़ना रोक दिया। वे घूमकर उसकी ओर देखने लगे।

"वे शीघ्र ही यहाँ आ पहुँचेंगे—" वह शांत-स्थिर स्वर में बोला— "अपनी बन्दूकें तैयार रखो। समय होने के पहले ही, मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

वह जानता था कि यह संकट-काल आ रहा है; फिर भी उसे एक आघात-सा लगा। वह जानता था कि उसका जाना जरूरी था और फिर भी वह जाना नहीं चाह रहा था। उसके बूढ़े पिता की मौत अब ज्यादा महत्वपूर्ण थी और जब तक यह खत्म नहीं हो जाता, उसे यहीं रहना चाहिए था। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता था। वह सिर्फ इतनी ही उम्मीद कर सकता था कि वहाँ जाकर फिर जल्दी से उसके मरने के पहले यहाँ आ जाये।

उसने आर्लिस का कंधा छूकर कहा—"मुझे जाना ही पड़ेगा। मुझे बुला लेना, अगर...कुछ भी क्यों न हो, मुझे बुला लेना।"

तब वह बाहर बरामदे में निकल आया और तेजी से अपने कर्तव्य-पालन की ओर बढ़ा। बाकी लोग बाँध पर आक्रमण का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार थे। वे वहाँ पेट के बल लेट कर बंदूक हाथ में लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। "मैं इन सबसे बहुत ज्यादा करने को कह रहा हूँ—" मैथ्यू ने सोचा— "बहुत ही ज्यादा।" उनके परे वह घाटी के मुहाने पर खड़ी मोटरों को देख रहा था। मोटरों के पीछे एकत्र आदमी भी उसे दिखायी दे रहे थे, जो भयभीत-से खड़े थे कि कहीं घाटी के भीतर से उनके बढ़ते ही गोली दागना न शुरू हो जाये। पहाड़ी के ऊपर से होता हुआ राल्फ तेजी से बढ़ा आ रहा था। वह सड़क पर से आ रहा था, जहाँ वह प्रहरी के रूप में मुस्तैद था और वह अपनी बंदूक अपने सामने किये दौड़ रहा था। वह मैथ्यू के निकट आकर नीचे लेट रहा।

"मेरा खयाल है, अब हम सब लोग यहाँ मौजूद हैं—" वह हाँफते हुए बोला—"मैंने और किसी को आते नहीं देखा।"

मैथ्यू ने बाँध के ऊपर की ओर चेहरा थोड़ा खिसकाया और उसने मोटरों के नजदीक खड़े व्यक्तियों की ओर देखा। क्रैफोर्ड के अलावा चार आदमी और थे। उनमें से एक विचित्र-सा शस्त्र लिये था। मैथ्यू नहीं पहचान सका कि वह अश्रु गैस छोड़ने वाली बंदूक थी। वह उन्हें देख ही रहा था कि वे

बाहर निकल आये और उसकी ओर बढ़ने लगे। एक लम्बा-तगड़ा, भारी शरीर वाला भूरे रंग का मनुष्य, आगे-आगे चल रहा था। बाँध से अपना चेहरा सटाकर लेटे मैथ्यू ने उस ओर देखकर अपने भीतर एक जकड़न-सी अनुभव की—तनाव महसूस किया। उसने अपना सिर घुमाया और उसने राल्फ को बाँध के ऊपर अपना सिर उठाते देखा। उसने रोषपूर्वक अपना हाथ हिलाया और राल्फ फिर नीचे खिसक कर नजरों की ओट हो गया। मैथ्यू ने वापस इस ओर बढ़ते उस व्यक्ति को देखा।

"अच्छी बात है!" वह शांत, स्पष्ट और जोरदार आवाज़ में बोला—"अभी वे लोग यहाँ से काफी दूर हैं।"

वे रुक गये। भूरे रंग का वह मनुष्य एक कदम, तब दो कदम बाकी लोगों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ा और मैथ्यू ने यह सोचकर बंदूक उठा ली कि वह उनके करीब आ रहा है। लेकिन तब वह भी रुक गया। वसंत की उस ताजी सुबह के तेज और गर्म सूरज की रोशनी में घटनाएँ बड़ी ढिलाई के साथ धीरे-धीरे घट रही थीं।

"मि. डनबार—" वहाँ खड़े उस लम्बे आदमी ने कहा—"मैं अमरीकी मार्शल विल्सन हूँ। यह मेरा फर्ज है कि मैं आपसे यह सरकारी सम्पत्ति खाली करा लूँ। मैंने आज दस बजे तक प्रतीक्षा की, जैसा कि मैंने मि. गेट्स को वचन दिया था। क्या आप घाटी को छोड़ने के लिए तैयार हैं?"

"मुझे थोड़े समय की और जरूरत है—" वह अवरुद्ध स्वर में बोला—"अगर आप मुझे एक दिन और दे सकते।"

मार्शल विल्सन ने उसकी ओर गौर से देखा। उसके कंधे के ऊपर से होती क्रैफोर्ड की नजर मैथ्यू के चेहरे पर आकर गड़ गयी। "क्या तुम तब शांतिपूर्वक घाटी छोड़ देने का वादा करोगे?" क्रैफोर्ड ने पूछा।

मैथ्यू ने उधर से आँखें हटाकर क्रैफोर्ड की ओर देखा और फिर वापस फुर्ती से मार्शल के चेहरे पर आँखें गड़ा दीं। "मैं कोई वादा नहीं करूँगा—" वह बोला। फिर वह दृढ़ स्वर में बोला—"मुझे एक और दिन की जरूरत है।"

"क्यों?" मार्शल ने रुखाई से पूछा।

मैथ्यू ने सिर हिलाकर घर की ओर संकेत किया—"मेरे पिता वहाँ मृत्यु-शय्या पर पड़े हैं।"

इस शब्दों ने उन्हें रोक दिया। किंतु मार्शल की आँखों में संदेह उतर

आया—"अगर आप मुझे अपना यह वचन देंगे कि......"

मैथ्यू ने इनकार में अपना सिर हिलाया।

"तब आज और कल में अंतर क्या है?" मार्शल ने कहा—"इसे टालने से कोई लाभ नहीं है।"

मैथ्यू को स्वयं विश्वास नहीं था कि उसकी बात मान ली जायगी। लेकिन उसे कोशिश तो करनी ही थी। वह बाँध की उस प्राचीर के पीछे जाने को मुड़ा और क्रैफोर्ड की अनुनय-भरी आवाज उसे सुनायी पड़ी।

"मैथ्यू! मुझे कम-से-कम आर्लिस को यहाँ से बाहर निकाल ले जाने दो।"

मैथ्यू रुका और मुड़ा! "वह अपने पितामह के पास बैठी है।" वह मृदु स्वर में बोला—"मुझे संदेह है कि वह अभी आयेगी।"

वह प्रतीक्षा करता रहा; लेकिन क्रैफोर्ड ने फिर कुछ नहीं कहा। उन्होंने एक-दूसरे की ओर समान असहाय भाव से देखा। मैथ्यू ने सोचा—"वह आ गया है। अब अधिक समय नहीं है।" बाँध के आश्रय में पहुँचने के लिए उसे कुछ ही कदम चलने की जरूरत थी; पर इसमें काफी समय लगता प्रतीत हुआ। घटनाएँ बड़ी धीमी गति से घट रही थीं। सम्भवतः यह धीमापन इसीलिए आ गया था कि हर आदमी उपद्रव शुरू करने का अनिच्छुक था—मानो अगर वे धीरे-धीरे सोचेंगे, धीरे-धीरे किसी निर्णय पर पहुँचेंगे और धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगे, तो परिस्थितियों की इस जंजीर के ठोस कार्य-रूप में परिणित होने के पहले ही इसे तोड़ने के लिए कोई घटना घट जायेगी।

जब वह बाँध के शीर्ष पर पहुँचा, उसने राल्फ को चिल्लाते सुना और किसी भीगी आतिशबाजी के समान उसे एक बंदूक छूटने की धीमी आवाज भी सुनायी दे गयी। वह झटके से घूमा और उसी क्षण उसने अपनी चमड़े की खोल से अपनी पिस्तौल बाहर निकाल ली। विचित्र-सी शकलवाली बंदूकवाला आदमी उनकी बातचीत के दौरान में, खिसक कर ऊपर उनके करीब पेड़ों के साये में आ पहुँचा था और वह अपना शस्त्र अपने कंधे से नीचे उतार ही रहा था। एक 'हिस'-सी आवाज और बाँध के उधर धप से कोई चीज गिरी।

"रोको उस आदमी को—" मैथ्यू बाँध पर कूदता हुआ चिल्लाया। जान ने तत्क्षण उठाकर बंदूक चलायी और वह डिपुटी उनसे दूर, ओट में छिप गया। मैथ्यू के पीछे गिरे गोले से उजली-सी गैस फूट निकली। लेकिन यह उनकी ताकत के बाहर की चीज हो गयी थी और तेज हवा गैस को अपने साथ चारों ओर उड़ा ले जा रही थी।

उनमें से एक आदमी खाँसा। "क्या चीज है यह?" वह भयभीत स्वर में बोला—"क्या करने की कोशिश कर रहे हैं वे......"

मैथ्यू ने अपने नथुनों के भीतर एक तीखी घुटन महसूस की। "अश्रु गैस!" वह चिल्लाया—"यह तुम्हारे फेंफड़ों में पहुँचा और तुम किसी छोटे बच्चे के समान आँखों से आँसू बहाते नजर आओगे। मिट्टी में अपना मुँह छिपा लो और मुँह जमीन में गाड़े रखकर ही सांस लो।"

जैसा उनसे कहा गया था, फुर्ती से उन्होंने वैसा ही किया। चारों ओर नजर रखने के लिए मैथ्यू ने बाँध के ऊपर की ओर अपना चेहरा उठाया। एक बार वह खाँसा और उसकी आँखों में पानी आ गया। लेकिन उस तेज हवा के लिए वह गैस बहुत पतली थी और वह उन्हें अधिक नुकसान नहीं पहुँचा सकी। मैथ्यू नीचे उतरा और उसने अपनी बगल के आदमी से राइफल ले ली। तब वह फिर बाँध के ऊपर खुले में आ गया और अपने दुश्मनों की ओर देखकर गरजा।

"मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहे हो—" वह चिल्लाया—"तुम बातें करने के लिए आगे बढ़ते हो और तब......" उसने फुर्ती से राइफल अपने कंधे से लगाई और एक मोटर के सामने के शीशे का निशाना लेकर ट्रिगर दबा दिया। उसकी इस अचानक की हरकत से, जितने डिपुटी थे, वे तुरत ही नजरों से ओट होकर दबक गये। राइफल से निकली आवाज रूखी और कड़ी थी। और तब मैथ्यू को हँसना पड़ा—जिस मोटर पर उसने निशाना लगाया था, वह क्रैफोर्ड की थी।

तब यह सब रुक गया। वह रुक गया, जैसे वे सब, यहाँ तक कि मार्शल भी, इस प्रकार अचानक बंदूक चलायी जाने से स्तम्भित हो गये थे। मैथ्यू ने सावधानीपूर्वक अपना सिर इधर-उधर खिसका कर अश्रु-गैस-बंदूक वाले डिपुटी की तलाश की। वह उसे नहीं देख पा रहा था और वह परेशान था। उसने अपने पीछे पड़े उस गोले की ओर देखा, जो कुछ देर पहले छोड़ा गया था। अब जमीन पर बिलकुल नीचे, बहुत थोड़ी-सी गैस बाकी रह गयी थी और उसे भी हवा छितरा दे रही थी। "अच्छी बात है—" वह बोला—अब तुम लोग ऊपर आकर ताजी हवा में साँस ले सकते हो।"

उसने मकान से आती आर्लिस की आवाज़ सुन ली। पीड़ा-से ऐंठता हुआ-सा वह घूम पड़ा। अचानक वह अपने भीतर अस्वस्थता अनुभव कर रहा था और सोच रहा था—"वे मर गये। वे मर गये, जब कि मैं..."

"पापा!" आर्लिस ने पुकारा। अपने दोनों हाथों को मुँह के सामने मिलाकर वह पुकार रही थी—"पापा! जल्दी आओ।"

वह बाँध के ऊपर से नीचे उतर आया और उसने संकेत से जान को अपने पास बुलाया। "मुझे घर तक जाना ही पड़ेगा—" वह जल्दी-जल्दी बोला—"अगर वे इधर हमारी ओर बढ़ें, तो तुम बंदूक चलाना शुरू कर दो। जब तक मैं वापस नहीं आ जाता, तुम्हें उन्हें रोके रखना है।" उसने जान के सफेद पड़ गये चेहरे की ओर देखा—"क्या तुम यह कर सकते हो? यह निर्णय तुम्हें स्वयं करना होगा कि कब पहली गोली छोड़ी जाये।"

जान ने सिर हिलाकर सहमति जतायी।

"जितनी जल्दी हो सकता है, मैं वापस आ जाऊँगा।"

इससे अधिक के लिए समय नहीं था। वह दुबक कर बाँध के साथ-साथ भागने लगा। वह मार्शल को इसका पता नहीं लगने देना चाहता था कि वह वहाँ नहीं है। वह निकट की पहाड़ी से होकर दौड़ता हुआ मुर्गियों के दरबे के पीछे पहुँच गया। वह भीतरी बरामदे से होकर गुजरा और रुक गया। आर्लिस अभी भी बरामदे में खड़ी बाँध की ओर देख रही थी।

"आर्लिस!" वह आतुर स्वर में बोला।

वह चौंककर घूम पड़ी।

"क्या बात है?"

"वे तुम्हें पुकार रहे हैं—" वह बोली "वे..."

मैथ्यू अधिक सुनने के लिए रुका नहीं। उसने रहने वाले कमरे का दरवाजा खोल कर भीतर प्रवेश किया। हैटी बिस्तरे के निकट खड़ी थी और अपने दोनों हाथों को रह-रह कर मरोड़ रही थी। मैथ्यू का बूढ़ा पिता बड़ी बेचैनी से तकिये पर सिर पटक रहा था। मैथ्यू उसके ऊपर झुका।

"पापा!" वह बोला—"पापा!"

उसके बूढ़े पिता की आँखें धीरे-से—बहुत धीरे से खुलीं। "मैथ्यू?" वह बोला। उसकी आवाज़ दुःखभरी और अस्पष्ट थी।

"हाँ, पापा!" मैथ्यू धैर्य के साथ बोला—"मैं यहीं हूँ।"

"मेरे पास रहो, बेटे!" उसका पिता फुसफुसाया—"मेरे पास..." उसकी आँखें फिर बन्द हो गयीं और उसकी आवाज टूट गयी।

मैथ्यू कुर्सी में धँस गया। उसने आर्लिस और हैटी की ओर देखा और अपने सिर से रसोईघर की ओर संकेत किया। उसके इशारे पर उन्हें अकेला

छोड़कर वे चली गयीं। मैथ्यू ने वापस अपना ध्यान अपने पिता की ओर लगाया। उसने अपना सारा ध्यान वहीं केंद्रित कर लिया और अपनी अवचेतना में भी वह घाटी के मुहाने की ओर से किसी बन्दूक की आवाज़ सुनने की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। इस मौत की बगल में वह महत्वहीन और तर्कहीन था—अप्रासंगिक था। लिहाफ के ऊपर उसके बूढ़े पिता ने बड़ी दुर्बलता से हाथ फिराया और मैथ्यू ने उसका वह हाथ अपने दोनों हाथों के बीच ले लिया। उसका पिता मुस्कराया, उसके धँसे जबड़ों के ऊपर काँपते हुए होंठ खुले और वह फिर शांत-निश्चेष्ट हो गया।

मैथ्यू नहीं जान पाया कि कितनी देर तक वह प्रतीक्षा करता रहा। वहाँ बिलकुल शांति छायी थी, मानो बाँध पर के आदमी भी मृत्यु की आसन्नता से परिचित हो गये थे। पूरी घाटी अपनी साँस रोके नीरव, मैथ्यू के बूढ़े पिता के साथ, प्रतीक्षा कर रही थी। कोई आवाज नहीं, उस पुराने मकान में तनिक-सी कोई आहट नहीं और न ही किसी बंदूक के धमाके ने रात्रि-सी उस निस्तब्धता को भंग किया।

मैथ्यू को यह नहीं पता चल सका कि उसका बूढ़ा बाप कब मर गया। वह शांत-निश्चेष्ट लेटा था और उसकी साँस की खरखराहट नियमित रूप से स्वाभाविक ढंग में सुनायी दे रही थी। किंतु उन्हें क्षणों के बीच एक क्षण में, उसकी साँस की खरखराहट और धड़कन की आवाज़ रुक गयी। मैथ्यू उसका हाथ पकड़े अनिश्चित समय तक उसकी नाड़ी की गति का पता लगाता रह गया और तब उसे भान हुआ कि उसके जीवित होने की सूचना देने वाली आवाज़ रुक गयी है।

मैथ्यू ने चौंककर सिर उठाया, जैसे कोई उसकी ओर चिल्लाकर बोला हो और तब वह जान गया। वह खड़ा हो गया और झुककर उसने अपने बूढ़े पिता की दुर्बल छाती पर कान लगाकर हृदय की धड़कन सुनने का प्रयास किया। जवाब में नीरवता ही मिली। मैथ्यू सीधा खड़ा हो गया। उसने बड़ी कोमलता से उसकी दोनों बाँहें उठायीं और उसकी छाती पर उन्हें क्रास बनाते हुए रख दिया। वह कुछ भी नहीं अनुभव कर रहा था—बस एक प्रकार की मुक्ति, जो स्वयं उसके जरा-जीर्ण पिता ने भी निश्चित रूप से अनुभव की होगी। अपने बूढ़े पिता के समान ही, मृत्यु का यह भारी बोझ मैथ्यू भी अब तक ढो रहा था। उसने चमड़े का अपना पर्स निकाला और काँपती उँगलियों से उसमें से दो अच्छे डालर निकाल लिये। उसने मृत व्यक्ति की पलके बंद कर

दीं—वे आधी खुली हुई थीं और आँखों की निर्जीव सफेद पुतली दिखायी दे रही थी। फिर उसने वे दोनों सिक्के उन पलकों को बंद रखने के लिए उन पर रख दिये।

तब वह बिस्तरे की ओर से मुड़ा। चलकर रसोईघर के दरवाजे तक पहुँचा और उसने दरवाजा खोल दिया। उसके दिखायी देते ही हैटी और आलिस ने उसकी ओर नजरें उठायीं और मैथ्यू उन्हें गम्भीरतापूर्वक देखता रहा। "बच्चो!" वह बोला—"तुम्हारे दादा मर गये।"

वह उन्हें देखता रहा कि कहीं उन्हें उसकी जरूरत तो नहीं पड़ेगी। लेकिन वे इस आघात के नीचे शांत बैठी रहीं। वे इसकी उम्मीद कर रही थीं; फिर भी यह आकस्मिक था; क्योंकि मृत्यु का समाचार हमेशा आकस्मिक होता है। तब उन्होंने नीचे मेज पर अपने सिर रख लिये और रो पड़ीं। ठीक थीं वे। मैथ्यू ने अपने सामने दरवाजा बंद कर दिया और तब वह रहने वाले कमरे से होकर आगे बढ़ा। वह बिस्तरे की ओर नहीं देख रहा था और अब बंदूक चलने की आवाज़ सुनने की ओर कान लगाये था। उसने अपनी साँस रोक रखी थी, जैसे कि अब गोली चलने की आवाज निश्चय ही सुनायी देगी; क्योंकि मौत की प्रतीक्षा खत्म हो चुकी थी। किंतु वह घर के बाहर निकल आया और उसके कानों में कोई आवाज़ नहीं पड़ी। वह बाँध की ओर बढ़ा और उसके कानों में कोई आवाज़ नहीं आयी। उसे आते देख सब लोग घूम कर उसकी ओर देखने लगे। वह सीधा जान की ओर गया। उसने मार्शल और उसके डिपुटियों की नजर से स्वयं को छिपाने का प्रयास नहीं किया। वह ठीक उनके निशाने के सामने से हो कर चल रहा था।

"जान।" वह नम्र स्वर में बोला—"तुम्हारे पिता मर गये। कुछ ही मिनटों पूर्व उनकी मृत्यु हुई है।"

उसने जान के चेहरे पर संताप की यंत्रणा उभरती देखी। उसने उधर से नजरें हटकर दूसरे व्यक्ति की ओर देखा, जो उसका पहला चचेरा भाई था।

"वाल्टर!" वह बोला—"क्या तुम घर जाकर उनकी उचित व्यवस्था करोगे? उन्हें नहला देना, उनकी दाढ़ी बना देना और..."

"निश्चय ही, मैथ्यू—" वाल्टर ने कहा। उसने अपनी बंदूक दूसरे व्यक्ति को दे दी और तेजी से वहाँ से चला गया।

बाँध के ऊपर से मैथ्यू ने मोटरों की ओर देखा। उसने एक गहरी साँस ली। वह ढलान पर से होता हुआ मार्शल और उसके आदमियों की ओर

बढ़ा। उसने क्रैफोर्ड को खड़े हो अपनी ओर देखते देखा और तब वह फिर उसकी नजर से छिप गया। मार्शल भी खड़ा हो गया और अपने आश्रय-स्थल से दूर हट गया।

"क्या चाहते हो तुम अब?" वह कठोर स्वर में बोला।

मैथ्यू ने उसकी उपेक्षा कर दी। "क्रैफोर्ड!" वह बोला—"तुमने मुझसे कल सच्चा वादा किया था—किया था न? तुमने जो मुझे घाटी दिखायी, वह मैं खरीद सकता हूँ।"

"हाँ!" क्रैफोर्ड बोला। प्रसन्नता के आवेग से उसकी आवाज़ ऊँची हो गयी—"तुम्हारी ओर से मैंने उसे रोक रखने के लिए स्वयं ही एक किश्त भी अदा कर दी थी। सरकार वह जमीन बेच रही है और मैं इसका निश्चय कर लेना चाहता था कि......"

मैथ्यू ने बाकी बातें नहीं सुनी। उसने वापस अपना चेहरा मार्शल की ओर घुमाया। "मार्शल विल्सन!" वह मानभरे स्वर में बोला—"अगर आप मुझे अपने मृतक को दफनाने और अपना सामान हटाने का समय देंगे, तो मैं यह घाटी सौंप दूँगा।"

"मैथ्यू!" क्रैफोर्ड ने कहा। उसकी आवाज़ रुँध गयी। लगा, वह रो देगा। लेकिन वह मर्द था और वहाँ खड़े मर्दों के बीच वह रो नहीं सकता था। वह उसकी ओर एक कदम बढ़ते हुए सिर्फ एक ही शब्द कह सका—"मैथ्यू!"

मैथ्यू मार्शल की ओर देखता रहा।

"निश्चय ही—" मार्शल विल्सन ने कहा। उसकी आवाज़ में राहत थी—"जितना भी समय आपको चाहिए......"

मैथ्यू तब क्रैफोर्ड की ओर देख सका। "आर्लिस के पास जाओ, बेटे!" वह बोला—"उसे तुम्हारी जरूरत है। जाओ अब।"

क्रैफोर्ड चल पड़ा। मैथ्यू के इन शब्दों से कमान से छूटे तीर के समान वह चला। इतने लोगों की नजरों के बीच वह दौड़कर आर्लिस के पास नहीं जा सकता था। लेकिन वह बड़ी द्रुत गति से घाटी में बढ़ा, जिसमें उसके प्रवेश पर अब तक एक रोक लगा रखी गयी थी।

मैथ्यू को अपने नितम्ब पर लटकती पिस्तोल भारी लगने लगी। उसने बेल्ट खोलकर उसे अपनी कमर से निकाल लिया। एक हाथ से उसने चमड़े की थैली में रखी पिस्तौल पकड़ रखी थी। तब वह घूमा और बाँध की ओर

देखने लगा। "अपनी बंदूकें नीचे रख दो, भाइयो—" उसने पुकार कर कहा। उसे अपने कंठ में कोई चीज जकड़ती-सी महसूस हुई—एक सख्त पकड़, जैसे उसके अंतरतम में कोई चीज इन शब्दों का गला घोंटने का प्रयास कर रही थी। लेकिन उसने अपना गला साफ कर लिया और उसके बोलने में अल्पकाल के लिए ही रुकावट पड़ी—"अपनी बंदूकें नीचे रख दो। अब सब समाप्त हो चुका है।"

प्रकरण छब्बीस

वे मार्क को नहीं पा सके। जब मैथ्यू ने पुनः उसके बारे में पूछने की बात सोची, तब किसी को यह याद नहीं आ रहा था कि उसने उसे देखा था। उन्होंने घर भर में तलाश की; पर सफलता नहीं मिली और तब मैथ्यू ने खलिहान में जाकर उसकी तलाश करने की बात सोची कि कहीं वह पीपे से व्हिस्की पीकर नशे में धुत न पड़ा न हो। जब उसने खलिहान के कुटीर का दरवाजा खोला, तो व्हिस्की की कड़ी गंध उसे छू गयी और उसने बगल में ही पीपे को लुढ़का देखा—नाक्स ने पिछली बार जो व्हिस्की बनायी थी, उसका जो भी थोड़ा हिस्सा बचा था, वह फर्श पर बह चुका था। मार्क भी वहीं था—मकई के उस ढेर में आधा गड़ा, छितराया पड़ा था।

मैथ्यू कुटीर के भीतर मकई के उस ढेर पर चढ़ गया और उसने मार्क को उलट कर सीधा किया। पहले उसके मन में डर समा गया था कि मार्क मर चुका है—वह इतना निर्जीव-सा पड़ा था। तब उसने देखा कि वह सिर्फ व्हिस्की के नशे में अचेत है; टिन का प्याला अभी भी उसके हाथ में लटक रहा था।

"मार्क!" वह बोला—"मार्क!"

मार्क के शरीर में तनिक भी हलचल नहीं हुई। तब उसने आँखें खोलीं और धुँधली-धुँधली नजरों से मैथ्यू की ओर देखा। उसके होंठ हिले; पर वह बोला कुछ नहीं। मैथ्यू ने जोर लगाकर उसे उठा कर बैठा लिया।

"मार्क!" वह तीखे स्वर में बोला—"पापा मर गये। कुछ ही देर पहले पापा मर गये।"

मार्क का सिर लटक आया और वह फिर नीचे लुढ़कने लगा। मैथ्यू ने उसे छोड़ दिया और खड़ा उसकी ओर देखता रहा। उसे उसकी हालत पर

अफसोस हो रहा था। तब अनंत धैर्य और विनम्रता के साथ वह उसे उठाकर खलिहान से बाहर कुएँ तक ले आया। वहाँ उसने उसके सिर पर खूब पानी डाला और मार्क की हालत ऐसी हो गयी कि वह घर तक जाकर अपने बिस्तरे पर लेट जा सके। मार्क बिना यह जाने कि उसका पिता आज दफनाया जायेगा, नींद की गोद में चला गया।

उन्होंने उस बूढ़े आदमी को बड़े साधारण तरीके से दफनाया। अब अगल-बगल में बहुत ज्यादा लोग नहीं रह रहे थे—सिर्फ उनके ही परिवार-भर के लोग थे। बाँध के लिए आये हुए लोग, जिनमें अधिकांश डनबार ही थे और क्रैफोर्ड। धर्मोपदेशक मृतात्मा की शांति की कामना करने के लिए आया। जल्दी के बावजूद मैथ्यू ने इस बात पर जोर दिया।

उन्होंने उस बूढ़े आदमी को बड़े साधारण तरीके से, उसी तीसरे पहर दफना दिया। राइस के शव-संस्कार की तरह घर में कोई संस्कार नहीं मनाया गया। इसके बजाय वे सीधे परिवार की कब्रगाह में पहुँचे, जहाँ लोगों ने उन्हीं फावड़ों से एक कब्र खोद डाली थी, जो कल तक घाटी के मुहाने पर बाँध की उस निरर्थक प्राचीर पर मिट्टी फेंक रहे थे। साल में यह दूसरी बार मैथ्यू फिर ताबूत ले जाने वाली गाड़ी के पीछे-पीछे चल रहा था। राइस के शव के साथ चलते समय, उसके कदम जिस दृढ़ता के साथ धीरे-धीरे उठते थे और वह जिस प्रकार स्वयं पर नियंत्रण किये हुए था, उसी प्रकार की स्थिति आज भी थी। सभी परिवारों का अंत में यही रास्ता है। जब से उसकी पत्नी मरी थी, तब से काफी लम्बे अर्से तक उसे कब्रगाह में आने की कोई जरूरत नहीं पड़ी थी—सिवा साल में एक बार के, जब वह यों ही देखभाल करने के लिए उधर आ निकलता था। और अब, एक साल से भी कम की अवधि में, दो बार यह दुःख और मान-भरे कदमों से यहाँ आया था।

उसके साथ हैटी थी, आर्लिस थी और क्रैफोर्ड था। आर्लिस और क्रैफोर्ड साथ-साथ चल रहे थे और आर्लिस उसके हाथ से यों कस कर सटी हुई थी, जैसे वह अपने और उसके बीच एक बाँह-भर से अधिक की दूरी नहीं सह पायेगी। जब गाड़ी तार के उस टूटे घेरे से गुजरी, तो कब्र की बगल में खड़े लोगों ने अपने हैट उतार लिये। वे हटकर दूर खड़े हो गये, जैसे पसीने से लथपथ उनकी उपस्थिति इस पवित्र संस्कार को दूषित बना देगी, जब कि दूसरे लोगों को स्नान कर के अपनी रविवारीय पोशाक पहनने का मौका मिल चुका था।

मैथ्यू के दिमाग में एक विचार उठा और वह क्रैफोर्ड की ओर मुड़ा। "पानी इतना ऊँचा तो आयेगा नहीं—आयेगा क्या ?" वह बोला।

क्रैफोर्ड ने सिर हिलाया—"नही! पानी सिर्फ ढलान की आधी दूरी तक ही ऊपर आ पायेगा—" उसने मैथ्यू की ओर देखा—"अगर तुम चाहो, तो टी. वी. ए. तुम्हारी ये कब्रें यहाँ से हटा भी दे सकती हैं—जहाँ भी तुम उन्हे ले जाने को कहो।"

मैथ्यू ने उन पुरानी पड़ गयी धूमिल स्मृति-शिलाओं को देखा। उसने इनकार में अपना सिर हिलाया। "नहीं!" वह बोला—"उन्हें यहीं रहने दो।"

कब्र भरने तक, जैसा कि आवश्यक था, मैथ्यू रुका रहा। उससे नम्रतापूर्वक, कब्र के ऊपर मेहराबदार ढाँचा बनाने की बात पूछी गयी। क्षण भर के लिए मैथ्यू को ऐसा लगा कि वह वापस राइस के शव-संस्कार के बीच लौट आया है और अचानक उसका गला दुःख से रूँध गया। और तब उसने अपना गला साफ किया और सहमतिसूचक सिर हिलाता हुआ 'हाँ' बोला। वह सोच रहा था कि यह काम हो जाना चाहिए।

जब तक उसे वहाँ रुकना था, वह ऊपर-नीचे कब्रों की छोटी-छोटी कतारों के बीच टहलता रहा। वह हर कब्र की स्मृति-शिला को देखता चलता था। राइस के कब्र पर अभी भी कोई पत्थर नहीं रखा गया था और निश्चय ही, इस वसन्त में वह उसकी तथा अपने बूढ़े पिता की कब्र पर पत्थर लगाने का समय पा जायेगा। और घाटी से जाने के पहले उसे कब्रगाह के चारों ओर नये चमकीले तार का घेरा जरूर लगा देना चाहिए, जिससे उनकी अनुपस्थिति में मवेशी कब्र के भीतर न घुस आयें। उसने देखा कि बाकी लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कब्र भरी जा चुकी थी और मिट्टी का ढेर अभी बिलकुल ताजा ही था। वह उनका साथ देने के लिए पहाड़ी से नीचे की ओर उतरा। वह उस कब्र के निकट रुक गया और उसे देखने लगा। बिना स्वयं भी जाने कि वह ऐसा करने जा रहा है, वह कब्र की बगल में जमीन पर बैठ गया। उसने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया और फूट-फूटकर रोने लगा, जैसे कोई बच्चा रोता है। वह जोरों से सिसकियाँ ले-ले कर रो रहा था और इसमें उसे तनिक भी लाज नहीं लग रही थी। जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने जीवन के सर्वाधिक तनाव और संकट के क्षण में ही रोता है, इसी प्रकार वह रो रहा था।

किसी अंधड़ के समान ही यह शीघ्र समाप्त हो गया। जिस तरह अंधड़

गुजर जाने के बाद साफ और मीठी हवा को गुजरने के लिए छोड़ा जाता है, मैथ्यू भी वैसे ही रुदन का यह आवेग समाप्त हो जाने पर शांत हो गया। वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी मुट्ठी में बंद मिट्टी की ओर देखा। उसने मुट्ठी खोल दी और मिट्टी को फिर से धरती पर छितरा दिया। वह चलकर दूसरे लोगों के पास पहुँच गया।

"आओ, चलो!" वह बोला—"अगर हम घाटी से जाने का इरादा रखते हैं, तो हमें बहुत-सारे काम करने पड़े हैं। मैं इस साल वहाँ फसल भी उगाना चाहता हूँ।"

बहुत-सारे काम करने को पड़े थे, निर्णय करने थे, क्या-क्या ले जायें, यह सोचना था। एक ऐसी योजना बनानी थी, जिसका मैथ्यू ने कभी सामना नहीं किया था; क्योंकि उसने घाटी से हटने की बात कभी सोची ही नहीं थी। यह असम्भव-सी जटिलता दुविधाजनक थी। उसे अपने अनाज, चरी और मकान के फर्नीचर के बारे में सोचना था। उसे उन पुराने भांडारों को खाली करना था, जिन्हें वर्षों से नहीं छूआ गया था—उनमें से उसे छाँट-छाँट कर बेकार की चीजें फेंकनी थी, जो समय बीतने के साथ ही किसी काम की नहीं रह गयी थीं। फिर हलों की वह जोड़ी भी थी, जो उसके पिता द्वारा काम में लायी जाने के बाद, फिर कभी काम में नहीं लायी गयी थी, परिवार के लोगों की धुँधली पड़ गयी पुरानी तस्वीरें थीं, जिनके फ्रेम टूट गये थे। मैथ्यू को यह सोचना था कि जब तक वह नयी घाटी में मकान नहीं बना लेता, फसल नहीं रोप लेता, तब तक ये चीजें कैसी रह सकेंगी। काफी देर हो चुकी थी और उसे वहाँ नये सिरे से जमीन साफ करनी थी; पर फिर भी उसे फसल उगानी ही थी; क्योंकि वह पूरा साल यों व्यर्थ नहीं जाने दे सकता था। फिर भी उसे रहने के लिए मकान बनाने के पहले खलिहान भी बचाना था; क्योंकि उसे अपने पास के खाद्यान्न, चरी और मौसम के बारे में भी खयाल करना था।

"अगर समय होता, तो टी. वी. ए. वाले तुम्हें अपने ये इमारती सामान भी यहाँ से ले जाने देते—" क्रैफोर्ड ने उससे कहा—"लेकिन अब समय नहीं है। हमें कोई और बात सोचनी पड़ेगी।"

"खेमे के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?" मैथ्यू बोला—"हम तब तक इसे वहाँ लगा दे सकते हैं और फसल-संचय के समय तक मैं मकान तैयार कर ले सकता हूँ।"

वह शहर गया और एक बड़ा-सा खेमा ले आया। जितना उसने सोचा था,

उससे कहीं अधिक दाम उसे देना पड़ा; लेकिन फिर भी उसने उसे खरीद लिया; क्योंकि यही एक मात्र रास्ता था—वे खुली जमीन पर नहीं सो सकते थे।

जिन लोगों ने बाँध-निर्माण में मुफ्त सहयोग दिया था, उन्हीं लोगों के सहयोग से वह उस बाँध को सड़क के निकट से तोड़ने में जुट गया, जिससे वह अपनी मोटर पर आसानी से घाटी के भीतर-बाहर आ-जा सके। और जब वह यह काम कर चुका, तो वह उन लोगों को साथ लेकर सोते के किनारे, ऊपर की ओर वहाँ गया, जहाँ उसने स्वयं पहला छोटा-सा बाँध बनाया था। उन्होंने वह बाँध तोड़ दिया और सोते का पानी फिर घाटी से होकर बहने लगा। अपने पुराने जलमार्ग से होकर पानी को नदी की ओर बढ़ते देखना उसे अच्छा लग रहा था। वह और क्रैफोर्ड, दोनों अकेले ही आधे दिन तक कब्रगाह के चारों ओर नये तार लगाने में जुटे रहे। मैथ्यू तार को कुंडियों में फँसाता जाता था और क्रैफोर्ड झुक-झुक कर उन्हें सख्ती से कसता जाता था।

निर्णय। योजनाएँ। कार्य। मैथ्यू दिन निकलने से लेकर अंधेरा होने तक काम में जुटा रहता और जब वह रात में बिस्तर पर पहुँचता, तो मीठी-सी थकान अनुभव करता—यह थकान जितनी काम से नहीं थी, उतनी अपनी नयी घाटी के बारे में सोचने से थी। उसका दिमाग इस घाटी से बँध गया था, वह घाटीमय हो गया और नित्य घाटी से बाहर की बात सोचने से वह तनाव और थकान अनुभव करता था। किंतु अब यह जरूरी था और इसीसे वह रात में आराम से सोता। हर नये दिन जब वह सो कर उठता, तो उसके भीतर एक आतुरता-सी होती थी। तत्काल जो जरूरी था, उससे परे जाने का न समय था, न अवसर—प्रति दिन का काम, सामान को वहाँ से हटाना और इसका ध्यान रखना कि यह कितनी फसल इस बार बो पायेगा। और इसे लेकर भी वह प्रसन्न था।

हैटी और आर्लिस उसका हाथ बँटातीं। मैथ्यू ने जितना सोचा था, वे उससे कहीं अधिक उसकी मदद कर रही थीं। मार्क, जब अपनी नींद से उठा, तो मैथ्यू ने उसे अपने पिता की मृत्यु के बारे में बताया और वह खामोशी से सुनता रहा। शराब के नशे में बुत होकर वह उस वक्त जो अनुपस्थित था, इस पर उसने खेद नहीं प्रकट किया था; किंतु उसके चेहरे पर खेद और क्षोभ के भाव स्पष्ट थे और अब वह हर दिन का बहुत बड़ा भाग इस आरामकुर्सी पर बैठकर, जहाँ उसका बूढ़ा पिता बैठा करता था, सूनी-सूनी आँखों से अंगीठी की

ओर देखते में बिताया करता था, जहाँ वसंत-काल में जलायी गयी आग की धीमी चिनगारी-भर बच गयी थी।

अपने टी. वी. ए. के दफ्तर के समय के बाद, प्रति दिन तीसरे प्रहर क्रैफोर्ड घाटी में आता। वह पहले आर्लिस के पास जाता और तब मैथ्यू को ढूँढ़ निकालता। फिर चुपचाप उसकी बगल में बैठकर उसके काम में हाथ बँटाने लगता। उन दोनों के बीच न कभी आर्लिस और उसके विवाह की चर्चा हुई थी, न ही इसका उल्लेख हुआ था कि किस प्रकार वे चुपचाप घाटी से चले गये थे। यद्यपि एक बार, क्रैफोर्ड ने बातों-ही-बातों में मैथ्यू को इसका आभास दे दिया था कि उसका वहाँ का काम भी समाप्तप्राय था, कि टी. वी. ए. वाले वहाँ का अपना दफ्तर बंद कर रहे थे—और मैथ्यू जान गया था कि शीघ्र ही क्रैफोर्ड का दूसरी नयी योजना पर तबादला कर दिया जायेगा। वह वहाँ से जाने के सम्बंध में सिर्फ आर्लिस पर ही निर्भर रह सकता था।

यह निर्णय कर लेने के बाद कि उन्हें क्या-क्या रखना है और क्या-क्या फेंक देना है, वे रोज इस घाटी से नयी घाटी तक कई बार आते-जाते। उन्होंने वहाँ खेमा खड़ा किया, मवेशियों को ले गये और एक किराये की ट्रक में अपने खाद्यान्न तथा चरी और भूसा ढो-ढोकर वहाँ रख आये। धीरे-धीरे घाटी खाली हो गयी और वहाँ से नयी घाटी तक उनके समान खिसकाने का प्रत्येक दिन घाटी के जीवन का धीरे-धीरे खात्मा करता जा रहा था।

यद्यपि सप्ताह-भर प्रति दिन के अकथ प्रयास के बीच मैथ्यू को ऐसा लगा था कि वे नियत दिन आने के पहले कभी काम समाप्त कर भी पायेंगे कि नहीं और वह दिन आ भी गया; लेकिन किराये की ट्रक पर सामानों का अंतिम बोझ डाल दिया गया और मैथ्यू ने अंतिम रूप से बिदा होने के पहले खाली कमरों में घूम-घूम कर यह देख लिया कि कुछ छूट तो नहीं गया है। मध्याह्न का मध्यकाल था और उन्हें उस नयी घाटी के लिए रवाना हो जाना था, जिससे वे वहाँ जाकर रात बिताने की समुचित व्यवस्था कर सकें—उस साल-भर रहने की व्यवस्था कर सकें—जीवन-पर्यंत रहने की व्यवस्था कर सकें। लेकिन वह रुका और मुड़कर उसने मकान और खलिहान की ओर देखा।

सामानों से भरी ट्रक में आर्लिस और क्रैफोर्ड बैठे थे। क्रैफोर्ड चालक के स्थान पर बैठा था। मार्क मैथ्यू की टी-माडेल की मोटर में बैठा प्रतीक्षा कर रहा था। मैथ्यू धीरे-धीरे उनकी तरफ आया। "मेरा खयाल है, अब सब हो गया—" वह बोला।

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा। उसने मैथ्यू की ओर देखा—"क्या तुम्हें इसका दुःख हो रहा है कि तुम अपने इरादे पर डटे क्यों नहीं रहे!...कि तुमने मार्शल के साथ गोलाबारी कर इस कांड की कटु समाप्ति क्यों नहीं की?"

मैथ्यू सोचता रहा; उसने सच्ची बात कह दी—"नहीं!" वह रुका और फिर उसने मन-ही-मन इस सम्बन्ध में अपने दिल की भावना को तलाश करने की कोशिश की। "सच बात तो यह है कि—" वह बोला—"इस बारे में मुझे सोचने का अधिक समय ही नहीं मिला—" वह हौले से मुस्कराया—"मेरा खयाल है, मुझे यह समय अब कभी मिलेगा भी नहीं।"

क्रैफोर्ड ने बिना उसकी ओर देखे आर्लिस का हाथ थाम लिया। "अगर तुम तैयार हो—" वह जकड़े स्वर में बोला—"हम लोग चलें यहाँ से।"

मैथ्यू ने पुनः अपने चारों ओर निगाह दौड़ायी। वह बोला—"वे इसे तोड़कर बराबर कर देंगे, जिससे पानी भीतर आ सके। मैंने स्वयं उनके लिए बाँध का रास्ता खोल दिया है।" वह क्रैफोर्ड की ओर मुड़ा—"इन मकानों का क्या होगा?"

"टी. वी. ए. को उनकी व्यवस्था करने दो—" क्रैफोर्ड ने कहा—"या तुम उन्हें स्वयं जला दे सकते हो। ये तुम्हारे हैं।"

मैथ्यू ने पुनः इस ओर देखा। उस क्षण उसे लगा, उसका हृदय विदीर्ण हो जायेगा। तब उसने इनकार में अपना सिर हिलाया। "नहीं!" वह बोला—"मैं इन्हें जला नहीं सकता। उन्हें ही यह करने दो।"

वह अपनी पुरानी टी-माडेल मोटर की ओर बढ़ा। क्रैफोर्ड ने ट्रक का 'स्टार्टर' दबाया और ट्रक का एंजिन चलने लगा। मैथ्यू रुक गया।

"एक मिनट रुको—" वह बोला।

वह ट्रक की बगल में पहुँचा और ऊपर चढ़कर उसने एक बाल्टी निकाल ली। उसने उसे और आग हटाने का फावड़ा ले लिया और वापस घर के भीतर चला गया। वह अंगीठी के सामने घुटने टेककर बैठ गया। वह डर रहा था कि आग बिलकुल बुझ नहीं गयी हो। उसने फावड़े से राख को कुरेदा और उसे जलते हुए कोयले मिल गये। उसने बाल्टी में नीचे ठंडी राख की परत बिछायी, तब आधी दूर तक उसे दहकते कोयलों से भर दिया। यह आग, जब डेविड डनबार ने पहली बार जलायी थी, तब से कभी बुझी नहीं थी। उसने उन कोयलों को फिर राख की परत बिछाकर ढँक दिया और बाहर निकल कर ट्रक के पास पहुँचा। उसने बाल्टी ऊपर उठाकर क्रैफोर्ड को पकड़ा दी।

"मैं बेवकूफ हूँ—" वह उद्यत स्वर से बोला—"मैं जानता हूँ कि आग

जलाने के लिए सिर्फ मुझे दियासलाई की एक तीली ही जलानी पड़ेगी और बस ! लेकिन कोयलों से भरी यह बाल्टी तुम अपने साथ ले जाओ। जैसे वहाँ पहुँचो, वैसी ही इनकी मदद से आग जला लो।"

क्रैफार्ड ने उसकी ओर एक अजीब-सी नजर से देखा—"अच्छी बात है, मैथ्यू !"

मैथ्यू ट्रक से पीछे हटकर खड़ा हो गया। उसकी अवाज़ में संकोच और खेद की भावना मिली थी। "तुम किसी आग को यों ही बरबाद नहीं हो जाने दे सकते—" वह बोला—"ना, लापरवाही और अविचारपूर्ण ढंग से नहीं।"

क्रैफोर्ड मुस्कराया। "निश्चय ही—" वह बोला—"निश्चय ही, तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

"जाओ अब—" मैथ्यू ने उसे सचेत किया—"रास्ते में देर मत लगाना। वे कोयले बाल्टी में ज्यादा देर तक जलते नहीं रह सकेंगे।"

वह ट्रक को घाटी से बाहर की ओर बढ़ते देखता रहा। ट्रक घाटी की सड़क पर धीरे-धीरे बढ़ी और तब तेजी से मुड़कर घाटी के बाहर नदी के किनारे वाली सड़क पर आँखों से ओझल हो गयी।

"देखो—" मैथ्यू ने स्वयं से कहा—"व्यर्थ ही इधर-उधर समय गँवाने से कोई लाभ नहीं। वह भी जब मुझे वहाँ बहुत-से काम करने हैं।"

वह अपनी टी-माडेल मोटर की ओर बढ़ा और तब वह रुक गया। "हैटी।" उसने घर की ओर मुँह कर पुकारा—"हम लोग जाने को तैयार हैं।"

हैटी ने कोई जवाब नहीं दिया। मैथ्यू जानता था कि वह घर में नहीं है। वह वहाँ से चलकर पिछवाड़े की ओर पहुँचा! उसने हैटी को झुरमुट के किनारे खड़े होकर उसे देखते हुए देखा। उसकी ओर हैटी की पीठ थी और उसके सीधे-पतले कंधे झुक आये थे।

"हैटी—" उसने फिर पुकारा—"हम लोग तैयार हैं।"

वह घूमी नहीं। "मैं नहीं जाना चाहती—" वह जिद-भरे स्वर में बोली—"मेरा यहाँ से जाने का इरादा नहीं है।"

मैथ्यू उसके पास पहुँचा और उसने उसके कंधों पर अपनी बाँह रख दी। हैटी रो रही थी और उसके चेहरे पर आँसू बहने के निशान थे। उसकी बगल में खड़ी वह बहुत लम्बी लग रही थी—मैथ्यू के बराबर ही लम्बी।

"देर करने से कोई लाभ नहीं, हैटी—" वह मृदु स्वर में बोला—"हमें यहाँ से जाना ही पड़ेगा।"

"यह घर है—" वह बोली और रो पड़ी।

"घर अब दूर वहाँ है—" वह नम्र, पर दृढ़ शब्दों में बोला—"घर वही है, जहाँ तुम रहती हो।" उसने उसके चारों ओर अपनी बाँह की पकड़ सख्त कर दी—"यहाँ से वहाँ अच्छा रहेगा, हैटी। बस तुम प्रतीक्षा करो और स्वयं देख लोगी। हम वहाँ बिजली लगायेंगे और बाकी सब चीजें भी।" उसने उसे अपनी बाँह के जोर से घुमा दिया—"आओ अब। हमें बहुत काम करना है। काफी काम हमारे आगे करने को पड़ा है और पीछे लटके रहने का यह समय नहीं है।"

हैटी ने वापस तृष्णाभरी नजरों से झुरमुट की ओर देखा; लेकिन उसने मैथ्यू को स्वयं को मोटर तक ले जाने दिया। वह मोटर में बैठ गयी। मैथ्यू सामने की ओर जाकर एंजिन स्टार्ट करने लगा। एंजिन स्टार्ट नहीं होना चाहता था और एक दो बार वह विरोध कर चुप लगा गया। अंत में जब एंजिन स्टार्ट हुआ, तो उसने बड़े जोरों से उछल कर अपना रोष प्रकट किया।

मैथ्यू घूमकर मोटर तक पहुँचा और बैठ गया। बिना पीछे मुड़कर देखे, मोटर चलाता हुआ, वह घाटी के बाहर आ गया। पीछे मुड़ने का यह वक्त नहीं था और न यह आवश्यक था। क्रैफोर्ड ने ठीक कहा था—डनबार नाम की चीज मैथ्यू के दिमाग के भीतर थी और वह उसे अपने साथ ले जा रहा था। वह इसे उस नयी जगह में रोप देगा; जैसे वह वहाँ मकई और कपास के पौधे रोपेगा।

उनके जाने से घाटी से जिंदगी भी चली गयी थी। वह जड़, अज्ञात पड़ी, पानी आने की प्रतीक्षा करती रही।

प्रकरण सत्ताइस

तब भी, उस नयी घाटी की वह पहली रात, क्रैफोर्ड ने घाटी में नहीं बितायी। वह शहर वापस चला गया। लेकिन दूसरी सुबह वह उन लोगों के वहाँ सुव्यवस्थित होने में हाथ बँटाने के लिए बहुत तड़के आ गया। जब उसकी मोटर घाटी में आती दिखायी पड़ी, आर्लिस के चेहरे पर चमक आ गयी और वह उससे मिलने दौड़ पड़ी।

देवदारों से भरी उस छोटी-सी पहाड़ी पर उन्होंने खेमा गाड़ रखा था,

जहाँ मैथ्यू अपना मकान बनाने की सोच रहा था। भाग्यवश उन्हें उसकी पिछली ढलान पर एक चश्मा मिल गया था, जिससे कुआँ खोदने तक उनका काम किसी असुविधा के चल सकता था। मैथ्यू खेमे के सामने खड़ा था।

क्रैफोर्ड और आर्लिस साथ-साथ पहाड़ी चढ़कर उसकी ओर आने लगे। वे एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे और मैथ्यू उन्हें देखता रहा। वह मुस्कराना चाह रहा था। लेकिन उसने अपने चेहरे पर मुस्कान नहीं आने दी। उन्हें विवाहित हुए अब काफी दिन बीत गये थे और उसकी याद के रूप में उनके बीच सिर्फ एक ही रात की मधुर स्मृति थी। वे फिर से बेचैनी अनुभव करने लगे थे। एक-के-बाद एक तेजी से घटने वाली घटनाएँ उन्हें अधिक देर तक एक-दूसरे से अलग नहीं रख सकेंगी।

"मैंने तो सोचा था——" क्रैफोर्ड प्रसन्नतापूर्वक बोला—"तुम खलिहान और मकान बनाने के लिए आज यहाँ एक आदमी बुला लिये होगे।"

"खलिहान बनाने के लिए कुल एक आदमी आ रहा है—" मैथ्यू ने कहा——"लेकिन अपना घर मुझे स्वयं बनाना होगा। जिस प्रकार का मकान मैं चाहता हूँ, उसे ये कारीगर नहीं बना सकते।"

वे रुक गये। क्रैफोर्ड ने उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

मैथ्यू मुस्कराया। "मैं अपने लिए पुराने जमाने का मकान बनाने जा रहा हूँ——" वह बोला—"मैं शर्त बद सकता हूँ कि पीछे, उधर की सरकारी जमीन पर बहुत से लकड़ी के बने पुराने मकान हैं।" वह मुड़ा और अपने हाथ से संकेत करते हुए बोला——"जब मुझे समय मिलेगा, मेरा इरादा है कि मैं मकान के लिए काफी मजबूत, मौसम के थपेड़े सहे हुए लकड़ी के कुंदे खोज निकालूँगा—जिस तरह के कुंदों से लोग पहले मकान बनाया करते थे।"

क्रैफोर्ड की भौंहें सिकुड़ आयीं——"यह तो काफी श्रम का काम है।"

मैथ्यू ने उत्साहपूर्वक समर्थन में सिर हिलाया। "अवश्य! लेकिन वह इसके योग्य हैं। विभिन्न भागों को अलग-अलग जोड़ कर तैयार किये जाने वाले इन मकानों से वह दस-गुना अधिक मज़बूत और टिकाऊ होगा।" उसने धूप में चमकती उस हरी-भरी घाटी में चारों ओर नजरें दौड़ायीं——"जब तुम शुरू में ही आरम्भ कर रहे हो, तुम्हें सुदूर भविष्य का भी खयाल रखना होगा। मैं इसे वैसे ही करने वाला हूँ, जैसे पुराने डेविड डनबार ने किया था।"

क्रैफोर्ड हँस पड़ा——"खैर, मुझे आशा है, तुम बिलकुल ही उसके पास

वे उसे देखते रहे। वह उन लोगों के भीतर के तनाव को स्पष्ट देख पा रहा था। हैटी शांत-स्थिर उसके पीछे खड़ी थी। वह अब जमीन नहीं बुहार रही थी, बल्कि खड़ी होकर उनकी बातें सुन रही थी।

"देखो, क्रैफोर्ड!" मैथ्यू ने कहा। उसकी आवाज़ दृढ़ थी और उसमें किसी प्रकार की भावना का आभास नहीं था—"तुम मेरा आशीर्वाद पा सकते हो—एक शर्त पर।" उसने नीचे घाटी की ओर देखा, जिसमें कभी फसल नहीं उगायी गयी थी, जिसमें अभी खेत बनाये भी नहीं गये थे, यद्यपि उसके दिमाग में अपने खेतों की सीमा-रेखाएँ अंकित हो चुकी थीं—"मेरे तीनों लड़के मुझसे अलग हो चुके हैं। मुझे काफी काम करने हैं और मैं अकेला हूँ। अगर आर्लिस और तुम यहाँ डनबार-घाटी में रहने को तैयार हो, मैं खुशी-खुशी तुम्हें अपना आशीर्वाद दूँगा।"

उसने अपना चेहरा कठोर बनाये रखा। किंतु उसकी आँखें इस बात की ओर सतर्क थीं कि क्रैफोर्ड में—या आर्लिस में—प्रतिरोध की तनिक सी छाया भी तो कहीं दिखायी दे जाये और वे उसकी बातों का विरोध करने को तैयार हो जायें। तब वह मुस्कराने लगा क्योंकि वह क्रैफोर्ड की आँखों में और चेहरे पर उम्मीद और आश्वासन की झलक उभरते देख रहा था। क्रैफोर्ड ने आर्लिस का हाथ छोड़ दिया।

"मैंने कभी नहीं सोचा कि आप चाहेंगे, मैं यहाँ......" वह बोला और चुप लगा गया। यह बहुत अधिक था—बहुत आकस्मिक। टी. वी. ए. और घाटी, मैथ्यू और आर्लिस, मैथ्यू और वह स्वयं सब उसके भीतर एक-दूसरे से उलझ कर रह गये थे और वह उन्हें सुलझा नहीं पा रहा था। "मेरे दिमाग में यह कभी नहीं आया......"

मैथ्यू उसे देखता रहा। "अगर तुम जाना चाहते हो—" वह बोला—"तुम दोनों साथ-साथ जाओ। अगर तुम मेरे साथ रहना चाहते हो......" वह चुप हो गया। उसने पर्याप्त कह दिया था। उसने उन्हें मुक्त कर दिया था।

"क्या आप सचमुच ही चाहते हैं कि हम यहाँ रहें?" आर्लिस बोली।

मैथ्यू ने उसकी ओर देखा और तब वापस क्रैफोर्ड की ओर। "हाँ।" वह बोला—"मैं चाहता हूँ, तुम यहीं रहो। मेरे बाद डनबार-घाटी तुम्हारी हो सकती है। जहाँ से मैं इसे छोड़ दूँगा, वहाँ से तुम इसे मुझसे ले सकते हो।" उसने कभी ये अल्फाज पहले नहीं कहे थे। अब वह उन्हें कह रहा था, जैसे उसके पिता ने कहा था, उसके पितामह ने कहा था और पुराने डेविड

डनबार से लेकर सब लोग कहते आये थे। किंतु सिर्फ उसने और उस प्राथमिक डेविड डनबार ने एक नयी और आरम्भ करने की चीज दी थी। मुड़कर उसने मार्क की ओर देखा, जो एक देवदार-वृक्ष के साये में उस पुरानी आरामकुर्सी पर बैठा था। "इन्हीं दिनों में एक दिन—" वह बोला—"मैं भी बैठकर आराम करने के लिए तैयार हो जाऊँगा। और तब मैं यह जानना चाहूँगा कि यह तुम्हारे हाथों में सुरक्षित रह पायेगा या नहीं।"

कई वर्षों तक वह इन शब्दों पर विचार करता रहा था, अपने लड़कों का गौर से निरीक्षण करता रहा था कि किस पर उसे इनका उत्तरदायित्व डालना चाहिए। उसके जीवन में उसके मुख से उच्चारित शब्दों में ये शब्द सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। एक बार नहीं, अपने विचारों की उस लम्बी शृंखला में वह हमेशा आर्लिस और उसके होनेवाले पति के बारे में सोचता रहा था। लेकिन वह अपने भीतर अब थोड़ी राहत-सी महसूस कर रहा था और वह जानता था कि यह ठीक है। उसने सर्वोत्तम और एकमात्र चुनाव किया था।

क्रैफोर्ड भौंचक और अनिश्चित-सा उसे देख रहा था। मैथ्यू ने सस्नेह उसके कंधे पर थप्पड़ मारा।

"सोच लो इसके बारे में, बेटे! ठीक से सोच लो। तुम दोनों इस सम्बंध में बातें कर लो। और जब तुम निर्णय कर लो, तब मुझे बता देना।"

वे शांत थे। सब, सिवा हैटी के। वह तेजी से उनकी बगल से गुजरी और आर्लिस से सक्रोध बोली—"यह तुम्हारा पुराना घर वापस आ गया। अब से तुम अपना घर आप बुहार सकती हो।"

वे हँस पड़े और वह उबलती हुई वहाँ से चली गयी। मैथ्यू ने अपनी बाँह उठाकर इंगित किया—"जब तुम किसी निर्णय पर पहुँच जाओ, बेटे!" वह बोला—"मैं वहाँ काम करता रहूँगा।"

"हाँ!" क्रैफोर्ड ने कहा—"मैं आपको सूचित कर दूँगा। मैं....मैं बहुत जल्दी ही वहाँ आ जाऊँगा।"

मन-ही-मन मुस्कराते हुए मैथ्यू वहाँ से चल पड़ा। उसने क्रैफोर्ड के अंतर में झाँक कर देखा था। वह उसके घर की भूख से परिचित था और वह जानता था कि उसका जवाब क्या होगा; क्योंकि क्रैफोर्ड उसका बेटा था—जैसे उसने स्वयं उसे जन्म दिया हो और पाला-पोसा हो।

वह रुका और घूम पड़ा। एक चीज और बाकी रह गयी थी—सिर्फ एक चीज! "क्रैफोर्ड!" वह बोला—"क्या तुम पता लगा सकते हो कि नाक्स

किया था—वह बिलकुल वहाँ पहुँच जाना चाहती थी, जहाँ नसवार की बोतलों की उसकी गाड़ी थी और वे सड़कें थीं, जो उसने बहुत पहले बनायी थीं। वह वहाँ से बाहर नहीं आयेगी, इन्कार कर जायेगी, इन्कार करती जायेगी, जब तक कि वे अपने सारे सामान उतारकर वापस घर में नहीं रख देते और वहीं नहीं रह जाते, जहाँ के वे थे।

किंतु वह झाड़ियों के भीतर नहीं घुस पायी थी। काफी दिनों से उसने झाड़ियों के भीतर जाने की कोशिश छोड़ दी थी और इस अर्से में, ऐसा लगता था कि झाड़ियाँ इतनी सघन हो गयी थीं कि उन्हें चीर कर भीतर नहीं जाया जा सकता था। उलझी हुई शाखाएँ उसके बालों से फँस गयी थीं और उसके कपड़े फट गये थे; क्योंकि वह अब इतनी लम्बी हो गयी थी कि वह उन झाड़ियों के भीतर झुककर उन रास्तों से नहीं जा सकती थी, जिन्हें उसने अपने बचपन में बनाया था। अतः वह भौंचक-सी उसकी सुरक्षा के बाहर खड़ी थी—उसकी भीतरी सुरक्षा ने भी उसे आश्रय देने से इनकार कर दिया था—जब कि मैथ्यू ने उसे पुकारा था, उसके पास आया था और उसके कंधों पर अपनी सशक्त बाँह का भार डाल, वहाँ से दूर ले गया था। अब वह झुरमुट उसके लिए नहीं रह गया था और इसीसे उसे मैथ्यू के आदेश का पालन करना ही पड़ा था। और अब रसोईघर भी उसका नहीं रहा था।

वह पहाड़ी के ऊपर पहुँच कर रुक गयी। वह जोरों से हाँफ रही थी। उसने अपने चेहरे पर से बालों को पीछे झटक दिया और अपने ललाट तथा ऊपरी होंठ का पसीना पोंछने के लिए, उसने अपनी जेब से रूमाल निकाल लिया। उसका हमेशा से विश्वास रहा था कि औरतों के पसीना नहीं बहता। जिन औरतों को वह जानती थी, उनमें से किसी के पसीना बहता प्रतीत नहीं होता था। लेकिन उसे तो निश्चित रूप से पसीना आ रहा था।

वह फिर चलने लगी। वह भूल गयी कि वह स्वयं को कितना अस्त-व्यस्त बनाये हुई थी। वह यह नहीं जान रही थी कि वह कहाँ जाना चाह रही थी। उसे बस इसका विश्वास-भर था कि वह वापस अपने खेमे में काफी देर बाद पहुँचेगी। शायद सूर्यास्त के पहले नहीं।

"अच्छा—" एक आवाज़ आयी—"आखिर इस बुरी तरह इतनी जल्दी में तुम भला कहाँ जा रही हो?"

हैटी ने शीघ्र ही अपने को सँभाल लिया। एक लम्बा, दुबला-पतला लड़का एक पेड़ की ठूँठ पर बैठा, उसकी ओर देखकर मुस्करा रहा था। उसके बाल

लाल थे और वह हैटी से अधिक लम्बा था—कहीं अधिक लम्बा।

"कौन हो तुम?" वह फट पड़ी।

"मैं?" वह अलसाये स्वर में बोला—"मैं इसी के इर्द-गिर्द रहता हूँ। नीचे जो घाटी में अभी नये लोग आये हैं, तुम उनके साथ आयी हो?"

"हाँ!" हैटी थोड़े-से में बोली—"और मैं अब लौट चलूँ तो ज्यादा अच्छा है। हो सकता है, नीचे, उन्हें किसी काम के लिए अभी मेरी जरूरत पड़ गयी हो।"

जिस रास्ते वह आयी थी, उसी रास्ते वापस जाने लगी। वह उस लड़के की आकस्मिक उपस्थिति और उसके चेहरे पर की खिझानेवाली मुस्कान से घबड़ा गयी थी।

"मिनिट-भर ठहरो—" उस लड़के ने पीछे से उसे आवाज़ दी—"घर जाने के लिए यों बुरी तरह पसीने से लथपथ होने की जरूरत नहीं है। मुझे कुछ देर अपने साथ बात करने दो न!"

हैटी रुक गयी। उसने मुड़कर उस लड़के की ओर देखा। वह मन-ही-मन मना रही थी कि वह उसके चेहरे पर छलक आये स्वेद-कणों को न देख ले। उसने बड़ी कोमलतापूर्वक अपने होंठों पर रूमाल फिराया। तब वह धीमे कदमों से उसके पास वापस आयी। उस लड़के के लाल बालों के साथ मेल खाती हुई उसकी हरी आँखें थीं।

"कहाँ रहते हो तुम?" हैटी ने पूछा।

उसने अलसाये ढंग से हाथ उठाकर हिलाया—"उधर थोड़ी दूर पर।" वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया—"ऐसा लगता है मैं और तुम पड़ोसी बनने जा रहे हैं।"

हैटी ने अपनी नजरें जमीन पर गड़ा लीं। उसने उस लड़के के सिर पर अपना हाथ रख दिया और उसके उलझे बालों को सुलझाने लगी। अचानक वह स्वयं को शांत और एक औरत के समान महसूस कर रही थी। उसे ऐसा अनुभव ही नहीं हो रहा था कि वह अब तक सारे रास्ते दौड़ती-सी आयी थी।

"हाँ!" वह बोली—"ऐसा ही लगता है।" उसने अपनी आँखें ऊपर कीं और सीधा उस लड़के के चेहरे को देखने लगी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" उस लड़के ने पूछा। इस बार उसकी आवाज़ दूसरी ही तरह की थी। हैटी ने उसे बता दिया। और तब उस लड़के ने उसे अपना नाम बता दिया।

दृश्य दस

आगामी कल के साथ

डनबार-घाटी खाली है और पुनः नामहीन हो गयी है; क्योंकि इसका नाम आदमी के साथ ही चला गया है। इसका नाम इस जमीन पर एक मनुष्य द्वारा डाला गया था और एक मनुष्य द्वारा ही यह नाम इससे दूर ले जाया गया है और जमीन वैसी ही है, जैसे वह पहले थी—जब इस पर किसी का नाम अंकित था और जब यह अनाम थी; क्योंकि जमीन कभी नहीं बदलती है।

नीचे, नदी में, बाँध के ऊपर पहियों पर लुढ़कती हुई एक क्रेन बाँध के फाटकों को एक-एक कर ऊपर उठाती जा रही है और पानी इन आकस्मिक घेरों के विरुद्ध भहरा पड़ता है। वह अपनी शक्ति की जाँच करता है और वह अपना मार्ग अवरुद्ध करने वाली दीवार की शक्ति की भी जाँच करता है। लेकिन यह दीवार दुर्जेय है—लोहे और ठोस कंक्रीट की बनायी गयी है और इतना ही नहीं—यह बहुत से मनुष्यों के श्रम-स्वेदों, स्वप्नों और आशाओं तथा कुछ व्यक्तियों की चोट और मृत्यु से भी बनायी गयी है। यह सुयोग्य हाथों द्वारा बनायी गयी है, जिनमें यह काम करने की क्षमता है। और इसी से पानी को रोक रखती है, उसे वापस नदी की ओर भेज देती है और पानी ऊपर सोतों और घाटियों की ओर बह निकलता है।

उस अनाम घाटी में, जो कभी डनबार-घाटी थी, हँसते हुए और बुरा-भला कहते हुए लोग आते हैं, जब कि पानी वापस ऊपर नदी की ओर मुड़ रहा है और गहराई से बहते हुए सोतों और घाटियों में फैल रहा है। इन आदमियों को जल्दी है; क्योंकि काफी देर हो चुकी है और वे उन्मत्तों के समान घाटी को साफ करने में जुट जाते हैं, जिस पर हरीतिमा ने अपनी चादर बिछा रखी है। पहाड़ी पर, जहाँ हरे देवदार-वृक्षों के बीच कब्रगाह है, उस पहाड़ी की ढलान पर, आधी दूर तक, जहाँ उसकी ऊँचाई को बताती हुई ५९५ कंटूर्स (किसी विशेष धरातल को दर्शानेवाली रेखा) की 'एलेवेशन लाइन' है, वे

पूरी घाटी को साफ करने में लगे हैं। पेड़ों और झाड़ियों को काट गिराते हैं, ठूँठों को काट कर जमीन के बराबर कर देते हैं। वे उस घाटी से उसका सौंदर्य छीन ले रहे हैं और इसके बदले में यहाँ शांत-नीला जल बहता होगा।

सामने के आँगन का वह बलूत-वृक्ष, सबसे बड़ा वृक्ष है, जिसे उन्हें काट डालना होगा और इस काम के लिए उन्हें काफी मेहनत करनी पड़ती है। आरा चलानेवालों का दल अपनी निरर्थक हँसी खो बैठता है और अपने काम को कोसने लगता है, जब कि जो भाग्यवान हैं, वे खड़े होकर देखते हुए उसे बढ़ावा देते हैं। वे अपना आरा आगे-पीछे तेज झटके के साथ चलाते हैं और एक-दूसरे से काम में बाजी मार ले जाने का प्रयास करते हैं तथा धातु के उतावले दाँत उस पुराने पेड़ में गहरे और अधिक गहरे घुसते चले जाते हैं। वह रुक जाते हैं, जब तक कुल्हाड़ी लेकर खड़ा एक आदमी दूसरी ओर से गिर रहे एक पच्चड़ को काट देता है और तब वे फिर आरा चलाने लगते हैं। अब तक वे काम के भारीपन से पसीने से लथपथ होने लगे हैं।

वृक्ष काँपता है। जड़ से लेकर फुनगी तक यह, धातु के दाँतों के कतरने के कारण, कमजोरी से काँपता है और लोग चुप लगा जाते हैं। वे सतर्क निगाहों से देख रहे हैं। लगभग हमेशा ही वे अपने इच्छानुसार किसी पेड़ को धराशायी कर सकते हैं। किंतु हमेशा नहीं और एक बड़े पेड़ के साथ......... लोग खामोश और सतर्क हैं और वे अपने काम की प्रतियोगिता अब भूल गये हैं। वे धीरे-धीरे आरा चला रहे हैं और वृक्ष का वह कम्पन उन्हें अपने आरे में भी अनुभव हो रहा है।

वे रुक जाते हैं। वे वहां से हट कर सुरक्षित स्थान में चले आते हैं और दूसरा आदमी वृक्ष के लम्बी दरार वाले तने में पच्चड़ ठोकने आगे बढ़ता है। वह उसमें एक पच्चड़ ठूँसता है। फिर वह लुहारों का भारी हथौड़ा ऊपर अपने कंधे पर उठाता है और जोर-जोर की आवाज़ के साथ पच्चड़ पर प्रहार करता है। इसका शरीर उस भारी हथौड़े से प्रहार करते वक्त उसमें वजन से झुक जाता है। किसी जीवित प्राणी के समान वृक्ष कराहता है, काँपता हैं और एक ओर झुकने लगता है। जोरों से, बिजली टूटने के समान आवाज़ होती है और वह विशाल बलूत-वृक्ष एक कराह के साथ धराशायी होने लगता है। वह जमीन की ओर गिरते हुए इतने जोरों से गरजता है कि लोग भाग कर खतरे से दूर चले जाते हैं। तब वह जमीन पर मृत पड़ रहता है। अगर यह अपने समय पर नहीं धराशायी हुआ है, तो अपने ढंग से तो हुआ ही है।

लोग सतर्कतापूर्वक उसके निकट पहुँचते हैं और वे उसकी काट-छाँट में लग जाते हैं। वे उसकी जाँघ-सी मोटी-मोटी शाखें काट कर जलाने के लिए इकट्ठी कर रहे हैं।

काम चलता रहता है और पानी उधर वापस ऊपर नदी की ओर सोतों के जरिये अपनी राह खोजता बढ़ रहा है। घाटी साफ करने में जुटे लोगों के दल का अधिकारी नदी को गौर से देखता है और अपने आदमियों को जल्दी करने के लिए कहता है; क्योंकि पानी हर घंटे ऊँचा और ऊँचा उठा चला आ रहा है और उन्हें शीघ्र काम खत्म करना ही होगा।

अंतिम दिन, सफाई-दल का अधिकारी झाड़ियों और मकानों को जलाने के लिए बढ़ता है। वह घर से इसकी शुरुआत करेगा। पहले वह घर के भीतर जाता है इस बात का निश्चय कर लेने के लिए कि उसके आदमियों में से कोई वहाँ छिप कर सो तो नहीं रहा है, यों ही चक्कर तो नहीं काट रहा है, जुआ तो नहीं खेल रहा है। घर पुराना और निर्जन है और खाली कमरों में उसके पैरों की आवाज़ जोर से प्रतिध्वनित हो उठती है। रहनेवाले कमरे में, अंगीठी से धुएँ की एक छोटी-सी रेखा चक्कर काटती हुई ऊपर उठ रही है और वह सोचता है—"यह जीवित रहनेवाली आग है। वे लोग तीन दिन पहले यहाँ से चले गये।" वह दीवारों पर मिट्टी का तेल छिड़कता है और किसी अज्ञात प्रेरणावश कागज का एक टुकड़ा ऐंठकर कोयलों की उस सतह से जला लेता है, जो अब बुझ चली है। वह कागज मिट्टी के तेल में फेंक देता है और जल्दी से लपटों से दूर, बाहर निकल आता है।

और लोग रुक जाते हैं। वे खिड़कियों से उबलते कुछ धुएँ को देखते हैं। उनका अधिकारी उन्हें जल्दी-जल्दी काम पर वापस लगा देता है। वह उन्हें धमकी देता है कि अगर उन्होंने काम आज नहीं समाप्त किया तो...... और इस तरह बिना किसी का ध्यान उधर गये ही घर जलता रहता है। अधिकारी अपने काम में बहुत व्यस्त है। उसे इधर देखने का अवकाश नहीं है। वह एक-एक कर खलिहान, माँस रखने के लिए बनाया गया घर और शौचालय जलाता है और तब घाटी में घूम-घूम कर सभी अध-सूखी झाड़ियों के ढेर को जलाता है।

धुआँ, लपट और राख आकाश में ऊपर की ओर उठने लगती हैं—घाटी विनाश और निर्माण का नरक बन जाती है। जलती हुई झाड़ियों के ढेर से, उठनेवाला मोटी-हरी लकड़ियों का धुआँ, सूरज के ऊपर अंधेरा कर देता है

और वहाँ काम करने वाले लोगों के ऊपर एक विचित्र-सी छाया हिलती रहती है। वे इस धूमिल रोशनी की विचित्रता के नीचे चुप लगा जाते हैं। आग की लपटें ऊपर उठती हैं और फिर नीचे आकर मर जाती हैं। वे अपना काम पूरा कर लेती हैं और आदमी उसकी उष्णता से दूर खड़े रहते हैं। उनके हाथों और चेहरों पर कालिख लगी है और उनका काम भी समाप्त हो गया है। जहाँ पानी आने वाला है, वह जगह साफ है, खाली है और तैयार है। सिर्फ ईंटों की बनी काली-सी चिमनी, पूरी घाटी-भर में ऊपर सिर उठाये खड़ी है।

वे लोग अपनी ट्रकों में वहाँ से चल पड़ते हैं और पानी उस सड़क के बहुत करीब आ गया है, जो नदी के समानांतर जाती है। इस रास्ते से गुजरने वाले वे अंतिम व्यक्ति है, जब तक कि किसी दिन कहीं कोई दूसरा आदमी, अच्छी मछली की तलाश करते हुए, किसी नाव में बहता हुआ यहाँ नहीं आ जाता।

उस रात पानी उस मिट्टी के बाँध के विरुद्ध रेंगता हुआ बढ़ता है। पानी धीरे धीरे उठता है—और ऊँचा। सोते के पानी को बल पहुँचाते हुए यह धीरे-धीरे, गुप्त रूप से बहता है और वहाँ दूसरी जगह से लाकर इकट्ठा की गयी ठोस मिट्टी को गला देता है। दरारों को खोजते हुए घाटी की पुरानी सड़क से गुजर कर यह सोते की सतह के ऊपर आ जाता है। यह शांत और मौन पानी है और यह पीछे की ओर बह रहा है, जैसा यह पहले कभी नहीं बहा था। यह अपनी विजय के लिए नयी जमीन खोजता चल रहा है—वह जमीन जो इनब्रार थी और जो अब पुनः अनाम है।

इंच-प्रति-इंच यह पानी तलाश करता है और घाटी को स्वयं में छुपाते हुए उस पर अपने अधिकार का दावा करता है। यह सशक्त है और तीव्र भी—उधर अधूरे बांध के रास्ते के कारण। यह दरारों में जमा हो जाता है और अपनी सशक्त अन्वेषक उँगलियों से तलाश करता हुआ बाहर निकल फैल जाता है। पानी जल गये घर के दरवाजे की सीढ़ी के पत्थर की नींव का स्पर्श करता है और उसके ऊपर चढ़ने लगता है। राख के बीच इसे जमीन कुछ नीची-सी मिलती है और फिर, जहाँ पहले घर था, वहाँ यह दौड़ पड़ता है। जलने के बाद जो सुलगते कोयले बच गये थे, पानी से टकरा कर 'हिस' की आवाज़ करते हैं और मर जाते हैं। मरते हुए वे अंतिम बार बाष्प छोड़ते हैं, जो पानी की मौन शक्ति के बीच धीरे घुट जाती है। कुछ देर के बाद,

आग बुझ जाती है और पानी सर्वोच्च है।

अब यह शांत और मौन पड़ा है। यह अप्रतिहत धीमी गति से बहता है। 'एलेवेशन ५९५' तक की जमीन पर विजय पाने के लिए यह अपनी ताकत बटोर रहा है। यह मौन पानी है, शांत पानी है, पीछे की ओर बहता पानी है। और घाटी से अग्नि-ज्वाला विदा ले चुकी है।

यद्यपि कहीं और, इसी उद्दंड नदी का नियंत्रित पानी लोहे की चिकनी पनचक्कियों से होकर एक साथ जोरों से बहता हुआ एक शक्ति पैदा करता है और इसकी यह शक्ति जमीन पर आग की लपटें जला रही है। ये नयी लपटें हैं—पुरानी खुली लपटों के बजाय, जिनमें गर्मी और उष्णता होती थी, आधुनिक तरीके से 'वैकुमों' में बंद।

किंतु ये नयी लपटें जीवित रहेंगी—जब तक मनुष्य रहेगा, तब तक ये लपटें भी रहेंगी।

मनुष्य का भाग्य—लकॉम्ते द नॉय। एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वारा जीव और जगत के मूलभूत प्रश्नों का वैज्ञानिक विश्लेषण। मूल्य : ७५ नये पैसे।

शांति के नूतन क्षितिज—चेस्टर बोल्स। आज की विश्व-समस्याओं पर एक सुस्पष्ट एवं विचारपूर्ण विवेचन! मूल्य : १ रुपया।

जीवट के शिखर—अर्नेस्ट के. गैन। यह उपन्यास सन् १९५४ का सबसे अधिक बिकनेवाला उपन्यास माना जाता है। मूल्य : १ रुपया।

१९५९ के नये प्रकाशन

रूस की पुनर्यात्रा—लुई फिशर। स्तालिन की मृत्यु के बाद प्रख्यात पत्रकार फिशर की रूस यात्रा का अति रोचक वर्णन। मूल्य : ७५ नये पैसे।

रोम से उत्तर में—हेलेन मेक् ईनूस। रहस्य, रोमांच और खतरों से परिपूर्ण यह उत्कृष्ट उपन्यास सभी को रोचक लगेगा। मूल्य : १ रुपया।

मुक्त द्वार—हेलेन केलर। अंधी, गूंगी और बहरी होते हुए भी हेलन केलर का नाम विश्व-विख्यात है। प्रस्तुत पुस्तक में वे एक गंभीर विचारक के रूप में प्रकट होती हैं। मूल्य : ५० नये पैसे।

हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर। परमाणुशक्ति के तथ्य, खतरों तथा सम्भावनाओं की चर्चा प्रस्तुत पुस्तक में अमरीका के दो विशेषज्ञों द्वारा की गयी है। मूल्य : १ रुपया।

नवयुग का प्रभात—थामस ए. डूली, एम. डी.। एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी जो भयंकर रोगों से ग्रसित जनता की सेवा के लिए सुदूर लाओस में जाता है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

रुजवेल्ट का युग (१९३२-४५)—डेक्स्टर पर्किन्स। मूल रूप में शिकागो युनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक रुजवेल्ट के समय का अच्छा अध्ययन है। मूल्य : ५० नये पैसे।

अब्राहम लिंकन—लार्ड चार्नवुड। यह मात्र लिंकन की जीवनी न हो कर अमरीकी राजनीतिक इतिहास का एक क्रान्तिकारी अध्याय है। मूल्य : १ रुपया।